



यह पथ बन्धु था

यह पच आनेवाले का साक्षी ह ,

यह पच जानवाले का वग्धु है ।

श्री नरेश मेहता

स्पन्दास

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्रा० लि०  
गिरगाँव, बम्बई-४

१९९२

•

बुध

•

प्रकाशक

•

मुद्रक

•

प्रथम संस्करण

बाण्डूक रूपे पचास नये पैसे

पत्रोत्तर मोदी

मैत्रिमि झाइरेवन्टर

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई ।

सीडर प्रेस इलाहाबाद ।

लेखक

मानुष सत्य  
श्री वाचस्पति जी पाठक को

ए पदरै धामे प्रवेश ह्यहं यद्यु  
दितरि युक्त ममता मुसर मद्यु  
पुत्र भुम नाती-मातुणी रे रति

मन्त्रिणि ए पद्ये करे ।  
आश्रिया जमर साती ए पद्य  
फेरिय खनर कन्दु ।

—श्री विनोदचन्द्र नायक

यह उपन्यास बीसवीं शती के पूर्वार्ध के सामाजिक जीवन मूल्यों एवं मान्यताओं पर आधारित है। यह युग तथा इसके चरित्र एवम इस की विविधताएँ अभी-अभी खोप हुईं सी हैं अतएव स्मृति अधिक है इतिहास कम। हमारा इन से अभी भी सामुह्य-भाव है लेकिन अनागत में जब ये इतिहास बन जाएँगे तब इस काल के केवल सफल पुरुष ही स्मरण किये जाएँगे। इतिहास सफल कुरों तथा महापुरुषों का ही होता है जब कि हमारी स्मृतियों में ऐसे अनन्य साधारण जन होते हैं जो व्यक्ति भी नहीं बन पाते केवल सख्या होते हैं लेकिन हम जानते हैं कि ये असफल सामान्य जन इतिहास में हों महापुरुष न हों किन्तु मानुष होते हैं।

मारुत क एक ऐसे ही साधारण अव्यक्ति को व्यक्तित्व दिया गया है। परिपास्वर् आंचलिक है किन्तु धीस-निरूपण में चार्बेजनीता रखी गयी है। किसी अंचक विषय की कथा कहना मेरा प्रतिपाद्य नहीं रहा है बल्कि उस काल के मानव को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करना ही प्रयास था।



इतिहास में मात्र संज्ञाएँ सत्य होती हैं जब कि साहित्य में संज्ञाएँ कास्मि-  
निक। इतिहास सफ़लता को मीरब देता है जबकि साहित्य केवल मानवता को।  
इसलिए दोनों में सामूहिक अन्तर यह है कि इतिहास सफ़लता का चारण है जब  
कि साहित्य मानवता का उद्घाषा। इतिहास में अमर होने के लिए मूर  
अप्यार्ण होती है जब कि साहित्य बनयी है। कब कौन एकान्त फूस लोहित अंकुर  
फूट कर सामुदेब बन जाएया कोई नहीं कह सकता।

मीरब टाकुर, सरो आदि साधारण मानवता के अज्ञात अनाम नबास मर्वा  
कुर है। नबरासि में भर-भर ऐसे नबास प्रस्फूटित होते हैं जो फलक की संज्ञा को  
ग्रहण नहीं करते किन्तु समर्पण होने हैं। ये अज्ञात व्यक्ति भी नहीं होते इसलिए  
अनजाने ही समाज का प्रतिनिधित्व कर से जाते हैं जब कि बड़े से बड़ा मुस-  
पुरष भी निरा व्यक्ति होता है। वह साधारण का नहीं महापुरषत्व का प्रतीक  
होता है। इसलिए इस उपम्यास में समाज को झुठला ले जाने वाली न राजनीति  
न मूसपुरष न अननायक कोई भी प्रतिष्ठामित नहीं हैं।

यह एक निपट साधारण जन की दूब-याषा है जो बरती को बस्मित करन  
की चला में व्यापक बनी रहती है। इसमें न ऊर्ध्व का बन्म है न अध की बागांका।  
अस्तु—

अन्त में मैं महिमा एवम बिपिन का आभारी हूँ जिन्होंने उपम्यास की  
मुद्रण-प्रति तैयार करने में अपूर्व वाग लिया।

प्रस्तावना छप हुई। इति नमस्कारान्ते।

१० अगस्त १९६१

१० ए, सूकरगज

इलाहाबाद।

सूत्र पथ



आज से दस वर्ष पूर्व उस दिन भी कस्बे में काफी हलचल हुई थी जब श्रीधर बाबू द्वारा सम्पादित साप्ताहिक "संसनाद" कासी से आया था। उनके अज्ञातवास की तब पन्द्रह वर्ष हो चुके थे। लोक स्मृति तो उन्हें प्रायः भुला ही चुकी थी। एक दिन सहसा एक पत्र-सम्पादक के रूप में श्रीधर बाबू का नाम और वह भी 'कासी जी' के एक साप्ताहिक पर देखकर सोचों की अविदबास हो हुआ। लेकिन जब प्रति सप्ताह "संसनाद" आने लगा तो निराचार अविद्यास आश्चर्य में परिणत हो गया। कस्बे के जीवन में पिछले कुछ बरसों में आश्चर्यजनक बातें घटने लगी थीं। बना रेस साइन आने के पहले आश्चर्य की कौन कहे सामारण घटनाएँ भी सहज नहीं थीं। रेस साइन ने इस कस्बे में अकस्म ही नास्तिकारी परिवर्तन सा दिये थे। अब आये दिन सोग उम्मेन आने-जाने लग गये। नहीं तो पहले 'मेसकाट' (मेसकाट्टे डाक ठाँपा) में बैठकर उम्मेन आने का मतलब बहुत बड़ी बात होती थी। बड़े-बड़े साहूकार, साहूकारी के लिए या फिर कोई जमींदार या अफसर ही सरकारी कार्म-कचहरी के काम स आया-जाया करते थे।

इस रेल साइन की पहली आदर्शजनक घटना के बाद श्रीधर बाबू को उनकी इतिहास की पुस्तक पर स्वयं श्रीमन्त सरकार ने जो प्रशंसापत्र भेजा था वह इस कस्बे की बूसरी महान आदर्शजनक घटना थी। और बरसों बाद उन्हीं श्रीधर बाबू ने काशी जैसी तीर्थनगरी से पत्र का सम्पादन कर कस्बे वालों को धीरबान्धित होने का मौका दिया। बस्ती के लोगों ने गर्व का अनुभव किया कि — बसो इस पठारी भूमि से भी एक ऐसा व्यक्ति तो निकला जिसका नाम बसवार में प्रति सप्ताह छपता है। पिता श्रीनाथ ठाकुर 'कीर्तनिया जी' का महत्व 'सखनाथ' से जितना बड़ा उतना उनके श्रेय दोनों पुत्रों के सिरस्तेदार या बोड़ा-भास्कर बन जाने से भी नहीं बढ़ा था। जब जाये दिन श्रीधर बाबू का कब कौन और कितना मित्र रहा इस पर बहस होने लगी। अपने कस्बे का समाचार भी जाने इसके लिए गनेसोत्सव सरस्वती-पूजा से लेकर पानेवार की बघी तक में सरगर्मी आ गयी। जाये दिन "सखनाथ" कार्यालय के पते पर उन सब लोगों की बालें साय-बाँट के साथ पहुँचायी जाने लगी जिन्होंने श्रीधर बाबू के बिना उनके बड़े भाई सिरस्तेदार श्रीमोहन ठाकुर को प्रसन्न करने के लिए फँसायी थी या उड़ायी थी।

सोफमुक्त के जालों नहीं होतीं मात्र जिह्वा होती है। श्रीधर बाबू के जाने को जिन्होंने उस समय 'मानना' कहा था वे ही अब पन्द्रह साल बाद इस अज्ञातवास की एक कर्मठ व्यक्ति का समाधिकार कहने लगे। भला सिरस्तेदार साहब की बात का विरोध कोई कर सकता था ?

—हम तो कहें कि अब सवार बचाने का डंग नहीं आठा था ताँ भाई ! यह बाल बच्चों का प्रबंध किया ही क्यों ? क्या माक बुरा जा रही थी ? भाई भौभाई पर दो-दो लड़कियाँ एक लड़के और पत्नी को छोड़ जाना कहाँ की मरुमन-साहस है ? और फिर भाई ! तुम जानो कै दिन ? अपनी सासल ही कोई कम है जो भला बूसरे की भी बाढ़ी जाए ? ये तो बेचारे सिरस्तेदार साहब पर जिन्दगी मर का बोझ हो गया।

पिता श्रीनाथ ठाकुर जिधर जाते साग उनसे सहानुभूति जताते।

—जमी तो शृंगार में देरी है आज एवभोग देर स होंगे। मंदली ही समी ? रानी तो या जामो कीर्तनियाजी।

बूना मिलाते हुए तर्जनी से तम्बाकू ही नहीं मली जाती बल्कि दुनिया पहाण की बातें भी मिलायी जातीं फटकारी जातीं ।

—तुम जानो कीर्तनिया जी ! कौसी बुढ़ीती बिपड़ी तुम्हारी भी । तीन तीन लडक उछेर कर बड़े किये । ब्याह किया । काम-अये से छमाया । बड़े और छोटे में अपनी और कूठ की इज्जत बढ़ायी । माँव का भी नाम हुआ साहब लेकिन इस सिरीबर में कसी किताम लिखी कि क्या बतारें । ठाकुर जी की सेवा करने के दिन तो तुम जाना अब आये वे । राम राम इस सिरीबर ने कौसी करी । अपने तो ऊँचा मुँह किये जाने कहाँ गया लेकिन बच्चों और बहू की साँसत कर गया अरे तुम और ठकुराइन माँ हैं तब तक तो गाड़ी खिचेपी ही और क्या । लेकिन कीर्तनिया जी ! उसके बाद क्या होगा ? भाई-भौजाई कमी कियी के सगे हुए हैं जो इन्हीं के होंगे ?

और सनी मुँह में हाथे भीनाय ठाकुर इस तरह दस बरस पुपचाप मंदिर की मोर बड़ आया करते रहे हैं । रोज रात मडसी की कपा बाँच सब कुछ समाप्त करके बुपट्टे में 'प्रसाद जी' बाँच पीछे की गमी से होटी हुए जिस समय बाबार में पहुँचते अधिकदा दुकानें बंद हो गयी होतीं । दो-एक हकबाइयों तथा पनबाइयों की दुकानों के ही गैस या हण्डे चलते निकते । इमली बाखे नुककड़ पर उनके बासभिन बासुदेब दबे की पेड़े की प्रसिद्ध दुकान भी जहाँ वे नित्य मन्दिर से लौट कर बैठते । मंडसी के बाद छतरंज की बाजी बमती और इस तरह राज बाख के पहले बर कमी न पहुँचते । बासुदेब की दुकान पर इस तरह वे पिछले पचास बरस से भी अधिक हो गया बैठते रहे हैं । इस दुकान के सामने सेठ-साहूकारों की दुकानें बौक तक बसी गयी थीं । जहाँ इस समय उन की पहियों पर मकमस के डकनों में रत्ती समझयाँ बल रही होतीं । उस दूब रंग क प्रकार में दुकानों के बड़े-बड़े पाब तकिये ऊँचते से छगते । कमी-कमी भाग होने लगता कि उन गाब तकियों ने ही साळ पगाइयाँ पहन रत्ती हैं और वे ही साहूकार हैं । दूर किले के कौमुरों पर सप्तपि बेब कर ही समय का अदाया किया जाता और भीमाथ ठाकुर का दिन समाप्त होता । ऊँचती गठियों और बौबाते मकानों में अपने बछने की प्रतिष्ठति किये वे घर पहुँचते ।

लेकिन श्रीधर बाबू की माता के लिए तो ठाकुर जी के दर्शन करने जाना और करना दोनों ही मुश्किल हो जाते । न हुआ कोर्ड, तो जैन सेठानी माँ ही रास्ते में साथ हो सी । उन्हें 'यागक जी' या 'केसरिया जी' के मंदिर जाना होता ही था । मका श्रीधर बाबू की माँ स अच्छा और क्या साथ हो सकता था ? मकान

पहनों से बात पसले चलते श्रीधर बाबू पर अबस्य ही जाती । तरस जाया जाता । सहानुभूति दिखलायी जाती । दोनों बूँद निकाले बाजार पार करती और अस्प-  
ताक वाली यमी पकड़तीं जहाँ से दोनों के रास्ते बलम हो जाते । श्रीधर  
बाबू की माता इन बातों से बचने के त्याग से 'मंगला' में न जाकर 'शुमार'  
के दर्शनों को जातीं । लेकिन कुछ नहीं तो सुनारन माँ ही भिख जातीं ।

—क्यों बहू ! सिरीधर का पता लगा ? अरे ऐसा भी क्या जागा ।

उपर बर्धन होते मुलिया की बर्ष में ठाकुर जी को शुमार दिखाते होते  
और इधर सारे कीर्तन को भीरते हुए सुनारन माँ 'गोबन्द-गोबिन्द' की टेरु  
के साथ सहानुभूति जताती होतीं । या कमी 'मंगला' के बाद 'शुमार' के  
लिए फूसों की माला मंदिर के चौक में बैठकर बनाते हुए बड़ी हबेसी वाली  
सासू माँ ही खोर-खोर कर पूछतीं

—बहू ! सच्ची ही सिरीधर अपने से क्या ? मुझे तो क्या है कि बड़े की बहू  
में जाकर डैब-भीच कह दिया होगा । अब तुम तो जानो ही हो मरद की  
बात टहरी । कोई बात कम गयी होगी । अरे नहीं तो उम जैसा सुशील  
कड़का भास-यबोस ही नहीं बुर-बुर ठक नहीं बिलेगा । इन भीर्यों के मारे  
ही घर का बंटा डार होने है । लेकिन बहन ! कीर्तनिया जी को थोड़ा  
कड़ा होना चाहिए, इतना सीबा भी मरद किस काम का ।

भयभान के दर्शन और अपना जीवन दोनों ही डुकम हो गया दोनों का ।  
मंदिर के उस बड़े से चौक में 'अयनारती' के बाद मण्डली रोम ही जाती ।  
जिधर कुर्मा है उपर ही एक लंबे पर आकटेन टिमटिमाती रहती । तुछसी कपारे  
के उपर छोटा 'अय भीहृष्य' अय भीहृष्य' बीबा करटा । श्रीनाथ ठाकुर  
"बीरामी बेष्ववन की बाठी" सुनाते होते । दो कपामों के अन्तराल में कोई  
न कोई परधुमी मधी या मुनीम छेड़ बैठता

—कछ पता चला मैंसे का ? उम्मीन में तो तुम जानो वो है नहीं । ममी  
कल ही तो कँवर बर्नी पया या । वहाँ होता तो सिद्धनाथ हृषिडि गापाल  
मन्दि, बेबाठ नेट कहीं न कहीं तो मिलता ही । तुम जानो मेरी समझ  
में ता वो मन्डबा पसे पार ही निकल गया होमा । इन्धीर-बम्बई में  
कीमिन की ? आज कल के छोरो को अरु सा पड़ा बा तो बस सीबे  
बम्बई ही पहुँचते हैं । मीने ता तुम जानो इसीलिए अरान को अभी से  
डुकान पर बिगल दिया । लूटे से बाँप दो फिर बहो—बन्धु  
कितना उठकोगे ?

और फिर अगली कक्षा आरंभ हो जाती मन्दिर के अलमलिया नामादर  
 न जब "शत्रुनाद" की प्रति देखी और आरम्भ हुआ तब उमने उतनी ही  
 तन्मयता से भीषर बाबू की स्तुति आरम्भ कर दी जितनी कि वह निन्दा बिना  
 करता था ।

जिस दिन "दालनाद" की प्रति बायीं थी उम रात देर तक बोंगबई (जैसे  
 बासा मूसा जब गुजरती बरों में प्रायः हाँसा है) के बड़ों की आवाज में 'विष्णु  
 सङ्खनाम' का पाठ करत हुए पिता श्रीनाथ ठाकुर आकृष्ट बने रहे । रात्र की  
 तरह आत्र नी पाम ही बठा भीषर की माँ 'जैममा नमबते वामुदेवाय' का जप  
 करती बाहर के दरवाजे पर टकटकी लगाये थीं कि कभी तो भीषर के पैरों  
 की हल्की आहट मनायी दे जाए । भीषर जिस तरह दरवाजे की कल झोकता  
 है उमके पैरों का आहट कसी है वह किस तरह घर में जाने पर मन्मन पहले  
 उनके पाम आकर बैठता है न कि बड़े और छोटे बेटे की तरह अपने कमरे में जाकर  
 बीबी में ही-ही करत सीधे पहुँच गये । हँसत में कसे उसक दाँत मीरी  
 बीच बमकत है । भय ही इस नहीं पचास बरस भी हो जाएँ वे दूर से पहचान  
 सकती हैं कि हाँ वह भीषर ही है । धापा का पत्नीना 'इनकी' तरह नहीं  
 बान्ता नहीं ता गेर सायाँ का था—वन नगवान बचाए ।

बोपहर में "गलनाद" की प्रति लेकर वे अपने पूजाघर में जाकर कैम  
 फटक-फटक कर रोती रहीं थीं कि जैसे भीषर ही हा । वह 'कानी जी' में है ।  
 इस अलवार को उमने काम तौर से अपनी माँ के लिए भेजा है । वे उन अलवार  
 का एक-एक अक्षर बिना समझे पढ़ गयीं । और रात्र भर नहीं सो सकीं ।

"शत्रुनाद" की प्रति लेकर माँ सरो के कमरे में पहुँची और उमे मीने से  
 उपाकर फूट पड़ी । उनक मौखस तक भर उठे वे जैसे भीषर सारे बरनों को



भीरवर उतकी गाड़ी में आ गया है। भीरवर है, 'कासी जी' में है। इस बात से उन्हें परम सन्तोष हो रहा था। और इसका निरूपण वे बार-बार बहू के मुँह पीठ हाथ पैर पर अपने काँपते हाथ फेरकर कर रही थी। बहू बेटा हो गयी थी। पिछले पंद्रह बरस के बहू के सारे तन और मन के भाव में आज छूकर एक बार में ही भर पना आहूती थी। आज ही वह उन्हें सीमाम्पवती बिबा हिता जाने क्या-क्या लग रही थी।

जैसे ही पति ने जाने की आहूत हुई, ओसारे का बीया बड़ा कर के बिना पाठ किये ही करबट के प्रयास हो छेड यमी। बीबार पर अँबेरामुछा उजाका बिछल आया था। वे चारों ओर से असम्पूक्त हो इस समय भीरवर में ही बनी हुई थीं। रह रह कर बुटनों बसत भीरवर से केकर मोल इटाकियन टोपी चुनटी घोठी बाले मास्टर भीरवर बाबू पाव आ रहे थे। वे उस बनदेखी अनजान 'कासी जी' में अपने भीरवर को बूँदती रहीं। तभी पति बरबाजे की कस सगा जीवन में आये। उतकी ओर पीठ होठे हुए थी वे जान यमी कि पति ने एक सभ ठिगक कर देना है कि क्या वे सो गयीं? जुँटी बाली चिट्ठियाँ चटकाते जब वे बँनबई पर आकर पाव तकिये का सहारा केकर पकधी मार बैठ गये और अन्य दिनों का अनापास "बिष्णुमहस्र नाम" का पाठ आज सायास बारम हुमा सब भी वे बीबी ही बनी रहीं। वे सोच रहीं थी कि अब तो मानता बरुरे पूरी करली हसो। भीरवर का पता लगने पर वे मन्धिर में एक सोने की झारी भेंट करेगी तथा जाड़े भर अपरस में स्नान करेगी —वे मानता वे अब अस्य ही पूरी करवा पाह रहीं थी।

पाहपर था। बारक फिर आये थे जिनमें से चन्द्रमा कभी-कभी शकक छटना था। अष्टि जीमे मुँहरेतों मुक आयी थी। पाठ समाप्त कर पति ठकिये

के सहारे बचपेटे कुछ सोच रहे थे। धीधर की माता ने करबट बदली और बोसारे क शिखरे औररे में बैसा कि पति अर्धनिमीसिठ से विचारमग्न है। 'इन का' मुक्त धीधर से कितना मिसला है? वह भी वा ऐसे ही धिर के नीचे हाथ रखकर सोठा है। ठीक ऐसा ही आकार है उसका भी। बस अन्तर है वो यही कि उसने रंग और कव अपनी माँ का प्राप्त किया है। तभी पति सचेष्ट हुए। दूर पुकिस काइन के बटि ने बारह की मजर बचायी। सिरहाने रखी ताँबे की कलसी से उन्होंने बल पिया और बापस बँसवाई को एक पैर स झुका देकर सेटे ही थे कि वे बोसीं

—सुनो धीधर सचमुच ही 'कासी जी' में है न?

—अरे तुम अभी सोयीं नहीं क्या?

—नींद नहीं आयी?

—नींद तो मुझे भी नहीं आयी। कैसा दुष्ट है तुम्हारा रुझा। पंद्रह-बीस बरस हो भये बेचारी बहू की भी कुछ चिन्ता नहीं उसे। कोई इस तरह भाग जाता है? कैसा माम निकाला इसने।

—अब तुम तो उसके पीछे ही पड़ गये। मुहस्के-टोले वाले ही क्या कम थे? पता नहीं वह बहू किस तरह होगा। इसकी तो कुछ चिन्ता नहीं। अरे, उसने कितना बड़ा अलवार कासीजी' से निकाला कि वहाँ से यहाँ तक नाम हो गया। सब लोग किसी दूसरे की इतनी चर्चा करते हैं इतनी तुम्हारे धीधर की?

—हरि इच्छा ।।

और धीनाथ ठाकुर सेटने के लिए करबट बदलने लगे।

—बात टालो नहीं। सुनो क्या हम लोग 'कासी जी' बचकर उसे बिना नहीं ला सकते? धीरज भी हो जाएगा गंगा जी भी नहा लेंगे और

—अब जब उसने अपने होने की खबर दी है तो वह जाएगा भी बहू को नी ले जाएगा हम भी चलेंगे। पहले उसे

—यही तो तुम्हारी बुरी आदत है कि पहले वह कितने आये तक कहीं कुछ तुम करोगे। है न? बाबिर रुझा ही है। हमें जैसे ही खबर लगी है उसे देखने

—तो फिर मुझसे क्या मुछ रही हो, करो अपने मन की।

—तुमसे तो बात करना भी कठिन है। ठीक है फिर लड़ा तुम बेटे से लड़ाई। मैं तो अब एकावली से ही मस्तिर में अपरस में गहारा कलेंगी। मुक्तिवा जी से कह देना।

—बीमासा ता हो जाने दो। आठपल मा रहे हैं मुझे सबहुर्गा में भावबत जी

बाँधने नरसिंहयज्ञ महाराज के यहाँ जाना होगा। कैसे क्या होगा जरा सोचो तो ?

—सारी उमर तो यही सब बिभारते-करते बीती। मैंने ता मानता मानी भी मो पूरी करली होनी। बनी तो ठाकुर जी के लिए सोने की झारी भी बनवाने का प्रबन्ध करना है।

—लेकिन सोने की झारी के लिए पैसे बाँधि

—मरे पास एक गलसरी बनी भी चार तोले की है। उसी से मेरा प्रण पूरा हो जाएगा। भीषर से ज्यादा गलसरी नहीं है।

—हरि इच्छा !!

जीर पति ने बेंबर्ई को झुका दिया। कर्जों की यात्रा होने लगी। बाँधों में बहुत रात बीत गयी थी यह धोनों को ही पता नहीं चला। बूट कोई बहू पिसना पीमठे चक्की के घब गा रही थी।

कविम आत्र जबसे कायों का मामूम हुआ कि स्वयं श्रीपर बाबू पूरे पञ्चीस बरस का मासवा लौंग रहे हैं तब से कम्बे में बहुत बड़ी हलचल होनी स्वभाविक ही थी ।

देवीसिंह टाकिये ने जब दान का घेला खासा और मुहल्लेदार चिट्ठियाँ लपायीं तभी उनसे बेला कि एक ही किन्नाबट की अनेक चिट्ठियाँ हैं और जो कि छावनीबाग सठ पूनमबद जी रिटायर्ड भावरगियर गारापन बाबू बड़ी हबेसी बाग चिट्ठेकनाय जी बामन मापन जिनस बकीस साहब कासेसी मन्त्री दुर्गनाथ जी नामर तबा श्रीनाथ टाकुर कीतनियार्जी के नाम लिखी गयी हैं । देवीसिंह ने मात्र उरमुकताबस एक काई अक्षय पत्र किया था । उस महमा बिरबाम नहीं हुआ कि उसक 'गुरु जी' श्रीपर बाबू? जा बिना कउ बहे-मुने एकदिन मना-पाम बसे मये से कस आ रहे हैं । तो क्या उन्हें यह भी नहीं मानूम कि उनके पिता-माता का देहान्त हो गया है? 'भौर्नतिया जी' को पत्र लिखने का प्रयोजन? कदाचित् घर क लोयों को मूर्खित करने के लिए किया हो ।

और देवीसिंह के मामने आत्र न पञ्चीस बरस पून के 'गुरु जी' मूर्त हा उठे ।



पूर्व पथ



भीर देवीसिंह के सामने आज से पच्चीस बरस पूर्व के 'गुरु जी' अपनी उसी इटासियन गोल टोरी बन्द घले का एडवर्ड कोट, खुपटी घोड़ी गले में दुपट्टा पैरों में पम्प घू पहिने ठेक चाल में दिखायी दिये । मुस पर घरा यह भाव कि किमी का नहीं पहचानते । आयु यही २५-२६ की रही होगी । जालें मंजें हुए तबि के पञ्चाश ती जमनवाली किन्तु उनमें लाल बजरियों पर बोलती उषान बापहारी की छाया का एकान्त मी सबा मुन्नर रहता । हम्की पठपी मूँछें उनके कम्बे मूँह की सन्तुम्भि ही करती थी । एव नासिका क सम्बेपन को छोड़कर उय मुस में कोई बिसेपता गिताना बठिन ही या । जा या अति साधारण ही या । बिशिष्ट या आचार के अतिरेक के नाम पर देवीसिंह को यही याद रहा कि बे बप्पब होते हुए भी नित्य पापिब-मुजन किया करते थे ।



आज की भाँति न तो अंग्रेजी मिडिल स्कूल ही था और न स्कूल की यह वतमान इमारत ही थी। बल्कि उन दिनों तो हिन्दी फाइलस मिडिल स्कूल था और वह भी आजकल छावनी में वहाँ कोभापरेटिव बैंक है, वहाँ रुमा करता था। स्कूल बनाने के पहले वह फौजी डाकघर था। डेबे टैले पर बना स्कूल किसे की जाती से ही दिखायी देता। उसका घन्टा तो ठाकुर पर महाने बासों को दिन भर सुनायी पड़ता। स्कूल के जापन में जहाँ घन्टे के पास बड़ा सा बाका था उसमें गाइगिस हेड मास्टर साहब का पीने का पानी रक्ता रक्ता था। पानी का जर्मन सिलबर का पत्रकटा लोटा घूर से ही दिखायी देता था। कोई उसे छू नहीं सकता था क्योंकि पाइपस साहब कट्टर इक्षिणी ब्राह्मण थे। उनका बरतरी ब्राह्मण मीकर जूते निकाल कर ही पानी पिशाटा था।

श्रीधर बाबू मिडिल कक्षा को हिन्दी इतिहास तथा भूगोल पढ़ाया करते थे। स्कूल की दीवास-बड़ी का 'डेलेक्स' आये दिन ड्राइंग मास्टर रघुराम सिंह कुर्सी पर बड़े ठीक करते हुए देखे जाते। एक से लेकर बारह तक बड़ी बजाती फिर भी कभी ठीक नहीं आती। बतएव पूरे स्कूल का टाइम टेबल श्रीधर बाबू की एकमात्र बेबबड़ी पर निर्भर रहता था जो उनके कोठ की ऊपरी बेच में कामे डोरे से बँधी रखी रहती तथा जिसका काला डोर गले में पड़ा रहता। घन्टा बजना है इसके लिए अपराधी को हर बार उनके पास आना पड़ता था और वे पढ़ाते हुए हाथ की अँगुलियों से मिनिट बता दिया करते थे कि अभी कितना समय है। फलस्वरूप घन्टा प्रायः शेर से ही बजा करता था। श्रीधर बाबू स्कूल से लौटते हुए तारबर से घड़ी मिचाना कभी नहीं भूलते थे। उसकी चारणा थी कि श्रीधर बाबू हीबे अवश्य हैं किन्तु बल्पस्थ नीरस व्यक्ति हैं जो राह चलते भूक कर भी धिर नहीं डँबा करते। प्रायः लोगों ने उन्हें चुप्पा ही देखा था। पढ़ाते हुए भी वे कभी डँबा नहीं बोलते थे। बल्कि हाजिरी भरते हुए भी वे लड़कों का नाम तक नहीं पुकारते थे। रजिस्टर खोला चुपचाप लड़कों की ओर देखते पस गये और भर लिया कि कौन आया कौन नहीं आया। श्रीधर बाबू नियम मिष्ठ थे बल्कि यह कहा जाए कि वे अपनी सीमामों को भली भाँति जानने वाले व्यक्ति थे।

ऐसे श्रीधर बाबू न " राज्य का औरबमय इतिहास" नामक एक पुस्तक भी लिखी थी। इतलिये वे इतिहास कैलक भी थे। वह इतिहास जो न केवल मिडिल बच्चा के लिए ही उपयुक्त समजा गया बल्कि स्वयं श्रीमन्त सरकार ने इस पुस्तक पर एक प्रशंसापत्र उन्हें भेजा था। वह प्रशंसापत्र मुनहरी फेम में

पैदा उनकी बैठकी में टंगा रहता था और बिसकी मुस्तर मधरा में एक प्रति लिपि हूब मास्टर साहब के कमरे में भी टंगी रहता थी।

निष्ठावान वीष्णव ब्राह्मणकुल में पण्डित श्रीधर बाबू का जन्म एक इतिहास लेखक के रूप में किस प्रकार हुआ इस पर आश्चर्य करना व्यर्थ है। क्योंकि नार्मल हूब के लिए, उन्होंने जो निबन्ध परीक्षा के समय लिखा था उसमें वे सारे आधार मूत्र तब मौजूद थे जो आगे चलकर उनसे इतिहास लिखवाये गये। इतिहास का प्रथम नहीं बल्कि उनका निरूपण आश्चर्य की बात थी। अपने राज्य की गौरवमय सिद्ध करने के लिए श्रीधर बाबू ने पाण्डवों के अज्ञातवास से लेकर मागध सभारों की दक्षिण यात्राओं के सारे अभियानों का सम्बन्ध इन प्रदेश से जोड़ा। अपने यहाँ के कालिका के मन्दिर की प्रसिद्धि का ऐतिहासिक कारण वे यह मानते थे कि कालिदास ने इसकी स्थापना की थी और इन्हींके उनका नाम कालिदास प्रसिद्ध हुआ। भारतीय इतिहास की अधिकता महत्वपूर्ण घटनाओं का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में इस प्रदेश से या तो उनके आरम्भिक कारणों के साथ सम्बद्ध मिलेगा या फिर उनके परिणाम के साथ संयुक्त। इस प्रकार श्रीधर बाबू की यह ऐतिहासिक कृति न तो असत्य ही कही जा सकती थी और न ही प्रामाणिक थी। गौरवमय यह अवश्य थी और (संभवतः) लेखक का भी अभीष्ट मात्र इतना ही तो था।

लेकिन इस पुस्तक के कारण जो भी मौलिकता या यथार्थ उपलब्ध हुआ उससे उनके व्यक्तित्व में कोई विकार नहीं आया। वे उन दिनों स्वामी विवेकानन्द की पुस्तकें पढ़ा करते थे। वे कब इतिहास और भूगोल पढ़ाते-पढ़ाते साहित्य और कब साहित्य पढ़ाते-पढ़ाते विवेकानन्द पर आ जायेंगे इस बारे में कोई निश्चित नहीं कह सकता था। वे चाहे अधिक साकप्रिय न रहें किन्तु स्वच्छ के पात्र माने जाते थे।

इतिहास लेखक श्रीधर ठाकुर कुम्हिन तो नहीं ही थे लेकिन कलसीक वाले यक्ष्म थे। शास्त्र एवं मीरस कर्मों वाले इस व्यक्ति के बारे में सभी की प्रार्थना थी कि कुछ भी हो श्रीधर बाबू पील सम्पन्न आशाकारी हैं। लेकिन स्वयं के बारे में उनकी प्रार्थना थी कि मैं यह सब हूँ नहीं पर ऐसा आभास होता है। कोई क्यों नहीं मानता कि मैं भी कभी बिरोध कर सकता हूँ? पुस्तकों ने अनेक सम्पन्न विद्यार्थियों का उनके निकट व्यक्त कर दिया था। स्कूल और कस्बे के पुस्तकालय की अधिकांश पुस्तकें वे पढ़ चुके थे। एक साथ अनेक विभिन्न विषय उन्हें माहुरे थे। श्रीधर ठाकुर को कोई व्यसन नहीं था। लेकिन कभी-कभी वे

अपने हो एक मित्रों के यहाँ शतरंज खेलने पहुँच जाते । नारायण बाबू जो कि अब आबरसियरी से रिटायर्ड हैं चुके हैं उनके गहरे मित्र हैं । दूसरे उन दिनों एक बंगाली शतरंजबाबू के वेमेन मजूमदार । शतरंज के बड़े शौक़िन थे । पाँच बजे आफिस का काम पूरा कर वेमेन बाबू सड़क के सामने वाले बगीचे में मसनद और कसियाँ इसबाकर एक टेबल पर प्रामोफोन में रेकार्डें चढ़ा मित्रों की प्रतीक्षा में बैठ जाते । बड़े ही हुँसमुख मिसनसार वेमेन बाबू का सबसे-बड़ा-बुर्मास्य यह था कि उनकी पत्नी पापक हो गयी थी । एक मात्र सन्तान के चल जाने से वेमेन बाबू का भी जीवन एक बम उदास हो गया था लेकिन किसी तरह संगीत तथा मित्र मइसी में बैठकर उसे भूले रहते थे । पत्नी के लिए वह बटना बत्पन्त हानि कर हुई । वे एक कमरे में बन्द रहती थी । हर रात तक शतरंज खतरेज को मज क्रिम व साब-साब उमङ्गण परमहंस विवेकानन्द रबीन्द्र से भी परिचय हुआ । लेकिन यह कभी-कभी ही होता था क्योंकि वेमेन बाबू के दरबार में और भी लोग जा आते थे और वह सब भीषर बाबू को प्रिय नहीं होता था । प्रायः ता यही हाना था कि स्कूच की सुट्टी के बाद शहर जाने वाली बड़ी सड़क पर बंतीन मील राज हुआ खाने खाना और लौटकर बाबूसाही पृथ पर बैठकर बल में मिरली बिजे के केंद्रों की परछाइयाँ देखते रहना । दूर सूर्यास्त का पीलापन पारों और जैसे सुटा पड़ता था । जगमग से सौटो पशुओं के रँमाने की आवाज किन्हीं ऊँची ऊँची पत्थरों वाली काली बाजारों से प्रतिध्वनित होकर अब सौटवी उसमें एक मजीब सी रहस्यात्मकता अब और भी जा जाती थी जब साँझ का पीलापन जल में झरने लगता । उस ऐकान्तिक सूर्यास्त को, पाक्षियों का राध तथा गरी ब पत्थरों पर टकराना एक ऐसी बुरागत विम्पनी बना देते थे कि अफीकित । हल-बकर कंबे पर उठाये जब हामी-मकामी कच्च रास्तों से पत्नी सड़क पर जाते ता 'उम-उम माराज' कहकर या ता पान से निकल जाते या फिर रास्ते की बूक को पीछने के लिए गयी में बँस जाते । पत्थरों पर दौड़ता प्रसन्न तालिक अपन एबान्त माध से असम्पुक्त बहता होगा और पानी में हारों पैरों व छाने-छोटे दूट जाने वाले कचइस बनने लगने । बोरों की गमबटियाँ दूर तक ननायी पड़ती जैसे आवाज भी एक मीमी गाय है और उसकी गमबटियाँ बाल नहीं हों । पोवाली की हौक मुनाबी पड़ती । और तभी किमी बजान के स्वर के साथ ही भीषर बाबू अनामरब हो सौटने । लेकिन मन में अव्यक्त वेमा सदा ही कुछ रोप छूट जाता बिसे न बे न सूर्यास्त न आकाश की मीमी गाय की गमबटियाँ कुछ भी तो नहीं पकड़ पाते थे । उम रोप

को न तो अमन्ताप न दुःख न बदना न परिताप कुछ भी ना नरा कह सकते थे।

गण्ड शरीर  
 १। पूर्णतः  
 २। सख  
 ३। स्त्र  
 ४। शरीर  
 ५। शरीर  
 ६। शरीर  
 ७। शरीर  
 ८। शरीर  
 ९। शरीर  
 १०। शरीर

लौटते में रोख ही बिगले बकील माहब से साक्षात् हा जाता। अबद मानु के मुन्नी व्यक्ति क सारे बिन्हु उनक अग और नूवा म स्पष्ट थ। व उन समय अन्ने बट म बन्धुतरे पर आराम कर्मी पर बिधाम करन हान। मामन विद्या हुइ काठ आबम और सफ़र बादनी क एक मिर पर स्टूक पर बड हण्ड बापा लेम्प अकरी होनी तथा वेगवार मुबस्किता स घिरा मिमक नितता हुना। यह मन्ना हुइ मकता था कि बिगले माहब थीघर बाबू का दम ले ना व बिना मिन बिना कुछ बेर बैठे बले जाएँ। बिगले माहब का उम वेगबाई इग की प्राधान मकदा का बड़ी हवेमी में दरबाज के उपर बहाँ आगे निकला मकदा का गबाम था ज कि प्राय गहनाईबाला से बैठन क लिए बनाया जाता था उन पर मन्ना बिके पड़ी रूती थी। बहाँ से समीप के गिमाज का स्वर आता रहता—कैनी निकमी बादना—'उपबनि पाठ कोकिला। किनी घर स गमापण की बीपाइयां मुनन में आ जाती। घर के मोड़ पर फइनबीस का बाड़ा पडना था। बहाँ मवागिब राव रहा करत थे जो सूबात में वेगकार से लेकिन बड बैठकबाज। इनक माप ही जब बैठक उठ जाती तब अपने बन्धुतरे पर टहलन हुए डोग-आर मे एर पाठ किया करते थे। उनका एलाकपाठ दूर तक सस्वर मुनायी पडता था। रास्ते में पानक जी (स्वानक) के अँबेरे हाल में प्रार्थनाएँ घाते हुए जैन साधुओं की बतियों की (यतियों) मुँहबैबी आवाजें मुनाया पडनी या फिर बमापदेग चलता रहा। इस समय तक रात की लगभग धुस्रात हा हाती थी पर म्युनिमिपेलेतो का लेम्पोस्ट पमकता ही मिरता। नौ बजे रात तक जल मके—इतना तैक शब्दने का हुकम होने पर भी पटा नही क्यों कर्नी तो समीसात लेम्प बुझने लगती और नापनाय की यली से लेकर अस्पताथ तक एकदम अँबेग पुन हा रहता। दिनपर बानी में पिककर बेल बाहर बँबा हुमा सक्ती लागता हुमा मिमना। स भी की गन्ध दूर से ही आती बिसके साथ कण्ठ तैक की भी बिपबिपाहट हाती। घर के मानने कर्ने में बना बड़ी सी बाबरी में बड़ी दुबके बन्धुतरा की गुटरपू बडुत गहर म आती लगती। बिना किनी कास जस्थाह के भीबर बाबू घर पहुँचन रह है। उनकी पली तब रात्रीबर में या ता कुछ काज करती हाती या फिर बर्तन माँके बाते। अपने कमरे में जाने के पूर्व व जबप्य ही माँ क पाम पाँच-दम मिनट बैठना नही भूलते। जब उनकी पत्नी सासुमाँ के हाथ पैर दाबने के लिए आती तब कहीं भीबर बाबू नही स उठते।

अपनी उस कौठरी में एक समई के प्रकार में सोमे बन्धों के मुख वृष बुझे लगते ।

इसी प्रकार के समरस जीवन में वे जन्मे वे बड़े हुए वे और बीच बर्ष तक पहुँचते न पहुँचते वे पति बन गये वे । वैवाहिक जीवन के गत पाँच-छ बर्षों में वे निबमानुसार दो पुत्रियों और एक पुत्र के पिता भी बन गये वे । इस प्रकार पच्चीस-छब्बीस बर्ष की आयु तक कोई व्यक्तिभ्रम नहीं हुआ था । वहाँ तक स्मरणीय घटना का सवाल था उसमें दो ही बातें महत्वपूर्ण मानी जा सकती थी । एक तो नार्मल स्कूल के लिए बाहर पढ़ने जाना तथा दूसरे इतिहास लिखकर अगायास प्रघसा की प्राप्ति । इन दो छोटी-छोटी उपलब्धियों के बल पर भीतर बाबू किशन दिन एक परिवार तथा दूसरों की दृष्टि में महत्वपूर्ण बने रह सकते थे ? जब कि उनके दोनों माइयों ने न केवल प्रगति ही की बल्कि अपनी प्रगति का परिचय भी पत्नियों के आनुपणों द्वारा अवसरों पर दिया करते थे । भीषर बाबू का ध्यान कभी इस ओर नहीं गया । यह कोई अस्वामाबिक भी नहीं माना जा सकता लेकिन पत्नी सरस्वती देवी ने कभी उलझने के रूप में एक क्षण को भी अपने इतिहास के एक पति से जेठानी तथा देवरानी की इस 'प्रमति' पर कोई असन्तोष प्रकट नहीं किया । जब पत्नी ही बीतरागी हो जाए तब भला कौन पति चाहेगा कि झोलासी में सिर दे ? कदाचित्त इसका कारण यही था कि सरस्वती देवी अपने माता-पिता की एकमात्र सहाय थी । इसलिए संतोषी माता-पिता अपनी सन्तान में वे सध 'सद्गुण' सहज उपसम्पन्न कर सके जो परिवारों की 'बतु राइयो' के कारण बन्धों को सहज प्राप्त हो जाते हैं । दूसरे कारण यह भी कारण था कि सरस्वती मासका की नहीं थी । उसका मायका सौरों में था । पिता अंग्रेजी के अध्यापक थे तथा अपेक्षाकृत अधिक आधुनिक । पुत्री को छोड़ी बहुत अंग्रेजी सहित तथा हिन्दी से परिचित करा रखा था । इस कारण सरस्वती में वे सब 'सद्गुण' नहीं थे जो एक मरे-मूरे परिवार की बहनों में होने चाहिए—दो कि बार किस प्रकार की जाती है, बहियों का ममासा पूछने वे बहाने दूसरे की गतिविधि से स्वयं की किस प्रकार अवगत रखा जाता है तथा दूसरों को किस प्रकार जतसे अवगत कराया जाता है । ये ही तो 'आन' के वे सोपान हैं जिनके माध्यम से बहुरे प्रगति एवं उन्नति करते हुए एक दिन माम के परमपद को सुगामित करती हैं । सबरे से देर रात तक काम तो मट्टी भी बरती है भीषर भी बहू में दिया था क्या सास कम गये ? किसी पर जगार किया था ? और भले ही सागुनी पर उपकार हो लेकिन जेठानी या देवरानी

पर नहीं। जब सामुं का मन्दिर से ही फुंसत नहीं मिस पाती तब भधा  
 बर कौन सम्हाले ? क्या बिना उनके बर नहीं बछेगा ? ऐसी हाष्टत में  
 बरी बहू ही न सम्हालेगी ? भर सम्हालना कोई आसान काम है ? इतने  
 सोप । इतने बच्च । इतने जाने-जाने बाल । कमी यह बीज कनी बह  
 बीज । कोई एक मुनीबत है ? क्या यह सब काम नहीं है ?—रुही 'डाक्टर की  
 बहू' ता बेचारी बनी तो दो बरस हुए ब्याह कर मायी है । खेसने-जाने के यही  
 ता बिन होने है । मरे भागे पीछ चून्हे-बकरी में तो बेचारी को लटना ही है ।  
 और सच्ची बात तुम जाना तो यह भी है कि डाक्टर का कनी भी तवावरका हो सकता  
 है । मान सा हो ही मया, तब बर का काम-काज कौन देले-भासेगा ? मँसली  
 बहू ही को न करना पड़ेगा ? बरी बहना अपने अपने बच्चों का तो सनी करे  
 ही है । बड़ी के तो सारे बच्चे बड़े हो गये । छोटी के बनी हैं ही नहीं । और  
 इस प्रकार मँसली बहू थीमती सरस्वती देवी 'अपने बच्चों का काम-काज करत  
 बरते भाषी रात फुंसत पाती । लेकिन न तो कनी बीघर बावू ने ही पूछा और  
 न सरस्वती देवी ने ही कनी मूखकर 'काल-कूँलकर' ही बताया कि गृहस्थी  
 किस तरह बस रही है । दोनों पति-पत्नी अपने-अपने ढंग से उदास, अश्वस्त, सांसा-  
रिफ पारिवारिक बन बे ।

लेकिन उन दिनों भी उन्हें कुछ सोग असाधारण तो मानते ही थे । बिदेय  
 कर पेमेन मजूमदार । भले ही उन्हें असाधारण न भी माना जाए, कुछ विशिष्ट  
 बकर भासा जा सकता था । इस मानने में उनकी सफलताओं से अधिक उनकी अस  
 कच्छाओं का ही महत्व होगा । उनके बड़े भाई श्रीमोहन ठाकुर ने बन्दोबस्त के दिनों  
 में पूरे राज्य की पैमाइश की थी । जिस तरीक से उन्होंने यह ऐतिहासिक कार्य  
 सम्पन्न किया था वह आज भी उनकी पत्नी की सास हिफाजत में है । पति उस  
 तरीक को पकड़ कर सुबात में धिरातेवारी तक पहुँच गये थे और पत्नी ने उसी  
 तरीक से पूरा मुहम्मद-टोसा नाप डाला था । छोटा भाई श्रीबल्लभ ठाकुर बोझ-  
 डल्टर हो गया था । जिसके लिए यह जनश्रुति थी कि यह महाशय यदि बाद  
 मियों के भी डाकुर होते तब भी जानवरों वाली सुई का ही प्रयोग करते । पिता  
 श्रीनाथ ठाकुर आजम ईप्पब मन्दिर में 'कीर्तनिया जी' रहे तथा इबभूमि तक  
 रासमण्डली के जाया करते थे । अतिरिक्त इसके वे लखनपुरा में मागबत भादि  
 बीचने पास-पड़ोस के राजा-महारजाओं के यहाँ जाया करते थे । वे बड़े ही  
 पंडित तथा मागबत ब्यक्ति माने जाते थे । पूरे भारत में दो ही स्वानों पर कंस  
 बरनी का उरसब मनाया जाता है—या तो मधुप में या फिर यहाँ । सोग रासम-

पूतना आवि बनते हैं । कंस-बारे पर कंस की एक विद्यास मूर्ति बनायी जाती है । कृष्ण जाते हैं और तब कंस-बहन होता है । श्रीनाथ ठाकुर जितने अच्छे रामस बना करते थे वैसा फिर दूसरा कोई नहीं बन सका । वे विद्यास काय, पौर वर्ष वाले पूरे कदावर व्यक्ति थे ।

ऐसी सीहू देह का व्यक्ति यदि बिछोड़ करता तब भी सब की समझ में आता लेकिन वे तो आनीबन शान्त सन्तोपी ब्राह्मण ही बने रहे । किस प्रकार श्रीनाथ ठाकुर को उनकी सीतेसी माँ ने परेधान किया यह क्या करने के लोग नहीं जानते ? लेकिन 'हरि इच्छम' कह कर जिस सन्तोप तथा शैव का परिचय उन्होंने दिया उसे यह 'कम का श्रीधर' भसा गया समझ सकता है । जरा-जरा सी बात पर यदि आदमी मीकरी छोड़कर बर से भाव निकसे तो फिर यह संसार जाने कम का बूब ही गया होता ।

एक दम निरीह 'अस्मा की गाय' लगने वाले श्रीधर बाबू ने जब सहसा विद्रोह किया तब किसी को कैसे विश्वास जाता ? स्वयं गाइगिल साहब भी आश्चर्य में आ गये जब श्रीधर बाबू ने वृद्धता से अस्वीकार दिया । बात कितनी साधारण थी लेकिन कौन कहे ? एक दिन बम्बई क्लास से श्रीधर बाबू को गाइगिल साहब ने बुलावाया और शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर का पत्र सामने कर दिया । सिखा जा कि श्रीधर बाबू ने अपने इतिहास में भीमन्त सरकार तथा उनके पुष्य स्मरणीय पितामहों का बारबार उल्लेख करते हुए उचित राजकीय सम्बोधनों एवम पदवियों का प्रयोग नहीं किया इस कारण राज्य में बड़ा असन्तोष फैल गया है । देखकर इस मुक्त को तत्काल सुधार तथा एक समा पत्र भीमन्त की सेवा में विभाग के मार्फत लिख कर ज्वलन्ध भेजे ।—श्रीधर बाबू ने बीसियों उदाहरण देकर बताया कि इस प्रकार के विशेषण इतिहासों में नहीं लगाये जाते इसलिए समा पत्र का प्रदन ही नहीं उठता । हेड मास्टर साहब ने कास सम्मान की चेष्टा की लेकिन श्रीधर बाबू और भी तेज होतै गये । बसिक इस प्रदन को उन्होंने अपने स्वत्व का प्रदन बना लिया । हेड मास्टर साहब तो जमाना देखे आदमी थे । उन्होंने



पहले तो श्रीधर बाबू के मित्रों से कहा जब उससे भी कुछ न हुआ तो बड़े माई श्रीमाहन टाकुर से कहा । पति की बात सुनकर श्रीमोहन की पत्नी ने ऐसा कहा कि उनकी हिम्मत न हुई

—तुम्हें क्या करना है ? जाने कैसी किताब लिखी । न जिससे समय न सरकार की चिट्ठी आयी उस समय जब हमसे कुछ पूछा ही नहीं तब अब हम बीच में क्या पढ़ें ? सरकारी मामला है । तुम बीच में मत पढ़ना । अपनी मौकरी और बाल-बच्चे भी ठीक रखने हैं । अरे बेबर जी की मौकरी ही क्या है मास्टरी की न ? न होगा दूसरी कर लेंगे । और गान सो न करें कुछ हमें किसी से क्या ? मैं तो रोज ही कहती हूँ कि खमी मौका है । ये सामने वाला हमबाइ का मजान बिकाऊ है । पत्नी से इस कीचड़ से बचग हो जाएँ तो भर पाये । दिन भर दूसरा क किए लटा और

और श्रीमोहन का फिर साहस नहीं हुआ कि अपने छोटे माई से कुछ भी चर्चा करे । गाइगिड साहब ने पूछा तो टाल गये । बात आखिर में श्रीमाध टाकुर से हुई श्रीधर बाबू की माँ और सबसे अन्त में पत्नी तक पहुँची ।

निय की तरह उस रात भी जब श्रीधर बाबू घर पहुँचे देखा माँ अपनी माया पर रहीं हैं । कुछ देर बैठने के बाद वहाँ से चलने को हुए ही थे कि माँ ने आवाज न आदेश किया कि तनिक रुको । माँ ने माया समाय कर दोनों आँवों से झुकाकर नुजा समेगी और पूछा

—जात्र सवेरे माइगिस माहब तुम्हारे बापू के पास आये थे ।

—तुम माकूम है ।

—तुन मेमा किताब में क्या फिर दिया रे ?

—कउ नहीं माँ ! तुम नहीं समत पाभायी ।

—कउ समझा भी ता ?

—बस माँ ! कउ नहीं । ये समय तो मेस हऽ

—मरदार के दादा-बाबा के नाम के जाग कुछ नहीं ओड़ेगा तो से माराज नहीं हों ? सब ही ता कह रह हैं ।

—जो बात तुम नहीं जानती उसे मरग क्या समझाऊँ ।

—माग ता में नहीं समझती ता आज अपने बापू को समझाता । सबेर तुम पुछ बापा या सेकिन तू जा बुका पा । वे माते ही होंगे । अरे बटा जमाना और हैमियत देग के बात करनी चाहिए ।

बिनुप्प हाकर श्रीपर बाबू उठने का हुए । वे जानते थे कि उनकी माँ सबम बनिक उनक लिए ही चिन्तित रहती है । दुनिया की ऊँच-नीच सदा समझाने में सपी रहती है । माँ के निकट जो इतना महत्वपूर्ण था वह उनके निकट कितना गल्प था इसे वे सात्र चाहते पर भी न ता कह पाते थे और यदि कमी कह देते थे तो माँ को नहीं समझा पाते थे । माँ इन्हे-छुने कमी-कमी संकेत भी कर देती थी कि श्रीमोहन असग होने की सोच रहा है । डाक्टर का कुछ मरोसा नहीं किया जा सकता । क्योंकि उसकी पत्नी अपने माता-पिता की अकेली सन्तान है इसलिए उसे कमी बात की कमी होगी नहीं । अब केवल रह गया श्रीपर जिस पर साय पर गृहस्त्री का बोझ आ जाता है । पार जैसे नहीं ओड़ेगा तो यह बाप-बापों का जीर्ण मरान के दिन चलेगा ? तुम सोमों क बापू ने कमी कोई मरार का काम किया जो यह घर बनवाने का काम ही करेगे ? श्री मोहन और डाक्टर क्यों इस जुने घर में पैसा लगाएँ ? वे जानते हैं न कि इस मरान में तीन माई अँट नहीं सकते । श्रीपर बिकस हो कर कुछ करेगा ही और तब वे छीम हम घर में भी हिस्सा माँगने लड़े हो जाएँगे । और जिसे पता पहले ही हिस्सा माँगकर उसे बेचें । श्रीपर को यह सब नी साधना होगा । लेकिन केकिन श्रीपर बाबू कुछ नहीं साधते । जो साधते हैं वह सब इतना हवाई बान्पनिक, असाधारिक होत्रा है कि बेचारी माँ सदा नरी माँके किये उठ जाती रही हैं ।

—जो तू अपने बानू से बात तो कर ले ।

—माँ ! यह बात ऐसी है कि इसे तुम या बापू कोई नहीं समझ सकते । जा बात सत्य चाहते हैं वह में अपनी जिताब में कर नहीं सकता । इन सागों में से एक भी नहीं जानता कि दुनिया कितनी बड़ी है । कितने दड़े-बड़े लोग हुए हैं । ये माग सब कूपमण्डूक हैं जो इन छोटी-छोटी बातों में उलझे हुए हैं । ये जानते नहीं कि इतिहास क्या हाता है लेकिन अपना इतिहास भी लिखवाना चाहते हैं । म तुम से बड़े देता है कि बिनाग मुझे बाहर ही निजाक दे सकिन मैं एक अक्षर भी अपनी पुस्तक में से नहीं काटूँगा ।

बीर माँ हृत्प्रम सी चाते हुए भीबर को देखने लगीं । क्या यह वही भीबर है जो अपने संकोच अबोधेपन के लिए ही जाना जाता है ? सहसा एक क्षण को माँ को लगा कि यदि इसने पुस्तक में से नहीं काटा तो उनके पुत्र पर कहीं कोई आपत्ति तो नहीं आ जाएगी ?

सात बर्षा हुई थी । कच्चे भाँदन में नेबली के पानी गिरने से जगह-जगह मिट्टी निकल आयी थी । भाँदन की दीवार के दीबट में रखी थिमली बल रही थी जिसकी छाया दीवार पर पलकों की बिछमट्टी लग रही थी । भीबर बाबू ने परेंबी से पानी लिया बीर हाथ-थर बोये कस्ता किया और अपने कमरे बासा पीना चढ़ने लगे । कच्चा पीना भी जगह-जगह से मीला-उलझा था । चारों ओर भीनेपन की एक अजीब गंध आ रही थी । कमरे में पहुँचते ही उन्हें सरस्वती के होने की आशा थी लेकिन दूर पीछे रात्रीबर से बर्तनों के माँचने की आवाज आ रही थी । कच्चे दीबट के आसक्त में तो रहे वे । उन्होंने कपड़े बदले और साने के लिए रात्रीबर पहुँचे ।

पता नहीं क्यों पिता ने भीबर से इस बारे में बात कर ना ठीक ही नहीं समझा । जाना साकर लौटते हुए जब भीबर बाबू ने देखा कि पिता बेंगबई पर सेट हुए 'बिष्णु सहस्रनाम' का पाठ कर रहे हैं तो एक क्षण रुक कर उन्होंने अपना वही निर्यय पिता को भी सुना दिया जो कि माँ को सनाया था । पिता एक क्षण को हृत्प्रम अवस्थ हुए लेकिन वे पुनः पाठ में लय गये ।

कमरे में पहुँच भीबर बाबू कुछ लय ला उस भीभी छल वाले अपने कमरे में पीछे हाथ बाँधे टहलते रहे । दीबट की रातनी में उनकी छाया साबर सिपी दीवारों पर डोल रही थी । अन्दर बड़ा बूटा-मुटा सा लग रहा था । घायर में ब पिर रहे थे । बल वे अपने आगे बाल कमरे में निकल जाये वे जो कमी छल था ।

लेकिन जब लकड़ी की दीवारों से तथा बिड़किया स कमरा बना दिया गया था । यह कमरा ही श्रीवर बाबू की बैठक था । छत बहुत ऊँची नहीं थी । लेकिन फिर भी सरस्वती ने सफेदी पोंग कर टाट लया दिया था और उसमें काँच-हरे कागज के बूझ बिपका दिये थे । अपने यौगल बटे की बैठक सजान क लिए माँ नीचे की बैठक स घीसों पर बने हुए चापाकृष्ण शिव-नामती के चित्र ले आयी थी । मछली परिवेष के रवि बर्मा के भी दो चार चित्र थे । एक बड़ी सी लेकिन पुरानी काल कागज जिस पर एक गदा और चाकर तथा एक गाव-तकिया । कोने में एक काठमारी जिसमें श्रीवर बाबू की अपनी पुस्तकें ।

प्रायः वे आकर इस बेला पढ़ते हैं लेकिन आज किसी बात में मन नहीं लग रहा था । वे गाव तकिये क सहारे अबलेटे से अँधेरे में ही बैठे छ । बिजली की कौब से बिड़की की राह आस-पास के मकान एकदम झमक उठत था फिर मेघ यजन में दीवारें तक काँप उठतीं । आज तीन दिन से भाराघर हा रहा था । कागज लुसने का नाम ही नहीं केता था । इस समय भी लूब बर्षा हो रही थी । टिन की छतों पर पानी इतनी आरों से गिर रहा था कि बूसरी कोई आघात नहीं भुनायी पड़ती थी । बँस भी रात कासी कुछ जा चुकी थी । पता नहीं वे अर्बेनिमीकित से कब शिप गये ।

सरस्वती जब ऊपर आयी और उसने बैठक में आज रोगनी नहीं देखी तथा बिन्दरे पर भी पति को नहीं देखा तो उसे हल्का आश्चर्य हुआ । बिड़की की राह आते हुए पुटे प्रकाश में देखा कि पति तकिये के सहारे झेटे हैं । उसने बैठक की केम्प अलायी । देखा हाथों पर सिर रन्ने सो गये हैं । उसने श्रीवर बाबू का सिर घुमा कि कहीं तबियत तो करार नहीं हैं ? हाथ के स्पर्श से श्रीवर बाबू की सपकी टूटी । सन्हलते हुए बोले

—अरे कब आयीं तुम ?

—आज आप पढ़ नहीं रहे हैं ? तबियत तो ठीक है न ?

—नब ठीक है ।

बोग ने बिड़की की राह बरनते पानी को देखने लगे ।

—आज आप चिन्तित लग रहे हैं, क्या बात है ?

—नहीं तो आस तो कुछ नहीं । सहजन-समटना हा गया ?

बात टालते हुए बोली

—बच्चे जाये तो नहीं ये ।

—नहीं तो ।

दोनों को ही प्रति-एकान्त सक्त रहा था। दोनों को ही लगने लगा कि अगर अधिक देर तक साथ रहे तो बहुत सी बातें जो बिरी हुई हैं ठीक आज के धाराधर सी बरस पड़ेंगी। क्योंकि ऐसे अबसर बहुत ही कम या बिल्कुल ही नहीं आवे हैं जब कि दोनों साथ-साथ बैठकर कभी सहज हुए हों। दोनों के जीवन के दो वृत्त थे जो छूटे थे लेकिन काटते नहीं थे। आज सहसा इस प्रकार प्रति-निकट वेद दोनों असीब ठण्डापन अनुभव करने लगे। जैसे कौई अज्ञात भव रोम-रोम में समाहित हो गया हो। सरस्वती ने अचानक पति का चिर दाबता धुँक किया। श्रीधर बाबू जैसे कभी इस प्रकार की सेबाएँ करने के पक्षपाती नहीं हैं। जब दिन यदि ऐसा होता तो निश्चय ही बरस भी बेटे किन्तु आज बीसा नहीं कर सके। देर तक पानी में काम करते रहने के कारण सरस्वती का हाथ काफी ठण्डा था किन्तु फिर भी इस समय बहुत अच्छा लगा रहा था। उन्हें वह दिन याद हो आया जब यही हाथ प्रथम दिन उन्होंने पामा का तब यह क्लिप्ता कोमल था। लेकिन आज वही हाथ विचिन कड़ा हो गया था। चिर दाबत हाथ की बूझियाँ काम के पास आज प्रथम बार इस तरह बोझ रहीं थीं। श्रीधर बाबू ने अपने हाथ से सरस्वती का चिर दाबता हाथ दाब दिया जैसे कुछ कहना चाहते हों जैसे यह याद उन्हें बहुत पहले ही कहनी चाहिए थी। लेकिन कौन सी बात ?

—सरो !

—जी !

—तुम क्या सोचती हो ?

—किस बारे में ? क्या इतिहास के बारे में ?

—हाँ !

—म बदलने के पीछे कुछ कारण होंगे ही तभी न आप ऐसा कर रहे हैं।

—मरे इस नियम पर तुम्हें सतोष है ?

—यदि आपको ही ता।

—मन पर इतना निर्भर मत रहो सरो ! सबका अपना व्यक्तिगत स्वत्व होता है।

—मरा तो स्वयं व्यक्तिगत स्वत्व परलोक सब उगी दिन आप में सीम हो गया।

तभी दूगर ममरे स एक बरस के दंत विटविटान की आबाज आयी।

—अनी तब छाटी के पेट क कीड़े साफ गही हुए।

—क्या बगी बात विटविटा र्ही है ?

—हाँ अब क्या।

और सरस्वती उठ गयी।

दूसरे दिन ।

पाइगिल साहब को अपने निश्चय की सूचना देकर स्कूल सनाप्ट होने पर भीबर बाबू अपने मित्र नारायण बाबू से मिलने छाबनी की ओर चल दिये । नारायण बाबू बीसे भायू में बड़े ही थे किन्तु मिछनसार स्वभाव होने के कारण भीबर बाबू उनके साथ र्मत्री का ही व्यवहार करते थे । नारायण बाबू घर के बड़े खासी थे । कई पुस्तों से हृष्टियों के सेन-सेन का व्यापार होता था । नारायण बाबू के पिता राय बहादुर गोकुलनाथ तो छाटे-भाटे राजा ही माने जाते थे । छात्र में उनकी बड़ी शक्ति थी । पारों की इस छाबनी में राय बहादुर की यह पहली कोठी थी जहाँ किमी 'काला भाखी' को घुमने दिया गया था । छात्र भी नारायण बाबू के बड़े भाई गोकुलनाथ जैसी अपना गरी पर बैठ कर व्यापार करते थे । गोकुलनाथ को फूल की बीमारी थी । आगे चल कर घरी ज्ञानी में उन्हें पैरों में सबका मार गया । उन्होंने फिर आश्रम विवाह न करने का निश्चय किया । नारायण बाबू को अपना भाई ही नहीं बल्कि पुत्र मानकर सन्तोष कर लिया । नारायण बाबू ने भी तथा उनके परिवार ने भी

वही सौत्रय निभाया । गोवर्धननाथ को वही घर से बाहर जाना होता तो वह पासकी पर चढ़ कर जाते थे । उनका नियम था कि समरे गिरिवर वाले बगीचे की ओर निकल गये । वही सन्ध्या बन्द करके 'शुगार' के दर्शन करत हुए छावनी लौट आता । काम को फिर पहाड़ वाली का सिका जी के दर्शनों के लिए पासकी पर निकल जाना । इस प्रकार दिन भर पासकी और कहार ब्यूड़ी पर लौनात रहते थे । रायबहापुर गोकुलनाथ के समय में ता कर्मल धीरा तक बुकान पर आत न । राय साहब तो बहुत हुआ कमागिदय आफितर से मिलने बस गय । लेकिन अब क्रमश स्थिति दिनोंदिन बरसती जा रही थी । अब धीरे धीरे छावनी की ताकत भी कम की जा रही थी । गोवर्धननाथ को भी अब कभी इस कर्मल कमी उस कल्याण के पास किसी न किसी मामसे के लिए दौड़ना पड़ता था । बेचारे मरंग होते हुए भी कमी नारायण बाबू से नहीं कहते थे कि तुम भी ब्यापार में हाथ लगाओ ।

जिम समय श्रीधर बाबू नारायण बाबू के यहाँ पहुँचे थे अपनी फिटल से उतर कर बड़े भाई से बातें कर रहे थे जा कि काली मन्दिर जाने के लिए नौकरों का सहारा लेकर खुली पासकी में चढ़ रहे थे ।

—उहिए श्रीधर बाबू ! बहुत दिनों पर दिखायी दिये । सब कुसल है न ? गोवर्धननाथ बोले ।

—आपकी कृपा है ।

—नारायण नह रहा था कि आपकी फिटल भी लेकर सरकार की तरफ से कोई बिट्टी भागी है ।

—जी हाँ ।

—कुछ बदलने की कह रहे हैं तो बदल क्यों नहीं बने ?

—या जा चाहते हैं वह किसी इतिहास में नहीं हुआ । महारानी बिज्जोरिया या पद्मम आर्ज से तो ये सोच बड़े नहीं हैं न ? क्या इंग्लैंड के इतिहास में पार-बार उन्हें राजपानी या सभ्यता भादि सिगा पाता है ?

—अर भाई तुम सगों की ये सब बातें हम पुराने सगों की समझ में ता आने से रहा । हम तो यही जानते हैं कि जब में रहे कर मपर मे बीर कीसे पाना जा सकता है ?

नारायण बाबू ने देगा कि श्रीधर बाबू को ब्यावहारिकता पर लाकर कहा जा रहा है बापे

—भाई साहब ! यह मिथ्यान्त की बात है । और मैं समझता हूँ कि

श्रीपर बाबू इस मामले में सही हैं। मुझसे भी गाइगिस साहब ने कहा कि श्रीपर बाबू को ममसाधो। मैंने कहा कि श्रीपर बाबू सिद्धांतवादी बाबू हैं। यदि बदलना उचित होता तो वे शुरू में ही कभी ऐसा नहीं सिद्धते।

पामकी कहारों ने कबे पर उठा ली थी और बहु भाँसों पर टिकी थी।

—भैया ऐसा काम करना जिसमें सबका सुख हो। बेचारे कीर्तनिया जी का यह बीबा काल है। उन्हें सहारे की जरूरत है। और साऊ बना दूँ वे टूम पर ही अधिक निर्भर हैं।

श्रीर पामकी बक पड़ी।

—आमा श्रीपर! दा मिनट बैठो मैं अभी आया।

कह कर नारायण बाबू भीतर चले गये। और श्रीपर बाबू दाखान बासी बटन की चौकी पर बठ गये।

आज कई दिनों बाद श्रीपर बाबू स नारायण बाबू की नेंट हुई थी। छाबनी का यह पूर्वा माग था। छाबनी कस्बे से लगभग मील भर दूर पहाड़ी पर थी। काल पत्थरों की यह पहाड़ी पूरब से पश्चिम मीलों फरकी हुई थी। अघाऊ और आम के बीसियों गाछ तथा बन यहाँ से वहाँ तक फँडे हुए थे। लेकिन सबम अधिक वेड़ तो बरगद के थे। छाबनी के लिए पत्ता नहीं कब अंग्रेजों ने इसे बुना था लेकिन प्रसिद्ध यहाँ था कि कासी मन्दिर वाले पहाड़ के सामने वाले मैदान में १८५७ के समय कम्पनीबाई के माय अंग्रेजों की मुठभेड़ हुई थी। संभव है उसके आसपास ही योरों ने यहाँ छाबनी बनायी हो। लेकिन चारों ओर हीक जैसे बड़े-बड़े साम्राज्यों से बिरे इस पठार पर दिन-रात बहुत अच्छी हवाई जमा करती थी।

नारायण बाबू की यह कौट्टी छाबनी की दूसरी इमारतों की ही भाँति बना थी। बाप यह थी कि राय बहादुर पोकुलनाय को जिस कर्नल ने छाबनी में मकान बनवाने की आज्ञा दित्तवानी थी उमीत इस मकान का नकशा बनाया था। इसलिए यह काँटी फ्लैक दोट्टु उग की थी। चारों ओर ऊँचे ऊँचे अमाऊ के गाछ पोल्डार में लगवाये गय थे। इस मकान के बाद ही पहाड़ एकदम समाप्त हुआ था और दूर तक एक चाटी सी जमी मया थी जहाँ छाबना का पामो छाठण था। सामने की पहाड़ी पर कामा का मन्दिर बना था।

तासर-पहर बादल बरस कर इस समय छेंट गये थे। आषण का सध्या आजाप एकदम नील हाँ आया था। नारायण बाबू और श्रीपर बाबू पृष्ठे ली



प्रायः बीजनाथ महादेव के मन्दिर की ओर जाया करते थे । यह मन्दिर उत्तर की तरफ कोई दो मील दूर था । नारायण बाबू ने जाते ही पूछा

—क्यों मन्दिर ! कई दिनों से बीजनाथ नहीं गये हैं क्या इरादा है ?

—मैं भी सोचता तो यही था ।

—यदि बर्षा हुई तो ?

—अभिप्रेक हो जाएगा और क्या ?

और दोनों हँसत हुए निकल पड़े । फ़्लिन नये फौजी डाकघर की सड़क की ओर बढ़ी । परेड घाटण्ड पर कुछ फौजी कवायद कर रहे थे । दो-दो चार चार के झुण्ड में फौजी अफसर अबवास का समय बिताने के लिए क्लब की ओर जा रहे थे । फौजी महानगर के सामने नहाने वालों की भीड़ जगना नहीं थी । सामने के बड़े से कूप का पानी निकालने के लिए जै मीठ जमा रखा था । कुछ कर्नल और कैप्टन रिक के फौजी या तो घोड़ों पर सवार या फिर पलियों के गाय कुत्तों की जंजीर पकड़े हवाखारी को निकले हुए थे । तीसरे-महूर की बर्षा में भीग गाछों से रह रह कर बूँदें टपक रही थीं । पहाड़ी इलाका वा इसलिये बर्षा के बाद कीचड़ नहीं थी । सल बजरियो वाली साफ सुथरी सड़क पर फ़्लिन के पहिये किरकिराते दौड़ रहे थे । किमी-किमी बँगले के कान में माछी निराई करने में व्यस्त थे । बीजनाथ के रास्ते पर दोनों ओर बने सामान के पेड़ों की कटार भीलों बनी गयी थी । यह उतार का रास्ता था । आगे नाके के पास एक दूसरी सड़क और मिसली पी जो कस्बे की ओर जाती थी । इसी रास्ते से गाय भसें दिन भर जंजीरों से भर कर सीटा कटती थीं । ताला पुर पर था । दूबने मूर्म की छाह में नारायण बाबू की फ़्लिन बीजनाथ पहुँची ।

बरगद इमनी आम ओर एन्थेसिस के सपन जंगल में एक छोटी गी बनी बहनी है । जिसका एक पाने कण्ड में एन्थेसिस भर लिया जाता रहा है । जिसमें मनी रंग के कमल लिसे रहते थे । जिस समय वे दोनों पहुँचे उग बन में बबक मारों के बातने की आवाज आ रही थी । उसके एक तारे

पर बैजनाथ महादेव का विद्यालय मन्दिर है तथा उसके बूसरे सिरे पर एक पक्का बाथरूम बना हुआ है, जो कि एकदम निर्जन था। केवल बाथरूम के बाथन में एक बीकी तथा उसके ऊपर एक पीतलपाटी बिछी थी। एक कमरे पर पिंजरे में एक तोता रह-रह कर बीस रहा था। नासे पर बना एकमात्र पक्का बाट था जिसकी सीढ़ियों का मिगोटा हुआ पानी खलखल करता बह रहा था। ऊपर दोड़ी अँबाई पर एक बड़ी धर्मशाळा थी। जहाँ इस समय कोई यात्री न था। दोड़े मार्ग बह विद्यालय बन था जहाँ शिबरात्रि पर तथा कार्तिक की जात्राएँ म्मयी थीं।

सोम हो चुकी थी। मित्रन जैसे सहस्त्रमुक्ती होकर धिरने लगा था। दोनों ने नाके में आकर हाथ-भूँह घोसा और उपरान्त दर्शन किये। शिवालय पर मध्या—भारती के ताजे फूल तथा बिल्वपत्र बड़े हुए थे। एक बड़े से दीपामार में इक्कीस बत्तियाँ जल रही थीं। शिवालय के सामने के हवन—मण्डप की रेलिंग पार कर दोनों लड़े हो गये ! छतनारे पेड़ों से झँवरते आकाश के टुकड़े दिख रहे थे। रास्ते भर तो भीषर बाबू समझम चुप ही रहे जब कि नारायण बाबू ने बुनिया-जहान की सबरें सुना डाली थीं। उस समय कस्बे में एकमात्र नारायण बाबू के यहाँ ही “टाइम्स आफ इण्डिया” जाता था। उनकी रुचि धीरे धीरे कांग्रेस की ओर बढ़ रही थी जिसे उनके बड़ भाई गोबर्धननाथ जानते थे कि इससे उनके व्यापार पर हानि होने की सम्भावना है लेकिन वे यह भी जानते थे कि नारायण बाबू कोई बच्चे नहीं हैं।

—क्यों भीषर ! हम लोग भी अपने यहाँ कांग्रेस की साखा खोल लें तो कैसा रहे ?

—सरकारी नौकरी करते हुए यह कैसा कर सकते हैं ?

—लेकिन भाईजान ! हमने सरकारी नौकरी करने का कोई पट्टा तो खिस्ता नहीं है।

भीर वे बड़े जोर से हँस बिये।

—हाँ यह तो ठीक है। मैं भी सरकारी नौकरी को चाहा ही पाता हूँ।

—तो उस झगड़े का बाखिर हुआ क्या ?

—बह इतिहास बाबा ? मैंने गाबगिल साहब से साफ इन्कार कर दिया।

—यह तो मैं जानता ही था कि तुम नहीं मानोगे लेकिन—

—लेकिन-लेकिन कुछ नहीं नारायण बाबू ! बहुत होना तो यह नौकरी छोड़ दूंगा।

—उसके बाद ?

—उसके बाद वे दो पाँच है और पूरी पृष्ठी है। विवेकानन्द की भाँति परिष्कार पर निकल आऊँगा।

—ता जगता है तुम सारे परिजामों पर पहुँच चुके हो। लेकिन बहू-बन्धुओं को स्फुर

—यही ता एक बाधा लग रही है।

—धीधर ! अपने भाइयों को तो तुम जानते ही हो। जहाँ तक पिताजी का सवाल है वे बेचारे तो अब

—नारायण बाबू ! सब बातों की सीमा होती है। निश्चय ही इन बाधाओं की भी सीमा होगी ही। और हमें किसी न किसी प्रकार उस सीमा तक चलाकर पहुँचना ही होगा यदि हम कुछ करना चाहते हैं। जीवन तो महाप्रस्थान का पथ है। जहाँ के हिम में प्रत्येक सम्बन्ध जो कि बाधा होता है गम जाता है। और नारायण बाबू ! सब कुछ हम ही सोचकर व्यवस्थित कर के जाएँगे इस बुद्धिवादी स्थाप की क्या आवश्यकता है ? कम से कम मुझे तो नहीं ही है।

भीतर बाबू की बात नहीं किन्तु जिन्हा मुख बोये अँधेरे में अस्पष्ट लग रहा था। सामने वाले आश्रम में कोई झोट आया था। वहाँ अब एक दीप जल चुका था। पक्के फर्श पर उस कोई की ककड़ी की चट्टियाँ छट-छट बोझ रही थीं। दीवा-बड़े जोरों पर भील रहा था। कदाचित्त यह वह पुराना तैला नहीं था जो प्रत्येक भागस्तुक से "आम नम पित्राय" कहाँ था। सामने के कम्ब में कमी रिची मटली के कारण पानी गहरा हिल जाता था और तब आकाश और चारों की प्रतिच्छाया जो जाती थी।

—बाथी अब चला जाए।

नारायण बाबू ने कहा। दोनों फिटन की ओर बढ़। तभी आश्रम से कोई बोला

—कौन है भाई ? छात्रनी वाले नारायण बाबू हैं क्या ?

—हाँ ब्रह्मचारी जी !

—किन्तु स ही मैं समझ गया था। क्या जल बिये ? आज बहुत दिनों पर आर ?

—हाँ नारायण !

—समर्पण नहीं होगा ?

—आज जप पत्नी है। फिर जाएँगे।

—और कौन है नाथ में ?

—धीरज बाबू।

—अच्छा अब रुकें।

और किन्तु पर दोनों जल बिये। रास्ते भर रीतां चुप ही रू।

रोज की तरह भीबर बाबू आज भी घर पहुँचे। माँ मात्ता छेर रही थीं।  
बिमली बाबे में बीसे ही बस रही थी। पिता अनी मन्बिर से नहीं लौटे वे।  
ओ हाव-भूँह पोकर बा ही रहे से कि माँ बोलीं

—कहाँ रह गया बा ?

—बैजनाथ बला गया बा। छावनी बाछे नारायण बाबू मिल गये से।

—आज श्रीमोहन कुछ बकसक कर रहा बा उनसे।

—कहाँ नयी बात है क्या ?

—उंरे लिये तो जैसी पुरानी बीसी नपी। तुमो तो बिधाता मे बीध बुनियादारी  
क असाबा सब दिया है। पता मही तुमो ये सब क्यों नहीं समझ में आती ?  
सिर से मात्ता छुमा कर योमुबी की तह करते हुए एक गहर निरबास के साथ  
बोलीं।

—माँ ! बादा के पास बहुत पैसा हो गया है। वे बेचारे मामी के लिए घर  
बनवाना चाहते हैं तो तुम क्यों रोकती हो ?

—कभी ऐसा हुआ है रे ? अभी तो घर का मालिक बीठा है।

—यही तुम भूकती हो माँ ! जिसके पास पैसा होता है वही घर का मासिक होता है । सुनो क्या वो हिस्सा माँमते हैं अपना ?

—जब तक हम बैठे हैं तब तक इस घर के टुकड़े तो होने से रहें । भले ही वह अलग से अपना मकान बना ले ।

—तो इससे क्या हुआ ? तुम जो कुरु की प्रतिष्ठा के लिए सब समेटे रहना चाहती हो ताकि चार लोग हँसे नहीं उससे तुम कैसे बच सकाया ?

—महीं अभी तो वह नहीं कहता कि हिस्सा हो लेकिन अलग रहना चाहता है । मकान छोड़ सब बातों का हिस्सा करने को चाहता है ।

—तो कर दो इसमें क्या मुश्किल है ? सब अपना-अपना सम्हालें । ठीक तो है ।

—बड़ा ज़ामा कहने वाला कि कर दो हिस्सा । कुछ जानता भी है ? बड़े के पास तो रिदबत का पैसा जा गया । डाक्टर को उसकी समुदाय से मिला गया । लेकिन ठेरा क्या ?

—क्यों मेरा बेकर-बहना तो तुम हो ही ।

और भीतर बाबू बड़े पोरों से हँस दिये ।

माबन फिर रहा पा । बादलों की पड़गड़ाहट जैसे बीबाछा में भर गयी थी । हल्की ठंडी हवा चम्पने लगी थी । माँ बोली

—जा अब भोजन कर ले ।

जाते हुए श्रीधर का बेल कर, माँ अत्यन्त चिन्तित थी कि इसका क्या होगा ?

जैसा यह बीबी इसकी बहु । उसे भी जरा दुगिवाचारी नहीं आती । अरे मरदों में तो ऐसी बेफ़िमी होती ही है और फिर श्रीधर जैसे आदमी जो कि जाने कौन-कौन सी कित्तारें पढ़ता रहता है और विमाग सराब किये हुए है लेकिन आदमी की बुद्धि-बननी से बाँधे रहता तो बीरत का ही न काम है ?

जाना खाकर श्रीधर बाबू जब रात्रीपर से लौटे ता बेरा कि पिता अपनी बनबई पर अपकेटे हो पाठ कर रहे हैं । माँ रीस पर पोचामी बेजबन की बातों रखे पड़ रही हैं । जाते हुए श्रीधर को पुकारते हुए बोली

—मुना तू ने कित्तार में बदलने से मना कर दिया है ?

तब तक पिता श्रीनाथ टाकुर ने पाठ के बीच ही कहा ।

—आज माइयिक छाह्र भाये से मन्दिर । बेचारे बड़े बुन्नी ने लेकिन क्या करते ?

माँ फिर बापी

—अब क्या होगा ?

—होगा क्या ? सरकारी मामला है । निर्यात दिये जाएँगे बाबू साहब । पिता की आवाज में किञ्चित् रोप हुआ सनी कुछ था । भीगे जीने पर चिर धीमा किये थीपर बाबू सारी बात समझ रहे थे । माता-पिता की चिन्ता भी वे सहज समझते थे । सब घर में सारी वास्तविकता व्यक्तियों के आगे कौम यनी । इतना बड़ा परिवार, जिसके कि वे सदस्य हैं, इस दूटे घर की तरह ही भीषा-टपक रहा था । रात्रीपर में इतनी रात बरतन मकड़ी सरस्वती की बिबद्यता भी वे बूझ रहे थे तथा यह भी कि नानी अपने कमरे में क्यों छप्पर पलंग पर बीठी दाक-बाकल का हित्ताक सिलती रूठी है और वे परेगानी का नाटक भावे बिन करती रूठी है । फिर भी न पति न सास न ससुर, किसी की हिम्मत क्यों नहीं पड़ती यह कहने की कि अच्छी सरस्वती सबेरे से देर रात तक खटती रूठी है और तुम भी बहू हो लेकिन ठाकियों का मुच्छा हित्ताते रहने के मत्कावा और क्या करती हो ? क्यों थीपर बाबू के बच्चे फटे कपड़े पहने घूमते रहने हैं और दादा-नानी के बच्चे और वे लगामग पीत पड़े ।

—मा ! मेरी चिन्ता न कर । अपना अपना माग्य ।

कहते हुए थीपर बाबू अपने कमरे की ओर बढ़ गये । बड़ी सड़की मुपबती आनी तक जाय रही थी ।

—बाबा ! आज बहुत बेर कर दी ।

—हाँ बेटा ! बीबनाय जाता गया था ।

थीपर बाबू बिना कुछ बोले-बाले अपने कमरे में पहुँच जाना चाहते थे लेकिन मुपबती जैसे आज बाबा स बातें करने के लिए ही जाय रही हो ।

—बाबा ! आज चिर में बहुत बर्द है ।

पास बैठते हुए थीपर बाबू ने कहा

—दापर इमीलिए नींद नहीं आ रही है न ? अच्छा सामो मैं दाबे देता हूँ ।

अच्छे बच्चे जस्वी सो जाते हैं ।

य परबती का सुलाते हुए थीपर बाबू अपने में जैसे सोने हुए थे । कब सरस्वती आनी और पानी की कलगी आने कर लड़ी हो गयी उन्हें पता न जाता ।

बहू बोनी

—मीत्रिए, पानी पी मीत्रिए ।

—मरे !!

और बौक कर जम्होंने सरस्वती की आर देखत, जैसे टिाया बारत देख किया

हो। दीप के मंद मीठे आलोक में कंचना सरस्वती पीछी बनेर सी लग रही थी। पहले का मरा बदन सिकरने लगा था। इसलिए वह कुछ सम्झी लग रही थी। तित्ते-बैचे बालों में सुनी मांस चौड़ी लग रही थी। बिना किनारे की छादी भोटी में वह मोर के मोरे हाते हुए आकाश सी लग रही थी। मुख पर कोई भाव नहीं था बल्कि एक अस्पृश्य उदासी रंगी हुई थी। सबेरे की कामल-बैची आँखें इतनी रात तक कैसे कजरी रह सकती थीं? जाने कितनी बार उनमें बुझा क्या हाँगा। पोंछी बनेर बार मीसे ठंडे हाथ सये होंगे। जाने कैसी भरी-भरी आँखें पोंछी यहीं होंगी। सब मला इतने सब के बाद आँखों में कामल नहीं तक बीठा रह सकता था? पछले कुली नहीं लग रही थी बल्कि जैसे पसलों के बाल-बिपके हुए हों। पानी देकर सरस्वती आँख से चूड़ियाँ पोंछती जाती रही ताकि कलसी से सके।

—जान गुरुवती के सिर में बर क्यों हाँ रहा था सरो?

—बहुत मना किया कि बरसात का पानी हाया ठालाव न जाओ लेकिन पाणी की रम्भा और दूसरी सहेलियों के साथ सबेरे से गयी थी तो तीसरे पहर होने पर जब बुसबाया गया तब आयी ये सोग। सिर नहीं दुखगा तो क्या होगा?

—गुम्हें मना कर देना चाहिए था।

—गुम्हें मला इस बर में कभी कोई बात पूछी जाती है?

सरस्वती ने बात बहुत सहज बहनी चाही थी लेकिन समाप्त करत न करत वह स्वयं भी अचक्का गयी कि वह क्या कह गयी। बात सुन भीपर बाबू को आश्चर्य नहीं किन्तु ठेस कमी कि क्या उनकी पत्नी इतनी निरीह है कि स्वयं के बच्चे तक कोई बात पूछने की आवश्यकता नहीं समझते? उन्हें क्रोध आना चाहिए था लेकिन उन्हें तेर हुआ। चुनौती अनुभव करने पर ही तो क्रोध आता है? और भीपर बाबू कभी क्रोध नहीं करते क्योंकि प्रायः चुनौती नहीं अनुभव करते। पापर इसीलिए वे क्रोध की जगह घेरे ही अनुभव करते हैं।

पत्नी बात कह कर बस्तुस्थिति टांप्ने के विचार में थी अतः बिन भर की काम-काज वाली पानी भी बालने के लिए अलगनी से चूपट की हुई पानी छटा कर पति की बीठक में लगी गयी। भीपर बाबू गुरुवती के सिर पर हाथ रखे जाने क्या सोचने रहे। लेकिन वे जा भी साथ रहे वे वह बहुत टूटा-पूटा था था। बीजनाथ मद्रादेव का वह सम्झा निर्जन राम्ना था हाँ बापा। भीगने बेड़ों की टपकती बुँदें। पानी उँधी किये देहातिये जंगल में गयी सकड़ियों

का भारा बनाये लौटयीं। कहीं पर दूर उत्तर में जरा सा नीला आकाश सुझा ही था कि डेर घारे बायल उसे ढँकने को जैसे ढीङ्क रहे हों। विवेकानन्द किस घटान पर बैठ कर रामेश्वरम के हिल्लोसठे घायर को देखते होंगे ? एक अनन्त बसस्वस्त आसोहित होता हुआ सूर्योदय से सूर्यास्त में बदल जाता है। इतिहास राजाओं का ही होता है क्यों ? साधारण लोगों का क्या कोई इतिहास नहीं होता ? पानीपत की सड़ाई थी लेकिन सरो जो सस्त्रहीन एक सड़ाई लड़ रही है उसका क्या कोई महत्व नहीं ?

सरो समई के पास बैठकर रामायण पढ़ने का उपक्रम करने लगी। लेकिन वह वास्तव में पढ़ने के बजाय ब्राह्म रही थी कि कुछ बातें हों।

—सरो !

—जी ।

धीमेर बाबू सहसा बोले बं। कोई प्रयोजन नहीं था। सरो ने जब 'जी' कहा तो ब समझ न सके कि क्या कहें।

—कह गयी होगी। अब आराम करो।

—माप नहीं सेटिएया ?

—सुमा दादा अलग होने की सोच रहे हैं।

—मुझे तो मालूम नहीं।

—माभी ने कुछ भी नहीं कहा ?

—मुझसे ?

—हाँ क्यों ?

—मैं मला उनकी बुद्धि में कौन होती हूँ ?

—सरो ! तुम इतनी निस्पृह क्यों हो ?

—निस्पृह तो नहीं हूँ लेकिन

—लेकिन क्या ?

—लेकिन मुझे केवल दुःख है। अपने लिए नहीं। इन लोगों की समझ पर। वे जिन बातों से डरते हैं कि कल से कुछ हो-हुमा जाए तो हम लोग उन पर कही बोझ न बन जाएँ।

—सबभुज दादा-माभी ऐसा ही सोचते हैं ?

—धीरे धूसरा मला क्या कारण हो सकता है ?

—अच्छा माप तो कल से मेरी नीकरी घूट ही जाए तो क्या होगा ?

—यह सोचना बापका काम है।



—लेकिन तुम्हें भी तो सोचना चाहिए ।

—आपने रहत मुझे यह सब सोचने का अधिकार नहीं है ।

—यदिन कस स मान सो

—क्या यही सब कहने के लिए आज बरसों बाद बाँटें करने बैठे हैं ?

सरस्वती हल्की श्मोमी हो आयी । मनेक दिनों स वह घर में तरह-तरह की बाँटें सुनती आ रही थी । किन्तु अकठ सबेर चार-मीठा पानी खाने चूल्हे क पास हेमूए मे तरकारी काटने से लेकर दास बीनन अबहल रखने तक तथा सब भोगा को लिका-पिकाकर तीसर पहर बर्तन साफ करन तक बसी रहती है । उससे बाद बनाब फटकना कभी अचार बनाना बड़ियाँ चूटना कितने ही ऐस काम होते कि समा होने तक लटती रहती । और उसके बाद तो फिर राग का ताना है ही । घर में आये-गये कुछ मिला कर न सही तो पन्द्रह-बीस आरमिया का रोज खाना दोनों जुन बनागा । इसमें सरस्वती को केवल यही याद पड़ता कि वह अपने कमरे से जब आयी थी तब मुक बूब रहा होता और जब बीबा-बानन ठेकमा-मेकमा पूरा हाता तब सप्तपि उम आये होते । कभी बर्षों का बाहर घूमता हुआ देख लिया नहीं ठा सोता हुआ छोड़ कर जाती और प्रायः मोठा हुआ ही बेकती । गुजवती तो आगती ही मिकती । कभी छापीं मुगीसा भी आगती होनी लेकिन राग मदिपन क अलावा बेबबत तो सदा सोता ही मिकता । इतने बरस ही गये सरस्वती न घर में जो रसा या जो नूना वह काम करते हुए, सिर झुकाये ही । वह बिबाह के बाठ दिन बाद ही जेठानी के रत से समझ ययी कि इस घर को एक दासी की आबरमकता थी और बही सरस्वती इस इतने बड़े परिवार में ही सफती है । बिना पति को कुछ बनाये सरस्वतीने अपने इस 'महानाम्य' को स्वीकार लिया ।

महता सरस्वती के मन में यह फिर आया कि उमने इतना सब क्या यही बात मुझे क लिए स्वीकारा बा ? जसा था ? और वह भर उठी । बीम तो बर रात्र ही भर उटती है बिबपता से । लेकिन इस बात अपने स्वामी की इस बात मे आ कि उमके जीवन के लिए पार अपाकन है जिसके बिना उमकी क्या दुमि ही गवनी है इसे वह मसी भाँति बूझती है—उमने बड़े अपाकन को ये बिजने महत्र उग न वह टास रहे हैं । ये बहने हैं कक से मान सो मान लो की मनी जसायी । और अपन ही पत्र में क्या मानन है ? क्या गेगा मान लो मरे पत्र में नहीं हो सतता ? हो सतन की बात हा क्या है उम ना कभी का ही हो जाना चाहिए बा । अंग-अंग जम गिरा रहा बा ।

इन हड्डियों में अब क्या रह गया है ? बाँधी की तरह खोखली हो गयी है । इन्हें क्या मालूम ? क्या के बाद से पत्नी भर भी कमी बन नहीं गिता । कोई कहीं तक मट सकता है ?

और आज सहसा वह सहज हो धायी । रोज की भाँति नहीं कि बड़ी से बड़ी बात पाहे वह तागा किस का बुझा हुआ ही क्यों न हो मात्र हँस कर होक-गयी हो या बचावो रह कर ही मूल स्वीकार भी हो । पहले सीने के पास जैसे बहुत कुछ फूस आया हो और फिर देखते-देखते जैसे गला फँसा-फँसा सा होने लगा । सरस्वती स्वयं नहीं बुझ पा रही थी कि वह क्या है जो बड़े बुझभुझे सा गाल-पोछ धिरता हुआ गले से बाद तक और आँसों में भर जाने को धिर जाया है ।

धीमे धीमे ने देखा कि देवव्रत का सटा सरस्वती हठाव रोने लगी है । व आयाव सिंह रह उठे । बाहर धामध भरस रहा था और सरो आयाव बनी हुई थी । बाहर भावध में वर के पीछे कम्हड़े तथा तुरई की बेलें नीग रहीं हापी और यहाँ अनजाने ही भीपर बाबू का परिवार नीग रहा था । बैठक से आठो हुई भावध भीगी तेज हवा में समई की बाठी बिलबिता रही थी । इस बिल-बिलाने से दीवारों पर जैसे सोताभी रोसानी भी बड़ी-बड़ी हिल रही थी । इस बिल-सेरियों में पानी तेज सपाटे मारता सिटभिरा रहा था । आज कई दिनों स तेज बूप नहीं निकली थी इसलिये कपड़े दीवारों समी भीजें सिता गयी थी । बच्चे बिसरों की हस्की गर्मी में कुनमुना रहे थे । घाटापर बँवेरी आधध पट में धीमेर बाबू न धामध स संकेत कुछ नहीं पकड़ पा रहे थे जिसके द्वारा सरस्वती को सान्त्वना दे सकें । सरस्वती आज पहली बार फूट आयी थी । सरस्वती को भी बुझा है, उस दुःख को मले ही उसने स कहा हो या न बहे सेकिन् वह

बाँसू बन चुका है यह धीमेर बाबू को पता न था । उनके निकट सरो सड्डियुवा की मूर्ति थी । जिते कोई बात तागा परिस्थिति नहीं ब्यापती । इसलिये सरो का वह आधर करते थे । वही सरस्वती आज नानुपी बनी रो रही थी । भीपर बाबू इन आँसुओं में बन्ध-बन्ध से श्रावण महा गये । वे गले-गले हो जाये ताकि नीस सकें । आज दोनों ही रोज के पति-पतिन नहीं सय रहे थे बिनहूँ किताबें और बडियाँ चुँटना सन्धोप दे दिया करते थे ।

सन्धोपों को ठीक तरह से ओझाकर सरस्वती का हाथ पकड़ धीमेर बाबू बैठक में निकल आये । तिड़की सुनी थी । शीघी की फुहारें आ रहीं थी । घुटा हुआ प्रकाश था । सरो उठी और कम्बळ ख आयी । दोनों बन्धक ओझकर अबोल ही बरसव भावध मज देखते रहे ।

—सरो ! तुम्हें इस घर में बिस्तर सूख नहीं मिल सका न ?  
 बिजली की कौप से तथा गड़गड़ाहट से पुस्तनी मकान की दीवारें एकदम काँप  
 उठी । सरो भ्रमा पति की इस बात का क्या उत्तर देती ? वह एकदम पति से  
 सट गयी और उसके चीने पर सिर रख एक छोटे जल भरे बादल सी फूट पड़ी ।  
 थीपर बाबू ने सरो को बाहुओं में बस लिया । वह कमी बिड़की की राह तथा  
 कमी बैठक के अँघरे में निर्भय और निष्कृति सोवने लगे । बाहुओं में बँधी  
 सरो आज उन्हें पहली बार कना कि अभी तो यह मुश्किल से मुबती हुई ही  
 है । कितना छोटा सा सिर है । कैसे चिकने-चिकने बास है । थोड़े गमे सिर  
 में मेजाबले की संभ अभी तक आ रही थी । कौसी समपिता बनी राज चार बजे  
 पिसना और पानी खाने के लिए इसे उठ जाना पड़ता है । पहले जार पानी  
 जाता है सबके नहाने के लिए और फिर मीठा पानी ढूँँ से खाना होता है ।  
 जबकि दूसरे सब सोते रहते हैं । बच्चों को स्कूल जाने से पहले खाना भी देना  
 होता है । बाबा क कचहरी खाने के पूर्व पूरा खाना मिस्ना ही चाहिए और  
 वह भी उतरती हुई रोटियाँ । पिता भी मन्दिर से बाहर-एक तक लौटते हैं  
 तथा इसी समय के लगभग छोटा भाई डाक्टर भी लौटता है उन्हें भी परम खाना  
 मिस्ना ही चाहिए । रात भी यही हास होता है । और घर की यह सारी  
 नियम-व्यवस्था केवल सरो को ही सम्हालनी होती है । जबकि थीपर बाबू ने  
 कमी यह नहीं कहा होगा कि उन्हें सड़ियों में नहाने के लिए गरम पानी मिलना  
 ही चाहिए या तबे की उतरी राटी ही चाहिए । लेकिन इससे क्या ? सब सोय  
 तो ऐसे होतें नहीं । सरो को प्रायः तीसरे या चौथे दिन ठाकाब भी तीसरे पहर  
 कपड़े लेकर जाना ही पड़ता था अपने बच्चों के कपड़ों के लिए । खाने पानी  
 में जब राज क कपड़े तक कमान जाते हैं तब बच्चों की कमीजें पत्रामे भसा  
 कँस साफ रह सकतें हैं ? और जब जल ठाकाब आ रही हों ता भला जहाँ  
 चार कपड़े वहाँ छह कपड़े । और इस प्रकार जेठानी क बच्चों के भी कपड़े लै  
 ही जान पड़ते । बीमे ता घोबी जाता है लेकिन सबों क ही कपड़े दिये जातें हैं  
 और वह भी गाम-भास कपड़े ही । इस प्रकार सरो का बाकी के कपड़े लेकर  
 ठाकाब तीसरे पहर जाना ही होना । साथ में गुनबती या छोटी कोई न कोई  
 रहती । उम दिन सरो को साइने-कटवने से अबध्य छुट्टी मिल पानी । लेकिन  
 यह भी या कि बिना सरा के पर में अँघरे ही पड़ा रहना । लौटन पर दिवा-  
 बली का लेक-पानी करके तब वही चुट्टू ने पास जाना पड़ता ।

थीपर बाबू की अपनी सरो की इस दिनचर्या का सोचते-सोचन न केवल

पकान बलिक हाथों में दर्द अनुभव होने लगा । रोज रोज बही सबेरे से देर रात तक । उन्होंने उसका मुँह दोनों हाथों में भर कर बैठक के उस मटर्मले प्रकार में देखना चाहा कि उस दिन अग्नि के सामने बैठे हुए मन्त्रोच्चार करते हुए जिसे इतना सुन्दर देखा था वह आज भी वैसा ही है या नहीं ? आँसुओं से भीगा सरो का मुँस उन्हें अपनी सबसे बड़ी पराजय लगा । जाने कब धावप धम गया था लेकिन बिजली और गड़गड़ाहट अबशेष थी । पुलिस छाइन के बंटे में बारूह की गजर बज रही थी । कहीं किसी क सँसने की आवाज आ रही थी ।

—सरो ! बलो अब सोओ । बारूह बज गया ।

—हाँ देर रात हो गयी ।

और दोनों अपने बिस्तरों पर आकर छेद गये । सरस्वती ने समई बड़ा दी । कमरे में घोर अन्धकार हो गया । कदाचित् यीधर बाबू ठी सो गये लेकिन सरस्वती उस रात न सो पायी ।

दूसरे दिन रविवार था। तासाब महाने बानों की भीड़ थी। तीन और पहाड़ों से पिरा तलहटी वाला यह तासाब किसी भीस से कम नहीं था। मनुष्य से अधिक प्रकृति ने इसे सजा रखा था। जिस ओर कोई पहाड़ नहीं था एक बड़ा भाँप बाँप था। जिसका निर्माण कहते हैं शाहजहाँ ने अपनी दक्षिण यात्रा के समय किया था। बाँप की पुस्त तथा चौड़ाई और पाट आदि से भलीभाँति इस किबन्ति को सत्य माना जा सकता था। इस तासाब के बीच में एक छोटी छतरी बनी हुई थी जहाँ लोग ठहर कर जाया करते थे। सीढ़ीय पोट के लिए जग से भी जाया करते थे। दूर पर तीनों ओर से पहाड़ों से टकराती बूँबा या पठमा दिन रात इतनी ठंड पसन्दी थी कि लोग अपनी घोड़ियाँ एक तरफ में अकेले पकड़कर आसानी से सुंसाया करते। तासाब में बड़ी ऊँची ऊँची लहरें दिन भर उग करती थीं। बीच में जगह-जगह अन्दर की तरफ तासाब में ऊँच ऊँच बुज बने हुए थे जहाँ से लोग महाने के लिए कूदा करते थे। यह तासाब हम बम्बे का पिता माना जाता था इसलिए लोग भरी के बजाय यहीं महाने रोव भापा करने। मैरिन रविवार या किसी छुट्टी के दिन महान-वर्ष

का सा दुःख रहता। बाँम के सिरे पर उत्तर में एक मण्डा सरदार बाला साहब की कित्ते जैसी कोठी बनी हुई थी जिसकी पत्थरों की दीवार से ठामाब सदा सहस्रता रहता। ठीक उसी पर कोठी का कुछा वारजा बना हुआ था। या फिर, वहाँ सामन्त युग ने स्वर्ण युग में सुला दरबार बना करता था। या फिर, कभी कित्ते राजा-महाराजा की सभाएँ आयी थी तो यहीं बैठकर ठामाब में बलभरीझा की जाती। गुम्बदों वाली इस कोठी का बीमब अब केवल इतिहास हो गया था। चारों ओर बनी कमराई नी अब जीर्ण हो आयी थी। इन कमरों पर का परकोटा गिर चुका था और वहाँ दलदल हो गया था। इन कमरों पर बोबियों ने अपने पत्थर रख सिये थे और दिन भर 'छीनो-छीयो' किया करते थे। बाबा साहब की कोठी की हरे पत्तोंवासी सिद्धकियाँ अपने में बड़ी सी कोठी समेटे बन्द रहा करती थीं। पिता जी कहा करते थे कि बाबा साहब ने इसी दाहिने हाथ क बुर्ज से कूद कर आत्महत्या की थी तब से यह कोठी अपना कुन समझ सब लोग यहाँ से हमेशा के लिए चले गये। बाबा साहब ने क्यों आत्महत्या की इस पर माना प्रकार के मत हैं। कुछ लोग कहते हैं कि उनकी तीसरी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी थीं और अत्यन्त सरदार की बुद्धि उन पर पड़ गयी अतएव अत्यन्त उर्ह से गये। कुछ का कहना था कि वे स्वयं गयीं क्योंकि वे स्वयं एक बड़े राजबघाने से आयी थीं और बाबा साहब एक छोटे-मोटे मात्र सामन्त थे। मला वे बीमबहीन कैसे रह सकती थीं? अतः लोक-लाज से बचने के लिए एक दिन अपने इसी वारजे के बुर्ज पर से छलांग मार कर ठामाब में कूद पड़े। बाबा साहब की कोठी के वहाँ बड़ी-बड़ी बट्टानें हैं और वहाँ पर भी परलोकवासी हुए। उसके बाद यह कोठी ऐसी बन्द हुई कि आज तक इसमें केवल बर तक बाबा साहब भीखित रहे इस कस्बे में राजपानों की सी बमक-बमक रहती थी। बाबा साहब के बरवाजे पर चार हाथी सदा बँधे रहते थे। छोटी-मोटी छीज सदा छँस रहती थी। दगहरे-दीवासी पर न केवल दरबार ही होता था बल्कि सभाएँ भी निकला करती थी। बाबा साहब ब्राह्मण सरदार थे। सदा पालकी पर चढ़कर बस्ती के बीच वाले महारैव मन्दिर में लिया जाता करते थे। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार भी उन्होंने करवाया था। वे बड़े उदार तथा पण्डित व्यक्ति थे। बुझापे में तीसरा विवाह कर बाबा साहब न अपने जीवन की सबसे बड़ी मूल की थी। इतने लोकप्रिय तथा पसमान व्यक्ति के लिए आत्महत्याके अतिरिक्त और कोई मार्ग था ही नहीं रह गया था।

लेकिन जब तक बाबा साहब भीखित रहे इस कस्बे में राजपानों की सी

बमक-बमक रहती थी। बाबा साहब के बरवाजे पर चार हाथी सदा बँधे रहते थे। छोटी-मोटी छीज सदा छँस रहती थी। दगहरे-दीवासी पर न केवल दरबार ही होता था बल्कि सभाएँ भी निकला करती थी। बाबा साहब ब्राह्मण सरदार थे। सदा पालकी पर चढ़कर बस्ती के बीच वाले महारैव मन्दिर में लिया जाता करते थे। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार भी उन्होंने करवाया था। वे बड़े उदार तथा पण्डित व्यक्ति थे। बुझापे में तीसरा विवाह कर बाबा साहब न अपने जीवन की सबसे बड़ी मूल की थी। इतने लोकप्रिय तथा पसमान व्यक्ति के लिए आत्महत्याके अतिरिक्त और कोई मार्ग था ही नहीं रह गया था।

बाबा साहब इस प्रवेण के लोकमुक्त व्यक्ति हो गये थे। उनकी बीरता तथा दानशीलता की अनेक सरवास्वय कहानियाँ फैली हुई थीं। कहते हैं उनके पूर्वज वेदवाही के पठन के बाद अनेक ऐतिहासिक जय-यराजय देखते हुए माऊब के इस अंपस में जा बसे थे। जो हा उनक पुत्रों ने कब कौन सी लड़ाई लड़ी इसका प्रमाण ऐतिहासिक रूप से चाहे हमारे पास न हो लेकिन बाबा साहब स्वयं प्रथम विश्वयुद्ध में गये थे और उन्हें विक्टोरिया क्रॉस तक मिला था। श्रीपर बाबू की इन सब बातों की बहुत संमली स्मृति है। लेकिन कस्बे के जीवन में इस राजकीय सम्मान की प्राप्ति के बखतर पर जैसा महोत्सव हुआ वैसा न कमी हुआ था और न होगा ही। बाबा साहब के बीरब का वह चरम क्षण था। पूरी कोठी बीसों से सज्जित की गयी थी। हावियों को मस्तिष्क किया गया था। चाँदी के हौसे उस दिन विशेष रूप से चमकाये गये थे। सीढ़ियों पर नीरत का प्रबन्ध किया गया था तथा उनके बूटों में धुँवर बाँधे गये थे। फीजफटे और लाबलस्कर का ठाठ देखकर अग्नेवी छावनी के घारे किरंदी बन्दरर अकित रह गये थे। डकान-निघान फाल्गुन की संलाकी रूप में छोटे-छोटे तुर्यों और पुच्छक तारे से चमक रहे थे। बास पास के तारे मरठे और राजपूत धामस्त उस महोत्सव में सम्मिश्रित हुए थे। इसी घोषाम चीक के सामने बाबे यैदान में कनारों तान कर अट्टियाँ खोरी गयी थीं। बास-बास के माँसों तक के कोयों के लिए तीन दिन तक खीर माऊपुजा का प्रबन्ध किया गया था। काफी सज्जीन और बड़ीदा से संहनाई बाते बुलाये गये थे जो नवरकोट के प्रत्येक दरवाजे पर खीरीसों बन्दे दाह माई बजाते रहते। उत्सव और बनारस की रंदिपों बुमबायी गयी थी। तालाब के नाम जो 'कबड़ा म्बायी' का बन है उसमें तम्बू डाल कर उन्हें ठहराया गया था। सगता था जैसे पूरा कस्बा बघू का पर हो। तीन दिन के लिए क्या मीना आबाद, प्रदर्यानी नाच राग-रंग मीटक्रिया गट सभी बूछ हो लोपों को उप लक्ष्य थे। कहते हैं बाबासाहब के पिता अप्पा भाहब ने सामन्ती सम्हाकने पर ऐना ही उत्सव मनाया था लेकिन बाबा साहब का वह महोत्सव तो लोकगीतों सोवगापार्जों का विरय बन गया था। तालाब की यह बीच की छतरी इस मद्भाग्य के पहलु बिन्कक ही जीर्ण हा गयी थी। इन वर्तमान रूप में सुन्दर, ज्ञाना गारब ने किया था। वे लीक थे बिन्नु उदार पामिब वे इसलिये बंप्वब मन्दिब भी प्रायः जाया करते थे। उन तीन दिनों कस्बे का प्रत्येक घर, मन्दिब मगर-कोट तक आनीबित किया गया था। जाने कितनी बँगाठी बाह्य कम्पार्जों

तथा गरीब कन्याओं का सामूहिक विवाह उन्होंने उन तीन दिनों में करवाया था। काम चक्रित थे कि बाबा साहब क्यों इतना रपया फूँक रहे हैं ? वे विचिष्ट महाराष्ट्री ब्राह्मण की भूषा में सम्बिध एक ब्याम आसन पर स्वस्म बैठे सदाका स्वागत हेसकर कर रहे थे। उनके निकट उस महोत्सव के लिए एक ही तर्क था कि नाई। यह सब सम्पति मेरे पूर्वजों ने कहीं स बन्धित की ? क्या अपने साथ साथे थे नगबान के यहाँ से ? बरे आपने ही बी पी और यह इतना बड़ा कर्म आपका मनोरजन कर आपको ही इस कस्ने को ही लौटा रहा हूँ। और फिर पता नहीं कब आप सबसे इस प्रकार मिल सकूँ। मन्छा है आपने आशीय लिये ही यहाँ से बिदा होऊँ।

बाबा साहब के पितामहों पर बुर-बुर तक क सेठों का बड़ा रपया निकलता था। सकिन बाबा साहब पार्स-पार्स चुका कर रहे। लोगों ने देखा कि उस महोत्सव के बाद कोठी बरसे मेबों सी रिता पयी। घायर इस महोत्सव के बाद ही उनकी तीसरी पत्नी वाली दुर्बटना हुई। बाबा साहब तब पैसठ बर्ष के हो चुक थे और उनकी पत्नी सम्भवतः पन्चीस बर्ष की थीं। वे अत्यन्त सुन्दर महिला थीं। उनके विवाह को दस बर्ष हो चुके थे। जिन दस बर्षों में पाँच बर्ष तो बाबा साहब जर्मन की लड़ाई में यूरोप चले गये थे। इस बीच लोग जो बताते हैं वह यह कि श्रीमन्त की सवारी इस कस्ने में कम से कम दो बार भारी थी और बाबा साहब की पत्नी ने अपने मायके में ही प्रायः रही। लोगों का एक है कि वे मायके में न रहे कर श्रीमन्त सरकार के साथ पहाड़ों या समुद्र तटों की सैर करती रहीं। जो भी हो इस महोत्सव के पूर्व बाबा साहब और उनकी पत्नी में कुछ बातों को लेकर झपड़ा हुआ। बाबा साहब अपनी सारी आयदाद का बराबर हिस्सा अपने एक लड़के एक लड़की और इस नयी पत्नी क बीच कर देना चाहते थे। बाबा साहब की पहली पत्नी स लड़की इन्दु थी जो महाराष्ट्र में किसी सामन्त स ब्याही पयी थी लेकिन ब्याह के बोड़े ही दिनों बाद बिबबा हो गयी थी। उसके बाद वे काशीवान् करने क लिए सदा के लिए बनारस चली गयी थीं। दूसरी पत्नी स बामनराव थे, जो अन्नभर 'मैमो कालेज' में पढ़े थे। पढ़ाई क बाद घर आ जाना चाहिए था लेकिन नयी माँ के रग-रग देखकर वे फौज में भरती हाकर क्रेटा की छावनी में ही रहने थे। बहुत कम समयों ने बामनराव को दला था। इसका एक प्रमून् कारण यह भी था कि उन्होंने किसी अन्न महिला स विवाह कर लिया था जो बाबा साहब क लिए असहनीय था। बाबा साहब अपने इस बीमर में



बाबा साहब इस प्रयोग के लोकमूढ व्यक्ति हो गये थे। उनकी बीरता तथा दानपतिता की अनेक सरवासरय कहानियाँ फैली हुई थीं। कहते हैं उनके पूर्वज वेराहाई ने पतन के बाद अनेक ऐतिहासिक जय-मराजय देखते हुए माऊन के इस जगल में जा बसे थे। जो ही उनका पूर्वजों ने कब कौन सी लड़ाई लड़ी इसका प्रमाण ऐतिहासिक रूप से चाह हमारे पास न है। लेकिन बाबा साहब स्वयं प्रथम विश्वयुद्ध में गये थे और उन्हें विक्टोरिया कास तक मिला था। श्रीर बाबू की इन सब बातों की बहुत पुँबली स्मृति है। लेकिन कस्बे के जीवन में इस राजकीय सम्मान की प्राप्ति के जबसर पर वैसे महोत्सव हुआ वैसे न कभी हुआ या और न होगा ही। बाबा साहब के वैभव का वह परम लक्षण था। पूरी कोठी बीपों से सज्जित की गयी थी। हाथियों को अम्पित किया गया था। चाँदी के हूँदे उस दिन विशेष रूप से चमकाये गये थे। साँबलियों पर मौबत का प्रबन्ध किया गया था तथा उनके बूटनों में बुँबब बाँबे गये थे। फौजफ़ाटे और कावलफ़र का ठाठ देखकर अंग्रेजी छावनी के सारे किरंगी अफ़सर अकित रह गये थे। इका-निघान फ़स्तुन की सोनाली रूप में छोटे-छोटे सुर्गों और पुञ्जल तारे से चमक रहे थे। बास पास के सारे मराठे और राजपूत सामन्त उस महोत्सव में सम्मिलित हुए थे। इसी गोवाक चौक के सामने बाबे मीदान में कनारों तान कर महियाँ लोरी गयी थीं। बास-बास के गाँवों तक के लोपों के लिए तीन दिन तक और माऊनबा का प्रबन्ध किया गया था। काठी अज्जैन और बड़ीरा से राहनाई बाबे बुँसाये गये थे जो नगरकोट के प्रत्येक दरबाने पर चौबीसों घन्टे राह माई बजाते रहते। कसनऊ और बनारस की रँडियाँ बुँबायी गयी थीं। तासाब के पास जो 'केवड़ा स्वामी' का मन है उसमें तम्बू बाल कर उन्हें ठहराया गया था। समयता वा जैसे पूरा कस्बा बम्बू का घर हो। तीन दिन के लिए क्या मीना बाजार, प्रवर्धनी नाथ राम-रंज मीटोफियाँ मट सभी कुछ लो लोर्गों की उप लक्ष्य थे। कहते हैं बाबासाहब के पिता अफ़्या साहब ने सामन्ती सम्हाकने पर ऐसा ही उत्सव मनाया था लेकिन बाबा साहब का यह महोत्सव लो लोर्गगीर्गों लोर्गगापाओं का विषय बन गया था। तासाब की यह बीप की छतरी इस महोत्सव के पहलु बिल्कल ही जीर्ण हो गयी थी। इसे वर्तमान रूप में सुन्दर, बाबा साहब ने किया था। वे दीब थे किन्तु उदार चार्मिक थे इसलिए वैष्यक अगिहर भी प्रायः जामा करते थे। उन तीन दिनों कस्बे का प्रत्येक घर, मन्दिर नगर-कोण तक आलोचिठ बिना गया था। जाने कितनी कृपारी बाहाय कम्पाओं

तथा गरीब कन्याओं का सामूहिक विवाह उन्होंने उन तीन दिनों में करवाना था। साथ ज्ञात वे कि बाबा साहब क्यों इतना दया पूर्वक रहे हैं ? वे विविष्ट महाराष्ट्री शाहूग की भूपा में सम्मिलित एक व्याम मानन पर स्वस्थ बैठे सरका स्वागत हुँसकर कर रहे थे। उनके निकट उस महामन्त्र के लिए एक ही ठक था कि भाई ! यह सब सम्पति मेरे पूर्वजों ने कहाँ न अर्जित की ? क्या अपने साथ साथ वे भयवान के यहाँ से ? अरे आपने ही दी थी और यह इतना बड़ा कर्म आपका मनोरन्धन कर आपको ही इस कस्बे को ही लौटा रहा हूँ। और फिर पता नहीं जब आप सबसे इस प्रकार मिल सधैं। अच्छा है आपने आशीष किये ही यहाँ से विदा होऊँ।

बाबा साहब के पितामहों पर दूर-दूर तक के सेठों का बड़ा दया निकलता था। अकिन बाबा साहब पाई-पाई चुका कर रहे। लोगों ने देखा कि उस महोत्सव के बाद कोठी बरसे मेधों सी रिता मयी। साथ इस महोत्सव के बाद ही उनकी तीसरी पत्नी बाबा कुर्बटना हुई। बाबा साहब तब पैंसठ वर्ष के हो चुके थे और उनकी पत्नी सम्भवतः पन्चीस वर्ष की थीं। वे अत्यन्त सुन्दर महिला थीं। उनके विवाह को इस वर्ष हो चुके थे। जिन वस वर्षों में पौष वर्ष तो बाबा साहब जर्मन की लड़ाई में यूरोप चले गये थे। इस बीच लोग जो बताते हैं वह यह कि श्रीमन्त की सवारी इस कस्बे में कम से कम दो बार आयी थी और बाबा साहब की पत्नी भी अपने मायके में ही प्राण रहीं। लोगों का एक है कि वे मायके में न रहे कर श्रीमन्त सरकार के साथ पहाड़ों या समुद्र तटों की सैर करती रहीं। जो भी हो इस महोत्सव के पूर्व बाबा साहब और उनकी पत्नी में कुछ बातों को लेकर सपड़ा हुआ। बाबा साहब अपनी धारी आदराद का बराबर हिस्सा अपने एक लड़के एक लड़की और इस मयी पत्नी के बीच कर देना चाहते थे। बाबा साहब की पहली पत्नी स लड़की इन्दु थी जो महाराष्ट्र में किसी सामन्त स ब्याही मयी थी लेकिन ब्याह के पाँचे ही दिनों बाद विधवा हो गयी थी। उसके बाद वे काशीवास करने के लिए मदा के लिए बनारस चली गयी थीं। दूसरी पत्नी स बामनराज से, जो अजमेर मेयो कॉलेज में पढ़े थे। पढ़ाई के बाद घर आ जाना चाहिए था लेकिन मयी माँ के रंज-दय बेलकर वे फौज में भरती होकर नचेटा की छावनी में ही रहते थे। बहुत कम लोगों ने बामनराज को देखा था। इसका एक प्रमुख कारण यह थी था कि उन्होंने किसी अंग्रेज महिला स विवाह कर लिया था या बाबा साहब के लिए असहनीय था। बाबा साहब अपने इस र्भव में

अत्यन्त दयनीय मनःस्विति में रह रहे थे । नयी पत्नी सीमा से बाहर लर्च करती थी तथा प्रायः बाबा साहब को उनके साथ कभी बम्बई, कभी नैनीताल कभी दिल्ली जाना पड़ता था । बाबा साहब अपनी भूस अनुभव कर रहे थे लेकिन जब ही क्या सकता था ? इस पत्नी के लिए बम्बई में मसादार पर एक कोठी बनवायी पड़ी थी जिसमें बाबा का लर्च हो गया था । इसलिए वे चाहते थे कि अपने सामने इन्दु और वामनराव के हिस्से बसग कर दें । पत्नी इन्दु को आयबाव में से कुछ भी देने की पक्षपाती नहीं थी । साथ ही वह अपना हिस्सा माया चाहती थी । यदि इन्दु को कुछ दिया ही जाना है तो वह वामनराव के भागे हिस्से में से ही दिया जाए । इसलिए हुआ यह कि उन्होंने अपनी पत्नी की कोई बात नहीं मानी और आयबाव के चार हिस्से कर दिये । अपने हिस्से में से उन्होंने यह इतना बड़ा महोत्सव सम्पन्न किया था । वहाँ बनेक सामन्तों ने तथा जनता ने हाविक योग दिया था वहाँ पत्नी ने कोई योग नहीं दिया बल्कि वे बम्बई चली गयीं । वामनराव के जाने का प्रसन्न ही नहीं उठता था । इन्दु अबस्य आयी थी । लेकिन वह परों के बाहर कभी नहीं आयी । बाबा साहब ने इस सारे महोत्सव का भार इन्दु पर छोड़ दिया था । संभवतः बाबा साहब और इन्दु दोनों में से किसी को पता नहीं था कि इस सब में कितना व्यय हुआ । लेकिन इन्दु ने अपने पिता के मन को परस किया था कि पिता अपने अखिर दिनों में कोई स्मरणीय काम कर जाना चाहते हैं और उनकी पुत्री होने के नाते उसे पूरा सहयोग बना है । पत्नी ने अपनी असहमति ही नहीं भीतरदिता जतला दी थी एकमात्र पुत्र को इस प्रकार के सामती बार्मिक अपम्ययता में कोई रसि नहीं हो सकती थी बाबा साहब की इस ऐकान्तिकता को पुत्री ने मञ्जीर्भति समझ लिया था और वह अपने पिता की साथ को जितना स्मरणीय बना सकती थी उतना संकल्पित होकर जुट गयी ।

इस महोत्सव के बाद बाबा साहब इन्दु को छोड़ने काशी तक गये । इन्दु ने चलते समय अपनी ओर से एक सी एन बाइपनों को दास्तोस्त बाब-वसिता दी तथा कस्बे में एक सङ्कट पाठशाळा का प्रबन्ध कर गयी । बाबा साहब कुछ दिनों काशीवास कर बम्बई गये और अपनी पत्नी के साथ कस्बे में सौटे । उसके साम-छह महीने बाद ही बाबा साहब की कोठी का मंगुर जो सबके लिए घटा चुका रहता था अब वह बन्द रहने लगा । बसिज वाली खिड़की के कुर्ची के पास एक आराम कुर्मी पर बाबा साहब अपने जती पीताम्बर, बगमन्वी

तया त्रिपुण्ड्र में दिखते । लेकिन जो बर्ष और तेज वर्षा का विषय या वह अब नहीं था । बल्कि अब वे अत्यन्त बृद्ध बगते । धीमेर बाबू के पिता कीर्तनिमा जी को बाछा माह्व बहुत मानत थे इसलिये कभी-कभी वे ही उनके पास आया-जाया करत थे । बाकी के लोगों को उनके शीबान जी मिलने ही नहीं देने थे । क्मण उस कोटी की लिङ्गकिया बन्द होती गयीं और एक दिन मात्र के दिनों की बात है मास नहाने के लिए कुछ छोय सवेरे-सवेरे तायाब की ओर जा रहे थे उन्होंने देखा कि बुरी में एक बड़ी सी सैम्प जल रही है । बाला साहब उसी अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हुए हैं । और एकदम उन्होंने अपना हुआसा फेंका तथा वहीं स छर्त्ताय सगायी । देखने वाले एक क्षण का तो सन्नाटे में आ गये । क्षण भर में ही हलचल मच गयी । देखते-देखते कन्ना बाग गया और हजारों की संख्या में सब उस कमराई और बाँध पर एकत्र हा गये । अजीब दुस्त शोष परिताप लोगों के चेहरों पर सिखा हुआ था । इस घटना को लकर कानाफूनी तक करने का किसी को साहस नहीं हो रहा था । पुलिस आयी । छाननी की फौजी पुलिस भी आयी । कानूनी रिपोर्ट के बाबू स्वेटा और कासी सबर कर दी गयी । दाबदाह, रोफने की यात उठी ताकि कोई आ जाए । लेकिन पाँचबानो ने इसे उचित नहीं बताया । और ब्राह्मणों ने ही अपनी उठाने से लकर दाबदाह तक का कार्य सम्पन्न किया ।

बाब कई रविवार के बाब श्रीबर बाबू ठासाब महान आये थे । छठरी पर इस समय सारस का एक ज़ाड़ा वहीं स उड़कर घूप का रहा था । दिन कुछ आया था । पिछले दिनों भारी वर्षा हुई थी इस कारण ठासाब में पानी बढ़ गया था । बड़ी ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थीं । बाबा साहब की कोठी के गूम्बदों की पण्डवाई सहरों में टूट पड़ रही थीं । अनेक दिनों के बाब श्रीबर बाबू को बाबा साहब की याद हो आयी । यह तो ठीक नहीं बता सकते कि कब वे पहली बार वहाँ गये लेकिन वे अपनी बचपन की स्मृति में से इस कोठी को बचपन नहीं कर सकते थे । अपने पिता क साथ बहुत बचपन में वे इस कोठी में आया करते थे । और उसके बाद ठा वे इतनी बार गये हैं कि यह कोठी जैसे उनके जीवन का अभिप्राय्य अंग है ।

निर उठकर उम्होंन पारों देला । ठासाब के पूर्वी सिरे पर उम्हैन के एक बोहर मठ का बगीचा पहाड़ की तसहनी में बसा था वहाँ स मोरों का भीखना था रहा था ।

बनी महाने बानों की भीड़ की मुख्यात ही थी । थोड़ी ही देर में सारे

घाट मर जाएँगे। बचपन से वे इसी तरह की नींव यहाँ देखते आये हैं। जब वे बच्चे थे तब कमी-कमी पिता जी के साथ या दादा के साथ भाठ थे। कैसे एक-एक दिन चरबता गया। कितन पुरान सान जा यहाँ नहाने आने से वे इसी समान घाट पर आकर बाहित हाकर चल गये। महमा बाहित हाने की दाठ दूर स राम नाम सत्य है' की आबाज स याद हो आयी। आज फिर कोई अन्तिम बार नहाकर सदा के लिए बछा जाएगा। समघान का दिनरोड रोज की तरह आज भी उबाड़ सान्नी-सान्नी सा उड़ा या। अर्धी जब बाप पर दिलायी दे रही थी। किसी महिमा की थी। उन्होंने अपने कपड़ निकाले और तासाब में कूद पड़े। पानी एकदम ठंडा था। पहल ता वे बबड़ामे लेकिन अम तरत हुए गुल कम रहा था। बाँहों से सहरे काटत एक मजीब मुष्टि मिल रही थी। चारा बार कितना लज फेसा हुआ था जिसे उनकी बाँहें और सीना उल रहे थे। तट पीछ छूटा जा रहा था। तट पर आने सालों की तथा नहाने सालों की रमदिरंपी भीड थी। छतरी दूर स कितनी छानी सगती थी उतनी छोटी बह थी नहीं। तासाब का पानी महल हाता जा रहा था। करीब एक मील से तैर आये थे। अनी भी छतरी एक मील से कम दूर नहीं थी। उन्होंने तैरना रोक कर एक बार तट की बार देखा। तट पर साम रंगत हुए दिख रहे थे। कागों के बोसने की बाकने की आबाज पानी पर उड़ती हुई आ रही थी। सुसती हुई भोतियाँ कागज की पट्टियाँ लग रही थीं। बाला साहब की कोठी रिसडकियाँ और मुम्बद आबन की धुली धूप में बहुत बच्छे लग रहे थे। अमराई बाला परकोटा फिर गया था। जिसके भगनाबरोप दिख रहे थे। इस अमराई के साथ उनकी कितनी स्मृति थी। इन्दु बीदी याद हो आनीं।

भीपर बावू से कोई दस बयं बावू में बड़ी इन्दु की वे बीदी कहते थे। श्रीक रामनराज तो अजमर 'मेमा कासज' में पड़ते थे घर में कोई दूगरा था नहीं। पिता के साथ कमी-कमी छोटे भीपर बावू घर में आया करते थे। इनस परे का प्रदल ही नहीं उठता था। इन्दु कब भीपर बावू की अभिभाषिका

वन मरीं यह दोनों को ही पता नहीं । अब चाये दिन भीपर बाबू के लिए कोठी छ मुलावा जाने लगा । स्कूल से प्रायः वे सीमे कोठी ही पहुँच जाते । स्कूल का बस्ता कंबे पर टाँचे जब वे कोठी में प्रवेशते होते तब बाबा साहब या तो अपनी बगनी में कहीं जाने को होते या फिर वे अपने बड़े हाक में बैठे हुए कुछ लिखते-पढ़ते होते । इन्धु की सारी शिक्षा वे अपनी देख-रेख में ही करवाया करते थे । स्वयं बाबा साहब को बुझसवारी संगीत इतिहास और भक्ति में बहुत रुचि थी । उन्होंने अपने यहाँ जाने कितने भारत भर के प्रसिद्ध संगीतज्ञों को कई बार बुलावाया और कुछ को आश्रय भी दिया । उन्हें भीणा प्रिय थी जिस उन्होंने एक कर्नाटक बादक से विशेष रूप से सीखा था । वे अपने भीजन काक में भारतीय राम-रागतियों पर एक विशाल ग्रन्थ तैयार कर रहे थे । उनका यह संगीत प्रेम इन्धु में मूर्तित हुआ था । इन्धु को सिखाने के लिए प्रायः उस्ताद काग देबास इन्दौर और बड़ीबा से जाते थे तथा महीनों कोठी में रहा करते थे । स्कूली बस्ता कंबे पर टाँचे भीपर को देख कर इन्धु ताली बजा कर हँसते हुए स्वागत करती । बौझकर बस्ता कंबे से उतार पास की टेबल पर रख दोनों आपस में हाथ बँधे इन्धु के कमरे की ओर बढ़ जाते । सबसे पहले नास्ता करवाया जाता । उसके बाद या तो एक थोड़े बामी फिटल में बैठकर वे खोप घूमने चले जाते या फिर कमरे में सामने बामी छत पर लड़े हाकर ठाकाव कितना गहृष है कौन पक्षी कितना उँचा उड़ सकता है बल कर मर जाने में मुक्त है या नाड़े जाने में—ऐसी जाने कितनी ही बातें इन्धु करती थीर भीपर एक अच्छे आजाजारी मोठा के रूप में सुनता । इसके बाद इन्धु के उस्ताद संगीत सिखाने जा जाते और भीपर अपने घर चला जाता ।

तैरते हुए वे छतरी के एकदम पास आ गये । छतरी के मुम्बध में किसी पाखी ने पौसला बना रता था । सम्भवतः क्यूँतर का हो । वे काफ़ी बक गये थे । छतरी पर चढ़कर वे हाँफने लगे । आजाप में बादल बिरे थे । हवा एकदम कम चुकी थी । दूर पोरियों की 'छीयो छीयो' या किसी की मुली मटकी डाक

का स्वर सुनायी पड़ जाता। पूरब की ओर मेघ बने झुक आये थे। यहाँ तक कि कुछ बादल तो पहाड़ के शिखर पर भी उतर आये थे। तेजी से आगल भुएँ से बरसते द्रवर आने लगे। आसी हुई धुँधें तामात्र पर सरती हुई आबात्र कर रही थीं। हस्ता शान्त जब इस शिरशिराहट से भर उठा। और बेसते-बेसते पानी तेज हा गया। वे छतरी में जाकर सिमट कर बैठ गये। ठट पर लोगों में भाग दौड़ मची हुई थी। कुछ ही घेर में ठट पर कोई नहीं रहा। या तो लोग झुण्ड बनाकर किसी सबन छतमारे गाछ के नीचे सिमट आये थे या वेबस्थानों में छिप गये थे या फिर स्मशान वाले टिनघेड में लड़े थे। थोड़ी देर पहले जो अर्धी आयी थी अब वह पिछा बन कर चल रही थी। बरसते पानी के भटाटोप में सारे किनारे छुप गये थे। केवल बरसता जब तेजी से बरसता जा रहा था। वे छतरी के एक खम्भे की आड में लड़े हो हुस्के भीग रहे थे। सहसा उन्हें याद आया कि वे अपने सूखे कपडे तो घाट पर लुठे ही छोड़ आये थे। धुँधें और तेज हो गयी थी जो उनके शरीर पर, मुँह पर तेजी से बीछार कर रही थीं। वे जान रहे थे कि आज वे जरूर ही सर्पों का जाएँगे लेकिन इससे क्या, और अब क्या हो सकता है। पानी भीली तेज फूहाएँ में सिर रहा था।

आज इस तरह से सर्पों का दिव भीग रहे थे। सम्भवतः पहली बार इस तरह से इन्दु के साथ भीगे थे। तब वे इस बर्ष के रहे होंगे और इन्दु बीस बर्ष की पूर्ण युवती हो चुकी थी। उन दिनों रेश बन रही थी। मीलों तक साथ रेश की पटरियाँ बासने का काम दिन-रात किया करते। ट्राकिनों पर सुपरबाइजर बाबू कोय काक-काक झंझियाँ फहराते हुए पटरियों की समानान्तरता जाँचा करते। इस रेश के लाने में बाबा साहब का भी बहुत बड़ा हाथ था। छावनी और सासाब के बीच मीलों तक बाबा साहब के सेठ फँसे थे। उन्हीं में से जमीन की लम्बी पट्टी उन्होंने रेश के लिए ली थी। प्रायः वे किसी ट्राकी पर बैठकर जूमने लगे जाया करते थे।

एक दिन भीयर को लेकर इन्दु भी एक ट्राकी पर जूमने गयी थी। वो कूबी ट्राकी को दीड़ते और फिर पीछे बैठ जाते। इन्दु और भीयर काफी दूर तक निकल आये। यही आपाड़-आबाण के दिन थे। लौटते में पानी ने घेर लिया और उनके बाद तो रास्ते भर वे तरबतर ही आये। साँझ पड़े देर भी हो गयी थी और फिर बासने के कारण बाकी का सेप प्रकाश भी डूब चुका था। तेज बीछारों में भीगती इन्दु बार-बार स्वर्ण भी काँप रही थी। और काँपते भीयर को अपने से सटाने ली। दोनों ही सटे स एक दूसरे



वे उन की गर्मी अनुभव कर रहे थे। तेज बौछारों को एक हाथ से पोंछते हुए उस बर्पा-संघा में भीयर ने देखा कि इन्दु पुरदान का सब से बड़ा पाठ रम रही थी। वह लूब खिलखिलाकर हँस रही थी। मरठी छाड़ी का एक पल्लू अपनी पसीवार गोसाईं में भीयर को समेटे हुए था। कुम्भियों को इस भीपती 'रानी मिटिया' की बहुत चिन्ता हो रही थी इसलिए वे सपाटे से ट्राफी बीड़ा रहे थे उसके बाद गैस-रोशमी में बनते स्टेशन का प्रकाश दिखायी देने लगा। इन्दु पठा नहीं किश राय में छविन वह गुनगुनाती जा रही थी—'मिसिदिम बरसत नयन हमारे—बीड़ी हुई ट्राफी के साथ जैसे बर्पा भी भाग रही थी वेड़ भाग रहे थे और पहली बार इन्दु के पास सटे बैठकर भीयर का मन भी न जाने कहाँ भाग रहा था जैसे एकाकी सारस सहसा कुसे आकाश में बर्पा से बिर जाए और तब वह अपने पंखों को अनजान दिशा में भपेटे सहता हुआ पकाने सगे। चारों ओर भीगती दिखाएँ हों। कोसों कोई गाछ न हो। और तब उस नीस बर्पा के सख्त रहस्य को भीर कर कोई पाता हो। बस कोई एक गान !! जिसे केवल वह एकान्त सारस ही सुन रहा हो। वे बीड़े ही भीगते स्टेशन पहुँचे थे। वहाँ फिटम बासा बहुत परेशान दिखायी दिया।

जान वह इन्दु बीड़ी पठा नहीं कहाँ है ? कासी में है। बिघबा है। काशी पास कर रही है। जान इस सारी बात को भी समयम पन्द्रह बरस हो गये। कबाचित उसी बर्पा पादाँ में इन्दु ध्याह दी गयी थी।

ध्यान टूटा। बर्पा अभी भी हो रही थी। वे उसी बर्पा में छठरी से कूरे। बस ही मुँह पर बौछारें छग रही थीं। अन्तर का तो यही कि इस समय वे अनन्त जल से बिरे, संगीतहीन एकान्त से बिरे हैं। हाँ बर्पा का एक नीला घोर उनके चारों ओर बरस रहा था और वे बाँहों से पानी काटते बढ़ रहे थे।

दो दिनों तक श्रीपर बाबू स्कूल न जा सके । उस दिन का भीगना कई  
 वृष्टियों से उनके लिए ठीक रहा । वे बपों से कमी घर में घास हो कर नहीं  
 बैठे थे । इन दो दिनों में दिन और रात की समी बछामों में भर कये समता  
 है इस देख सके । उन्हें याद आया कि जब वे बचपन में इन्दु बीरा के साथ  
 भीगे वे तो करीब सात रोज तक ठेक दुखार में पड़े रहे थे । उनकी माँ रात  
 रात भर उनक सिरहाने बैठी रहती थी । बाद में मामों ने बताया था कि उन्हें  
 हुस्का सन्निपात का भी बीरा हुआ गया था । बेचारा इन्दु भी प्रायः दिन में  
 बटे दा-बंटे को खा जाती थी । सन्निपात में श्रीपर जाने क्या-क्या और कौन  
 कौन सी लसम्बद्ध बातें बकते थे कि माँ को पागलपन का शक होने लगा था ।  
 इसलिए मोसा खात्रि भी बुलाये गये थे । लेकिन उन सबन कुछ नहीं हुआ था ।  
 श्रीपर बराबर सन्निपात में सारख मणिल और खाबण को एक साथ जिसमें  
 विगारें तक भीसी फुहारों में डुबी हों मागते पेड़ों की लम्बी कतार, हुंनते  
 घुसे दाँत आकाश में गोरी धूप बनकर फैल जाते हैं—ऐसी ही बातें बकते ।  
 पूरे सात दिन के बाद जब बूझार उठरा तब वहीं माँ ने क्या की अपनी मनीषी

का असर देखा । खबर की गर्मी में भीषण को दूर-दूर तक रेस की पटरियाँ इतनी दूर इतनी दूर तक बिछी दिखतीं कि जैसे बिघावों में रेस की पटरियाँ ही पटरियों बिछी हों । अनेक बार इस तरह बड़बड़ाते बेका कर इन्दु भय से पीछी पड़ जाती थी । लेकिन जिस दिन भीषण का बुझार कम हुआ और उसका बड़बड़ाना कम हुआ उसने सन्तोष की साँस ली ।

आज क्यों बाद साधारण सा ताप और सिर धर्र वा लेकिन एक ठो पत्नी ने नहीं जाने दिया और दूसरे बे भी बहुत कुछ उस अतीत को पहली बार माह की दृष्टि से देखा रहे थे जिसे उन्होंने मात्र एक घटना समझ कर छोड़ रखा था । जैसे आज एक और भी बहुत सी बातें साधारण बातें उनके जीवन में हुई थीं बस ही इन्दु बासी भी वे मानते रहे । बस वह साधारण ही मानी जानी चाहिए, जैसे कि आज तक मानी जाती रही है । लेकिन आज उसे वे मात्र साधारण नहीं समझ सकते ।

वे उनके संसद के दिन थे। आज जैसे ही वे, तब भी शान्त एवम अस-  
 म्भूत व्यक्ति थे। तब मले ही व्यक्ति न होकर बालक रहे हों लेकिन बचल  
 ने कभी न थे। आज वे उन विगत बटनाओं में एक ऐसा नैकट्य सम्बन्ध  
 और मोह बंध रहे थे जो उन्हें पहले कभी नहीं सया था। इन्नु उनके लिए  
 एक ऐसा नाम बन गया था जिसके द्वारा एक ऐसी भाषा के पृष्ठ लुप्त जाते  
 जो उनकी अपनी नहीं है। और यदि है तो यह कम से कम इस जन्म की  
 भाषा तो नहीं ही है। श्रीधर गभीर थे जब कि इन्नु में गोभीर्य के साथ आशेष,  
 आशेष माबुक्रा सभी कुछ थे। वह राम और विराम समान उद्येय के साथ  
 करती थी। इन्नु की सारी बातें श्रीधर अत्यन्त संमीरता से सुनते लेकिन साथ  
 ही वह नहीं और खोने भी रहते। प्रायः बाछा साहब के पुस्तकालय से इन्नु  
 कोई पुस्तक काकर श्रीधर को सुनाती। जिसे वह कितना कुछ समझ पाते थे  
 यह बात दूसरी थी लेकिन जिस शान्तभाव से श्रीधर सुनते उसका प्रभाव इन्नु  
 पर गहरा पड़ता था। जो एक बार ही ऐसा हुआ होगा लेकिन हुआ जरूर कि  
 बीच में हठेवाली साठटेन रक्त कर इन्नु ने कभी रापों की उत्पत्ति के बारे में,

उनके स्वर विस्तार की व्यवस्थित नियोजना के बारे में कई किताबों में सं पढ़ कर सुनाया था। या फिर इतिहास की पुस्तकें। आर्य कौन थे। वह घुब प्रदेश कहाँ है जहाँ से आर्य जाति जसकर मध्य एशिया के पठारों काफ़ेशिया की भाटियों को जायती आर्यानाम (अर्थात् ईरान) बसाती किस प्रकार हिमालय के जलछ तक पहुँची। आर्यों की यह सभ्यता की यात्रा थीबर को उस समय की रोशनी में बड़ी रहस्यमय लगती। सिद्धियों के पुसे पत्तों से फाल्गुन की धीस्तोष्ण हवाएँ भिरभिर भाठी होती। कुछ फाल्गुनी आकाश तारा में सिक-मिसाता रहता। इन्तु क कमरे में कुछ तैलबिज खने हुए थे। एक छवि उबकी माँ की भी थी। बरी के पाट की महाराष्ट्रीय साड़ी में वह गप बाकी महिषा मप्रतिम सौन्दर्य की प्रतिमा कही जा सकती थी। अपनी माँ की छवि के सम्मुख इन्तु नित्य एक बीपक बाधती जो प्रायः रात भर जलता रहता। दो चार समुद्र तट की छवियाँ भी फ़ेमिठ थी।

इन्तु जाने क्या-क्या पढ़ कर थीबर को सुनाती होती। थीपर को आज विरोध तो स्मरण नहीं रहा कि वे कौन पुस्तकें थी लेकिन कल्पना में उस 'गांधे दम के कुबड़े द्वारा गिरजे के घंटे का बजाया जामा वे अनेक बार सुन चुके थे। जब कभी आज भी छात्रनी में वे गिरजे के घंटे की आवाज सुनते हैं उन्हें लगता है कि प्रत्येक गिरजे में बगटे बजाने का नाम कुबड़ा ही करता है। बचपन में तो वे मीठ में भी जैसे देखते कि संकड़ों बच्चे लटक रहे हैं और एक कुबड़ा उन्हें अपम दीरों से बजाये जला जा रहा है बजाये जला जा रहा है। इतना धोर, इतना धार कि वे चीख पड़ते। आज वे घंटे समय के साथ दूर से दूर तर हूँते गये हैं। उसी प्रकार उनका धोर भी अत्यन्त क्षीणतर हो गया है। धुधि जो पहले एक नील रहस्य के गुम्बर सी लगती थी अब धुक जायी है। वह गुम्बर भी नीचा हो गया है। अब भी सौप्त साध जगता है लेकिन वह मृत-प्रियव्यक्ति का प्रतीक नहीं लगता। दुनिया जो कि पहले बारी की कहानी के राजकुमारों और सोने के हँसों से भरी लगती थी—कोई मूँ के एक टापू है जहाँ प्रत्येक साहसी जाता है और नायों से सुरक्षित तोड़े की परत मटपू कर शील के उस दरबाने पर पहुँच जाता है जो कि उग नीलम परी का उपवन है और बस फिर तो उस नीलम पंत बाकी संवाह करना ही शेष रह जाता है। ऐसी काल्पनिक यात्राएँ काठी के बारजे पर लड़े-लड़े इन्तु के साप अनेक बार की थीं। सामने का वासाब साँग की धूप में फेमरिया हो जाता है। इन्तु जाने किस मनोमोक में हूँती। थीपर को भी जल्हाह होता लेकिन वह फिर भी

न सुखी भाँखों न बन्द आँखों सामने के तालाब और सिंहरों को जैसे लीप नहीं पाता । हवाएँ बमचई में धूमती होतीं । फुनगियों पर पत्त फड़फड़ाते पत्ती बँटने का यत्न करते होते । तालाब के बीच में छतरी व ऊपर कबूतरों के झुण्ड किस्कोकते सतरित होते । पहाड़ों के पीछे पाली रेल के इजन का घुमा पहाड़ों के ऊपर रेंगता सा टम्बा हाता खसा जाता और दूर वहीं सुपान्न होता ।

आज आकाश मेघाच्छन्न नहीं था। भूप एकदम बरसी पड़ रही थी। गूबबंदी और सुसीला दोनों स्कूल गयी थीं। बेबप्रत नीचे अपनी हाथी के पास खेच रहा था। सरो अभी-अभी उनके कपड़े बदल कर गरम पानी से हाथ-मुँह बुसा बापस रात्रीपर पथ्य के छिपू बसी गयी थी। आज उनके चारों ओर जैसे समय बिलस पड़ा था। पूरा दिन अपनी सारी बेलाओं के साथ। डेर सी घूब और अनन्त महूर मीलाकाय। छिड़की की बीलट पर ठकिने टिका कर भीचर बाबू बाहर नमी में बेसने सगे। लोप गमी की कीचड़ से बकते हुए आ-जा रहे थे। सामने का मकान थापा का था। बाकी का ओर ओर से कोरना बीचारों का भीर कर मा रहा था। बाकी चारों ओर अन्धर-बाहर निर्जन कम रहा था। बाठावरन में लाने को विविध गंम मिठी हुई थी। छिड़की से जाती भूप का टुकड़ा फस पर लामोच बिस्ती की तरह बैठा हुआ बीचारों को खेच बेस रहा था और बीचारे प्रतिबालोक्ति थीं। बीठक की तरह का दरवाजा खुला था। बीठक की छत में टेंके कापत्र के फूड अपने-अपने रंगों में बमक रहे थे।

एक अम्पकत बायंका उन्हे बेरे थी। यदि बिनाय उन्हे इतिहास में केर

बन्धु न करने के कारण निकाल दे तो क्या होगा ? इस प्रश्न का उत्तर उन्हें नहीं मिल पा रहा था। यहाँ रह कर वे कुछ नहीं कर सकते लेकिन क्या कर सकते हैं सिबाय पढ़ने-पढ़ाने के ? वे और क्या कर सकते हैं ? समझ है उन्हें सबा देने के विचार से प्राइमरी स्कूल में जेब दें और साथ ही तबागसा भी कर दें। बहरहाल ऐसी किसी भी स्थिति में वे अध्यापकी नहीं करेंगे। तब परिवार का क्या होगा ? कुटुम्ब की वास्तविकता तो स्पष्ट ही थी। पिता स्वयं ही बुढ़ हो चले हैं। मला ऐसी स्थिति में सरो पुणवती सुसीमा और बेबघत का क्या होगा ? लेकिन यह भी तो समझ है कि श्रीमन्त सरकार भीमर बाबू के इस निर्णय को उचित ही मान लें और कुछ भी न हो।

तनी सरो पध्व लेकर आयी। मरे मासोक में कई दिनों बाद भीमर बाबू ने सरो को देखा। पहले गाछ जो निकले पड़ते थे अब उनकी जगह गासों की हड्डियाँ हस्की बिलफायी दे रही थीं। ठोड़ी की हरी गुदने की बिन्दी सरो के नीर बर्ष में खुब लिस आयी थी। बिना किनारे की सान्नी पोती में लौहीन भाँच सी सरो पास आकर लड़ी हो गयी।

—आप उठिए नहीं। मैं यहाँ पध्व के लिए पाट बगैर ले आयी हूँ।

और पध्व के लिए उठने को तत्पर भीमर बाबू सरो के लिए कृतज्ञता से भर उठे जो उनकी छोटी सी छोटी सुबिधा का ध्यान रखती है और जबकि वे उसके लिए क्या कर सके हैं ?

एक पाट पर पध्व रखकर वह भीमर बाबू क हाथ पुनाने लयी।

—मह सोप लानी बुके ?

—जमी कहाँ ?

—स्कूल से कोई डाक दे गया ?

—नहीं तो।

—सरो। तुमने पूछा नहीं कि मैं क्यों भीगता रहा ?

—मला यह भी कोई पूछने की बात है ? छत्ररी तक टैरने गये और वहीं पानी ने बेर लिया। क्या इतनी मोटी बात भी आपकी सरो नहीं समझेगी ?

—महीं यह बात नहीं है।

—तो फिर कौन सी बात है ? तो क्या छत्ररी पर नहीं भीने ?

—नहीं भीगा तो छत्ररी पर ही पा।

—तब क्या ?

—तब बड़ी जोर से पानी माया।



—भीर बाप मीन गये हैं न ? कबिल बाप पानी से भीने यह नहीं मालूम था । भीर मरा बड़ी जारों से हँस थी । भीबर बाबू बाड़ी देर बाप समझ सके कि इस नारी ने तर्क द्वारा सिद्ध कर दिया कि मैं यह बात बताना नहीं चाहता हूँ इसलिए पानी से भीने वाली बात पर ही मबाक कर बात टाल दी गयी थी ।

—सुनिए क्या इतिहास में न बचसने की बात पर आप इतने चिन्तित रहे हैं कि आपको यह तक ध्यान नहीं रहा कि आप बरसात में ठाकान गहाने गये और फिर बरसों बाप छतरी तक अकेले ठीर कर आना पड़ा । उसके बाद वहाँ इतनी देर बैठे रहे कि किसी रूप कब चली गयी बाबल कब फिर आपसे और कब दृष्टि आरम्भ हुई, किसी बात का ध्यान ही नहीं रहा ? क्या आप बहुत चिन्तित हैं ? कहीं मेरे या बच्चों के लिए इतनी चिन्ता तो नहीं कर रहे हैं कि अपना भी ध्यान रखना मूल बातें हों ?

एक साब सरो इतने सतर्क एवम् सटीक बोली कि भीबर बाबू के निकट अपना व्यवहार जा बिल्कुल स्पष्ट नहीं था स्पष्ट हो गया । सब ही इन दिनों ठाकान में बरसाती पानी होता है और कोई भी अधिक देर नहीं मचाता । दूसरे, वे बरसों बाद छतरी तक ठीर कर गये थे जिसकी कोई आवश्यकता नहीं थी । उनकी खबरेतम-चिन्ता को सरो इतने सहज रूप से बता देगी इसकी कल्पना उन्हें नहीं थी । न सरो को बरसत सीधी नारी मानते रहे हैं जिसे लोक जीवन का भिष्याचार नहीं आता या किसी पर श्रेय नहीं कर सकती उस पर कोई कितना ही काद वे यह कमी भार के बहन से नहीं टूटेगी । इसलिए अनेक पृथ्वियों का भार उस अकेली नारी पर है । जबकि दूसरी बहनों ने अपने कुल भीर पति की कमाई पर दम्भ किया था । वह चाही तो स्वयं भी अपने ज्ञान का दम कर सकती थी । पिता भी अच्छे चिन्तित पुरुष हैं । लेकिन दूसरों के दम को उसने नमस्तक हाकर वास्तविक मानकर अपने को हेठा हो जाने दिया । ऐसी रूप रहने वाली मापि किस प्रकार विभिन्न घटनाओं को जोड़कर सही निष्कर्ष पर आ जाती है इसका प्रमाण भीबर बाबू का मिल गया ।

भीबर बाबू का चुके थे । बर्तन समेट, पीड़ा उठा सरो ने हाथ धोये । पति की सौन्दर्य-मुपारी देकर नीचे चली गयी । भीबर बाबू अपनी बर्तमान अति स्वयं की स्थिति का कोई मार्ग जानने को उत्सुक हा उठे । नीचे दरवाजे की दम गोपने की आवाज हुई । पिता जी थे । देवदत्त की लेकते देकर उहाँने उमी पो पुकारा

—देव ! अरे भीया अकेला क्या कर रहा है ? कहाँ गये सब ?

—सब सा रहे है ।

बबबब क इस सीधे स उत्तर को सुनकर श्रीनाथ ठाकुर को हँसी आ गयी ।

—नरो बापहर में भी कोई सोता है ?

और उन्होंने फिर श्रीमोहन की बेटी कान्ता को पुकारा । पिता श्रीनाथ ठाकुर की यह आरत है कि वे घर में घुसत ही किसी वक्ते को पहले पुकारेंगे । जिसका अर्थ यह होता है कि यदि बहुओं में या और कोई ऐसे-वैसे बडा हा हा साब धान हा जाए । बहु-बेटी बाळ घर में हमसा या तो खासिक या पुकार कर ही प्रवेचना चाहिए, यह पिता श्रीनाथ ठाकुर का ठरक है और जिस कुटुम्ब का प्रत्येक सदस्य जानता है । पिता का नियम इतना सधा हुआ है कि उनके बच्चों स आप पहचान सकते है कि वे घर में है तो कहाँ है ? घर स बाहर है तो कहाँ गये है ? कडा को आबाज स ही पहचाना जाता है कि वे या सो बाहर स लौट है या फिर भोजन के बाद विधान रहे है ।

पिता मन्दिर से लौटे थे । तब तक माँ की आबाज सुनायी थी । पिता माँ से श्रीपर दाबू की लबिमत का हाल पूछ रहे थे । झूले क कड़ों की आबाज आ रही थी ।

—सुना श्रीबस्त्रम मे अपने तबादले की अर्जी दी है ।

पिता ने माँ को समाचार देते हुए कहा ।

—मूम से ठी कइ रहा या कि उसे बड़ी जगह मेजा जा रहा है ।

माँ ने अपनी सदा की निदरकता से कहा ।

—तुम भी कैसी हो । तुम अपने सड़कों को ही नहीं समझती ?

—अब दुनिया भर के ये सब छल-प्रपंच मेरी ठी समझ में नहीं आत । होगा जिसे रहना हो रहे । नाक-माँ सिकोड कर भाई, किसी को रहने की जरूरत नहीं । जहाँ सींग समायें वहीं जाएँ । किसी को यह घर पसन्द नहीं किसी को यह वैहात जैसा लगता है । एक महतनी जी को बिना मीकरों के नहीं बसता तो दूसरी को कुछ चाहिए । ठीक है भाई जब तक हमस यन पडा किया । अब सब अपना-अपना सम्हाला । अकेली बेचारी येसामी बहु कहाँ तक लटती रह ? इस घर में तो सोमा के मिजाज ही नहीं मिलते । लोग महँ रहते क्या है जैस हम पर उपकार कर रहे हों । ना भाई उपकार करने की कोई जरूरत नहीं जिसको जाना हो जाए । हम किसी के सहारे नहीं है ।

तब तक घायद सरो ने दरबाने की कुब्बी लटकयी । स्वपूर या किसी बड़े को बुलाने का यह संकेत था ।

—बसो जब भोजन तैयार है ;

माँ ने पिता को आदेश दिया ।

—लेकिन तुम इतनी ही बात पर इतना क्यों बिगड़ रही हो ?

पिता ने बड़े में से पानी लेकर नुस्खा करते हुए कहा ।

—बिगड़ने की बात नहीं है लेकिन कुटम्ब-भरिषार में कैसे रहा जाता है यह भी लोगों को मालूम होना चाहिए । एक बटठा रहे लेकिन दूसरे को अपने आराम से ही फुल्लत नहीं । मसली बह ! तुम से कह दिया न तुम जाकर उसके पास बैठो । उसकी तद्विषय खतरा है तब भी तुम चूल्हे-बौके में बसी हुई हो ?

शायद पिता भोजन करने बसे पये और माँ भी उनके साथ ही । नीचे एकदम धाँसि हो गयी । पता नहीं माँ आज क्यों इतना बिगड़ रही थी । बर्ना बे कभी नहीं बिगड़ती । समझ है माँ ने शानी से मा डाक्टर की बहू से चूल्हे का काम सम्हालने के लिए कहा हो क्योंकि काम करते हुए सरो पति की सीमाखारी ठीक से नहीं कर सकती । और उन दोनों ने कोई बहाना बना दिया हो । अपनी अकहेलना देखकर उन्हें क्रोध आ गया हो । सहज है । अभी धीपर बाबू यही सब सोच ही रहे थे कि सरो ने प्रवेण किया । उसकी जानें एकदम छाल थीं । वह धोती में मुँह छुपाये तेजी से बैठक की ओर चली गयी । धीपर बाबू सहसा समझ नहीं सके कि पिता अभी तो खलीपर गये हैं भोजन करने और सरो वहाँ से आ गयी ।

—क्यों तुम अभी क्यों आयीं ?

कोई उत्तर नहीं ।

—सरो ! क्या बात है ?

कोई उत्तर नहीं । कुछ झुंझलाकर धीपर बाबू ने फिर पूछा

—सरो ! मैं तुम से कुछ पूछ रहा हूँ ।

एक हल्की शीघ मुबुक सुनायी दी । तो क्या सरो रो रही है ? लेकिन अभी माँ सरो पर तो नहीं बिगड़ रही थीं । फिर क्या बात हुई ?

—मुझे यहाँ आने का क्या बात हुई ?

केवल मुबुक । कोई उत्तर नहीं ।

धीपर बाबू बिन्ता में उठे । आसंका तो नहीं थी लेकिन एक बिचार तो आया ही कि कहीं सरो ने माँ या पिताजी को कोई ऐसा-बैसा उत्तर तो नहीं दे दिया ? और माँ तब बिगड़ी हों और सरो तब यहाँ चली आयी हो ।

धीधर बाबू ने देखा कि सरो गाब तकिये में सिर दबाये मुबुक रूही है । बे उसके पास पहुँचे । मुबुक के कारण कापती पीठ पर धीधर बाबू ने हाथ रखा ।

—क्या बात हुई सरो ? बात सा बचामो ।

—कुछ नहीं ।

बैसे ही मुँह बाबे मरी मरी आबाब में उतर दिया ।

—यह नहीं हो सकता । बात कुछ बरूर है । क्या माँ ने कुछ कहा ? या सुमने उन्हें कुछ कह दिया ?

तब तक उस कमरे से इधर आती हुई पैरो की आहट आ रही थी । सरो भी समझी । दरवाजे पर माँ बड़ी थी ।

—नैमली ने मुझे कुछ नहीं कहा धीधर ! बल्कि मैंने ही इमसे कहा कि जब धीधर की तबियत बराबर है ता पूरहे चौके का काम छोड़ कर बस्ती बयो मही जाती ? जब महुरनियों को फुमठ होमी ला लोमी और समहारोपी बीका पूरहा । और एक दिन बीका-पूरहा समहार ही लिया तो कौन रूप भिस जाएगा रानियों का ? बस इस पर बड़ी अपने कमरे से निकली और न समुर का मिहाज न सास का । सगी फूटी हाँड़ी सी बड़बड़ाने इस पर । यह वेपारी गाय । आज एक किसी को जबाब दिया जो इहाँ जेठानी महुरानी को बेती ? मैंने तो कह दिया कि या तो सब अपना-अपना काम बाँट लो नहीं तो कोई किसी की ठगुराई कहाँ तक सह सकता है ? अब मैंने इससे कहा कि बालो—तुम ला लो पहले । जिसको खाना होगा ला सगा ।

धीधर सक्ते में आ गये । दोपहर बल चुकी थी । मामी और बहू को अभी तक खाने की फुमठ नहीं ? बिना घर भर को खिलाये भला बनाने वाली कैसे ला सकती है ? रोज ही ऐसे भूले रह कर मरो जट्टी है ? ठीक है यह बात उन्हें मालूम थी कबिन इमसे क्या ? बे बीका पड़ते यदि माँ सामने न होता । सरो बबरे से देर रात ऐसे ही बस ऐसे ही रिवाती रहती है ? उस पर भी किसी को दर्द नहीं ? दिन भर पलंग पर बैठकर पान खाते हुए, हुकूम बचाते हुए मामी को यह दर्द नहीं कि अब ता तीसरा पहर हो गया । खुद तो जाने क्या-क्या दबाइयों के नाम खानी सती है तो भूल नहीं लगती लेकिन इम बटके को चाकर को तो भूल लग सकती है न ? उन्हें इस्वा सा पचकर आ गया । माँ ने दौड़ कर धीधर को समहार लिया ।

बात जैसे आयी-गयी सी हो गयी । सब मूल तथ्य कि श्रीधर बाबू के इतिहास पर पिछा विभाग ने कभी अबाध-सम्भव किया था । वही रोज की तरह श्रीधर बाबू स्कूल जात । बस नहीं करोंच थीता यही रि वे सरस्वती के लिए कोई विशेष मुविबा उपसम्भव नहीं कर सके । छोटे माई बाबटर श्रीबस्त्रम ठाकुर ने अपना उबादला करवा किया था और इस बहाने वह अपने को इग कौटुम्बिकता के अंजाल से मुक्त कर सके थे । अब श्रीमोहन-मली सामित्री के लिए घर में सामाजिक हाने के लिए कोई व्यक्ति उपसम्भव नहीं था इसलिए प्रायः पास-पड़ोस में वे अभिन्न रहने लगी ऐकिक सरस्वती के प्रति कट व्यवहार में कोई अन्तर नहीं आया । श्रीधर बाबू के पास सग काशी समय रहता ही था ताकि छिपने पडने का काम किया करें । इग बीच उह इगु दीने क बारे में पानन की काठी इच्छा रही लेकिन वे जो कूठ मानूम कर सके वह वही कि क निरन्तर तीर्थयात्रा करनी रहनी है और एक प्रकार से सारे सम्बन्धों से अपने को बिरफ्त कर चुकी है ।

श्रीधर बाबू को पता नहीं थाकतक क्यों अतीत भेरता है । समता कि

वे कई महत्वपूर्ण सूत्र अनजाने ही पीछे छोड़ आये हैं जिसे उगका मन्वेतन पाना चाहता है। लेकिन आज वे वहीं लड़े हुए थे वहीं स मर्तित ग्लुलकावद विषय की तरह नहीं छगता था जिसे आसानी स यदि न पा सके वा कम से कम सोच तो सरते ही हैं। उन्होंने सवेत हो कर दया कि मामने छावनी का पालो घाउड दुर तक बसा गया है। जिसस सट सेप सुदूर दिगाओं तक कपरी क पेवकों स बल गये हैं। सूर्यास्त हो रहा था। लेकिन जाड़े की गाम और खेपेरा सूर्य डूबने की भी प्रतीक्षा नहीं करते। हस्का कुहय मुक माया था। कस्के की तरफ धुमा घादर और पतली तहा में धिर था। इन सब क ऊपर एक खजीब सुहाना टंडापन जो जाँकों को हापों का तबा पूरे तन को नहका रहा था। कालीनन्दिर वाली पहाडी की तजहटी में जाने कितना अमरा इयाँ अमरुद के बगीचे घरीके के जंगल के जंगल फल हुए थे। नारायण बाबू और पेमेग बाबू दोनों ही दुर्गापाठ करने क सिए मन्दिर में रुक मये थे। कस्के से नबरात्रि आरम्भ हो रही थी। काली मन्दिर में विशेष आयाजन प्रतिबर्ष की भाति क्रिया जा रहा था। काली मन्दिर क इस धिसर से चारों तरफ का दृश्य दूर-दूर तक बिलकायी दता है। दिन में ट्रेग का धुमाँ साँप क आकार में भीमियों भीस दूर स दिसलायी पडता है। जाड़ों की दुपहर में ठाकाब एक भीस फर्ग सा छयता है। शहर जाने वाली सड़क किसा और बाग्घाही पुळ यहाँ स साष्ट नहीं बिलते क्योंकि वे एकदम उकहटी में पडते हैं।

धीवर बाबू का दौघब के वे दिन गान हो आये जब वे कमी-कमी धर स नाम कर बहाँ इनी छत की तरह निकली बड़ी सी जटान पर आकर धूप में रुक जाया करते थ और मन में साबत थे कि तिम्बठ को बुनिया की छत कहा जाता है जो वे दुनिया की छत पर रुटे हुए हैं। प्रायः नारायण बाबू इन तरह की साहसिकताओं में घापी रहे हैं। सम्भार्ई तो यह है कि नारायण बाबू का साब वे दते थे। कस्के अमरुद और घरीकों स गिळहरियों तथा गिरमिटों का निघाना लगाया जाता। जिसका पत्बर कितनी दूर पानी पर या कितना ऊँचा जाता है इसकी घर्त होती। लेकिन इस तरह की साहसिकताओं की अधिक स्मृति धीवर बाबू के पास नहीं थी। ममब था कि इन्नु दीरी न दिनी होतीं ता वे कुछ दूसरे भी हो सकत थे।

आज जब भीबर बाबू इन्दु दीवी के साथ कबे दिन स्मरण करते हैं तो वे स्पष्ट नहीं कह सकते कि दोनों के बीच क्या समानता थी। किसी भी बात की समानता नहीं रही या सकती थी। मायु, यह प्रतिष्ठा कुछ कुछ भी तो नहीं। वे ठीक से नहीं कह सकते कि इन्दु दीवी से पहले-पहल जब भेंट हुई। लेकिन जो याद पड़ता है वह यही कि कभी-कभी किसी पूजा-यज्ञ पर एक छोटी सुन्दर सी पासकी में हस्की शरारत मरी जाँकों की एक ककड़ी मराठी पोल्का और पेटिकोट में बिलती। बासा साहब की राजकमारी सी कन्या का भला कौन नहीं जानता था।

एक दिन शामय वे अपने पिता के पास बैठे हुए थे। आरथ के अधिक मास व दिन थे। ठाकुर भी की बनयाजा की तैयारी थी। इन्दु उनके पास आकर चुप बैठ गयी। कोई पद चल रहा था। उनके हाथों में करठास थी। बरठास से प्यान हटाकर ठिरछे से वे उस ककड़ी की ओर बार-बार देखने लगे। पता नहीं क्या वे बेठास होकर करठास बजाने लगे। पिता ने बैस ही पद पाठ हुए तो एक बार बुरा भी। उसके बाद कुहनी से उन्होंने करठास रोक दी। तब नहीं तन्ना टूटी। इन्दु करठास वाली मूर्खता समझ लयी थी। जैसे ही वे मन्दिर से बाहर आये। इन्दु ने सहसा पीछे से कमीज खींचते हुए कहा — क्या करठास भी नहीं आती? कीतनिया भी के सड़के को ताल का भी ज्ञान नहीं? और वह जोर से हँस दी। हृत्प्रम से वे लिसिया गये। क्योंकि दूर गड़ा बामोदर अक्षयडिया बीमे तिवोर कर चिका रहा था। इन्दु पासकी पर चढ़ते हुए स्वस्व टेंका मुँह बना कर चिड़ात हुए बोली — बूढ़ ! ताल का भी ज्ञान नहीं।

भीबर बाबू को इस के पूष की घटना याद नहीं पड़ती। सम्भव है कोई हो ही। आज तो जो याद है वह यही है। इसके बाद शामय फिर कई दिनों तक नहीं होगा। दूसरी बाग का मिसना उन्हें ठीक तरह से याद है।

शास्त्रपत्र के दिन से।

बासा साहब क यहाँ शास्त्र था। बड़ा भारी बह्यभाज दिया गया था। सभी बलिनी और दूसरे शास्त्रण आमन्त्रित थे। बचपन में जिस कोठी को दूर से होगा वा आज उस कोठी में पहली बार आया गया था। भीबर ने इसमें पूष कभी

इतना धैर्य नहीं देखा था। बाबा माह्व के पुस्तकालय में सब साग बैठे हुए थे। आमंत्रितों में बड़े-छाटे सभी थे। सम्भवतः आने वालों में मनी कोठी के यन्त्र बहुत कम आये रहे होंगे। दीवारों पर टंगे तैलचित्रों का आग ध्यान से देख रहे थे। लिफ्टियों की दरवाजा के ऊपर हरिण और बाखुसियों के चित्र बसिंग लगे हुए थे। कमरे के बीचोबीच एक बड़ी सी धातु का टेबल थी। तालाब की आर की बड़ी लिफ्ट की तरफ एक वाग्या था जहाँ नुनर सी एक चौकी रखी थी, जिस पर गहरी-ठकिये लगे हुए थे तथा सामन्तर बिछा था। बायें हाथ एक सड़ा सा पर्दा पड़ा था। जिसे उठाकर बाबा साहब ने प्रवेश किया। सब ने उन्हें प्रणाम किया। प्रतिमस्कार कर के उस चौकी पर बैठ गये। पाड़ी देर बाद एक नौकर आया और भीषर को अन्दर सिवा ले गया।

नौकर आये-आगे चमत्ता रहा। कई कमरे और दामान पात्र कर सब से कोठी के उत्तरी अंतिम सिरे पर पहुँचे सब भीषर ने देखा कि सामने बड़ी सड़की लड़ी है जिसने दरवाजा ठीक से न बसा सक्ने पर चपटी बोवा 'बुदू' कहा था।

बाबा वह सड़की उम लिन की अपेक्षा कहीं अधिक बड़ी लग रही थी। सड़की ने मराठी डम से जुड़ा तथा परिधान धारे थे। धम मर को भीषर सादर्य सड़े रहे। वह उसी तरह तिलचित्रिका पड़ी

—बुदू !!

और भीषर भी इस बार हँस दिए।

—लेकिन तुम क्या हो ?

भीषर के इस प्रश्न पर इन्दु ने बड़कर उसका हाथ पकड़ लिया और लगभग पसीपठे हुए बोली

—बीबी !!

धीरे उतरते मात्रपद की धूप कमरे की लिफ्टियों से सब मारी जा रही थी। यह कमरा लगभग एकान्त में ही था। इसकी लिफ्टियाँ स तालाब पूरा रिक्तता था तथा कमराई का भी बहुत-सा नाम। अहाते की पक्की दीवार एक लिफ्टी से लिपटी थी जिस पर कि एक बड़ा सा बटबुल अपनी विगाह वाले कैम्बने इस समय मौन लड़ा था। कमरे में एक सुन्दर भा पलंग था जिसकी ममहरी ऊपर की हुई थी। कोने में तानदूरा रखा था। लिफ्टियों के पास एक मक्का मित्र टेबल और जमी ही एक कुर्सी। टेबल पर कुछ किताबें बकमदान तथा हवाई वाली कास्टन। बीच में बैठक के लिए एक बड़ी सी चौकी जिस पर गाक-



तकिये और कासीन बिछा था। कमरे में साठ पात्रम बिछी थी। बी  
पर सिर्फ सीम कने हुए थे तथा कुछ फोटो।

बीच की चौकी पर अग्रभाग ठेक्य हुए बिठना कर इन्दु कमरे से  
सयी। धीवर की समय में कुछ नहीं आया। तभी इन्दु सौटी और ज  
मोदी ने एक लरयोस था। लरयोस को मोदी में बिठलाकर वह हाथ फेर्ये  
धीवर की ओर जैसे सप्रसन्न हुई

—गुम्हाण नाम धीवर है न ?

—जी हाँ।

—जी हाँ नहीं सिर्फ हाँ। तुम बिन्दुक बुद्ध ही हो। कोई बड़ी बहाना स भी ह  
कहा है ?

—नहीं।

—तो फिर ?

—हाँ !!

धीर बैस तो दोनों हंस चिये वे लेकिन इन्दु अधिक जोरों से।

—तुम यकने जाते हो न ?

—हाँ।

—किस बसास में हो ?

—छठे में।

—सच ?

—नहीं तो क्या झूठ ?

—इतना पिड़ी सा कड़का भी मका छठे में हो सकता है ?

—मैं साठ बरस का हूँ जानती हूँ ? बबल परीसाएँ दी हूँ।

—तभी नहीं तो अभी पहली में ही होना चाहिए था।

धीर बहु छिर हँस पड़ी। धीवर इस हँसी का मतलब बिन्दुक ही नहीं समझ  
पाया था।

उसके बाद एक बड़े से कमरे में ब्रह्ममोक्ष हुआ था। किन प्रकार रीयासियाँ  
बाल कर पंक्तिवाँ बनायी सयी थी। धुनी हुई केसों को पमासतियों पर मोखन  
परमा गया था। बबरबतियाँ मिटटी के पंक्तों में प्रत्येक के सामने प्रसायी  
सयी थीं। और भाजन आरम्भने के पूर्व बाला साहब ने किन प्रकार बडा के  
साथ प्रत्येक ब्राह्मण और बटुक बीनों को ही सोने की बम स मंग लग या था  
और पान तथा बक्षिणा की पाक सगाने वाले की बास स पान और बक्षिणा

रखी थी। बेश महाराष्ट्रीयों में पर्व नहीं हाना लेकिन सीस ता होता ही है।  
इन्मु इस बीच दो एक बार विलम्बी भी लेकिन बिनत ही।

सहमा पेमेन बाबू का अट्टहास सुनायी दिया। नारायण बाबू जोर-जोर से कोई बात सुना रहे थे और पेमेन बाबू की हसी एक ही नहीं रखी थी।  
—क्या बात है नारायण बाबू! पेमेन बाबू क्यों हँस रहे हैं इस तरह?

नारायण बाबू इस तरह सीमे बने हुए थे जम कुछ जानत ही नहीं

—जब मुझे क्या मामूम? मैंने तो सिर्फ इन्हें अपना बही किस्सा सुनाया कि  
किस प्रकार हम लोग महाँ बचपन में आया करते थे। वो याद है न श्रीधर!  
कि यह मंदिर पहले कितना ऊँच-साबड पड़ा हुआ था। एक दिन पास के  
गाँव का एक बनिया बहुत सारी मिठारिंकेकर महाँ आया था। हम लोग इस  
पट्टान की आइस देखते रहे थे। लेकिन जब वह बहुत देर तक नहीं गया तो  
मुझसे रहा नहीं गया और मूर्ति के पीछे जो खोह थी उसमें बीरे से जाकर  
मैंने इस तरह चीखना शुरू किया था कि वह बनिया मामूमता छोड कर बेचारा  
जान सेकर भागा। हम लोगो मे लुब मिठारिं खापी थी। जमरु में उस बनिये  
बेचारे को दुर्मापाठ करने में बेरी हुई थी। आज हम लोगो को भी जब काफी  
देर हुई तो दुर्मापाठ करते हुए मुझे बही बात याद आ गयी। इन पेमेन बाबू  
को जब सनायी तो वे तभी से हँस रहे हैं।

पेमेन अभी तक हँस रहे थे।

सब ही नारायण बाबू काफ़ी घरीर रहे हैं। इस कारण श्रीधर जैसे सीमे सड़के  
को भी कई बार रीताती करती पड़ती थी। श्रीधर बाबू यह पटना बिल्कुल  
मूल ही यमे थे। लेकिन इसके बाद की बात नारायण बाबू भूत रहे थे।

—नारायण बाबू! वो ता आप भूस ही यमे आ जमरु बाबू हुआ।

और इस बार नारायण बाबू बड़ी जोरों से हँस पड़े। नारायण बाबू बहुत जोर  
से हँसना शालों में स थे। आज अमावस्या थी। दूर-दूर तक घना मँबकार ही  
था। बीच-बीच में बही एकाप भाग की लरक दिस जाती और घग। गहर

वाली सड़क पर कोई मोटर आ रही थी जिसकी कार्ट कमी छिप जाती और कमी दिखाती । आगे की बटना बीघर बाबू ने उठते हुए धुक की ।

—काफी दिनों के बाद यही किस्सा बैठे हुए नारायण बाबू अपने भाई साहब को सना रहे थे । भाई साहब कर्नलों से बहरे हुए बैठे थे । जब ये किस्सा पूरा हुआ गया तो एक साहब उसमें से एकबम कास-पीसे हाकर बोले—तो साहब ! आप ही थे उस दिन वहाँ ? —और एक दम उस आदमी का चेहरा भय से पीला पड़ गया । नारायण बाबू ने पहचाना कि ही यह वही व्यक्ति है । और उसके बाद जो ठहाका पड़ा कि बस । वह बेचारा सेठ कहने लगा कि साहब मेरी पाँच सेर मिठाई तो खराब हुई ही लेकिन जान भी जाती ।

तीनों हँसते हुए काफ़ी मंदिर वाली पहाड़ी अंगरे में उतर रहे थे । चारों ओर निर्जन था । तीनों दम साधे उतर रहे थे । जैसे रास्ता अब ठीक कर दिया गया था लेकिन वेमन बाबू के लिए फिर भी काफ़ी कठिनाई हो रही थी ।

वेमन बाबू ही एक मात्र बंसाही इस कस्बे में थे । वे जब, कहीं से और कैसे यहाँ आये कोई नहीं जानता । लोग इतना ही जानते हैं कि तारबाबू नौकरी करते हुए यहाँ आ पहुँचे । यह तो ठीक है कि वे नौकरी के सिद्धांतिक में ही यहाँ आये थे और जब ता करीब-करीब दस बरस से यही हैं । लेकिन वेमन बाबू के पिता किसानानाथ मजूमदार यहाँ छाबनी में ठेकेदार के रूप में बहुत पहल एक बार रहे चुके थे । उन्हें यह जगह बहुत पसन्द थी । अपने ठेके के सिद्धांतिक में ही उन्हें महुँ बना जाना पड़ा और कुछ ऐसा दुर्भाग्य रहा कि वे एक दुर्घटना के शिकार हो गये । वेमन बाबू तक मुम्बिक से दस बरस के रहे होंगे । इस अनजान प्रवेस में वे भला किस तरह रहे पाते ? लोगों ने सबाह ही कि अपनी एक रिक्लेशर बुझा के पास कलकत्ता चले जाएँ । किसी तरह वेमन बाबू कलकत्ता पहुँचे मी लेकिन दुर्भाग्य कि बुझा तक तक कागोबान करने चुकी जा थी । मासक प्रदेश में उत्पन्न वेमन बाबू का कलकत्ता किसी भी दृष्टि से रहा नहीं अतः आपस लौट आये । अब क्या करते ? पाड़े दिनों तक तो वेमन बाबू न महुँ में ही अपने पिता की साज पर कुछ ठेके का काम करना चाहा लेकिन वह सम्भव नहीं था । वेमन बाबू ने एक बार भाव्य भावमाने के स्वास से नारायण बाबू के बड़े भाई गोबर्धननाथ की पत्र लिख कर अपने पिता तथा

चनकी मंत्री का हुआसा देकर कुछ सहायता चाही। निगानाय बाबू और मोक्षरत्ननाथ में काफी अच्छी मेक-मुलाकात थी। पेमन बाबू किसी प्रकार मेट्रिक तक पढ़ना चाहत थे। कुछ दो बरस की बात थी। इसक बाद तो तार-मास्टरी सीख कर अपने पैरों पर सड़े हो जाएँगे। जहाँ तक पैसों क चुकाने का सम्बन्ध है इसका आरबासन बे दही दे सकते हैं कि व अपन पिता निगानाय बाबू क नाम पर कोई कुछक न आन पेंगे। मोक्षरत्ननाथ ने यह बात मित्र नारायण बाबू क मामला किमी को नहीं बताया थी। पेमन ने टम्बैत न मेट्रिक पास किया और इन्दौर जाकर तार-मास्टरी की ट्रेनिंग पास कर तारबाबू हा मये। लेकिन पेमन बाबू एक एक दिन का भी मोक्षरत्ननाथ जी क इस उपकार को नहीं भूल थे। उन्होंने समय पर सारा पैसा सीटा दिया। इस बात का अब श्रीधर भी आन गये हैं। पेमन बाबू भी नारायण बाबू क परिवार का एक तरह स अपना ही कुटुम्ब मानत हैं। पेमन बाबू का कितना बड़ा दुर्भाग्य रहा कि विवाह क दो-तीन बरस बाद ही एक मात्र सन्तान के चम जान स बचारे हमशा के लिए जन्म हा मये। तब ये नीमच छावनी में थे। नीकरी की दुस्वार्थ नहीं से की थी। नीमच उन्हें पमन भी काफी या लेकिन हम दृष्टता स ऐमा दिग उच्यत कि उन्होंने अपना तबाका नापाक करवा लिया। मापान में दो बरस तक ता कितना तरह टीक चलता रहा। लेकिन आप दिन पत्नी का पालन-पोषण का दौरा हने लगा। पेमन बाबू बस ही जीवन में काफी मार खाये हुए थे। कुछ सुझ नहीं पड़ रहा या कि क्या किया जाए। नारायण बाबू का अपनी परेमानीयाँ क्लिप्त भेजीं। उन्होंने कहा कि हमरत यहाँ तबाका क्या नहीं करवा सेते? सब ठीक हो जाएगा। और उसक बाद स पमन बाबू एक तरह स अपने घर ही जँस साज भाये हैं। जब कमी ज्यादा कुछ हाता है ता कमी छावनी से कोई उनके घर जाता जाता है या फिर पिछले दिनों स श्रीधर बाबू क परिवार से भी पतिष्ठता हो गयी है। श्रीधर बाबू की माँ कमा आ जाता है या पमन बाबू की पत्नी ही वहाँ अभी जाती है। पेमन बाबू चाहत यही है कि अब यहाँ से नहीं जाना न पड़े। बीमे नीकरी है कुछ कहा नहीं जा सकता। पेमन बाबू काफी हँसमुख मिहनमार और सगीठ प्रेमी व्यक्ति हैं। फिर भी वहीं न कहीं कुछ सालता है और जिस बे दूर नहीं कर पात।

अब वे साथ गाड़ी बासे कच्चे रास्ते पर आ गये थे। बड़ी धूल थी। एक गाड़ी निकल जाती ता सिंग से पैर तक बूछ ही बूछ हो जाती। पहाड़ी की खरेखा यहाँ कुछ सुझना लग रहा था। ऊपर काफी ठंडक थी। वेमेन बोले—भारामन बाबू! कल सबेरे पूजन का समारम होगा भूषि प्राण की प्रतिष्ठा होयी आइएमा न ?

—माई तुम हर बरस पूजन करते हो फिर भी तुम्हारा पेट नहीं भरता ? और ये हँस दिये ।

—बाहे मेरा नहीं लेकिन आपके पेट भरने का प्रबन्ध कब हो जाएगा ।

—धीअर को पकड़ो तब तो बात जमेगी बर्ना हम खोग पूजन करत रहें और ये साहब नौद के मजे से खा नहीं होने का ।

—तो धीअर बाबू को मला कील छोड़ता है ?

—तो बस ठीक । हुअरत ! पार बजे सबेरे तैयार भिसना । यह नहीं कि मैं मटी ही बजाता रहूँ मैं और बोड़ा बाहर ठणक में ठिठुपमें और आप साहब कहला दें कि सो रह है ।

और सीनों बड़ी जोरों से हँस दिये ।

पर में घुसते ही माँ ने टाका

—अभी कुछ ही दिन हुए हैं तबियत ठीक हुए, फिर तेर रात का घुमना शुरू हो गया।

हँसते हुए भीषर बाबू माँ के पास जा बैठे।

—क्यों रे इती रात तक ठंड में कहीं घुमा जाता है ?

—तुम भी माँ कामास करती हो। अभी ठंड कहीं ?

—मौ सुनो इसकी बात। मैं ता अगा पहन कर भी नाप रही हूँ और यह कहता है कि ठंड कहीं है।

—अब तुम बुरा जा हो जसी। और माँ! अभी ता बीबाभी दूर है। जाऊ तो तभी से शुरू हामा।

—अच्छ-अच्छ लेकिन इती इती रात तक घुमना यग्मात में तानाब तहाना इतनी सारी अच्छी भावनें कहीं से सीली ?

माँ भी ध्यय कर मक्ती है यह जानकर भीषर बाबू को बड़ी प्रमप्रता हुई।

—तुम्हें तो ध्यय करना भी जाना है।



पर में घुसते ही माँ ने टोंका

—अभी कुछ ही दिन हुए हैं तबियत ठीक हुए, फिर हर रात का घुमना शुरू हो गया।

हुँसते हुए धीमे बाबू माँ के पास आ बैठे।

—क्या रे इती रात तक ठंड में कहीं घुमा जाता है ?

—तुम भी माँ कमाल करती हो। अभी ठंड कहीं ?

—ओ सुनो इसकी बात। मैं तो अमा पहन कर भी बाँप रखी हूँ और यह कहता है कि ठंड कहीं है।

—अब तुम बूढ़ आ हा बर्नी! और माँ! अभी तो सीबाली दूर है। जाड़ा ता तनी से शुरू हुआ।

—अच्छा-अच्छा रुकिए इती इती रात तक घुमना बरमात में तामात्र महाना इननी सारी अच्छी बातें वहाँ से सीबी ?

माँ भी व्यस्य कर सकती है यह जानकर धीमे बाबू को बड़ी प्रसन्नता हुई।

—तुम्हें तो व्यस्य करना भी आता है।



—सम्य क्या ?

—अरे धम्य करती हो और धम्य नहीं समझती ?

—मे कोई तेरी तरह मास्टर हूँ कि शब्दों के अर्थ भी जानूँ ?

मात्र मा बहुत बुद्ध थी। श्रीधर बाबू का जब परिवार में कोई हँसता-बोलता दिलचामी बेटा है तो उन्हें संभर रह कर भी अत्यन्त मुक्त होता है। उन्होंने हमेशा सब को हँसते देखना चाहा है लेकिन पता नहीं क्यों न वे अपने बड़े भाई

—भाभी और न छोटे भाई तथा उसकी बहु बिनयी को भी सम्बुद्ध न कर सक।

अनेक बार वे अत्यन्त सहज होकर अपने भाइयों के पास जाकर बैठे हैं ताकि ननों का तनाव कम हो सके पर बड़े भाई ने तथा भाभी ने सदा बाठाबरस का अधिक संदिग्ध ही बनाया। बड़े भाई कभी किसी से सहज नहीं हुए। पिता

तक से सिवाय सेन-देन के और कोई बात ही नहीं करत। भाभी को तो जैसे हुकम बसाने के इस-पर स और कोई सराफार ही नहीं। लेकिन श्रीधर बाबू सदा

तच्छ द जाते रहे हैं। वे जानते हैं कि भाईकाग इस बिचपता मानते हैं। बिचपता

समयत आधिक है। चूँकि उन दोनों की आधिक स्थिति श्रीधर बाबू स नहीं

अच्छी है इसलिए इस बात का प्रभाव इन दोनों की परिणयों के व्यवहार में भी

दिलचामी बेटा है। उनकी पत्नी को तो रोज मन्दरे स साँस इस बात का सामना

करना ही पड़ता है लेकिन कभी-कभी माँ तक स भाभी अपमानजनक व्यवहार

कर बैठती हैं। अतीव परिस्थिति है कि कोई कुछ बिरोध नहीं कह पाता है।

माँ को श्रीधर बाबू ने अनेक बार समझाया। पर सभी क लिए सन्तान उसकी

बाबस बड़ी कमजोरी होती है। माँ अपनी सन्तान को तटस्थ हो कर दस ही

नहीं पाती इसीलिए वह मक्ति भर अपनी प्रजा का समने रहना चाहती है।

—नया बात है मात्र तुम बड़ी जुग हो माँ !

श्रीधर बाबू ने बेंगबई का गाव लकिया गौर में स झूठत हुए पूछा।

—तुसे नहीं मामूम ?

—महा कोई बताएगा नहीं तो कैस मामूम हाया ?

—कान्ता की सगाई पक्की हो गयी।

माँ न अत्यन्त प्रसन्न हाकर समाचार दिया।

कान्ता बड़े भाई श्रीमोहन ठाकुर की बड़ी लड़की थी जो प्रायः अपने ननिहाल

ही रनोबानी थी। लड़कियों की पढ़ाई का यहाँ बिषय प्रबन्ध न होने के कारण

भाभी ने उस अपने मायके में ही भेज रखा था। ऐसा करत समय थी मोहन

ठाकुर न पिता और माँ स परामर्श करन की आवश्यकता भी नहीं समझी थी।

कान्ता के मामा जो कि उग्ररैत में डाक्टर थे जब कान्ता का भिबाने माय तो मातृ पिता को सूचित कर दिया गया कि कान्ता को उसके मामा न जाना चाहते हैं। कुछ दिन रह कर अपनी आत्मी सांभार पिता ने भी स्वीकृति दे दी थी। सब बात तो यह थी कि पिता स्वीकृति देने न था क्या करते ? महिने वा महिने बाद ऐसे ही अमताऊ इग में दत्ता दिया गया कि कान्ता अब वहीं पढ़ेगी। माँ ने इस बात पर आपत्ति करनी चाही वन्कि की नी थी लेकिन मामा ने ऐसा मुँह बनाया कि माँ की फिर हिम्मत न हुई कि दुबारा कुछ कह सकें।

—लेकिन कब ? कहाँ ? किमने पक्की की ?

धीमेर बाबू के इतने प्रश्नों क उत्तर तो माँ को भी नहीं मालूम थे। बड़ी बहू ने कान पर दात डाल दाधी कि कान्ताकी सगाई उसके बड़े मामा ने अपने छोटे माले के सामे पक्की कर दी है। और यह बात भी बड़ी बहू ने मीधे माँ को घोड़े ही बताया थी। वह तो उस कमरे में समाक वाले नंदारे की तानी मीदने गयी थी। बड़ी बहू नाहन म तैस मलका रही थी और हँस-हँसकर सगाई वाली बात बता रही थी। जब माँ ने मुन ही किया था ता

—माँ! रात क बता रहे थे कि कान्ताक बड़े मामा ने उनकी सगाई की बात पक्की कर दी।

नाहन क सामने बड़ी बहू ने जिम तरह कहा उत्तम उनही क्या गरिमा रह गयी ? यह नाहन भी क्या सोचेयी कि एक यह नाम है जिन्हें अपन घटे-बेटियों की सगाई तक की बात उमो मालूम होती है जब बाहर वाला को बताया जानी है। और रात को जब भीमोहन ने बहू को बताया तो क्या बहू अपन बानु और माँ का नहीं बता सकता था ! लेकिन मूलधन संभ्याज अधिक प्यार हाता है। कान्ता की सगाई हो गया। इत उभ्य मात्र स दाणीमाँ को सन्तोद हो गया। उन्होंने आपे पूछा ही नहीं वन्कि याद ही नहीं रहा मा हम डर स कि इस बहू का क्या ठीक कर जौन सी बात कह दे। यह यह नी कह मकन्ती है कि कान्ता का तो विवाह भी उसके मामाओं ने कर दिया। वे नंदारे की जामी माये बिना ही लौट आयीं। उन्हें भीमोहन का एमा ब्यवहार अलग सेकिन वे कैस मारब हू ? क्या कान्ता की यहाँ से भेजने की बात भीमोहन और उनकी बहू ने पहलू में ही तय नहीं की होगी ? क्या दूमरे लोगों से पूछा ? जब गलमरी गुहाकर साबट बनबाया था ता किमी से पूछा ? जब बहू के ग... में एक दिन साबट देया तो पूछने पर बहू दिया कि 'ये उग्ररैत गये थे बाबूजी नहीं माने उन्होंने गलमरी

सुझाकर लाकेट बनवा दिया। लाकेट पूछकर बनवाया जाता था हम नहीं बनवाने देते? बहू के नाम बीमा करवाया किमी को खबर तक नहीं। बहू ता एक दिन डाकिया बहू के नाम चिट्ठी दे गया ता गुणवन्ती ने बताया कि यह ता बीमे की रसीन है चिट्ठी नहीं। श्रीमोहन से पूछा तो उसने टासठ हुए कहा पता नहीं माँ। उसके बाबू जी ने करवा दिया हागा। सब जानते हैं बहू के बाबू जी को। वे कितना कुछ करने वाले हैं। उस लाका सोना तक तो दिया नहीं गया और बेटे का बीमा करवा देंगे। अरे, घर वालों से झूठ बाककर क्या होगा? क्या घर वाले हिस्सा बँटा लेंगे?

लेकिन बड़ी बहू ने सासूमाँ का कभी अपने कामों के बारे में बताने की जरूरत ही नहीं समझी।

—हाँ कान्ता के बड़े मामा ने बात पक्की की है। अब चिट्ठी आये तक पता चले। माँ ने अक्षयिणी का टासठ हुए कहा। श्रीमोहन बाबू बोझा उँचा हँस दिये। माँ किचित्त अबाऊ हुई लेकिन झोंप भी गया। इन मामला में जानेवासी चिट्ठी आ चुकी हाठी है और न जाने वाली की चिट्ठी ता क्या हुआ तक नहीं जाती।  
—तो कान्ता का क्या कह रहा है?

माँ चुप ही रही।

—माँ! पता नहीं तुम्हें किस तरह समझाया जाए, मैं जानता हूँ कि इस बारे में तुम्हें कुछ नहीं बताया गया है। लेकिन बताने की आवश्यकता ही नहीं है। जब तुम क्यों अपना सिर खपाती हो? मैं नहीं जानता कि तुम्हें इस सब में कौन सा गुन मिलता है। हर बार तुम्हारा अपमान किया जाता है और हर बार तुम फिर उसी जगह में पाँव बाकती हो।

माँ कुछ खब तो आसन्न रही। फिर उठठ हुए धोषी

—अरे अब तुम लोग पक्की करो तो हमें उसकी पाँठ बाँध कर बैठना चाहिए?

—लेकिन सामने वाला इस गलठी मानता हो जब न तुम क्षमा करागी?

—तब तू क्या चाहता है कि मैं कहूँ श्रीमोहन से और उसकी बहू से कि वे निकल जाएँ इस घर से?

—पहली बात तो यह कि मैं तुम्हें अपने बेटे से अलग होने के लिए कहने वाला कौन होगा। दूसरी बात यह कि इतने अपमान के बाद भी यदि बाबा या मामी

न सहा दूसरों के साथ कम से कम तुम और बानू के साथ भला व्यवहार करें, तब भी कोई बात है।

—देख श्रीधर ! हमारे जमाने में तो भाई, यह सब नेदभाव नहीं था। न अपने घर दत्ता और न मैंने ही किसी के साथ किया। अपने चाचा से जाकर पूछ बैठ। खरब हूँ साग ऐसा करती तो दो दिन ठरी चाचा कम घर में न ठहर पाती। फिर तरेये चाचा कोई सगे भी नहीं थे। अब उनका मर्जी कुछ अलग ही था। मत तो एक दिन नहीं कहा तरी चाची से कि बहू यह जान क्या नहीं किया ? आज गमाई मुझसे नहीं होमी। और न तुम्हारे बानू न चाचा से कनी कहा कि भाई घर में भी कुछ लिया करा। पटवारी म गिरदावर हा गये। इतना पैसा कमात हा कुछ ठा घर में था। न तरे चाचा ने एकरूना दिया और न हमने माया। जो ठाकुर जी की कृपा से बन सका उल्ट मर ही की। अब किनी का ममान हा ता क्या किया जाए ? मैंने तो तानों बहुआ का बगबर ही ममसा। अब वे तानों अपने को जो समझना हों समझें। जहाँ तक हाता पट कपूत की बात तो सहना ही होगी। तू कहता है वह मो ठाक है। थानाहन आ करला है वह नी ठीक। डाक्टर बण गया उनकी मर्जी। अब तुम साग हम मोगों की जेम रखाने जैसे हा न रहेंगे ?

और माँ की डब-बापी भाँखों से बानू निकलने गये। श्रीधर बाबू माँ पर बितुंग होन आ ही रहू थे कि कम खालने की भावाव हुई। पिता जी मन्त्रि न छोटे थे। डिबरा क मन्द भाणोक में पहुँच ता उन्हें पता नहीं चला कि पन्ता रा रहा है मकिन बिम डग से वे धैरी की तथा मिमकी को उन्हें मालूम हो गया। एक क्षण को उन्होंने श्रीधर की आर दत्ता मकिन वे बात पूछना टाल गये। वे कपड़े उतारन सगे। श्रीधर चलने का हुआ। तनी उन्होंने पूछा

—क्या बात थी श्रीधर ?

—कोई खान बात ता नहीं। ही खाना की सगाई पक्का हा गनी पिता माता की बजसा मन्दुस्तिनि को ममझने में खधिर पटु रहू हैं।

—मच्छा ? क्या मच्छा हुआ।

पिता के इस असम्पुक्त सन्तोष का मरमा श्रीधर समत नहीं सक कि यीमाहन के इस व्यवहार से वे भी माहत हुए हैं जयवा वे सप हा मन्तान अनुभव करते हैं।

—नामा साग बड़े कुयक और बानू है। पता लिखा कर ब्याह नी उन कर दिया। तो अब ब्याह का प्रबन्ध कौन तुम कर रही हा ?

बात पत्नी से कही थी जिसमें स्पष्ट जाहज होने की ध्वनि थी ।

—बहुत दिनों से कहती रहती थी कि किमी के ब्याह में नहीं मये । बाबो कब बिस्तर बाँप रही हो ?

श्रीधर बाबू को लगा कि जैसे पिता कान्ता की इस सगाई के इस प्रकार तय हो जाने का सारा दाय माँ पर ही डाल रहे हैं । बेचारी माँ !

—तुम्हें तो हर बात के लिए एक मीठी दिलाती हूँ । अपने बेटे से तो कहते नहीं बनता । और माँ ने सेप आँसू जो कि पलकों में रह गये वे आँसू से पोंछते हुए कहा । जानिरी बात में जैसे स्वल्प का चुनौती थी ।

—मच्छा है अपना-अपना सम्झाक रहे हैं इसमें प्रसन्न होना चाहिए कि माराज ? पिता जो प्रायः बातों पर चुप्पी लगा जामा करते हैं आज सहसा इतने मुखर हो जायेंगे यह श्रीधर बाबू को नहीं मामूम बा ।

—क्या श्रीमोहन बन्दर है ?

—क्यों ?

—अरे भाई, घर में कौन है कौन नहीं है यह तो हम लोगों को मामूम रहना ही चाहिए ।

—घर की इतनी चिन्ता करने वाले कब से हो गये ? पहले से की होती तो यह नौबत ता मही जाती ? बह थोड़ी वर पहले जाना जाकर कहीं बाहर गया है ।

—क्या सुनार के यहाँ गया है ?

—यह तुम्हें क्या हा गया है ? सुनार के यहाँ क्यों जाएगा इनी रात में ?

—बोह मैं समझी तुम्हारा मतलब यह कान्ता के लिए यहने

—बसो मच्छा हुआ तुमने समझना धूरु कर दिया ।

—क्या यह सचमुच सुनार के यहाँ गया है ?

हँसते हुए श्रीनाथ ठाकुर ने जवाब दिया

—मुझे क्या मामूम ? मैंने तो पूछा सिर्फ ।

तभी श्रीमोहन दरबाजा फोफकर आये । वे रोज तो पिता-माता को बैठा देखकर बिना बोल निकल जात रहे हैं लेकिन आज श्रीधर को भी बड़ा बेसा ता उन्हें मया कि जैसे अभी-अभी बहुत सारी बातें हुई हों और बोलने वाले धमी सहसा चुप हो गये हों । वे समझ मये कि बिना बोल नहीं जामा जा सकता । वे सहज जाने के ब्यास से माँ की बरी पर ही जाकर बैठते हुए बोले

—अरे श्रीधर ! कहाँ रहते हो तुम ? दिखते ही नहीं ।

बात किसी को भी सहज नहीं लगी सम्भवतः श्रीमोहन का भी नहीं ।

—माँ ! तुम्हारा पानदान कहाँ है ? बापू ! वो कम बचतरे वाला मामला तो फिर उठेगा । बतियों न बर्बादी ही है कि यह बचतरे का उनकी भर्मावाला का ही एक हिस्सा है । सबकी एक मकल भी पेश की है ।

लेकिन इस बात से भी अबाधित मीन नहीं टूटा । धीमे धीमे मन ही मन हँस रहे थे । सब जान रहे थे कि कौन सी बात टाँसने के लिए बूझरी-झूझरी बातें की जा रही हैं ।

—क्यों धीमे ! फिर कुछ इन्वेन्टर के यहाँ से जामा ?

—जमी तो नहीं ।

किञ्चित् हँसते हुए धीमे बाबू ने जवाब दिया ।

—अरे, उस सब में कुछ कम नहीं था । मीने तो पहले ही गारंटीक साहब से कहा था कि इसमें कुछ कम नहीं है ।

सहसा श्रीनाथ ठकुर बोले

—तुमने कहा था ?

श्रीमोहन बाबू समझ नहीं पाये कि पिता क्या कहना और कहलवाना चाहते हैं ।

—अरे उसने किती से क्या कहना था बापू ? मे तो सरकारी मामले हैं । इन्हें ज्यादा नहीं बोझना चाहिए ।

—तुम्हारे लिए तो पर क मामले भी सरकारी ही हैं ।

माँ ने बात सीधे-सीधे करने के ब्यापार से कही ।

—माँ ! मीन तुम्हारे लिए उज्जैन से तम्बाकू मँगवायी है ।

धीमे बाबू अब अपना हँसी न रोक सकें । श्रीमोहन एक क्षण तो हलजम हुए लेकिन वे समझ गये कि अब बात अपनी तरफ से सीधे-सीधे कर दी जाए तो ठीक होगा ।

—अरे हाँ बक रात देर से आया मीन सबेरे भी जल्दी चला जाना पड़ा । मे तो बताता ही भूल गया माँ ! कान्ता की सगाई उसके बड़े मामा ने अपने छोटे छोटे से कर दी है । बापू ! अब आप ही जवाब दे दें ।

कभी माँ ठमक कर बोली

—ये कोई जवाब नहीं देंगे । जब तेरा सारा काम तेरी समुराज बाल ही करते हैं तो हममें अब इनको क्या सातता है ? क्या इनसे पूछ कर लड़की का लूने यहाँ से भेजा जा पड़े ? लड़की का ब्याह तय करने को उसके मामा ही बचे हैं ?

श्रीमोहन सारी बात समझ गये । वे जानते भी थे कि कभी इस प्रकार से सामना

करना पड़ सकता है। लेकिन उन्हें यह भी बिचबान रहा है कि एस गाड़े समय उनकी पत्नी दूर लड़ी थाइ से जबाब दकर उनकी सहायता करेगी।

—अब माँ ! हमें भी किसी को खबर नहीं थी।

—लेकिन तुसे ता खबर कइ ही हो गयी थी। जान जो तू बताने बैठा है ता तेरे बापू से पहले तो नाइन बोबिन पूरा महल्ला-टोका जान मया है।

तमी सामने क किबाड़े की माब से बड़ी बहू ने जबाब दिया

—पूरा महल्ला टोका तो नहीं था सासूमाँ ! नाइन आयी थी। वात मुँह से निकल गयी। मैं तो थापकी बताने ही वाली थी। म समसी बापू को इन्होंने बचा ही की होमी।

श्रीमोहन वात को अधिक नहीं बढ़ाना चाहते थे। क्याकि तब बीसियों बरों और भी सामने आठी और बे थीबर या किसी और के सामने हेठे नहीं पड़ना चाहते थे।

—बको ठीक है बापू से मैंने कह दिया है। बापूजी का कस जबाब दे दिया जाएगा। और श्रीमोहन उठने को हुए।

—ये जबाब नहीं देंगे। तुम जानो और तुम्हारे सामने जाने। अपनी सखकी की मछाई-बूछाई तुम सोम बाबू समझते हो।

—लेकिन बड़े मैया और बाबूजी से बरों तो बापू ही करेंगे।

वहीं से बड़ी बहू ने कहा।

—एक तो तुम्हारे बापू को किसी ने किजा नहीं। दूसरे कास्ता अगर हमारी कइकी है तो हम सगाई अगारेंगे जो कौन होते हैं ?

—हाँ, जो कौन होते हैं ?

कहकर बड़ी बहू ने राता धुक कर दिया।

श्रीमोहन ने एक बार बुर बर थीबर की ओर देखा। जैसे तीस रहे हों कि माँ और बाबू के इस कस के किए कही तुम तो उत्तरवायी नहीं हो ? थीबर बाबू सिर झुकाने सीकियाँ चढ़ने छने। श्रीमोहन बिना थीबर की उपस्थिति के पिता माता का सामना बचाने के क्याल से तबी से पक रिये।

माँ ने धूर कर जाते हुए श्रीमोहन का देखा जैसे कि—बड़ा आया है अब थिकनोई करने पिता-माता की।

पिता श्रीगण ठाकुर ने बेंगबई पर बैठकर झुका दिया और 'हरि इच्छा' कह कर "बिष्णुसहस्रनाम" का पाठ धुरू किया।

बाहर फ्लिन की बंदी टुनटुगा रही थी ।

श्रीधर बाबू सेजी से उठे । पति को इतने सबेरे जागते देखकर सरस्वती का आश्चर्य हुआ । बोली,

—क्या बात है ? इतनी जल्दी कैसे जाय पड़े ?

—अरे फ्लिन की घनी नहीं सुन रही हो ?

—नारायण बाबू हैं क्या ?

—और क्या ?

—कहीं जा रह हैं बाप सोय ?

—हाँ मैं बताना मूढ ही मया था तुम्हें । वेमन बाबू के घर आज दधी की प्रतिष्ठा है न बुझाना है । अच्छी ?

—पहल ठा बतया नहीं । और मैं मसा कैसे जा सकती हूँ ?

—क्यों मैं स कह या । बस !!

—बड़े बस बासे भाये । अरे मैं तो जरूर जाहूँगी कि जसी जाऊँ, लेकिन काम-काम कीन बापकी मामी जी समहाएँगी ?



—जल्दा तो मैं चला ।

तेजी से बीना उठरे और दरवाजा खोला ही था कि माँ ने टोंका

—इसी मिनसारे कहाँ चला रे ?

—माँ ! वो पंचम बाबू के घर प्रतिष्ठा है न ? नारायण बाबू भी जा रहे हैं ।

—ओ ये पंटी उनकी फिटन की है ?

और वो दरवाजा बन्द करने के लिए बड़ी । तुम्हें दरवाजा संकेता कि हमसे कहूँ  
में गरम कपड़े और गुम्बूब छपेटे नारायण बाबू प्रतीक्षा कर रहे हैं । बोली

—अरे नारायण बाबू ! भीतर नहीं जाये ?

—कौन माँ ? प्रणाम ।

—जुग-जुग बियो बेटा भीतर क्यों नहीं आ गये ?

—दोन्ना घोड़ा को भीतर कैसे लाता माँ !

और सब हँस पड़े ।

—यह तो हो सकता है कि एक घोड़ा दो घोड़ों को घसीट सक । अरे भीतर !

अब छोड़ें-सड़ क्या मुँह ठाक रह हो ?

और भीतर बाबू भी पास आ कर बैठ गये ।

माँ ने सहसा टोकते हुए पूछा

—गुम्बूब नहीं मिया रे ?

—कोई बकरत नहीं है माँ ! तुम अब जाओ ।

—माँ ! अब ये मुझे गुम्बूब छोड़ें ही लगाने देगा । अच्छा भाई, तुम्हीं से लो ।

तीना हँस बियो । माँ ने साधा नारायण कितना अच्छा है । ना ना करते भीतर

बाबू को नारायण बाबू ने अपना सफ़र बना दिया ।

माँ ने दरवाजा बन्द कर लिया ।

फिटन बस पड़ी ।

बासिन की मिनसारे हस्त कहूँ म सेरियो छड़कों और मकानों पर फेंकी हुई

बी । कहीं-कहीं महत्तर सफ़रें साफ करने में लगे थे । किसी-किसी घर से बूढ़

सोपों के या तो खांसने या भगवत भजन का स्वर सुनायी पड़ जाता। भोसिनो टोकुरिया में बूध की अमकरी कठसियाँ सिये मुँह पर अँगुलियों से सुगड़ा छपाये चली जा रही थीं। भिनसार की हवा फिटम में तब छग रही थी। कठपान असा सा झाड़ा नहीं छग रहा था लेकिन फिर भी ठंड ता थी ही। पुराने जमाने के आबदाही दरवानों में से गुजरते हुए थोड़े की नालें और पहिया की आबाजे गुँब उठती थीं। भारीमास गया महाने बाकी धार्मिक बुझियाएँ ताळाब की ओर अगल में भोती वयाये नगे पैरों चली जा रही थी।

—बहुत देर हो गयी न ? बेचारा पेमेन भी रास्ता देखते-देखते थक गया होगा।

—ऐसी सास देर तो हुई नहीं।

धीपर बाबू ने मात्र सान्त्वना के क्पाछ स कहा। यद्यपि जानत थे कि देर हो गयी है।

—अरे उस बेचारे धार्मिक से पूछा कि देर-सवेर क्या हाती है। हम सोगों की तरह आकसी थोड़े ही है कि बूध में बैठकर माछा फेर रहे हैं। सबेरे चार बजे उठ्या है।

—लेकिन पेमेन बाबू हैं सत्कारी व्यक्ति।

—अरे, उसके पिता निधानाथ बाबू तो सालों में एक आदमी थे। भाई साहब से एक बार इतनी मारी भूख हुई थी कि बस। सारी साल चौपट हो जाती। व्यापार डूबता सो अलग। बेवे-बेबे फिरते। लेकिन निधानाथ बाबू ने सगे भाई स भी बढ़कर साम दिया था। पेमेन भी वड़ा सीधा आदमी है। पर बिचारा पत्नी के मामले में अमाया ही रहा।

—आगरा क्यों नहीं नेब दत ? कुछ बवाई-बारू हो जाए तो पायप ठीक हो जाएँ।

—असल में लड़के के मर जाने का सदमा है। लेकिन पेमेन भी तूब संबा करता है भाई !

और नारायण बाबू ने वेत्ता कि सड़क क किनारे भोंसल जैसे ठारथर के सामने पेमेन लड़ा राह बेक रहा था। अभी मुरीदय में काकी देरी थी लेकिन आसाक बुकनी जैसा कैस आया था। वहर जाने वाली सड़क पुसिया की बाँहों में सनी दूर तक साधी बिछी थी। तार के खम्भे आबाकारी सड़कों की तरह फुटार बाँब

कर सड़क के साब-साब इमी तरह दाहर तक पसे गये हैं। वेमेन अपने जमी  
डीके घोसी कुरते और भाळ में सड़ा होंम रहा वा।

—बाह जनाब ! ये चार बज रहे हैं आपके ?

—भाई मैं तो तीन बजे ही खीघर के घर के सामने मय सवारी के मीमूद वा।  
नबाब साहब जाने क्यों बिस्तरे से बाहर ही मही आ रहे बे। वा तो बेचारी  
माँ ने जब डाँटा तो ये हजरत धीबी वा मोह छाड़ कर भाये।

—क्यों नारायण बाबू ! सभेरे-सभेरे झूठ बोस रहे हैं ?

और सब होंस दिये।

—मैं तो भाई, झूठ सभेरे-सभेरे ही बोकु कता हूँ ताकि कोई मुम नहीं। क्योंकि  
झूठ बोलने का भी तो फोटा होता है। उध कहीं न कहीं पूरा करना ही होना है।  
और तीनों होंसते हुए अन्वर बज दिये।

वेमेन बाबू प्रतिभय अपने हावां दुगाँ को मूर्ति बनाते हैं और सुन्बर भी बना लेते  
हैं। उनमें अत्यन्त सखा एवम मिष्टा है। वेमेन बाबू का यह क्वार्टर बिस बे  
बाधा कहते हैं तारपर भी है और घर भी। चार कमरे का यह क्वार्टर दाहर  
के बिन्दुस सिरें पर है। अच्छा हागा यदि यह कहा जाए कि नबी की कगार  
पर है। इसक ठीक पीछे स नबी बहती है। पत्थरों की कवारें बिन्दुस नंगी हैं।  
बैसे देखने-सुनने में यह मकान काफी सुन्दर बना है लेकिन किसी यास की छाँह  
नहीं है। पड़ी मुकिल्ल स मिट्टी डाम-डाम कर झुरियाधी यहाँ तक सायी यमी  
पी। बड़ा पेंड एक भी नहीं वा। प्रयास हर बय किने प्राप्त है। वेमेन बाबू ने  
अमलतास और न एमुहर लगाये हैं। अभी तो छोटे ही हैं लेकिन बह नहीं सकते  
कि बड़े हो पाएँगे कि नहीं। जाँगन में सास बबरी डालकर रास्ता साफ कर  
धिया-मया वा। बूब भी सपी हुई थी जो कि इस समय हस्की आम में मीगी  
यीमी बय रही थी। रास रग का लकड़ी का फाटक और उस पर बेममबेकिया  
की कठर मोर की मवार हवा में हिम रही थी। बाहिने हाब चासे कमरे में तार  
पर है। जहाँ से परावर 'किट किटकिट' की आवाज जाती रहती थी। बी ब

बाठे बड़े कमरे को वेमन बाबू ने बैठक बना रखा था। बायें हाथ काठा कमरा प्रायः 'गेस्ट रूम' की तरह काम आता। आने दिन कोई न कोई अफसर आता ही रहता था। पीछे एक कमरा और था जहाँ उनका साग मानान था तथा पान्थ पत्नी बन्द रखा करती थी। उम पीछे क कमरे ने नदी की चट्टान भरा गा कगारें दिखता। गर्मियों में जब पानी लामग मूख जाता था चट्टानें ओर ना निकल जातो और दिन भर धूप में चिन्थिछानी रहता। नदी की तलहटी के प्यरा को बजरी दिन भर गरन हाजी हुई जमजमानी रहती। तब प्रायः लू क गरन तकि उषर से आते हैं। बरसात क दिनां में ताएषर बहुत मूख हा उठता। पाछे क कमरे का सिइकियों स पूर नदी घड़ी सुन्दर लगती। झुके भा बगने नम नुदूर पहाडियों तक दीडव ना सरते बड़े अण्डे लगत। शिन-उत बाइ बानी नदी का गुरा हट, पत्यरा पर फन पटकनी मुनानी देती। प्रायः नारायण बाबू के माय आभर बाबू पेमेन बाबू को लकर माब-नीप को सवेरे-सवेरे नदी नहाने आत र्हे हैं। यहाँ नगे के बीच में पयरां का एक दूह सा है जहाँ तैर कर रोना पय जाते र्हे हैं। उस पर बैठकर नदी के बीच प्रबाह में ऐसा समता है जैसे स्वय बहने हुए, नदी के साथ यात्रा कर र्हे हैं। वैसे नदी यहाँ चयली नहीं है लकिन सास गहरी भी नहीं है जैसी कि किसे-बाट पर है। गर्मियों तक में यहाँ पानी रहता है। नारायण बाबू का कहना है कि अगर उनके पास कोई राजसक्ति आयाए तो वे यहाँ पर एक ऐसा बांध बनवाएँ ताकि नदी कमी सूखे ही नहीं। नदी की कमारें माये चलकर छाबनी के पास सिर्फ चट्टानों की ही नहीं रहती हैं। यहाँ तो नदी-सट पर लूब बड़े-बड़े बटवूख इमलियां आम महुआ और जारें किम-किम पीर के पेड़ लख हैं। छाबनी वाला पठार ही इअर क मूभाग में सबन जैवा हाउ हुए भी लूब हुए-मए था। नदी छाबना और किले का छूकर उत्तर भाग निकल जाती है जहाँ यह पावनी में बिलीन होती है जो कि पम्बल में दिखकर अगत्या यमुना बन जाती है।

चूकि बैठक आसी की नदी की इमलिए उसका कुछ मायान जन कुमियां टेबल मादि दाखान में रणे से। बैठक में घुमते ही सामने मुन्दर श्री दुर्गा प्रतिमा प्रति प्ठित थी। दीपक जल रहे से। अगक-भूम से बातावरण सुवासिन था। केडे के पत्तों से घोभाषमन बमाये गये से। कोने में मितार, तातनूरा और तबल रहे

हुए थे। प्रतिमा के सामने पेमें बाबू की पत्नी महामे हुए, बाळ फेंकामे पलथी मारे प्रभावित हाथ गानी में रने हल्क-हल्के कुछ गा रही थी। उनकी आँखें बन्द थी। वे मात्र बहुत अच्छी लग रही थीं। नारायण बाबू और भीबर बाबू ने प्रणाम किया और बैठ गये। कमरे में हल्का भँबेरा था। यद्यपि बाहर आसोक से ज्यादा कच्ची दिन फूट आया था। देहरी लीच कर जिन जैसे पूछ-पूछ कर अन्दर जाने का यत्न कर रहा हो। पेमें बाबू ने तानपुरा सम्हाला और नारायण बाबू की ओर तवसे बढ़ा दिये। नारायण बाबू को तवसे की दस्त-बार तासों मालूम थीं। पेमें बाबू ने दुर्ग-स्वयंन आरम्भ किया। भीबर बाबू ने पास ही रखी मंजीरों के बी और कमरा स्वयंन चल निकला।

या बेबी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता  
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

स्वयंन-कीर्तन किन्तनी देर जसा पता नहीं। केवल धूप काफी आ धुली थी। यहाँ बस्ती की अपेक्षा दिन पहले ही उगता है। धूप कमरे में पूरी तरह पारों ओर से आ रही थी। मोर का बाताबरण हल्के कुहरे में छिपटा था इस समय उबला गया था। सबेरे बाकी ट्रेन के जाने का समय था। बार-बार इजिन की सींगी सुनायी पड़ रही थी। पेमें बाबू ने जैसे ही कीर्तन समाप्त किया उनकी पत्नी तेजी से उठी और 'गीत-गोविन्द' के पद बार-बार से गाते हुए नृत्य करने लगीं। एक क्षण को सभी आश्चर्य में आ गये। सभी कोई कुछ कहे इसके पहुँच ही वे पेमें बाबू को धूरने लगीं। उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊँचे कर लिये और भीखने लगीं

—बामी दुप्या।

—बामी चण्डी।

—बामी मकली।

—बामी जगत तारिणी।

और ब बूम बूम कर नाचने लगी।

पेमें बाव न झपट कर पत्नी का हाथ पकड़ा।

—ए की हाण्डो ?

—ए की कण्डो तुमि ?

और वे हाथ पकड़ कर पत्नी को बसीटने लगे। जाने किस बस से पेमें बाबू की पत्नी ने अपना हाथ छुड़ा लिया और उन्होंने नारायण बाबू तथा भीबर बाबू को घूरते हुए फिर बिल्काना शुरू किया।

—बामी बुगा ।

—बामी बब्डी ।

पमेन बाबू के लिए पत्नी का यह प्रस्ताव असह्य हो उठा । उन्होंने बड़कर फिर हाथ पकड़ लिया । बे जूसती जा रही का और नाच रही थी । पमेन बाबू न तब मस्साकर पत्नी का हाथ जोर से मोड़ दिया । बे चील उठी

—माँ गो !

माधयन बाब और श्रीमर बाबू हतप्रम से उठकर बाहर चले आये । अन्तर से पमेन बाबू की पत्नी का धार्त स्वर माँ गो आ रहा था । सम्भवत पमेन बाबू ने पत्नी को कमरे में बन्द कर दिया था । बे दरवाजा पीटे जा रही थी और चीलें जा रही थी । पमेन पामय डाँट रहे थे । दोनों अन्यमनस्क से बाहर वापान म बड़े बात करना चाहने पर भी कोई बात न कर पा रहे थे । दोनों को ही पमेन बाबू पर तरस आ रहा था । संभवत पमेन बाबू की पत्नी पर भी कि जब न पामय न हुई होंगी तब निश्चित ही बहुत अच्छे स्वभाव की रही होंगी । तभी पमेन बाबू उदास स सौटे । वे कुछ कहे इसके पूर्व ही माधयन बाबू वाके

—कोई बात नहीं पमेन ! सब ठीक हो जाएगा ।  
—उन्हें अवश्य ही सान्त्वना चाहिए थी ।

—तो पाम को जाओ न छावनी की तरफ ? तुम्हारी बामी कह रही थी कि तुम्हें कई दिनाँ स देवा नहीं । यह को का सको ठो सेते माना ।

—हाँ जरूर आऊँगा ।

और प्रणाम करते पमेन बाबू इतने सुन्दर लग रहे थे मानो स्नानित सबेरा पृथ्वी को प्रणाम कर रहा हा ।

दसहज़ा बीत चुका था। दिवाली की छिपाई-मुछाई की तैयारियाँ हा रही थीं। घर-घर का सामान झाड़-नोंछकर साफ किया जा रहा था। इस सब में बच्चों और स्त्रियों का मन बहुत खराब है। नये बूने के पाते जाने की गंभ भा रही थी। छतों सिड़कियों दरवाजों लम्बों की लकड़ियों पर लैस-पानी किया जा रहा था। जो लकड़ियाँ भूरी हा गयी थीं वे ठीक मीठी कसानी हो आयी थीं। भीषर बाबू की किताबों की आसमारियाँ भी सफ़ाई के लिए साखी की गयी थीं। सरा और भीषर बाबू इतनी रात में भी किताबें झाड़-नोंछ रहे थे। बहुत कुछ किताबें उन्हें बासा साहब ने दी थीं। वे बहुत पुपनी हा गयी थीं इतनी कि अठाव धानी से पभा छूटे ही टुकड़े-टुकड़े हो जाता। प्रायः उन किताबों पर मोड़ी सिपि में बाबा साहब का नाम था। (मराठी लोपों में पहले जभी माटी सिपि व्यवहार में आती थी।) उन किताबों में इतिहास इंसान ज्योतिष कण्ठ कवि की अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें थीं। इन्सु के सम्पर्क से जो अंग्रेजी मीली भी उस उम्हाने अपने अभिप्राय से बढ़ाया था। इन्सु ने ही उन्हें अनेक विदेशी उपस्थास दिये ताकि वे आम बच्चकर पढ़ें। एक प्रकार से इन्सु ने उन्हें अनेक

बानों से परिचित कराया जिन्हें ब बिना इन्दु के कभी जीवन भर न जान पाते ।

और उनका हाथों में 'हमसूट' थी ।

उन्हें ठीक से याद है कि कब इन पहली बार इन्दु ने मुनामी थी ।

समय इन्दु का विवाह में कुछ महीने की छप थे । पिछम कुछ बिना से इन्दु म थीपर को लेकर उम्माह कम नहीं हुआ था सकिन जो सज़न गुनापन था दूनरी वानों के प्रति वह नहीं रह गया था । इन्दु अब भीपर को सच ही अपन से बड़ी बहुत बड़ी सगल सगी थी । जब इन्दु सामने के क्षितिज पर एक विद्याम सी जग मानी है और थीपर से इतनी दूर, इतनी ऊँची है कि कभी वह उसे छू नहीं सकगा । जान कहाँ से इन्दु के सर्गिर में स ही हाथ-पाँव और मनी कुछ बड़ भाये थे । अब कि थीपर अभी वही १०-१२ बय का ही पिरी सा 'बुड़' ही सगता था । प्रायः सामबसा ही होती जब थीपर बड़ा जाता । पहले की तरह पेट में मुदगुनी बसाकर अब ह सने-हंसाने की कोई बात नहीं होती थी । पहल जब कभी वह कहानी कहती हाठी या मुनत्री हाता ठा लगता था कि वह माँओं से मुँह से नाक स ओगें स सबस मुना रहा है । माँओं फल जाती । गाना में सुन दीड़ जाता । बरसी बम्मचों क शोर सा हँसा जाता । एक दूनरे क कंवे पकड़ सिय जाठ । और पंग भुना-मुलाकर कहानी के दूर डीप में बही भाँकने हुए दोनों हाठ । तारा पर सगड़ा होता कि बड़े तार बड़े क हाठ है और छोटे तारे छोटे के । इन्दु अपने बड़े तारों क रंग बर्षन करती कि वहाँ मिठाइयाँ पंग पर लगती हँ सब क बूब बमकरार पम हाते हैं, वहाँ यहाँ की तरह यमी और पानी म्हा होला बम्कि मुब हें सारी बरफ होनी है बिन पर घुन में सुन उड़ना पड़ता है और वहाँ निन्न बम्ब ही जा सकने हैं । और वनना एक दिन इन्दु थीपर को सहर बिना कियी को बताए जाणी ।

—बगोयें थीपर ?

—हाँ लेकिन वहाँ गफ जागें केने ?



- तुम्हें इससे क्या ? मैं तो चढ़ूंगी । बूढ़ ! इतना भी नहीं समझता ।
- दीदी ! तुम्हें तो अपने तारे के बारे में सब माफूम है पर मुझे अपने तारों के बारे में कुछ भी नहीं माफूम ।
- अब तार रात्र रात्र को नीचे में जाते हैं । तुम्हारे तारे छोट हैं न ? तुम कम कर जाँचें बन्द कर दिया करो बर्ना छाने तारे पकड़ाई में कैसे आएँगे ? तब तुम अपने तारे से पूछ बना ।
- और रात्र रात्र को भीतर सोते समय कम कर जाँचें बन्द करत हुए समझता कि आज मैंने अपने तारा को पकड़ लिया है । दूसरे दिन दीदी के पूछने पर बहुत साब-साब कर कहने लगता
- दीदी ! रात्र सिर्फ एक ही तारा आता । वह तितली जैसा हल्का सा था । बस कई तितलियाँ पिलौं जकर पर एक ही उड़ती हुई आती । वह तितली कुछ बोधी नहीं । बस फिर उड़ पाती ।
- और इन्तु खोरो से हँस देती ।

इन्तु तब चिन्तोबासी पापी सोझकर पढ़ कर सुनाती । रंघविरंघे चिन्तोबासी पोधी में बराबर हम बात पर बहम हो जाती कि जब पंखोंवाला पाड़ा एक ही था और उधे अब राजकुमार में से लिया तब भला कोई दूसरा आए ता उधे बोड़ा कैठे मिला सकता है ? इन्तु का तर्क होता कि अरे बूढ़ ! यह ता एक ही समुद्र का बोड़ा राजकुमार को मिला है । अब कि समुद्र ता सात है । अभी पंखोंवाले उधे बोड़े और हैं तथा उधे राजकुमारियाँ भी हैं । भीतर की समझ में बिसेप कुछ आ नहीं पाता था । और वह इती बात से प्राम-सन्धाय कर लिया करता था कि वह कोई राजकुमार तो है नहीं । और बिना राजकुमार हुए किसी को भी न तो पंखों वाला पाड़ा ही मिला सकता है और न राजकुमारी ही ।

भीतर अभी और कुछ समय तक हम पंखोंवाले बोड़ों के चक्कर में रहता चारुता था लेकिन इन्तु ने जब जल्दी-जल्दी कुछ बड़ी पुस्तकें मूक कर बी बी । पृष्ठी मोल है । हम पृष्ठी पर तीन चौबाई पानी है और एक चौबाई मरती । और वह भूमती है । वह न पृष्ठी भी दूसरे तारों की तरह एक तारा ही है । भीतर की समझ में कुछ घास आ नहीं पाता । तारे ता आकाश में है । आकाश ऊपर हाता है । फिर भला हम तारे कैठे हुए ? तारे चमकत हैं । पृष्ठी भूमती है । दीदी

कहती है कि हमारा मिर हमसा आकाश में लटक रहा है। थोकर इन लटकने वाली बात पर इनने जोरों से हँस पड़ता था कि पाग में गोपी हुई माँ नमसती कि माऊ-साठ बाँक गया है या फिर नींद में हँस रहा है।

—थोकर ! नींद में क्यों हँस रहा है ? पानी पीना है ? करवट ले स।

और थोकर माँ की मूर्खता पर हँसत हुए कहता

—नहीं माँ ! दीदी कहती है कि हम आकाश में लटक हुए हैं और पैर हमारे बखी पर पिपक हुए हैं क्योंकि भरती में आकाश गगन है।

—यह सब क्या बक रहा है, इती रात में ? चण मा जा। ऐसी उल्टी-उल्टी बातें साधता रहता है तभी ता नीं में बड़बड़ाता है—हम आकाश में लटके हुए हैं। बड़ी आधी ठेरी इन्दु पीनी।

और मिड़की का थोकर सो जाता।

कविन दीदी का अविश्वास भी कस जाए ? वो ता पढ़कर समझती है। किताबों में ता कनी गलत बात हा नहीं सक्ती। न जाने य किताबें कहाँ से आयीं। किताबें गिरक बासा साहब क यहाँ ही हैं इतनी। वे जाने क्या पढ़त रहन हैं।

और एक दिन दीना बोली

—थोकर ! जानते हा नाटक क्या होगा है ?

—अगर किसी फल का नाम है।

—तुम मूख हो। नाटक किसी फल का नाम होगा है ? यह भी नहीं जानत ?

—तब मुझे क्या मापूम। क्या कोई पक्षी पाला है तुमने ?

और दीदी गुम्ह में हाथ की किताब बिस्तरे पर फेंकत हुए बोली

—तुम्हें इस जनम में कमी कुछ नहीं आय्या। नाटक को जा सक्ता फल और पक्षी का नाम बताता है उम क्या कहा जाए ? कविता कहानी की तरह जो बोल्-बाम के रूप पर लिखा जाता है उमे नाटक कहेते हैं तुम्हें यह भी नहीं मापूम ? तुम स्कूल घाने हो ? प्राक पढ़त हा !

और थोकर की बाँके भर आयीं।

—राने स काम नहीं समया। बताओ नाटक किम कहत है ? कोई नाटक पढ़ा है ? थोकर ने बिना बोके मिर किता बर बता दिया कि नहीं पढ़ा। इस बार मधमूख ही थोकर रा पढ़ा। एक दान तो इन्दु की समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए। इस राते हुए लड़के पर गीम गयी। एक तो नाटक का मतलब नहीं जानता और पूछने पर लड़कियों की तरह राते रुमा।

इन्नु उठी और रोते हुए धीवर को पहने हाप-मुँह को जाने का आदेश दिया और यह भी कि उसे हर हासल में आज नाटक के बारे में जानना ही होगा। फिरती बरी बात है कि इतना बड़ा छद्म नाटक के बारे में नहीं जानता।

धीवर काफी कुछ बर गया था उस गाम कि जिसके न जानने पर बीबी ने उसे इस बरी तरह डाँग-फटकारा था कि जैसे उसने जाने क्या कर दिया हो। अब उसी की स्फुर की किराब में से बीर अभिमन्यु का पाठ बीबी ने पढ़कर सुनाया और कहा कि यही नाटक होता है।

—ठा बीबी। नाटक अभिमन्यु होता है।

—फिर वही ? नाटकों में भी कहानियाँ होती हैं लेकिन उसमें बातचीत रहती है। समझे ?

बीर, धीवर ने और अधिक डाँट जाने के समय से स्वीकार किया।

और बाड़े दिनों बात जब कई नाटकों के बारे में अंग्रेजी का एक नाटक छापीं तो बोली

—देखो आज एक राजकुमार का नाटक पढ़ने। इसका नाम है दण्डों का हेमसेट।

इस जानते हो किसने लिखा है ? शकसपीयर ने।

धीवर पिछली डाँट अभी भुला नहीं था। उसने यही उचित समझा कि बीबी को बिना टोके हुए यह नाटक पढ़ने दे। जब घारे धिन्न बे। बे जब आर-ओर से पढ़ती और पढ़ते समय कभी खड़ी हो जाती कभी टहलने सपत्ती कभी हाप ऊँचे कर कभी शारीक आवाज में कभी मोटी आवाज में कभी कोप से कभी धमीन होकर पढ़ती। अब कभी बे बीच में अर्ब बताते हुए भूक जाती तो बे दौड़कर आका छाह्व से पूछ जाती। बीबी को बराबर बेसते रहने से धीवर की गर्दन दर्द करने लगती। फिरतम्य विमूढ़ सा बँटा धीवर समझने की बच्चा छोड़कर बेबल समता कि बीबी फिरती सुधर लगती है। अब बे घास लोसकर कहती

—ओ हेमसेट ! हेमसेट !!

जमकी अँखें फनी की फनी रह जाती। पिड़कियों स दूर सुबसित की अंतिम लाठी आकास में बृसती सी दिलायी देती। मौकर अछती लैम्प साकर रखता। तब कहीं धीवर के घर जाने का समय होता। बीबी का मौकर रात्र धीवर को बर छोड़ने जाता है। उस दिन पहली बार धीवर को छाया कि बीबी फिरता अन्धा पढ़ती है जैसे नाटक को बटगाएँ बीबी के सामन हुई हों। वह उस दिन पूछना चाहता ही रहा कि क्या बीबी उस समय वहाँ थी जब बोकीकिया-हेमसेट मिले थे ? बे हेमसेट को कैसे जानती है ? वह ता विषयत में राजकुमार वा न ?

और यह भी कि यह माटक उनके पास किसने भेजा ? अतः वाउं धीघर के मन में भी सक्ति बह पृष्ठ न सका । जिस समय यह बरुन को हुआ दीदी ने उसे अपने से छटा लिया । बहुत देर तक उसका गाल का अपने गाल से सटाये रहीं । जब दूसरे कमरे में गौहर की जाहट हुई उन्होंने जल्दी से उसे बूम लिया और व हवेलिया म मुँह छुपा बिन्दर पर भीषी सेट मयी ।

धीघर की समझ में कुछ नहीं आया । लेकिन दीदी का गाल कितना गरम और गरम था । उसे बूमते समय उन्होंने अपनी बड़ी-बड़ी आँख जैसे मूँद ली थी । और उसके बाद एक क्षण को कँटी सूखी मुस्कान आ गयी थी । उनका मुँह कितना कम-कम आया था जैसे वे बहुत देर से एक ही साँस ले रही हों और फिर भी वह पूरी तरह न ले पा रही हों । समय की हल्की पीली रासनी उनके दाहिने गाल पर फिर रही थी । जैसे उबले गारे-काछ गाल हैं दीदी के । दीनी बहुत सुन्दर हैं न ? जब वे बाल छोड़कर बोल रही थीं उस समय उनके बाळ पीठ से भी नीचे जैसे काने-काने लहप रहे थे । दीदी की आँखें पहल तो उसे देखती थीं सक्ति जब उसकी आर देलठे हुए भी लपटा है । कुछ और देख रही हैं । कई बार वे जैसे जल्दी-जल्दी उस देखती हैं जब आँखें फल आती हैं, कमरु आ जाती है उस समय वे नहीं भी बाळती हैं पर सगता हैं जैसे वे देखन से बधिक बोध रही हों । इतनी बड़ी आँखें दीदी की हैं कि जैसे मूज पर सिर्क आँखें हो हैं । कई बार जमने दीदी की आँखें बूम लेना चाहा सक्ति नहीं दीदी माराज न हो जाएँ इमक्ति अपने को देखत रहने दिया है उन आँखों के द्वारा ताकि वे आँखें देर तक जब देखते हुए उसका समीप रहें । उनका निकट निदबध ही दीनी का बड़ा भारी मोह है । वह उस मामूम हा जाए कि उनके बीमार रहने पर दीनी उसके पास रहेंगी तो पीबन भर बीमार रहने को तैयार था । कमी-कमी वह हाँसों से अँगु-छिनों से पसका की बरीतियों से बकि सन्तुर्न घरीर से दीदी को उची तरह छु लेना चाहता है जैसा कि वह मोठी लगने वाली भूप का सूता है या गमियाँ में जैसे कि ठंडे जल का छूकर वृष्टि हानी है । जैसे वह भूप वह जल आप में आ गया हो । क्या वह दीदी को बीच छिपी निम छु मरजा है ? दीदी ने जब छुमा तो वह भूप और जल बाना से कुछ और अधिक मण्डा लगा था । गाणों में अभी तक कोई जप मर घोष गाल मीठी भूप और ठंडे जल बतों न बही अधिक बण्डा लग रहा था । वह स्वाद तक बना सरता है क्योंकि वह उस समय बार बार बूँट उबार रहा था । उसे लग रहा था जैसे उसके गाल में एक घोष गाल

और निकल जाया है। उसके मुँह पर अब तक दीदी की जैसे माँसे ही बड़ी हुई थी और अब दीदी का एक पाक भी।

लेकिन दीदी हथेलियों में मुँह बाबुकर ज्यों सेट गयी थीं ! क्या उसे एकत्रम नहीं चला जाना चाहिए था ? दीदी बक कर ऐसे तो कमी नहीं सेटतीं। वह सबमुच यह कहना चाहता था कि दीदी ! तुम जब देखनी हो तो जैसे पता नहीं कैसा लगता है लेकिन दीदी ! बहुत अच्छा लगता है बहुत ही अच्छा लगता है। ऐसे ही बलो न एक बार ? मे देखो तुमने जहाँ छुआ था न वहाँ वहाँ कैसा नरम-नरम सा जाने कैसा कम रहा था। दीदी ! मुझे जैसे ही जू वो जैसे कि घुप छूटी है पक जाता है। भीतर तक जैसे हूअन भर जाती है उसी तरह।

खाना खाकर वह सेट गया और उसके बाद नींद में वह घुप और जल में दीदी को लेकर नहाता रहा। अनेक रातों वह सपनों में देखता कि दूर-दूर की पहाड़ियों पर रंग बिरंगी घुप छित्री है। वह रंगीन घुप धीरे-धीरे पहाड़ी से उतरती है और शील के जल में छोड़ी दर के लिए पायब हा जाती है। वह शील के जल में अन्दर तैरती हुई घुप को देखता है। कैसी बोरी-गोरी घुप शील में तैरती हुई उचली तरह जाती है। घुप तब बहुत मजबूत भा जाती है। उसमें अनेक तारों की जैसी जाँसे निकल जाती हैं जो हँसती हुई उसे संकेत करती हैं। पास बुलाती हैं। वह जैसे ही हँसती हुई जाँसे वाली उस घुप की तरह बढ़ता है वह और दूर, और दूर सरकती जाती है और घुप फिर वापस शील में घुब पड़ती है। घुप वापस तैरकर शील के उस किनारे निकल कर बड़ी तेजी से पहाड़ियों पर बढ़

बाती है। तारे वापस आकाम में चले जाते हैं। धूप भी धीमे धीमे तब आकाश चढ़ जाती है। वह हर बार धूप का छूने-छूना रह नर जाता है।

कभी आकाश पानी बरस रहा होता है। सहना एक कोने में धूप का एक टुकड़ा बाइसोंमें एक गोले छेद बनाकर उसकी आर बढ़ता होता है। आरों और पानी बरस रहा है लेकिन वह धूप का टुकड़ा होंसता हुआ उस पर स धमी स निकल जाता है। वह उस धूप के टुकड़े का पकड़ने को बढ़ता है। दूर दूर तक बगनते मेघ में वह धूप का टुकड़ा नीगता इन अतिथि स उन अतिथि तक बीटना है लेकिन वह धूप का टुकड़ा और वहाँ और वहाँ बनकर हाथ नहीं आता है। सहना वह टुकड़ा ऊपर फिर वाइसों में चढ़ने लगता है। बाइस का वह छेद फिर मूढ़ उठता है। बस, कबल बरसत मेघ रह जाते हैं।

पूरे बाइस में मदी वह रहा जाती है। कानी-कानी चट्टानों पर मामने का गाँव मधुमक्खी के छत सा लिखता है। वहाँ पर एक घर में एक बीरक बन रहा होता है। तट पर एक नाव होती है। बिमकी तरफ वह बढ़ता है। दूर पर अस्पष्ट सी छोटी सी आवाजें सुनायी पानी हैं। जैसे ही वह नाव तक पहुँचना है नाव बहने लगती है। वह किनारे-किनारे चलते हुए नाव का पीछा करता है। समी उसे प्रपात का धीर सुनायी देता है। प्रपात में पहुँचकर नाव टूट जाती इस मय से किसी तरह किनारे से कूद पड़ता है और बहती हुई नाव को पकड़ लगता है। नदी के बेग में एक टूटी पतवार लकड़ वह तरी से बहते हुए उस पार पहुँचना चाहता है। उस पार का शीप अब वैसे नदी की तरफ बढ़ता सा लगता है। शीप निकट होने लगता है। लगता है धीन बहुत पास आ गया है। वह चिल्लाकर उसे पकड़ना चाहता है तभी वह और उसकी नाव प्रपात के मुख पर होने हैं और वह अलग में गिरता आ रहा है गिरता आ रहा है। और वह चीखकर नीचे से नीचे उठता है। प्रायः उसने अपने इन मयनों को जाने बना सोच कर किसी से नहीं कहा। बीरों तक से नहीं। उस ऐसे अपने बचकर भाव रह हैं।

जैसे ठाँ हर बरस ही गनेघोसब मनाया जाता था लेकिन उस साल बाबा साहब ने बहुत अच्छा गनेघोसब सम्पन्न करवाया था। किले के बड़े से मैदान में धामियाना बांधकर सारी सजायी गयी थी। पहली बार महाराष्ट्रीय और महाराष्ट्रीय सम्मिलित हाकर सम्पन्न रहे थे। बगैँ और बरस तो प्रायः महाराष्ट्रीय किसी को नहीं बुलाते। कई दिन पहले से सेस-सूव का आयोजन समीत सम्मेलन नाटक-माच आविका प्रबन्ध क्रिया गया था। उस समय भीपर कोई आठ बप ना रहा होगा। पूरे कस्बे में जैसे उम्साह छा गया था। कस्बे भर में उत्सव-पूजन के लिए चम्बा आदि किया था लेकिन बाबा साहब का इसमें बड़ा हाथ था। किले का बड़ा दरवाना बुजिया और सामने की दीवार बाधोक्रिय की गयी थी। इस उत्सव का बेजने आसपास के कई गाँवोंके जोप भी आबे थे।

किले के उस मैदान में गाँव के लड़के लड़कियों का लेस लेस रहे थे। इसके क्रिय विद्यप रूप से रंगीत डंडे बनवाये गये थे। तिनमें हल्के धूपह लगे हुए थे। इस लक को देखते हुए सभी लड़कें मराठी की वे पंक्तिवाँ गाते आ रहे थे और लेस्य था रहे थे—

एक टिपरी पे  
दूसरी मार गे  
तिसरी बेउन  
शौभी बदस !

और हमी कम पर बड़ों की आवाज एक समय-काल में आ रही थी। साथ ही छाटे-छोटे पूंख अजीब सकोच-स्वर में जैसे उठ रहे थे। उठ को भीचन हो जाने वाल उस किले की पत्थरों की प्राचीन प्राचीरा से ये आवाजें दुहरित होकर आ रही थीं। किले के दक्षिणी सिरे पर सामने ही बड़ी सी लकड़ी की हबेसी वाली कचहरी अपने पेंसबार्ड स्थापत्य में उठ के उस गहन अदकार में लड़ी थी। कचहरी के खजाने वाले हिस्से में से रोचनी आ रही थी। बाहर निकसी लकड़ी की बुर्र में पहरे का बंटा टेंपा था जिसे पहरेदार बालू की बड़ी वेस्तार हर षट पर बजाता। भीधर भी जहाँ छोटे बच्चे डंडे खेळ रहे थे खेळ रहा था। सभी इन्दु चौड़ी हुई मामी।

—बसो, तुमसे एक काम है।

—मैं अभी खेळ रहा हूँ।

—फिर खेळना। जरूरी काम है।

और अनिच्छा के साथ खेळ छोड़कर भीधर साथ हो लिया।

धामियाना भी पीछे धूट गया। उत्सव की आवाजें न दूर, न निकट, अजीब लेकिन प्रतिध्वनि में आ रही थीं। भीधर समझ न सक्ता कि दीबी उसे कौन से काम के लिए कहाँ ले जा रही है। रात अभी सुब ही हुई थी। कचहरी की प्रमुख इमारत से खी दूसरी छोटी इमारतों में इस समय जा कि पाली थीं प्रति ध्वनियाँ मरी हुई थीं।

—धकिन इधर कहाँ पस रही हो दीबी ?

—बसो ता सही।

और वे किले की दीवार पर चढ़ने वाली सीढ़ियाँ पढ़ने लगे। ऊपर बुर्जी पर जाने के लिए मोल मीनार में सीढ़ियाँ थीं। जहाँ बड़ी अजीब गम आ रही थी। छोटी आवाजीयों अपने बॉसलों में भी-भी कर रही थीं। पैरों की आहट पर पहले तो कबूतर गुटरगू करते रहे लेकिन पहाट को एकदम पास सुनकर एक कबूतर भयभीत होकर पंख फड़फड़ाता मीनार के एक गबास से होता हुआ उड़ गया। उसके परों की फड़फड़ाहट दीवार के बाहर की तरफ टकरा रही



की बीर लग रहा था नदी का शान्त सोया हुआ बल भी उस फड़फड़ाहट से प्रतिष्पन्न हो रहा हो।

दोनों कुर्ची पर पहुँचे। माइपर किसी कोने में दूर आकाश के एक प्रदेश में झका बिरा था। अतुर्ची का चन्द्रमा नदी पार के सघन छतमार पाछों के ऊपर टिका था। नदी में कहीं चन्द्रमा का आछोक आभास दे रहा था।

बीबार व एक बँधूरे पर झुकते हुए इन्दु बोली

—भीचे देखो नदी किठनी नीची है। बीर बहाव भी एकदम बिर है न ? बीबर पार किसी सघन से आते हुए दीपालोक को देख रहा था। उसे यहाँ ऐसे बसा आता सुहाया नहीं।

—हाँ। नदी यहाँ सबसे गहरी है। कहते हैं हाथी-बूब पानी है यहाँ।

उत्सव की आबाज यहाँ तक जा रही थी लेकिन अस्पष्ट। पूरबकी तरफ किसे की बीबार पर एक विघास पीपळ झुका हुआ बाहर झाँक रहा था। कहीं-कहीं इसकी बड़ों दीबार में भी मजीब छिपटी हुई बाहर पसम्मियों जैसी दिखती थी। सहसा एक मोर दो-तीन बार बोला जिसका उत्तर सामने के सघन से किसी बूमरे मोर ने किया और यह मोर अपनी बड़ी सी पूँछ झुलाये एक बड़ी सी फड़फड़ाहट करता हुआ उड़ने लगा। बाँमार-आछोक की इस सलफछिमा में नदी में मोर की मझिम प्रतिष्छामा गिर रही थी। सहसा फड़फड़ाहट पर बीबर किञ्चित डर गया था और तभी इन्दु ने उस अपने से सटाकर उस बाँह में छकर कहा

—डर क्यों ये न ?

जबकि सज में वह स्वयं ही डर गयी थी। एक सज को बनेक बातें उसके बिमागमें बूम यहीं। इस प्रकार की सुनसान जगहों में भुरानी इमारतों में किनों में साँप या ऐसे ही बिपैसे बीब-अन्दु निकलते सुने गये हैं। मान लो सहसा कोई निकल ही गये तो ?

और तभी उसने बीबर को अपने से खींचकर सटा किया था।

—मैं डरता नहीं बीबी ! चौंक गया था।

—हाँ डरने की क्या बात है इसमें ? जानते हो तुम्हें क्यों छापी थी ?

—यहाँ बैठने को।

वह बीबर के इस सीचे से उत्तर पर हँस पड़ी।

—तो अब यहाँ बैठकर क्या करोगे ?

हँसते हुए बोली।

—ओ तुम कहोगी।

—मैं न कहूँ तो तुम क्या करणा चाहोगे यहाँ ?

—कंकड़ियाँ लेकर पानी में फेंकते हुए सोचता रहूँगा कि बीबा जब चलने को कहेंगी तब चक चुँगा ।

—तुम्हारा मन यहाँ नहीं लग रहा है न ? क्या चरें ?

—अभी तुम और बैठना चाह रही हो ।

—अब धीबर ! चतुर्बी का बन्दास्त देखकर चलेंगे । वो देखा हल्का हल्का उदासी मठ लिख रहा है ।

दूर मोमनाथ घाट वाले मन्दिर का घंटा नीच कहीं टुनटुना रहा था । मन्त्र प्रकाश में नदी की लाली तरलहटी में बालू बिछी हुई घुँघमी लिख रही थी । किस के पाम से ही नदी काफी घुमाव लेकर पहाड़ के तल में होकर बहती हुई निकल जाती है । इसी घुमाव के एकदम सिर पर उदासी मठ के परकोटे हैं, जहाँ एक घाट है । उसका महत्त्व अपनी एक पाठशाळा चलाते हैं । वे भी बड़े खर्चीब आत्मी हैं । एक तो वे अपना मठ छाड़कर कहीं नहीं जाते दूसरे वे सिर से पैर तक बाती ही कपेटे रहते हैं और एक चौकी पर दिन-रात बठे रहते हैं । राग उनका बारे में क्या साबते हैं इसकी चिन्ता वे नहीं करते । उनकी एक गिप्या बेश्या है, जिस बे नियम से समीठ तथा सितार सिलाने हैं । गाम का वे बड़ई के बीजार लेकर जाने क्या-क्या चीजें बनाया करत हैं । उन्होंने एक ऐसा चरला बनाया था जिसमें कई तार निकलते थे और पैरों से चलता था । खोब बस ता उनकी बुराई किया करते थे लेकिन उनकी पाठशाळा फिर भी फिटने ही दरखों से चल रही थी । उस तिमिप्त उदासी के बारे में संग अधिक नहीं जानते थे लेकिन वह बहुत बग ब्यक्ति थे । अब धीमन्त इस क्रमे में एक घार भाये थे और अब वे नहीं भाये तो लबर बी गयी कि याद किया गया है । लेकिन उदासी ने साफ कहछवा दिया कि मुझे तो सिर्फ एक ही बुलावा आना है ऊपर से और नहीं आऊँगा । जिस आना हो वह यहाँ भाये ।

—कभी तुम उदासी मठ चये हा ?

—कई बार ।

—उदासी जी से कितनी बार कहछवाया कि वे मुझे सितार निखा दें लेकिन उनकी बहो छत कि वे कहीं नहीं जाते । और बाभा साहब उनका बहो भेजने के पत्र में नहीं । —देखा बन्दास्त हा रहा है । गाछा की तिरस्कर्मियाँ कैसी मरुममा रही हैं ।

धीबर बिना समझे बन्दास्त देख रहा था ।

—जानते हा कैसा लगता है ?

—कुछ खास नहीं

—तुम कुछ नहीं समझत । बसो उठो सब ।

किञ्चित रोप किम्मे इन्दु उठी । वह किम्प की बीवार की मोर बढ़ी । जो कि काफ़ी चौड़ी थी बिस पर भार भारमी साब-साब बस सकते थे । कँगूरे भी काफ़ी ढँके थे । दो कँगूरों के बीच की फाँक से नही झलक जाती थी । एक कँगूरे से बाहर झाँकते हुए बोली

—अपर मैं कूर पड़ूँ तो क्या हो ?

—तुम क्यों कूबोगी ?

—सबकुं क्यों कूबोवी का नहीं बल्कि कूर पड़ूँ तो क्या हो सकता है ?

—मैं कूरने ही नहीं दूँगा ।

—तुम मुझे पकड़ लोने ?

—नहीं ।

—तब ?

—ओर-ओर से चिस्काऊँगा ।

—तुम अपनी बीनी को रोकोगे नहीं ?

—क्यों नहीं रोऊँगा ?

—ऐस ही ?

—नहीं एक बार कूबूँगा कि वीवी यहाँ स बम्बू पहलवान ही कूर सकता है जो नही में मठा बसाता है । तुम यहाँ से कूबोगी तो मर जाओगी ।

—मैं मर जाऊँगी तो तुम्हें क्या ?

—मुझे तुम्हारी याद आएगी ।

—सबमुच याद आएगी ?

—क्यों रोड जब भर जाता हूँ तो मुझे रात भर तुम्हारी याद आती है । सपने देखता हूँ ।

इन्दु हँस पड़ी । उसे सटा किमा ।

—सपने में अपनी वीवी को देखते हो ? लेकिन पहल तो कमी नहीं कहा ?

—कह देने से किन तुम सपने में आतीं थोड़े ही ।

—अच्छा बताओ क्या देखते हो सपन में ।

—नहीं मैं नहीं बताऊँगा ।

—बताओ ।

और भीबर ने इन्दु का जैसे झकझोरते हुए कहा

—मैंने यह किया नहीं बताऊँगा जाबो। जो मुझे हमेशा छोड़ जाने की बमकी देता है उसे मरना अपने सपने की दार्त क्यों बताऊँ ? मैं तुम्हें मोचना हुआ पहाड़ों के शिखरों पर, शीस के द्वीप में नदी की काली चट्टानों पर मटकता रहता हूँ और एक तुम हो कि

और भीबर हल्के से ख्यासित हा उठा।

—तुम मुझे खोजते हो ?

—कभी चूप का टुकड़ा होता है कभी बीप होता है।

—तो वह मैं हूँ ?

—मैंने कब कहा ?

—पागल !!

और इन्दु ने उस अपने में कस लिया।

दोनों को ही लगा कि बर्षा-हवा थोड़ी-थोड़ी बस रही थी ठीी मीमी लग रही थी। अब बीना को ही हल्की गरमी अच्छी लग रही थी। भीबर, इन्दु के सीने में मुँह छपाये खरबोच की तरह चूप था। इन्दु, मरने पार चन्द्रास्त हो चुके आकाश को देख रहा था। बार-बार उसके मन में यही फिर रहा था—मैं तो पहाड़ों के शिखरों पर, शीस के द्वीप में नदी की काली चट्टानों पर खोजता मटकता हूँ और एक तुम हो कि—

एक बामु के बाव सब किसी न किसी की खोज में निकल पड़ते हैं। उस खोज में मन होता है सुदूर का सन्म होता है और अमाशिता यात्रा होती है। उसे बोझिलिया यात्र हो आयी। नीचे सायी नदी में जैसे गुनगुनाती कोई साम जा रही हो बोझिलिया ही जैसे हो। फिर के पत्थरों से टकराता वह अन्तिम मृत्यु समीप जैसे नदी बस के तल स ऊपर उठता हुआ उस तल आ रहा है आ रहा है। नदी बहती जा रही है। समीप का मायन मत्रात में बला गया है जिसे जाते हुए भावपन के कुछ तारों ने संभवत देला हो।

और पता नहीं वह क्यों फूट पड़ी।

भीबर बाँका

—दीदी ! क्या हुआ ? रा रही हो ? मैंने तो जैसे ही यह किया था।

—भीबर ! नदी पर अभी कोई गाठा हुआ गया तुमने सुना ?

—नहीं तो ।

गहरी निश्वास छोड़ते हुए बोली,

—अच्छा अब बसो ।

—दीदी !

—क्या बात है ?

—तुम मेरी सगी दीदी होती तो कितना अच्छा होता ।

—समा-सौतेला क्या होता है ?

—नाहीं सगी होतीं तो तुम हमारे घर ही रहतीं । फिर हम लोग बिड़कियों के पास अपने बिस्तरों पर सटे बहुत दूर तक घातें करते रहते । कितना अच्छा होता न दीदी ?

इन्तु में फिर भीबर को समेट लिया ।

जिस दिन नौटंकी हो रही थी उस दिन काफी भीड़ थी। मंच के पास पहली पंक्ति में बैठे हुए इन्दु और श्रीधर भी “रुगा अमरसिंह” दख रहे थे। दिनारे पर एक मगाड़े वाला ‘किड़किड़ धाम’ ‘किड़किड़ धाम’ की आवाज में पीठे बैठा रहा था। उसका एक सापी एक बाल पर हाम रख कर बड़ी आर से आवाज डेरी कर पा रहा था

कड़कट की काकिका

और परकट पर किलकाय ।

बब भाते हूँ साधियो !

अमरसिंह जी राम ।

और—

‘किड़किट, किड़किट किड़ीड़ी कड़ीड़ी किट, किड़ किड़ धाम किड़ किड़ धाम धाम धाम !!

और मगाड़ा लमी धमना जब परां उठता और रुगा अमर सिंह तपचार कये बामा और पाबामा पहले पाठकर मक कड़कट हुए पैर पटकत पारर न आत ।

तमी बं कम्बालों की तरफ में पड़न लगते । इन्दु और श्रीधर कितनी लग्नयता से वह नौटंकी देखते होते । जब तक नौटंकी चमूटी रही श्रीधर, अमर सिंह में जोया रखा । राणा किच प्रकार बेस्वार्थों के नाच के समय हँसता हुआ मूर्छे उमोठ रखा था कि तमी नाचती हुई एक बेस्वार्थ का मोजा मंच की बरी में पठा मही जैसे उलझ गया । वह झड़ाम से गिर पड़ी । अमर सिंह झटके से उठा ताकि उस बेस्वार्थ को सम्हाल लेकिन झटके के कारण अमरसिंह की मूर्छे निकल कर अलग जा गिरी और बेस्वार्थ के सिर के बाल अलग जा गिरे और इन्दु और श्रीधर तब झूब हुंसे जब वह बेस्वार्थ लड़का निकली । झौटते में रास्ते भर माड़ी में इन्दु और श्रीधर हँसते रहे ।

पोट्टे दिनों बाद सही प्रायः रविवार या छुट्टी के दिन जाने के लिए इन्डु के  
 हाथ बल्ला किया जाता था। ममबत उमी दिन इन्डु, बाळा साहब के साथ  
 नोकर नहीं करती बन्धवा रात्र ही से साथ खाते थे। एक दिन भीपर जब  
 पुरैषा तो जनबरी की घुप में मामने वाली छत पर एक चीतलपानी बिछाये  
 इन्डु पीठ किये बाय मुत्ता रही थी। मामने के तासाब पर घुप जब भीगी  
 छिठरी हुई थी। आमपाम के गाछ के पत्ते जाड़े में जल गये थे। पत्रभर धूस  
 हा रहा था। वहीं-कहीं किमी-किमी पेठ में अपसाहठ जल्दी पत्ते भरा दिये  
 थे। तासाब के इस तट पर डेर मारे पत्ते भिरे हुए थे। तेज हुआ थी। इन  
 तिनों बट्टि हाती है इसलिये तिम प्रायः कम ही लगे रहते हैं। तिम तिनों पानी  
 पिरता है उन तिनों ठंड बहुत बढ़ जाया करती है। अभी कम तक ऐसा ही मौसम  
 था। ऐसे माबटे में प्रायः पत्तों से भाग मिट्टी की मिमिदिया या साठ की भोगी  
 तिया जमा कर तागा करत है। आज कई दिनों बाद दिन गुणा था। तड़का  
 अब पाम जैसा पैल आया था रबिन मुहाबता लग रहा था।  
 इन्डु के कंधे हल्की बारापी रम की पाल में डूबे हुए थे। बास बुँचि पेंके मून



रह वे जनम घूप कही-कही भाड़ी विरली गिरती हुई इन्द्रधनुष की छाटी-छोटी चमेसी के फूठ सी चमक रही थी । गात्र तन्त्रिय पर कूहनी टिकामे वह कोई कित्ताय या अन्धकार वक्त रही थी । श्रीभर बवे पाँव बड़ा । रेसिंगों के पास बन्धु का चरमाय फुदक रहा था । वह बहुत हीके स पठुँवा और बाकों के दोनों ओर स हाथ वक्राकर झट स इन्द्रु की अस्ति मूँद थी । एक क्षण ता वह थीकी । घूप के कारण हस्की गरम हुई अस्ति पर ठंड हाथ बड़े अच्छे लगे ।

—कीम है ?

उसने ऐसे कहा जैसे उसने नहीं पहचाना ।

श्रीभर अपनी हुईसी ओठों में बावे घुप झुका था ।

इन्द्रु ने अपने नहावे दोरे हाथों की साल हथेलियों में स श्रीभर के हाथ हेंक लिमे । उसकी अस्ति में दबाव के कारण तारे चमक रहे थे । बेसे ही डाने रही और वह सिफसिखा पड़ी

—अच्छा अब छोड़ो ।

—पहचानो पहले ।

—अरे मूर्ख अब तुम बीस ही पड़े तब क्या पहचानना ?

और दोनों हँसने लगे ।

—किती ओर से अस्ति बन्द की तुम्हने ।

सामने बैठठ हुए श्रीभर ने पूछा

—यह क्या पक रही हा ?

—यह कामिन्वास का मपदूठ है । तीन दिन में पककर इस पर एक निबन्ध लिखकर बाबा साहब को बिसाला है ।

—यह संस्कृत है ?

—हाँ ।

—तुम्हें आती है ।

—नहीं ।

—बाह्य होकर संस्कृत नहीं आती ?

—तुम्हें जो आती है ।

—मुझे जाने से तुम्हें आ जाएगी ?

—तुम पककर मुना ही बानी ।

—अच्छा तो मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ ।

—नहीं बीबी ।

—जा क्या बीबी हमें या ही तुम्हारे साथ रहेगी ?

—क्यों कहीं जावोगी ?

—तुम्हारे जैसे मूर्ख के साथ रहने में ज्यादा अच्छा होगा कि कहीं पत्नी ही भाई । और देखना एक दिन कौन ही पाईगी । मूर्ख के साथ क्या तक रहा जा सकता है ?

इन्दु विस्मयित्वा आसीत् ।

धीरे धीरे हो आया । उसने आज बीबी का पहली बार महाने के बाप इस तरह मुझे बालों में देखा था । उसे लगा कि बीबी मुझे बालों में ही बहुत अच्छी लगती है । हल्का गरम होते हुए बालों में बूँद झाँकी बन कर सिर में छिपती हुई थी । वह बीबी के बालों को छूना चाहता था । बीबी का अंदाज मूक अन्ध के बर्ष में हल्का आरक्तित हो रहा था । नहायी हुयी गीली पल्लों अन्धी भी एक दूसरे से चिपकी थीं । ठोड़ी कौसी उजला आया थी । आँखों का काजल बूम बना था इतन्मिष् किञ्चित् निरीह थी लग रही थी जैसे वरज रही हों कि बिना काजल के हमें ऐस म देखो बहुत बड़ी लग रही हैं न ? काजर हमें साथे रहता है ।

बीबी ने बिना आँखें उठाये ही पूछा

—क्या देख रहे हो धीरे ?

—तुम्हें ।

इन्दु को धीरे से इतने सीमे उतर की आगा नहीं थी । सिर उठा दिखाव कर बोली

—तुम क्या देख रहे हो ?—ओह, बाप कौन सूर्य नहीं है ।

और इन्दु बालों में अंगुलियाँ बजाने लगी ।

—बीबी ! तुम बाल पीठे ही रखा करो ।

—क्यों कहा नहीं जाईगी ? कुकाम जो हो जाएगा ।

—इसका क्या लेकिन तुम बहुत सुन्दर लगती हो ।

—अरे बाहू, जब तो तुम सौन्दर्य भी पहचानने समे ?

और वह बहुत कुमावनी हँस उठी ।

—तुम पहले नहीं मालूम था कि तुम इतनी सुन्दर हो ।

—बर्ना क्या करते ?

हँसते हुए पूछा ।

—बर्ना क्या मैं ताजमहल पर निवास करने हुए किंगडा कि मुमताज इतनी

सुन्दर भी जितनी कि मेरी इन्गु पीदी और इनीकिए घाहुजहाँ ठाबमहक भी बनना सका ।

—अच्छा बहुत बनबास न करो । आज कुछ पढ़ना-बढ़ना नहीं है ?

—पढ़ना है, लेकिन एक सर्त ।

—अच्छा पी ।

—और वह वह कि यही बैठकर ऐसे ही एक बालों में बैठकर पढ़ाओगी तो पढ़ूँगा ।

—नहीं तो ?

—नहीं तो नहीं तो हेमसेट की तरह बैस ही बाढ़ूँगा जैसे उसने बोझीकिया को डाँटा था ।

इन्गु बहुत सीमित हो जाती । उसने मजबूत उठाया और बिना बाँधे बस थी । पीपर अबाक देखा ही रह गया । कुछ समय में नहीं आया कि बीबी सह्या क्यों नहीं पयी । क्या कारण हो गयी ? क्या उसने कोई गलत बात कह दी ? बीबी के पीछे-पीछे सरपोस भी फूटकटा था रहा था । उसे एकदम उलझन अनुभव हुई । उसे लगा कि उसने डाँटने वाली बात जो कही वह नहीं कहनी चाहिए थी । बाकिर बीबी बड़ी हैं । भला वह उन्हें कैसे डाँट सकता है ?

वह स्वयं ही विभाया सा रेडिंग नाम ठाठान देसने सया । बीच में बड़ी-बड़ी सहरे उठ रही थी । कुछ साग रँद रहे थे । महाने बाकों की कतार आ-आ रही थी । आकास गहरा हवा मीके सिद्धरों के ऊपर बहुत उँचा बन रहा था । कुछ बीछे मोंबरने लगी थी । वह घायद फायी देर तक ऐसे ही सड़न-पड़न शिघरा रहा । तभी नीकर ने आवाज दी कि खाना लगा दिया गया है । बुला रहे हैं ।

खाने बाप कमरे में राज की तरह बीये ही पाठ लये थे । अमरवती बस रही थी । पेंबोली की मग्गा भी बैसी ही थी । पानी के कंटे तिलास एकदम बस पमक रहे थे । बाकिया लयी हुई थी । बीबी बैयना बचाने के न्यास से ऐसे म्यस्त हो रही थी कि जैसे खाना ठंडा हुआ जा रहा है , खंडे, खंडी बन्दी करो । बाते बाद में हा जाएगी इस समय ता एक दम खाना पुरू कर ही

दिया जाना चाहिए । श्रीधर बस्तुनिष्ठि की गंभीरता समझ सिर नवा बैठने को ही था कि बीबी ने नौकर को आदेश दिया

—हाथ नहीं धुलाये आज दामादर ?

और श्रीधर को लगा कि बीबी को बिना देखे भी मामूम है कि उसने हाथ नहीं धोये और दामादर के माध्यम से वास्तव में बात तो श्रीधर से ही कही गयी थी ।

दनों में बुपचाप आता साया और कमरे लीटें ।

अब श्रीधर के सामने अधिक दुबिधा थी कि वह बीबी से क्या बाल ? क्या वह घर लमा माये ? और किस बात की ? ओफिसिया को हुमसेट ने डाँटा ही तो था तो ?

इन्दु चौकी पर घिर नबाकर कोई पुरानी मराठी की पत्रिका पढ़ने लगी । सामने कुर्सी पर श्रीधर काफी देर तक छत टाकता रहा । किन्तनी डूँबी छत है यह तो पहले कभी ध्यान गया ही नहीं था । छत में बीचाबीच एक बड़ा सा कमर रंगों में बना था । जिसमें स एक झाड़फानूस झुक रहा था । धीरे के इस फानूस में धीरे के रंग-बिरंगे प्रिन्ग लटक रहे थे । जब वह छत पूरी तरह देख चुका तबकि कमर में झकीस पंखुरियाँ हैं और यह भी वह कई बार गिन चुका तथा उसकी मर्दन में दर्द होने लगा था उसने एक बार दबी दृष्टि से देखा कि बीबी क्या कर रही हैं ? बीबी तो याब तकिम में कुहनी मझाये ठोड़ी मुट्ठी पर टिकाये आगम स पत्रिका पढ़ रही थी । उस लगा कि बीबी का किन्ती बात की चिन्ता ही नहीं है । लेकिन यह श्रीधर से बोस क्या नहीं रही हैं ? वह दो एक बार हुस्के से लासा भी थाकि बीबी उसकी धार देखें । ऐसे उजबकों की तरह बैठे रहना उस बड़ा बबीब लग रहा था । उसने दीवार पर लगे बार्डर्सिपे के सींगों के बुभाव पिनते हुए फिर जाँसा ।

—जाँसी आ रही है तो पानी मँगवाकर पीओ ।

बीबी ने उसी तरह पत्रिका पढ़ते हुए कहा । उसने देखा कि बीबी के मुँह मुख पर मास कुछ जैसे ही हुस्के उमर आये हैं जैसे कि हुंसते समय ही आया करते हैं । उमे कुछ झाड़स बोधा कि बीबी का कोब कुछ कम हुआ । अब वह और और और स जोसने लगा तथा हरिणों के सींगों में किउने ब्याब है हमे पिनत लगा ।

—एक दो तीन ।

इन्दु ने बसे हा दामादर को आबात्र दी कि एक गिलास पानी ले आये ।

दामादर पानी दे गया । श्रीधर ने पानी पी लिया । नौकर चला गया । अब

धीधर अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए कोई दूसरी ठरकीब सोचने लगा । और सहसा वह जोर जोर से कहने लगा

—पानीपत की तीसरी सन्धि इब्राहीम लोदी और बाबर में हुई थी । छोटी मारा गया । बाबर मारतवर्ष का बावछाह बना । उसने भारत में मुगलबध की नींव डाली । इस मुगलबध में हुमायूँ बनवर, बर्हीगीर, औरगजेब आदि प्रसिद्ध सम्राट हुए । आखिरी बावछाह बहादुर शाह को अंग्रेजों ने रंगून में बन्दी बना कर रखा था । वह कबि भी था ।

इन्तु एकदम तेजी से उठी और हाथ की पत्रिका पटकते हुए बोली

—आखिर तुम चुपचाप नहीं बैठ सकते ?

—मुझे क्या तुम माराज क्यों हो ?

—मैं किसी से माराज नहीं हूँ ।

—फिर बोझटी क्यों नहीं ?

—मुझे फिन्तू की बरबास नहीं आती । तुम्हारी तरह इतिहास लेकर ही शिल्पाना मुझे नहीं आता ।

—मैं जानता हूँ बिध बात पर तुम मुझसे माराज हो ।

—नहीं मैं किसी बात पर माराज नहीं हूँ ।

—नहीं तुम हो । मुझे वह डराने वाली बात नहीं कहनी चाहिए थी । मैं छोटा हूँ । मुझे लजा कर बो पीदी ! आगे कभी मैं ऐसा नहीं करूँगा ।

इन्तु ने एकदम बौड़कर धीधर को अपने से शिपका किया । उसका चिर अपनी टोड़ी से बावते हुए वह स्वयं ही बुदबुदा रही थी ।

—नहीं नहीं धीधर! सब ही मैं तुमसे कभी माराज हो ही नहीं सकती । तुम्हारी वह बात मुझे बहुत अच्छी लगी थी सब मानो बहुत ही अच्छी लगी थी ।

और गाँव से माल सदा वह फूट पड़ी । जैसे अनेक दिनों उपरान्त उसे धीधर मिला हो वह फिर बुदबुदा रही थी

—धीधर ! तुम नहीं समझ पाओगे । कभी नहीं समझ पाओगे । पता नहीं जब तुम इस सबको कुछ समझोगे तब क्या समझोगे । और तब पता नहीं मैं कहाँ हूँगी । आज का यह दिन जब बहुत धुँबला बिगत हो जाएगा तब आज का धीधर ऐसे समीप बौड़े ही होगा ? जाने कहाँ सब घटीव जायगा ? जाने कहाँ ??

पता नहीं बीबी क्या क्या बुदबुदा रही थी । उन्होंने अपनी बाली हथेलियों में धीधर का मूस भर किया और देरने लगी ।

दीदी की माँओं में छलछलाहट थी। वे जानो में झाँकते हुए भी सुबूर बाल्पम्य ही बोल रही थीं। वह तन्मय होकर बोल रहा था।

—दीदी !

—हूँ।

वे उसी तरह दूवी हुई थीं।

—बाक कौक दू ?

उनकी माँओं मनीष तूप्पा से तूप्प सवालन मरी मीलों की हो भाया थी। जाना से ही बरीमिनी उठाकर पता दिया कि खोल लो। बाक फिर बिर भाये थे। कमरे के बालोक में हल्का उजला ठंडापन था। पिरे बाक दीदी के मुँह पर झारि रहे थे। धीघर की माँओं में दीदी का मुँह हो मुँस मर भाया था। उनके बाठा में बैसे काई भेच्छमान बवा हुआ था। यदि वे बोल पड़ें तो वह मान आज का सबसे श्रेष्ठमान हुआ। कहते हैं भेच्छमान सुनने के लिए भाचार्य में देबता और किरर आते हैं। दीदी के बारे—बाक गास बमक रहे थे। वह दीदी के पास लड़ा है। एक दिन वह दीदी से कहेगा कि दीदी जैसे भूप और जल की छुमम अन्दर तक पैठ जाती है जैसे ही तुम्हें छुना चाहता हूँ। क्योंकि भूप और जल क अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति पबिन है तो वह तुम हो। दीदी तुम सबसे पबिन हो। समकठ भूप और जल से मी अधिक।

एक बार होली पर वीरी के भाई बामन राव बबमेर से आ गये थे । बामन राव बीसे तो बीबर से तो एक वरस ही बड़े रहे हाने लेकिन उनमें अपेक्षा कृत बड़प्पन अधिक था । वे सिर्फ बामा साहब से ही दबते थे । बाकी इन्दु तक से छोटे मूँह बात नहीं करते थे । नौकरों को बात-बात में मार बेचना उनके लिए सहज था । व जब कभी बात तो घर भर में कोनों पर बहसत छा जाती थी । इन्दु भी बामन राव से अधिक बात नहीं करती थी । लेकिन फिर भी बाला साहब और इन्दु के लिए बामनराव का जाना उससे का कारण हो जाता था । काफी कुछ नाच-गान खान-पान होता था । बामन राव सबेरे से ही थोड़े पर घूमने के लिए बैजनाथ निकल जाते । या फिर छावनी के कुछ व्यक्तियों के सड़कों से मंत्री थी उनके साथ कभी घिकार पर निकल गये । बस ठामाब में मछलियों का घिकार मना था लेकिन बामन राव जरूर ही मछलियों का घिकार करते थे । उनको इससे बितुष्णा थी कि उनकी बड़ी बहन एक साधारण रुइक को सगे भाई की तरह स्नेह करती हैं । इसलिए प्रायः वे जब कभी बात तो हर बार बीबर को पहली बार बेतने पर पूछते

—कौन है ये ?

—यह मूक मय? भीपर है।

—मच्छा मच्छा।

भीर अत्यन्त उपेक्षा से ब कमरे से निकल जात।

उस दिन हामी थी। एक दिन पहल तक प्रतीक्षा के बाद भी वामन राव नहीं आये तो यह कार्यक्रम बना कि सबरे रंग लेसा जाएगा उसक बाद साँस को सब साग पाठ के लिए बीजनाथ जाएंगे। उसमें भीपर के परिवार के साथ बाला साहब के कुछ सम्बन्धी इष्ट-मित्र सभी सम्मिलित किये गये थे। ऐन हामी के दिन वामन राव आ गये। सब को बहुत प्रसन्नता हुई। सामद इन्दु ने मूक रंग का प्रबन्ध कर रखा था। पीछे मैदान में बड़े-बड़े हीन रंग के भरबा रहे थे।

कस के साथ आठ जा रहे थे भीर रंग लेखते जा रहे थे। बाला साहब भीर इन्दु भी मूक रंग लस रहे थे। बारंबार वामन राव को रंग लेखन के लिए बुलाया गया लेकिन वे नहीं आये। क्योंकि रंग लेखने का वे हिन्दुस्थानी बबरता समझते हैं। बाला साहब तथा इन्दु को सुनकर बुरा लगा लेकिन वे चुप ही रहे। उसक बाद पीठ के लिए वे छोड़ बसे। इन्दु जानती थी कि यदि पीठ के लिए वह बुझान जाएगी तो अवश्य ही वामन इन्कार करेगा। इसलिए बाला साहब म ही उसे बुलाया और वह आ गया। एक ही क्षितन में वामन राव इन्दु भीर भीपर। इन्दु को अनुभव हा रहा था कि वामनराव को भीपर का ऐगा साथ बीजना सहा नहीं रहा है। वह बीच में बैठी थी। वामन नहीं कुछ बकबकान दे इसलिए वामन राव से उसी के बारे में बातें करती जा रही थी

—तो तुम्हें तो नहीं मच्छा क्या मगला होगा ?

—यहाँ दीरी। क्या रखा है ? चिर्फ मूर्ख बसते हैं। देगजो नहीं हो कितन छाटे लोग रहते हैं चारों आर। मेरा तो दम बुटवा है। प्या नहीं तुम लोग यहाँ कीस इन सोया से पुसमिख सते हो ? यहाँ तो बस पूछो नहीं। जाने कहाँ-कहाँ



के राजकुमार पड़ते हैं। प्रिन्सीपल से लेकर प्रोफेसर तक अंग्रेज हैं। दीबी। कभी तुम एक दिन भी वहाँ पढ़ लेतीं तो एक तो इन हिन्दू देवी-देवताओं के बचकर से छुटपातीं दूसरे ऊँची सोचाइनी में कैसे उठना-बैठना चाहिए, रहना चाहिए सब भा जाता। मैं तो जब यहाँ आता हूँ सिवाम बाला साहब और तुम्हारे किसी से बात नहीं कर सकता। मैं तो यहाँ कभी नहीं रह सकता।

और इन्दु बेचती ही रही गयी कि यह उसका भाई है जो अभी सिर्फ मेयो कालेज अजमेर तक ही गया है। अगर कहीं यह बिलासत बसा जाए तो अपने घर क्या इस देश में ही कभी न लौटे। अपने बतिरिक्त दूसरों को 'छोटे लोग' समझ सुनते जैसे बिलुप्ता हा गयी। जब यह दूसरों के बारे में बातें करता है तो कैसे मुँह बनाकर बातें करता है जैसे दुर्गन्ध वा रही हो। अपने को किसी अंग्रेज से कम समझता है ?

जब वे लोग बीजनाथ पहुँचे तीसरा प्रहर था। जात्रा (मेला) वाले मैदान में लौकर और रसोइयों पहले से ही भोजन-पानी में लगे हुए थे। वो एक छोन्दा रिया भी लगी हुई थी। चारों ओर की धान्त अमराई तथा एकान्त बन इतने आरामियों के आ जाने से शैश आवाजों में जाप उठा हो। इन्दु, दीबर और बामन राव के अलावा करीब पाँच-छह सड़के-सड़कियाँ और थे। जिनमें भीष्म के भाई भीमोहन और भीमकम भी थे। भोजन में अभी काफी देर थी इस लिए सबको तास्ता करवा दिया गया। मास्ते के बाह सारे बच्चे सामने की छोटी-छोटी पहाड़ियों पर खीड़ गये। इन पहाड़ियों पर शरीफों के पेड़ बहुत थे लेकिन फाल्गुन वा इसलिए शरीफे नहीं थे। बामनराव भीमोहन को साथ लेकर अपनी मिलोस और छर्रवाली बम्बुक से बिकियों के धिफार के लिए पहाड़ी के उस पार निकल गये। दूसरे भी अपनी अपनी टोकियाँ बनाकर या तो गुल्मी डंडा या पुलाम-डंडा खजने के लिए मैदानों में खीड़ रहे थे वा किसी बाछ पर चढ़कर कूर-कौर रहे थे।

चारों धार अँट की बूबड़ों की तरह दूर-दूर तक पहाड़ियाँ उठती बिरती

बनी गयी थीं जब वहीं-वहीं हरी सड़कें जितनी में नरी हों। बैबनाप का नामा इन्हीं पहाड़ियों में शुकता-छिपता कहीं दूर बना जाता है। इन्दु और भीमर उसी पहाड़ी नाम क साथ-साथ बसे जा रहे थे। बट्टानों की परछीं पूव में हल्की बमक रहीं थीं जैसे उन्हें किसी ने अबरक में से अभी निकाला हो। ताले क उस पार एक पगडबी भी थी जा उनक साथ-साथ बल रहीं थी। जिस पर कमी कोइ नीलनी जगली शकड़िया का भाग बनाये अपना बाधरा सोसे कूहेंे हिलारती निकक जाती। ताले का पानी लल-लल करता बह रहा था। उसके मर या ठेज बहाक में बहीं अग्याय या जैसे कि कोई बड़ी भारी मदी हो और बह भी किसी भारी समुद्र-मगम की यात्रा पर निकला हो। नाम में एक जगह पार जान क लिए पत्थर रखे हुए थे। वे पत्थरों पर छलासल उस पार पहुँच गय। यह पहाड़ी अवेसाइव अँबी थी।

—भीमर ! बसो इन पर बड़कर बहाँ किसी बट्टान पर बैठेगे।

—बसो।

और क एक पहाड़ी पगबट पर फिमकते-बड़ते बड़ने लगे। इन्दु का पना महीं या कि पहाड़ जितने ऊँचे लपत हैं उनसे अधिक ऊँचे वे अपनी माल-पोल बड़ाई के कारण और भी हा जाते हैं। इन्दु सब ही हाँक गयी। हालाँकि उसने अपनी सादी कस ली थी फिर भी डालों में कमी-कमी ललत ही जाती थी। औरर कापी ऊँचे पहुँच गया था। बहीं स अरेले इन्दु को आबाज ही।

—भीमर-ई-ई

भीमर की विस्माहट इन्दु में सुनी।

—भीमर !!

दीदी के पुकारने को भीमर नीचे किसी मुरमट में व्यवस्थित कर सना बाहवा था।

—कहाँ हो ?

—यहाँ नीचे।

—जाती क्यों नहीं ?

—मुम बसो। थोड़ा सुन्वा लूँ।

भीमर समझ गया कि दीदी बक गयीं हैं। वह जमीन पर बैठ-बैठ कर हाथ टिकाय ताब उठरा और दीदी क पाम पहुँचा। वे अजीब ढंग से मुस्करा रहीं थीं। भीमर को बह मुस्कराहट भा गयी। वह दनता ही रहा। दीदी

बट्टान का सक्रिया बनाकर पीठ टिकाये आराम से चुस्ता रही थीं। मुरगुट में घूप छन कर जा रही थी। सबरे के खेले गये रंग की हल्की-हल्की झाँई खभी भी थी। गार्सों में जैसे हल्की ठिङ्कन जा गयी थी। सब नहा सिया बया या फिर नी दाकों को बड़ें स्वल्प रञ्जिता थीं। वीरी यराबर मुस्करा रही थीं। पास की बट्टान की ओर सकेट करते हुए बोलीं—  
—बैठो बसठे है।

बीपर कं मन में कही यह खोम भी या कि यदि वह पास में बैठ जाएया तो वह बीरी को ठीक तरह से बेस नहीं पाएगा।

—बरे बैठो न ?

—नहीं तुम आराम कर लो। मैं खड़ा हूँ।

—तो तुम मुझे आराम नहीं करने दोये ? सभ में तो बक गयी।

बीर बं चठने लगीं।

—बीरी ! सपस तुम्हें। ऐसे ही बैठी रहो।

—क्यों ? बसना नहीं ऊपर ?

—बसना तो है बकिम थोड़ी देर ऐसे ही बैठी रहा ?

बे बहुत नीठा हँसते हुए बोली जैसे उन्हें सब मामूम है कि क्यों कहा जा रहा है।

—लासभी कहीं का। बत् !!

बीर बं चठकर वीङ्ककर पड़ने लगीं। बीपर ऐसे सहसा भागने पर हटाठ हो आया। वह भी पीछे-पीछे पड़ने लगा। जब बं पहाड़ी के सिरे पर पहुँचे तीसरा प्रहर सम्पूर्ण होने को था। चारों ओर कमिक नीचा बहुत नीचा होता हुआ दृश्य दिख रहा था। वो अमराई जहाँ खाना बन रहा था केसी पहगाई में नीचे छोटी सी दिख रही थी जैसे मधुमक्खी का हरा छत्ता हो। उसमें से चठता घुमा जैसे दूर-दूर तक छितराता हुआ बहुत ऊपर चठने की चेप्टा में पूरव आर ऊँचा मुँह किमें जैसे बड़ रहा था। बीजनाथ का मन्धिर, नाला जैसे खिखीने के मन्धिर और नाले जैसे छग रहे थे।

बीपर पहाड़ी के उस दूसरी तरफ एक बट्टान पर खड़ा बैस रहा था। वहीं से बिस्माया—

—बीरी ! देगा बोऽऽरही पार्वती नदी।

—वहाँ ?

बीर अब बोलों बट्टान पर लड़े सामने के सिधिव में बीरी की पमकरी

पगड़ी सी पावती की रेंखा देख रही थी । इपर एक भी पहाड़ी नहीं थी । सब खेत ही खेत थे । जैसे रंग बिरंगे कपड़ों की कमा हो । कभी किसी बकरी की में-में सहायी पड़ जाती या फिर गोरुओं की घास चरते हुए गलबटियाँ । हस्के बहों स किसी चरबाह की फूहड़ बीसी-स्वर जैसे पहाडा को पुकार रही हो । गलबटियाँ फूहड़ वागी और अपरिचित जमीम बिस्तार जैसे नोहती हुई बड़ी सी भाँल आमत्रण नरी ।

—कितना अच्छा समता है न यहाँ धीघर ?

—बहुत अच्छा ।

इन्दु जैसे इतन उम्मुक्त बहुत अच्छेपन में खुसी हा भायी । किसी पार की टीम में ।

—क्या यहाँ ऐसे ही ऐसे ही हमेशा-हमेशा क लिए हम तुम नहीं बैठे रह सकते ?

—क्यों नहीं ।

—मूर्ख !!

धीर इन्दु ने धीघर का एक हाथ अपने बोना हाथों में ले लिया ।

—क्यों ?

धीघर ने बिस्कुस सरस भाव स कहा ।

—जरे मूर्ख कोई क्यों क्या किसलिए आगि लगाकर होता है ?

धीर इन्दु जैसे सहसा फूट भायी । बह बहुत मुसी स्य रही थी ।

—मरा मतलब क्यों से यह नहीं या कि मैं मूर्ख क्यों हूँ बल्कि हम क्यों नहीं यहाँ ऐसे ही बैठे रह सकते हैं ?

—इसलिए कि थोड़ा देर में ही सूर्यास्त हो जाएगा । फिर अँधेरा हो जाएगा । तब जमकी जानवर निकलेंगे और हमें यहाँ ऐसे बैठे देख कर खा नहीं आएँगे ?

—हाँ यह तो है ।

—यह क्या है ?

—रु बे हमें खा जाएँगे ।

—धीर यह भी पंडित धीघर ठाकुर ! कि हमें-मुझे लोग तोबते हुए साडिनी और सामटेन धेकर निकलेंगे और जब मूर्खों की तरह यहाँ बैठे देखेंगे तो कान उमेठे जाएँगे एमे

धीर हँसत हुए इन्दु ने किचित जोर से धीघर क कान उमठ दिये ।

—आह बड़ी जोर से कान उमेठ दिया तुमने दीदी !

—और यह भी कि धूप जब बनी जाएगी न तब ये सब इतना सुहावना पन समेट कर सूर्य अपने साथ जाने कहां से आएगा तब मही व्यवहार जगती सभर की तरह अपनी कामी भयावनी बूब फूँकफारता हुआ बीड़गा । उस समय तब इतने निश्चिन्त होकर बैठ सकोगे ?

—क्यों बीवनी रात में अच्छा नहीं लगता होगा ?

—बीवनी रात में जकर अच्छा लगता है लेकिन व्यापक एकाग्र सब किसी के घस में बोड़े ही होता है कि उस मानस मान सके ।

—यह तो बुरी बात है ।

बीबी की बात न समझते हुए उसने कहा

—बुरी बात तो है ही कि हम व्यापक सीमर्य में अपने को खरकित पाते हैं । क्योंकि उस व्यापकता में जब कोई भी अपनी बात नहीं सोचता— न नदी न पहाड़ न खेत न कित्तिक न विद्याएँ न तारे न आकाश— केवल मनुष्य ही अपनी रत्ना भी चाहता है और व्यापकता से एनाकार भी । लेकिन बीधर ! मनुष्य को अपनी इस सुदृढता का बन्ध भी सुमलता पड़ता है । वह जाने कहीं-कहीं भटकता है । जाने किन-किन इच्छाधा के लिए वह सम्भी-सम्भी याबाएँ करता है । उसे क्या भिन्नता है ? और एक दिन वह इस व्यापकता में अनाम एंस ही चू पड़ता है जैसे कोई फल । आकाश तारे मरी पहाड़ सूर्यास्त बन्दोदय किसीको पता नहीं चलता कि हम चू पड़े हैं । एक दिन ऐसे ही हम भी चू पड़ेंगे । उस चू पड़ने के पहले ही बीधर ! तुम्हारी यह पीदी बनी जाने वाली है ।

एककर्म की भाँति बैठे हुआ बीधर अपनी बीबी के मुख को कमी बंध कमी कुसी बाँसों को देखते हुए केवल सुन रहा था । बीबी सड़ी निश्वास लेते हुए बहुत आनेस में बीसे ही बोळ रही थी बीसे कि वे हेमकेट पड़ते हुए बोळती हैं । बीधर मंत्रमुग्ध कुछ समझने के प्रयास में मौन था कि— बीबी बनी जाने वाली है—इस बात से उसे ठस लगी ।

—कहाँ ? बीबी ! कहां जाने वाली हो ?

और उसने आनेस में बीबी के हाव को सफसोरते हुए कहा । बीबी उस समय दूर कहीं देख रही थी । उसके बाव उन्होंने उसी सुरमुट वाली मुसकान के साथ बीधर को देखा । बीबी का मुख जूड़ा समी कुछ बीधर को आनास में समरा टँका लग रहा था । आब उसे बीबी जैसे बहुत बड़ी बहुत बड़ी लग रही थी । संभवतः पूर्ण पृथ्वी ।

बीदी ने उस अपने स पिपटाठ हुए कहा

—क्यों तेरी बीदी को कहीं किसी के यहाँ जाना नहीं है क्या ?

—कहाँ जाना है ?

—तेरी बीदी का ब्याह कर कोई क नहीं जाएगा रे ?

—कौन ले जाएगा ?

—जो बीदी को ब्याहगा ?

श्रीधर कुछ समझ नहीं पा रहा था ।

—लेकिन कोई क्यों ब्याहगा ?

—तू कुछ नहीं समझता श्रीधर !

—मुझे छोड़ो नहीं बीदी !

—सच, मेरा ब्याह होने वाला है ।

—किसके साथ ।

—किसी जमींदार के साथ ।

—कहाँ है वह ?

—दूना के पास ।

—यहाँ क्यों नहीं ब्याह कर लेती ?

—ब्याह करते नहीं है रे पगल वह तो हुमा रहता है जनम-जनम से ।

—यह सब छलने की बातें हैं । ब्याह कोई जरूरी नहीं है । मिठाई खाने का शौक हो मिठाई खा लो बाबे बजबा सा लेकिन किसी क माप कहीं जाने से क्या हुआ ?—और, तुम कभी भी जायागी ?

—जाना ठा हाँठा ही है श्रीधर !

—बाबा साहब ने जाने को कह दिया ?

—ने ता भेज ही रहे हैं ।

—कच्छा तो यह बात है ।

—क्या बात है ?

—बाबा साहब भी तुम्हें प्यार नहीं करते इसलिए ब्याह करवाये दे रहे हैं ।

बन्धु निश्छिन्ता पर हँस पड़ा ।

—ठीक है तुम भी बड़ी हो पची तभी न ब्याह कर रही हो । सब बड़े हो जाने पर यही करते हैं । बड़े लोगों की यही भूमिगत है । गबना, मैं कभी बडा ही नहीं हाऊँगा और कभी इन पहाड़ियों को मदानों को

नदी तारे आकाश क्षितिज दिया किसी को नी कमी कमी नहीं छोड़ कर जाऊंगा । म तुम्हारे ब्याह में भी नहीं जाऊंगा तुम मुझे ऐसे छोड़कर जाओगी तो देखना मैं कमी तुमसे नहीं मिष्टम आऊमा । ब्याह कोई ऐसी जरूरी बात है जिस तुम न करो तो काम नहीं चक सक्ता ? तुम क्यों ब्याह करना चाहती हो ? तुम्हें खुद ब्याह करना मच्छा सपता है उमी न हेस रही हा ? ठीक है । जाओ । म अब कमी नहीं जाऊंगा ।

बीर बीयर आरेष में चट्टान स कूव कर तेज पकने को हुमा ।

—मुनो ।

—क्या है ?

—अगर तुम मुझे यहाँ छोड़कर पसे जाओगे तो जानते हो मुझे बाब उठाकर स जाएगा ।

—ठीक है तुम्हें चाहे वाब से जाए चाहे तुम्हारा दूहा । मुझे क्या ?

इन्दु हेसती हुई बीड़ी बीर बीयर का हाव पकड़ लिया ।

—अरे मुर्ख ! बीवी का ब्याह होता है ता नार्ड यह कहता है ?

—मच्छा कहो कि ब्याह नहीं करोमी ।

—पापक हुए हो ?

—हाँ पागल ही सही । लेकिन तुम ब्याह नहीं करोमी । तुम्हें कोई से जाए यह मैं नहीं बेव सक्ता । तुम्हें मेरे ही साम रहना है ।

इन्दु महमा गंभीर हो गयी । उसे लगा कि बिबाह की बात स सचमुच ही बीयर को बनी डेस पड़ेगी । वह भर जायी । वह बीयर को एनरम अपने से सटा सपना चाहती थी । कैसा है यह ? बस बरस का हो गया और बिन्दुस नहीं मममता । कैसी बिब करता है । कोई सुने तो क्या कहे ? इन्दु की नारी साहमा जाग उठी । संभव होता तो वह उसे बाहों में समेट अपने सीने से सटा लेती । वह जानती है कि अपने पूरे परिवार में भी यह कितना बकेसा पन अनुभव करता है । इस आयु तक जितनी बार्डें मा जानी चाहिए उनसे मर्दया ममभिन्न है । एकदम बीड़ी के आँक स बेंबा हुमा बोळता लरगोद है । इनी ने लीदाव और कैपौर के इन दिनों की रूपता भी बर्ना क्या बा ?

मां बहुत पहल ही जा बकीं । दूसरी मां भी मायी बीर ययी । दूसरी मां का बामन अपने मनिहाम में बड़ा हुमा और अब मजमेर में पड़ता है । उसने इन्दु की जग भी नहीं बनती । बाका साहब ने उन स्नेह तथा ज्ञान दोनों ही बिये । लेकिन मन के सुनेपन को एकान्त को तो हम अपरिचित छोटे

मार्द ने आकर बैसा दीपिन कर दिया । एक-एक कोना इसकी पदाहण रीझ-खीझ सभी स ध्वनित है । अब और कितने दिन यह सब रहेगा ? क्याह क वात बना बहुत कुछ नहीं बदल पाएगा ? श्रीधर यह कस्ता बासा साहब कर, ये पहाड़ियां ये मूर्तास्त ये दूर-दूर क मुपगिधित एकान्त बन कहां होंगे ? पता नहीं मैं कहां हूंगी । श्रीधर याद माणगा । इस भी निचय ही मैं याद आऊंगी ।

—श्रीधर !

—क्या ?

—तू मुझे याद करेगा रे ?

—म तुम्हें कभी नहीं याद करूंगा । जहाँ जाना है जाओ ।

दोनों की आँखें छसछसा मारीं ।

—तू कभी समझ है हम सागा की विवधता ममझे । माराज न हो श्रीधर ! तमी कछ पीरों की साहज मुमायी दी । दोनों सतर्ब हो गये । मूर्तास्त होने को ही था । छागों क पुकारने की आवाजें आ रही थीं । इन्दु ने देखा कि बामन और श्रीमाहन हँसते हुए आ रहे हैं ।

—अरे बीबी ! तुम यहाँ क्या कर रही हो ?

बामन ने यह कह कर पूरन हुए श्रीधर को दखा ।

—यह मेरा छाटा भाई है भैया साहब !

श्रीमोहन ने बामन राव से कहा ।

—बड़ी लड़कियाँ जैसी शकल है इसकी ।

और बामन तथा श्रीमाहन दोनों ही हँस दिये ।

श्रीधर अबाम्भ पुप लड़ा था । इन्दु कुछ ममम नहीं पा रही थी ।

—श्रीमाहन ! हमारी बीबी ने दो गदगोष पास हैं । एक फुदकतू और इमग बोखतू ।

और बामन ने हाथ की गिमास में एक पन्धर रलकर झरबेरी पर बँठी फुकपुबकी पर निगाना लगाया । चिड़िया बार बचा गयी और धमरा-कर उड़ गयी । श्रीमोहन का बामन की बात पर बहुत मजा आ रहा था । वह स्वयं इस बात पर बहुत जलता था कि यह श्रीधर इन्दु क इनने निबट है । वहाँ उम माणममलाप भी हा रहा था ।

—श्रीनी ! बोखतू गदगोष को मरर पहानों पर धूमने न माया करो ।

किसी दिन कोई किल्ली देख सभी लो गला पकल कर टें कर दगी ।



और बामन ने हाथ से गला एँठ देने की क्रिया बतला दी । भीमोहन और बामन दोनों हँस रहे थे । भीमर मन ही मन बुभुक्क रहा था ।

—बामन ! यह सब क्या बबतमीबी छमा रली हूँ तुमने ?

—किसी दिन बेब सेना बीबी । एक छरें स बरगोष की बीब न निकाल छी ठी मेरा नाम बामन नहीं ।

भीमर एकदम तेजी से आगे बड़ा और बामन क हाथ की दिक्कल छीन कर दूर फेंक दी । बामन एक क्षण का अबाक हो गया । उसे भीमर स ऐसी आशा नहीं थी क्योंकि गिळोल फेक इन के बाद वह उसी तरह अबोसे गुस्ते में मरा बामन की ओर दकता बड़ा रहा ।

—यिसाक क्यों फेंकी बे ?

बामन कड़ने के ब्याक स आने बड़ा । इन्दु ने भीमर का हाथ पकड़ कर बामन स कहा

—बबरदार बामन ! जो सड़ाई-अगड़ा किया ठी ।

और इन्दु भीमर का हाथ पकड़ कर पसीटते हुए बड़ी ।

बामन और भीमोहन बोड़ी बेर नहीं खड़े रूँ । पीछे से बामन की आबाब आठी रूँ 'दकता छरें से एक दिन बोसदू बरगोष की बीब न निकाली ठी मेरा नाम बामन नहीं ।

इन्दु तेजी से भीमर का हाथ पकड़े अँबेरे पडते पहाड़ से उठर रूँ थी । बामन के प्रति इन्दु का मन एकदम बट्टा हो गया था ।

—बामन बमर हाथ छोड़ बीठवा ठा तुम क्या करते ?

—मैं मार नहीं आठा बस ।

—तुम नहीं मारते ?

—नहीं ।

—क्यों ?

—क्योंकि वह बीबी के छोटे भाई हूँ ।

दोनों घूमने आये थे। कभी-कभी इन्डु फिटन पर बैठकर राह्र जानेवाली सड़क पर घूमने आती थी। होनी बाकी घटना को काफी दिन हो गये थे। बैचालू लयने बासा था। दिन भर काफी तपा था। लेकिन इस समय हल्की ठण्डी हवा चल रही थी। पुस्तिया पर दोनों बैठे हुए थे। फिटन बोड़ी दूर लड़ी हुई थी।

—आमो दीदी ! तुम्हें एक नयी बात बताऊँ ।

—क्या ?

—आमो तो सही ।

और वह ठार के लामे के पास दीदी को ल गया ।

—ओ जरा लंभे में काम समा कर लो सुनो ।

एक अजीब धंगीठारमक सप्ताहट लंभे में बहती ली लग रही थी। दीदी के पास ही सामने की तरफ धीघर भी काम लगाये सुन रहा था ।

—देखा दीदी ! इन लंभों में मशीन बोलती है ।

—यत् इतनी ली बात नहीं मामूम ? ठारों पर ओ हवा टकराती है न, नहीं यहाँ सुनायी देती है ।

फिर नी दानों कुछ दर सुनत रह । तनी इस्तु सचत हुई,

—बसा ऐसे अन्धा मही लगता । कारे वसे वा क्या कह ?

—इसे जंगल में कौन देखेगा ?

—इनी यही सङ्ग है । नहीं-नहीं बसो श्रीमन् ।

श्रीमन् दानो फिर पुकिया पर आकर बैठ गये ।

गमिया की सध्या सांगताय सम्पन्न होती है । जाइों की तरह हड़बड़ा कर मही कि ममी अपराहन मुस्किर स हुआ और साँस हुई न हुई कि रात हो गयी । जाइों में तो बस रात ही अबिक होती है अब कि गमियों में दिन भी आधी रात तक मुस्किर से भीम-भीम रात बनता है । गमिया का दिन बड़ा यथस्वी दिन होता है । खूब सारा निकसता मी है और खूब देर तक खड़ा भी है । साँस कब घुब होती है कब आमास देती है कंस मुकने लगती है, कब साँस पड़ीं लगती है फिर भोबुकी होती है तब कहीं आकर सूर्य बूने क आखिरी रंग आकाशो में समाप्त हाठे है ।

इस समय भी आकाश और जगस काकी दिन-बुने लग रह बे । एक खबीब सघाटा बा । भूस-बनकड़ मी कापी या । कमी जामवरों की कोई रेबड़ गुजर जाती तो बोड़ी दर का बनक के बनने में गाड़ी बाकी बाट पर पूर ही बूल छा जाती । साँस-पादियों की तजी पूरे आकाश में बिखती ।

अपके महीने इस्तु का ध्याह वा ।

कमया वा इस्तु मही से जाने क पूर्व जैसे इस कस्बे को यहाँ की साँसों को आटां का सबकी पूरी तरह की सेना चाहती है । वह प्रायः घहर जाती रही है । घहर भी उध प्रिय रहे हैं । वह धिमका नीनीठाक भी गयी थी । पम्बई भी । लेकिन बसा अपने इस कस्बे में झूटकर उध मही लगा कि वह पूरे आकाश की याबा कर बायी लेकिन घोंसका ता मही है, जहाँ बकान मिटती है, भूस-व्यास मिटती है नाद जाती है सपने आठ है जहाँ वह स्वयं होती है । उसे सुहावा सब कुछ है किस्तु मन अपने उठी बमरे में उठी छत पर पड़े होकर ठाकाब को देखते रहने में तबा श्रीमन् के साथ बैठकर कितावें पढ़ते रहने में और बाते करत खने में ही लगता है ।

लेकिन अब सब छूट जाएगा । यहाँ की हर बीज, व्यक्ति कुछ भी तो साथ

नहीं जा पाएगा। जा इतने दिन कैसा आत्मीय सा छपता था अब वह सहसा छूट जाएगा। कोई कहीं है जिसका स्वरूप पुस्तकें तो कहती हैं कि नीठा होता है। लेकिन पुस्तकें चाह वह हमलेट ही शकूमला हा मरुत हा या कोई उपन्यास हा य सब कुछ थीर भी कहत हैं थीर वह थीर हा ता इन्तु के मन में सबसे अधिक पिरता है। कभी उस माफाकिया छाने में कहती हुई दिखता है कभी शकूमला का बिबध भूख पिरता जा लाता है। कभी अग्नि में बँठी हुई जागवन्ध सीता का परिठाप दिखता है।

आपान पिरता है। सदाय बेरता है कि कहीं उस नी संदेणों की प्रतीक्षा न करती पड़े। जब कभी उस्ताव उस ठुमरी या पबके राचा क बाल कहलवाते और वह माठी हाठी—मारे मंदिर मजहूँ नहीं आये—ता उमका मन इतने संपीत सय ताक में नी बेल क पत्ते सा काप जाता। उस पता नहीं मजात आरका बेरे रहती। जब थीमर पला जाता और वह मगीत पाठ क बाद केम्प बछाकर अपने कमरे में बहसी होती—उस पता नहीं बचपन से ही जाने कैस-कैस सपने खात थे। पहल तो एक दूर की बुआ थी सकिन अब से वे नहीं रही ठब स उसे मजल ही सोना पड़ता। बँध उन लिंगों भी वह कहने-सुनने के लिए बड़ी हा गयी थी। लेकिन उस वरम की आयु हाठी हो गया है ?

कम्प की रोसनी में वह किताबों में जाने किन-किन कोटियों क बचन समुद्र तटों क बर्षम पड़ती। बिक्रायती मादिकार्यों के लम्बे-लम्बे पाठनों क बचन पड़ती और लो जाती। लेकिन जब उनके साथ दुषटनाएँ पटता ता वह चौंक उठती। कई बार तकिये में सिर छपा राठी रहती। अधिकतर राते-रोठ ही या जाती थी। जलती छन्प भी दानावर बुझा जाता और मनबन उस भोग भी जाता। क्यों सदा दुषटनाएँ ही सागों क साथ पटनी है ? और जब कोई किसी का प्रेम करता है ठब उसक प्रति ऐसा बनार निमन किस प्रकार हुआ जाता है ? यह कभी उमकी ममन में नहीं आता। और इस प्रकार वह अनिर्वात ही बड़ी हाठी बनी गयी।

अनेक उपन्यासों में मादिका का रहन-सहन उस अपने जैसा हा सगता और जब उन्हीं के साथ भागे पलकर दुषटनाएँ हाठी ता वह चौंक उठती। इन बातों

ने इन्दु का मन पर एक अमिट छाप छोड़ दी थी कि जब कभी वह एकान्त में होती उसे आधीसिमा सरने में बहती हुई दिखती। इसीलिए वह एकान्त से बचती।

विवाह हो रहा है।

स्थिति कुछ साफ नहीं थी। विवाह क्यों जरूरी है। विवाह किसी मत्राठ से ही क्यों होता है? और फिर इस सबका प्रयोजन क्या होता है? उसने काफी कुछ पढ़ा था। बाबा साहब ने उसे विदुषी बनाने का अपना संकल्प पूरा किया था। इन्दु के लिए उन्होंने सभी तरह के श्रेष्ठ ग्रन्थ उपलब्ध कर दिये थे। उन्होंने स्वयं इन्दु को पढ़ाया था। उसे अंग्रेजी मराठी संस्कृत और हिन्दी से पृथक् भिन्न करा दिया था। किन्तु इस ज्ञान में उसके मन में जो रहस्य भय आशंका संशय उत्पन्न कर दिये थे उसका निवारण नहीं हो सका था। प्रेम में निवेदन करते नामक-नामिका उसने पढ़े थे लेकिन हृदय स्वतः निवेदन कंधे करने लगता है यह पता नहीं था। अपने अन्तर जगत अकृपाहट की लेकिन वह निवेदन और इस अकृपाहट के अन्तर, सीमा-रेखा को स्पष्ट नहीं समझ पाती थी। वह कौन सा मुहूर्त होता है जब पारों और किसी को देखकर हसों बिसाहों में दूरगमल बंठियाँ मुनायी पड़ती हैं। बहुत कुछ तो भीमर को अपने सं सटाने पर भी होता है। तब वह अन्तर क्या है? और फिर? उसके बाद क्या होता है? उसने समर्पण की बात पढ़ी है। कहीं देह और आत्मा के प्रसंग में इस समर्पण को भी कहा गया है। इसके बाद इन्दु की पहलूक मात्र शास्त्रीय पौधियाँ थी। पुस्तकों ने जो रहस्य उसमें जाग्रत किया था केवल उतनी भर उत्कठा थी। उसके जाने तो वह जानती थी कि—सम्भवतः समुद्र का अवाह बल है या फिर सरने का ओषीकिया की लेकर बहते जाना ही है।

—जब सोच में पड़ क्यों बीड़ी ?

इन्दु बीकी। मच ही वह अन्तर में ही सोच और देख रही थी।

—कुछ नहीं ।

उसने सचेत होकर देखा कि गोपूकी कमी की हो चुकी थी ।

—दीदी ! बिवाह के बाद क्या कमी यहाँ नहीं आयेगी ?

—क्यों ? आयेगी क्या नहीं ?

—क्या पूना बहुत दूर है ?

—हाँ है तो । क्या तुम आओगे ?

—नहीं । मैं क्यों आऊँगा भला ?—बसो अच्छा है तुम्हारा ब्याह हो जाए तो फिर छुट्टी हो ।

यह वाक्य श्रीधर ने कुछ इस लहजे में कहा जिस प्रकार सड़की के ब्याह की बख्तर पिन्ता बड़े बोग किया करता है । इन्डु हँस पड़ी ।

—क्या तुम मुझसे छुट्टी लेना चाहते हो ?

—हाँ और क्या ! जब जाने का तुमने तय ही कर लिया तो फिर बल्की चामो ।

—तुम मुझे पिट्टी ठा कित्ता कराये कि नहीं ?

—देखा फुर्मठ मिली तो किलूंगा ।

इन्डु श्रीधर के इस सहसा बहप्पन पर रीस आयी । जैसा इसने मन ही मन समझौठा कर लिया है कि दीनी जाएगी ही । मान भी किया था । लेकिन कितनी देर ऐसा मान जरूरी सकता था भला ? और जब सहज ममीर पुरुष हल्के झसकने लगा है । इन्डु का बडा खल्ला लगा । पता नहीं उसके जाने के बाद श्रीधर को कोई ठीक से दखे-भासगा । ठीक है इमक परिवार क सभी ठा है । लेकिन इसस क्या ? स्वयं श्रीधर मन में क्या जस सबसे अधिक नहीं मानता है ? क्या श्रीधर के लिए वह बहुत कुछ नहीं रही है ? क्या एक दिन उस में सारी बातें नहीं स्मरण आएँगी ? जब सब बीत जाएगा तो क्या दूरगठ होठा हुआ बिगठ हमें उतनी ही लकी से नहा बभेगा ? मान का कोई फुर्मटना उसक माय बट जाए तो क्या श्रीधर का मरान्तक पीड़ा नहीं होगी ? आज तो पुसिया पर दोनों बँटे हैं लेकिन बन-बोग बरस बाद दोनों दा बिभिन्न परिस्थितियों में इसे स्मरण करत हुए आज की सीस की यह ऐकाधिकता ये मूरे-पील पठार यह मन्वी मड़क ये तार क लने ये टंठा होठा हुआ तथा आजाप विगामों तक लुसा हुआ माखोक यह बामी-हृप्या माटी-क्या ये कमी बस ही नहीं याग आएँगे तीन सभी कम ही बीते हों ?

इन्द्रु बिह्वस हो आयी । इतनी तेजी स पैरों के नीच स बहा जा रहा हो तो क्या उसे हम एक क्षण को भी अपने लिए नहीं रख सकते ? हम सब बीत जाएँगे । कभी यह भी ता सम्भव है कि यहाँ इनमें से कोई न रहे और केवल इन्द्रु या भीषर ही रह जाएँ । तब उसे कैसा-कैसा-सा धोनेगा ? अपने अन्दर तो एक पूरा जीवन घटता होगा है जब कि बाहर ऐसा हाहाकारी पुण्य बिराजा होता है कि आदमी भीस्वार कर उठे कि नहीं मुझे नहीं रहने दो यहाँ मुझमें अन्त बिराजे हुए है । इस आज का मिटा दो । मुझे वर्तमान नहीं स्वीकार्य क्योंकि हममें हाहाकार है । इन्द्रु साँपते-साँपते बबरा उठी । उसने बबराकर भीषर की ओर देखा । कैसा भरा भरा मोक्ष गुँहू है । एकदम तरलहटी की भीगी सीपी जैसी निरछस आँखें । यही तो भीषर है । ममता उमड़ आयी । क्या यह इन्हीं बड़े होते हुए आज क नन्हें पैरों से जीवनके मार्ग पर चलेगा ? पता नहीं क्या-क्या देखे ? और उस एकान्त की दुःख बेला में कौन होगा इसके साथ ? कौन इस भीषर को सम्हालेगा ? यह स्वयं ता बीसा है वह भीषर की माँ से अधिक इन्द्रु जानती है ।

क्या एक माह के बाद ऐसे ही भीषर को लेकर फिर कभी ट्राभी में भीय सकेगी ? पहाड़ पर चढ़ सकेगी ? आज की तरह घूमने जा सकेगी ? इनमें स बहुत कुछ हो सकता है लेकिन क्या वह स्वयं नहीं बदली हुई होगी ? आज तो कही कोई नहीं है । अन्तर के किसी कोने में सिवाम इस छोटे भाई भीषर के । पिछल जाने कैसे आकर अपना उन्नु ठान बिमा । लेकिन कल से कोई भीर ही जाने वाला है । घारी कितारें बहरी है धारक कहते हैं कि नारी क लिए बही परमपुरुष होता है । बही स्वप्न है । बही आयरण है । बही प्रलय है । बही निवेदन है । बही स्वामी है । उसी परमपुरुष में ही घारी नारी-सत्ता क समर्पण की अन्तिम गति है ।

भीर बही परमपुरुष आफ्नीमिया को झरने में पहा बैठा है । धकृशला की भाँति छाछित करवा है और घीता ने स्वयं को अग्नि में स प्राप्त करना चाहता है । बही परमपुरष जिस चप्टा निप्टा स कल अन्तर में हाता यही उसके लिए रहस्य था । उसको उलंठाने नहीं दी बस्कि भासंका अधिक थी ।

इन्दु दीदी का बिबाह था ।

एक महिने पहले से ही जाने कहाँ-कहाँ से ताते-रिस्तेदार आ गये । बाम्ना साहब की कोठी में सिख बनने की जगह न रही । मिरय की तरह भीमर रोज़ कोठी जाता रहा है । दीदी को अब वह बकेल न पा सक रहा है जिस तरह पहले होता था । बार-बार किसी इस या किसी उस स उसका परिचय दीदी करवाती रहीं हैं । प्रायः लोगों ने उपेक्षा से ही उसके परिचय को मिया है । मुद्रिकस से दीदी अपने कमरे में बैठी होती कि कमी दर्जी कमी सुनार, कमी कपड़े बाला या इसी तरह की व्यस्तता में उन्हें बला जाना पड़ता ।

—तुम यह पढ़ो मे अमी भावी ।

और कमी बास्मीकि रामायण का कोई प्रसंग बमा कर इन्दु तेजी स पछी जाती । यह दीदी की बातों की पीण्डा में रामायण पड़ता होगा है । दीदी का ठक था कि पश्चिमी सम्मता नगर-सम्मता है और भारतीय सम्मता आरभ्यक-सम्मता है । पश्चिम के लिए जीवन भोग है लेकिन भारत के लिए त्याग है । तमी तो पावन पाहू किसी राजा या सम्राट ने किया हो लेकिन धर्म और संस्कृति का



निवामक तो मुनि ही रहा है। बड़े से बड़े राजा को चुनौती सदा किसी मित्रक ने ही दी है। यह निस्पृहता ही हमारे मन में समाज संस्कृति तथा साहित्य का मूलाधार रही है। बास्मीकि ने संघा-यहम तक इस भ्रम में लोगों को रखा कि सीता का पत्र राजन या भेकिन उसक बाद सीता को जो मरान्तक पीड़ा राम ने ही उसकी तुलना में राजन का कार्य नगण्य हो जाता है। कथा के इस मोड़ का प्रयोजन भी वही निस्पृहता है। स्वयं बास्मीकि को अपने चरित्रों के प्रति कोई मोह नहीं है। इसीलिए प्रत्येक चरित्र अपनी कथारमकता से ऊपर हो पाते हैं। जहाँ दूसरे बेधों की कथाएँ, कथारमकताओं से युक्त होती हैं वहाँ क्या बेबय्यास क्या बास्मीकि कोई भी कथारमकता में रुचि नहीं रखते। और तो और महाभारत युद्ध के प्रणेता विभेता पांडव तक अपनी प्रयोजन सिद्धि के बाव निस्पृह होकर राज्य भी बास्मी भ्रम सचका परिवर्तन कर उसी भारप्यकता की ओर झूट जाते हैं जहाँ से भारतीय सभ्यता जन्मती है। राम सीता को प्राप्त करने के लिए अग्नि का माध्यम चुनते हैं और राजन अशोकन का बन्दी-पूह केकिन सीता न राम ही प्राप्त कर पात है न राजन ही। सीता के परिताप तथा अग्नि-स्तान में राम की विजय और राजन की पराजय दोनों ही कितनी मिथ्या हो जाती है।

और धीवर दीदी क मुँह से यह विवेचन सुनते हुए आश्चर्य से बेसठा होता कि दीदी को आश्चर्यकार यह सब सब कैसे मामूम हुआ ? जिसके निकट न राम न कृष्ण न पांडव कोई आदर्श नहीं है, बल्कि इसके निस्पृह प्रणेता बास्मीकि और बेबय्यास ही महान है जो कि किसी वरुष्य न एकन्त मिमूत कोने में बैठे हुए अशंग प्रजापति की भाँति अपने चरित्रों की सारी प्रजा को अपने निर्मम निस्पृह सनातन प्रयोजन के सम्मुख या तो अग्निस्तान में स्वाहा कर देते हैं या फिर हिमालय की गर्भ में बस जाने देते हैं। कोई मोह इन्हें नहीं होता कि ऐसा कर देने पर ब्रह्मा का महान युद्ध या महाभारत वीसी महान बटना कितनी हाहाकार-मयी हो जाएगी। क्योंकि उनके लिए ध्यान्य भोग वीसा कोई माह वा ही नहीं। वे स्वयं ही मागवेठर वरुष्यों में रहते थे और इसीलिए वे अपने चरित्र की मागरिकताओं के मिथ्यात्व को निस्पृह होकर या तो बाह्र हा जाने देते थे या फिर पल जाने देते थे। संभवतः इसीलिए हमारा आज का नागरिक मन इस प्राचीन भारप्यकता को सही समझ पाता। वह मिथ्या धार्मिक आदर्शवाक्य कथता है।

और इस बीच उसी सुपरिचित अनिष्ट मुस्मान के सामे दीदी कमरे में होयीं । अब बीबी के मुख पर परिवर्तन आ गया था । एक ता मही कि बे अब बहुत बड़ी लगती थीं और फिर आजकल जब कि उन्हें हल्दी लगायी जा रही है । श्रीधर इस परिवर्तन का समझता जरूर है लेकिन बूझ नहीं पाता । परिवर्तन विशेष नहीं था फिर भी श्रीधर के मन में जैसे कौम जाता था । का बीबी पहले कभी जेवर नहीं पहनती थीं अब बे सदी रहने लगी थीं । बाका साहब इस विवाह से बड़े प्रसन्न थे । लेकिन श्रीधर पता नहीं क्यों बीबी की भांजा में बराबर एक अजीब उदासीनता पाता ।

—क्या बात है बीबी ?

और पास बैठी हुई इन्तु पीक उठती ।

—कहाँ ? कुछ नहीं थोड़ा बक गयी हूँ न ? इसीलिए ।

और दीदी फीफ़ी-फीफ़ी हँसती होती अब ज्येष्ठ सम्पुषा ।

एक दिन संभवतः, उसी दिन सवेरे, वारात आ चुकी थी । गांधूसी के सनने ने । सनन वाली बेनी पर अल्पता स्वयं श्रीधर ने बनायी थी । और उसका मन में खूब प्रसन्नता थी कि उसने बीबी के विवाह की बेनी अस्पित की थी । वहीं स वह बीबी के द्वारा बूझबाया गया था । बीबी अपने कमरे में सजी बैठी थीं । उस संज्ञा में दीनी कितनी अप्रतिम सुन्दर लग रही थीं कि वह ठगा सा वेहरी पर ही सड़ा रह गया ।

—क्या आज क्या नीतर नहीं आओगे ?

बीबी के बेप स उस सगा कि क्या यह बही दीनी ह ? लेकिन यह ता दीदी नहीं—यल्कि जैसे औरतें लगती हैं, वैसी लग रही है । ता अब बीबी नी पूछरों की भांति अंगन लगेगी ?

—क्या सोच रहा है श्रीधर ?

श्रीधर चौका । उस जाने कैसा लगा कि वह बीबी से जो कि अंगन लग रही हैं बात नहीं कर पाएगा । उस एकरम अपने स बीबी से मनी स पिड़ हो आनी । एक धन की लगा कि ध्याह के बाद ये चली जाएगी और फिर ?

इस पर स उसका क्या जाता रहेगा ? यहाँ वह फिर क्यों जाएगा ? बीबी भी यहाँ फिर कभी-कभी ही वेहमान बनकर आया करेगी । बहुत हागा कभी

बुझाकर भिन्न किया जाएगा। और आज के बाद बीबी भी पत्नी बन जाएगी। जाने कहीं चली जाएगी। सब बा-एक दिन बाद से वह एक्टम जकेसा पत्र जाएगा। ठीक है जाएँ, उससे क्या मतलब है?

—क्या हो गया तुझे भीबर? बोल क्यों नहीं रहा है?

और इन्तु पसंग से उठी सवा भीबर की बाह हिजाते बोझी।

भीबर का मन तो हुआ कि बाह शकसोर दे और नील पड़े कि-जामा भीबर तुम्हारा कौन हाता है? मैं बेदी बना माया हूँ। शक से वहाँ जाकर बैठो और मन पढ़कर किसी की पत्नी बन जाओ मुझे तब न करो—कफिन वह कुछ न बोल सका।

इन्तु ने पहले तो भीबर को ध्यान से देखा और फिर अपने में समेटते हुए बोझी,  
—जानती हूँ भीबर। तू अपनी बीबी के जाने से माराज है। सब मानना मैं स्वयं जाना नहीं चाहती भीबर! आज नहीं तो कल तू जानपा कि हमारी यही बिकबात होती है। मारी बिना जाये रह नहीं सकती। उसे रहने ही नहीं दिया जाएगा भीबर! पता नहीं रे कि अब ठेकी बीबी नहीं-कहाँ जाए। तू अपनी बीबी से माराज न हो भीबर!

और भीबर ने देखा कि हकदवती बनी उसकी बीबी अपने स्वयंसेवकों में सजी कर्पा अपराध की मीनी धूप सी हो रही थी।

—आज साँस सब हो जाएगा बीबर!

—क्या सब हो जाएगा बीबी?

—आज मैं पूर्ण मारी बन जाऊँगी। समझा कुछ?

—नहीं ता। पूर्ण मारी क्या?

—मैंने भी तो पढ़ा भर है रे जानती बोड़े ही हूँ कि क्या होगा।

और बड़े मीठे से बे हँस दी।

दूरी पर सहलाई बज रही थी। उसी कोई महिला भागती हुई आयी।

—बरे तुम वहाँ हो। पलो जलो। दूस्हा मरण में आ गया और तुम

और महिलाएँ बीबी को लेकर जस थीं। भीबर ने देखा कि बीबी के पैरों में महानर रंगी हुई है। पैरों में साँसे हील बास रही थी। पैरों में सहसा ही मन्वरता थी। साँस-बाँस एड़ियाँ फसों पर उठती हुई दूर होती जा रही थी।

वह मण्डप से बहुत जल्द ही उठ आया था। यह अन्यमनस्कता के साथ बहुत देर तक देखा रहा कि किस प्रकार दीदी का हाथ दीदी के पति ने किया। जाने किसने मंत्र पढ़े गये। सबंधियों ने दीदी तथा उसके पति पर आवरु और चीलें बिखरीं। वह खिन्न होकर दीदी के कमर में आकर बैठ गया। उसे दीदी का बराबर झुका मुक्त माह आ रहा था। घुर्ने के कारण उनकी आँखें हल्की छाह हो आयी थी। बराबित हल्के से दीदी ने उसकी आर देखा भी था। गली हुई औरतों के खम्बीब लय-त्रास मुक्त बेसुरेपन पर वह चिड़ता हुआ बैठा रहा था। दीदी के पति निदरघय ही काठी बड़ी आयु के व्यरित रूप रहे थे। उसके काम के पास ही कोई आपस में फुसफुसा रहे थे।

—बर ता बहुत बड़ा है।

—द्विचवर है, दूसरा ब्याह है।

और भीबर ने इन फुसफुसाने वालों को धूर कर दखा। क्या मनुकव ? क्या दीदी के पति का यह दूसरा ब्याह है ? और वह बहाँ सड़ा न रह सका। उसके बिमाग में बिष्कू के बक की भाति यह वाक्य 'दूसरा ब्याह है' मूँज रहा था। दीदी का कमरा सुनसान पड़ा था। मंडप और नीचे के वस्त्रे को छोड़ कर बाकी सब सारी पड़ा था। नीचे से छोर्गों की गडमड आवाजें आ रही थीं। घहनाई बामा दूर बना रहा था। औरतों का गाना-बजाना भी आ रहा था। वह किसी से इस 'दूसरे ब्याह' का अर्थ जानना चाहता था। लकिन किससे ? दीदी ने ता नहीं बत्ताया कि उसके होने वाल पति का यह दूसरा बिबाह है। वह इसी जमेइबुन में बैठा हुआ ऊँच गया। जब उसे किसी ने पूमा तो वह बाँक उठा।

—क्या सा गये वे ? सिर में बर्द है क्या ?

इन्दु ने उसके माँके को छू रखा था।

—गहीं तो।

और वह दीदी को देखने लगा। सिबाय बकान के उसे उस मुक्त में कोई बिघेप बात नहीं लपी।

—तुम बहुत पक गयी होगी दीदी।

—हाँ कूछ तो थक ही गयी।

—क्या बज रहा है ?

—वा बजे होंगे।

—तो ?

और यह कहकर भीतर चोक पड़ा ।

—वयो ? अच्छा सो जाओ । कुछ खाया कि नहीं ?

—वहाँ ? मैं तो तुम्हारी ही राह देखता रहा ।

—कब आज से भीतर ! तुम्हें अपना ध्यान खुद रखना पड़ेगा ।

—बीबी का म्याह जो हो गया इसस्मि, है न ?

—अच्छा तुम दको मैं दामोदर के हाथ कस मँगवाती हूँ ।

—इतनी रात में भरे लिए कुछ न मँगवाओ ।

—लेकिन ठेरी दीदी भी तो जमी भुखी ही है ।

और बे चधी गर्मी ।

फरसूम की रात थी । तीसरे भहर की रात और फाल्गुनी वसमी का अन्नमा सुभी जास सा भित्तिज पर मुका हुआ था । सिइकी स जाती हुई चाँदनी आ रही थी । चारों ओर अनेसाइत घान्ति थी । बीबी लौट आयीं । भीतर के कारण इन्दु भी भीतर के पिता का 'बापू' ही कहती थी ।

—बापू पूछ रहे कि भीतर क्या कर गया ? मैंने कहा कि नहीं बह ऊपर सा रहा है । उस यही रहने दें ।

घामने की चौकी पर गाब ठकिये के सहारे सिर टिका इन्दु जिधामने समी । ठनी दामोदर कुछ कपका सेकर मामा ।

—बुधा जी न कहा कि आप नीच ही पूजन कर के पाएँगी ।

—अच्छा तू बल में जमी माटी हूँ ।

और दामोदर बला गया ।

—तुम बस्ती स पा सो लो फिर में भी पा जाई ।

—तुम जाओ न खा सँगा । मेरी चिन्ता न करो ।

—कोई बात नहीं भीतर ! आज सर और चिन्ता कर समे हो फिर तो चधी ही जाईगी ।

अचाने ही भीतर जाता रहा । उसके बाद वाली समेट इन्दु नीचे चली गयी । भीतर बुपबाप ठकिये के सहारे लट गया । रात मीग रही थी । हस्ती ठंडक थी । बह बाबर ओड़ कव सो गया पता न चला ।

और विवाह के बाद श्रीधर ने बसावि दीदी जसी जान का है। उन दिन पूरा स्टेशन मण्डप की भाँति सजामा गया। श्रीधर अपने का आगिर तक बहुत राके रहा। पूरा कम्बा उमड़ा पड़ रहा था। जेस्टफार्म पर साग ही साग था। पुलिस का बीच पूरा बार-बार म बज रहा था। दिव्य के सामने श्रीधरों की नीड़ थी। तिहकी क पाप सिमटी ही दीदी बँठी हुई थी। भीन में बहो श्रीधर भी था। वह जानबूझ कर दीदी के पास नहीं जा रहा था। सबबत भोष और भीनू में वह कछ भी समत नहीं पा रहा था। कई भोग उज्जैन तक जा रहा था। बाबा साहब ने एक बार श्रीधर को भी कहा था लेकिन वह अनुर ही बना रहा। इन्दु ने बिन्दुस ही नहीं कहा कि वह क्यों नहीं उज्जैन तक चलता है क्योंकि वह जान रही थी कि श्रीधर के लिए इतना ही अधिक हो रहा है। इन्दु ने भीड़ में खड़े श्रीधर को मुला मान के लिए किसी से कहा। श्रीधर न दीदी का सकेत देना लिया थीर वह बहो से भाग खड़ा हुआ।

वह बेसहाया पटरी-मटरी मागठ हुए हुए एक पुलिसिया पर जाकर बैठ गया। धुब डेर मारी बिछी हुई थी। ऊँच ऊँच पटारों पर पीपी-पीपी पास कपड़ा भी बिछी हुई थी। डूरी पर बीच की आबाज तथा इजम की सीपी सुनार्यो पड़ रही थी। तभी उसे लगा कि इन तक पड़ी। वह पुलिसिया के पास एनी जसह लग्न हा गया जहाँ से वह ठीक तरह से अपनी दीदी को देख सकता था। ड्रेन भा रही थी। दीदी बाबा दिव्या फूलमाबाओं में बसा था। वह ध्यान म दिव्ये क मायने जाने की प्रतीक्षा में सतर्क खड़ा था। तभी उसने देखा कि उसकी पीपी मुँह गोल रिहरी में सार रही है। उसने एक हाथ उठाकर बिन्दाया।

—दीदी ! !

और उसने कहा कि उन्होंने भीक कर देता। हस्ती मुम्बान भाया भोग किर धारापर बरस पड़ी। उनका भी एक हाथ उठ गया।

ड्रेन तक तक भागे के पटारों में बिछी पटणिया पर बड़ गयो। उसके बाप वह घाम तक उन पटारों की पीपी पासों में गया हुआ रागा रहा।

जिस समय वह घर पहुँचा दिया-बती की बेला हो जाती थी। जब दिन भर भी धीधर घर नहीं पहुँचा ता माता-पिता ने मान लिया कि वह भी इन्तु को बिदा देन साथ ही उखलन चला गया। हालाँकि धीमोहन ने कहा कि धीधर ट्रेन में नहीं था। बल्कि उसने उसे प्लेटफार्म से भागते हुए देखा था। पिता ने धीमोहन की बात को झूठ समझा था क्योंकि वे जानते थे कि धीमोहन धीधर के बारे में हमेशा उस्टी-सीधी बातें करने का शायी है। लेकिन जब वह शाम को चारों की तरह खुपचाप बमकर ऊपर वाले अपन कमरे के लिए जैल ही जीना बड़ रहा था कि धीमोहन ने देन किया और वह चिल्लाया

—माँ! तेन धीधर आ गया। मैंने कहा न था कि वह उखलन नहीं गया।

और माँ ने सब ही देखा कि धीधर जीने पर धिर झुकाने अपराधी की माँठि बड़ा है। तब तक और सोग भी निकल आये।

—क्यों रे कहाँ बा दिन भर स ?

माँ ने जाने बड़त हुए पूछा।

—कहीं नहीं।

उन्होंने उसकी बाँह पकड़ी और अपनी ओर समेटते हुए कहा

—बाह रे तेरा कहीं नहीं ? मे आँखें क्यों बाल है ?

धीधर गुस्से में भय अपनी बाँह छुड़ाकर हाफनेट से निकली कमीज ठीक करने लगा।

—अरे अपनी पीरी का बचा हुआ सामान ठीक कर रहा होमा—बोळता परगोस। धीधर धीमोहन की बात से एकदम धुँक उठा। वह आँखें तरेर कर धीमाहन को घूरने लगा।

—बोळता क्यों नहीं रे कहाँ बा ?

माँ ने उसके हाथ को झटकते हुए पूछा।

वह बिना बोले हुए जीने की तरफ बड़ा।

—बल्ल रोया है माँ। जाने दो बेचारे को।

और धीमाहन ठहाका मार कर हँस पड़ा।

—माँ! दादा को समझा सो मुझसे ब्यादा बात न करें।

—नहीं ता क्या मारेबा मुझे ?

और धीमाहन जीने पर लड़े धीधर की मार बड़ा।

—तुझे बज करना है धीमोहन ?

माँ ने धीमाहन को पटकते हुए कहा।

—अच्छा अब पछ जाना या ले । जानता है दिन भर से तेरी राह देखत-देखते  
बसी तक मीने नहीं लाया है । चल अन्दी से हाथ मुँह धो ले तो ।

—नहीं माँ ! मुझे भूख नहीं है ।

—उमका तो रोने से पेट भर गया है माँ !

पीमोहन ने चिढ़ाते हुए कहा ।

सकल बिना कुछ खबर दिये थीपर जीना पड़ गया । मचमुच राने से उमका  
पेट भर गया ~~आ~~ वह दिन भर सोचता रहा कि बीबी ने अब उम्मेद से कड़ी  
ट्रेण पकड़ी होगी । और दूर, बहुत दूर चली गयी होंगी । बीबर के साचने का  
यह तार कि वह चली गयी बहुत दूर पर जाकर अटक जाया करता रहा । कस  
से वह क्या करेगा ? बीबी के बिना उसने अपने घर, परिवार कम्बे किनी की  
कल्पना भी नहीं की थी । आज वह महमा रिता मया । आज क पहले इस निपट  
सुकम्पन की कल्पना भी उसने नहीं की थी । जम रुपये लगा कि आज ट्रेन जाने  
क बाद से तो जैसे चारों ओर क सारे दरवाजे बन्द-बन्द बन्द हाते जा रहे हैं ।  
आज तक वह जैसे एक बड़े मारी कमरे में था जिसमें दरवाजे ही दरवाजे थे ।  
जिनसे भूप ही भूप हुआ ही हुआ गंध ही मय आवाजें ही आवाजें आती थीं और  
आज सबर से वह जिसर आगा है उबर क दरवाजे पहुँचने के पहले ही बन्द हो  
जाते हैं । और वह इस समय एक बने अँधेरे बन्द कमरे में बिरा हुआ है । सिर्फ  
ऊपर नहीं एक गबाल है जिससे ऐसा प्रकाश आ रहा है जिसे आप देख नहीं  
सकते बल्कि मात्र अनुभव कर सकते हैं । जिसमें सिर्फ स्मृति आती है कि कल तक  
यहाँ सब कुछ था । कल की भूप हुआ गंध आवाजें आज दूर नहीं पर हैं । अब  
इस कमरे में केवल आपकी आहट तथा दरवाजे पीटन की आवाजों के अतिरिक्त  
कोय कुछ नहीं । वह दिन भर पठारों पर चौड़ा रहा । पीसी घासों का जूनों  
म कृषकता रहा । बकियों की लकड़ में निमिषाता रहा । सकल दीदी का उठा  
हुमा हाथ हल्की मुस्कान और फिर बारापर दरमनी आँखें वह भूक नहीं सजा ।  
वह बीबी के बिना भी नहीं मकया । वह वहाँ तक चौड़ा जाना चाहने लगा जहाँ  
बीबी गयी हुई है । दोषों में पसी नाम वह पूरता रहा । वह ब्याह का यह अर्थ  
झरी नहीं जासक या कि बीबी अब हमारा के लिए नहीं जायेगी । और वह  
भी सासकर उस बुद्धे जैम आरमी क माय । सकल क्यों मयी ? क्या क्या बीबी  
मेरे साथ नहीं आ सकनी थीं ? और, और अगर बिना ब्याह के भी नहीं जाना  
चाहनी थी ता क्या मुमम ब्याह नहीं कर सकनी थीं ? मय पन्ने में क्या मयना  
है ? ब्याह क मय पढाने क मिय इतनी दूर म आरमी बुझाने की क्या आवाजना



की ? लेकिन इससे कुछ नहीं हाता । जबकी बार बीबी बापनी तो यह कह देगा कि वहाँ अब जाने की क्या आवश्यकता है ? हो गया एक बार हो जायीं । और न हो तो उस बूढ़े कुसुर ने जिस तरह कुसुर ब्याह किया तुम भी कुसुर ब्याह कर डालो । और मैं उसके लिए तैयार हूँ । लेकिन इसक बाद भी यह दिन भर मारा माघ फिरता रहा । परेड घाउण्ड में घोड़ों की सीब ठोकरो से मारता हुआ यहाँ-वहाँ बोलता रहा । एक क्षण को भी बीबी का यह भूला नहीं पा रहा था । यह घर, बेंबेरे में ही पहुँचना चाह रहा था क्योंकि वह किन्नी से बात नहीं कर पाता । और समझ था कि ब्याहपूछने पर बार से रो पड़ता । आज यह सब ही पहली बार अपने को हूमेण के लिए बनाव अनुभव करने लगा । कुछ तक यह रसिन नामे ठाकान देखते रहने को या बीबी ने साथ हमलेट पढ़ने रहने को मानता था कि ऐसा तो यह रोव ही करता रहेगा । लेकिन आज उसे लगा कि नहीं अब यह सब फिर कभी नहीं होना । लेम्प की रोगनी में बीबी का पीला पाल सुडील नाक उसके बत अब यह फिर कभी फिर कभी नहीं बेल पाएगा । और यही बात उसे बिकरु किये थी । यह कैसे संभव है कि बीबी के साथ यह फिर बैठ ही नहीं बैठेगा रहेगा पड़ेगा ? नहीं यह नहीं हागा । बीबी का हर हाकत में सीटना होया । और यह पामरुपन में कुछ दूर रेक की पटरियों के सहारे दीड़ा भी था । इन्ही पटरियों की सीब में यह अपनी बीबी को पा सकता है ।

माँ जिस समय जाने के लिए बुकाने जायी थीबर बेंबेरे कमरे में बैठे ही बैठा था ।

—भीपर !

और माँ ने बेसा कि लिङ्की के बुमके प्रकाश में थीबर बिना कपड़े बघसे बैठा है ।

—बक बेटा ! बेसा मैं अभी तक भूली हूँ तेरे लिए । जानता है, कहीं कहीं बाबनी नहीं दीड़ाया ठरे लिए ? बरु तो ।

—नहीं माँ ! मुझे भूल नहीं है ।

—अरे तो अब न जाने से तेरी बीबी बापस आ जायगी ? ब्याह के बाद सड़की तो बेटा कुसुरे के घर जाती ही है ।

—नहीं माँ ! बीबी को सब ब्याह नहीं करना चाहिए था ।

और यह लपक कर माँ से बिमट कर रा पड़ा ।

उनके बाद तो श्रीपर खिलाईल बुझा ही हुआ बना बना । घर में बैठ भी  
 समम कोई अधिक बात करना ही नहीं था । माँ में अपने श्रीपर की धरपा का  
 कुछ-कुछ समझ लिया था और गानवर श्रीमोहन का बरज दिया था कि वह  
 श्रीपर में कुछ न होगा । स्कूल वह सचने ही पहुँच जाता । स्कूल के बाद वह  
 ताजाक बना जाता । पाठ पर पगों बैठकर बाबा साहब की दूर रिपटी कोपी  
 के पीनी बाण कमरे की बार देखता रहता । उस कभी-कभी मम हो जाता कि  
 रेंसिंग घाम पीनी और वह नड़ा है । वह उन सभी जगहों पर गया जहाँ वह कभी  
 पीनी के साथ गया था । उस बट्टान पर लड़े होकर उनमें मूर्खान्त बेला में पावती  
 नी देखी थी । एकपैठियों की आवाज भी सुनी थी । मूर्खान्त भी था । आनाग का  
 नीय खँशावा भी था सलत तारा भी अपनी एकामिनवता में उगा हुआ था ।  
 भाणियों में मृदनी-रिपटी पगडँडियाँ बनी बनी थीं । बरबाह की निवनी बाणो  
 भी थी सब था । दूर दूर तक बीमा ही था । बैकड एक बीवी भर नहीं थी और  
 जो कि सब कुछ थी । वह मयाप्या बीमे प्राण्य हा ?

उस दिन वह एकदम ही टूट गया जब उस माकूम हुआ कि ब्याह क बाठ-  
 यम दिन पाद दीदी जा जाने वाली थी अब वे यहाँ न आएँगी क्योंकि बाका साहब  
 काफी दिनों क लिए स्वयं बम्बई जा रहे हैं और दीदी वहीं जाएँगी । उसने मन  
ही-मन समझीला कर लिया कि अब पिछला सब बीत चुका है । एक ऐसा सपना  
जा जा भोर का जा और अब वह खेपा गया है । अब वह काल जैसे मूर्ति पुन  
 नहीं देख पाएगा । बिपत आकाश हा जाता है जिसकी नीतिमा को हम अपने  
 हाथों में देखना चाहते हैं, गहना चाहते हैं लेकिन वह नीतिमा हमारे चारों ओर  
 तक दूर-दूर तक फैली होने पर भी हमें घेरे जाने पर भी हमारी नहीं होती ।  
 बस दीपर की दीदी बड़ी हा गयी थी । वह कला में पीछे बैठा हुआ जाने कितनी  
 बिटिठियाँ दीदी को लिखता । लेकिन हर बार यह प्रश्न आ जाता कि क्या लिखे ?  
 क्योंकि 'उसे पाद जाती है'—में वह अपने का अविश्वसित नहीं कर पाता था ।  
 दूसरे अब वह यह नहीं कहना चाहता कि 'दीदी के बिना वह जी नहीं सकता' ।  
 इसलिए कभी वह तासाब ना बर्णन करने लगता उस दिन स्टेशन कैसा कम रहा  
 वा दीदी के दिम्बे की फूलमासाएँ हवा में कीमी उड़ रही थीं तथा धूप में माकाओं  
 क घोंदें जैसे लिसे कम रहे थे । लेकिन वह यह कभी नहीं सिख पाता था कि वह  
 उन सब जगहों पर गया है जहाँ दीदी गयी थी उसक साथ । उसे दीदी स मान  
 था । कहीं यह भी कि उसे दीदी से प्रेम है लेकिन दीदी को नहीं । तभी वा ऐसी  
 कोई बिबसता तो नहीं ही थी कि वे खली जाती—और हर बार पत्र अबूध वा  
 फिजूल की बातों के बाद अबूध रह जाता । झक्काकर वह पत्र में नीच मीनि-  
 माटी लकीरों से बूह, बिल्ली बनाकर फड़ देता । या हाथिये में किसी किताब  
 स फूल ट्रेस करके बनाया जाता । फिर स्वयं का पत्र लिखा जाता उपरन्त उन  
 सब पत्रों की गोभियाँ बना सी जाती । स्कूल के वस्ते में ऐसी बीधियों भोठियाँ  
 होनी जिन्हें वह साम को तासाब में घाट पर पैर लुकाते हुए एक-एक कर बहाने  
 लगता । अब एक गोली लहरों के हिपकाकां पर उठती-भिरती दूर हो जाती तब  
 फिर दूसरी लौंगी जाती । गोभियों की स्याही स पानी पहक हस्का पीसा हो जाता  
 और फिर गोभियाँ दूर हाने लगती । इस प्रकार तासाब में दीदी के पत्रों की  
 गोभियाँ ही गोभियाँ होतीं । और कभी वह साबता कि ये गोभियाँ दीप हैं जिन्हें  
 दीपर ने दीदी के लिए तासाब में बहा दिये हैं । कभी कोई बमबन्ती का हंस आएगा  
 और इनमें स किसी एक को ले जाकर दीदी की मूँडेर पर दीदी क उवाचमुख के  
 सामने रख देगा कि—सो यह रहा तुम्हारे दीपर का पत्र । लेकिन वह स्वयं  
 ही उस अपनी मूर्धता पर हँस पड़ता कि कहीं ऐसा भी होना है ?

रात का वह किताब लेकर बैठता और किताब की लकीरों भरता वन जातीं  
 दिनमें आधीरिया क बचाव दीवी दिखतीं । वह भल्ता जाता कि क्या वह दादा  
 क लिए ऐसे अणुअणु की बात साब रहा है ? तब वह बार बार स पढ़ने लगता  
 कि—सूर्य-ग्रहण दो प्रकार का होता है । एक पूर्ण और दूसरा आंशिक । पूर्ण ग्रहण  
 का सघास भी कहते हैं ।—और वह फिर या जाता । वह इच्छना चाहता था कि  
 किस प्रकार सूर्य और पृथ्वी क बीच अन्तरमा था जाता है । उन्ने अन्तरमा मे बिड़  
 हो जाती । उन्ने अपने और दीवी के बीच भी ग्रहण बल्कि अणुअणु-ग्रहण लगता ।  
 दीवी का पति ही अन्तरमा है जिसकी छाया दीवी पर गिर रही है । सूर्य का मुक्ति  
 दिखाने के लिए सात स्नान करते हैं, नाल करते हैं लेकिन दीवी का मुक्त करने  
 कृष्टिय वह क्या करे ? और प्रायः ऐसे मौकों पर कोई न कोई या जाता जो पुस  
 बैठता कि वह पढ़ रहा है या ऊँच रहा है ? अगर पढ़ने वाला भीमाहन हुआ  
 तो वह ऐसे घूर कर देवता कि कब्जा हो बचा जाएगा लेकिन यदि माँ हातीं  
 तो वह जोर-जोर से पढ़ता कि कितने अक्षरों पर सूर्य होता है तब ग्रहण होता  
 है । और परीक्षा पास जाती या रही थी । बाला साहब भी या चुके थे । आन्ध्र  
 उन्ने अपने बिरोह को अपने अन्तर ही फूट जाने दिया । जब वह हूँ बीज स  
 डरने वाला होता या रहा था । मा वह बोझता ही नहीं था लेकिन बासता था  
 तो बम बुदबुदा कर रह जाता । जैसे अनुनय कर रहा हो । वह किसी क माय  
 अधिकार भाव से बात ही नहीं कर सकता था । वह कमी पर में किसी के साथ  
 नहीं बैठ पाता था । जहाँ देर रात तक कर से बाहर रहता था लेकिन अब अपने  
 कमरे मे एक कोने में किताब किन्ने बैठा रहता । वह जैसे स्वयं को स्वयं की उप  
 स्थिति तक का मान नहीं हमने दना चाहता था । दिन पर दिन बीज रह थे ।  
 फास्युन के दिन अब मुक्त था रह थे और घुप भी बैज के माय बहनी जा रही  
 थी । फास्युनी हवा उठिया बगल बनन क लिए पेड़ों में मग्मग्मने लगी थी और  
 यही मुसा-मुसापन ही ता पुकार-पुकार कर कहन लगता है कि परीक्षाएँ आ रही  
 हैं । इन दिनों दिन बहुत फँस जाता है । कोई काना-बूबा घुप या आमाठ न  
 जब मही पाता है । बाबाग जैसे देर मा अमाक-पक घुप मे मर पया हा । जोर  
 वह कामना करने लगा कि ऐस ही किसी दिन कोई डाकिया दीवी का एक पत्र  
 उलठे बाद पुकार कर दे जाएगा । जिसे वह ले समा लेकिन पढ़ता नहीं । दीवी  
 के लिए यही दण्ड होया कि वह उनका पत्र न पढ़े । बस वह पत्र अपने माय  
 स्कूल ले जाएगा । कमी किताब में लेया । कमी काशी में । मयब है कमी हाउट

की जेब में भी रख सके किन पड़ेगा नहीं—स्यार्कि जो बला गया उसका पत्र पढ़ना स्वयं का फिर मोह में डालना है ।

और एक दिन पिता ने पुकार कर उसके नाम आया बीबी का पत्र सचमुच ही दिया जिसे मकर बहू दीड़कर जीना पढ़ते हुए अपने कमरे में पहुँचा और एक ही साँस में पढ़ गया । बराबर पढ़ता ही रहा—

पूना ४ मार्च १९११

धीधर ! तुम्हारी माय इतनी आती है कि सभब हुआ तां में बैसी ही बनी रहती । इम और तुम बैठे ही रेसिंग नाम ठाभाब देखने रहते । चटपान पर बड़े पार्षती देखते रहते । साँस तारे को जग्म-जग्माग्टर तक देखते रहते । मैं अभी धीधर स बिस्मग न होती । छकिन भैया रे हम बन्म ही बूसरे देते हैं इसीलिए तो हमारा बीबन भी अपने लिए नहीं होता । उसे कोई बूसरा क से इसीलिए तो हम यहाँ हैं । अपना कुछ भी नहीं होता । अभी तुम छोटे हो । कल तुम भी सब समझ जाभाये । ठब तुम्हारी बीबी की बिबघटाएँ समझ सकोमे । सब कुछ है । अच्छा बर है । मूल-साभन भी है । तुम्हारे बीबा की मैं कहने क लिए बूसरी पत्नी हूँ बाकी ने सी कीन राजा साहब है । मुझे इस सब की हस्की भनक भी केकिन धीधर ! तू जाब हमारी या हम सबकी बिपन्नता बोड़े ही समझ सकेया । अभी तेरी आँसों के आने नीसिमा है । सब कितना सुहाबना लगता है न ? केकिन दिन बड़ जाने पर सब अपने लगता है और तो और बिनयी पृथ्वी तक तप उठती है । वे किताबें बहू कनरा हम लोगों का पढ़ना धामा साहब का एक-एक पलोक का बच करना और तुझ समझाना कितना कितना याद है धीधर । छकिन कितने जस्ट सब घोपा मया । अभी तुम यहाँ होते तो तुम देखत कि तुम्हारी बीबी सचमुच ही बपक मयी है । मेरा यहाँ क्या प्रयोजन है यही समझ में नहीं आता । जाने रे अभी तू नहीं समझेया । और अच्छा भी है तू अभी न जाने यह सब । क्योंकि यह सब जान जाने के बाद जबीब बिदूषणा का तुरापन जीम पर हुमेदा-हुमेसा के लिए बग आता है । बाभा साहब के पर स कहीं प्यादा बंभव है तेरे बीबा के पास धीधर ! और मैं उरपनी मासकिम हूँ । समझा कुछ ? मासकिन किछ कलत है यह नहीं मासूम ? अरे, यही बातें जानने को तो हम रोज बड़ते हैं । बड़त जाने हैं बड़ते जाते हैं और एक दिन इते जान लेने के बाद बटने लगते हैं

घटने सगले हैं और फिर तो घटते ही जाते हैं। तो अब तेरी बीबी इसी को जान रही है आज कल। और एक दिन तू सुनेगा कि तेरी बीबी घटने सगी है। बस यही जीवन होता है। बढ़ते जाओ बढ़ते जाओ और शिखर पर पहुँच कर उसके गूनीपेन का छू कर फिर उतरने सगो। शिखर पर कोई हमेशा के लिए बैठ नहीं पाता है। शिखर एक बंग है भीबर! जिसमें पता नहीं भोग कैसे छिप्य रहते हैं? उस बंस का लाग भोग कहते हैं और उसमें डूबे रहते हैं। यह न समझना कि ठरो बीबी इस भोग और दग से पूयक है। नहीं आकण्ठ डूबी हुई है। तन का तो कोई माम इस कल्पना से नहीं बचा होगा। रहा मन तो उसे कौन जान सवा है? मन तो एक कल्पना है भीबर! जाने वे मैं भी क्या पबडा ले पीठी। तू मुझे याद करता है इसमें मुझे कभी सघय न बा और न होगा। तू ही मुझे सपमून याद करता है। और यही तो एक मात्र तेरी बीबी की उपलम्बि है। अच्छा छोड़। कूब पड़ना। देख आज मैं दूसरे बलों में समुद्रों में हूँ। केवल तुमो यहाँ से डुकार कर ही कह सक्ती हूँ कि साहस कभी न सोमा। ओ बा चुका है उसके लिए प्रलापना व्यर्थ हटा है क्योंकि यह जाने क स्पिए ही बना था। तुमो यहाँ भाग को कैसे किरू? म भी यहाँ कितनी कुछ हूँ इन आज कैसे बघाऊँ? तू मेरा छोटा भाई है और छोटे को कास संकेतों में समझाओ भला वह कैसे समझ पाएगा है न? तेरे बीबाजी तुमो जानते हैं यह कैसे कहें? जब कि मुझे ही वे कितना जानते हैं यह स्वयं मुझे ही नहीं मामूम। अच्छा तो दूब पड़ना। एक दिन जब तू बड़ा भावनी बन जाएगा परिवार काभा हो जाएगा तब मैं जरूर ही माऊंगी अपने बीबर के बच्चों को देखने के लिए—

—तेरी मसीम बीबी।

भीबर इन पत्र को जाने कितनी बार पढ़ गया। लेकिन उसकी सपम में बहुत कम जाया। पर वह यह जरूर समझ सवा कि उसकी बीबी सुधी नहीं है। और वह उस रात फिर बहुत बेर तक रोता रहा। बारंबार भन्दर स बाहर कूच जाना चाहता रहा। लेकिन क्या? यह वह नहीं सपम सवा।

बीबी के बिना भी दिन बीतते चल गये। एक और छोटा सा पत्र बम्बई में जाया था। भीबर को बुलाया गया था कि क्यों नहीं वह कुछ दिनों के लिए जा पाता? बीबी का मन भी बहुत जाएगा। जैसे पत्र में कोई नाम बाग नहीं थी

बलि अधिक ता यही बा कि कैसे बहु समुद्र छट घूमने जाती है। दूर समुद्र में बिदा होता हुआ मूर्यास्थि खीबर की याद कर जाता है। जगता है समुद्र में रोब सूर्य दिन भर की गाथा क पन्ने रखने शाम का जाता है और दिन दिन साय समुद्र गाथा के पन्ना स भर जाएगा उस दिन प्रसन्न होगा। सबका इतिहास समुद्र के तल में रखा जाता है ताकि हम बाद में मुकर न जाएं कि नहीं हमने ऐसा नहीं किया। छात्र और नागियल के गाछ समुद्री तेज हृषा में चुब सारे हिलन होते हैं। खीबर की दीदी बम्बई के कोलाहल पून समुद्री छट क बबाम क्रिपी एकान्त छ पर ही अधिक जाती जाती है। किन्तु यह कम ही हा पाठा है क्याकि प्रायः बाला साहब या और कोई साथ में होता है। उस अव एकान्त मिलता ही कहाँ है खीबर ? अब तो उसका सदा ही एक सामाजिक पल है। वह एक बड़े आबमी की पत्नी है जिसके नाते-रिश्तदार इस बम्बई में काफी हैं। और कभी यहाँ कभी नहीं तुम्हारी दीदी को खाना पड़ता है। जानते हो खीबर ! बम्बई बहुत ही बड़ा शहर है। जहाँ समुद्र है जहाज आते-जाते हैं ऊँचे-ऊँचे मकान हैं बड़ी सन्धी बीड़ी सड़कें हैं बड़े-बड़े पार्क हैं जिनमें डेर सारे फूल ही फूल हैं। भड़कीली पोशाकें वाले लोग हैं। बड़े-बड़े हाटक हैं। हाटक किसे कहते हैं जानते हो ? नहीं न तो तुम यहाँ कुछ जिनों के लिए क्यों नहीं पस आते ? होटलों में सोय खाने-पीने काबने धाराव बरैरा के लिए जाते हैं। बरियरी है माटरें हैं। खीबर ! इस बम्बई में क्या नहीं है ? हाँ यहाँ तुम तुम्हारी दीदी बहु तासबा के नुस्तकें के सपने बहु र्शदान बहु सुलापन नहीं है। और समवत बहु सवा क लिए भीत पया रे ! तु अभी कुछ नहीं समझ सकगा ; पिछले बिना कुछ समय के लिए ठेरे जीवा आये बें ) उनके साथ ठेरी दीदी भी बड़े-बड़े हाटकों में गयी थी। वे सब कुछ घात-पीते हैं। वैसे उनक लिए पानी भी नहीं है। वे अपने बूढ शरीर को किसी भी सांसारिक मल भोग से बचित नहीं रखत हैं। ठेरी दीदी को उम्होंने बेबरों स साथ रखा है। जानत हो बेबर पहन कर जब मैं उनक साथ बम्बी पर सवार हुकर सकदक निकलती हूँ तब साधारण गर-जारी ठेरी दीदी की जोर, यहाँ की जोर देघते ही रह जाते हैं। अपनातन जब सोने से मँझा हुआ हो तो जगता है कि पूरी पच्ची ही सोने म मँझी हुई है—भरे हाँ अभी किसी से कहना मत बेबिन वाला साहब हम लोगों के लिए एक नयी मी खाना चाहते हैं। संभवतः खल ही।

और दीदी का उसक बाद कोई पत्र नहीं आया। कुछ महिनो बाद कस्बे में सभी को सूचना आया की बाला साहब ने बड़ी बम्बई में छीछरा बिबाह कर

लिया । अब श्रीधर के लिए वीरी भी कमरा दूरसम्पन्न ध्वनि होती जा रही थी । वीरी ही उसके लिए घटना थी और अब वह निश्चय ही घटनाहीन था । उसके अपने परिवार में श्रीमोहन के विवाह की ख़बर भी त्रिममें उसकी रबि नहीं थी । वह मिला कला में था । इसके बाद वह नार्मल पाम करेगा ।



परीक्षा के बाद गमियों में श्रीमोहन का बिबाह हो गया। बरसों से श्रीधर कहीं बाहर नहीं गया था। भाई के बिबाह में वह पहली बार बेरगाड़ी में बैठकर यात्रा पर गया था। वह यात्रा उस मात्र तक याद है। एक अजीब बुझा हुआ उत्साह था उसमें। बीस कोस की गाड़ी की यात्रा थी। बहुत ही मिनसारे से लोग थक दिये थे। पठापी तहियाँ गमियों में सूखी-जबमूखी थी। कंस बेलों के लुर और गाड़ियों के पहिये 'किचिर किचिर' करते तहियों के सूखे पत्थरीले बसों को पार करते। जंगलों में अजीब सुनसानपन मिळता। भरबट, पेड़ भूरे-सूते पठार सब अजीब नीरबता में डूबे रहते बिंस बेलों की गलबंदियाँ या गाड़ीवालों की 'किचकिच्' ही शोड़ते। उसका भाई श्रीमोहन थोड़े पर सवार था। एक गाड़ी में रंडियाँ थीं सबकधी से साजिसे ये। एक गाड़ी में बाने बाल से तथा आठ गाड़ियों में बाघती। दो दिन की यात्रा के बाद वे छोम बबूवालों के घर पहुँचि ये। जहाँ बाघत सात दिन रुकी। किस प्रकार नाच-यात्रा खान-पान चळता रहा सब उसे ठीक-ठीक मात्र तक याद है। रंडियों का नाच देखने किस प्रकार आस-पास के बेहावी रात-रात भर बैठे रहते ये। गमियों की लुर लुकी रात में वे तीनों बेरपाएँ बड़े

हावभाव से उस घड़े तम्बू में भाषतीं । गैस की रोसनी में बैठे हुए भोग तन्मय हुए रहते । जब कोई रबी किसी के पास आकर बैठकर हावभाव करती दरकों में से बाबाओं जाने छगतीं त्रिसे बेस-सुनकर उसक मन में जाने कैसा होने लभता । जब कोई उसकी आर बेसकर आस मटका देती तो वह एक बम साब में लाल हो जाता । तभी पास में बैठे हुए कोई साहब बड़े मगन मन से उसकी पीठ पर भील जमाकर हो-हो कर हँस पड़ते ।

—बाबो बुसा रही है तुम्हें ।

और इस बोली पर सभी हँस पड़ते ।

वह बबराया सा बहाँ से उठ खड़ा होता । तम्बू, बाग और जहाते से निकल कर वह गर्मियों के उबले आकाश में सिसे तारों के नीचे अपनी अनेक अपूरी साँसें पूरी करता । वह तीन दिन में ही बबरा गया बा । जब पिता ने उसे दयाया कि वारात अमी चार दिन और स्नेनी तो वह देखासा हो आया । वह देखता कि दूसरे सारे वाराती सबेरे-सबेरे खूब मादरा कर मासिष करवाते फिर महामे किसी बावड़ी पर बस जाते । तब लागता । उसके बाद अमराई की गहरी छाया में पड़े अपने-अपने तम्बूओं में पीछे पहर तक सोते रहते । और फिर भंग-उडाई छनती । उपरास्य महामा जाता । नास्ता किया जाता । उसे लगा यहाँ से जाने की किसी को चिन्ता नहीं थी । सभी आनन्द मना रहे थे । केवल बही जाने क्यों अजीब अकसापन अनुभव करता रहा ।

जब वह बाउत से लौटा तब उसे मामूम हुआ कि वह मिडिल पास हो गया है यन्कि अच्छे नम्बरों स । वह आगे पढ़ने जाने की तैयारी में लग गया । उसे मामूल स्कूल के लिए सरकारी वृत्ति मिस सकती है जालकर वह पूरा न समाया क्योंकि पिता आगे पढ़ाने को तैयार नहीं थे ।

और यह यात्रा ही काल्पनिक पहली यात्रा थी जब कि वह पहली बार जायदे से रू पर खड़ा था और फिर कैसे बरत-बरते वह स्वासियर के मामूल स्कूल पहुँचा था । पर स पहली बार नितान्त स्वयं होकर रहना अपने में बहुत बड़ा अनुभव

बा जो उसका ब्यक्तित्व के तल तक में रस-बस गया । जैसे यह अनुभव बाद बा और इसी के लिए तो वह प्रतीक्षित बा । सबेरे से शाम तक अभ्ययन प्रसिलन बादि में बसे रह कर वह अन्य क्रियाय भी खूब पढ़ने लगा । स्वस्वपूष एकान्त में उसे बीबी के साथ बा सहजीवन स्पष्ट होने लगा । यहीं पर उसे मामूम हुआ कि बीबी विभवा हो गयी । अब वह विबाह बंधन्य बादि को उनके समस्त अर्थों में समझने लगा बा । उसने बीबी को एक पत्र भी लिखा ठीक उसी तरह जैसे कोई बड़ा अपने छोटे को लिखता है । उसे बीबी क बंधन्य से अत्यन्त खेद हुआ बा । वह जान रहा बा कि बीबी जैसे ब्यक्ति के लिए उनके पति जसा न बह ब्यक्ति न उसका बंधन और न उसका वातावरण कुछ भी तो समीचीन न बा । जो ब्यक्ति उससे बाबू में इतना बड़ा बा भला बीबी का पति कैसे बन सकता बा ?

लेकिन इसके बाद भी अनेक बातों की अभिव्यंजना बनी उसे नहीं जाती थी । और ऐसे ही समय पिता ने एक पत्र लिखकर सूचना दी कि इसी पौष में उसका विबाह तय कर दिया गया है सुदित्या लेकर चला आए । वह अस्वीकार करना चाहता बा कि नार्मल पास कर ल सब विबाह करेगा लेकिन वह ऐसा सब कुछ लिख न सका और एक दिन जलापास ही पर भी पहुँच गया और सौरों तक माथा कर विबाहित भी हो गया ।

इस महत्त्वपूर्ण घटना के बाद उसे जो याद पड़ता है वह यही कि वह नार्मल पास कर अपने इसी स्कूल में मास्टर हो गया और आज तक वह यहीं है । इस बीच युववती सुधीला और देववत का बरम हुआ । वे इस सब में निमित्त वे यह कहना मिथ्या होगा संदिन आसक्त भी नहीं कह जा सकते । इस बीच श्रीमाहन का परिवार बड़ा । छोटे भाई भी बल्कम का भी विबाह हुआ । पर की सम-स्यार्ण सब बाहरी प्राणियों के आचार बड़ाई ही । भाई कैस उद्यमीन होती बनी बयीं और भाभी ने किस प्रकार बाबा क कान भरने शुरू किये । सने कैस पट्टी बनी गयी । इस बीच उद्यमीन पिता और अधिक ठाकुर भी की सेवा में रहने

उने तथा स्वयं श्रीधर बाबू निष्काम भाव से गनीर ही होते चले गये । वे अपने चारों ओर उसी तरह देख पाते थे जैसे कोई नदी के बछ में से अपने चारों ओर को देखता है—कुछ भी साफ नहीं दिखता । जो दिखता है वह बड़ा हा स्तूल उबेबा फँसा-फँसा सा आकार हीन बिस्तार । वस यही श्रीधर बाबू का देवना था अपने परिवार वालों के बारे में । मात्र भी उनकी सबेदनाएँ किसी विगत में थीं वहाँ सोचते हुए होने पर उन्हें अजीब तृप्ति होती थी । दाकी जो सामने मयाप था वह अजीब ओछा बितुष्ण करने वाला लगता । इन बीच वाला साहब की धार्य हत्या के समय श्रीधर बाबू सोरा गये हुए थे । और उस अवसर पर दीदी अबन्व बापी थीं लेकिन ठव श्रीधर बाबू न थे और इस प्रकार विवाह के बाद से ही दीदी को कमी देखने का अवसर ही नहीं मिला । केवल यही मान्युम हा सना कि जब वे मनासारिण होकर काशीबाम कर रही हैं । इससे अधिक का व्यवहार उनका बीच रह ही नहीं गया था ।

समय बीतता चला गया । श्रीधर बाबू अबिकाधिक उपासीन हाये चल गये । बस्कि नीरस स भी चलने लगे थे । केवल वेमेन मञ्जुमन्जर और मारुपण बाबू को छोड़ उनका कोई भीयविक्रम मित्र था ही नहीं । इस बीच उन्होंने इतिहास लिखा । और वे अपने बिभाग की प्रतिबिम्बा क लिए चिन्तित थे । यद्यपि लोगों का क्याक था कि बात बानी-गयी हो गयी है । लेकिन श्रीधर बाबू का क्याक था कि बात ऐसी ही बानी-गयी नहीं होगी ।

बाबूकम निबाली की जाठ दिन की उदित्यनी थीं । श्रीधर बाबू ने इस बीच अपने बारे कामज-पल्लव सहज कर गये । पुगनों की भूल शाड़ी । गये-मय वस्ते बनाकर पुगनी बिठावों की सहृदय । पुगनी बातों का मोट किया और उन्हें ठीक स केविल लगा कर गया गया । बीदा की तथा बाल्य साहब की दा हुई प्रत्यक पुस्तक को पढ़ा गया और उनके साथ की स्मृति में डूबा गया । सब में जैसे कोई मजाठ प्रतीसा थी और जिस व मनाज नर स बिये कर जा रहे थे ।

और खपत्या विभाग की वार से बिनामी की छुट्टियों के ठीक बाव सूचना  
 आयी कि यदि श्रीधर टाकर इतिहास में परिवर्तन नहीं करले तो उन्हें नौकरी  
 से त्यागपत्र देने को कह दिया जाए। गाइगिल साहब ने विभाग का पत्र दिखाया  
 और फिर समझाया कि बर्मी भी मौका है। लेकिन अत्यन्त निस्पृह भाव से श्रीधर  
 बाबू न पत्र पढ़ कर पूछा

—तो त्यागपत्र कम दे बूँ ? आज ही ?

और स्कूल में बात फैल गयी कि श्रीधर बाबू त्यागपत्र दे रहे हैं। बात की बात  
 में हज़ माल्टर साहब के कमरे के सामने बिदासियों की भीड़ जमा हो गयी।  
 झड़के चारों ओर से जानझांक कर रहे थे। बरामदे में अजीब धुन-बुटा बजा  
 बजा भा गार हुआ रहा था। याइमिल साहब अपने कमरे से बाहर आये और उन्हें  
 इतककर झड़के गिरले-पड़ते भावत लये। इनमें से दूसरे अम्पापक भी जा गये।  
 कमरे में एक अजीब सन्नाह छा था। बिनाप का पत्र टेबल पर पड़ा हुआ था बिसे  
 बागी-बागी से सब सोन पड़कर रख देने से और सिर नीचा कर सेने। सायब  
 कोई भी पूरी साम नहीं से पा रहा था।

—श्रीधर बाबू ! आप जानते ही हैं कि आपको मैं पुत्र की तरह स्नेह करता हूँ ?

मैं आपको परामर्श दूंगा कि ऐसी ज़िद नहीं करनी चाहिए । बात छोटी सी है, झुक जाना चाहिए ।

साइगिल साहब की बात पर फ़र्ट मास्टर मुषी राम इकबाल सहाय बोले जो कि करीब सत्तर वर्ष के होंगे । जिन्होंने उर्दू में स्वर्गीय श्रीमंत महाराज की धान में कमी गबल लिखी थी ।

—जी हाँ साहब ! जमाना देस के नाम करता चाहिए । अब श्रीधर बाबू तो सुद काफ़ी बहने वाले और समझदार घरेलू हैं । इसमें क्या रखा है बड़े-बड़े प्रायों को अपने कलामों और दीवानों में से असाधारण तक काटने और बदलने पड़े हैं । जमाने की भास ही दूसरी होती है जनाब !

और दूसरे सभी ज़म्ह्यापकों में 'जी हाँ इसमें क्या शक है' की टीप कयायी ।

—तो आप जब कहें मैं अपना त्यागपत्र दे दूँ ।

और श्रीधर बाबू को उठवा देखकर सब सकपका गये ।

तो क्या सब ही श्रीधर बाबू त्यागपत्र दे ही देंगे ?

—बैसी आपकी मर्जी । जिस दिन बेना चाहें दे दीजिए ।

और सब तिर मन से उठ गये ।

दिल्ली का साहस श्रीधर बाबू से बातें करने को न हुआ । सही तो यह था कि ये स्वयं ही से न बात कर रहे थे न सोच रहे थे । केवल यही लग रहा था कि कब कब वे त्यागपत्र दे देंगे उसके बाद क्या होगा ? कौन जाने ? वे स्वयं अनिर्णीत ये मन के दिल्ली अतल में । और वे उस भरमसक उभरने न देना चाहते थे । भाव बँ पर सब पहुँचना चाहते थे जब ममी सी जाएँ ताकि किसी स सामना न हूँ । अच्छा हो कि सरो भी सी गयी हो । मान लो वह जाग भी रही हूँ तो कम स कम माँ और पिताजी अवश्य ही साते मिलें । और वे स्वप्न से सीधे येमेन बाबू के यहाँ पहुँचें ।

येमेन बाबू लिख की भाँति अपने उगी मान में कुसियाँ बिछाये बैठ थे । नवम्बर की सध्या थी । न अर्धरात्रि न अर्धरात्रि ठीकी । श्रीधर बाबू को देखकर वे पिस उठे

—आइए श्रीधर बाबू ! बड़े दिना में दिलायी विये । विबाही भर नहीं दिखे,  
कहाँ से ?

—मसल में भर पर ही साछ भर की सफाई-बराई रूठी है न ?

—नागयण बाबू झूट जाये ?

—क्यों कहीं गये से क्या ?

—आपको नहीं मामूम ? आप भी अभीव है ।

—मसल में पेमेन बाबू बाध यह है कि मैं सूकरवृत्ति का भादनी हूँ न ।

वीर से हँस विये ।

—क्या मठसब आपका ?

—सूकरवृत्ति नहीं जालते आप ? अरे नाक की सीध में काम करने का बाही  
हूँ बम कहीं लग गया फिर बूसरा कुछ भाव ही नहीं रूठा ।

—ओह यह बाध है ?

वीर बागों हँस पड़े ।

—यह तो आतियों का लम्ब है श्रीधर बाबू !

—रुकिन जानी नहीं हूँ यह निश्चय समझें । तो मारायण बाबू

—तुं से मदन के लिए उख्येन जाने वाले से दमहरे पर ही ।

—क्यों उतने मदन को क्या हुआ ?

—हुआ कुछ नहीं यह भागे पड़ने के लिए विहायत जाने के लिए कहता है ।

—यह तो बहुत लच्छा है । तो मारायण बाबू को क्या भायति है ?

—जेनिन बड़े भाई माहब कहते हैं कि समुद्र पार जाने से घर्मभ्रष्ट हो जाएगा ।

तनी दूरी पर नागयण बाबू की फिटन बिलकामी थी ।

—मा यह भी जा सये ।

श्रीधर बाब की बाध सुनकर पेमेन ने देखा कि मारायण बाबू जा रहे हैं ।

—अरे जो इतिहास बाबा जयमेका तो दूर हा सया न ।

पेमेन बाबू बाध कहते हुए फिटन की ओर दल रहे से ।

—कहाँ बाब फिर पन भाया है ?

—क्या ?

धीर तनी फिटन भाकर रुकी । आठे ही बोसे

—अरे तुम यहाँ हो ? मैं तो तुम्हारे यहाँ क्या बा ।

—क्यों ?

—मा इसम पूछो कि मैं क्यों गया या इगके यहाँ ।

धीर कुर्सी पर बैठे हुए बाल ।

—मुझे तो लगता है कि एक न एक चिन्ता बनी ही रखी । मर्दान का कुछ तय करके आज ही उम्मीद से आया कि मालूम हुआ कि ये हमसे क्या कर रहे हैं ।

—क्यों धीर बाबू ! मान न करो छात्र रहे हैं ?

प्येन में सादर्य पूछा ।

—धीर क्या कहें ?

धीर ने विस्मय निरीह भाव में कहा ।

—देखो धीर । मैंने उन समय तुम पर जोर देना ठीक नहीं समझा लेकिन अब साबित हो कि मौकरी छाड़ दाने का पुर्नना मदिरो की पूजा में मैं नहीं समझता कि तुम्हारा पेट भर सकगा । व्यापार मुम करने से रहे । दूनरी मर-कारी मौकरी मिसले में रही । सब क्या कराले !

नारायण बाबू बहुत गंभीर हाकर बाल रहे थे ।

—मैं स्वयं भी नहीं जानता कि क्या होगा ।

—अपने भाइयों को देख ही रहे हो । धीरस्तम पला ही गया । धीमात्रुन तो अब बरक मकान भी मने की सोच रहे हैं । फिर तुम्हारा क्या होगा ?

—मैं नहीं कहता हूँ कि मेरा कुछ होगा ही ।

—यह सब वक्तव्य है तुम्हारी । न जाने तुम कौन-कौन सी किताबें पढ़ने रहते हो दिन रात कि तुम्हारा विमान पता नहीं क्यों व्यावहारिक बातें नहीं सोच पाता ? बेचारी बहू और बच्चा का क्या होगा ?

नारायण बाबू किञ्चित् आश्चर्य में आ गये ।

—सब धीर बाबू ! बात तो बहुत गंभीर है ।

प्येन उठकर मन्दर पाठे हुए बोले । अब वे अन्दर चले गये तो नारायण बाबू बोले

—धीर ! कोई चिन्ता नहीं अगर तुम मज ही छात्रता चाहते हो लेकिन यह पता है कि तुम सरकार की आज्ञा में हमेशा के लिए चुन जाओगे । पार्सि साथ नहीं देगा । अपने घर की स्थिति देता । मैं पूछता हूँ अब तुम्हें मज-कारी आया ? यह आदर्शवाद तुम्हें अब से मज गया धीर ? या तुम्हारी बीमा ने अब तुम्हें इतना कुछ चिन्ताया-महाया था तो कुछ बुनियाती नी मिला गयी होती । हाँ जी को मज क्या सिगामी ? बड़े आदर्श की लक्ष्मी थी । उनका भी आदर्शवाद उस जाने क्या-करा मिया रहा है ।



तब तक पेमेन लीट आये ।

बीर सहसा खीपर उठे । नारायण बाबू भी पेमेन के साथ कुछ व्यक्ति बचस्य हुए लेकिन वे मापवस्तु ही रहे । पेमेन बोले

—सारे कहीं पक बिने ?

—बर जाना चाहता हूँ ।

—लेकिन चाय आ रही है ।

—नहीं चाऊंगा । चाय क लिए समा करें ।

—क्यों मेरी बात का कुछ मान गये खीपर ?

नारायण बाबू ने कुछ छिन्न हाकर पूछा ।

—नहीं नारायण बाबू ! आपकी बात का कुछ इस अर्थ में तो नहीं मान सकता ।

—ता फिर खीपर को जाने दो पेमेन ! मैं चाहता हूँ कि खीपर सोचे और तब कोई व्यावहारिक कदम उठावे । क्या पाड़ी मेरू ?

—नहीं ।

और खीपर दूर तक दिक्कती सड़क पर छाँड के बूँबले में दूर-दूर तक दिक्कत रहा ।

—क्या बात थी नारायण बाबू ?

नीकर तब तक चाय ले आया ।

—पेमेन ! बाला साहब की सड़की इन्तु को जानते हो न ?

—हाँ हाँ खीपर बाबू तो उन्हें बीरी मानत रहे हैं ।

—हाँ जमी की बात था पयो । उशी ने इस व्यक्ति को स्वप्नमीक बना दिया ।

ये सारे आदर्श सिद्धान्त समाज अब इन्तु की सहायता नहीं कर पाये तब समाज इस बेचारे खीपर की क्या हाकत करेगा इस तरह नहीं समझता है ।

तास्मताय बिबेकानन्द स नीचे बात ही नहीं करता है मेरा खेर । खेपसपीपर के मानका के बावय बाकता है और पूछिए, तो हजरत मास्ती करते फिरते हैं ।

मैं आकाशता नहीं कर रहा हूँ पेमेन ! लेकिन मुझे यह अपना छोटा भाई सा जगता है । इसके लिए मुझे दर्द है पेमेन ! लेकिन अभी यह नहीं समझता कि कब क्या करेगा । तभी बच्चों का बाप बन गया लेकिन अभी खुद एकदम बच्चों की तरह व्यवहार करता है ।

दुरतीनी मंदिरों की पूजा की जो माफी की जमीन है उसे तिरस्कार साहब खीमोहन बाबू ने हकप रणी है । मकान की हाकन बीती है उसे हम-जाप देन ही रहे हैं उसमें

वार्ता भाई अपना-अपना हिम्मा बेचकर अलग मकान

इन साहबबाने से पूछा कि कल से तुम्हारी बीबी और तीनों बच्चे क्या खाएँगे ? मात लो माता-पिता सभी तो बेचारे कुछ कमलत-ममलत हैं, कल से उनका क्या होगा ? यानों भाई बटे पर पेगाब कर दें तो मेरा नाम पसट देता । और ये चप ह नौकरी छाड़ने ।

—नारायण बाबू सप ही बहुत रूँध में थे ।

नारायण बाबू सपा पमन से असग होकर भीमर बाबू ताकाव की ओर निकल आये । ससि कनी की डल खुकी थी । स्वय उनक मन में हल्के-हल्के बनेक सका-बुसाकारें भिरलं समी थी । अब तक घर-भर के लोय धान मये होंगे कि मैं त्यागपत्र बे रहा हूँ । मैं ने क्या सोचा होगा ? सरो ने इस समाचार को मूना होमा कि नहीं ? अबस्य ही भाभी ने अयन में सखे होकर लूब रख से-सकर बातें मुनायी होंगी । पिता भी तो सभी मंशिर में ही होंगे । वहाँ किसी ने अबस्य ही यह खबर मुना दी होगी । बाबा ने मैं को यह समाचार अवम्य ही यह कहकर मुनाया हागा कि मैं तो पहल ही जानता था इसीलिये इन मगडे में कभी पड़ा ही नहीं । बे इसी उमड़बुन में घाट पर बैठे रहूँ । ताकाव के बल में सबकादा आकानन प्रतिच्छामित था । सामने के धिन्नर पर सध्यातारा उम आया था । दूर मंशिरों के दल-मशियाक बोस रहूँ थे । दूर-दूर तक घाट मनमान थे । बाताबरन में हल्की लुनकी थी । ताकाव के पारों ओर के गाछों से बंधेरा धीरे धीरे बिर रहा था । अबबीर्मे पानी पर उब रही थीं । सौटे हुए पन्नी पॉसलों में पस फड़फड़ावे बैठ रहे थे । थिमपाशबे तेजी से मँडराने लयी थी । हवा एकदम गान्ठ थी । बीज बाकी छत्री मडिम पड़ती जा रही थी । पानी में वहाँ वहाँ कम्पन भर भी बाकी सब पिर था । एक अजीब सपाटे में भीमर बाबू बैठे थे । बाहर का यह निजन अस अपने अदर भी पँसटा जा रहा था । जिस सोचने के लिये वे यहाँ आये थे वह सोचना ही बैठे लो गया था । वह स्वय बसे इस निजन एकाकीपन के एक मूने मण्ड भर हों । इस समस्त बीरानेपन को जो भी वहाँ कोई सोच रहा हो सोचे कम से कम

धीबरे बाबू नहीं सींच रहे थे। वस्त्रिक ने इतने बिराट निर्जन में कभी नहीं सींच सकते थे। वे एक खासी बर्तन की तरह कम रहे थे जिस कोई दिवाओं के पार मक ही बना रहा हो वे चाहे तप रहे हों लेकिन उन तक न अम्बर, न बाहर कोई स्वर नहीं आ रहा था।

जब सब खीट खाते हैं तब भी यहाँ बहुत कुछ पीछे छूट जाता है। इतन मारा पूरा का पूरा दुष्प्रभाव रहता है। इन्हें कन्ही नहीं आना होता है। कना धक्कहीन सम्बन्ध इस पूरे व्यापार में है। एक हम हैं कि प्रत्येक पक्ष में एक-एक बूँद रिसत है। हम स्मृतियों का फर्क अपने जाने विछाड़ करते हैं और उम पर रक्त चम्पत है। नया नया और नया—हमारे पैरों के नीचे जाने कहीं स चिपटा हुआ चला आता है और बिछटा जाता है। हम अनेक बार ऐसे अपरिचित या अज्ञान नूतन क साथ नहीं चलना चाहते हैं लेकिन यह समझ नहीं होता। यहाँ इहराता कुछ नहीं है हमें सदा आनास होता है। हमस प्रत्येक क्षण हमारा स्वत्व ही जाने कहीं किसलिए, किसके लिए टूट रहा होता है। कौन जाने कब क्या हा। कब त्यागपत्र देने क बाब कौन आता है क्या होगा ? समय है यहाँ रहना न हा। तब क्या होगा ? क्या कहीं बाहर आया जाएगा ? क्या पता ? सरो गुजबती मुसीबा बचपठ का क्या होगा ? नहीं यह नहीं हा सकता कि ये लोग अभाव हा जाएँ। लेकिन माँ हैं ही। पिता चाहे अनासकत हों लेकिन माँ उन्हें अभी भी संभरों स घेरे हुए हैं। इस विपमता से कैसे निकला जाएगा ? या तो यही टूट कर रहे जाना होगा या फिर 'बिनुकादच पुष्पी' को एक बार बेया तो जाए। क्या होगा ? मैं स्वयं के लिए कभी चिन्तित नहीं हो सकता। रही सरा और बच्चों की बात—तो क्या ये लौप कुछ दिन नी मेरे बिना नहीं रहे सकते ? क्या कोई, कुछ सौधों के लिए इतना आवश्यक होता है ? —नहीं तो बिना सिद्धांत के जब राजबंस राज्य यशोपरा रहस्य परिवार सभी रहे सके ता धीबरे तो कोई ऐसी सता नहीं है। और फिर कुछ दिनों में जब सब ठीक हा जाएगा तब ये लोग भी जा सकेंगे। लेकिन बारम में ही सब कुछ यथा दने पर कब किसने किसको जान दिया है ? मोह के बन्धन तो स्मृतियों में छानते हैं तब मला मुसी बाँबां कोई किसी को जाने से सकता है ? —तो फिर किसी को नहीं बसाया जाए ? क्या ??—कि मैं यहाँ स अपन दुस्वार्थ और भ्राम्य दंतों की पगीधा के लिए जा रहा हूँ। कहीं ? मला अभी स इसका निर्णय कैसे किया जा सकता है ?—ता तो सरो या माँ—किसी को भी नहीं कहा जाएगा ?

और तनी उन्होंने दत्ता कि भाकाग नें एकान्न ठण्ड तारे ही तारे भर गये हैं सदियां गुड हा गयी थीं । दूर दूर तक न दण्ड म न्वर, न पय न रूप कुछ नहीं था । बसे सब ठंडे अँधेरे में जम गये हों । जब स धनी निकाल कर देखने की कासिदा की लेकिन वे कुछ पना न चसा सक । मनवत दम बजे रह हागे । वे सहसा यह मूछ हुए थ कि कुछ देर पहलू उन्होंने जीवन का महत्त्व पूर्ण निगम किया था । जो सब ही यदि पूरा हा जाता है ता न्यय वे ही नहीं जानत कि करु क्या हागा । और यह नी कि कुछ उनका उनका परिवार का भी क्या होमा । बस लीटते में उन्हें यही लग रहा था कि धपरत उन्हें चारों ओर स धकेलता बर की ओर ले जा रहा था । कहीं वे नी उस सब नें है यह बिशेष न जानत हुए भी वे बठ रह थे ।

ठप्पा कबीर माम्बी बापय बळ रहा था । जाड़ों की भिनसार । आकास में तारे ठराने सम रहे हैं । मँधेरा छोटने में काफ़ी ढेर थी । रेल की पटरियों से म्मी सड़क भी इस बेसा सुनसान थी । श्रीपर बाबू इस सुनसान बेसा बकेसे बसे जा रहे थे । कम रात सासाब पर निर्णय किया था कि वे बिना और कुछ बात का बिचार किये यह गाँवरी छोड़ देगे । सरो को बँध और कितना कुछ बताया जाएगा इस बारे में तब वे स्पष्ट नहीं थे । लेकिन सासाब के धार बब वे पर पहुँचे समसय सभी सो चुके थे । बरबाजे की कम की घोड़ी आवाज होते ही माँ ने पूछा

—कौन ? सिरीपर ?

—हाँ, तुम सोची नहीं सभी ?

—बब सीना किसके भाग में रहा रे ।

और श्रीपर बाबू माँ की इस बीतरययिता का कारण धीरल ही समझ गये । वे इस धन को इस बिषय को टाक जाना चाहते थे क्योंकि क्यठा था माँ जैसे मरी बैठी थीं । वे जान गये कि यदि बातचीत शुरू कर दी तो फिर उसके

बेग में उनके निर्भय बह जायेंगे। माँ के इस वाक्य के पीछ ओ दर्र जा मारम्भ छिपा हुआ था उसका सामना श्रीधर बाबू किसी भी कीमत पर नहीं करना चाहते थे। उमर माँ ने भी प्रतीक्षा की कि रोज की भाँति सबका पास आकर बैठेगा। वे धीरे-धीरे पूछेंगी कि क्यों रे, स्तीफा तो दे देगा लेकिन बन्धु स ही क्या हामा? हमारी भिन्ता जाने भी दे लेकिन तेरे ही बाल-बच्चा का क्या होया? तू कहीं यह सोचता हो कि पूजा की माफ़ी वाली जमीन में से कुछ मिल सकता तो बन्धु बहुत मूक में हो। जब श्रीमोहन अपनी सगी माँ को उस जमीन की पैदावार की एक सर बुझार काकर नहीं देता है वह मछा उसमें से माइयों को हिस्सा देया? अरे तुम लोगों की कौन कह-इमने दूसरे भाईबदो की भी जमीन हकप रखी है। सिरस्तदार क्या हुआ उसे मादिरगाह हो गया। श्रीबल्लभ को बोका मिला रवा है बस बाकी तुझे या दूसरों को वह क्या समझता है। देव बेटा अस्वबात्री में कोई नाशानी न कर बैठना।—और सनीचांस से माँ श्रीधर की प्रतीक्षा करती रहीं कि वह आये तो पूछें कि क्या सच ही वह त्यागपत्र दे रहा है? क्योंकि कहीं उन्हें विश्वास था कि श्रीधर ऐसा सब कुछ करने के पूर्व कम से कम अपनी माँ से बकर पूछेगा।

साँस से रात पड़ी। रात से ठेर रात भी हुई लेकिन श्रीधर न आया। रोज की भाँति बर के सारे लोग छीट-छीट कर जा गये। खाना खा लिया गया। रोज की कहा-सुनी भी नहीं हो गयी। पति उसी निश्चिन्त भाव से बेंचबई पर बैठ कर पाठ करते रहे। बदलाब यही था कि रोज की भाँति बर के दूसरे लोग खासकर श्रीमोहन और उसकी बहू दोनों आज अपने कमरे में ही रहे। श्रीमोहन का खाना भी आज उसकी बहू कमरे में ही ले गयी। कोई किसी से नहीं बोला और खासकर श्रीधर की बहू स ता श्रीमोहन के बच्चे तक दूर न ताक-साक करते रहे लेकिन बोले नहीं। आज बच्चों ने काकीमा से खाना नहीं माँया बल्कि उनकी माँ ने ही आकर बिना सरो से कुछ कहे बच्चों की चास्मियाँ लगा रीं और अपने सामने ही उन्हें लिखा दिया गया। बूँहें के पास सरो अपनी घोड़ी में सारे बंभों को छुपाये सिर मुकाये बैठी रहीं। वह यह भी नहीं सोच पा रहीं थी कि आज यह अन होनी कैसे और क्यों हो रही है? माँ के साथ ही आज बड़ी बहू ने खाना खा लिया लेकिन न साथ न बहू दोनों आपस में कोई किसी स नहीं बोला। बेबस बर्तनों के ढँकने तथा खोकने का पीतनी स्वर या कड़कल-बम्मब का भरा-भरा स्वर ही होता रहा। सास और जेठानी के जाने के बाद हाँवाईकी कर सरो

अर्धन माँज कर अपने कमरे छोट आयी । बहू जान चुकी थी कि पति ने त्यागपत्र दे दिया होगा । उस बताने की कोई आवश्यकता भी उन्हें नहीं होगी । वह व्यस्यष्ट हो रामायण खोस पति की प्रतीक्षा करती रही ।

माँ न देना कि धीघर, आज रोज की माँठि बैठना नहीं चाह रहा है । वे इसी असमजस में रही कि धीघर से कहें कि बैठ जा कुछ बातें करें । लेकिन वे यही सोचती रहीं कि आज नहीं बल्क सबेरे बातें कर सेंगे । संनभ है आज बक गया होगा परेधान भी होगा । बहू ने भी अभी नहीं सामा है ।

—जा आमा सा से । इसी दर-देर में तुम सोग जाते हो । कभी यह नहीं सोचते कि तुम्हारे कारण किसी दूसरे को भी भूलों रहना पड़ता है ।

—मैंने तो हजार बार कह दिया कि मरे किए कोई मूला न बैठे ।

—भरे तो तुम लोगों ने कह दिया और हम लोगों ने मान लिया है न ? बड़ा जामा है । यही तो है । तुम सोच कभी हम लोगों को नहीं समझ सकते ।

धीर धीघर बाबू अपने कमरे पहुँचे ।

बहा पत्नी रामायण पढ़ते हुए रोती जा रही थी । धीघर बाबू चींके ।

—क्या हुआ सरो ?

सहसा पति को ब्रूमिणी पर लड़ा बेल सरो ने आँसू पाँछ टाक और पड़ी हो गयी ।

—कूठ नहीं ।

धीर बड़कर उतका कोट लेकर बूँटी पर टाँगने लगी । धीघर बाबू जाकर मोरी मर हाथ-मूँह धोने लगे । उन्होंने इस बीच वह स्वरक देख सिमा जिसे पढ़कर रास रा रही थी । सीता के जामूपनों को दिखा-दिखा कर राम छम्मक से पूछ रहे थे कि क्या ये सीता के ही हैं ? और सदमल केवल पत्रानूपनों को ही पहचान पाते हैं क्योंकि राज प्रणाम करने के लिए वे उनके पैरों का ही देखते थे । इस स्वरक का लकर सरो जाने कितनी बार साम्य प्रत्येक बार रोपी है । धीघर बाबू सरो की इस भावुकता को कभी नहीं समझ पाये हैं । वे उससे इस बारे में कभी बहस नहीं कर पाते हैं । वह राम या सीता के किसी प्रेम पर कोई खस्य मत मानने को तैयार ही नहीं थी । रामायण का वह आचम्य न जाने कितनी बार पढ़ चुकी थी । लेकिन वह हर बार पृष्ठने पर प्रत्येक स्वरक के मवे-मवे मदर्मे बर्षं छाया करती थी । अनेक बार उसका मत या तर्क इतना ह्यस्वास्पर हुआ करता था कि बस । जैसे यही कि प्रत्येक धर्मज्ञ के जीवन में बतवास याचना प्रिय-भिरह आदि हाते ही हैं । इस प्रकार प्रत्येक के जीवन में

रामायण अपने तरीके से निम्न सम्पन्न हाती है। अन्य दिन तो श्रीधर बाबू हमें प्रिया करत थे लेकिन आज वे हमें न मके। आज प्रिया की बातें जैसे बुर से ब्रात्री हुईं पुन मुनायी पड़ रही थीं। और यह भी कि क्या मैं सब नहीं कहती थी कि प्रत्यक्ष घमण्ड के जीवन में रामायण का बनबाम प्रिया-बिरह होता हा है ? वाम्प्रीति और तुलसी जैसे सग क्या झूठ लिख गये हैं ? इन्हीं दिनों के लिए ठाये अन्य सिन्ने गये हैं।—श्रीधर बाबू जीक उठे। सरा कना की नीने रात्रीधर जा चुकी थी। समबत पामी कयाकर प्रतीक्षा नी कर रही होपी।

खाते समय नी सरा यह तोलती रही कि उसने जो सुना है क्या वह उठना ही गंभीर है ? क्या ये उसके बारे में उसे कुछ बताना उचित नहीं समतते ?— जबकि श्रीधर बाबू साचरत रहे कि क्या पता अब इस घर में इस प्रकार कब ऐसे ही बीककर भाजन हो। सरो हो सकती है वे हो सकते हैं भोजन भी हो सकता है लेकिन क्या यह घर भी हो सकता है ? आज जिन संदनों में वे हसी रान में खाना खा रहे हैं समबत यह सब कुछ दुहराया नहीं जा सकता। कक क्या हो यह स्वयं श्रीधर बाबू ही कितना जानते हैं ??

पति के पान के बाद सग ने ककक मुँह जूना करने के लिए ही बो-एक गम्मे पानी के माय जिमी तरह उतारे और उठ गयी। आज मंग प्रंग दुख रहा था। मबर म पर का माया काम-काज तो था ही उनके बाद दाँते धीनी गयी थीं। पूरा दिन अकल यह सब करत उरते वह इस समय बुर हो गयी थी। गाय ही मन में जान केमी बेबैनी थी। रू-रू वह चीक उठती थी। जैम मुदुर में किमी के पीरों के मारी ककल की आहट हा और कोई बीग-बीग रा रहा हा। बचपन में वह अपने पिता के माय मीरों में एक बार आगरा-फगहुर-मीरती आदि देगने गयी थी। उन ऊँचे मूम्बरों में सेटी हुई



मजारों जिनके सिरहाने बरसती हुईं मीमबलियाँ उसे बढ़ी अजीब सगी थीं। जाने कितनी बार दोपहरी में वह काम करते-करते थक-थक जाती थीर वे मजार वाली मामबलियाँ जैसे उन मजारों की ज़ाँबें बन जातीं। वे बरसती ज़ाँबें ऊपर के गुम्बद, चारों ओर की दीवार, सबको जैसे काँप-काँप कर बेबती होतीं। एक अजीब सघाटे में अबोसती हुईं ज़ाँबें सरो को जैसे जलते हुए प्रायः घेर लेतीं। आज भी वे ही ज़ाँबें उस मजार से निकल कर उन ऊँचे गुम्बदों में जाने कहीं भारी कब्रों को रबती हुईं, अँबेरी-अँबेरी बक रही थीं। सरो ने राशीबर की झँसरी बन्द की। कन्धे बापी तो बेसा कि पति बरबों के बीच में सेटे हुए उन पर हाथ फेरते हुए मौन छत टाक रहे हैं। उसका हृदय ओर-ओर से भड़कने लगा। आज पति निरधम ही अजीब से लगे। मजा वह पतिमुस को बिहस कैसे करे? कठोर ही सोच सकती थी। बसिक ऐसा कठार बिससे मय लगता है। जब असम्भुक्त का भाव कित्ती बड़ संकल्प के साथ किसी मुस पर आ जाए, तो मुस हमारे माँहों को बिहस ही लगता है।

—क्या बात है? बहुत बक गये? साइए पैर टाक दूँ।

और अपसकृती मौन तोड़ते हुए वह पति के पैरों के पास बैठ गयी। पस्कू से उँचे हाथ पोंछ कर उसने पर बाबने के लिए हाथ बढ़ाया।

—सरो तुम जानती हो मुझे यह पैर बबबाना सुहावा नहीं है। तुम स्वयं बहुत थकी हो। मैं जानता हूँ तुम कितनी बरबती हो। तारी पूष्पी होती है क्योंकि वह प्रजनन की पीड़ा की अन्दर से सेकर बहने के मार को बाहर तक बाघन्त सहती है। सरो तुम पूष्पी हो।

और सरो ने बेसा कि पति को प्रायः कम ही बाँझ करते रहे हैं, आज बोलने को हा आये हैं। कम बोलते हैं। केकिन कैसे मीठा कैसे समझा हुआ बोलते हैं जैसे सुनने वाले का ही बोलना बोल रहे हों। आज सहसा उसे पति की बेह से मोह हो आया। इस मुस को बेह को कितने पास से तथा अपने अन्दर भी अनुभव किया है।

दीप का ठण्डा आसीन बीवारों पर सोनाका किरा हुआ था। बीच-बीच में बरबे किराफों में कुनमुना उल्ले वे। उसे पति के तन में उनकी ज़ाँबें सदा सुहायी हैं। वे सदा ऐस देखती हैं जैसे कुछ नहीं देखतीं। उनके लिए कहीं कुछ नहीं है। सब पारदर्शी है।

—सरो! शीता को सबसे ज्यादा पीड़ा राबण ने दी था राम ने?

—देखिए आप जानते हैं कि मैं रामायण के प्रति रुक नहीं करती। वह मेरी बच्चा है।

—मैं समझता हूँ सरो ! कि राम ने सीता को वा पीड़ा की या अपमान किया उसके कारण ही वे पृथ्वी में समा गयीं।

—यदि अग्नि परीक्षा की बात कर रहे हैं तो यह उनकी आपसी बात थी। पत्नी पर पति का अधिकार होता ही है। और फिर यह परीक्षा वा प्रत्येक पत्नी को अपने-अपने तरीके से देनी ही होती है।

—तो तुम मानती हो कि पति अपनी पत्नी को अग्नि परीक्षित करवा ही है ?

✓ पत्नी अपने पति और बच्चों के लिए क्या नहीं कर सकती ? बाबा मैं आपसे बहुत नहीं करती और वह भी इसी रात में।

—सब ही बहुत रात हो गयी। अच्छा अब सो जाओ। वो—स्वायम्भू दे रहा हूँ।

—मुझे मालूम है।

—तुम्हें कुछ नहीं कहना ?

—मैं क्या आपसे अलग हूँ ?

—इतना किसी पर भी निर्भर नहीं होना चाहिए सरो। सबकी अपनी सत्ता होती है। इसलिए नियति भी अलग-अलग होती है। एक सीमा के बाद सब निदान्त एकाकी होते हैं सरो।

—आप अपने को एकाकी मानते हैं, मानें। मैं मरना अपने चारों ओर को कैसे वे बड़ी बड़ी बातें कह कर अस्वीकार सकती हूँ ? मेरे लिए तो मैं सब भी उतने ही मेरे हूँ जितनी कि मैं अपनी। मैं आपकी बातें कभी नहीं समझ पाती। मेरे कारण यदि आपको चिन्ता या दुःखिता हो कि स्वायम्भू दूँ या न दूँ तो आप कुछ न सोचें। वैसे आपको सुहाये बीमा ही कीजिए। नौकरी ही तो है माय्य तो नहीं है न ?

—हाँ सुनो ! बहुत सबेरे ही मैं बीबनाब चला जाऊँगा नाचयण बाबू भी था रहे हैं।

और वे उठकर अपनी बैठक में निजक आये। वो एक चिह्नित्यं कितनी। और फिर सबेरे ही उठकर अपने बिसे में वो एक अकरी चीजें रख लीं। उपरान्त आकर सो गये।

संभवत राठ के दो बच्चे होंगे कि वे उठ गये। कोने के आले में चिमनी बहुत ही मदी जल रही थी। वे हील से उठे। तीनों बच्चों के साथ सरो गहरी नींद में सो रही थी। सिर के नीचे हाथ बसा हुआ था। गालों की हड्डियाँ वसमय ही दिखने लगी थीं। बिबाह की पहली रात यही मुख कितना कोमल चिह्नता तथा निरीह था। बर्न भी तपे हुए साने का था। प्यार में शुरू-शुरू के दिनों वे उसे 'कचन' भी कहा करते थे। बर्न गाल पर गुलने की एक हरी चिन्ती थी जो उस सोते मुख पर उस समय सोयी लग रही थी। मन में विकल्प चिन्ता जा रहा था। मोर होते-होते तक वे इस पत्नीमुख तथा बच्चों के सोये हुए मुखों से जाने कितनी दूर और कब तक के लिए चले जाएँगे—कौन जानता है। भिनसार में सोये हुए वे निरीह मुख सबेरे हाहाकार से भर जाएँगे। सरो का क्या होगा? क्या वे हरद्वारे तक में दूटी कगार से जनाब न हो जाएँगे? सबेरे तक ही इस घर का आवाजराज बिभक्तुल बरल जाएगा। बितने मुँह उठनी ही बातें। और यह सब सरो को सुना-सुना कर कहा जाएगा। उनके पैर जम गये। वे सरो से क्लिपट कर रा देने को हुए। जैसे राम-राम कथमसाने सया। नहीं वे सरो को अपने से पृथक नहीं कर सकते। वे उस अपने साथ ही से जाएँगे लेकिन कहाँ?? और वे टूट उठने वाली सासावत बुझने को हो जाये। संभवत वे झुक ही जाते लेकिन तभी सरो ने करकट सी। वे सहम गये और झोला उठा कर वे बीरे से जीना उतरने लगे। बाँधार घुटा भिनसार का आच्छेक बर्नन में बिछा था। वे यदि बस्ती नहीं करते हैं तो कितनी भी अण पिठा या माता जग सकते हैं। बँपवई पर पिठा सेवे हुए थे। उनकी नाक बज रही थी। माँ जमीन पर ही बिस्तार किये रोज जैसे ही खेटी हुई थीं। वे बड़े पैरों बड़े और पिठा-माता के चरण सूकर बरबाबा खोल बाहर निकल जाये।

सिरी में घर की अवेला अधिक बुझा आठोफ था। फिर भी अवेरा घरों के बार्नों बन्द दरवाजा पर पोस्टरों का चिपका था। लपरसों पर अवेरा-आलाक फँका था। पतली-पतली बानी गलियों में बाँधार-आलाक का मटवीला जल भरत हुआ था। मोबर किये बधूतरे टण्डायें हुए जेब रहे थे। इतनी सबेरे अपना ही मुहल्ला जन जाग बन रहा था। सड़कें की लाली बाँहों से फँकी हुई थीं। जैसे सड़कें लम्बी गलियाँ हों और वे एक भूसे-मटके स्वर हों। वे किस राम के अविष या

प्रथम स्वर हैं यह न तो स्वयं को और न इन नलियों का ही किसी को पता नहीं और वे बिनाकुल अवस्थासिद्ध से बचते भर पहले गये यहाँ से वहाँ तक । बिना किसी राग की पूर्ति किये । संभव है अनजाने में उनके द्वारा मात्र के दिन का राग बारंबर हुआ हो । किन्तु प्रथम स्वर तथा आरम्भिक स्वरों में इतना व्यवधान था कि किसी को पता नहीं चला । और तो और सड़कों वाली नलियों को भी नहीं । श्रीधर बाबू की इस एकान्त यात्रा का स्वागत करने कुत्ते तक न तो जागे ही और न भीके ही । क्योंकि वे भी जानते हैं कि इस बेला का एकान्त यात्री और कुछ हो सकता है चोर तो नहीं ही । श्रीधर बाबू को उनके अपने कस्बे में भाँसे बना किये ही बिना थी । कितनी मध्य बिना थी । अभी घोड़ी देर में ये भद्रिष्ठ्या सुलग उठेगी इकानें हनुमान की तरजू छाती लाल कर चीमा की सीता-राम का प्रदर्शन दिन भर करेगी । रोज इन्हीं गिट्टियों वाली सड़कों से पस कर सुख-दुःख प्रत्येक घर में अतिथि बनते हैं । प्रत्येक आबादी एक देह होती है । हम उसकी शिवा-उपशिरा होते हैं । जब हम उस देह के याम्य नहीं रहते तब अनजान नियति हमें वहाँ से हटा देती है । कुछ देर बाद हमारा स्थान भाव की भाँति भर जाता है । धाँसे दिना बाल न उस कस्बे का और न हमें ही कभी यह अनुभव ही होता है कि हम उसके आवश्यक अंग थे । सबमुक्त ही हम उस देह में गाँठ ही थे जिस काट कर अलग कर फेंक दिया गया ।

ठण्डा-जयीर भासबी बायरा बछ र्हा था । वे पक्की सड़क छोड़कर पगडण्डी के रास्ते हो किये । गड़क से चलना अतरे स खाकी न था । वे जानते थे कि उम्बैन तक का बाकीय मील का रास्ता पैदल ही चलना होगा । क्योंकि रोक या और कुछ बाहन पकड़ना ठीक नहीं थाया । निश्चय ही लोग उन्हें पहचान जाएँगे । और वे ऐसा नहीं चाहत थे । उम्बैन जैम गहर में उन्हें लाना पाना जानान न होया । दिन बहने-बहते तक वे आठ मील स भी ज्यादा निकल आये । यद्दे निकाल कर उन्होंने अंशक लयाया कि इस मील पहुँचत-पहुँचत रोक का कार्गम हाया । और हुआ भी यही कि माड़े दम बजे दूर इंजन की सीपी मुनायी थी । पडारों में लपटी-निछपटी रोक आ रही थी । श्रीधर बाबू समझ गय कि दम हिमाव से तो वे घाम तक अबश्य ही उम्बैन पहुँच जाएँगे । मूक लय आयी थी । रास्त के एक पाँव से बट गरीदा और एक बावड़ी पर बैठ कर ला-वीकर मुस्ताने लय ।

बाड़े के दिन भी छोटे होते हैं। जरा से बढ़े नहीं कि मुकने-मुकने को हो जाते हैं। वो बजते-बजते बनी आवा ही रास्ता तक हो गया। उन्हें भिन्ना हुई कि यदि वे सौप्त पड़ते तक नहीं पहुँचते हैं तो उस अजनबी घर में क्या करेंगे ? कहाँ जाएँगे ?

बिच समय उन्हें उम्बेन की बतिर्पा बिखरामी दी रात के नी बज रहे थे। बीर बे बर कर बूर हो गये थे। अँधेरे में मिर्कों की बतिर्पा भुपनलों ही बग रही थी। सौप्त पड़ने पर वे पत्नी सड़क वाले रास्ते पर आ चुके थे। एक-एक पैर बरुना मारी लग रहा था। जगमी पुबिया पर बैठा जाएमा—यही प्रलोमन देते हुए थे बढ़ते रहे। मिर्कों का बिबिबिबा धुक हो गया था। सड़क के दोनों ओर मिर्कों का गंवा पानी भरा हुआ था बिचमें से अजीब कबकी तथा सड़ी बंध आ रही थी। उन्होंने सुन रखा था कि स्टेसन के पास ही कोई सरकारी बर्मशाला है बीर जब तक कोई आदमी न मिला तक उनके पैर सड़क से ही उस बर्म शाला का पठा तथा बिषा पूछते हुए दोनों ओर की मिर्कों के सुनसान अहाते पार करते आने बढ़ते रहे।

उत्तर पथ



अनी बे अपने कमरे में सो ही रह बे कि घनगाला के अपरामी ने आकर जोर-जोर से दरवाजा खटखटाना शुरू किया। चौक कर उठे। एक क्षण ता समझ नहीं पाये कि कहाँ है ? बेठ आते ही उठे और दरवाजा खोला। हल्की झम्पाहट भी हुई कि कौन मबेरे-मबेरे दरवाजा खटखटा रहा है।

—क्या बात है ?

—मनीषर साहब बुला रह हैं।

—क्यों ?

—माकूम नहीं।

और अपरामी जमा गया। मबेरे-मबेरे इस प्रकार का व्यवहार ससा फिर भी बे मीनेजर के पास गये।

—बहिन, क्या बात है ?

—क्या आप परिवार के साथ हैं ?

—नहीं।

—जा आइया बसरा नहीं दिख सकता। आत्मारी ब ही जागपी। रामेसर !



- अस्मारी नम्बर बीस है दो।—हाँ साहब ! आप लोग कहीं से बा रहे हैं ?  
 —सेकिन जाड़ों की रात में कहीं सोया जाएगा ?  
 —दासान में सोम सोते ही हैं ।  
 —सेकिन मैं तो दासान में नहीं सो सकता ।  
 —हमारे यहाँ कमरे सिर्फ फेमिली वालों को ही बिये जाते हैं । और आप यहाँ क्या करने जाये हैं ? तीर्थयात्रा ?  
 —नहीं ।  
 —तब तो आप इस धर्मशाळा में ठहर ही नहीं सकते । रामेश्वर !  
 —सेकिन आप मुझे  
 —क्योंकि साहब सबेरे-सबेरे भीड़ न लगाएँ । मैं कह चुका हूँ आप यहाँ नहीं ठहर सकते ।

धर्मशाळा के बड़े फाटक से अनेक तांबे आ-या रहे थे जिनमें तीर्थयात्री बरे हुए थे । सोम मैनेजर को बरे बड़े थे । श्रीधर बाबू बहस करने की स्थिति में नहीं थे । वे चुपचाप सिर झुकाये कमरे की तरफ बढ़े । अब वे धर्मशाळा के फाटक के बाहर थे । सामान वा ही कितना ? धर्मशाळा के सामने ही सड़क पर रोक की अनेक पटरियाँ बिछी हुई थीं । कोई इंग्लिश माफ़ क शिब्बा को घंटिंग करवा रहा था । सबसे पहला प्रश्न उनके सामने था कि अब क्या किया जाए ? कहीं जाया जाए ? वे इस सहर से अधिक परिचित तो नहीं थे लेकिन यहाँ अनेक रिश्तेदार थे जिनसे वे बचना चाहते थे ।

श्रीधर बाबू महाकाळ मन्दिर की तरफ निकल जाये । जिस समय वे यहाँ पहुँचे लोगों की भीड़ नहीं थी । वे बहुत जूटपन में एक बार यहाँ जाये थे । मन्दिर के बलाकाय में पवित्र होकर वे वर्षों क मियू भीतर बस । दर्शन के बाद वे प्राचीन महाकाळ मन्दिर के पीछे की तरफ निकल जाये । जहाँ कभी दिघास तासाब वा सेकिन अब सूख चुका था । सुखे तासाब के उस पार हरसिद्धि वा मन्दिर था । जिसके श्वेत शीपादार इस समय स्पष्ट दिख रहे थे ।

बेस के वेड़ के भीचे बैठकर श्रीधर बाबू सूताने सोने । पहली बात था उन्हें इस समय सताने सगी कि अब क्या होना ? आज का दिन भी अनी उन्हें राक करना था । गहाना बोना साना और उसके बाद इस सहर में क्या किया जाए ? यहाँ बर पर पीछे से क्या हुआ होना ? वे सोम किसी को यहाँ अबस्य ही हुँने भेज सकते हैं । और यदि वे बेक किये गये तो फिर बर गये बिना गति नहीं है । और

घर जाने का अर्थ यहाँ ठक का निष्कमल अर्थ । नहीं यह नहीं हो सकता ।  
 वे एक घण निर्णय ल चुके । वे अब दिना किसी निष्कृति के घर लौट ही नहीं  
 सकते । तब है, सरो का माँ को पिता को लौट जाने से क्षणिक पान्ति सन्ताप  
 हा जाए मन्दिन मीने पुरुषार्थ में एक निर्णय लिया है बिल्कुल स्वतः हाफर । हमको  
 धूम-अधुम दानों का ही नागीशान मात्र में है । यह उन सागों का सहज मोह होगा  
 कि मुझे खान कर लीटास ल जाएँ । क्याया अच्छा हागा कि न ही मोह की  
 खोबों की परिमीमाओं को साथ खाऊँ । यहाँ से भी आये कहीं दूर जाना हागा ।  
 मन्दिन कहीं ?

तभी वे सचेत हुए । देखा कि वे बेस की तिरस्कणी छाया के नीचे एक पत्थर  
 पर बैठे हुए हैं । आँखों की धूप दूर-दूर तक खिमी हुई थी । हरमिडी क पार सिप्रा  
 थी । वे उमर ही बढ़ ।

बाद इस समय मुनमान से । दो पार महाने वाले यहाँ-वहाँ फँसे हुए थे । बाकी  
 माघ बातावरण घात था । पेड़ों की सम्पन्न छायाएँ घाटा पर बिछी हुई थीं ।  
 सिप्रा का मन अब भी छाया प्रबाहित था । उस पार के पेड़ों पर धूप खिमी  
 हुई थी । सामने के दल अन्नाड़े पर कपी बड़ी सी सड़ी हवा में फहरा रही थी ।  
 कुछ साधु कपार क रान्ते पर आ-जा रहे थे । दूर दाहिने हाथ सिप्रा पर बने  
 मड़क के पूर म पानी बह रहा था । कमी कार्ड लारी या मोटर गुजरती तो पानी  
 उछलने लगता । सिप्रा में दूध-पूत बड़ाने के लिए कुछ मामी पूर आदि लिये  
 बैठे थे । पण्डों की छत्रियाँ इस समय सामी थीं । घाटों पर आबाय मानें तथा  
 माँझ भूम रहे थे । दो एक देहानी माण्डों म बाल घुटवा रहे थे । बाकी घाटों पर  
 बूय एक दम कोरी छेरी हुई थी । सिप्रा का एक मुम्ब माता हुआ आ रहा था ।  
 रंभीन आड़ियों से वे माग्बाड़िने लग रही थीं । भीबर बाहु बिम घाट पर बैठे हुए  
 थे वह एकान्त में था । सिप्रा यहाँ पर हम्क पुमाब के साथ बह रही थी । घर  
 से मात्र बानीम मीर दूर पर ही बिजना बैगा परसेम सा लग रहा था । तभी  
 एक कनडेट साधु ने पीछे से बड़ी ओर से "बम राकर" बहकर उनका ध्यान तोड़ा ।

जूटियों वाली बगुन पटकते हुए वह साधू धीपर बाबू के पास आकर पुरे हुए दखने लगा।

—बच्चा। साधू की सेवा करेगा ?

धीपर बाबू बबोले ही बोलते रहे।

—परवसी मालूम हाता है ?

—हाँ महाराज !

—किसर वस्थान है बच्चा का ?

—यहाँ से उत्तर में।

—गुरो भग्ना गुरो विलू गुरो देव महेश्वर

गुरो साकसभ परो भग्ना छत्र सिरी गुरे नमो नमः।

ओम नमः शिवाय ॥

सेवा करेगा बच्चा ?

और उन्होंने कमरक से अपनी बूझरी लँगोटी निकाल कर घाट पर रखी। इसके बाद कमरक मजिठे हुए फिर बोले

—कड़के! साधू का अपमान करता है ? गुरु की सेवा से सेवा मिलता है। समझे ?

धीपर बाबू को बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि कोई उन्हें कड़का समझ रहा है।

कहीं इस बात से वे किञ्चित् अपमानित भी अनुभव कर रहे थे। साधू योधता ही जा रहा था

—बन से कड़कर आया है, क्यों ?

—नहीं महाराज।

—गुरु से झूठ बोलता है ? घरवाली पसन्द नहीं है, क्यों ?—नमः शिवाय ॥

और कनकटा सिमा में कमरक एक घँस कर हाथों से पानी फैलाते हुए बुझकियाँ

भारते लगा। इसके बाद वह कमरक की लँगोटी खोल कर मल-मल कर धोने लगा।

सिमा के काँपते हुए जल में से कमरके साधू की दागों टाँगें और कमरक का सारा

मान दिला रहा था। गीली चँपोटी कंधे पर बांध कर जब हाथों से रपड़-रपड़

कर धोते कमरक आरि बोल लगा। तब तक कुछ भी नहीं कहाने के लिए आ पहुँची

थी। 'भाइयों' को बेलकर साधू का ध्याय अब उनकी आर हो गया था। वह लूब

मल-मल कर नहाते हुए "नमः-शिवाय" बिरसाता जा रहा था। वह वहीं से बोला

—कमरक देना बच्चा !

कैकिन 'बच्चा' नहीं उठा। धीपर बाबू विनम्र हो लगे।

—नास्तिक लगता है। कड़क ! सिरी कीन जात है ?

श्रीधर बाबू उठने का हुए। साधु ने एक 'माई' को संबोधित करते हुए कहा—

—देखा माई! कमयुग में सब मिष्ट हो जाएगा। तुलसी बाबा ने कहा नहीं है? लड़के की हिम्मत देख रही हो? अब कमण्डल बनाता माई!

और माई ने शिप्रा के जल में कमर तक प्रविष्ट होकर कमण्डल साधु को बनाया। कमण्डल सँभाली बाँधने के पूर्व एक बार फिर सफाई करते हुए बोला

—कौंदा घर से फरार रहता है। पाहूँ तो अभी पुलिस को खबर कर दबनु की सारी हुकड़ी निकाल दूँ। साधु का अपमान करता है। माई! तुम साधु की सेवा करोगी?

—मछा साधु महाराज की सेवा नहीं करोगे तो किसकी करोगे?

—बम धकर!! दिला दे घर भर पूड़ी और माया संर खड़ी साधु को।

और साधु ने सामने से लटकवायी हुई कपोंगी जाकर घाट पर बड़े सार्वजनिक कम से 'मादया' घ घर्ष करके हुए बदली। श्रीधर बाबू दूसरे घाट की लछाप में सीढ़ियाँ चढ़ गये। अंम-बग में काफ़ी बकानत मग रही थी। महा-बोकर जीवन में पहली बार हलवाई के यहाँ से पूड़ियाँ लेकर बिल समय लायीं मीठ सताने लगी। वे घाट की ओर फिर निकल आये। एक छत्री में धूप मगने हुई थी। जैसे सं धोती निकाल कर बिछायी और सेट गये। गरम-छत्री धूप में संशुत ही मीठ आ गयी।

तीसरे पहर और शाम को बककर काटते-काटते वे पूरी तरह बक गये। कुछ समय में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए या क्या किया जा सकता है? इस समय रात के दस बज रहे थे और वे रेलवे स्टेशन के पास के म्यूनीसिपल पार्क में बैठे हुए साधु रहे थे कि क्या करें और कहाँ जाएँ? ठण्ड बढ़ गयी थी। पार्क की बूब लूब यहरी ठण्ठी हो बनी थी। अभी दो घण्टे पूब तक पार्क में घोड़ी बहस-पहस थी लेकिन इस समय बिलान्त निर्बल। परिषद के कोने में जा एता-मण्डप या उसकी महाराज पर शान्तुही की लुटा इस समय की मन्त्र हवा में हल्की हिल रही थी। पार्क के बोध में बनी किन्ही देवता की मूर्ति बँस तो आंधार-आलोके में आमाहित थी लेकिन अब कभी मोटर या लारी पुत्रली बह मूर्ति दिया जाती। रेलियों की मायवी छायाएँ बूबों पर बिच जातीं। क्यारियों में जाड़े के फूल माच उठने। यह सब एक रात भर में ही हा जाता और फिर

सब उमस बँधेरे में दूब जाते ताँगों-पोड़ों की आबाजें मर जानीं । सबक पार देनाम नेट की हकनाइयों दूबवालों की देर राठ तक चुली रहने वाली दूकानों से जोर-जोर की गडमड आबाजें आ रही थी । उनके कस्ते तक जाने वाली छोटी रेल्वे स्टाइन की पटरियाँ चढ़क को काटती बिसीं थी । तमी पुकिस वाले ने उन्हें सहमा देखा और वह उनकी ओर बढ़ा ।

—क्यों क्या बात है ? यहाँ क्यों बैठे हो ?

—कूछ नहीं ऐस ही ।

—रस बजे के बाद पार्क में नहीं बैठ सकते । बाबो घर जाओ ।

—मैं परदेसी हूँ ।

—तो फिर जाओ किसी बर्मघाना में ।

—यहाँ के बारे में कूछ नहीं जानता ।

—भायो यहाँ से । लोको कोई सराय-बराय ।

और पुकिस वाला यह कहता हुआ सता-अधप की तरफ वड़ गया । उसका इस तरह बोझना बढ़ा अबीब लमा लेकिन वे क्या कर सकते थे ? और वे रेल्वे स्टेशन की तरफ बढ़े । शिम मर काफ़ी मटके थे इसलिए इस समय एक पैर बछना भी भारी हो रहा था । सड़कें एकदम ही सूनी सपाट हो गयी थीं । बरों की बिक्रियाँ तक बन्द थीं । स्टेशन के अहाते में कहीं-कहीं अलग-अलग बो-बो बार-बार चुली बुझ बनाये आम ताप रहे थे । सब नकास बेटिंग-हाक में तिक बरले की बगड़ नहीं थी । यात्रियों के कारण इतर से उतर निकल पाता कठिन था । कपड़ों और बेहों की इतनी अधिक दुर्गन्ध उठ रही थी कि नाक फटी जा रही थी । खोब कुहरे पड़े थे । इस बूटे वातावरण से क्यावा अच्छा था कि मुझे प्लेटफार्म पर किसी बँध पर जाकर ही कन्नाजमाया जाए और सम्भव हो तो सोने की चेट्टा भी जाए । कोई पाड़ी नहीं जाने वाली थी इसलिए न पूड़ीवाले न मिठाई वाले न पाम-बौड़ी वाले कोई नहीं थे । बाबर-बिज पार टिन की छत वाले सड़क में उबड़ा प्लेटफार्म तेज ठंडी हवाओं में काफ़ी सियरा गया था । गिनती की तीन बँधे थीं । एकाप पर कन्वक से हँका कोई नेटा हुआ था और समता का काफ़ी गहरी नीर में था जिसके तेज पुरटि भरने की आवाज आ रही थी । ठंडी बँध पर वे एक दोहर भोड़ कर पीठ टिका कर मुस्ताने लये लेकिन ठण्ड इतनी थी कि वे डिडुरे जा रहे थे । वाली प्लेटफार्म बीरान और-बिज और दूर के जाकारों में टैकी दिगनक की काक-हरी बतियाँ उम ठंडी हवा में तथा हल्के कुहरे में अबीब रहस्यमय मय रही थीं । सी-नू करता हुआ एकाप इबिन बिम्बों को इतर-उपर करने में बना हुआ था ।

जिम्हों का मापस में कमी-कमी बसाक के माप टकराना जमीन तरह स माप  
 बाताबरम होया जाता था। व यह भी भूल गये कि कब तक इस तरह क अपरि-  
 पित निर्जन बाताबरम एकम व्यापार क बे लग नहीं स। कमी इतने छाने नागप  
 व्यक्ति भी नहीं थे। इस इतने बड़े महर स उनका कमी कोई सम्बन्ध नहीं था।  
 छोी हवा में बैस सोचना भी पबरा गया था। ऐम में हमारा सोचना स्थिति  
 सब सबज्ञान हो गते हैं। पूरापर सम्बन्ध सुन्दरम सब भिट जात हैं। न हम देगते  
 हैं न सोचते हैं, कस कबल देखते हैं, सोचते हैं। वह भी खपना नहीं जैसे विन्ती  
 सुदरे का हो। जिसमें हम नहीं नहीं हैं। एक इन्द्रियगत स्वीकृति हाती है जिसे  
 हमने पूछे बिना ही स्वीकार लिया गया है। हमें इसकी कुछ भी खेतना नहीं है।  
 एसी व्यवस्थित स्नापनाबिप्टता व्यक्ति को मापक बना बतो है। हन्की भूल पेट  
 में नहीं कुरपी पड़ रही थी और खाना में केंकरी चलने लगी थी। देह ने कपड़ों  
 को बरना दिया था केचित्त जड़ाये गणों को कपड़े नहीं गरमा पा रहे थे। करबट  
 स उकई हो कर बोहर का छिर पर भी झोड़ लिया और घुटनों में मुह कुपा लिया  
 ताकि कस मपक हो सकें।

पता नहीं इस तरह बर्जनिद्रित स बे कब तक सते रहे लेकिन पिछली रात  
 में किमी मचाटी-माड़ा के कारण ने हडबड़ा कर उठ गये। नींद नहीं आ पामी  
 थी इसलिए मन में विमान में अजीब खोज स था। देखते-देखते सारी गाडी  
 खाली हा मयी। तमी यह स्थान माया कि कस्बा छोड़ने क बाद ये बे इसी प्रकार  
 स भूम रहे हैं। और नहीं जानते कि कब तक घूमना होगा। इस विचार में ही  
 उन्हें बीका दिया।

बे क्यों घर काड़कर आ गये? घरों का क्या हुआ होगा? माता-पिता ने  
 क्या माया होगा? बकर ही निमी को भजा होगा और वह भेजा जाने वाला  
 व्यक्ति और कोई नहीं हो सकता—कबल नारायण बाबू। और नारायण  
 बाबू का नाम बाबू ही उन्होंने बीच क अपने चारों ओर देखा कि निरक्षर ही  
 बे आज जमीन में हैं और उन्हें खोजने में व्यस्त हैं। गमक है उन्होंने कई कलास  
 बटिम हार में पार्क में बाटों पर सनी बयह खोजा होगा। अवश्य ही नारायण  
 बाबू क सूर्यस्त के पहले-पहल उन्हें खोज निकालेगे। और छिर उधके बाद

कोई गति नहीं। मारायण बाबू के सामने वे क्या मुँह लेकर लड़े हो सकते हैं। और वे बिना लिबाये जा नहीं सकते।

धीमर बाबू को लगा कि यदि वे मिनसार के पहलू ही उम्मीन नहीं छोड़ देते तो वे किसी भी तरह मारायण बाबू की दाब से बच नहीं सकेंगे।

वे उठे और ट्रेन के एक डिब्बे में घुसने लगे। एक रेल कर्मचारी जो घने पोंछने के लिए आया हुआ था बोला

—अरे बाबू, अभी तो माड़ी जाने में बड़े की देरी है। डिब्बा बा-मोछ लेने या सब दौलता।

वे भला उस क्या बताते कि अगर वे डिब्बे में जाकर नहीं घुप जाते तो जो उन्हें लोभ रहा है वह अवश्य ही लोभ लेगा।

और उन्होंने ऊपर की सीट पर दोहर मोड़ कर नीचे बैठे हुए इन्वीर की यात्रा की। जब टिकिट बेकर ने बताया तब वे जागे। एक बार संशंक होकर डिब्बे में वही से झाँका। कोई परिचित नहीं था। डिब्बे में कुछ साध बिन भर आया था। पुर्मला बेकर टिकट बनवाया और एक तिड़की के पास बैठ कर उन्होंने बाहर झाँका। जाड़ों की सूब ऊनी-ऊनी सी घुप बिलरी पड़ी थी। उनके बड़ाये अँकों को बड़ा सुख मिला रहा था। अभी एक छोटा स्तपन आया। उन्होंने चाय वाले को बुलाकर चाय पी। जीवन में पहली बार इस प्रकार बिल्कल ही मनभीवरीय डंभ से चाय पीना इतना अच्छा लगा कि वे स्वयं के लिए ही एकदम अपरिचित हो उठे।

जिस समय वे इन्वीर पहुँचे सबरे के बस बज रहे थे। और वे अपने घर से कटीब बस्ती मीरु हुए थे। जब वे 'नसिया' सराय पहुँचे 'रात की भूल पेट में पेंठ उड़ी थी। उन्होंने बिल्कुल उसी डंभ से पूड़ियाँ लेकर चायी जिस प्रकार चाय पी थी। धाकर वे 'नसिया' वाले कमरे में जाकर लेट गये। तिड़की की राह तीसरे पहर की घुप मोते हुए धीमर बाबू पर पत्नी की भाँति शुद्धी हुई परमाठी रही। बार बार वे उन्ने की बेपटा करते लेकिन अबीब तुप्पा थी कि नीचे दूट ही नहीं पा

रही थी। सभी अबीव गान-बिस्लाने की आवाज स उनकी नीर टूटी। वे अलि मसकर उठ बैठे और रूपाय की टाह खने लगे। बन्धित सड़क पर कुछ लोग यात्र जा रहे थे और बीच-बीच में कोई जयकार पूज उठता था। सिङ्की स शोक कर उन्होंने कहा कि एक छोटा सा जुमूस कुछ गाता जा रहा है। ब कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि यह कसा जुमूस है। आब तक उन्होंने एकाप बार किसी धार्मिक जुमूस का ही बला पा लेकिन यह ठा बैसा नहीं था। ठब ?? और जिज्ञासा में खिंचे हुए वे नीचे सराय के मुख्य दरवाजे के पास आये जहाँ दरका की खासी नीड़ समी हुई थी। जुमूस बाक भी वहाँ रुक कर गा रहे थे। वे क्या ना रहे थे थीपर बाबू न इस समझ सने और न जयकार ही। सभी नीड़ में किसी न किसी को बताया

—मुयनी हू ये सोय।

—मुयनी क्या ?

—ये छाम अम्रों से सुराब मांगते हैं। पिछले एक महीने स ये छाम 'बिस्की-पाई' में समा करते हैं, याने पाते हैं भाषण हाते हैं।

—सकिन अपने यहाँ तो अम्रेज का राज नहीं है।

—अरे ठा पूरे देस पर तो है न ? और ये राजा-महाराजा तो इन्हीं अम्रेजों के ही तो कहने पर बढते हैं।

यह बाषण बहने बाण अवेधाइत कोई नबयुबक था। जिस धुर कर सराय के दरवान और मैनेजर ने ऐसे देखा कि अगर यह सराय में ठहरा होता तो अभी सामान टिकवा दिया जाता।

थीपर बाबू अनायास ही जुमूस के साथ हो सिये। जिस राष्ट्रीयता स्वराज्य भाषि के बारे में उन्होंने अपने कस्बे के पुस्तकालय की एकाप पुस्तक में पढ़ा था उससे इस जुमूस का सम्बन्ध जोड़ते उन्हें देर न लगी। जुमूस जिस तरफ से जा रहा था उसपर के सारे क सारे लोग काम-बमा छोड़ दाने के लिए लड़े हो जाते। देसक स्टेयम के सामने स होता हुआ जुमूस 'टीगल' पिप्टर क चीरते पर ठहर गया। गाये जाने वाले गीत की पंक्तिवा अब वे ठीक से समझ पा रहे थे।

—बिजरी बिब तिग्या प्याय

शण्डा ऊँचा रहे हुमाय।

और उसक बाद 'बन्ड, मातरम' की जयकार।

उसके बाद दृष्टि पिप्टर क बाहर लड़े छाम जुमूस क पारां धार जमा थे।



कोई यदि नहीं। नारायण बाबू के सामने वे क्या मुँह लेकर खड़े हो सकते हैं। और वे बिना कियामे जा नहीं सकते।

श्रीधर बाबू को लगा कि यदि वे भिन्नसार के पहलू ही उम्मीद नहीं छोड़ें तो वे किसी भी तरह नारायण बाबू को जोर से बच नहीं सकेंगे।

वे उठे और ट्रेन के एक डिब्बे में घुसने लगे। एक रेल कर्मचारी जो बौने पीछे के लिए आया हुआ था बासा

—अरे बाबू अभी तो गाड़ी आने में दो घंटे की बरी है। डिब्बा बो-बोले सेने दो तब बैठना।

वे मर्रा उसे क्या बताते कि अगर वे डिब्बे में जाकर नहीं घुस जाते तो जो उन्हें जोर रहा है वह अवश्य ही छोड़ देगा।

श्रीधर उन्होंने ऊपर की सीट पर बोहर जोड़ कर नीचे लेते हुए इन्धौर की यात्रा की। जब टिकट लेकर वे आया तब वे आगे। एक बार सफल होकर डिब्बे में वहीं से जाँका। कोई परिचित नहीं था। डिब्बे में सब सारा दिन भर आया था। घुमना देकर टिकट बनवाया और एक सिड़की के पास बैठ कर उन्होंने बाहर जाँका। जाड़ों की सब ऊनी-ऊनी सी धूप बिलारी पड़ी थी। उनके जड़ामे अंगों को यड़ा सुख मिल रहा था। तभी एक छोटा स्टेसन आया। उन्होंने चाम बासे को बुलाकर चाम पी। जीवन में पहली बार इस प्रकार बिस्कुट ही अनभीषरीय हय से चाम पीना इतना अच्छा लगा कि वे स्वयं के लिए ही एकदम अपरिचित हो उठे।

जिस समय वे इन्धौर पहुँचे सबेरे के बस बज रहे थे। श्रीधर ने अपने घर से करीब बस्ती मील दूर थे। जब वे 'नसिया' सराय पहुँचे रात की भूल पेट में ऐँठ रही थी। उन्होंने बिस्कुट उठी हग संतुष्टिमाँ संकर जायीं जिस प्रकार चाम पी थी। पाकर वे 'नसिया' वाले कमरे में जाकर सेट गये। सिड़की की राह तीसरे पहलू की धूप मोचे हुए श्रीधर बाबू पर पत्नी की भाँति झुकी हुई मरमाठी रही। बार बार वे उठने की चेष्टा करत सक्रिय यकीन तुष्णा थी कि नीचे दूट ही नहीं पा

रही थी। सभी बन्धीय गान-बिस्ताने की आवाज से उनकी नींद टूटी। वे मौख मसकर उठ बठे और सार की टाह खने लगे। कल्पित सङ्क पर कुछ लोग याव जा रहे थे और बीच-बीच में कोई जयकार पूज उठता था। त्रिङ्की से झाँक कर उन्होंने देखा कि एक छोटा सा जुलूम कुछ गाता जा रहा है। वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि यह क्या जुलूम है। आज तक उन्होंने एकाध बार किसी धार्मिक जुलूम को ही देखा था लेकिन यह तो वैसे नहीं था। तब ?? और विज्ञाता में लिपे हुए वे नीच सराय के मुख्य दरवाजे के पास आये जहाँ बर्षका की खाली भीड़ लगी हुई थी। जुलूम बाध भी वहाँ रुक कर गा रहे थे। वे क्या था यह वे शीघ्र बाध न इसे समझ सक और न जयकार ही। सभी भीड़ में किसी ने किसी का बताया

—सुराजी हैं ये लोग।

—सुराजी क्या ?

—ये लोग अंग्रेजों से सुराज माँगते हैं। पिछक एक महीने से ये लोग 'बिस्की पाक' में समा करते हैं, गाने गाते हैं भाषण हाते हैं।

—लेकिन अपने यहाँ तो अंग्रेज का राज नहीं है।

—अरे तो पूरे देश पर तो है न ? और ये राजा-महाराजा तो इन्हीं अंग्रेजों के ही ता कहने पर बसते हैं।

यह बाध कहने बाधा अपेक्षाकृत कोई सबकुछ था। जिस पूर कर सराय के दरवाज और मीनेजर ने ऐसे बला कि अगर यह सराय में ठहरा हाता तो सभी सामान फिरबा दिया जाता।

शीघ्र बाध बनायास ही जुलूम के साथ ही लिये। जिस राष्ट्रीयता स्वराज्य आदि के बारे में उन्होंने अपने बस्ते के पुस्तकालय की एकाध पुस्तकों में पढ़ा था उससे हम जुलूम का सम्बन्ध जोड़ते उन्हें देर न लगी। जुलूम जिस सरक से जा रहा था उमर के सारे के सारे लोग काम-बधा छोड़ देवन के लिए लड़े हो जाते। रैसबे स्टेशन के सामने से होता हुआ जुलूम 'रीमल विण्टर के बौराहे पर ठहर गया। गाये जाने वाल मील की पक्षिपय बब बे ठीक न समझ पा रहे थे।

—बिजयी बिरब विरगा व्याप

पग्य ऊँचा रहे हुमाय।

और उसक बाद 'कपड़े, मात्रगम' की जयकार।

रास्ते का साउ ट्रेकिंग विण्टर के बाहर लड़े लोग जुलूम के पातों आर जमा थे।

तभी किसी ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप लोगों को 'बिस्को-पार्क' की सभा में बस कर आबादी की बात को सुनना और समझना चाहिए। बुरूस गाथा हुआ बिस्कोपार्क की तरफ बढ़ गया।

घाड़े की साम होती ही कितनी हैं। बिस्को-पार्क के बढ़े से उद्यान में फूलों की सुपमा बिखरी पड़ी थी। इनके-दुक्के प्रेमी युगल पार्क की बेंचों पर बैठे हुए बढ़े अच्छे लग रहे थे। पार्क के पश्चिमी भाग में एक बड़ा सा फौवारा बस रहा था। उसी के पास यूनिवर्सिटी के पेड़ों की कतार जहाँ जाकर बुरूस सभा में परिचयित हो गया। उसका अधिक नहीं थी। पेड़ों की कतार के पास एक बीच पर चरमे वाला एक पुरुष खड़ा हो गया और वह बोसने लगा। श्रीधर बाबू के लिए यह सब बिल्कुल ही नया अनुभव था। परसों तक वे जो कुछ थे जहाँ से जहाँ से जाय का यह सब कितना विमिश्र था। बस्ता स्वराज्य के बारे में बता रहा था। किसी लोकमान्य तिलक का एक वाक्य उसने पुकारा और उपस्थित जनता ने उसे बुझाया

—स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।।

जनायास ही श्रीधर बाबू के भी मुँह से वाक्य सुझा उठा। वे सचेत हुए। बस्ता यह रहा था कि आज देश को ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो अपना तन-मन-पन तीनों देश के लिए काम कर सकें।

“भारत माता की जय।।” के छीत जपकारों के साथ सभा विरहित हुई।

अंदेरा बिर ही आया था। हवा ठंडी और तेज होने लगी थी। पार्क की पीली पीली बतियाँ हिलते गाछों में लुफ्ठी-सुपती बस रहीं थीं। अधिकांश वा बुरे थे। वे फिर एकत्र हो बैठे। ऐसे कैस बसेगा? और कितने दिनों तक पसेगा? फिर किस प्रयोजन के लिए? मौकरी की जाए। लेकिन सिबाय मध्यापकी के उन्हें तो कुछ भी बुरस काम आता नहीं है। पर छोड़कर क्या उन्होंने अच्छा नहीं किया?—और वे बिह्वल हो उठे—बट, नाम के साथ ही एक पूरा इतिहास बैठे ही बज उठा जैसे किसी बियाह मन्दिर के अनेक बड़े कमरा बजने

सग जाएं। इन्डु, सरो गुणबन्ती सुगीला दबवत पित्रा माता स्त्रूस मानपत्र  
 रयागपत्र दुर्गानुजा में बास खाळे पेवन बाबू की पत्नी शारायन वाबू इन्डु दीदी  
 की ट्रेन बाया फूडमाका सञ्चित दिग्धा लहुराती धामें छहरा नरी तासात्र की  
 छत्रगी—सब और भी जाने क्या-क्या उहें अनेक टेर तक घेरे रह। भेत जाने  
 पर देखा कि पार्क की बूस तक भीगी एकान्त लय रही थी। जब वे पार्क से बाहर  
 आये 'रीगस' ब्रिएटर के पिछल हिस्से में एक बल्ब की रागना में बरामद में पुगने  
 बड़े-बड़े पास्टर, मैस-फटे पड़ य। ब्रिएटर की बिल्डिंग से भीकने-बिस्फाने की  
 आवाज आ रही थी। हाल क सामने एक-दो कारें भी लड़ी जमक रही थी।  
 चौराह की चारों सड़कें एकदम चुप-भौन दूर-दूर तक आत्मकित बिछी थी। बन्द  
 की रोदानों में कमी आगे कमी पीछे अपनी छाया लिए वे सगाय की तरफ बढ़े।

दूसरे दिन सबेरे नहा-भीकर पूछताछ करने पर मालूम किया कि इन सुराबियों का नेता कौन है। श्री पुस्तके साहब एक बकील हैं और वे ही नेता हैं। पूछते पाछते श्रीमर बाबू पुस्तके साहब के घर जूनी-इन्वीर पहुँचे। एक ऊँचे टीके पर ऊँची पुस्त पर पुराने बंद का पेशवाई दुमंत्रिका सकाम था। लकड़ी का एक बड़ा सा बीजा था जिस पर लकड़ी की ही रेलिंगें भी थीं। मदान की बाहरी दासान में एक बड़ी सी लाल जात्रम बिछी थी जिस पर एक गद्दा और पात्र लकिया पड़ा था। एक कोने में फर्नीचर थी। एक सामान्य बहिन-लकिया भी लगा था। एक पेशकार तथा कुछ मुबकिरल बँठे बाँठे कर रहे थे। लकड़ी की रेलिंगों वाला वायमदा था। श्रीमर बाबू ने उस पेशकार से पूछा

—क्या पुस्तके साहब घर पर हैं ?

—हैं तो लेकिन हम बकल कोर्ट जाने बाँठे हैं। बहिन मिलने।

और वह पेशकार फिर मुबकिरलों से बाँठे करने लग गया।

—घोड़ा सा उनसे काम था।

पुत्र साहस बटोर कर श्रीमर बाबू अन्दर आकर पेशकार से बोले।

—दौन सा मुकदमा है आपका ?

—मेरा कोई मुकदमा नहीं है ।

—तब आप क्या चाहते हैं ?

—बो जो सुराबियों का काम करते हैं न ? उसी बार में कुछ काम था ।

और पेशकार ने बदमे के पीछे से एक बार झपर ध नीचे और बुवारा नीचे से ऊपर बूरा और कुछ कहने ही जा रहा था कि थिक पढ़े मिरे वाले दरवाने से एक मँभासे कद का गेहूँए वर्ग का ब्यक्ति प्रविष्ट हुआ । धोनी लम्बा कोट त्रिनुड और पूतशाही पगड़ी तथा गल में आँट दकर लम्बा गिरा दुपट्टा—यह वेधभूया धी पुस्तके साह्य की ;

—हे कोण आहे मायबराब ?

पेशकार ने लड्डे हाकर मराठी में बताया कि ये आपस मिलने आये हैं । पुस्तके साहब ने बिनम्र डंग से पूछा

—कहिए, क्या काम है ?

—बो बदा की आज्ञाधी के सिए आप लोग जो काम कर रहे हैं न उसमें मैं भी हिस्सा लेना चाहता हूँ ।

—ठीक है बड़ी अच्छी बात है ।—क्या आप इन्दौर ही के रहने वाले हैं ?

—जी नहीं, उन्नेन के पास का ।

—ठीक है आप प्रजामंडल के बन्तर बस जाइए और बिगम बाबू से मिल लीबिए ।

—मायबराब ! बलायचे का ?

—हो साहेब !

और पुस्तके साहब के पीछे-पीछे पेशकार और मुबकिकल जुलूम घनाकर जीना उतरने लगे । नीचे उनकी बगधी लड़ी थी । भीषण बाबू की समझ में नहीं आया कि जब क्या किया जाए ।

जिस समय से प्रजामंडल के कार्यालय पहुँचे ताम्बा छटका हुआ था । किसी ने बताया कि बिगम बाबू नौबी-हाउस पाय छुशन पय है । भीषण बाबू यह नहीं समझ पा रहे थे कि यहाँ बैठ कर बिगम बाबू की प्रतीक्षा की जाए अपनो फिर आया जाए । तभी मामन से बिगम बाबू तथा तान-बान और आपनी बात बिरायी दिये । किसी ने उन्हें बताया कि यही पदम बाबू बिगम बाबू हैं । कार्यालय का ताला मोमनर बिगम बाबू के साथ आयन्तुक भी भीनर बले गये । एक कमरे का यह कार्यालय बँटकर बहा जा सकता था । दीवार पर तीन-चार

सुनापित हाथ व लिखे टैबे से जैसे— 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'  
 "सर्वं शक्ति कलौयुगे 'वन्देमातरम्'—आदि ।

एक कोल में टेबल भी तथा एक कुर्सी । जिस पर कुछ रखीर बुके थीं । कमरे  
 के बीचोबीच एक बड़ा तथा पाब तकिया पग बा । जहाँ इस समय बिशन बाबू  
 तथा आगन्तुक बैठे हुए थे । कमरे में धीमर बाबू को दकते ही बिशन बाबू ने  
 पूछा

—कहिए, किससे मिलना है ?

—मैं पुस्तके साहब से मिलने गया बा उन्होंने आपसे मिलने के लिए कहा ।

—हाँ हाँ तो बात क्या है ?

—मैं भी आप के आन्दोलन में भाग लेना चाहता हूँ ।

—बहुत अच्छी बात है । आपका घुमनाम ?

—धीमर ठाकुर ।

—धीमर बाबू ! आप क्या काम करते हैं ? आप लड़े क्यों हैं ? वैठिए न ?

—धन्यबाह । बिशन बाबू ! बात यह है कि मैं अच्छापक बा ।

—या ??—तो आजकल आप क्या करते हैं ?

—आजकल तो यही किया है पिछले तीन दिनों स चम्पते चछते आप के पास  
 तक आया हूँ । आने की नहीं जानता ।

—कहाँ से आये हैं आप ?

—मैं उन्नीन के पास एक कस्बा है वहाँ स आया हूँ ।

—तकिये आप कस्बे क जैसे तो नहीं समते । और, ता आप क्या कस्बे में स्वयंसेव  
 आन्दोलन का काम करते थे ?

—जी नहीं इस बारे में बाड़ा पड़ा है । कुछ आपका जुकूस और आपन दोनों  
 ही देना सुना । उसी प्रेरणा से इस आन्दोलन में आना चाहता हूँ ।

—यही आप कह जाये ?

—जो बल ही ।

—तहाँ रहे हैं ?

—'नविया' सराय में ।

—कदा आप पहली बार यहाँ आ रहे हैं ?

—इन्हीर न ? जो हाँ पहली बार ही ।

—आपने जोरती क्या छाड़ दी ?

—म्मादा अच्छा यह नहीं हाया कि इन बारे में बिस्तार स फिर कभी बनाऊँ ?

—आपने ठीक कहा। श्रीधर बाबू। आप आराम से बैठें। मैं जरा इन लोगों का एक झगड़ा निपटा दूँ तब आप से बातें करूँगा।

और बिशन बाबू काँची-हाउस जिस माय क बिए गय पं बहु इन आगन्तुकों की थी और बिशन बाबू उस बात में इतन बस गये कि श्रीधर बाबू उनकी प्रतीक्षा में बैठे हैं यह भी भूल गये।

आधी दोपहर हो गयी थी। श्रीधर बाबू का सकर बिशन बाबू अपन दाबे पहुँच। बिशन बाबू खास फनकड़ किस्म क आदमी थे। हाथ-पैर धाकर तिम ममय के खाने के लिए तैयार हुए, बाल

—तो क्या आप नहीं आइएया ?

—नहीं आप खाएँ।

—तो क्या मैं आपका अपनी मन्गी में साया हूँ ?

और हो-हो करके वे बड़ी आरों से हँस दिये। व फिर बोले

—परिए बसिए साहब ! आप जैसे शरीफा की पना नहीं क्यों पर बाल बकल नहीं भेज देते हैं।

और श्रीधर को लगा कि यह व्यक्ति निरलस है। निज बन सकटा है। व्यक्ति है। बिशन बाबू ने कुछ इस तरहने में ऊपर की बात नहीं थी कि उन मारवाणी दाबे में लाठ हुए, प्रतीकित सभी ने एव बार उगह दया जिन्हें घर बागों ने गलती से बकला भेज दिया था। श्रीधर बाबू में बैठे ता दाबे में पहुँचने पर हा समस किया था कि इस व्यक्ति को सब सादर ही मने तथा देगने हैं। ताता गाकर दोनों दाबे स बाहर भाये। बडे ही सन्तुष्ट भाव से बिशन बाबू ने कहा

—माया व लिए जिस प्रकार मुक्ति चरम उद्देश्य है बंस ही शरीर व किंग भोजन।

और फिर बही ठहाका। जाड़े की पापहरी मलियों में पूरित थी। फिर भी गलियों का टम्बापन स्पष्ट था।

—आप ता मय आदमी होंगे।



विधान बाबू का प्रश्न सहसा ही था और भीषर बाबू उसे समझ न पाये ।  
—जी ?

क्रिपित हँसते हुए विघन बाबू बोले

—मेरा मतसब है आप गृहस्थ होंगे ।

—जी हाँ । गृहस्थ को आप ममा आवनी मानते हैं ?

—न मागें ता जल में रखकर मगर से बेर कैसे पाछा जा सकता है ?

और तब तक पानवाले की दुकान था गयी । फिर बोले

—सगता है आप आवर्ष पवि रहे हैं ।

—क्या मतसब ?

—पान भी नहीं खाते होंगे । मैं पान ही तो खाता हूँ भोजन तो कर लेता हूँ ।  
गिरधारी । पान देना भाई ।

और उन्होंने जब से पान की डिबिया आगे बढ़ायी । डिबिया की आर संकेत  
करते हुए कहा

—भीषर बाबू ! सम्भूत के नाम पर यही अपनी पूंजी है । इसमें कभी  
गिरधारी ने इतनी जयह ही नहीं छोड़ी कि पान और कपड़े दोनों एक साथ  
रखे जा सकें ।

और फिर आर से हस दिये । तब तक तीन बार शोषों से विघन बाबू बाठ करने  
रूप गये । विघन बाबू के प्रति उनके मन में एक अजीब प्रतिक्रिया थी । तभी  
पान मुँह में रखने के पूर्व वे बोले

—भीषर बाबू । आप घामद आवर्ष रूप से आवर्षवादी बनने की चेष्टा में  
हैं लेकिन आपको कामकर सुख होगा कि मैं पूर्ण आवर्ष रूपसे अनावर्षवादी  
हूँ । जरा मीनपुरी बढ़ाना गिरधारी ।

और वे भीषर बाबू की लेकर तोपखाना रोड पर गये । एक बीराह पर क्रिपित  
आवस्थ हाकर वे बोले

—जब बताइए क्या इरादा है ?

—कैसा इरादा ?

—यही कि गमिया में क्रिपने दिन उठरने का इरादा है ?

—जी आपका माय इतनी देर में ही ऐसा जो क्या कि यह याद ही नहीं रहा  
कि मात्र सबेर ही आपने भेग हुई है और मैंने आपसे आन्वेषण में घामिख  
हाने की बात कही थी ।

—कही थी ? तो क्या आप सचमुच उस बात के प्रति गंभीर नहीं हैं ?

माक पर सरक आये करने को पीछे की तरफ चकेलते हुए बोले ।

—यह आप कैसे कहते हैं कि मैं उसके प्रति गभीर नहीं हूँ ?

—मैं भी तो आपका सिवाय गभीर के अतिरिक्त और कुछ मान ही नहीं सकता ।

—नहीं मेरा मतलब था कि आन्दोलन संबंधी कोई काम-काज मिला जाता तो व्यवस्थित हाने में आसानी होती ।

हल्के हँसते हुए बिशन बाबू बोले

—लेकिन श्रीपर बाबू ! आन्दोलन तो व्यवस्था के बिना किया जा रहा है ।

—यह व्यवस्था तो शासन की व्यवस्था है न व्यक्ति की तो नहीं है ।

—तो क्या आप समझते हैं कि व्यवस्थित व्यक्ति शासन की व्यवस्था को बनाना चाहेंगे ?

—क्यों ? इन दोना में तो कोई मेल नहीं है । परदेसी की शासन-व्यवस्था से शास्त्र्य है न कि सभी प्रकार की शासन-व्यवस्था से ।

—मुझे मगता है श्रीपर बाबू ! की व्यवस्था सीमा है । सारी अवतति दुर्गण का कारण यह सीमा ही है ।

—समझ है आप सही हों । तो क्या इसीलिए अब्यवस्थी बने घूमते हैं आप ? बिगल बाबू ने सहसा बात बदलते हुए कहा

—श्रीपर बाबू ! जल्दिए आपका व्यवस्था में विश्वास है इसलिए कुछ तो करना ही होगा । आपका सामान छन्दर छावनी बनने हैं वहीं मैं रहता हूँ । जम्बु बिना आपका हा सकती है लेकिन फिलहाल के लिए बुरा नहीं होगा । उसने वाद देखा जाएगा । आप तो भगवान मानते ही हूँगे इसलिए आपको बिरोध चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी मुग्निस तो हम मास्तिका की है समझ कीजिए बिड़िया की हापी से बड़ाई है ।

और हँसते हुए एक सविबाने को पुकारा ।

तांग से सामान उतारन हुए बिगल बाबू बीन

—श्रीपर बाबू ! मरान मास्तिकन एक पाग्गी महिष्ठा है । आपने भवनर विगने-



बाबा कान्हेरां के सामने साहसिक बढ़ी कर पकड़ी बजाता यह रहा था। तभी बिगन बाबू ने पीछे से भावर कंधे पर हाथ पर बज रहा

—बगह पमन्द मापी ?

—यह तो पूरा एक स्वप्न है।

—आप बहुत भावुक व्यक्ति हैं।—अच्छा, यह बताइए बाय वीरु पिण्डे ?

—बी मैं बाय नहीं पीता।

धीर बाबू की इस बात पर बिगन बाबू बढ़ी जार म हँस दिये। भीपर बाबू अन्यमनस्क हो आये बोले

—क्या मैंने कोई अनुचित बात कह की ?

—और नहीं तो क्या ?

भीर बे फिर परागत मरी हूँ ही हँस उठे।

—क्या ?

—यही कि आप बाय नहीं पीते।—उब भीपर बाबू ! आपसे ईर्ष्या करने का मन करता है।

यह बात कुछ ऐसी आत्मीयता से बिगन बाबू ने कही कि भीपर बाबू को बे बहुत अच्छे लगे। उन्होंने पहली बार उध व्यक्ति के मुँह तथा आँसों को निहारता हन्के पूँचराते बाल जो पीछे की तरफ बिये हुए थे। मुँहा हुआ मुँह। तेज नाक-

पचना। आँसों के पाम सीधे की तरफ काली मरि। भूरी पुतलियाँ। सटे पतले मोठ। हा दिनों की बढ़ी दाढ़ा। लहर का कुरछा-नाबामा। बुले में सामने

मीने पर बक्कनदार दो जेबें। बम्बई स्टाररु का जेब बाजा गुजरती पाबामा। हड्डियों भर पौर, चप्पलों में। इन्हारे बदन के इस बिगन बाबू में साठ बाहरी प्रमप्रता हा पर बहु भीपर बाबू को लीकिक ही लगा। कही इस मुरोप ब

पीछे घुमरा ही बिगन है जो न तो राजनीतिज्ञ है न मुराजी है, न फलक है बस्कि बहु है जिम बिगन बाबू ने किमी को न तो सीपा ही और न देखने हो दिया होगा। एक अजीब जसधुमी गुट्ट मुस्नान के माय बिगन बाबू ने पूछा

—भीपर बाबू ! इतने तन्मय होपर किमी महिला ने देखा होता तो भीर फिर गुरू कर हँस दिये

—तो क्या ?

भीर इस बार, पदुनी बार प्रमप्र मन हाकर भीपर बाबू बाक।

—तो तो अपना यह कुला उम पुस्तकार में दे देगा। बात यह है कि भीर ता कुछ अपनी पूनी है नहीं और न ही आप जैसा भावुक संमीर आत्मी हैं

कि जो कहता उस महिला से कि जो तुम्हें सार सारे पुरस्कार में बटा हूँ ।  
—संक्रान्त बिशान बाबू ! कमी ऐमा अबसर आने पर कम से कम धुमा हुआ कुरता उम बेपारी को पुरस्कार में दीजिएगा ।

—क्या बेकार में धुलाई पर पैसा खर्च किया जाए ? कुरता तो उसे पहनना ही नहीं तब जैसा धुला वैसा गया ।

और दानों इस बार साय-साय चुसकर हँस रहे थे ।

—मैं तो आपका बहुत पसीर मानता था कि आप कमी हँस ही नहीं सकते ।

—राजनीतिज्ञों की इतने जम्ब लोपां क बारे में अन्तिम राय नहीं बनानी चाहिए ।

—बसिए, आप पहले व्यक्ति है जिसने मुझे भी राजनीतिज्ञ समता ।

—आप राजनीतिज्ञ नहीं ?

—जीवन में किसी प्रकार का भी अब राज हो सभी न आबनी नीतिज्ञ होया ? गळ में कफनी टाँग कर बाबे में पेट भर कर अधिक से अधिक देशभक्त बनने की कामना ही कोई कर सकता है । राजनीतिज्ञ के लिए शुक से ही आपको पास इतना बड़ा पक्ष तथा भयाना हानो चाहिए कि राज या स्वराज्य आ जाने पर आप उसक उपयुक्त कर्म ।

श्रीधर बाबू को सभा निश्चय ही यह व्यक्ति गहरे अन्तस्तन में सकसोरित है बोले

—बिधान बाबू ! आज मीटिंग नहीं है ?

—मीटिंग ??

और मीटिंग शब्द इतने चौकन्त हुए कहा जैसे अभी कुछ बेर के लिए कहीं जल पड़े थे ।

—श्रीधर बाबू ! आप घर से क्यों चले जाये ?

श्रीधर बाबू सहसा फिर समीर हो गये । गरी पर साम काफ़ी शुक आवी थी । आम-आमनों के शून्ड पर बिड़ियां खोर करने लगी थीं ।

—शौकरी छूट गयी, या यो कहिए चौकनी पड़ी । तब मला बहो क्या करता ?

—कर-परिवार ता है न ?

—परिवार ही क्या पूछ कुटुम्ब तक है ।

—तो फिर ?

—क्या पही बात में आपस नहीं पूछ सकता कि आपने यह जोगिया क्यों पहन रखा है ?

—तो इसका मतलब यह हुआ कि हम दोनों को ही एक दूसरे के बारे में बहुत कुछ सूचना है ।

और दोनों ही प्रतिदेखते हुए मुस्करा रहे थे । बिचन बाबू बाक

—क्या हाथ मुँह नहीं ढोइएगा ?

—मामूली छ ।

—तो फिर मामूली-से स छुट्टी लेकर जम्द चलिए ।—अपर आप बिना मीटिंग के काम काटने के आनी नहीं हंगे तो उसका भी प्रबन्ध हो ही जाएगा ।

और हँसते हुए दोनों ही अन्दर पस गये ।

विद्युत वायु के बारे में अधिकतम भोग कुछ नहीं जानते । और जो भोग जानने का दावा करते हैं वे इतनी विरोधी बातें कहते-सुनते हैं जैसे कि विद्युत वायु न हुए, किसी उपप्ल्यास के नायक हुए । कोई उन्हें किसी रियासत का बिरोही छात्र मोटा राजा बठाटा है जिसने अंग्रेज सरकार से बिरोह कर रखा है इसलिये इनकी सारी जायदाद 'कोर्ट आफ वार्ड्स' में जमी मयी है और ये हजारों बर बैकभक्ति करते फिर रहे हैं । कोई उन्हें राजस्थान के किसी राजा का दासी पुत्र कहता है । कोई उन्हें सामु-बठाटा है जिसने कि सामुता के डोंग को उतार फेंका है और आज्ञाधी की लड़ाई में कूद पड़ा है मठसब कि बिठने मुंह उतने बिधम वायु ।

एक रबिबार को सभेरे-सभेरे विद्युतवायु ने पूछा

—धीकर वायु ! कभी आप किसी गिरजाघर में गये हैं ?

—नहीं तो क्यों ?

—यँ वहाँ प्राम' जाता हूँ ।

—तो क्या आप इसाई हैं ?

—मान लो हूँ ता ? क्या धर्मग्रन्थ हो गया ब्राह्मण का ?

—ब्राह्मण तो अपने ससर्ग में जाने वाले को पवित्र बनाता है या अपन धर्म का बना करता है जैसे अग्नि ।

—तब तो आप असली ब्राह्मण नहीं मान्युम बेटे । ब्राह्मण बह, जिनका धर्म या पवित्रता हर बात पर गूँथ हो जाए ।

और वे अपनी परिचित हूँसी में हँसे । बोल

—मुझे गिरजाघर जाना इसलिए अच्छा लगता है कि लाग धुल-धुले में वहाँ भाते हैं । पर्व के प्रार्थना-हाल में वड़े ही व्यवस्थित रूप से संगीत होता है— धस । उसके बाद वा पाश्र्वियों का धकधम मुस बभी अच्छी नहीं लगती । पता नहीं लोगों ने मानव को उत्पन्न बनाने में कसा और संगीत का प्रथम क्या नहीं किया ? कनी आप बतना चाहते ?

—कहाँ आपलित तो गही है मुझे ।

धीपर बाबू ने देखा कि आम और जामुनों की गतिनता क पीछे टाल गिपर का एक फिरजाघर भी है जो इस समय जब घंटियों के कारण वातावरण में सहज सोपपन से उभर आया था । लरी के बाव पर इसाई परिवार रंगीन फाकें तथा पतरूनो पहने जा रहे थे । स्त्रियों ने सिर पर रमास बांध रले थे । गिरजाघर के प्रमस्त स्नान में काफी लोग थे । धीपर बाबू का वड़ा मजीब सा छय रहा था । वे आम के पहले कमी किसी गिरजाघर नहीं गये थे । हालाँकि उनके छावनी वाले स्कूल के पास ही एक ऐसा ही मास गिरजाघर था जो अंग्रेज-छावनी के दिना में कमी खुलवा रहा होगा लेकिन उन्होंने उसे कमी खुसा गही देखा । उनके मन में सदा निशासा रही कि आलिरकार इन उपासना घरों में क्या होता है ? कहीं उनके मन में एक धारणा यह भी थी कि ये गिरजाघर सिर्फ अंग्रेजों के होते हैं लेकिन आम इतने सारे इसाई देखे फिर भी दो-चार माम माम को ही उनमें अंग्रेज थे बाकी तो अदिकोश हिन्दुस्तानी थे और बह भी एक बम वाले धससुरत ।

गिरजाघर के प्रमुश द्वार पर हिन्दी में लिखा था

—यह प्रमू का घर है, जा चाह सो आवे ।

उबने पीछे की बैच पर बह और बिघन बाबू बैठ गये । उन्होंने प्रबचन पाठ



तथा संगीत सभी कुछ ध्यान से सुना । मन पर सिबाय संगीत के और किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ा । हाँ जो उन्हें अत्यन्त अभिभूत कर उनके यह वे प्रार्थना-हाल का स्थान बातावरण तथा उपस्थिति की शक्ति । धीपर बाबू को प्रचार नाम की बीज से आरम्भ से ही चिढ़ थी । इसीलिए अपने घर में भी या कस्बे में भी होने वाली धार्मिक कपाजों या 'सप्ताह जी' में वे कभी रुचि न रख सक । क्योंकि वे धर्म को व्यक्ति की निष्ठा मानते रहे हैं । औरहाँ पर इस निष्ठा का प्रदर्शन या भीड़ में बैठकर धर्म के तत्त्व पर प्रवचन सुनना उन्हें बहुत ही मीठा लगता रहा है । गिरजाघर में उपस्थितों की वाति तो उन्हें प्रिय लगी लेकिन वे विश्वस्त थे कि कोई भी धर्म के धर्म पर न सोच कर धर्म धर्म की ही सोच रहा है । धर्म के प्रदर्शन के इस मिश्रण पर तथा बीच-बीच में जिस मातृकीयता का सहारा लिया जा रहा था बड़ी ही विनूष्णा हुई । धर्म नियम है व्यक्ति का सामाजिक प्रवचन नहीं ।

कौटले में चिपन बाबू ने पूछा

—कहिए जैसा क्या ?

—लोग महामे क्या रहे वे पादरी महामे हुए वे और क्या ??

—जनाब ! जयासमा हाल तक पूरा सड़ा-सुँधा का मासुम है कुछ ?

और वे टहाके के साथ हँस पड़े । उपस्थित इसाई जनता न फौरन ही पहचान लिया कि ये दोनों गैर इसाई हैं और वे बिना क बुन्धन भेजे-देते समय काफी बुर-बुर कर दोनों को देख रहे थे ।

—माइए, पार्क में एक छाटी सी सीख है जहाँ मैं कभी-कभी आकर सोपझरी में सोमा करता हूँ । बकिएगा ?

—आपके साथ गिरजाघर जा सकटा हूँ झील पर जा सकटा हूँ कहिए तो मस्जिद भी जा सकटा हूँ ।

—मस्जिद मेरी सौत्यर्य प्रियता को कभी नहीं बमती । मैं तो कस्बाभक धर्म का वायल हूँ ।

—जनाब ! मैं तो आपका कायल हूँ । न धर्म न कला किसी से मेरा कोई मतलब नहीं ।

धीपर बाबू के इस सहज बोझने पर दोनों ही हँस पड़े ।

बाइों की मुबह का हुस्का कहरा और भूप पाक की बूब तथा चारों मोर के सपन उँचि-मेड़ा पर मोहक रूप स फँस हुए थे । शील में दा चार छापी-छोपी मोकार्द थीं जा चर्च की ही थीं । जब क सपस्य प्राय सुहाने दिनों मे या छुट्टियाँ मनाने क मिए मोका-बिहार करने वा बात है । शील का पानी एक दम गिमल प्रसन्न वा । हुस्की हवा में छोटी-छोटी लहरें शैतानी स चठपी गिरती आ-आ रही थीं । सरपत और झाऊ की झाड़ियाँ जल में लड़ी नीच रही थीं । कहा-कहीं दा चार बलाकार्द जलमुर्गाबियाँ पानी में खड़ी या तखी हुई उन्मुत्तता अनुभव कर रही थीं । बाकी देर में ही शील क किनारों पर घिदार के दीकीन बँसियाँ सिमे हुए आ जाएँगे और फिर उमक बाव घसी पानी में डाल के बिउ सेट स्टूट मूँह पर ग्व धूप तावे पिकार और धूप-स्नान का आनन्द लेउ हुए पूरा खबिहार अपनी सरप से उत्सव बना देंगे ।

परयों में टूह पर के लोंग बैठ गये । शील का नीला जल काम पयरोँ को चारवार भिगो जाता और धूप भी उतनी ही तेजी क साथ पत्थरा का सुत्ताने में लग जाती । पयरोँ में कहीं-कहीं पीसे बतफूल छोटे छोटे पत्र खाले हवा में मिहर रहे प । मछलियाँ महरे जल से ऊपर आकर फिर नीचे ठेर जातीं । बाठाबरण में बाहर मोर जल क भीतर बड़ी ईर्ष्या योग्य घान्ति लग रही थी । दूर दूरीं सिरे पर मेडिकल स्कूल का हास्टल दिख रहा था ।

एक छँटी सी कँकरी पानी में किन्ती मछली का निघाना बना कर कँकठ हुए बिगन बाब बोले

—कमी आपको ऐसा लगता है कि अगर मैं यह न होकर बह होता या बह न हाकर कुछ और होता तो क्या कुछ न बन सकता था ?

—म समझता हूँ कि व्यक्ति ऐसा सभी सोचता है जब कि उसे तुलना करना आता हा या बह बूसरा कुछ बनने का महत्वानासी हा । चूँकि मैं आज तक अपने को इन तरह से रखकर देख ही नहीं सका कि मैं अपने असावा यदि बूसरा कुछ हाता तो कैसा हाता या क्या हो सकता था । क्योंकि नहीं न पती मैं यही मानता हूँ कि मसा मैं बूसरा कुछ कैसे हो सकता था ? तब फिर मेरा मैं कौन होता ? चूँकि अपना थ स्वयं ही हो सकता हूँ इतकीय दूसरे की अज्ञा तुलना करना या तीं माया ही नहीं या फिर आया नी तो दु प गी हुमा परिताप नहीं हुमा ।

—आप ता सब ही बहुत संकीर व्यक्ति निरान ।

भीयर बाबू ने आता की पी कि बिगन बाबू इन प्रकार की बातों क बा न

अट्टहास दिया करने हैं वही होया लेकिन वे गंभीर ही बने रहें। बूढ़ के एक पत्थर को एड़ी से पीटते हुए बोले

—बास यह है भीतर बाबू ! कि जब आपके स्वतंत्र को मारम्बार टैम मने तो निरपेक्ष ही मनुष्य ऐसा सोचता है। और मुक्ति यह हो गयी कि आपने इस सहज मानवीय आचरण को जिस नतिक भरात्म पर छोड़ा कर दिया वहाँ से देखने पर तो यही मफता है कि मनुष्य का यह कितना छायापन है जो यह घुमरों के साथ अपनी तुलना करते हुए स्वयं को अन्त मान रहा है।

—लेकिन मैंने तो यह नहीं कहा कि ऐसा सोचना छायापन है।

—कहा नहीं जाकर, लेकिन यही है। अच्छा अगर मैं पूछूं कि आप आज वहाँ क्यों हैं वहाँ क्या आपनी जाना चाहिए ?

—क्या मतलब ?

भीतर बाबू ने काफ़ी चौकते हुए पूछा।

—मतलब यह कि आज जीवन सचय क जिस हीर से आप गुजर रहे हैं और ऐसे अनक सम्पन्न लोग हैं जो हर बात में आपसे गये बीते हागे वे क्यों नहीं ऐसे सचय स गुजरते ? क्या इसलिए कि वे साधन सम्पन्न हैं ? सिर्फ़ इसीलिए ?

भीतर बाबू ने सम्भवतः आज क पूब लोगों को उनकी सम्पन्नताओं तथा विपन्नताओं के प्रतिफल के रूप में देखा ही नहीं था। आज तक वे जिस नतिक स्तर पर रहे वे या बार्मिक बातावरण में बच्चे-बड़े के वहाँ व्यक्ति संघर्ष सम्पन्नता आदि के संयोग योषफल आदि की पद्धति से देखने का कोई रिवाज ही नहीं था। एक कन्वे के ब्राह्मण कुल का निष्ठावान युवक एक अन्धकार बनकर जी रहा था। ज्ञान के अमूर्त रूप ने कुछ आदर्शवादी बना दिया था। भसा व्यक्ति क सबन्धों से भी जीवन निपात्रित प्रभावित या दूषित हो सकता है यह उन्हें पता ही नहीं था। बड़े माटे रूप में मानवीय संघर्षों का आदर्शविरुध किया जा सका था। राम का बिरह सर्वभ्यापी था। महानारय का युद्ध धर्म सम्भाप-नार्थम हुआ था। समुत्तका बनबेबी भी जिस पर दुष्यन्त की कामिमा पड़ी लेकिन राय जेपूठी की भाँति मछली के पेट से भी प्रकट होकर रहा। भीष्म ज्ञानोत्सर्ग के मूर्तरूप थे। यह सब था। जीवन के उदात्त होने की प्रेरणा बकर मिछी भी लेकिन विद्या बाबू जिस बात को कह रहे हैं वह उनके बड़े नहीं उठर रही थी हाँकि वे उस बूँद के फेंक भी नहीं दे रहे थे। तर्क स बात दूषित संघत अक्षय थी। सोचा समब है अनुभवजन्य सत्य भी हो।

—आप चुप क्यों हो गये ?

बिघनबाबू ने एक बूढ़ को सिरहाना बना कर आकाश ठाकुरा पुरु कर दिया था ।

—चुप हूँ इसलिए कि अभी इतने गहरे सिरा नहीं हूँ ।

श्रीधर बाबू ने मिथ्या बिनम्रता न कारण एसा नहीं कहा था लेकिन बिघन बाबू को समझा कि श्रीधर बाबू का र्व और दर्प दोनों ही काँधी गहरे हैं और जिस उन्होंने बिनम्र होकर मन्वीकार न भी सही पर टाका जरूर ।

—आप जानते हैं श्रीधर बाबू कि म कौन हूँ ?

—तो क्या आप बिघन बाबू नहीं हैं ?

श्रीधर बाबू का यह प्रश्न इतनी हास्यात्मक सावगी स नया था कि बिघन बाबू काँधी जोर से हँस पड़े और बैठ गये । एक बड़ा सा डेसा झील के पानी को जैसे मारते हुए बोले

—श्रीधर बाबू ! मैं अभी भी आपको मसाह दूँगा कि आप अपने घर लौट जाएँ । इतनी नैतिकता इतनी मिथ्या म आप कितनी दूर चल पाएँगा ? और क्या लोग आपको चलने देंगे ? लोग परोपकार म अधिक परभिमता में इतने रत रहने हैं कि आप अगर पूरे शीत के बने हाते ताकि आपने क्या खाया है और सब वह किस स्थिति तथा स्थान पर है इतना जान देने के बाद भी मन्मुष्ट न हाने । जब कि हर व्यक्ति स्वयंमोहकी भाँति अमेघ हाना चाहता है और सामने वाले का वह पारदर्शी घीने स कम बिस्कुत नहीं चाहता ।

—गंगा है आप गहरे जल में न कवक ठीरे नर हूँ बल्कि उसके भीतर की जटारों में कहीं कहीं कहीं घोषे कहीं छल-मीषियाँ हैं यह भी सब देखे नाक बैठे हैं ।

—यही ता मन्विल है थोकर बाबू ! चारों ओर का दबावया प्रतिमन्ता जिमी का एन स्थान पर टिकने कहीं देती है ? हम जब भी पैर टिका कर लड़े हाने की कैष्ट करते हैं ता भूमि नहीं मिसत्री केबन्त जल हाता है और हम पंचम्र जाने हैं । जीवन परिचार, गृहस्थी कुटुम्ब के ऐसे बने-बनाये साँचे हाते हैं श्रीधर बाबू ! कि उनमें बँधे रहकर मूल्यों की पीड़ियाँ दर पीड़ियाँ अधिक रहनी मानी हैं और मामात्रिकता भी बनाये गयी है । एकिन आपन एनबार भी उन माँचों से बाहर पैर निहाला ता बस फिर पैरों के मन्व्र मीष जागें और जल ही जल हाता है । कोई मानकी नहीं म्बीराग्या । जल आपकी समता है कि आपके पैर लिके मन्वन्त भूमि आपका मिल् म्नी म्दित

बहु या तो किसी बलवन्तु की बड़ी पीठ होती है या मोठी सवार का आल।  
और ये दोनों ही भ्रम होते हैं—श्रीधर बाबू ! कभी आपने प्रेम किया है ?  
श्रीधर बाबू सहसा प्रश्न की सगति न बैठाने लगे ।

—जी नहीं न इस बारे में मही जानता ।

—लेकिन मैं जानता हूँ कि इस सब में क्या हाथा है फिर भी प्रेम करना चाहता हूँ ।

—तो क्या प्रेम भी सोच कर किया जाता है ?

—भावयकता पढ़ने पर । मैं इस बारे किसी इसाई लड़की से प्रेम करना चाहता हूँ ।

—इस बारे ?

—हाँ—लेकिन मुश्किल यह है कि ये इसाई दिखते बड़े अनुकूल हैं परन्तु बड़े इकियानसहाते हैं । बा आपने देखा था कि कभी चर्च में हम माग जिस बेंच पर बैठे थे उसने सामने ही एक लड़की पीसा जमाए बाप देगी थी ?

—यैमे प्याल नहीं किया ।

—उसे रोबी सेकमन कहते हैं । मैं उसकी ओर आह्ला हुआ था । उसीके चारख में चर्च आया था । एक दिन वह किसी से कह रही थी कि मैं मही समझ पाती कि कोई बाइबिल ईसा के जमाया कैसे किसी इमारे को प्रेम कर सकता है ? मुझे पूना हो गयी ।—मैं आज काफी दिनों बाद यही आया ।

बाहों की धूप त्रिचलत चर्च के पास के पीछे आकासमें प्रलंबित पत्ती हुई थी । वो एक साहब और साहबनुमा लोम बंधियाँ क्रिये-बिये पहुँच रहे थे । तभी आदमी-जीर्या का एक छोटा मुण्ड रंग-बिरंगे उबले कपड़ों में हँमता हुआ आता दिखायी दिया । उस मुण्ड के आदे-आपे एक लबबिबाहित इसाई ध्यति चल रहा था । वह अपनी उसी इसाई बमूबेस में थी । घाय चरने बाहों में एक लड़का माठम-आरणन बजाता था रहा था । एक चरने बाहों बयेड़ के पास बसे में बन्द पायकिल भी था । तभी सहसा विद्यम बाबू उलक कर बैठ गये और फूसफुसा कर बोले

—श्रीधर बाबू ! वह पीछे जमाए वाली लड़की देखते हैं ?

और श्रीधरबाबू को समझते बेर न लगी कि वही रोबी सेकमन है जिससे विद्यम बाबू को पूना हो गयी थी ।

—वही रोबी है क्या ?

—हाँ ।

विशान बापू उन आमन्तुका की भीड़ का देखने में सगे थे। वह छोटा सा मुण्ड  
बर्ब में हँसता जा रहा था जैसे सब ही बहुत प्रसन्न हो।

—ये लोग कौन हैं विशान बापू ?

—इसार्ई हैं। ये जो सपेव शक सम्बी सी भूया पहने छड़नी हैं न वह बपू है।

स्पता है सभी बिबाह करने पर्न से था रहे हैं।

धीबर बापू को समझते वेर न समी कि यह इसार्ई बिबाह का जमुस है। इस  
बीच वर-बपू को मुण्ड ने एक नीका पर बड़ा दिया था। चरमे वाले अमेइ ने  
अपने बायसिन पर गस बजानी धुरु कर गी थी। माठप-आरगन बासा लड़का  
भी अब बायसिन का साथ दे रहा था। मौका तट छाड़कर बीच हील में बड़ती  
जा रही थी। लोगों की हँसियाँ हिलते हाथ तथा संगीत भी क्रमग जैसे होते  
जा रहे थे। डीड़ बजाते अपने घर के सामने बैठी बपू तटबाला का वड़े प्रसन्न  
बिबबास के साथ हाथ हिंसाती बिदा ने रही थी। सारा बानावरण खीन तथा  
सगीतमय हो उठा था। सभी विशान बापू सहसा उठे और विना कुछ बोले-कहे  
सुने सम मुंड की ओर लपकें। धीबर बापू हठात समझ न पाये। उन्होंने दखा  
कि विशान बापू को भाते देख पीले रमाल वाली रोमी सेकमन लीटते हुए मुण्ड  
के पीछे रहे गयी। सम्भवतः वह रोमी की बूढा माया रही होगी जिसने रोमी  
को उसके टहुर जाने पर कुछ कहा रोमी ने भी कुछ कहा और वे लपकते  
भाते विशान को धूरते हुए धीमे-धीमे चलने लगी।

रोमी सठेर-बुर्जक सुन्दर सी साड़ी पहने थी। बालों की एक सग उनके  
बपोला पर हस्की मूस मारी थी। चेहुँए बर्न की रोमी धुली कमक रही थी।  
रमान की हरी प्लूमि में रोमी की उड़ती हुई साड़ी टाँगों के पाम पकिल  
रूप रही थी। विशान तथा रोमी दोनों ही हँस-हँस कर बार्ने कर रहे थे—  
धीबर बापू को ऐसा तो नहीं ही लगा कि विशान को सबमुच ही रोमी न पूना  
हा गयो है। मौका पर बैठा लबबिबाहित युगल डीड़ बजाना हुमा शील में दूर  
निकल गया था। बैबल पानी में बम्पन तिर रहा था तथा अनेक बीजा की  
प्लूमि में बपू की उबली बेज-भूया तथा पेटा हुमा घर आमागिन थे।

सहसा थीवरबाबू को यह मारा व्यापार बड़ा मजीब लगने लगा । यह सब बड़ा पुस्तकीय सा लग रहा था । एकदम ही तबून था फिर भी अचिरवसनीय नहीं । कहीं किसी अन्तर में परिणाम देने काथा भी । जाने कैसे अमात में फूट उठा कि वे भी ऐसे ही किसी रात्री से आमाप करें । ऐसे ही आमापते जाऊँ की ऊनी-ऊनी चुन उन्हें भी भंग कर फिर उठे । वे भी एक माउप-आरगम सहर बन्धे की तरह इस पूरे सान पर हरी सान पर बस राय बजाते-बजाते सोए जाएँ । कोई स्वधि न हो कोई न हो । बल्कि ऐसा हा कि स्वयं भी न हों । तभी बिधान आते दिये । रोत्री जा रही थी । जाने के पूव उसने थीपर का भी एकबार देखा था । प्हनी बार थीवरबाबू ने देखा कि बरबों क माध्यम से भी मारी-देह आमास नेही है । और इस बात से उनके कान तत्र अनसना उठे । सौंठे बिधान बाबू प्रसन्न कम रहे थे । बिधानबाबू ने जाना की कि थीपर बाबू कुछ कहेंगे पूछेंगे संकित वे चुप ही बने रहे । उन्हें चुप देन कर बिधान बाबू उसी सुपरिचित ठहाटे क बाद बोले

—तो अब क्या पार ?

—बकर ।

—केकिन कहाँ ?

—वहाँ कहिए ।

—उन पर अपनी वधि का मार छोड़िएगा तो थोका खा जाएगा ।

और बिधान बाबू मुस्करा रहे थे ।

—थोका देनेकाथा कहना नहीं है ।

—सब ??

और दोनों ही प्रसन्न हावे की ओर बढ़े ।

रास्त भर मौन रहा । बिधान बाबू मनमें रोत्री से हुए अपने बालभिय की सुपासी कर रहे थे और थीपर बाबू चार दिन पहले के मूत्र की आब से गाँठ बाँध कर जोड़ने में लगे थे ।

रविवार भी अर्थात् निष्क्रिय गान्धी-भारत का दिन होता है कि पूरा दिन पर ही नहीं आता। रविवार का दिन जैसे एक सब बड़ा सुन हो। सब होता है, फिर भी जैन कुछ नहीं होता है। और जाहों का रवि-वापर तां पिछिनरु के पिछिन केरियर मा बस हाता है। हरी दूबां वाक छानों का आप कुपलठे रहिए, धूप पीली-पीली पीली तितलिनों की नाति यारके चारों ओर दिन भर रविवार मनानी उन्तो रानी। सुताएँ मकनबनी होंगी। सूती माँग सी मङ्गा पर आप नारी नारी वैर रमन हुए अरने सब जाण, माङ्ग माय हो मुट जाण। बेंगल और मवान समम्पुन से आनकी बनने नर रहेंगे। काद अस्ता लखारा भाक छिए नहीं गोलेगा। कुछ कुलकुदिवनी यौरिया या पीली भाषों वाली कुछ बिनियां तथा छिनगता हुआ कहरिक पीचारे का जस ही आनका मार्ग दन लमेंगे। रवि वार के दिन भी माग हाते हैं एकिन बस ही जैम काण्डी की आम्कारी में रानी तह की हर्न सटन कमीरें—मोन सुनी कमीरें।

बाय के बाण पान गाकर बिगत दाबू की महमा पाव आया कि मात्र प्रजा मउल का कार्यवागिणी की बैरक पुस्तक माहब क घर पर है और व घाम का



बास पर मिट्टी के कह कर बस गिये । पूरा अपराह्न तथा पूरी सम्प्रा श्रीधर बाबू के सामने निष्क्रिय विस्तार सी फैल आयी । तीन-गाना रोड का सिग्नल-मन्दिर परसट्टे भीष मुम सा मौन बा । हार्डकोर्ट के गुम्बद में कबूतर उँवे उँवे उड़ रहे थे । अस्पताल के बरामदों में कभी कोई तर्प मुबर मानी । रामचन्द्र फोटोग्राफर की प्रसिद्ध बूकान झोंसरियों में बैसी बन्द लग रही थी जैसा फैंपी जैंगुलियों में किसी ने मुँह छुपा रखा हो । झोंसरियों से अन्दर च बढ़े-बढ़े चित्र-गोला दिग से रहे थे । बूकान के सामने एक बगची खड़ी थी । दाम्बद छावनी के किमी अंशेन की हागी जो कि फोटोग्राफर को भेने मारी हागी । सोडावाटर बासे की बूकान में कुछ भोग भाग मग मोडा पी रहे थे । दूरवा की भाग मरा मोडा पीते देन कई बार आपकी अपनी माक झनझना मानी है । सोडावाटर बासे के बगल में मासे के पास जो ठिराली मानी भगहू है उसमें भोबियों ने कपड़े उखनी बतखों से रस्मियाँ में तंग रने थे । श्रीधर बाबू टाउनहाल के पार्क में निरक आये ।

निर्बलता भी अनेक बार लल जाती है । हम चाहते हैं कि कोई हा और हमें बैस ही बजा मये जैस बाघ के पर्व सेकिन कोई महीं होता है नहीं । और हम पिशा उठत है । स्पर्ष में बूबा पर एड़ी दाब कर बरने समत है जैसे हम घायी की सारी बूब का कुचल ही तो बने । तब एरियाँ भी दब कर उठनी हैं । बूब बूब ही खूती है—बिनाम सेकिन ज़पराबिध । श्रीधर बाबू एकालत बडान निष्क्रियता सबसे एकत्रम ही कर गये थे । अगर वे इस टाउनहाल से महीं बल देते तो वे इतनी किन्तूस की बाठ तक पर चिड़ने-चिड़ने को हो मये थे कि छोपों को इतनी भी तमीब नहीं कि लान पर इस वखू और इतना तो न बने कि जगह-जगह पगडडियाँ मारी-तिरछी बन जाएँ और लान अमुन्धर लपने बने ।

बब वे अपने कस्बे में वे तब इतने रिताये हुए पोड़े ही थे ? बार दिन पूर्व तक वे एक संभार अध्यापक थे । उनका परिवार था स्कूल या रोज का क्रम नियम या विद्यार्थी से और सबसे बड़ी बात था यह कि वे स्वयं थे । यह सामी पन निष्क्रियता खिबारीयता तो उन्हें एकत्रम ही खोखला बना देयी । कुछ दिन यहि वे ऐसे ही रहे तो स्वयं को महीं पहचान पाएँगे । उन्हें कुछ करना ही होमा और यह भी कि पर से मात्र अन्वी भील दूर कोई किन्तुने दिन मजात रहे सकता है ?

का याद हो आया। साथ ही घबराहट भी होने लगी।

रविवार के दिन प्रायः सरो इस बेछा ठाछाव पर घर-घर के कपड़े लहरावोने आया करती है। 'दूर आकाश के नीचे जल में सरो कपड़ों को धोती दिखायी थी। वे सॉम रोक कर सरो का कपड़ा धोता देखते रहे। सरो ने कपड़े पानी में डुबाये फीरे और जल में कम्यने फैलने लगीं। जाने क्यों उन्हें लगा कि सरो गीले कपड़े तेज हवा में सुता रही है और वानों हामों में पकड़े-पकड़े मूलने न मूलते छोड़ दिया जाता है। दूर आकाशों में सरो द्वारा छोड़ दिये गये कपड़े भर उठे हैं और अपना हरा गुदना छिपे सरोमुख खिचकित्ताकर आँसु की आँट हँस रहा है, हँस रहा है और लनी सरोमुख की मिसकियाँ हॉल म सुनायी पड़ती हैं। भीषर बाबू झटके से आकाश ताकना छोड़ कड़े हा मये और जान बड़ी वे कपड़े बहु सरामुख विरोहित हो गया।

वे बेसी ही हू-बहाहू में तेज कदम रखते रेलवे आसिम पार कर 'रीगम' बिगटर की बगल वाली म-क पर निकल आये जहाँ उम गिन पहली बार 'बिम्बोपार्क' की मीटिंग में गये थे। बनी साफ सुपरी पतमी मडक थी। एक ओर यूनिटिम कनेड अपराहट की घुप में अपनी पत्तियाँ बमकाते हिए रहे थे। बाग की उन्द मुक माने वाली मूर्यमूप पेड़ों की छायाओं को मन्बा बनाती भिछा थी। जगह-जगह क्यारियाँ में करकिया के अनेक बर्षों बने-बड़े फूल हुआ में हिमल मुन्को लग रहे थे। कानों को पानी दिया जा रहा था। परिवारे के कृहगिल जक स मेषते अंग्रेज बन्ने वड़े प्यारे लग रहे थे। बन्नों की माताएँ बहुकन्मी बन रही थीं। आयाएँ प्राम और छोटे बन्नों की देखभाल कर रही थीं। नीले आकाश की पूठ-धूमि में सारा बाताबरण तैलभिन लग रहा था। कोरे ट्रेन का रही थी।

तेज सीटी तथा पहिले की मडमडाहू से बाताबरण गूँब उठा। दूर मिषा की बिमनियों से अजगर जैसा धुमाँ सदियों के सुन्दर आकाश में रोप रहा था।

सारे बाताबरण में समन्वय तथा शांति थी—लकिन भीषर बाबू जिम निम्बि-लता के मिए टाउनहाल या 'बिम्बोपार्क' में मडकठ रहे बहु उन्हें नहीं मिय गी थी क्योंकि अन्दर में मिसकटा सरोमुख परिवार की स्मृति बिना को गत में माठे हुए बन्नों की निश्चित पसकने डैकी आये मिनमार बाया अपना ही अगर बिठ कस्ता—मब हाहाकारते बिगरे थे। वे जियर मुंह करले हरे सान पर अन्तम मन का बहु क्यम कम सामने आ जाता। पमेत बाबू का बहु धोंमल जैसा रंभना आ जाता। भानी का रपमुग माँ का माया केरन हण मय बड लेतना बिना का कीतन—मब उम सान पर ऐम बिन्ने सगन कि भीषर बाबू को लग कि

बिघन बाबू के बिना ये स्मृतियाँ उन्हें बीस ही बेरती रहेंगी जैसे बचपन में 'बंस बिघन' के राधास और पूतना उन्हें नीच में मत्थामा करते थे ।

बिघन बाबू से कह कर जाई काम दो-एक दिन में ही खोज मना चाहिए नहीं ता इस प्रकार निश्चिन्त अधिक दिन क्या कम तक भी नहीं रहा जा सकता । और, और यह भी क्या जकरो है कि यही काम छात्रा जाए ? क्यों नहीं नहीं भूमरी जगह बना जाया जाए ? ज्यादा अच्छा तो यही होना कि यहाँ से भी कुछ बना जाया जाए—किन्तिन नहीं ' नहीं भी । ' जब उस दिन "बिपुलारब पुष्पी" बनने का निर्णय किया था तब किसी स्थान बिघन के लिए बोटे ही सोचा था ? जहाँ भी सींग समायें जाता ही होगा—क्या पुस्तके साहब प्रजामंडल का ही कोई काम नहीं दिखना सकते ?

इस बात से भीतर बाबू का क्या कि निर्णय से मन हुआ हाता है क्योंकि अनिर्णीत मन-स्थिति में विमाभास लगता है । मन का काश्चिय जैसे छूट गया हो । यही निकाल कर देगा पोष बन रहे थे । बिघन बाबू साथ बने तक तो अवश्य ही बासे पर आ जाएंगे । वे उठे । बतारण जाती रूप के साथ तेजी से उठाने लगा था । रीयल बिण्टर के पिछले दालान में फेंटर पास्टर बनाने में लगा था। अभी पोस्टर में सिफ़ नायिका की साक तथा एक शील के खोलसका ही खामास दिया जा सका था । वह खान्डीत बाँस बड़ी खबीय कम रही थी । किसी सीमा तक बहसुरत थी । समस्त-प्रत्येक रचना प्रशिया ऐसी असुन्दर होती है—प्रयेता और दर्शक मोता न लिए । कफिन इसध क्या ? यह और मन की सृष्टि और सुजन से कोई मया मस्त कैसे हो सकता है ? बेह बेह चाहती है और मन मन । हम न भी भाहें तब भी प्रत्येक क्षण हममें से हमारी अंगुष्ठियों के माध्यम से समस्त इन्द्रियाँ क द्वारा कुछ जम्मता है, उफ़ता है प्रस्कृतिव हाता है । प्रत्येक क्षण सब में न इस सारे बृहद् व्यापार में से जनस्त बेहें मन जग रहे होत है—सजीव या अकल्क पर । प्रत्येक एंसी सृष्टि हमारे ही मुन्दर, असुन्दर का प्रतिफल है । हमारे अस्वीकारने से क्या हाता है ?

बे एक मैदान क पास से गुजरे । फुटबाल का मैच हा रहा था दापव । तेज सीटी तथा 'किंक' बाकर डैबी उठी फुटबाल उनका स्थान आकषित कर केती । बाज क पहले कभी जगहें इतने धींग और बहु भी इतने विभिन्न मन्त्रों स्वार्थों तथा

परिस्थितियों में नहीं मिले थे। कहीं यह भी लगा कि वे अपने कस्बे में स्वयं को कितना आसु में बढ़ा समझते थे उतना वे हैं नहीं। उन्हें आज पहली बार लगा कि दरनों बाद उन्होंने अपना वह सम्बा कोट नहीं पहना है। वह कोट जैसे कम्बा या जिमे वे धारे हुए थे। एक सहरी साँस सफ़र अपने चारों ओर देना तो सामने सड़क पेड़ों के भीचे-नीचे दूर वहाँ तक बसा गयी थी जहाँ आकाश का काछा पड़ता हुआ मीलापन शुरू होता है। अपनी ठंड तमा मीलों लम्बा में आज पहली बार उन्हें बना ही सहज लग रहा था—मध बिगनस हीन बतमान में निताम्य व्यक्ति जिसके पास शाटहीन यह है और जिसमें ठंडी हवा छू रही है। अभीक उमुस्तता सगी—सीसे बन्धनहीन अपन का देव लिया जाग ता जये कि—अरे, हमारे भी तो बेह है कमी थिकनी-थिकनी स्वभा मंडित देह। जिमे हम आज तक न केवल दूरता से बल्कि स्वयं में ही छपाये हुए थे। सकिन क्या?—और उद सहसा नन यह करने लगे कि हमारी यह देह ही देह पूर दूर-दूर तक हा और खूब जम मरी हवा ज़नी-जनी रूप हम मात्रा कर दे। सेकिन एने ही 'किमासिमिनी' के शण में किती अन्य क आसकिन भागमन पर पयराकर अपो बन्धन क स्वान पर उपबस्त्र ही पहनने लग जाएँ। मात्र इस सन्तोप क सिध ही कि हमने वस्त्र पहनना शुरू तो कर दिया है।

भीबर बाबू का चौकना बन्धन पहनने क समान ही था।

जिस समय वे बास पहुँचि मूल और यकान दोनों में भरे थे। उन्होंने यह नहीं देखा कि मिसस एलबी ने इस 'भाषण' का एक बार पूर कर रखा और भावर आकर टेकी से अपने बड़ पति को बुला मानी।

बिगन बाबू जिस समय कमरे में जावे भीबर बाबू सा रहे थे। बिगन बाबू ने जगाया और जब भावम हुआ कि भीबर बाबू प्रतीया करते बिना साय-नीय ही

सा गप वे ता बिगत बाबू का बड़ी उत्सन्न हुई ।  
—बिगत जनाब ! इस तरह यदि प्रतीता बयंग की जाएगी तो हम काम ता  
गामा पट बिना मील मर जाएंगे । और माहब ! मी खाली पेट नहीं मरना  
चाहता । जब मरें ता पेट सब पकवाना स भरा हा।—अरे ता आप जाकर

—यै ता मीचे बिम्बापाके म यहा आ पया ।  
—जानत है क्या बर रहा है ?

—क्या बहुत रात हा गयी ?  
—और नहीं ता क्या ? इस बर गया ?

—ना आप तो गायर आवे न ?  
—ताया ता मीने भी नहीं है ।—अच्छा ता बल्कि उठिए । यही जिमी हलबार्ड

की दुकान पर ही कुछ जुमाइ सगायी पाए ।  
और बाना हलबार्ड की दुकान की तरफ बसे । छाबनी एकदम मुनसान थी । हल-  
बाइया और पानबासा की दुकानों तथा आते-जाते ताया के मिथाम और कहीं  
कोई हलबल न थी ।

घान्त में बिगत बाबू ने बताया कि गोपीबाबा कोई सत्याग्रह छड़ना चाहते हैं  
उसा के बारे म मात्र पुन्पक माहब बता रहे थे ।  
—यै कहता हूँ धीबर बाबू ! मुसे गोपीबाबा का रास्ता कुछ पसन्द नहीं । एक  
नया प्रयास किया जाने चाका है—सत्याग्रह ! !

—सत्याग्रह क्या ?  
—आप ता समझदार व्यक्ति हैं सत्याग्रह का अर्थ नहीं जानते ?

—बिगत बाबू ! आपका मेर बारे में काफी म्म है ।  
—कैसा म्म ?

—यही कि मैं गंभीर हूँ समझदार हूँ आदर्शवादी हूँ  
—ता यह सब आप नहीं हैं ?—बल्कि छुट्टी हुई ।  
और बिगत बाबू की बात के लहजे ने धीबर बाबू को माह किया । हलबार्ड की  
दुकान आ गयी थी । दूध पीकर वे खीरे । रात काफी हा गयी थी । कुहल होने  
लगा था । मास की बरामी का चग्रमा स्पष्ट पूर माया था । आकाश बड़ा ठगा  
लग रहा था । पर पड़ने के पूर धीबर बाबू बोस  
—क्या बहुत बर गये है बिगतबाबू ?

—मोचा कि चाड़ी देर चलकर पुस क बाँध पर ही बैठा जाए ।

—बाह, इसस अच्छी और क्या बात हो सकती है ? मुस ता कोई एसा व्यक्ति आज तक नहीं मिला जा रात भर मेरे साथ रतबगाकरन घूम। बाँध बाबू ! रात में प्रकृति सबीब हूती है । न जाने कितनी-कितनी रातों तथा रातियों इस नदी क किनारे किनार घूमत हुए बितायी हैं । धागे चलकर इस नदी पर वीना का एक छोटा सा उपवन किमी दूरी कीन अद्वेज में कभी लगवाया था । आपमाच नहीं सकत थीपर बाबू ! कि रातनी रात में कितना अच्छा लगता है ।

ये बाँध पर पहुँच चुके थे । नदी का जल छोटी छोटी लमिया में टप-टप कर बह रहा था । बाँध के दूसरी तरफ पानी था । उसी तरफ पड़ों का मुग्धुन काँची गमित था । वहाँ जल में बहाव नहीं बन्धि ठहराव था । पहा की तिरम्बरिपी में पारनी जाल भी बिछी थी । हम्का बहगा नदी पर रेंग रहा था । बाँध की तरफ दोनों ओर पारमिया की छोटी-छोटी काटेजें बनी हुई थी । जा कि इस समय बन्द बाँधों की तरह पुप पारनी में खनी थी । बाँध क दूसरी तरफ रातनी ससबटहीन पारर की नाति फरनी हुई थी । बाँध पर जो एकमात्र घाट बना था वह अपनी बुजियों तथा सीड़ियों में भिन्न लग रहा था ।

—बिरान बाबू ! आपका गाना आता है ?

बिरानबाबू ने बड़ी आर का ठहाका लगाया । चारों ओर का फँसा हुआ बिम्बल मौन चीक कर इस ठहाक से मुक्ति हा गया । पड़ों पर क मात हुए कीर और घूमरे पक्षी चीक उठे । पहा की फन्कड़ाहट भी हुई ।

—क्यों ? आप इन चारों में क्यों हैं ?

—इसलिए कि वही वन्द हुआ ।

—बिरान बाबू ! आप बड़े रसालमक व्यक्ति हैं ।

—मेरा रसाल है कि हम साग अपने बाँध में यह आप आप का संबध हना लें । बड़ी बटिनारी हूती है ।

—मुस वारी आपति नहीं है ।

—अब टीक है ।

और बिरानबाबू मरी क तल पर कभी-कभी ऊबचूर कर उठने वाला दही मजकी का ताबने ल ।

—क्या माच रह है

—नोन म ! कच ना करा । अरुज में धायर ! प्रत्येक बाँध जो व्यक्ति का पप विठ होना पने ता बना करे ?

—प्रयास करे ।

—लेकिन कब तक ?

—जब तक विजयी न हो जाए ।

—विजयी होना क्या उपलब्धि है ?

—यदि विजयी होना उपलब्धि नहीं है तो पराजित होने पर परिष्ठाप क्यों ?

—तुम्हारा तर्क ठीक है लेकिन धीरे-धीरे ! बताओ मैं क्या करूँ ?

—किस बारे में ?

—यह पुस्तक डोंगी व्यक्ति है । हरिजन-कण्ड सारी कण्ड बगवा-कण्ड महिला कण्ड—जाने किस-किस कण्ड का चन्दा लाये बीठा है और जब काम पड़ना है तो चन्दे का सारा हिमाज-किताब गलत बनाया जाता है । हर बार मुझे अपना मुँह बन्द करने को बाध्य होता पड़ता है ।

—लेकिन क्यों ?

—क्या क्या ? पुस्तकें साहज नामांकित बनीं हैं । एक बड़ी पुरानी सामाजिकता है । राजनीति के कर्मचारों में मिनती होती है इसलिए उन्हें पूर्ण अधिकार है कि वे छोटे राजनीतियों का शोषण करें । कभी तुम सोच सकते हो कि मैं जबैतिक काम करता हूँ ? अपनी जीविका बनाने के लिए मुझे 'वीर वर्जन' में वा 'स्पेक्ट्रेटर समाचार' में छल बौरा लिखकर बस-नाथ रुपये कमाने पड़ते हैं ? और उम पर तुरी यह कि मैं साम को "सहर मन्डार" में बैठकर क्यों नहीं जारी बेचता ?

—तो तुम और काम क्यों नहीं करते ?

बिघन बाबू फिर हँसे लेकिन पीड़ित ।

—इसलिए कि मुझमें कहीं आम है कि देश को आजाद करवाया जाए । मैं भी एक आदर्श के कारण राजनीति में आया । कुछ वा परिष्ठाप इस बात का है भीतर । कि संश्ले के शोषण को [तो शोषण कह कर सब उसक बिबड सरयाग्रह करने लेकिन इन पुस्तकें साहज जैसे शोषों के शोषण को आप त्याग उपस्था देससेबा आदि कहने के लिए बाध्य हैं । आज पाँच बरस से नुट रहा हूँ कोई उत्तर नहीं मिलता । मैंने अपने बर्जन पादरी से भी पूछा इस बारे में वह भी हँस देता है ।

—कौन बर्जन पादरी ?

—जरे ही मैंने तुम्हें बताया नहीं । मैं सोम और बृहस्पत को एक बर्जन-पादरी को हिन्दी पढ़ाने आता हूँ साम को एक घंटे के लिए । फारर ऐडिटिक नाम

है उतना । कभी तुम मेरे साथ चलना बहुत पसन्द करोगे ।

—सकित तुम इतनी विस्तारों में भी कैसे इतने मुनी बिलते हो ?

—तो क्या कहें ? व्यक्ति कितने दिन राये ? और फिर हर किमी के सामने क्यों राये ? क्या काम ?—उन लोगोंको अपनी वास्तविकता दिखाइए जो मेरे बारे में झूठी-झूठी अफवाहें फैलाते हैं ? मैं कहीं का दासीपुत्र राजकुमार हूँ या वह साधू हूँ जो भाग कर देश-सेवक का बाना मोढ़े है । श्रीधर ! यह दुनिया है जिस पर मैं दिन रात पान की पीक पूका करता हूँ । मुझे पूणा है इन सबसे । तुम स्वयं एक दिन देखोगे कि ये सब चरखा काठते हुए नड़िये हैं जिन्होंने अपने खूनी मन्त्र गोमुनी में छुपा रखे हैं ।

श्रीधर बाबू ने कहा कि विद्यान बाबू के मुँह पर सिखाव ही सिखाव तन उठे हैं । सिकाड़ी हुई भवा से बे दूर, अमकार, चाँदनी आकाश मकानों की घेतों मोर की सेन नदी को भीर कर धूर रहे हैं ।

—अच्छा श्रीधर ! पछा अब । न तो आज रात स्वराज्य ही माने बाका है और न पुन्तके साहस जैसे लोग ही समाप्त हाग भासे हैं । बेचारी नीद को क्यों खराप किया जाए ? हाँ मुना कौनसा काम करना पसन्द करोगे ? क्योंकि स्वराज्य की स्फूर्ति स्वयं अपने में कोई काम नहीं है । चाँदनिया के सिपे, वह तो पीक है । जितने बड़े आदमी बनकर इसमें आभोगे—उतने बड़े विद्यानवक कहलायाप ।

—हाँ-विद्यान । मैं भी सीप रहा था कि कुछ काम घाम किया जाग । सकित कुछ समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए यहाँ ?

—मैं भी पिलहास कुछ नहीं साब पा रहा हूँ । अच्छा जैर दिया जाएगा । अगर राजनीति ही चुनना चाहोगे तब उसका भी रास्ता है ।

—कौन सा ?

—आज नहीं ।—क्योंकि वह रास्ता नहीं है श्रीधर ! उत्सम है । उस पर पककर फिर और कुछ नहीं रह जाता । और में उस भाग या उत्सम का परामर्श नहीं दूँगा ।

विस्तार पर सोच ही विद्यानबाबू ठो सी गये लेकिन श्रीधर कभी माने हुए विद्यान के निरिपन्त मुँह को देखते और कभी विद्वकी के पीतों क पसनों से दिवती बाहर की चाँदनी हल्का धुँपका रूप देखते । न नीद आँसों क बाहर ही थी और न पसनों के भीतर ही नीद तो विद्यान बाबू के पाम थी ।



पिछले एक महीने से श्रीधर बाबू का यह नियम रहा है कि ब सवरे चार बजे उठकर नुमने जाते । दिन में कोई कामकाज हुँडा जाता । महापजबाडा की तरफ निकल जाते और वहाँ के पुस्तकालय में बैठकर पडा जाता । इस बीच काम बकाने के लिए हरिबनों के लिए खोली गयी रात्रि पाठशाळा के लिए वे मासबा मिछ वाली मजपूर बस्ती बके जाते । वहाँ से लौटते दस बज जाते और खाना खाकर जब डेरे पर पहुँचते तब प्रायः छाबनी की पुलिस छाइन के बटि के प्यारह या ती रास्ते में बजते या फिर डेरे की सीड़ियों पर । कभी विधान बाबू छोटे मिलते या फिर बागते हुए श्रीधर बाबू की प्रतीक्षा करते होते ।

पिछले तीन बिनो स विधान बाबू नगपुर गये हुए हैं । न तो उन्होंने ही बताया और न इन्होंने पूछा ही कि क्यों जा रहूँ ही ? आज जब वे रात्रि पाठशाळा पहुँचे तो उसे बन्ध पाया । रोक तो उस डेसकियों वाली पाठशाळा के बरामदे में उनके

पहुँचने के पूर्व ही आठ दम लड़कों की बहू कला बीच में सासटेन जलाये जा-  
 ओर से पाठ पढ़ती मिलती । उनका पहुँचने के बाद कुछ मजदूर भी आते । सेकिन  
 आज न तो कोई लड़का ही बहू का और न ही वह पाठशाळा खुली हुई थी ।  
 कपला वा जैसे आज कोई आया ही नहीं । कुछ दूर तक वे सामने के पीपल के  
 पास खड़े होकर सोचत हुए टाहू सने जगे कि कोई उधर से आये ता पूछें कि  
 क्या बात है आज कोई क्यों नहीं आया ? सेकिन यत्र हाड़ी जा रही थी फिर  
 भी, कोई, न ता आया ही और न लिखायी ही दिया । मजदूर बस्ती अस्स में  
 सामने के मदान तथा पोपर के पार थी । न हजर बिरफी भी और न पकड़ी, सड़क ।  
 वे बस्ती जाने बास कच्छ रास्त पर निकल आये । मैदान में सूब ठण्ड थी । जाइँ  
 का काला आकाश आज निरन्त्र था इसलिए बहुत जेपा लग रहा था । मजदूर  
 बस्ती की सापड़ियों से कमी-कमी किनी चून्हे को भाग की सपक दिख जाती ।  
 इस पोपर में मिल का मसा पानी सड़ाप मार रहा था । सिबाय घंटिंग करते  
 इंगिन की आवाज तथा मजदूर बस्ती में कमी किनी के जात्र से पुकारने के और  
 कोई शब्द नहीं था । मिल के पानी की सड़ाप रात में इन समय जब ओरों पर  
 आ रही थी । वे बस्ती में घुस ही रहे थे कि तभी मरे बाकी सापड़ी से एक  
 औरत भीमती हुई बाहर निकली और उसका पीछे-पीछे उतनी ही तेजी से मासियाँ  
 बकता एक आदमी निकला । उमर जपट कर औरत का बहूँ गिरा दिया और  
 उस मारना शक किया । आम पाम की सापड़ियों ने जैसे अपने मुँह खोल दिये  
 हों और आदमी-औरतें जमा होने लगे । वा एक सासटेन भी थी । साग पिटती  
 पन्नी और पीटत पति को मात्र दशक मात्र से देख रहे थे । आदमी औरत को  
 छाती पर बैठा उसका मला दाब रहा था और मासियाँ बक रहा था । दो एक  
 मजदूरों में भीषण बाबू को पहचाना और कुसफुसाया । भीषण बाबू को यहाँ सभी  
 'गुड जी' कहकर पुकारत थे । मजदूरों ने मेरा हीसा कर दिया और 'गुड जी'  
 को बस्य दग्दने दिया ।—अरे, यह तो रघुनाथ है ।

—क्यों रघुनाथ ! क्या बात है ये ?

रघुनाथ ने जो इस समय ताड़ी के मय में चूर लग रहा था टारने बास की ओर  
 एक बार सास-सास आँसुँ जटायी और हठके से घुस और बिसूरनी हुई । औरत  
 का टेंटेआ पुनः और से बाबा तो बहू भीग उठी । रघुनाथ ने भीषण बाबू की  
 ओर उमी तरह देखा और हँसत हुए बोला

—गुड जी ! यह मेरी औरत है इसलिए मार रहा हूँ ।

—उधर पीकर परबाली पर हाथ उगाने सरम नहीं जानी ?

—इसे छिनाका करते घरम नहीं जाती तो मुझ इसे भारने में क्यों घरम माएगी ?

—छोड़ी उसे ।

—बाबू में इसको नहीं छोड़ सकता मुझ भी । बाबू मैंने इसको इच्छे बहने के साथ देखा किया है । बाबू मैं मजदूर हो गया हूँ तो क्या हुआ अपने गाँव का मैं पहचान हूँ समझे ? य सली पट्टकवान की बीबी हुआकर उस बाईंग सेक्सन के बावू से फेंगेगी ? लून पी बाईंगा इसका । यह समझती क्या है ? और रघुनाथ ने उमी शॉक में अपनी घरवासी को-एक चाँटा बड़ दिया । उसकी घरवासी ने अब बिसुरमा भी छोड़ दिया था । वह इस समय एकदम काठ हो गयी थी । गुब भी की उपस्थिति का फायदा उठाकर दो-एक दूसरे मजदूर आने बड़कर रघुनाथ का पकड़ कर घरवासी की छाती पर से उठाने में लगे थे और रघुनाथ जोरों से उन मजदूरों का ही गामियाँ देता जा रहा था । श्रीधर बाबू की स्म्या कि इस घटना को कोई भी गंभीरता से नहीं के रहा था जब कि उन्हें मजीब स्मिति बिसुप्या हो रही थी । बिधान बाबू की बाँते याव जा रही थी कि—श्रीधर । जीवन के प्रत्येक स्तर पर केवल कुछ ही कुछ है । सारे कुछ एक से होते हैं । उनकी किस्में अलग-अलग हो सकती हैं लेकिन कुछ तो एक जैसे ही होते हैं क्योंकि उसकी पहचान ही एक है और वह यह कि वह आपको कुछ देता है चाहे आप मछे हों मरपट हों स्वस्थ हों रोमी हों मर हों मारी हों—और तो और भीधर । आप पशु भी हो जाए तो भी इस कुछ से मुक्त नहीं हो सकते । सबसे बड़ा सुख भी कुछ हो सकता है लेकिन छोटे से छोटा सुख भी सुख नहीं बन सकता । श्रीधर । कुछ ने जिन आठ दुखों को गिनाया था न उनकी अब अनेक सन्तानें हो गयी हैं । हाकीकि बिधान बाबू इस बात के बाद भी हँस दिने थे । लेकिन सब तो यह है कि कभी यह पता ही नहीं चलता कि कब कौन सी बात बिधान ने एक बम ही गंभीर हा कर कही है और कब यों ही । वह हमेशा अपनी गहरी सी गहरी महारई को भी इतने सारे से प्रस्तुत करते कि लगता कि अरे, बस बुटनों-बुटनों ही बरु है ?

रात्रि पाठशाळा का सारा मार बिधान ने रामसिंह को दिया था । रामसिंह स्विनिम सेवधन में काम करता था । वह अपेक्षाकृत बड़ा पढ़ा था । रामसिंह को सब तक एक मजदूर जाकर बुझा काया कि गुब भी आये हैं । आते ही रामसिंह ने बताया कि बाबू निष्क की झूट्टी होने पर अब मजदूर वस्ती सीट रहे थे तो रेल की पटरियाँ पार करते हुए माताबीन शॉटिंग करते हुए इबिन की बनेट में जा गया और कट गया । बाबू वस्ती में इधीकिए सबासी है । माताबीन की-

औरत तो जैसे पायल ही उठी है। आपका खबर देने एक लड़क का नेत्रा तो था कि आज पढ़ाई नहीं होगी लेकिन आप स पुस्तकालय में भी मुलाकात नहीं हो पायी।

जित समय रामसिंह के साथ भीषर बाबू मातादीन क घर पहुँचे उसकी बिषबा अपने एक मात्र गोश्र वास वस्त्रों को गोद में लिए पधारयी आँखा स अँधेरा घूरती सुने घर में पागलो सी बँटी थी। उसक कपड़े अन्तर्म्यस्त थे। तीन बार सासनेर्गो तथा इतने आदमियों की भीड़ बलकर आसपास की ज्ञापशिया से लोप निकल आये। वे समसे आँख-मड़ताल क लिए पुसिस आयी है। एक औरत ने सपक कर मातादीन की बिषबा के कपड़े ठीक किये लेकिन बहु खसे कुछ नहीं देख रही थी। देवीसिंह ने हाथ की लासटेन बिषबा रामकली के सामने रखी और घुटनों पर बैठत हुए उसस बोला

—रामकली! बच्च गुरु जी आये हैं। सब उठ इस तरह स कितने दिन चलेगा? रामकली थोड़ी देर तक तो निविकार घनी रही और फिर उसन पूर कर पहले देवीसिंह को देखा और फिर गुरु जी को दखने के लिए उसने गर्दन तथा माँके ढँके उठायीं।

भीषर बाबू ने बड़ी हिम्मत कर उसस कहा

—रामकली मुब-मुब ता आते ही हैं लेकिन उनको सहना ही हाता है। इसके आये वे क्या बालें? कुछ समझ नहीं पा रहे थे। साथ ही उन्हें लगा कि रामकली जैसे उन्हें देस ही नहीं रही बल्कि जैसे बहु मजबूत मुदितियों में लड़ बाकू पकड़े उन्हें ऊपर से नीच जपेड़ रही है। वे सहम गय। एक मात्र कौट से जितनी ठंड वे नहीं बच्चा पा रहे थे बहु मारी की सारी टक उनकी नसों में गर्दन क पास मांस में पीठ के पास रीढ़ में जैसे काटे जा रही है। वे और भी कुछ कहने ही बाल थे कि रामकली सहसा चीत्कारी और पाढ़ें मार कर रो पड़ी। तमी बहु बिजली की तेजी स उगी बच्चा सीने से सगाये भीड़ को अदम्य दक्षिण के साथ ठेकरी हुई ज्ञापशियों क सामने फँसी हुई रेण की पशिया की तरफ भागी। उपस्थित एक राज तो कुछ भी नहीं समझ पाये लेकिन तमी कुछ साथ रामकली को पकड़ने के लिए दौड़े। अजभर स आज बानी पञ्चा एषमत्रम पड़मड़ाती आ रही थी। इजिन बरी तेज साइट क साथ-साथ तेज मीठी भी वे रहा पा। सोपों ने उस तज रोवनी में देखा कि रामकली क बाल लुप्त आये हैं जैसे बहु ऊपर आँके बन्द किये ताक रही है। सीने से बच्च को दानी हाथों स सटाये इजिन क द्वारा रोह जाने की अन्तिम प्रतीणा में लड़ी है। साथ सपक भी लेकिन तमी इजिन रामकली और उसके बच्च क ऊपर स हँसर धीम होने की धजा में चुबर गया।

रात काफी देर से वासे पर लीं । लाने को मन ही नहीं किया इसलिए  
 वे बाबे की ओर गये ही नहीं । बाबू पूरे रास्ते भर खीर जब बिस्तरे पर लटे  
 से तब भी सरो की याद आती रही । बार-बार बे करबटें टकलते लेकिन इजिन  
 के प्रकाश में फेंकी हुई रेल-गटरियाँ बमबमानी बिल्ली और उन्हें लगता कि ठीक  
 ऐसे ही रामकली के स्थान पर सरो बेवशत को छीने से सटाये बड़बड़ाते आते  
 इजिन के सामने लड़ी है । जाने कितनी बार बे करबट बरकते खीर उठनी ही  
 बार इजिन सरो और बेवशत को बीच ही कुचक पाता । हर बार बे विभाग में  
 बोले उस वाक्य में 'माग लो' और जोड़ देते जिसमें किये अपनी इस राका का  
 निराधार होने का कारण प्रस्तुत करते । अगर केवल वावा भाभी ही होते तो सरो  
 पेंछ कर सकती थी और भला बे ही तब सरो और बच्चों को ऐसे कैसे छोड़  
 था सकते थे ?—माँ और बापू कभी भी सरो को ऐसा नहीं करने देंगे ।—  
 लेकिन क्या रामसिंह ने दूसरों ने तथा स्वयं उन्होंने यह जेप्टा नहीं की थी कि  
 रामकली ऐसा न करे ? लेकिन उसने सब की उपस्थिति में भी कर ही तो लिया ।  
 निराशा में को भी कुछ कर सकता है ।—और यही सब सोचते हुए बबराते

रात बिताने का प्रयास कर रहे थे। क्योंकि अपना ही वाक्य कि—मान को सरो ने ऐसा कर सिमा हा तो ? तो ? तब क्या होगा ? वे कैसे जान पाएँगे ?

इस बीच कब साँझ सपक गयी पता ही नहीं पया। लेकिन जब नीं टूटी तो जिड़की व घोड़ों से जाइों की सबेरे की गुनगुनी धूप उनके कम्बक पर गिर रही थी। रात भर क बड़ाये अगों को धूप बड़ी मोठी सप रही थी। नीचे धीनती एसपी का नरु बड़े बाराँ पर चुका हुआ था। उनकी महरी रपड़-रगड़ कर बतन बजाती साँझ रही थी। बाताबरन में आमसेट की पब मरी थी। पहली बार इस का मितलाने वाली मबीव गंध के बारे में जब बिजन बाबू स पूछा था तो बिल्कुल शैतान बन्ने की तरह मुँों की दासी बोसकर हाथ से मडा बनाकर बताया था। जिड़की की राह लबी बीच और काटेज इस समय बड़े सुहाने लग रहे थे। जीवन में समबत पहली बार धीपर बाबू मुराँय के बाद जाने थे। और किसी दिन यदि ऐसा हा गया होता ता मन आत्मगर्भानि से भर उटना या प्रायश्चित में कम स कम मायगी-मत्र की पाँव माछाएँ और फेरी जाती तबा दिन भर जिबल ही रहा जाता। उन्होंने अपने को इतने वर्षों में 'निदमा क लिए' मगा लिया था। लेकिन आज धूप मरी जिड़की की भीतर पर तकिया रख कर बूहती टिका मछोक की सिसरी पतियों स नीसा प्रमद आकाश देखता बड़ा सुहा रहा था। पीठस बर्षी धूप मिन्पुरगी आकाश धानबर्षी मेक तथा नाना रंगी काँपती नरी-छाँहों को थ जैसे स्वयं की सम्पूर्ण मन स समपित कर रहे थे। एपा कि यहाँ इस समय सरा हाठी तो हम छत पर एक धार बपा होता त्रिम पर सबरे धोनी गयी सरो की साड़ी मुरती होती। वे सहमा करुना करने स्ने कि हूँनी स मरा स्वस्य बारबार बोअता हुआ सरामुन हम छत की धूप में कैसा लगता ? इस समय धूप बड़ी और सुठोडा अपने स्वस जान की तयारी का धार करती होती। मान को हम जिड़की में ठीन सामने मेरी ही तरह सरो भी कहती पर मुँह टिकाने आकाश ताकती तो हम सोम वहाँ तक आकाश में बेस पाते ?—और वे मबमुन दूर दूर का आकाश ताक रहे थे। मानने छत की मूँडेर पर बिल्ली धून में फूँती हुई पबे सिबोड सरमा रही थी। अर्थात् की आँसुओं में सिलहृदियों की-की बोबने हुए पैतानी कर रही थी। कभी कभी बिन्पी जिमाकन गिलहृदियों की पैतानी को अर्धनिमित्तित दट्टि स देख एती और अगले पंजा पर गिर रन धून-नान में आँसे बन्द कर केनी।

ब वही मबबतन में रामरानी वाली दुपटना बराबर सुहरा रहे थे लेकिन

वे बेतनस्तर पर उस बारे में सब तक नहीं साबना चाह रहे थे जब तक कि बिनाग बाबू न आ जाएँ। मूक पेट में हुस्की सुरभी पड़ रही थी। वे सबरे कुमने न जा सकें तो इसका मतलब यह तो नहीं कि भागे क सारे काम यथावत न किये जाएँ। लेकिन आज बस अपने ही बिट्टक काम करने को मन कर रहा था। उन्हें पुस्तकें साहब ने बुझवाया है घाम को लेकिन वे किसी भी पुस्तक साहब या दायात साहब कोई हों किसी क भी यहाँ नहीं जाएँगे। आज क बस इस रूप भरे आकाश अज्ञात में इतना जल बहा न जाने वाली वर्षणी नहीं मरगाती हुई बिस्की पृथ्वी गिर-हरिया का कम स कम बस बजे तक देखेंगे—सकित भूय भी तो मय रही है।

वे चाहते बट्टर थे कि ऐसा करें कि मरी रूप में बैठे हुए आज के दिन को खिबार बना डालें लेकिन तीसरे पहर तक किरायें पड़त रहने के बाद उठे और बिस्कुट ही इच्छा न होत हुए भी पुस्तकें साहब क घर की ओर चले पड़े। वे दिन भर जिस तरह से आचरण करते रहे उठसे स्वयं को ही आनर्ष्य होने मगता। इसीलिए वे कभी-कभी स्वयं को सू लेत कि कहीं अपने को छोड़ तो नहीं जाये है या स्वयं तो कहीं नहीं छूट गये है ?

एक पयसह गन्ना पैरा जा रहा था। वे गप्पे का रस पी रहे थे। सामने नदी के उस पार 'जूमी-इन्दौर' के पुराने डंग के लकड़ी क पेशवाई मकान कुमजिने तिमबिलक बड़े हुए थे। पहाड़ी पर बसा यह पुणना इन्दौर जठारहबी-उन्नीसवीं सदी के युग की याद दिलाता है जब कि इतिहास आकमभकारियों और स्टेरों की लडवारों की लकड़ें लिखती थीं। नदी के पुल के ठीक सामने उसपार हरसिद्धि का मन्दिर लकड़ी की महाराजों में बूय सा रहा था। इमकियों के गश्ति कहाबर पेड़ असंपुवत स धारदीय तीसाबास में अपना मटमसा हरापन छितराये उँप रहे थे। गरीब मराठी तथा दलिया महिलाएँ नबी के बाट पर कपड़े को रखी थीं या फिट्टी 'कूडी' (कूडा) की जगत पर लड़ी बड़े क गण में रस्मी बाँध रँडूट से पानी लीचने में मयी थी। बाहिने हाथ डूरी पर इप्पपुरे का पुल तना हुआ था जिस पर कमीकबाक कोई मोटर भी गुजर जाती लेकिन अधिकतर या तो

भोटे लंगे या फिर बगिचों ही ज्यादा निकसती होतीं। वैसे अब बीमबीं घती के दूसरे दसाक में पाल्कियों की प्रथा दैनिक व्यवहार में बाधी कम हा बली थी। पहले तो पुरय भी पाल्कियों पर चढ़कर ही सारा काम-काज किया करत थे। थीमन्त बग बिबिकाओं पर चढ़ता था। सेकिन थन या तो बड़े-बड़े पंडितों पुत्रारियों कमाबाचका या बूडा-अपयों क पुर्यों में और कोई पाल्की या बिबिका नही चढ़ता है। थीमन्त बग भोड़ों बगिचों और मोटर-तांगों की ओर मुकता था रहा है। हाँ यह भद्रपरो की गारियां अभी भी पाल्की या बिबिका ही चढ़ती हैं। बाहू किसी क यहाँ बे जा रही हों या पूजन-सत समापन करने जा रही हा गारियों का एकमात्र बाहन यही है। छोटे घरों की स्त्रियां 'छेड़ा' (भूषट) निकाले पैदल ही कहीं नी जाती-जाती हैं। मारबाबिया में पाल्की या बिबिका का प्रचसन नही है। बहुत हुआ तो 'सिठानी जी' बग्यी में पंचरंपी दुकूस का छेड़ा एक आँख क पास दो अगुछियों से घाम भागे पीछे लडे नौकरों स बिरी निकल जाती रही है। इस समय नी पुस पर तीन चार पाल्कियां कहार दुसकी में सिंये बस जा रह थे। कुनी-इन्तौर से नया-इन्तौर के इस पुराने पुस पर अधिकांश बसिबी लामां का पूनेसाही पगदियां चमकाते सता धंभा हुआ था।

उस बार थीयर बाबू पुस्तके साहब के घर ययें वे सकिन कुछ भी याद नहीं था कि किस रास्त स गय थे सेकिन आज व इन सारतीय अपराहन में मारा वृन्द अपनी माँखों में सिंये बये जा रहे थे। आज बे मन से भी बारबस्त ये इमीसिए निरिबन्त थे। पुस्तके साहब की दावान में बीसी ही आजम बिछी थी और उस दिन की मर्ति आज भी मापबराब मुबदिरकों से बसा हुआ था। जीना चढ़कर जैसे ही थीयर बाबू बरामदे में पहुँचे मापबराब ने एक बार मिर ऊँचा कर चम के पीछ अपनी वाली टोपी ऊँची करते हुए देखा और अत्यन्त अविश्व संर्भ में बोने में रकी कुर्मी पर बैठने को कहा मर्ही बरिब आरग दिया। जिनका स्पष्ट मतलब था कि पुसत मिक्ने पर 'साहब' को सूचना कर दी जाएगी कि—भावे है और तब जैसे होगा बसा किया जाएगा। अन्दर जान काम दरवाजे पर एक बिद पनी हुई थी। जिसक पीछे से औरतों-बच्चों का बोसमा थीपना मराठी में जा रहा था। यह-एकर कभी किसी छोटे की बिस्ताहट नी मुनायी पड़ जाना। बाठाबरन में जाने की भी संघ थी। कम रहा या हम पर में बडे सगासाण ठरीक



सि सम्झा हो रही थी। मकान जहाँ तथा जिन ढंग से वा उसने लग रहा था कि पुस्तक साहब पुस्तनी सीमन्त है। मकान के चारों ओर काफी चुली जल रही थी जिसमें छोटा-मोटा बगीचा लगा हुआ था। एक कम पीछे सिरे पर, जो संभवतः पिछवाड़ा होगा केले का एक झुंड लगा हुआ था। शायद उसी तरह सईसलाना भी होया क्याकि हवा में लीव की हल्की बू भी था रही थी। श्रीपर बाबू ने अपनी चुली के हत्थे पर और भी झुक कर बेला रसिग के सहार लीये—अरे, गार्मे भी हैं? तभी माधवराव को बुलाने कोई बरारी लीकरानी आयी। एकदम उछलते हुए ढंग पर माधवराव बिक उठाये लड़ी बरारिन ली ओर बड़े तथा बिक की ओर वह लीकरानी के साथ गायब हो गये।

दियावली की बेला हो चली थी। नीचे बगीचे के मैदान में बड़ी बरारी लीकरानी हण्डेबामी झाल्टेनों से भरकर छोटी-छोटी पिमनियों तथा का बड़े ही बिषय रूप से फैलाये कामिन्त पोंछ रही थी तैस भग रही थी। दो एक बच्चे केले के झुंड के पास लड़े फूल तोड़ने में लगे थे। उन्होंने बेला कि बरामदे में सिर पर हाथ बरे कुछ मुबकिन्त बके-मरि बैठे थे। कुछ भीरे-भीरे बतिया रहे थे। तभी बिक के अन्दर से कोई महिला 'माधवराव' माधवराव' कह कहकर माधवराव को डाँट रही थी। श्रीपर बाबू को सारा बातारण था बच्छा लग रहा था कि कितना घान्त है, घाफ-मुमरा भी है लेकिन जाने क्यों इसके ठीक बिपरित यहाँ के लोग लग रहे थे। तभी माधवराव बिक उठाकर बाहर आये। एक मुबकिन्त से बोले

—रामनाथ ! फीस के बाकी के रुपये अभी ही देने होंगे।

—लेकिन बड़े बाबू ! इस बार जुबार की फसल आने दो पाई-पाई दे दूँगा।

—वो तो ठीक है, लेकिन बकीछ साहेब वो पूरी फीस मिल जाने पर ही अब पैरवी करेये।—हाँ साहेब आपको भीतर बुलाया है।

बाबू का अन्तिम अंघ बड़े ही बसताऊ ढंग से श्रीपर बाबू से कहा गया था जैसे मुँडेर पर एने किसी गमले से कुछ कहा गया हो। अभी वे इस पछोपेछ में थे कि किस प्रकार अन्दर जाएँ तभी बड़ी बरारी लीकरानी बिक उठाकर बोली—तुमासा साहेब बोलवठे।

और श्रीपर बाबू चल पड़े। घर काफी प्रशस्त तथा बेमबपुर्ण था। दाखानों वाले तीन बड़े कमरे पार कर वह बरारिन उन्हें एक मसिमारे से होकर ले गली। मसिमारे में अंडाकार सिङ्कियों में दो एक बच्चे बिङ्कू को बीच वाली रैकिंग के अन्धे पर छोड़ी टिकाने नवागन्तुक की ~

सड़की ने सड़के से पूछा

—हू कोण आहे बाळ ?

झोर बडका मूँह में भरी मिथी क डसे का जीम की नोंक पर रखे जीम निकाल देय र्हा बा । सक्का अयेसाह्ठ छोटा बा । पठा महीं उन 'बाळ' ने पूछने बाळो सड़की को क्या कहा । बरारिन एह जीम के पाम खदी थी । जउने बाँझों स ऊपर की ओर संकेत करत हुए कहा

—बर्डी आहे ।

झोर कासा मगसम्भ्र पहले बहु बरारिन बिना उतर या बित्रामा की प्रतीक्षा न केली गयी । गलियारा इन जोने क पाम भाकर लम्बी छत बन गया था । जहाँ काने में एक अनार का वड़ा सा गाछ खड़ा था । अनार लगे हुए थे जिन्हें गिन क दिब्बों स रक्षित किया गया था । बायें हाथ एक बड़ा सा पक्का मुलसी-नाराग बना हुआ था । मुलसी की पय भी आ रही थी । एक सता बाँय हाथ सामने क कमर पर ऊपर लगी थी । श्रीरंग बाबू जीना बहून लगे । एक टांग को इन अच्छे सगने बाळ सम्पन्न घर से जाने क्यों उल्ले पैरा लीज जाने का मन हो आया ।

एह बटी भी चौकी पर मटेर बाँदनी बिछी हुई थी और कई मास तकिये लगे हुए थे । बे त्रिम समय कमरे में पहुँचे एक बड़ी सी हण्डे वाली कासटन बीचों-बीच जल रही थी । उहें आशा थी कि पुस्तके माहब कमरे में होंगे लेकिन कमरे में बे उम समय नहीं थे । कमरे की बाहर की दीवार में चार त्रिइकित्ती लगी तरह की थी त्रिम प्रकार की अमी गलियारे में लगी थी । इसक बाँ उहें लगा कि कमरे में उतना मात्र सामान है कि बे कमी यात्र नहीं रख सकत । चारों त्रिइकित्तियों के ऊपर तीन बड़े त्रिलिख लगे हुए थे । दीव में होलकर महाराज का पा तथा उमक दातों आर पंचमबाई और रानी बिकनोरिया क तसलिख थे । बाँयें हाथ बानी दीवार में साकामय त्रिसट का लिख था तथा बाँयिने हाथ बायी दीवार पर रानी अहिस्पाबाई का । कुछ छोट लिख चादिक लीनामों तथा गाधामों क भी थे तथा रवि बर्मा क भी कुछ प्रसिद्ध लिख थ । छत में मटेर बाँदनी लगी हुई थी तथा उममें मुसाबी कागज क पूर तथा रींगे क हूडे और एक छत्ता सा फानूस बीच में लटका हुआ था । बुमने बाळ बरबाडे के ऊपर एक दीवाल घड़ी टिकविक कर रही थी । आस्मागियों में किताबें थी । चौकी पर एक ठगप लकड़ा का एह बस्सा था त्रिम पर पीनस का काम किया हुआ था । उमक पाम ही कुछ बानूनी किताबें रखी बरमा तथा बलमगान और बाबू की एक मुगलों

बाली पीतल की डिब्बी । एक पानदान भी स्टूक पर रमा हुआ था । फर्श पर बाहर दाजान जैसी सास जात्रम वहाँ भी बिछी हुई थी । कमरे में अंगरबत्ती की सुमप भा रही थी । सम्भवतः पुस्तक साहब का यह अध्ययनकाल था । कमरे में वा एक कुरसिया भी थी । वे दरवाजे के पास पढ़ने वाली बर्सी पर बैठने की अनी घोष ही रूँ के कि बीवार के पार बगल में लड़ाई सुनायी वी । उपर की बिसा में ही उन्होंने देखा कि एक पर्वा गिरा हुआ है वा कि निरुपय ही उपर क कमरे में जाने के लिए होगा । तभी किसी गारी कण्ट पा मराठी न कुछ आदेश सुनायी दिया और उत्तर में पुस्तक साहब का माथ 'बडर' सुनायी दिया और पुस्तक साहब कमरे में भाये । धीपर बाबू उन्हें दर पड़े हो गये और उन्होंने अत्यन्त उपेक्षारमक सौजन्यमात्र से कहा

—बैठिए, बैठिए ।

और जाकर वे जोकी पर माथ तकिये क सहारे आसित हुए । वे इस समय घोड़ी कमीज पहने के तथा कमीज पर कादमीरी धातु ओड़े हुए थे । इनहरे बदन का व्यक्ति व्यक्तित्वपुन था । माथे पर त्रिपुण्ड्र का तथा जोली के यहाँ बासा का घेरा छोड़कर सेव सिर मुच्छित ही था । आठे ही उन्होंने एक टकार ली फिर पान बनावा गया तथा तम्बाकू पामी गयी । पहली पीक उगासभाग में जय के फेंक चुक तक चरमा लगाकर कानून की एक किताब में से कुछ सोचते हुए पडा गया । इस बीच धीपर बाबू को बड़ी ही उत्कमन होने लगी थी कि वे क्या इसी तरह बैठने के लिए युक्तबाय गये हैं ? क्याकि प्रवेशने के बाद टकारने से केकर पढ़ने तक कहीं यह नहीं कम रखा वा कि इस कमरे में कोई और भी बैठा हुआ वह व्यक्ति है जिसने मिलने के लिए बुसमाया गया है । अगत्या किताब बन्द कर चरमा रखते हुए वे बोले

—तो आजकल आप क्या कर रूँ है ?

—कुछ खास तो नहीं ।

उत्तर सुमकर पुस्तक साहब ने एक क्षण को उन्हें बुरा बिसका स्पष्ट अर्थ वा कि क्या मुझे इस तरह का उत्तर दिया जाना चाहिए ?

—हूँ ।।

और इस उम्मे 'हूँ' के बाद वे गाव तकिये पर नीचे बिसक जाये और दोनों हथेलियों को सिर के ऊपर से बाकर मुँघटे हुए बोले

—आपको कहीं काम-काज मिल गया ?

—जी मनी नहीं ।

इस उत्तर पर वे काफी दर तक चुप बने मुँह का पान बुसाते रहे ।

—मुझ से कहा था गावर बिगन बाबू ने ही कि आपको कोई काम-काज चाहिए।

—जी।

—अब भाई आप तो जानते ही हैं कि बग-सवा सा पूरा खान-लेवा कान है।

—जी हाँ यह तो है।

—मानने किसी स्कूल में काम छोडा ?

—जी। कहीं जयहू नहीं है।

—यही ता है। तुम्हारे द्विती स्कूला में यही गड़बड़ी है। कभी तुम लोगों में मिठा का प्रसार नहीं है। अब अगर आज महाराष्ट्रीय होने को किसी गापा में जकर हा जाता। हाँ किसी क यहाँ न हो घटे-दा-बने के लिए भर्तीनदीमी ही कर ला। 'खारी भण्ण' में जबरन ता भी एक भाग्नी की। पता नहीं क्या हुआ उमका। एक मादमी माया तो था। पता रपाना। अदल में मैं तो इन मुन्दमों और दिगीराम्न परिपण के काम-काज से ही पुसत नहीं गाता हूँ।

—जी हाँ।

—कहाँ रह रह है ?

—बिगन बाबू के यहाँ।

—हाँ ये बिगन बाबू तो कहीं गये हुए हैं न ?

—जी हाँ।

—ये बिगन बाबू भी पुब है। कभी यहाँ कभी कहीं। कोई नी काम बन कर नहीं करते। अष्टा कोई काम होतो बडा रण्ण। कभी तो मुझे सासबाग धीमन्त सरदार से मिलने जाता है।

—अष्टा।

और धीमन्त बाबू बिना कुछ खास समयमें जठ खाइ हुए। उन्होंने देखा कि बड़े हो निर्बिकार हो पुस्तके साहब तबुबत फिर कानूनी बिनाब देखने में लग गये। चलने हुए धीमन्त बाबू ने तमम्बार किया तो उन्हें बिताब पन्ने पुस्तक साहब का बापर पीठ पर मुनायी गया।

—कभी-कभी मिलते रहिग।

पूनी उन्धोर के अंधेरे राप्तों का म्युनिमिपाप्ती की टिमटिमाती छाल्नेमें ओर भी अंधेरा कर रही थी। जब वे तबी पुप पर पहुँचि तब कहीं लोगों की आवाजें मनायी दीं। कर्ना ती उस बग्नभागा मुन्के में जैसे जापीरात हो गयी थी।

त्रिस समय भीमर बाबू बासे पर लींटे वो बड़ा आरपय हुआ । बिगतबाबू खीट जाये थ । बे कम्बल ताने सो रहे बे । बके जान जगाना टीक नहीं समझा । बहुत साबधानी से कपड़े वशक हाथ-मुँह धोकर भीमर बाबू बिस्तरे पर स्वस्थ हो किताब पढ़ने लगे । पड़ोस के इतार्ई घरों से विमानो और और और से गाने की आवाजे आ रही थीं । तमी सहसा हँसते हुए कम्बल से मुँह निकालते बिगत बाबू बोले

—बाहू हजरत बिना मुझे जमाये आप खुपजाय सो जाने वाले थे ?

—और नहीं तो क्या सोते को जगाना ?

—लेकिन भले आदमी यहाँ सो फीत रहा था ?

—कम्बल आड़े आप जापते हैं यह मुझ कैसे मासुम ?

—बड़े बेमुरीबत आदमी हो मार ! सर ।

—तो आप बरबर जाग ही रहे थे ?

—नहीं तो बराबर नहीं जान रहा था खतबखत जाग रहा था ।

और दोनों बद्दहास कर उठे ।

—तो वह आपके बिगल ?

—यही नाम बाकी गाड़ी से ।

—नागपुर से ?

—नहा ता बम्बई गया था ।

—सबिन तुम तो नागपुर कह रहे थे ।

—हाँ, सबसे यही कहा था और यही कहना है हमें और तुम्हें दोनों को ।

—क्या मतलब ?

—किस बात का मतलब ? नागपुर का या इस झूठ का ?

—इस झूठ का ।

—यही कि वह बताता अभी खतर से बाकी नहीं है । और भाई इस समय तो फिलहाल जाना मिला नहीं सकता नहीं । साथ में कुछ है बहा खाना बाहुंगा बस कि भी भीतर ठाकुर उठकर सा दें बना नाहक हा मुझे उठना होगा ।

बिगल बाबू ने कुछ इस माटकीयता के साथ यह मय कहा कि भीतर बाबू उठ और भीतर से बायें । काज मना करने पर भी भीतर बाबू का कुछ खाना पका

—भीतर ! यार, इस समय बरफ़ रेलवे स्टेशन पर पाय पीनी चाहिए ।

—बाकी रात हा यकी है ।

—रही-मही बाकी का रात भी क्यों न हो जाए, हन ता माहव इस समय जान पकर ही पिरोगे ।

भीतर बाकी कुछ यह के प्लेकिन अस्वीकार न कर सक बसकि इसनी रात में उन्हें पाय नहीं पीनी सो और यह बात बिगल बाबू नी जानत थे ।

छावनी के सभी टायराने बिगल बाबू का बहुत अच्छी तरह न जानत थे । सोरह से एन तापा किया और स्टेशन पहुँचे । अत्रमर जाने बाकी माझे तयार ! मुझे

भी । प्लेटफ़ॉर्म पर खासी रोक थी । बाकी रात शुरू हो चुकी थी बसकि हा ही रही थी । घड़ी में ११-२० हो रहा था । बरूरे में प्लेटफ़ॉर्म की बलिनो मरा मय रही थी । हवा रोज की अपसा किचित्त ठेक थी । बाय पीत हुए बापर बाबू मान

—बाय भी कमाए के जायनी है माहव !

—एक तो आपकी जबरन बाय निसा रहा हूँ उस पर बाय मुन माहिदी हैं । यपना यपना भाव्य ।

—अभी बम्बई से बरफ़ आ रहे हैं और आप भी आराम विने बिना स्पेन तक बाय पीने इसनी रात में जाना

—भीतर बाबू ! अपने जीवन में और तो कुछ मान करने को रहता नहीं । कुछ

इस जैसी ही दो बार बाते होंगी जो जेल की अंदरी कोठरियों में बैठकर साबत हुए चीन ने बट जाएगी बर्ता साह्य मुद्रिकत है ।

बिगन वाबू सहासा रंभीर हो गये । कुहरे और तेज हवा में दूर-दूर का दृश्य दृषा हुआ उड़ रहा था । सवारियों सब घेत खुदी थीं । गाई बारंबार सीटी दे रहा था तथा हरी बत्ती झुका रहा था । पता नहीं इबिन झाडबर लोग हमेसा क्यों ऐसा ही करते हैं । अब जामद झाडबर ने कही देया और इबिन बड़े और से बंसा । पार्कर और कुन्नी दूर खड़े थे । इतनी रात में लि-किर्यों के पास बिदा देने वाले गिनती के ही थे । सामन नीले कहरे में तथा अँवने में ट्रेन पीछे की छास बत्ती जमकाती बँसती बसी गयी । सिगनल उठे और फिर गिरे । कार्रों लट्-सटाक उठीं और फिर मिबी । लोगों के हाथ बिदा में हिलते-हिलते मूल गये और ट्रेन की बिदा में चमते पैर निबेस-द्वार की ओर बढ़े । यह तनासा बड़ी बड़ी समाप्त हो गया । स्पेसन मास्टर ने चंदी बटका कर बागे-पीछे के स्टगनों पर सूचना कर कर सबरे तक की छूटी की गहरी साँस ली । यह बाज की अंतिम गाड़ी थी । दूर पर माक के बिन्ने पटांग-सटांग करते इस गटरी से उस पटरी पर भा-जा रहें । ट्रेन जाने के बाब स्पेसफार्म जैसे और बल बाया था । ठिठुरता हुआ कोई कस्ता बँबो और बीबार्ता के पास जगह जोजता घूम रहा था । पायबाला इन लोवा को बूरने लगा था क्योंकि वह भी अब पर जाने के लिए उत्सुक था ।

—क्यों भाँ कय भाँडिण न ?

—हाँ साब !

और छेप सारी चाय का एक घूंट बनाते हुए कय पठन किया और न उठ सके हुए ।

—क्या बहुत पके हो भीबर ?

—नहीं ता ।

—गुनसान घटों में उंड जाते घूमते रहना और घूम-घूमकर महूर भर की चाय की दूकानों पर चाय पीते रहना मुझ संसार की सबसे बड़ी नियामत बपती रही है ।

—तो क्या अब फिर चाय पीने का इरादा है ?

—क्यों बबरा गये ?

और स्टेशन के सामने वाले मैदान में बिगन वाबू का अट्टहास कुहरे पर उड़ता गया ।

—चाय नहीं पिएंगे भीबर ! बस इस तेज उंडी हवा में माल उंडाते घूमने चलो ।

घठ की बन्द गुमटियों की अब वे लीप पीछे छोड़ भाये थे । पता नहीं कौन सी तिथि भी अेकत्र चन्द्रमा उयने की तीयारी आकाश में लग रही थी । असत सबेरे चल पड़ने बास टुक माक स झाले जा चुके थे । दोनों चुपचाप चले जा रहे थे । अब वे दम्बई-आयरा सड़क पर निकल भाये । माक साव बीसगाड़ियाँ जा रही थीं । गाड़ीवान मोड़े-बुबक पड़े थे और बीच गलघंटियाँ बजाते रास्ते-रास्ते चले जा रहे थे । रात बहुत सुनसान थी । इधर बँगले भी बड़े अन्तर की तरफ बने हुए प ।

—क्यों भीयर ! कमी जाड़ों का कुहरा सिपटा अन्दोदय बेसा है ?

—गहीं ।

—पता नहीं किस देहात सं मा रह हो तुम ।

—क्यों ?



को लगा यह व्यक्ति जल्द से किसी बात की प्रतीक्षा उत्कण्ठ में है। यह भी कितना निमग्न है निरर्थक है जैसे इस समय का बक्षिण का यह मंत्रा भीसे आकाश का कोना जहाँ केवल हो तारे अपन एकान्त प्रकाश में वहीं किसी अन्तरिक्ष के अक्षांश पर सूर्य को बेग रहे हाने। बोले

—बिपिन बाबू ! आपकी बात सुनकर मुझे इन्तु बीबी की याद आ गयी।

—भीषर ! जानते हो मैं बम्बई क्यों गया था ?

—नहीं।

—असल में पुस्तकें साहज की सबसे छोटी सड़की कमल बम्बई में है। वहाँ उसके मामा रहते हैं। वह वही पढ़ती है और ज० जे० स्कूल में शिक्षकारी भी सीखती है।

—तो इस सबसे आपको क्या मतलब ? क्या पुस्तकें साहज ने भेजा था ?

—नहीं तो।

—तभी ता। मैं तो आज ही मिष्ठा था। उम्हें तो तुम्हारे जाने के जाने में भी ठीक से नहीं भासुम था।

—आज मुम गये थे ?

—हाँ मुझे बुलवाया था।

और भीषर ने पुस्तकें साहज से हुई सारी बात बता बी तथा यह भी कि मजदूर बस्ती में क्या हुआ। बिपिन बाबू बंभीर होकर मुन रहे थे। बीच के मारे शोर्णों की आँसू सपकी पड़ रही थीं। इतनी धीर बैठे रहने से बैठने की जगह गरम छप रही थी। पैर चलने का माम ही नहीं से रहे थे। पर जैसे बहुत दूर छप रहा था यद्यपि मुखिलस से आवा मीछ होया।

—भीषर ! चलते नहीं अब ?

—जैसी दृष्टा।

—तुम्हारी कोई दृष्टा नहीं है क्या ?

—नहीं मैंने सोचा कि जब चलना हांगा तब तुम स्वत ही कहोगे कि अब चला जाए।

—चलो अब। किसी दूसरे दिन तुम्हारी बीबी की यादा सुननी ही हापी।

—सुननी ही होगी मला ऐसा क्यों ?

—बीबिसा हमेशा अपने भाइयों को ऐसा ही बना जाती है।

—कैसा बना जाती है ?

—अपने जैसा निरीह। जैसा कि भीषर है।

और वे अपनी हूँनी में हँस उठ। रास्त में लगभग वे भोग चुप ही रहे। दरबाजे पर पहुँचे ही होंगे कि बिचन बोस

—बो तुम्हारी दीदी

आत काटते हुए भीबर बाबू इस उर से बोले कि कहीं बिचन बाबू कठ ऐना-वैसा अम्बु दीदी के बारे में न कह जाएँ,

—बिचन ! असल में वे मेरी ममी दीदी नहीं थी वस्तु

—ममी ता भीबर ! ऐसी दीदियाँ ही जीवन मर साकती हैं।

—क्या मतलब ?

—यही कि ऐसी दीदियाँ हमारे अलजाने में ही एक ऐसे अमान की वृत्ति कर जाती हैं कि फिर वैसा कुछ बद नहीं होता नहीं मिलता ता वे दीदियाँ भिरती हैं हमारी स्मृतियों के आकाश में।

त्रिस समय वे सान सोये देह भीर मन शानाँ एकदम ही पके से।

जाब पन्द्रह दिनों से राजनीतिक जीवन में काफी हलचल आ गयी है। विद्यमान बाबू सबरे छह बजे निकल जाते हैं और आगामी सत्याग्रह की तैयारी के लिए स्वयंसेवक जन्मा प्रभात फेरिया-समाजों आदि के प्रबन्ध में बसे रहते हैं। श्रीवर बाबू भी जाब कस प्रबन्धक के कार्यालय की देखभाल करने लगे हैं।

कोम जन्मा देने को तैयार हो जाते हैं समाजों में जाने को तैयार रहते हैं लेकिन स्वयंसेवक बर्ग को न तो व्यापारी बर्ग ही और न लौकर बर्ग ही कोई तैयार नहीं होता। लेकिन इसके विपरीत बिजाबियों तथा महिषायों में इस बारे में काफी उत्साह है। दिन-दिन सर स्कूलों चरों की महिषायों को अधिक उकसाया जाता है। कई बार तो सिबाय रात को घर पर भिन्न के दोनों की एक बूझरे से जेंट ही नहीं हा पाती। दोनों बतने भके होते कि आपस में मह पूछने की भी ताब न रहती कि किसी ने जाया कि नहीं। जब कि प्राय दोनों ने ही जाया नहीं होता। दोनों एक बूझरे के उतरे मूँह से समझ जाते कि इसने भी नहीं जाया है। बोड़ी बेर तक दोनों ही अबोसे चुप पड़े रहकर सोने का बहाना किये पड़े रहते लेकिन फिर बिद्यान बाबू ही मीन तोड़ते

—भातिर इस तरह मूर्खों मरने से क्या फायदा ? हम से कोई गांधी बाबा या पुस्तक साहब या पुछन आने से रहे कि आप लोग ने जाया कि नहीं ? नहीं जाया तो बचकर कम से कम हफ्तबाई के यहाँ दूध ही पी लो। और बनाब। श्रीधर बाबू तो मर जाएँ तब भी मुँह से कहन से रहे कि हम मूखे हैं। अच्छा अब चलो।

और दोनों हँसते हुए दूध पीने निकल पड़ते।

अगले दिन स प्रमात् फेरियाँ समाएँ, साठ दिन तक निकरेंगी ताकि पूरे शहर में जागृति जाये। लोगों को स्वराज्य स्वाधीनता स्वतंत्रता आदि का अर्थ तथा महत्व समझाया जाएगा। दूध पीकर सौंठ बरत विमल बाबू ने बताया कि कल कमल आने वाली है।

दूसरे दिन अस्तु सबेरे बाला प्रजामंडल व कार्यालय पहुँचि। मास की भित सार अपि स सुहाबनी थी। अमी आठ-दस लोग ही जमा हुए थे। पीर-पीरे लोग आ रहे व। अमी फेरी निकलने में आप बने की देरी थी। रात को ही तीस चाबीस लोगों में अच्छे सगा दिये गये थे। सबको आशा थी कि करीब दो सौ सौ फरी में हो ही जाएँगे। लेकिन ६-१० बजन तक मुस्लिम स पचहत्तर-अस्ती सग ही जमा हुए।

फरी का जुलूम बन्द मातरम "भारत माता की जय" 'गांधी बाबा की जय' व नारा व माय आरम्भ हुआ। सबसे आग पुस्तके साहब की पत्नी श्रीमती मामनी पुस्तके बड़ा सा झण्डा सिये चल रही थी। स्त्रियों क पीछ बिछापियों का दृश्य वा त्रिमिका नेतृत्व कमल पुस्तके कर रहा थी। उमक बाव मजदूरों का जल्दा त्रिमने रामसिंह सबसे आगे चल रहा था और मजदूर पीछे प्रजामंडल के बायींफर्मा वकील आदि व और इमी में पुस्तके साहब बिना बाबू श्रीधर बाबू आदि चले जा रहे थे।

निर्बल मायी हुई सको पर प्रमाणफरी का यह जुलूम बला जा रहा था। दूधमें मुँह पर ठाणे सटबाये कुछ भी नहीं बोल सचनी थी—और तो और प्रति

ध्वनि तक नहीं। जमी जलूस बोड़ी ही दूर गया होगा कि पुष्पिम बास तापलाना रोड पर प्रतीक्षा करते मिले। बुझसवार और पंथक दोनों ही तरह क सिपाही थे। बीरे-बीरे आकाश में आभा जा बली थी। छोटे-छोटे बापयानों में भद्रियां सुकम उठी थीं और आय की तैयारियां हो रही थीं। हलबाइयों की दूकाना पर बसेजी के खमीर तथा ताजी बनी बलबियों की संघ बा रही थी। रूपशाले साइ-किला पर आस-पास स बंगियां बजाते तजी में निकल जाते। धार्मिक स्त्री-मुस्सों की भीड़ फुटपाथ पर रन कर इस जलूस को देखने लग जाती। हाटलों-हलबाइयों के सड़के कड़ाइयां मौजते या बप छोटे आश्चर्य स जलूस चलते हाठ। हुप्पपुरे का पुल पार कर बोझाकिट-मारनेट के सामने जलूस रुक गया। यहाँ जनेक लोग फेरी में सम्मिष्ठ हुए। जिस समय जलूस महाराजबाड़ा पहुँचा दर्वाजों की भीड़ साइकिलें सिने तरकारियों के लोले सिने दूध के लोले सिने मती सिने थी। महाराज-बाड़े की अट्टासिका इतने सबेरे-सबेरे बड़ी गंभीरता लग रही थी। राजबाड़े के बड़े स फलक के सामने सेना की गारब तैनात थी। राजबाड़ क दीप पर होम्करघाही का ध्वज पहरा रहा था। प्रमातफेरी का जलूस पस्तिबद्ध होकर गा रहा था। सबके आये पुस्तके साहब एक मग्ना नामे अपनी पत्नी माम्ती पुस्तके के साथ सड़े थे। उनके पीछे बिघन बाबू कमल पुस्तके धीपर बाबू माधि सड़े थे। धीपर बाबू ने इसी बुष्टि से देखा कि कमल कोई बीस बर्य की मुबती है जिसे आकर्षक ही नहीं सुन्दर भी कहा जाना चाहिए। उसकी संधि में इसी बेह्यष्टि महाराष्ट्रीय साड़ी के परिधान में सिप आयी थी। धीपर बाबू ने देखा कि प्रमातफेरी अब सना में परिचल हो गयी है। पुस्तके साहब एक स्टूल जो कि किसी दूकान से कोई के धाया था पर सड़े होकर उपस्थितों को स्वराज्य स्वा-धीनता तथा स्वतंत्रता का अर्थ समझा रहे थे तथा यह भी कि लोपो को सत्पात्रह में क्याथा से क्याथा भाय लेना चाहिए तथा स्वयंसिक्क बनना चाहिए। राजबाड़े पर माध की मोर-बुप जा चुकी थी। जिस समय वे लोग राजबाड़े स लौटे बाजार में काफी पहल-पहल हो चुकी थी। एक टीपीबाले की दूकान क पास क पीछे पर जाने जाते हुए बिघन बाबू तथा कमल रुक कर बातें कर रहे थे। धीपर बाबू को बुला कर बिघन बाबू ने कमल से परिचय कराया। उसक बाद कमल अपने माता-पिता के साथ बसी गयी।

धीपर बाबू और बिघन बाबू एक चायखाने में गए। चाय पीने जाये हुए लोग बिघन को देखते ही गमस्कार करते और बिघन बाबू उसी बेसीस डंग से लोनों से बातें करते 'हा-हो' इंस पड़ते। चाय-नाश्ता समाप्त कर वे दोनों प्रवा

मन्त्रस क दपुत्र पहुँचे । बाड़ी दर की व्यस्तता क बाग बिचल बाबू ने धीपर स कहा कि बे बास पर चलें । कुछ मास्ते-पाती का भी प्रभाव कर सें कमल खाने वाली है ।

छत्र पर डेर सारी धून पाक ऊन क मोमा की तरह फैली हुई थी । और ये तीनों हँसत हुए काली क लाल बड़े फूल सग रह थे । परिचय में आयर बाबू न कमल को मपुर ही पाया । बिगन बाबू हँसत हुए अभी-अभी अपनी और कमल की पहली मेट का वर्णन मुताब लगे थ । कमल को भी आब बडा आश्चर्य हुआ कि उस दिन तिम बिचल स 'पाठाक्याती' में भेंट हुई बह उन दिन वही आग हत्या करल गया हुआ था ।

—आब स कोई आर बग्गु हुए न कमल ?

—मुझे ता सिफ यही मास्तुम है कि विमम्बर क बड़े दिनों की छुट्टियाँ थी ।

—हाँ धीपर ! म उन दिनों अपने आयर स नाग कर इरौर आया हुआ था । धीपर बाबू ने टाका

—ताँ आप आयर के रहने बास है ?

—यही समझ ली तो भी काम चल आएगा । देखो धीपर ! इस बात में कोई दम नहीं कि जैन वहाँ का रहने वाला है किम कुल में हुआ है । य कुल और स्थान पर काम लेने का सर्व कबल मुग ही किया करत है । —हाँ ता मैं कह रहा था कि आगत स नागरर यही जेता आया था । राजनाति में था ही । यहाँ राजनीति क चलना न-कुछ के बराबर थी । राजी-राजी के नी कुछ मिलमिला न था । अजीब मुमीबन थी । बेकारी और परानी स तग आयर देने कबिताएँ लिखनी पुरुक थीं ।

—अरे बाह आप ता छने रमम निबल ।

—ग्या रीयर ! अब बनाओ नही । कमल ! बग तक ता इन मास्टर मफाग्य की बानी नहीं निबलनी थी—बपड़े पढ़ने की तमीज नहीं थी और आब मुने ही बनाने सके हैं ।

—क्यों ? तेज आदमी बुटुओं से आगे निकल ही जाता है ।

कमरु की बात पर तीनों हँसते हुए जाड़े की धूप की तरह सुम्बर, प्रसन्न रूप रहे थे ।

—यहाँ इसी बिस्कोपार्क में 'पीपस्या टैंक' पर दिन-दिन, मर बैठकर कविताएँ लिखी हैं । सप मानों अगर उस दिन एक बेस्व्या ने न बजामा होता तो बाबू बिमल नारायण भूलते कृते की तरह किसी पुस्तिका के नीचे मरे पामे जाते ।

—लेकिन बिमल बाबू ! आपने तो मुझे यह सब कभी नहीं बताया ।

कमरु ने रवि सेते हुए कहा ।

—तनी तो आज बता रहा हूँ कि पहले ही सब बता देना चाहिए ।

—हाँ तो भीतर ! बबराजो नहीं वह बेरमा मुचली नहीं थी—बस्कि एक अपेड़ थी । मैं एक दिन 'पीपस्या टैंक' के एक झुरमुट में सटा बूध और नमकीन जमे जा रहा था । साथ ही अपनी मोटबुक में गुनगुनाते हुए कविता लिख रहा था । आधी हुई धूप में अजीब सप्ताटा होता है खीपर ! जैसे एक भीड़ हो और उस के साथ वेड़-मीषो की जा मार्गें लिखती जा रही हों । सुपरित की वह भीड़ जाने कहाँ जाकर समाप्त होती है । छायाएँ, रंगीन से भीली और फिर वाली होकर टूट जाती हैं मर जाती हैं । मैंने देखा कि एक पास्की दूर जाकर रुकी और उसमें से एक औरत निकली । साथर उस औरत ने पास्की क कहारों को कुछ दिया वे जड़े बये । उस औरत ने बड़े स्वस्थ भाव से अपनी कामबार साक शाक से कचे डँके छिर भी । टैंक की सीढ़ियाँ चढ़ने के पूर्व किञ्चित् यत्न जुमा दोनो और देखा । थोड़ी छाड़ी उठा साक को मान के पास पामे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी । उसके बाबा का डंग नयनों का रंग तथा आचमत् पहनावा यद्यपि कीमती और गरिगामय था फिर भी सब महिमा नहीं सिद्ध कर रहा था । जैसे कुछ प्रवोप कहीं हो । मैं झुरमुट में और धुप गया । पश्चिम में सूर्य नहीं रहू गया था । सूर्यास्त भी नहीं कह सकते थे ही रंग अचम्ब बे जो पोते हुए लग रहे थे । यहाँ तक कि टैंक

का बस तो रंगा हुआ था ही बल्कि वूबों के रंग भी रंगा उठे थे। स्वयं मरु कुरता-पाजामा उस आरक्त में ढला गया था। ठेकी स अँबेरा धिरने लगा था। आगन्तुका स्त्री स्वयं प्रसाधन एवम् बस्त्रों में रैयी हुई थी उसे ये रंग क्या रंगते ? उसने उसी घान्ति के साथ बहुत दबे डों से अपने दाता आर देखा। बायें हाथ टैक के बाँध की बुजी थी जो कि एकदम निबन थी। उसन भी वही पलट्टी की जो मीने की थी। वह भी बुजी की आर वड़ी लेकिन वही तो कोहे का फाटक था और वह बन्द था। महिला फिर झूट आयी। अब मँवरा धिरने लगा था। वह फिर पीक कर आरा आर देख कती कती टह कती कती बैठ जाती। रात आपको समट कर भय की गठरी की तरह एक स्थान पर केन्द्रित कर देती है जब कि दिन बीजों की तरह चारों ओर दूर-दूर तक सब में बिखेर जाता है। मने उसरु कपड़ों क रंग अँबेरे में मरत देखे कि कैसे वे साफ सँ महरे हुए, फिर कल्पक और फिर सड़ कल्पक स कासे पड़ गये। बड़ा आश्चर्य कम रहा था कि वह किसकी प्रतीला कर रही है ? कौन आने वाला है ? वह स्वयं कौन है ? सझाटे में आती हुई किसी गाड़ी की भी आहूट नहीं मिला पा रही थी। यह नारी इतने बस्त्रों प्रसाधन आभूषणों में यहाँ इस निर्जन में किस प्रयोजन क सिण आयो है ? कभी बैठनी है कभी टहकने कमती है। मुझ लगा कि कहीं अस्वामाबिक है और कुछ अप्रत्यागित घट सकता है। म सौम रोक भाबी औपन्यायिकता की प्रतीला करता रहा। वह फिर बठी और बढ़ते हुए मेरे झुरमुट क पास आ गयो। मैं डरा कि क्या इतने मुझे देख लिया है ? और देख लिया हा ता ? मेरे रोंगटे सिहर उठे। यह सब देखने में यह तक भूमा हुआ था कि मरी मदरी वही पड़ी है मुझे बहुत पहले पहन केनी चाहिए थी। लेकिन इस समय तो मैं जरा भी हिम्डुल नहीं सकता था क्योंकि वह झुरमुट क इतन पास पड़ी थी कि हस्की हवा में उसनी कमकी माधी के हिपने की मरमराहूट तक सुन रहा था। एक पक्ष की दूरी पर माफी में किरनी टांगे हिलनी माड़ी में उभर आती थी। मैं सनी में लिटुर रहा था। सकिन जैम-जमे अँबेरा बन्ता आ रहा था मरा भय मो बढ़ता जा रहा था मगाय भी। वह दूर्य ताकती पड़ी थी। चाराँ ओर एकदम निगम्य था। लगा कि यदि यह महिला इस समय न आयी होती तो मैं कभी का दूर गहर में हाता। रात भीग रही थी। जाड़ा बढ़ता ही जा रहा था। कने का कागज मुड़ीमुड़ी मीन पड़ा था। वह स्त्री वही दूर पर बैठी हुई थी। जैसे बटन कुछ मोप रही हा और



किसी की प्रतीक्षा कर रही है। उसने अपनी दास कंधों से गिरा भी तथा बान और यम के बामुपम भी निवास कर वहीं दूर पर रग दिये और सहसा प्रत्यक्षत उठी तथा एक बार फिर दूम्य में लिख उठी। अपन दोनों हावों की अंगुष्ठियाँ को गूँबकर अपने मोठों पर कस कर मटा सी और फूट उठी। मैं किर्त्तव्य विमूढ़ कुछ भी नहीं समझ पा रहा था। जैसे उसके बन्तरसे कुछ फूट निकलना चाह रहा था। पसस्मि में जैसे हरिणीके बाप बम गया हो। जमके पर उस बंध गये थे फिर भी जाने किम साहम के स्मि अपने से ब्रुत रही थी। सहसा वह टैक के अबाह जस की ओर सपटी। जाड़े से ठिठान मेरा मन तथा विमान हठाठ ता कुछ नहीं समझ सका कि यह क्या हो रहा है लेकिन तब तक वह टैक की तरफ बेशहामा बीड़ती था रही थी—तथा पानी में घँसती था रही थी। और और मैं बिना कुछ सोचे समझे उमी तरक बीड़ा। पानी एकदम ठण्डा-कबीर था। अपने पीछे किसी को आते देख वह पानी में घँस गयी।

भीयर बाबू और कमल ने देखा कि बिपन बाबू जाने कहां किस अतीत में आँसु बन्द किये बोलते जा रहे हैं। छठ की बुप यत्र बघोक से छन कर जाने लयी थी। दोनों को लगा कि बिपन बाबू जैसे बाबू बहुत कुछ सब कुछ कह देने पर कटिबद्ध है। प्रत्येक कह देने के ऐसे क्षण में आता है। बानों ने देखा कि बिपन बाबू बोलते हुए सहसा बुप हो गये हैं और अपनी मुदिठ्याँ बन्द किये हुए केवल बँमूठों से आँसु डारि बुप है।

कमल ! उसके बाद उसके बाद कुछ नहीं जब मैं उसे लेकर किनारे पर आया वह बेहोश थी। काफी ठण्डा पानी भीतर तक पहुँचा था। स्पष्ट ही था कि आरमहुरया करने आयी थी। भसा एंसी महिला को भीक कपड़े में इतने निरगत में छोड़कर कहां जाता ? उसके कपड़े किसी तरह मिथोड़ दिये और घाल भोड़ा कर बही लिना दिया। अब समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए ? किसी तरह होश में आये इसके कपड़े सूके और फिर बाहर पहुँचा जाए। यदि पुलिसवालों का खबर हो जाए, तो मैं जरूर ही मुझे फाँसिगी। यही सब सोचत हुए मैं बन्दई-आगण रोड वाली सड़क की ओर बढ़ रहा था जो कि करीब आमा मील पर थी। सोचा कि

याही काम निकलते हैं माधिस साकर असाब बसा जाए ताकि गर्मी पाकर  
बहु हाथ में भी जाए और कपड़े भी सुनें । अपने भीगे कपड़ों की ओर  
मरा जब तक ध्यान ही नहीं गया था ।

माधिस साकर जब झीटा वह तब भी बेहोश थी । पास और झकड़ी झकड़ा  
कर असाब बसाया गया । बोड़ी देर में ही कुनमुनाने लगी । उसे कुनमुनाने  
देख मरी पिन्ता बोड़ी दूर हुई । और बोड़ी देर में उमने धुरकुदाना शुरू किया ।

—नहीं नहीं मुझे मर जाना चाहिए । मैं मर गयी हूँ

उमने बीरे से पसकें खोलीं । मैं बाँध में कुरछा फसाय मुला रहा था । उसने  
पहले तो मुझे देखा और फिर बीछ उठी । सभबत बहु फिर बेहोश हो  
गयी । लेकिन इस बार अस्व ही बेतना में झीटा आयी । बेतना में इस बार  
बहु मात्र प्राणी की भाँति ही नहीं लौटी बल्कि एक नारी की भाँति लौटी ।  
बहु उठने की चपटा करने लगी

—आपके सारे कपड़े भीग गये हैं मुला छीबिए, काफी ठंड सा चुकी है ।

सगा बहु अत्यन्त आरामस्थानि से भर उठी है । कहीं यह भी अन्तर में आया  
है होया कि यह पराया व्यक्ति उसकी नारी बहु को उठाकर लाया ही  
हागा और बहु सिमट कर उठने लगी ।

—ठीक है आप चाहें तो मैं झाड़ी में फिर पसा जाता हूँ जहाँ से मैंने आपका  
आठे हुए भी देखा था तथा टिक की मार चाटे हुए भी ।

बहु निर्बल ही बनी रही । लेकिन जिस कम्बल की सहबता ऐसे मौकों पर  
सुभी पाती है बहु मैंने उममें नहीं देखी ।

—जी नहीं जाने की कोई आवश्यकता नहीं । लेकिन रुबिन आपने मुझे  
क्यों बसाया यह नहीं पूछूंगी क्योंकि मनुष्य हाल के माते आप और क्या  
करते पर क्या यह अच्छा नहीं हाँगा कि आप यहाँ न हाँते ?

और उसने बैठकर अपने बाँधों से पानी सूता । काम फेंक आय । भीगा  
पसलू बाँध के सामने फेंकाने बहु उतर की प्रतीक्षा में भी भी और नहीं  
भी । बहु फिर बोस रही थी

—क्याइए, मैं आपका धन्यवाद हूँ आभार प्रदर्शित करने कि आपने मुझे नाश्वीय  
जीवन से मुक्त होने में साया दी ?

अपने पात्रामे की मोरी से उन्नी भाप को देगते हुए मैं मौन पात्रामा काम  
सुगा रहा था । एक धप को मैं उमके प्रसन्न की मर्ति तथा ध्यग्य दासों ही  
मही ममता पा रहा था ।

- आप भले व्यक्ति हैं, लेकिन कैसे कहें कि मैं भली हूँ ?  
 और वह चीक भी ।
- आप जानते नहीं कि व्यक्ति किस सीमा पर लड़ा होता है तभी पारमार्थ्या करता है ।—पासकीबासे तो नहीं आपे न भनी ?
- जी नहीं । पासकी बास तो तभी लौट गये थे ।
- तो आप तभी स देल रहूँ से क्या ?  
 और उसने उस झाड़ी की तरफ बढ़ा जहाँ मैं बैठा था । मुझे लगा कि यह सारी व्यंग्यत कपूर है ।
- क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपने ऐसा क्यों किया ?
- कैसा ?
- यही कि  
 और मैं इससे अधिक अभिमान में पूछ नहीं पा रहा था । वह मेरे न पूछ पाने की विवशता पर किञ्चित् मुसकुरायी । अपने कान के तथा नल के आभूषण धारते हुए बोली
- तो आपने मुझे फिर अपनी ही नियति की ओर लौटा दिया ।
- कौन सी नियति ?
- वही जो प्रत्येक पञ्चमूल्या की होती है ।
- तो क्या आप ?
- हाँउस मैं तो पञ्चमूल्या हूँ । चाहा था कि एक बार प्राप्त देकर पुन पत्र प्राप्त कर सकूँ लेकिन आप फिर मेरी मुक्ति में जाड़े आगये ।—आप जानते हैं, मैं बेक्या हूँ मासिनी ।
- मुझे विशय कहते हैं ।  
 नबे पड़ते अलाब में और सूली ककड़ियाँ बासते हुए मैंने कहा ।
- विशय बाबू । मुझे आपस इस ससार के बेक्यालय में इन डूबों पर साकर रल देने में आपके इन हाथों को क्या मिला ? मानती हूँ कि आपस यह पाप कर्म जनमाने में ही हुआ लेकिन मैं तो सारा हिसाब-किताब पूरा करके बनी थी । क्या अब फिर उची तरक में
- मासिनी जी । मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि मैं आपको कैसे सान्त्वना दूँ ।
- किस बात की सान्त्वना ?  
 और वह लुल कर हँस भी । कपड़े सूखने आये थे ।

—बसत बाबू ! कभी बेध्या का माई बनने की कामना हो तो यह मासिनी दीदी बनने को उत्सुक रहेगी ।

तब तक मैंने देखा कि वो एक साछटेनें लिये कुछ लोग इधर ही आ रहे थे । पाम जाने पर पहचाना कि कुछ उनमें से वे ही कहारलग रहे थे वूमरे दो नोकर बीसे ।

मासिनी ने उन्हें देखते ही एक से कहा

—सछमन ! तुम सोम बहुत परयाग हो रहे होगे है न ?

—हां मासिनि !

और वह सछमन मरी ओर देखने लगा ।

—जम्हा बिपान बाबू ! कभी आइएया ।

और वह रहस्यमयी बेध्या मासिनी दीदी बनने का आस्वासन देकर चली गयी ।

बिपान बाबू एक क्षण को जैसे फिर लो गये । समझत वे जाती हुई मासिनी को उस जाड़े की रात को हवा में उड़ते कुहरे को पीपस्या टैक के ठंडे जल को बलाघ की बुझती लौ को चने के उस पुन्नीमुड़ी कागजको—उसको अपनी स्मृति में जैसे सहेज कर जैसे ही व्यवस्थित कर रहे थे जैसे कि हम अपनी किताबों की शोम्हों को बूक झाड़ते हैं । एक-एक किताब को साझा-सोछा जाता है क्योंकि उनके बिना जैसे हम नहीं हो पाते हैं । किताबों पर अधिक दिन धूस रहने का मतलब हमारे मन और व्यक्तित्व पर धूस का रहना है । और धूस क्षम होती है । अनुक्षण प्रत्येक बस्तु, व्यक्ति को बूक के घेरे, घेरे हुए है । जरा असावधानी हुई नहीं कि धूस के रेणों में गरम बारीक-छन धूस विफक्तुत तरलोगों से मौन चुप साकर बिछर जातो है । यदि समय से धूस का यह रेसमी-जाल हम नहीं काट फेंकते ता वह एक दिन हमारे समूचे अस्तित्व के जाड़-जोड पोर-पोर में रक्त-मान को काटकर मिट्टी बन देता है । इमीलिय हम बारंबार स्मृतिघों को दुहराकर अपन अन्तम की धूस झाड़त हैं । फिर भी दो बार बटनाओं क अतिरिक्त बहुत कुछ उन धूस के कारण मिट्टी हा गया रहता है । साग हम सोचते हैं कि इसका बाद क्या हुआ था ?—तो हमें लगता है कि हम पटना के द्वीर क चारों धार परछी नहीं नहीं है बल्कि एक अनन्त जल ही जल है । और कैम गहरी मांग

लेकर हम उस एकमात्र या उस जैसे दा चार बटना-श्रीपों को लेकर सम्पुष्ट होने के लिए बाध्य होते हैं।

टीक ऐसे ही बिजान बाबू इस घोर में बैठे हुए कमल और धीपन बाबू को देखते हुए, सम्भावन करते हुए भी न ता देस ही रहे थे न सम्बोधन ही कर रहे थे। वे तो बेल रहे थे धर्तीठ को और सम्बोधन उस बची गयी सम्प्रा को कर रहे थे। पता नहीं उस बिपला सम्प्रा ने कभी सुना कि नहीं। हाँ जो दुःख गत भोला थे वे भवश्य इस कथाबाचक बिजान बाबू की यात्रा को यथा के साथ सुन रहे थे। वे पुनः बोझों को हो आये

—मैं एक दिन सराफे में से जा रहा था। मट्टा बाजार पूरा गरम था। लोग चीख-बिस्का रहे थे। भाव बोस जा रहे थे—'किम्पा' बिपा' हो रहा था। बनिये हकम्बाइया की दुकान पर खड़ी मलाई पड़ा रहे थे। उनके गर्मों में पड़ी सोने की बेल बठा रही थी कि बीबन बिजान सुली हठा है। मैं महा रामबाइ के गोपाल मन्दिर न सामने पहुँचा ही था कि देखा कि रठ क अँधर में एक व्यक्ति दौड़ता जा रहा था। माँ घर में कीर्तन हो रहा था। उत्सवों क अवसर पर लफ़्फ़ करने वाले छाड़फ़न्नुस इस समय साक कपड़े की खोला में छत में लटके हुए बड़े बजीब छय रहे थे। मन्दिर के बाहर क दरवाजे पर या चाबदार पगड़ियाँ बाँधे तथा अँगरले और पीके डुकूस कमर में कस ठँनात थे।

—बाबूजी ! बाबू जी !

मैंने देखा कि वह व्यक्ति मुझे ही पुकार रहा है क्योंकि उस समय सड़क पर और कोई नहीं था। निर्जन था। और मैं हठात रुक गया। वह हाँक रहा था। व्यक्ति पहचाना छय रहा था।

—बाबू जी ! आपको मानी बुला रही है।

मुझे आश्चर्य हुआ कि कौन मानी मुझे बुला रही है ? व्यक्ति नहीं भूख तो नहीं कर रहा है ?

—किस चाहत हा भाई ?

—बिजान बाबू हैं न आप ?

—हाँ हैं ता।

—तमी तो मानी बुला रही है। मैं लज्जन हूँ। पहचाना नहीं आगने ?

ओह, भसा लज्जन को नहीं पहचानता ? अरे, यदि वे कहार भी होते ता

पहचान जाता। उस दिन की किसी बग्यु की जब नहीं नुस मरताता फिर यह तो म्पन्नित बा।

—क्या माकिनी जी ने ?

—हो सरकार ! मैं आपका सघाटे में देना या जमी। मांवी को लबर वी। आपको उस शिव क बाद कहीं-कहीं नहीं सोचा माकिन। मकिन पया हो नहीं बसा नहीं। क्या आप महां के रहन वाले नहीं ?

—नहीं।

—तमी वा माकिन ! नहीं वा सघमन हम ह्मौर क बच्चे-बच्चे स बाकिन है।

म्युनिसिपल्टी की मरी कार्टेनों क प्रकाश में बहु छाती मद्रक मजीव लग रही थी जमे मुखे भाग्मी का मुल हो। मद्रक जाने बलकर बलिन में मुद्रकर गली बन पयो थी। एक दबा सा पीपल हुआ में हरहरा रहा था। उन में बोला पीपल देह के जोड़ीं तक को कॅपा जाता है। अब काफी खुला था था। सामने एक पुरानी वेणबाई डंग की बुमजिला इमारत थी। लकड़ी क बड़े फाटक के पास एक ओर लम्बे में बड़ी भी कार्टेन बल रही थी। लछमन ने आगे बढ़कर उन बड़े फाटक की निडकी लोपी। मुक कर हम अन्दर प्रविष्ट हुए। लपा कि जमी यह कोणी बीमब में रही होगी लेकिन अब तो एकदम ही उजाड़ लग रही थी। फाटक के दोनों ओर फुहुरबहार महन थे जहाँ एक बूड़ा सिपाही बलाब थाप रहा था। अभी पाई दर पूर्व बिसम पी गयी थी। जिसकी ठाकी गंध बजा रही थी जो कि हुआ में थी। देवीमा मैगन पार कर अन्दर के मरान की तरफ बने। एक बरागी स्त्री स लछमन में कुछ कहा और बरागिन जियर स भावी थी उतर हो उष्टे वरों लौन गयी। लछमन ने माप सकड़ा का बीना बड़कर एक कमरे में पहुँचा। माक-मुपरा था। ममन का प्रबन्ध था। दीवारों पर बिज कमे हुए थे। ह्मन-मौला क बनक प्रमंग थे। कुछ बिलापत्री दुम्ब बरूप और जानबरा के भी बिज ट्रेमिन थे। दाहिने हाप क लवाजे पर पने बानी बिज थी। बाये हाजेबाड़ी बड़ी भी मैम्ब जम रहा थी। उन तितान पर बड़ा मा पानगन। दो-एक ग्यान्शन बिसमबिया भी बोरी क पाग रपो थी। लकड़ी की बानी उन तक गयी बमक रही थी। यह ममन

दर न लगी कि यह सास बैठक नहीं हो सकती बल्कि प्रतीक्षाबूझ ही होगा । तभी थिक उठाकर दोनों हाथ जोड़ मास्मिनी विस्तारवादी थी ।

—भाइए, भीतर चलिए ।

हा कमरे पार कर बाँधे हाथ बाँधे कमरे में पहुँचे । अपेक्षाकृत यह कमरा बड़ा तथा खुला था । अण्डाकार सफ़ाई की कासी सिइकियाँ थी । सिइकियों के पीछे अँधेरे में गाछ हिल रहे थे । लगा कि इपर ही बनीया होगा क्योंकि अनेक संघ मिश्रित हुआ था रही थी । मापडारे के भीनाप भी का एक मात्र चित्र एक सिहासन पर रखा था जिसके सामने समझयी बस रही थी । मीची चौकी पर गादी-सकिदे की बैठक थी । एक सेस्क पी बिममें मूनहरी बिस्यों वाली फिताबें थी । छर्त पर काक जाजम तथा सामने एक छोटी चौकी और थी जिस पर मृगचर्म बिछा था । मुझे बैठने को कह वह स्वयं मृगचर्म वाली चौकी पर बैठ गयी ।

—कहिए, कितने दिनों से जाना नहीं आया ?

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इसे जैसे मासूम हुआ ? मरी घोपी हुई मूस एक दम सुकन उठी । लेकिन मैं कापरवाह हूँती में हूँस उठा ।

—बेको तुम मुझसे छोटे हो आजह की भाषा नठ करना ।—में भायी । और वह उठी ।

—सुनिए इसकी तो कोई जरूरत नहीं

—बेस्वा के यहाँ का नहीं सिकबाँटी । हीरी होकर छोटे मारि का बाइगतक नहीं लूँगी ।

—लेकिन तुम्हें कैसे मासूम कि मैं बाइगत हूँ ?

—मारी से पुस्य की जाति परम पाप पुस्य कुछ छिन सका है ?

और वह तीर सी निकल गयी । जब चली गयी तब पाव आया कि वह सिर से पैर तक बीबरबर्गी बारे हुए है । उस दिन तो इतने सारे भाभूपय थे लेकिन आज कान बाँध माक गसा हाथ सब जैसे बिबवा के अंग हों । सभे इली बेह भी रंम भी साफ था लेकिन बेहरे पर हस्के जाने थे । वह प्रवेसते ही बोली

—पता नहीं आज सरेरे किसका मुँह देखा था ।

—सम्भवतः अपना ही देखा हो ।

—बचपन में दिन रात अपना ही मुँह देखती थी तभी तो यह बुबंसा हुई ।

और मुझे लगा कि हास्य किसी मर्मस्वस को सू गवा है । मैं अबोका ही रहा ।

- इतने दिन हुए पक्षे कभी तुम क्यों नहीं आये ?
- मुझे पता नहीं मामुम बा ।
- इतनी नानी दोरी का भी पता तुम्हें नहीं मामुम हा सका ?
- भीरू बहु खूब बार से हँस थी । तमी लछमन दरवाजे पर दिखायी दिया ।
- माँजी ! मन्दिरे के लिए पाल्नी तैयार है ।
- लछमन ! तुन्हीं बन्ध जाया बड़े पुजारी जी से हाव जोड़ जना माँग लेना और कह दना कि आज न आ सकूंगी ।
- लछमन चला गया ।
- तो बार दरान कर आइए न ?
- दर्शन करने तो मन्दिरे जाता हूँ । इस समय तो कीर्तन करने जाना पड़ता है, सरकारी नौकरी है । हाँ जब खाता कई दिनों से नहीं हुआ तो तुम लोग तो नहाने की भी बरकरार नहीं समझत होगे है न ?
- तमी बगर्गिन दरवाजे पर दिखी । उससे मराठी में माँजिनी न पूछा
- पानी हो गया गरम ?
- होओओ भाए—
- अच्छा बिसन ! अब जाकर नहा लो तो ।
- अजीब आगा थी कि न चाहते हुए भी संवत्सरित मा उठ और वरारित के साथ जाकर नहा भी आया । तब तक पूर सुन्वर भी चौकी पर मात्रन का पान रता था तथा एक आसन भी । कमरे में बगर्गिनियों की गम ही गम परा हुई थी । सात कहन पर भी माँजिनी ने कहीं ग्याया बर्गाँछ वह गत्र दम दस्त से एकामता (एक समय भोजन) ही करती है ।
- बहा रहने और नौकरी का कुछ प्रबन्ध किया कि नहीं ?
- पता नहीं उसने कैस यह गम अन्तः किया कि मैं नहीं नौकरी नहीं करता और न ही बन्धस्वित्त हूँ ।
- नहीं किया अभी ।
- यह तो मुझे भी मामुम है । न नहीं नौकरी कम से कम पर तो बिगये पर से ही लो । क्या शाम जा उन ममियाबानों का हर पत्रह दिन बाँधीन दिनों के लिए यात्री बनकर परगान करते हो ।
- ता इसका मतलब हुआ कि हर राग्य धममाणा में लछमन की भेजकर यह तलाग करवाती रही । फिर बानी
- अच्छा बोलो कब तक पर से लगे ?



- अब क्या कोई सड़की है जो इतनी आसानी से मिल जाएगी ?
- तो सड़कियाँ आसानी से मिल जाती हैं ? कितनी हैं ? साम्रा मुझ नी एकाप से दो । बड़ी जरूरत है मुझे ।
- किसलिए चाहिए तुम्हें ?
- बिश्वास रखो बिशान ! पयगुष्टा बनाने के लिए नहीं बल्कि अपने को ऊपर उठा सऊँ इसलिये । सुनो हम तरह-ठा तुम मारे-मारे ही फिरते रहोम । साथ बिग में ही कहीं से भी मकान साज व्यवस्थित होगा पड़ेगा । कभी किसी के घर सिबाय मुबारे के गयी ही नहीं । तुम्हारा घर हामा तो एकाप बार न भी बुझाना चाहामे तब भी हो ही जाऊँगी । कभी जब भर को ऐसा नहीं लगता कि मैं माफिनी नहीं हूँ । दिन रात यरुओं तक स्वयं में स्वतः बना रहना कितना उबा देने वाला होता है और फिर मैं तो अपनी ही वृष्टि में अभी बूसरे कमरे में बड़ी ने टनटन वस बसाये ।
- ता मैं कर्नू ?
- वैसे आजकल कहीं जग बाम हुए हा ?
- डेरा तो कही सास नहीं है ।
- फिर भी ? न बताना चाहो तो मत बतानो लेकिन 'रानीसाराम' का नाम मत लेना वहाँ तो तुम पिछल हुभते से । लेकिन कैसे बताता कि आजकल मैं रेकडे फ्लेफ्राम या मुसाफिरबाने में ही पड़ा रहता हूँ । मैं उठा । वह मुझे मीदान तक छाड़ने आयी । तारों को छामा में भारों ओर घान्ति बी । एक क्षण को लगा कि यदि यह नारी बेभ्या न होती तो न क्या एकबार स्पष्ट रूप से 'बीबी' नहीं कहता ? बार बार चाहने पर भी 'बीबी' गळ में आकर पँस जाटा रहा । पता नहीं कौन सा संस्कार वा कि वह मेरे मुख से 'बीबी' सुनने की उत्सुक बी पर मैं उस बिग 'बीबी' स्पष्ट रूप से नहीं कह सका ।
- सुनो कहीं मैं जलजाने में अपने को तुम पर साब तो नहीं रखी हूँ ? भला मैं क्या उत्तर देता ? अब कि वह उत्तर की प्रतीक्षा में न भी रखी हो लेकिन मुझे लगा कि वह उत्तर चाहती है ।
- अब किस बिग जाऊँ ?
- यह मुझ पर नहीं तुम पर निर्भर करता है । और हम दोनों दो पिछारों में बह गये ।

—कमल ! मैं अपनी उस बेव्या-दीही के यहाँ प्राय जाता था लेकिन प्रत्येक बार संभारों से लड़ता था। उस किनी मराठा सरदार ने रस लिया था। उसी सरदार ने उसे यह मकान बाँध दे रखा था और साथ ही उन महापय ने अन्य बेव्याओं से प्राप्त भयकर गुप्तराय भी दे रने थे। वह अत्यन्त दाहम स्थिति में थी जब मेरी मेंट हुई। मराठा सरदार मर चुके थे। उनके पुत्रों ने उस मकान से निकाल देना चाहा तथा यह भी कि वे अपने मकान में बेव्या को नहीं रख सकते। जिस दिन मासिनी आत्महत्या करने पीपस्या टंक पहुँची थी उस दिन मराठा सरदार के बड़े सड़क ने बड़े ही साबंजनिक रूप से अपमानित काष्ठित किया था तथा मुकदमा भी दायर कर दिया।

दिनों दिन बीबी का स्वास्थ्य बीपट होता ही जा रहा था। मुँह के बाने फूट जाने लग गे। प्राय आँखें जल भी रहीं। घाघद फाम्पुन रूप चुका था। मैं कुछ दिनों के लिए जापरा गया। मेरा पहमा-यहणा भासित कारिया से परिचय हुआ था। बायरे से जब सौटा तो यह तम किये हुए था कि सामान लेकर बीबी से मिलकर आगरे सौ जाऊँगा और पार्ने का नाम करूँगा। उन दिनों जूनी-इन्दौरमें रूठा था। नरीब एक माह से इन्दौर के बाहर था जब कि बीबी से चार-पाँच दिन का कहकर गया था। जिस समय पहुँचा लछमन अन्दर बरामदे में मिला।

—बाबूजी ! आप सौट आये ?

—हाँ लछमन ! बीबी के क्या हाल हैं ?

यह उदास अनुत्तर बना सड़ा रहा। समबत उसकी आँखें छलछला आनी। सबरा हल्का भीषा पूलों की तरह होने लगा था फिर भी मैंने वे आँखें छत्र छसात देखीं। उस तरह छलछलायी आँखें मैंने भीषर ! आज तक किराी की नहीं रपी। पता नहीं उस छलछसाने में कितनी अभिव्यक्ति थी कि क्या बताऊँ।

—क्या बात है लछमन ?

—कौन थी बात नहीं है बिगन बाबू ?

मुझे वह उम दाब उस उदार दूकानदार की तरह लगा जा एक पीब माँगने पर अनेक बीजों बिताने पर आ जाए। ऐसी उगरता से भी भय ही लगता है। हम बगराना चाहते हैं क्योंकि हम उतने उदार तो नहीं होने हैं न ? यह मुझे पर के पिछवाड़े की तरह से गया जा कि बर्षापा था। मैंने वह

बकीया या ही-सताएँ भी फूल से होखे फौवारत या संपकीबियाँ भी थीं—  
लेकिन सब उदास उदास। जब नहोने का कारण होखे का जूता जगह-जगह  
उदास था। हरसिपार या कमरे की छोड़कर पीछे पत्तोबाग बग  
बकीया था। इस समय भाङ्गिनी के कमरे की वे अन्धाकार मिङ्गियाँ बिल  
रही थीं। बाहोने हाथ कोने में झुक पड़ी पाङ्गी रची थी। सोप सब सचेरे  
का धुला हुआ निर्जन था।

—बिशन बाबू ! आप ही माङ्गिनी को समझा सकते हैं।

—सम्भन ! साफ-साफ कहा।

—अब बाबू जी ! बुनिया माङ्गी को या भी समझे मुझे कुछ नहीं कहना लेकिन  
मे माङ्गी को उस दिन से जानता हूँ जब दिने साहब के यहाँ इनरो छाया  
पया था। न तो मैंने दिने सरकार की तरह कोई ब्रसरा रईस देखा न  
माङ्गी की तरह ब्रसरी पतिव्रता स्त्री। लेकिन सरकार ! ऐसी साङ्गी को  
भी बुनिया तो बेस्वा ही समझती है न ? कौन सा जप-तप बरम-नियम  
पूजापाठ है या माङ्गी में नहीं किमा ? बौन बुनिया से लेकर योलाई जी तक  
की सेवा की। पञ्चसन (पर्वपण एक जैन-मार्ग) मबरानि के घत बाबू  
के वैश्टीय कासी-मया और मापगारा तक कहीं-कहीं न जाकर अपने माये  
के इस कर्मक को नहीं सोने की बेप्टा की। बिशन बाबू ! ये मबाह हूँ  
माङ्गी गंगा है। अगर माङ्गी बेस्वा है तो गंगा भी बेस्वा है। लेकिन हम रे  
बुर्भाव्य जाने किसका पाप रोग-बोक दिने साहब माङ्गी को ऐसा दे मये कि  
बह बेह के बंग-जग से फूल पड़ रहा है। बुनिया समझती है कि बेस्वा का  
अन्त और क्या होगा या ? बिशन बाबू ! माङ्गी कोई वधाई-बाकू नहीं करवाती  
हैं। निर्बल रहती हैं उपवास करती हैं। जैसे पापो का प्रामर्शित कर रही  
हों। लेकिन कौन सा पाप ? किसी ने उन्हें बचपन में गुण्डों की बेप दिया  
या पर अपने जाने तो वे सदा एकलिप्टा रही। दिने साहब से मिलने के  
पूर्व वे मायिका थीं बह को भी रहा हो माङ्गिक। लेकिन बह माङ्गण का  
वेधा तो नहीं था न ? क्या दिने साहब को माङ्गी में जीवत मर पति के रूप  
में नहीं माना ? किसी दूसरे को पास फटकने दिया ? क्या अन्य बीमन्तों के  
बुकावे नहीं माये ? लेकिन वे दिवीं ता नहीं न ? फिर ?? हम तो माङ्गर  
ठहरे। कुछ भी बोकने से रहे। आप क्यों नहीं समझाते ? आप पर तो राप  
है उनका। समझाइए बिशन बाबू ! बुनिया ने बाबू तक किसी को लमा किया  
जो माङ्गी को ही जमा करेमी ? और हम बुनिया से क्यों लमा मी ? बक

प्रभु की दृष्टि में हमारा मन आत्मा पवित्र है तो फिर प्रायश्चित्त परिष्कार क्यों ? मैं पत्नीस बरसों से घुट रहा था आज मौका मिला तो जाने क्या-क्या कह गया। यदि छोट मुँह बड़ी बात निकल गयी हाँ ठाँ समा कर सीबिएगा।

और सड़मन बड़ी तजी से दाहिने हाथ जहाँ पालकी रखी थी उसपर के मोड़ में हाकर दीवार के पीछे गायब हो गया। कुछ दूर तक मैं आसन्न रहा। मास्मिनी मरे से मने उस दिन सबमुच गापभ्रष्टा दवता लग रही था।

जब मैं दीर्घ के कमरे में पहुँचा तो चौकी पर तकिये के सहारे सटा हुई थी जिस पर मैं गुरु दिन बैठा था। बहारिन लौकरानी सिखल बैठी थी। पत्रसूमी सबेरा कमरे में बसा घुप घुसा लग रहा था। कमरे का हल लग रहा था कि यहाँ दिन बड़े सबेरे से गुरु हाँ चुका है। मुझे बेत बहारिन उठ गयी हुई। बीती उम्र समय आँखें बन्द किये पीठ किच छटी हुई थी।

—माँजी ! बिपन्न बाइ आठे।

और बहारिन के सूचना देने पर वे अलबान न अन्दर ही करबट बन्द कर मम्मूमी हुई।

—कब आये आगरे से ?

—रात आया। सहना थला जाता पडा।

—ना ता आगरी हूँ तनी ता कह कर न जा सके न ?

—यह क्या हाल बना गया है अपना तुमने ?

—कब किस न अपना हाल ऐसा बनाना चाहा है ? और मात्र लो घनाया हो हाँ ता पया अपनी बीबी से सड़ोगे ?

—आता पड़े ता आहाल आत्रपम थो अपनाता है।

—मूर्ख !! धात्रपम अत्रपम की रसा करता है या उलस सड़ता है ? यही सारा है आज तक ? हाँ धारदा ! कुछ माने-माना का प्रयत्न नहीं करता है क्या ?

और वह धारदा बहारिन किचित्त सुखी-सुखी जिन्दे चली गयी। उसका स्वभाव हैमता मुग जाने बसो यदुल भला लगा जैम बीपान मेहराबानर बाबती में बाँ नीरक जेरे से मून रहा हा।

बहारिन के चले जाने में हगल-कुछ बेर की मर दान्त हा पया जैम हमके पूर्व दगा दग नर धार हा गया हा। लेकिन एसा ता नहीं था। धार पाड़े न गया हा पर पान्ति अवन्य वैमी हो लग रहा थी। मैं चौकी में

उठकर बीबी व पसंग के पास जाने के लिए उचल हुआ तभी बरबते हुए बोली

—बीमार के सिखाने बैठना तो मारी को सोभना है तुम लोगों को पाड़े हो।

—कोई बात नहीं।

और मैं बिना मुने मना करने पर भी बड़ा उन्हने हम बाग बरजा नहीं बल्कि निवेश किया।

—जब तुम्हें स्वतः समझ में न आये तो जितना कहा जाए उतना ही किया करो।

और, और अभी धारदा आणी उस मरे सिर में तैल डालना है। मला वह कहाँ बैठेगी ?

और इस बार वे लिङ्की की राह फासुनी आकाश का बर्ष देना रही थीं।

—जिन्होंने बिनो से तबिमत खराब है ?

—तुम आगय काधी रह गये।

—हाँ लेकिन मैंने क्या पूछा तुमसे।

—मैं समझती हूँ कि जब कछमन को छुट्टी देनी चाहिए। वह बुद्धिमानों के साथ-साथ समझदार भी होता था रहा है।

—बीबी।

और समझ में बीघते हुए ही बोला था। बीबी ने आहत होकर मेरी ओर बढ़ा। पसंग की ईस मेरे घुटनों में सग रही थी। सिखाने नाम माथ को एकाम दबाई थी। सेब-सन्धरा रखे वे तथा परमापीटर भी। इतने निष्ट स लिङ्की से आते सबाजे में बीबी को मैं कनेक बिनो बाद बल रहा था। मुँह अपेक्षाकृत ठास फूसियों से भरत था। पस्मा यथावत था। बाकी पूरी वेह अकबाल से बँकी थी। केवल हाथ जो कभी गोरे रहे होमि लेकिन इस समय पीले निस्तेज निष्पन्न अतिघाघारण बुद्धियों में चुप थे। हस्की सॉम के बकने के साथ पूरी अकबाल हिंक रही थी। जब मैंने 'बीबी' कहा वे आँसों सहसा बम कीं। आज पहली बार मरे मुँह से 'बीबी' सुन पड़े तो वे आँसों बमकी उपरान्त होके स कचनार के फलों सी फँक आयीं। तब कमरा-भीतरी कालों से बस छकछकाने कबा जिसे स्वस्य कौपते भोए को मन्धर ही बौनों से दाब कर रोकने की चेष्टा की जा रही था लेकिन माक दोनों ओर स फँस जाने लगी। वे आँसों फँकी बाँहिं थीं जिनमें आबाहन निवेश स्पष्ट था। वह आँसों से सब अनुस्यूत रही थीं। अपने में समा लेने का भी कबीब सम्मोहन उन बक बरी आँसों में बीसे ही तिरता लग रहा था बँस झीक में पुष्टन

का पला तिर आया हा। जब कोई मोह सामने होना है तब हमारे रोम-रोम से रक्तचाप फूट निकल कर मोह में तिरोहित होने के लिए आकल-ध्यात्म रहता है। उस सामने बिराज माह में यदि ममब हा पाये ता हम मनेह ममपित होना चाहते हैं। कछ-कछ ऐ-गही तथा बहुत बूझ और नी बीरी की भांवा में तिर आया था।

—'एकिन इस प्रकार अपने को पुन कण देकर समझती ही कि बुनिया तुम्हें दुःख-पारगत' समझने अगली ?

पता नहीं इस बात को सुनकर वह अनापाम ही क्यों फूट पड़ी। उसने अल-बाम में मुँह छुपा लिया लेकिन अलबाम पेट के पाम हिम रही थी जैम वह अपने का बीम पछम म राके हुए हा। मैं हनत्रम नहीं भी था एकिन अजीब विषम था कि क्या बर्त ? तमी धारदा आपी। अलबाम के अग्रर मे ही धारदा को आवेस मिला

—यहाँ नहीं। भीतर धारदा।

और वह मुझे भीतर ल गयी। मैंने भी उचिन समझा कि विचार का निष्कल आता ही ठीक होता है।

जिस कमरे में मैं बैठा नास्ता कर रहा था यह बाहरी छज्जे की तरफ था। एक पीठदार मसनद छज्जे में थी तथा हल्कीबाजी कम्बी आरामबुनियाँ रली हुई थीं। इसी कमरे में अनेक बिज जेमिन थे। बीच में राजसी-यागाज में एक सरदार का तैकबिज था जिस पर ताजी फून्माभा भी तथा एक दीपक जल रहा था। मुझे समझने बर न लगी कि यही मग्दार विषे माहब है। ठीक इसके सामने नाज में मय पहले "सम-यातक" (मराठी अण्डज-भाड़ी) में एक अज्य तैकबिज था। बिल्कुल पहचान नहीं पा रहा था। मुझे बिज पुरते देख धारदा मुस्कराती बाली

—पहचानिए।

—मही पहचान रहा हू।

—मराठी बूपा में अपनी धारी का नहीं पहचान पा रहे हैं ?

मजबूत नहीं पहचान पा रहा था। बीनी महाराष्ट्रीय मही है यह ता मुझे ज्ञान था। करिन आज उन्हें धरकर कोई मदा वह मरना कि बे इतनी अज निम लुप्तर रह चुकी है। मैं धारदा मे और कछ पछने ही धारदा था कि दरबाने के बीच अलबाम ओड़े बीरी को लड़े देगा।

—अरे तुम क्यों उठ कर आपी ?

और धारवा का सहारा लेकर वे पीठवाली मसनब पर टूटी सी आकर बस  
 केटी हो पीठ टिका आँसू बन्द कर बैठ गयीं। अभी भी आँसू बँधी ही थीं बल्कि  
 अन्दर झुंकर वे और पुड़हूनी हाँ मयी थी। अठ काफी देर तक परवराने  
 के कारण न परवराने पर भी बरवराने का धम दे रहे थे। धारवा वा  
 चुकी थी। कमरे में कहीं से कोई शब्द नहीं आ रहा था। छत्र से जोस  
 भीगा देतीसा मदान फास्मुनी घूप में गरमाता दिख रहा था। मौसमी का  
 गाऊ सामने की छपरक की पृष्ठभूमि से होता हुआ आकाश में छितरा  
 हुआ था। नास्ता मैं समाप्त कर चुका था। धारवा आयी और बर्तन समेट  
 सीटने को हुई कि दीदी बोली

—बैठ जी आयेँ तो बुझवा सेना।

धारवा जमी गयी। वे फिर बोलीं

—रुझगन का बस जसे ता इन्वीर के सारे डाक्टरों की तैनाती यहाँ कर दे।

जब तुम्हीं देख को कि क्याई करवा रही हूँ कि नहीं ?

मैं अबोछा ही रहा। इतने धुसे-उमसे कमरे में जहाँ छत की सफेद जाली से  
 लेकर आदरें-गिस्ताक तक एकदम बपुके के पाँव की तरह सफेद-सक हों  
 तो रुमता है जैसे हम बातावरन में उमर आवे हो। हमारा पसिना ही नहीं  
 सोचना तक इस उमसेपन को संभव है नसिन कर दे। और हम अपने को  
 और भी सिकोड़ लें कि यह उज्ज्वलता हमारी पंखी भैयुस्मिमा या उनके मीके  
 नाखून जिनमें हस्का पीसापन जड़ों में हो उसे न देख लें नहीं तो हम इस  
 उज्ज्वलता को अपमानित कर देंगे और अपमान के बाद क्या सेप रह जाता  
 है ?

—सगता है रुझगन ने तुम्हें अपने मिप्या प्रमाद से नरा है। है न ?

—माग सो है तो ?

—यही कि उसे न बिबवासना। उसे कितना कड़ा बिदान। कि वह जसा क्यों  
 नहीं जाता अपने नीमाड़ (नर्मबा के दोनों ओर का प्रदेश) में जमीन है, घर है  
 परिवार है। पता नहीं किस भाषा में यहाँ पड़ा है।

—पैस की ताँ यासा नहीं ही हागी उसे।

बात मीने कासी कड़वी कह थी। आँसू जब स्पष्ट उलझना आयी। इतनी  
 बड़ी आँसू होने पर भी छोटा सा जल नहीं सहेंब पायीं। नाक तक नीन  
 चठी। मुझे प्कानि हुई कि ऐसा कड़वा क्यों बोल मया ?

—मनमान न करें किमी को ऐसे पैसे का माहू हो। जब वह मेरी ही बेह में रिध

रिश्त कर फूट पड़ रहा है तब भला चाहेगी कि कोई परिवार वाला इस बर्गी कार करे ? मैं तो स्वयं इस भाम जाना चाहती हूँ बिधान ! नागी भी लेकिन पता नहीं तुम उस दिन जाने कहीं से आठे आ गये ।

—दीदी !

—बिधान रे क्यता है मे अरम-अरमास्तर से बेस्वा ही थी । क्या आगे भी बेस्वा बनकर ही गारीबह को अपमानित सांछित करती रहेंगी ? बिधान ! अब नहीं सहा जाता नहीं

और वह मजबूत ही जैसे ही फूट पड़ी जैसे मरी के उद्गम स्थान का पर्वत । अद्वान का कप-कप रिस्ते लगता है और रिस्ते की एक भारा बनती है जो मरी है । दीदी के रोम-रोम से आंसू पूट रहे थे । लेकिन हमने बार मरी बनी कि नहीं नहीं जानता ।

—दीदी ! लड़पन को साथ करके पुरी हो आओ । स्वान बदलने से मन बदल जाता है ।

—कपता है बड़ा अनुभव है तुम्हारा ।

और पौड़ी देर पहले के आंसू भीये मुख पर उसकी हस्ती मुस्कान बेस ही गिपा उठी जैसे पामियों के सम्झाकाय में फीका किन्तु प्यासित मग्घ्याकारा । बिसे हम बकते हैं फिर भी नहीं देखते । मुझे बड़ा लज्जा कमा । दीदी राती भी अत्यन्त मन से थी और इस समय भुस्करापी भी मन से । मन से रोने तथा हँसने पर बँसा ही व्यक्ति हो सुन्दर ही लगता है ।

—और नहीं तो क्या ? तुम समझती हो कि तुम्हारा अनुभव ही बड़ा है ? और किसी का नहीं ?

—बाबा रे गिबाय पाप के मामल का छोड़ और किसी बात में आज दिन तक अपन को बड़ा नहीं माना ।

—मुन नहीं हा तुम ।

—कैसे ?

दीदी प्रान मरी आँसू किये किञ्चित् गैतानी का उत्तर भरसा कर रही थी ।

—तुम मुन से अपने को बड़ा नहीं मानती ?

और बाबावरम फाल्गुन माम की मूर्ति हस्वा हा माया ।

—अपना ह्माक टिन से बड़ा नहीं करवाती ?

—मने पाप के रागों के बार में छात्र भाई मे अर्था करन क्या मुझे साज न आणी र ? माना कि मने चर्मे देह देवी-देवता सबरी अपमानित किया



अफिम और तो निर्मल्य न बना कि बेह के पापों की चर्चा ठेरे आगे भी करने  
 स्मृ। तु नहीं जानता कि एक बार छात्र न रहने पर निर्मल्यता की कोई  
 सीमा नहीं होती। और तु बार-बार पुष्टकर क्या अपनी वीरी को यह नहीं  
 बता रहा है कि मैं मास देह की और उम बेह की यह दुर्दसा है। इस बारे  
 में चर्चा मत कर बिसन ! तु नहीं जानता कि मैं अपनी इस गारी-बेह से  
 भुजा करती हूँ किन्हीं हैं मुझे। साहस होना ठा इमे धार फेंकनी। सड़े  
 गले बूहे की मति दुग बीच सड़क में फक बनी कि सो यह पूहा है जिसे तुम  
 चाहते रहे। सेकिन जाने किन्ने जन्म के पाप आड़े आते है कि—कोड़ी हो  
 जाएँ, जम भंग मल रहे हों मांस फूम-फूम उठने पर भी हम जीना चाहते  
 हैं। कैंसी प्यास है यह जीवन की विसम ! पिमटठ कुने और ममुप्य में कोई  
 अन्तर नहीं रह जाता। हम निरे होंगी है। सब हम बुझी भी वास्तव में  
 नहीं होते। बुझ का बॉम करते है ताकि सामने वाला व्यक्ति हमें अपनी  
 बपा के आँसु में डू से। हम जीवन भर अपने को सामने वाले को छलते हैं  
 और समबत इसीलिए यह व्यप्य बस पाठा है। यदि तुम्हें ऐसा नहीं लगता  
 है तो तुम झूठे होने कि मैं अपने को बार-बार बेव्या नहकर या पठित  
 बडाकर सहानुभूति चाहती हूँ। विस्कृष्ट यही है विसम ! मुझे किटना  
 अच्छा लगता है कि तुम लज्जमन धारण—कम से कम तीन व्यक्ति ठो है  
 वा चाहत है कि मैं अच्छी हो जाऊँ, जिम्। और साम्य व्यक्ति परिवार,  
 कुटुम्ब इसीलिए ता होता है कि आप जब मरण कर्मों तो परिवार के लोम  
 चिन्ता प्रसट करे, राकर कहे कि नहीं आपको इस समय नहीं मरना चाहिए।  
 चिन्ता विडम्बना है। अफिम उससे भी बड़ी विडम्बना यह कि मैं परिवार के  
 संबंधों की पवित्रता पर व्यंग्य कर रही हूँ क्योंकि बेह के मे घुण्ट राग मन की  
 या रह है। बेव्या का मन कौड़े सामे उनी कपड़े की तरह होता है विसम !

मैं जबक बैठ सुन रहा था। वह बाइ वाली बहूपुत्र की प्रवेमित थी। स्वयं  
 तक करती फिर अपना विरोध भी माप ही कर लेती। जैसे वह घस्त्र भर हो  
 जो हृत्पा तथा आत्महृत्पा दोनों का निमित्त बने क्योंकि हृत्पा या आत्महृत्पा तो  
 घस्त्र क कारण हमें बस विकलायी पड़ पाती है बाकी वह हृत्पा या आत्महृत्पा  
 घस्त्र के उपयोग के बहुत पूर्व ही सम्पन्न हो चुकी होती है। व फिर बोली  
 —बिसम ! मरी बात का बुरा न मानना तु छोटा है न इन्कीन्तु मुझे बेल ऐसा  
 ही लगता है कि जैसे अशोक पिण्ड के सामने माटा तक दिवंबर होने में

पुछाई नहीं समझती । मैं भी ता तेरे सामने दिगबन ही तो हूँ । कीड़े पाया मन तक बिस्सा रही हूँ । तुझे नहीं लगता कि उस 'दिन पीपल्या टैंक' पर बचा कर घूने पुण्य नहीं किया भरन पाप ही किया ? अर्धमूठ को मर जाने देना पुण्य है बिगान ! बजाय इसके कि उस बिस्सा देने की चेष्टा की जाए और वह दिन रात हमारे सामने रिस्तता रिस्माता बिये और जब कभी वह हमारे सामने पट जाए ता हम नाक-बाल-आँखें बन्द कर मर से एक पीसा निकाल कर चाहें कि यह जस्त जालों से ओसल हो जाए ।

—बीबी ! इतना सारा कोमना भी यह मिट्ट नहीं करता कि तुम स्वयं का जितनी पतिल परिश्रहीन रह रही हो वह सही है ।

—मरतस में जानती थी कि मौल्य का जाबू तो भब रहा नहीं लेकिन बिगुणा का स्वाँग भरना भी ब्यर्ब गया ? हाय रे माय्य ! !

और वह अजीब नाटकीय ढंग से अप्रत्याशित हँस पड़ी कि म एन्डम बीना हो उठा ।

—कहिन ऐसा उसने क्यों किया ? बीपर ! उसक बाद में कई दिना तक गही गया ।

बिगान बाबू की छत्र पर धूप लूब छितर बायी थी । कमल और बीपर लगभग होकर सुन रहे ब । बिगान बाबू बाल

—म समझता हूँ कमल ! आज बहुत दर हो गयी तुम्हें भी । मैं तो आज मुनाले पर गया था कि बग । मरे ही बीपर ! तुम उस दिन अपनी दादा ब बारे में कुछ बताना चाह रहे थे म ?

और बीपर बाबू विचिन मुस्करा दिये । कमल उगत हुए बायी

—म तो भाकिनी बीबी म मिलने का बहुत उत्सुक हो उगी हूँ बिगान बाबू !

—मुझे ता प्रत्येक नारी अपन में सम्भूष इबाई समाप्ति लगती है ।

—और प्रत्येक पुरुष एक बूमेरे का पूरक न ??

बीपर की बात का जबाब देकर बिगान बाबू बाड़ी जाए म हँस दिये ।



महाराज बाड़े के सामने मात्र अपार भीड़ थी। खारे पानी से नमक बनाया जाएगा और अंग्रेजी नमक कानून की चुनौती थी चापसी। चूँकि यह बेटी राज्य का यहाँ नमक पर कर नहीं था इसलिए लोगों को मात्र कोसूहक था। एबेरे छह बजे के पूर्व महाराज बाड़े के सामने तिरफ धरने की जगह म रही। सभी भीड़ में भक्तिपूर्ण की मित्राहट थी चठी। किसी ने बोरो से कहा कि—पी० ए और ए० जी० पी० सभी बाड़ में मये। लोगों के चेहरों पर अजीब मयात्मक चुप्पी छा गयी। आँखों में संका तिरने लगी। बाड़े के फाटक और बीबार के पास तैनात पुलिस की चार हजारों आँखें उठ गयीं। सभी विद्यन बाबू ने पुस्तक चाहन के काम में बुद्धबुधामा

—आप इसी समय अपना भाषण शुरू कर लीजिए। लोग पी० ए० और ए० बी० पी० का नाम सुनकर सगवा हूँ डर गये हैं।

और इसके बाद पुस्तकें चाह्य ने अपना भाषण रीकट एक्ट के बारे में शुरू किया। सभी भीड़ को धीर कर पुलिस सुपरिस्टेन्डेंट ने आकर पुस्तकें माहक को रोका कि वे अपना भाषण बन्द कर दें और यह नमक बनाया जाता भी बन्द किया

जाए। जब दोनों ही बातें बन्द न हुईं तो उनमें बढ़कर पुस्तक साहब को मज से नीचे धसीट लिया। पुलिस की सीटियाँ बग उठी और देखते न देखते पुलिस की साठियाँ चल पड़ीं। पुलिस ने पुस्तक साहब, मासुती दबी को पकड़ लिया था लेकिन विधान बाबू कमल पुस्तक तथा श्रीधर बाबू को पकड़ इमका पूर्व ही से तीनों निकल भागे। देखत-देखते भीड़ भाग रही थी और पुलिस-काठियों का खिसा रही थी। सुप्रीम हो रहा था। घुप मकानों की छतों पर चढ़कर और सड़का गलियों को पीठस का बना रही थी। बोड़ी देर में ही उस विधान मंदिर में पुलिस ही पुलिस रह गयी। कहीं-कहीं भागे सोपों की बीजे फनी-टूटी यहाँ-वहाँ दिखते पड़ी थीं। मागध सागों ने जाने कम मुन लिखा कि पुस्तक साहब मासुता देवी को गिरफ्तार हो ही गये लेकिन उनकी लड़की कमल पुस्तक तथा विधान बाबू और श्रीधर बाबू के नाम भी बारस निकल ग्य। पर से तीनों वहीं निकल भागे। राह में देखत न देखत १४४ घारा कायू कर ही गयी और अब पुलिस, लोगों के घर तकसी सेन घाने बाली है। साथ कारोबार जैसे टप हो गया। सन् १८५७ के बाद पहली बार इन्दौर के सागों क मुंह पर और कानों में 'स्वतंत्रता' 'स्वराज्य' चर मूँद रह से।

विधान बाबू जानते थे कि काठीचार्ज के बाद गिरफ्तारी का बारस तथा तकसी होगी ही। से तीनों गलियों से भागने हुए पहलू बान पर पहुँचे। अभी छावनी तक काठीचार्ज की चर नहीं आयी थी। सोय बारास स रोज की तरह ही सभेरा किये हुए थे। ठगरारियाँ साने गोय शोक हाव में किये निरम भुक्त थे। औरतों पीठस से धड़ा का 'बेबाड़ी' सिर पर रखे कुमा की ओर भा-जा रही थीं। अभी जब पोड़ी ही देर बाद काठीचार्ज की तथा १४४ घारा की बात फेंगी तब यही सुनी प्रसन्न निरिपन्न जीवन अपने को मज से छिपौड़े लेगा। पीठस के चमकते धड़ों के से बबड़े कर से घरा में जिन जाएंगे। ठगरारियाँ मुँद तक भरें से पारिवारिक माने तक बाल से या भाग कर मसियाँ में लुक्त-दुपट्ट हाँकते घरों में घुस कर दरवाजा बन्द कर लेंगे। सारा महर एक बड़ी भुप में भुप जाएगा। हर पर एक हीय की भाँति अपने में कटा हुआ हा जाएगा। इस समय रास्तों पर सोय चल रहे हैं लेकिन थोड़ी ही देर में गपटें, पुलिस और मज के अतिरिक्त कोई यात्री न हाया। सोय न केवल घर के दरवाजे ही बन्द कर सेंगे बल्कि स्वयं बन्द दरवाजों के घर की तरह हा जाएंगे। बाहर सब कुछ सम्पन्न होता रहगा—घुप हागी प्रहृ बरसें लेकिन सोय और कापों का स्यापार न होगा। सोया के होते हुए भी चहर जैसे मर जाएगा। लेकिन सोपों तक अभी से भयानक तबटें

नहीं पहुँची है। वे तीनों तेजी से कदम बढ़ात बढ़ रहे थे। गिरफ्तारी पुलिस तमाची भाड़ि का यह अनुभव कमक और धीबर बाबू के लिए एकदम नया था। दोनों के मन उत्साह में उछल पड़ रहे थे जैसे रोमांस रूप रहा हो। विभन बाबू ने कुछ बरुकी कागज-पत्र तजी से समेटे और वे तीनों फिर सड़क पर आ गये। जब तक सबरे २० मिनटों तक यह-वह-हान लगी थी। विभन बाबू इस समय किसी भी समाबित नहीं आना चाहते थे। खूनी इन्दौर में गाथा किनारी बेचने वाला एक पत्रिका था जिसके साथ कमी विभन बाबू ने भी बोपहर में यकी-मकी आबाब लपाकर गाथा-किनारियाँ बेची थीं। परिवारहीन हरलचन्द केरीबाला राजस्थान का रहने वाला था। उसके घारे में कोई कुछ विभेय नहीं जानता था। बस वह विभन बाबू को बहुत मानता था। जिस बेका गस्मियों से सपाटे मारते हुए हरलचन्द की कोठरी पर पहुँचे वह मूँप में बैठा हुआ दतीन कर रहा था। चाड़ी देर पूर्व ठिछी ने उससे महाराज बाड़ की बटना क बारे में बताया था लेकिन उसने किसी भी बात पर कोई आश्चर्य नहीं प्रकट किया। सुक्री मोती कमर में भाड़ी का कौरा (करबनी) सुते वजन का यह राजस्थानी बनिया जबीब असम्भुक्त व्यक्ति था। बाँवे कान में ऊपर की तरफ एक मोती की बामी तथा मिर पर पगड़ी के रंग का घेरा बना हुआ था। अवेड़ हरलचन्द ने विभन बाबू को बेका तो किंचित मुस्कय दिया।

—क्यों विभन बाबू ! बहुत दिनों पर ?

—हरलचन्द भी ! बरा सुनिण, आप से काम है।

—हाँ हाँ बबो ! दो बार बरस में कमी थिल्ले नी ही तो काम से ही।

तेजी से वे हरलचन्द की कोठरी में भुस । पहुँचत ही दरवाजा बन्द कर धिया गया।

हरलचन्द ने विभन बाबू की इस हड़बड़ाहट पर किंचित मुस्कराते हुए कहा

—क्या बात है ? आप सोय बहुत बबधये हुए माळुम से रहे हैं।

—हरलचन्द भी ! हमारे नाम बारल्ट है

पूरी बात सुने बिना ही हरलचन्द ने स्फुड़ी के एक जीने की तरफ इधारा करते हुए कहा,

—कोई बात नहीं आप लोग ऊपर परे घाएँ। म बरा माठा हूँ जमी बाजार से। ये नीचे का दरवाजा मत लगाता।

और हरलचन्द ने अपना धूरठा पहना तथा दरवाजा लुमा छोड़कर बाहर निकल गया।

खरड़ी का जीना उन तीनों को दुष्टता वाले एक कमरे में ले गया। जहाँ योद्धा बहुत फुटकर सामान हरसबन्ध ने पटक रखा था। चहतीरों और खपरणा के बीच से कहीं-कहीं घुप की नीली रस्सियाँ लनी हुई थीं और भूप की त्रिदियाँ यहाँ यहाँ छिटकी हुई थीं। एक छोटी लिङ्की भी जिसमें दूर-दूर का दृश्य लिखता था। दूर पर जाता हुआ हरसबन्ध और उसकी जयपुरी-जयजी-जयि-रही थी। राज इससे अपिन्न मीढ़ यहाँ से दिल्ली हापी सकिन इस समय पूरा सिपा दून ही अधिक दिव्य रहा था सोम नहीं क बराबर थे।

—कमल ! इस सट हरसबन्ध के साथ मने भी मांग किनारी बेचने का व्यापार इन्दौर की गलियों में दोपहर भर धूम-धूम कर दिया था।

—साब ??

कमल ने आश्चर्य में आँसों फैलाते हुए कहा लकिन धीपर बाबू बकास ही रह कर विद्या बाबू की साहसिकताओं के प्रति प्रसन्ननीय बने रहे।

याम तक हरसबन्ध के द्वारा इन लोगों को पता रूप गया कि बालाभरण में अब उतना तनाव नहीं रहा। इन तीनों की खोजगार कात्री फल की गयी तथा अभी भी जारी है लेकिन कहीं पता नहीं चल पा रहा है। चूंकि गंगल एट का देनी रायों से कोई सम्बन्ध नहीं था इसलिए पुनःके साहब तथा माण्नी देवी के रिहा कर दिये जाने की संभावना है। दो-तीन दिनों में ही इनके नाम के भारत भी रह कर दिये जाएंगे।

दुसरे दिन से फिर गहर का साथ कारोबार बरु निरन्तर।

हालांकि हरसबन्ध की बिस्मय इच्छा नहीं थी कि य सोम पर से कहीं बाहर जाए लेकिन वे तीनों अन्त खबर ही निरन्तर पड़े। काटी टल थी। ब सोम उन्नीन जाने वाली सड़क पर निरन्तर आये। त्रिम समय से सोम गहर को बहुत पीटे

छोड़ चुके उस समय धूप घेतों में हल्किा की भाँति निरिचरत फुरत रही थी । सड़क-सड़क चलना बतरनाक हा सड़कता पा इसलिये पाठ पर सूर्य क्रिये के छाग वेठा क बीच पगडडी स बड़ते रहे । अपनी सम्झी-सम्झी छायाएँ जेता में बिछाते हुए के स्नोग उस झील की तरफ बड़ रहे थे जहाँ बसी बिगन बाबू जाये थे । गहर कम से कम तीस-चार-सीस मूत तो रहा ही हाया । सामने बड़ी ऊँचाई पर जैसे बाँध का बीर उसके सोप कर्हाबर पेड़ा की कठार बनी गयी थी ।

—बाबो कमल ! एक छा गयी होगी लेकिन ऊपर पहुँच कर तदियत कुछ हो जाएगी ।

बीर सचमुच मने पेड़ा से चारों ओर स यह झील बिरी हुई थी । खुल पानी था । कमड़ी का एक पाठ बना हुआ था जहाँ दो चार नावें थीं । झील क बीच में पक्का बबूतरा बना हुआ था । पानी जैसे सम्बाकब मरा था । हल्की हवा म पानी में पूब ऊहरे उठ रही थीं । पीछे की तरफ इन्दोर महर इल्का बिछ रहा था । मिर्कों की बिमनियों स चूमा बाबाय में अजगर की भाँति रेंप रहा था । इस तरह कर से बाहर मारे-मारे किले तीसरा दिन था आज ।

—बिघन ! बसो नाब से उस बीच वाले बबूतरे पर चका जाए ।

कमल का प्रस्ताव सुनकर बीबर बाबू बोले

—बकर बचना चाहिए । चारों ओर छहरों से भरे जब से बिरे होने पर बहुत बच्छा सगता है ।

—माई ! मुझे बच्छा-बच्छा उमी लगता है जब पेट भय हो ।

बिघन बाबू की वाठ सुनकर सब हँस पड़े ।

—अबीब पेट हो बिघन ! सचेरे से ही मूत लग आयी ?

कमल ने हँसते हुए कहा ।

—मुझे क्या भँ बाता हूँ पास ही जो गाँव बिल रहा है वही स माँग कर जा जाता हूँ आप लोग दिन भर मइ बनकर मुझों मरिएगा ।

पास के एक गाँव से खा-पीकर जब वे लोय बापस झील पर पहुँचे तीसरा प्रहर था । डाँड़ बकाटे बिघन बाबू को कमल किचित संभमुख होकर देख रही थी कि ब्यक्ति किटना चुका साहसी तथा निस्वक है । बीबर बाबू साथ रहे थे

कि कमल से बिगान को बिबाह कर सेना चाहिए लेकिन गृहस्थी का क्या होगा ? तीनों ही सोच रहे थे अपने में । आधी देर तक किसी को ध्यान नहीं हुआ कि वे साग चुप है क्योंकि बिगान बाबू तो कमल के बारे में ही साब रहे थे कि किस तरह कमल से बिबाह का प्रस्ताव किया जाए । हुआत तीना को लगा कि अजीब पाप्मि नाब जल किनारों तथा पड़ो की फुनगिया पर टिड्डी मरु, मरु में है । केवल बाई के छपाछप की ही आबाब है । कोई बनपानी तर्क नहीं था जो कि बिपिन को स्वर देता है बार-बार टेर कर बताये कि यहाँ इस पेड़ के तन में पगडण्डी के रास्ते इस बाली में बनदेवी मापी है ।

—धीमर ! संसर्ग दाप इसी को कहते हैं ।

और बिदान हँस दिये ।

—ससर्ग बोप ?

—और क्या ? भूषों की तरह चुप रहना मुझे तुम्हारे संसर्ग न ही ता आया बना बताओ किम कमल से मिलने के लिए आकम्न होकर मैं कम्बई तक जाता हूँ मला वह इनने नाटकीय सम्पर्क में मेरे साथ एक ही नाब में हा तो मुझे किटना कुछ नहीं बालना चाहिए ।

—किन यह भी तो धीमर बाबू के ससग से ही तुम्हें आया कि जब बाहरी व्यक्ति उपस्थित हो तो नारा का सम्मान किया जाना चाहिए ।

और तीनों विरगनिसा पड़े ।

शोक के चक्रवर्ते पर आत वहाँ से जाती चुप का एर दुःखी माया और कमल उममें महा उठे । अजीब चुप्पी की कि टूट ही नहीं रही थी । लगता था तीनों फिर सोचने लगे । यह चुप टूटे इसका प्रयत्न दा-एक बार किया गया लेकिन लगता सार बार-बार टूट जाता है । हुआत तीनों फिर चुप हा मये । थापर बाबू की इन बार सया कि इन बानों की चुप के एरमात्र कारण ये है । ये तानों अभाव कुछ बाते करना चाह रहे होंगे लेकिन उनकी उपस्थिति के कारण नहीं कर रहे हैं । पर शोक के बीच बैठकर वे कैसे बहो आ सभव है ?

—मुने नहीं हाना चाहिए या यहाँ इस समय ।

—क्यों ?

थापर बाबू की बात पर कमल ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ।

—बात तो ठीक है धीमर ! तुम्हारी ।

—क्या बात ठीक है ?

बिगान की ओर मुँह कर कमल सरपत हुई ।



छाड़ चके उस समय घुप खेतों में हुरिभों की भाँति निरिचिन्त फुबक रही थी । सड़क-सड़क बसना गतरनाक हो सकता था इन्किष् पीठ पर सूई किसे वे लोग खेता के बीच पगबंदी से बड़ते रहे । अपनी सम्झी-कम्झी छायाएँ खेतों में बिछाते हुए वे लोग उस शील की तरफ बढ़ रहे थे जहाँ कभी विनाम बाबू जाये थे । पहल कम से कम तीसरा-तीसरा तो रहा ही होगा । सामने बड़ी डोबार्स पर जैसे बाँध था और उनके साथ कुराबर पेड़ों की कतार बनी पसी थी ।

—बाबो कमल ! मुझ को पदी हामी रेडिन ऊपर पहुँच कर तबियत घुप हो जायगी ।

और तबमुक्त पने देका से, चारा और से यह शील थिरी हुई थी । खूब पानी था । लकड़ी का एक घाट बना हुआ था जहाँ दो-चार गाँवें थीं । शील के बीच में पक्का बबूतरा बना हुआ था । पानी जैसे सजासज भरत था । हल्की हवा से पानी में बूब लहरें उठ रही थी । पीछे की तरफ इन्बोर सहर हल्का बिल रहा था । पिसों की बिमलिया से बँधा साकाय में मजदूर की भाँति रेंग रहा था । इस तरह पर से बाहर मारे-मारे किले तीसरा दिन था थाय ।

—बिचन ! जलो ताब से उस बीच बाग बबूतर पर जला जाए ।

कमल का प्रस्ताव सुनकर धीधर बाबू बोले

—कर बनना चाहिए । चारा और कुरो में भरे बस से बिरे होने पर बहुत बच्छा लगता है ।

—माई ! मुझे बच्छा-बच्छा तमी लगता है जब पट भरत हो ।

बिचन बाबू की बात सुनकर सब हँस पड़े ।

—अजीब देन हो बिचन ! सनेने से ही मुझ लय जायी ?

कमल ने हँसते हुए कहा ।

—मुझे क्या, मैं जाता हूँ पास ही को मौब बिल रहा है कहीं से मौब कर सा जाता हूँ बाप लोग दिन भर मद्र बनकर मूलों मरिण्या ।

पास के एक मौब से जा-वीकर जब वे लोग वापस शील पर पहुँचे तीसरा सहर था । छाड़ चलाते बिचन बाबू का कमल किचित मंत्रमुग्ध होकर देख रही थी कि व्यक्ति किताब कहा साहसी तथा निरस्त है । धीधर बाबू लोच रहे थे

कि कमल से विमान को विवाह कर लेना चाहिए लेकिन गृहस्त्री का क्या होगा ? तीनों ही सोच रहे थे अपने में । काफी देर तक किसी को ध्यान नहीं हुआ कि वे कोय चुप हैं क्योंकि विमान बाबू तो कमल के बारे में ही सोच रहे थे कि किस तरह कमल से विवाह का प्रस्ताव किया जाए । हताश तीना को लगा कि अजीब घाण्टि नाम उस किनारों तथा पेशों की फुलगिया पर टिकी मनु मुक में है । कबल डाँढ़ के छपाछप की ही भाषाज है । कोई बनपायी तर्क नहीं था जा कि विपिन को स्वर देता है बार-बार दर बन बताये कि यहाँ इस पेड़, क तने में पगडण्डी के रास्ते इस बायी में बनवेबी मोयी है ।

—धीपर ! ससमं बोप इसी को कहते हैं ।

और विपिन हँस दिये ।

—संसम दाप ?

—और क्या ? मुझों की तरह चुप रहना मुझे तुम्हारे ससमं ने ही तो आया बना बताओ जिस कमल से मिलने के लिए आकर होकर मैं बम्बई तक जाना हूँ मला वह इनके मातृकीय ससमं में मरे साथ एक ही नाम में हो तो मुझे किसमा कुछ नहीं बोलना चाहिए ।

—लेकिन यह भी तो धीपर बाबू के ससमं न ही तुम्हें आया कि जब बाहरी व्यक्ति उपस्थित हो ता मारा का सम्मान किया जाना चाहिए ।

और तीनों क्षणगिमा पड़े ।

शीस के चबूतरे पर चामे वहाँ से आनी चुप वा एन टुबड़ा भाया भीर कमल उसमें मला उठी । अजीब चुपनी थी कि दूट ही नहीं रहीं थी । लगता था तीना फिर सोचने लगे । यह चुप दूने इनका प्रयत्न न-एक बार किया गया लेकिन लगता तार बार-बार दूट जाता है । हताश तीना फिर चुप हो गये । धीपर बाबू को इस बार लगा कि इन दानां की चुप क एकमात्र कारण से है । ये दानां मदस्य कुछ बातें करना चाह रहे हागे लेकिन उनकी उपस्थिति क कारण नहीं कर रहे हैं । पर शीस के बीच बैठकर ये बीम नहीं जा सकत हैं ?

—मुझे नहीं होना चाहिए वा यहाँ इस समय ।

—क्यों ?

धीपर बाबू की बात पर कमल ने आश्चर्य प्रकट करत ह्रा बहा ।

—बात तो ठीक है धीपर ! तुम्हारी ।

—बना बात ठीक है ?

विपिन की ओर मुँह कर कमल मसमं हुई ।

—अरे यही कि—या प्रेमियों के बीच में मुझ तक  
और बिचन 'हा-हो' कर हीस पड़े। कमल का सजा गयी। वह बापू

—तुममें जरा भी सज्जा

—मुझ में ही नहीं कमल। मेरे गाँव के किसी भी आदमी में यह दुर्गुण कभी नहीं  
था।

हँसते हुए तीनों को लगा कि पाठावरण हल्का हुआ। अच्छा क्या।

—क्यों अब पचना नहीं है ?

कमल ने डील जूड़े की पिन ठीक करते हुए कहा।

—बैठी तुम्हारी मर्जी लेकिन मैं चाह रहा था कि सूर्यस्त को साक्षी करके श्रीधर  
को महाह बनाकर तुमसे विवाह का प्रस्ताव करता खैर जलो आज न  
सही। गाँधीबाबा फिर कोई आन्दोलन छड़ेंगे तो फिर इसी तरह मामक  
कहीं जसिंगे। लेकिन अबकी बार प्रस्ताव में माँझ के उस दुर्म में छोड़े  
होकर लड़ा करना चाहूँगा जहाँसे लयमती नर्मदा के दर्शन किया करती थी।

श्रीधर बाबू अनाक होकर बोलत बिचन को देख रहे थे। जब यह व्यक्ति गंभीर  
और कब नहीं चाह ही नहीं बगती। कितनी गंभीर बात को कैसे भ्रमताऊ बंग  
से कह रहा है कि बस। जब कि कमल को इतने लुकेपन पर बैसी ही छात्र आयी  
जैसे सहसा साड़ी पिडकियों तक ऊँची हो आयी हो लेकिन यह मन ही जाये  
कि इस सुंदर बचन के बिचन को अपने चुम्बनों से टाँक दे बस टाँक दे।  
कैसा है यह व्यक्ति ?? दोनों ने देखा कि सूर्यास्त के लिए आकर सूर्य को बिचन  
बाबू देखने का मात्र बहाना किये हैं। असल में तो वे अपने को छुपा रहे हैं।  
भला कमल स बिचन बाबू अपने को अब और क्या छुपा सकेंगे ? वह बड़ी और  
घसने पीठ किये बिचन के कंधे पर अपना हाथ रख दिया। श्रीधर बाबू तन्मय  
थे। कितना बैसा पाठावरण का जैसे किसी दबता का मुझ हो। श्रीधर बाबू ने  
अत्यन्त मुझी मन से दोनों को अपनी पीठ की आड़ में ले लिया। केवल पीठ  
के पार उन्होंने बिचन बाबू का स्वर सुना

—आजो कमल ! जसों न ?

—हाँ, साक्षी और गवाही बानों ही तो हो गयी।

बिचन बाबू की हल्की हँसी सुनायी दी।

कोटते न नाथ में फिर मीन था।

उस दिन बापू घरमा मनी क लिए भापा-गया हो गयी । रात कमल जब  
 बम्बई जा रही थी तो बिगन बाबू क साथ भापर बाबू स्थान नहीं गये थे । लेकिन  
 श्रीमन् पर बिगन बाबू की बापों म सगा पुत्रक माहब और पत्नी भातनी देवा  
 को कमल और बिगन की यह सीखी बाद मुकदर नहीं लम रही थी । संभवतः  
 भा-शजन क उन तीन-चार दिनों में कमल का इन प्रकार बिगन के साथ-साथ  
 घूमते रहना भी उन्हें अरु नहीं मूगया । रात देर रात तक बिगन बाबू कमल  
 से हुई बातों के यहाँ-वहाँ क दुकड़े बताने रह । इन सब बातों मे बे दु गी ही ये  
 यदि नहीं कट मन्तार या तो मात्र यही कि कमल अत्यधिक भाइए थी । मात्र  
 घेमे भी रबिबार या और अनक दिन उ-राप्त न दोड़-युव थी न किसी तरह का  
 गलतगम । बिगन बाबू अन्त भी लाल मूँते का यह थे । दिन कर करि अन्त ही  
 गुन जाने लय थे । जाणों क दिन जैसे बय प्राल हा रहे थे । मकरे की घुन में  
 का पहन साया-नीलासन तथा क्रमा क्रमाने रहना या अर बेमे सब नहीं रहे गया  
 या बकि एकलम बिल्लीर की बमल आ बनी थी । दिन-रातहू को बैगकर जगारा  
 येया लपता कि जैसे जाउ ने आणों बामनी गुन कर ही है । लेकिन इस समय का

सबेर या। छत पर भूप फली हुई थी। नदी में कड़के बिस्का-बिस्काकर नहा रहे थे। साथ व्यापार यथावत था। तमी बिघन बाबू आँल मन्त हए जाये और बोसे

—मेरा तो क्यास है कि दुनिया में अमर ब्राह्मण लोग न हों तो सूर्य तक को बँग हो जाए। तुम लोगों के नहाने-धोने पूजा-वाठ के डर से सूर्योदय बन्धी जाता है।

—ककिन बिघन बाबू ! ब्राह्मण बेचारे हैं ही कितने ? अब्राह्मणों से कहिए न कि ओर लपारें। वहुमत है बहुमत।

—पापी लोग कितने ही कम हों बजन उनका ही अधिक होता है। जानते नहीं एक पापी ही नाब को से बूबता है।

और वे लोग हँसने लगे।

—धीपर ! कोई आया तो नहीं था ?

—कबों ? कोई जाने वाला था क्या ?

—पता नहीं सबेरे-सबरे नींद में बराबर मुझे ऐसा लपता रहा कि मुझे पुस्तके साहब ने बुकबाया और उनसे जासी शकप हो गयी।

—किस मामसे में ?

—यही कि इन्दीर में गये अधिक है या थोड़े ?

—अच्छा ??

—जी हाँ पण्डित श्रीभर नाथ ठाकुर ! मैंने कहा कि इन्दीर में एक भी गमा नहीं था लेकिन कुछ ही दिन हुए बेहात से एक गमा जा गया है।

और वे ओरों पर हँस दिये।

—बाहू बनाव ! सबेरे-सबेरे ही

—जो आबमी यह नहीं समझ सकता कि भाभी ससुर और भाभी दामाद में मझा क्या बातें हों सकती हैं उस मझे आबमी को गमा न कहा जाए तो क्या कहा जाए ?

—तब तो आपके ससुर साहब ने आपकी बूब घाठिरदारी की होगी।

—अरे साहब बो-बो जाने बिछाये कि बस—

—बिघन ! तुम पठा नहीं हर बात को अपनीर बनाकर क्यों सामने रखते हो ?

—क्या कहें ? बढाभो मैं जानता हूँ कि पुस्तक महालय कभी भी कमर का बिबाह मेरे हाथ नहीं होंगे बँबे। सपने में उनसे बड़ी शकप हुई। सब मानो श्रीभर ! मने उनकी यात्रों में हिसपसु की थमक देखी। मेरी बारमा कहती है कि यदि कमर की शाबी मुझ से हो गयी तो वे मुझे मिटा देने के लिए सबकूचकर चकते हैं।

- ता फिर तुम कम से बिबाह मत करो ।
- धीधर ! अभी भी कहना है कि तुम अपने घर लौट जाओ । अपना मीठापन सब मिबाह ठोकरें खाते क और कुछ हाथ नहीं आएगा । मल मादमी । यह दुनिया है । क्या अपनी दुर्गत करना चाहत हो ? गौमुर्ती में बाधनन छिपाये इन 'भक्तव्रता' न हूँ यज्ञात् नारी को बन्धापन प्रधान बिना और हूँ पुण्य को दाम बनाया । धीधर ! इन 'भक्तव्रता' की नाक पर यदि धूँसा मार सकत हो तब ता घर-परिवार छान्दना बना और धीधर बाबू ने मात्र पहली बार बिगत का शीम में फुँकत देना । मुँगी यह परदरा रही थी ब्रैत नाम में निकली गलबारा हा ।
- धीधर ! मात्र अपनी गीनी क पास जाना चाहता हूँ चलाने ? मानना या कि मैं ही पुण्यके साहस म कमल क बारे में बाधे कहेंगा सक्रित कम गत स्पेयन पर उनका व्यवहार दन्कर लगा कि नहीं ऐसा करना नारी भूष होया ।
- मरा भी ग्याल है कि तुम्हें इन बार में उनम काइ बात नहीं करना चाहिए । ईमे अपनी बीबी स भी पूछ देना ।
- उमम क्या पूछूँगा ? का एक दुमगी भावनावादी धीधर हैं । यह म वह बरना ही गयी थी मम मे तो वह देवता ही रही भावम जन्म-वन्मान्तर से । और देवता मुने निरीह लगते हैं ।

बिना काजल भेरी और मा मध्याह्नक और उममें और मी टिडी मध्या पी जब धीधर बाबू और बिगत बाबू मान्मी के घर पहुँचे । बाहर क फालक पर ही लछमन मिन मया था । बाहरी बैठक में बैगामरर बहु अन्दर मूचना रने बना गया । धीधर बाबू बड़े ध्यान म रही बातों मे देल रह थे । तमी लछमन आतर बिगत बाबू को बुला ले गया । अब धीधर बाबू बैठक में निवान्त अवन रह गये । बैठक की मारी सज्जा म मंष बा रही थी कि मगं अब कोई नहीं बैगता । जा है वह मर दमक्रिा है कि उन्हें ऐसा ही ग्या गया था । किसी बन्धु पर घुम नहीं थी उरसा भी नहीं लग रही थी कि जब बारी नहीं बैगता है तब उन्हें मुन

मित्त क्यों किया जाए ? सब में अत्यन्त व्यथना भी लेकिन जिस वस्तु में मानवीय हावों की झुंझ या मानवीय-स्पर्श नहीं होता है तब जो अजीब मिश्रण का आभास करती है वही सगरी थी । प्रेमिल चित्रा और छविता में एक अजीब अन्वेषण था । अनेक बार दोनों भी होती हैं वस्त्र सुन्दर भी होती हैं । हमें लगता है कि वे मुँहती हैं खुलती हैं लेकिन हाम रे विचरता—वे बस इतनी ही है । न वे देखती हैं न सुनती हैं । न उनमें सपने होते हैं न मोह न दूर क सितिल न पाप का आस्वादन—बैसे कौड़ियों को किली न पत्तों लगा ही हों । मुँह अन्वेषण से डर नहीं लगता जिसका कि इन दुली बातों क अन्वेषण से लगता है । बड़ा अजीब है कि चीजों पर बैठते रहिए ता उनका काष्ठनार हठाठ कम होता है, लेकिन न बैठने पर घाबरा ठिकता भी शेषनाग के लिए मारी हो जाना होता । जीवन का यही तो लक्ष्य है कि बह मार नहीं होता । इस वस्तुओं के बिना रह सकते हैं लेकिन वस्तुएँ मानवीय अभाव में नहीं रह सकती । जीवन को क्या कि यह बैठक करनी की मर चुकी है ।

कमरे के पार किली के लौंगने तथा गडमड बोल्ने की आवाजें आ रही थी । तभी थिक सठकर उज्ज्वल टांगपाव की आवाज आता एक मारीमुख पक्षि इतना हँसता प्रभाव करता पका बिना ।

—धीपर बाबू ! आइए, भीतर आइए ।

—मैं तो मात्र भीपर हूँ ।

और मास्किनी एक बड़े फूल सी थिक आयी । मास्किनी के साथ जब धीपर बाबू भीतर की बैठक में पहुँचि तो देखा कि बिधन बाबू साब तकिया पीर में रजे विड़की के पार देख रहे हैं ।

—देखा भीपर । बिधन अपनी बीबी की किलनी थिन्ता रखते हैं कि साब महीनों बाध आये । मैंने तो उस थिन ऐसी कोई बात नहीं कही थी ।

और धीपर समझ मये कि जब तक वे बाहर बैठक में थे दोनों के बीच कुछ बातें हुई हैं । यह भी स्मरण आया कि साथ ही जब वे वे इन्धोर आये हैं तब वे एक बार भी बिधन बाबू अपनी इन बीबी के पास नहीं आये । बात कहपर मास्किनी अन्धर लकी लगी थी । वे बाड़ी देर में ही लौट आयी साथ में बाय की ट्रे थिये धारदा भी थी ।

बाठ ही बोली

—धीपर ! बाय-नाशदा सब बाह्य के हाथ था है ।

—दीदी ! आप भी बैसे बातें कर रही है ।

धीपन की बात पर बिगन बाबू बाबू

—दीदी ! मायका मायूम होना चाहिए कि भीतर बिबायत का पत्नी न शासन हो गया है ।

—पत्नी से ? क्या मतलब ?

होने हुए मासिकी ने पूछा ।

—धीर नहीं तो क्या ? मूल बीड़े ही बाह्य होता है ।

दीनों होम रहे थे ।

—धीपन ! तुम बिगन की बात का जवाब क्या नहीं देते ? तब तो यह फिर बड़ जाएगा ।

—बिगन का भाव भीर हल गला ही जानन है ।

—अरे बाह तुमने अपना जादू भीपन पर भा बना रखा है ?

होमठ हुए मासिकी बाबी ।

—तो क्या दीदी तुम पर भी मग जादू है ?

—बेबाओं पर बीड़ी जादू नहीं पकता उम् उनका ही जादू होता है ।

—दीदी ! बाय-बाय अपने को इन्ना बहकर क्या बड़ा मूल होता है ?

बिगन ने मगपन पीड़ित होकर कहा ।

—तुम छोड़ो की जब देखती हूँ बिगन ! हा भूल जाती हूँ और मन करने कहां कहां मटवन लगता है रे एक बड़ परिवार पर जहां तुम काय होना हो कहीं उड़कर पड़ने जाती हूँ और तनी मरका लगता है कि मूल बनमुंग का ऐसा भाव कहां ? मन ही मन भाते या जान है इकीसिर् बाय-बाय दुखत सती हूँ कि मैं मात्र बना ही हूँ । तुम लोग मन की मगपि हा ।

—मक्ति अपने को बाय-बाय एन कीमता मूल नहीं बकता लगता ।

—बिगन ! मग का पोषी इन्डियों म बैस हा म्बाकारता बाह्य बैस कि बह माग हा । बिना ऐसा किये बीन मुक्ति नहीं गति नहीं । मैं भी बीनी हूँ भीतर बाय-बाय भाय है और माय रहा हाग कि कसी है कहीं पिदुगे बनो है । धीपन ! बिगन बना रह म कि तुम

—तो दीदी ! जा भी बनाना बर सही है ।

—जा तुम्हें नी मानी रात्रनीति में यह मान रहा है ?

—रिगुण तो मग मग गत है ।

—क्यों मायन ! मैं बर क्या कि भाय रात्रनीति में भाय ?

बिगन बी बर मगर धापर भीर मासिकी होम पने । मासिकी बीन



—यही होता है होन करते हाप जच्छा है ।

और तीनों को लगा कि बत्तावरण बोड़ा स्वस्व हुआ ।

—तुम्हारे उस दिन की मीटिंग में मैं भी जाना चाहती थी और तुम्हें देखना चाहती थी लेकिन उसके पूर्व ही मुना साठिया बस गयी ।

—और यह नहीं सछमन ने बताया कि बिद्यन बाबू पुमिस का हाथों बाठ-ब क बचकर भाग निकले ?

—सछमन ने तो यह भी बताया कि तुम भीपर और पूम्ठके माहुर की छड़की तीनों साब-साब निकल भाये ।

और वो हैंस दी ।

—सछमन को तुम्हारे महाँ नहीं पुमिस में नीकरी करनी चाहिए थी ।

भीपर को लगा कि बिद्यन बाबू और माकिनी में इतने दिनों न निकले पर मान बस रहा है । पता नहीं क्यों माकिनी अच्छी लम रही थी ।

—अब तुम्हीं बताओ भीपर ! एक तो बचारा सछमन इनकी खात्र-खबर रख कर मुझे बताया रहता है कि ये हजरत क्या करते फिर रहे है उस पर ये है कि उस बेचारे सछमन पर ही बिपट रहे है ।

—मैं बिगड़ कहाँ रहा हूँ ?

—अब मैं तुम्हें न जानूँगी ? तुम साब बेपन करने कि बीबी को भूल जाओ लेकिन हम लोग ता ऐसा नहीं कर पती है न ? अरा सा उस दिन सिखाने बीडने के लिए मना क्या कर दिया कि आज महिलाओं बाद मुँह बिलामा । पूछो तुम्हीं इनस पूछो कि जाने कैसी-कैसी नही-जनकही ब्याबिनों बासे के पास ऐसे बीटा बाडा है ? भीपर ! तब मानना यह बिद्यन साख तुम लोगों के लिए नेता हापा लेकिन मैं जानती हूँ कि यह कितना कुछ समझता है।—भीपर ! तुना तुम ता गृहस्व बाधनी हो क्यों नहीं अपने पित्र को किसी छूटे से बाँध देते ?

—अब आप बीबी हैं, क्यों नहीं कुछ आप ही प्रबन्ध कर देती ?

—तुम इससे पूछो न कि कहीं कोई है क्या ?

—क्यों सछमन इस बारे में कुछ पता न लगा सटा ?

और बिद्यन बाबू हैंस दिये ।

—एक बार कुछ पता लगाकर लामा ता बा लेकिन मुझे बिस्वास न जामा । बिद्यन बाबू का बेहतर हल्का फफ पड़ गया ।

—क्या ? बिस्वास क्यों नहीं जामा ? कौन की वह सड़की ?

धीवर सप्रसन्न हुए ।

—बिगल ! बताओ तो कौन है वह लड़की ?

—यह तुम सब जानती हो ता फिर क्या नाम न माधुम कर मची ?

इस बार मासिनी काफी जारों पर हँस बी बाबा

—बिगल ! तुम क्या समझत हो कि मुम या सछमन को निक यही काम है कि दिनभर तुम्हारी निगराना ही करत रहें ?

—मैंने ता नही कहा ।

—तब फिर ? मैंने ता लड़की काफी बात यूँ ही कह दी थी । तुम कही नी बिबाह करा मुझे मुझ ही हागा । मकिन बस एक ही पत्र है ।

—क्या ?

—ब्याह के पूर्व मैं लड़की देतना चाहूँगी । इनका मतलब यह मत समझना कि मैं उमम कोई बातें करता चाहूँगी या तुम उम बात में मुम मकोई परामर्श सना । नहीं। मैं ता उम पर अपनापानिष्ठा टाया तक नही पड़ने दना चाहती । इन दूर से दयना चाहती हूँ । पोता हूँ न? अपने मगल्य अहूँकी तुष्टि करना चाहती हूँ । बर्ना जीवन भर यही मायेगा कि बिगल न बननी बहू को ब्याह क पूर्व नहीं निकलाया ।

—दीदी !

—क्या है रे ?

—तुम पुनके माहब को जानती हा ?

—हाँ, वो जो बकीर है ? उन्ही को ता दिव माहब क लड़कों ने मरे बाब मामम में बकीर बनाया है ।

—तुम्हारे बाब माममे में ?

—हाँ क्या ? बा ता मुना बड़े मारी मेता भी ता है ।

—हाँ बही ।

—ता फिर ?

—अच्छा भाव मही फिर कनी बहूँगा ।

—वो सब ता जानती बात है बिगल ! तू बनती बात बना ।

—मैं बनाऊ बिगल ?

धीवर ने दया कि बिगल बाबू संभवत बना मठा पा गू है ।

—तुम्ही बना दा भीवर ?

धीरे विघन कमरे क बाहर जैसे मने उमी तरफ बहो कि सरदार दिने और मामिनी क बिच मे । छत्रे में पड़ी एक आरामकुर्सी पर बाहर सट मने । नीचे के रेलिंगे रैशन में लैम्प की रोशनी मन्व बिछी थी । चारों और सभाटा पा । मौज पड़े काफी देर हो चुकी थी । कमरे इतने बड़े थे कि एक लैम्प की रोशनी खोपी सी लग रही थी । कभी किसी का दूर कुछ बालना सुनायी पड़ जाता जमा तो भाटा वग्न एकदम फिर या कि अपनी ही पड़कन साँस तक सुनायी दे रूँ थी ।

विघन, मामिनी बीबी के बारे में इन बीरान बीमन के बारे में सरदार दिने के बारे में और सबसे ज्यादा उस घाप के बारे में सोच रहे थे जो कि मामिनी की उसकी बेह को आत्मा को जन्म रन्मान्तर के लिए न भी सही लेकिन इन मोर के लिए तो विवेका कर ही गया था । विघन या और कोई काम चाहे लेकिन मामिनी की मुक्ति इससे समथ नहीं थी । पुष्प तो अनिक होता है लेकिन पाप भग्न होता है । स्मरण के लिए पुष्प नहीं बना है, वह तो पाप है, खासकर बुरे का पाप जो कि याद रखा जाना चाहिए । मामिनी कहीं भी जाए जब दुनिया उसे जाने नहीं देती । विघन बाबू की समा कि इस मुठ बाठापरण में मामिनी किस प्रकार लज-लज टूटी होगी । और जाने कब से टूटे-टूटे उस दिन अन्तिम टूट कर पीपस्मा टैंक पर आस्पहाया के लिए गयी होगी । बाज उस बात की भी काफी समय हो गया । तब से अनुभव फिर रिसते रहने क लिए बीबी भी रही है । जाने किन्ती गन्धी बीमारियाँ किसे इस मगर के पेट बीसी कोठी में बीबी की एक-एक साँस बूट रही है । यहाँ की बीमारों जब रात के अँधेरी में मुठही हो जाती हारी । भारदा कही तो जानी होगी और लछमन नीचे किसी बाकाम में गुरटि मर रहा हाता होगा तब बीबी की अस्ती-कढ़की पक्के इमी अँधेरे में पनी-शटी सी कुछ सद्दारे के लिए जगनी बिमगासकों सी इन बीमारों पर अँधेरा टटीकटी छिपकली सी रँगती रहता होंगी । और ऐसे जाने किन्ते दिन किन्ती रातों बीत गयी होंगी । न इनका कोई अन्त दिखनायी देता होगा और न कोई ऐसा व्यक्ति जो नारी के इस सद्दर बिमघ अँधेरेपन को अपना सके । जिस व्यक्ति न हाव पकड़ा या वह इतना कामी बिलाती और देह-लोसप या कि वह बेक्या ही बना सका पनी नहीं । इतना सब होने पर भी जाने कैसा संस्कार है इस नारी का कि अपरिचित विघन क्या करता है, कहीं रहता है क्या लाता है का क्याम बिना मर के बाहर मने भी अनुपयन रजनी मारी है । क्या मे इसे भी या बीबी कह कर, मा बनाकर इस इसके नम महाकु न से मुक्त कर सकता हूँ ? क्या यह बिमघा प्रदर्शन मर नहीं है ? क्याकि माँ मा बीबी यताकर उसके व्यक्ति क

सुन-सुन स हम अपने को असंपन्न कर लठ हैं । दूर-दूर का बड़ा ही मय्यु -  
मय्यु सवध बन जाता है जिसका कोई उत्तरदायित्व नहीं है । हममें साहम नहीं  
जि धड़कर हम उसका हाथ पकड़ सें और कहें कि आओ मरे पार्व म लकी हो  
आओ तुम मरी नारी हा और मैं तुम्हारा पुष्य ! ! और मरी नारी को उसके  
पुष्य के रहते देखें कोई कसे लोछित कर जाता है ??

सहमा बिसन बाबू को भगा कि बे सोचत-सोचते किस मय्यु निणय की सीमा  
पर पहुँच मय्ये हैं । क्या बे अपनी दीदी को ही अपनी 'नारी' बनाएंगी ? और  
बैपेरे में जाती दीदी बिसी । कमल प्रकाश में जाती दीदी का आकार स्पष्ट  
होता था रखा था । कन्ने पर झुलती महीन पाल बलने स हिस रही थी । उम  
मन्द आलोक में दीदी क मुख की ध्याभिया तथा परित्राप सनी अस्य वे । बलि  
मुक्ताहृति कृष् मिसाकर सुन्दर लग रही थी । आस तक त्रिम मुख को दीदीमुख  
माना उसे कमी नारीमुख की भाँति जिन्नेपित नहीं किया कि नला यह मुख जब  
अँजुरी में हा या बिसकल अमरों के पास हो ता कैसा सगेया ? सबधा की पवि  
बता मुख को भी पवित्र रहने देती है सकिन जब बही सहज सवध के मय्य पर  
देखा जाता है तब अँटा की बनावट नासापुट, पलकी का मुँदना प्रीबा की बिक  
नाई मर पर ध्यान जाता है । बाँहें हमें घेर कर कैसी सनेंगी ? और जब भग  
भरा बसाम्यक तथा पेट हमसे सटा होगा तो तो और हँसती हुई दीदी वर  
बाबू की लीपट में बिन बनी हुई थी ।

—तो पगले ! इसमें इतने धरमाने की क्या बात थी ?

—नहीं यह बात नहीं थी

—क्या कमल बहुत सुन्दर है ? देग नाई ! मरी बहू लूब सुन्दर होनी चाहिए ।  
कीन दस-साँच नाई हू मेरे ।

—मेकिन मैं कुछ कहना चाहता हूँ ।

—सने सब मुन निवा । पुत्रके साहज अकर ही इम बिबाह के सिण नहीं नैयान  
हाये । क्या कहें मुख मुँहबनी के पैरों पदम म बहू मान सरत हाते ना मैं  
एक हाथ को भी लात्र नहीं करता बिसन ! तर सिण नहीं बनि अपने  
स्वार्थ के सिण ।

—क्या स्वाप है इममें तुम्हारा ?

—बिसन रे कमी जिमा जाम में तुन अपने पेट मे लगन दाना चाहती हूँ  
और जमी जाम में मेरा यह बसपाने का दाप दूँगा । तुन मुख बनजान में  
भगवान की दृष्टि में एक गरिमा की मया दी । म नारी स बस्य हा गयी

थी। तुने उस बेस्वा की अपने पावन स्पर्श से दीदी बनाया।—बस प्रभू। ऐसे ही किसी दिन जन्म सेक्टर मुझे जगत्कारिणी बनाकर आपमुक्ता कर देना। बिचन न देखा कि दीदी की आँसों से आँसू धाराधर बरस रहे थे। वे दोनों हाथों का हथेलियों में घूँसे फड़कते मोठों से बिपकामे जाने किस औपकार को पीछे जाने किस जन्म के आसोक वाल अपने 'मादिन्द-माबब' के दालरूप में डूबी मीरा हा र्ही थी।

भीपर बायू पिछले दिनां मे मन हा मन स्वयं स बड़े असन्तुष्ट थ । उन्हें  
 अपना प्रयोजन ही समय में नहीं आ रहा था कि उन्होंने क्या कच्चे की मोटरी  
 छापी और ब्रह्म छोड़ी थी तो क्या इसी निरहंसेपता के लिए ? आज थ जा बछ  
 कर रहूँ हैं जहाँ हैं क्या इसी के लिए वे अपना घर, सरा बच्चे माता-पिता को  
 रातों-रात छोड़ आये ? कई बार तो स्वयं ही संगम में पड़ जाते कि क्या वे ही  
 स्वयं हैं या भीर बोर्ड ? पर का बाद समाचार उन्हें नहीं मिला । कैय कि मय ?  
 मरो का पीछे से क्या हुआ होगा ? क्या नारायण बाबू को एक पाग भी गायने  
 न भेजा गया होगा ? सभबत उज्जैन तक वे आये हों और कुँड़-बाँड़ कर निगाह  
 हो लीं गये हों । आ भी हा लेकिन इस प्रकार निरहंसेप वे कितन दिन घूम सकते  
 हैं ? और क्या ? कुछ चार-पाँच महिनों के राजनीतिर मन्पर में यह बात  
 ता उन्हें स्पष्ट हा गयी थी कि राजनीति उनका क्षेत्र नहीं । मजदूरों की पाठ्यपुस्तक  
 में पढ़ाना भी तो एक प्रकार की राजनीति ही है क्योंकि विवाय विगत बाबू के  
 पाय सब साग उन राजनीतिक कारणों से बना रहे थे । हमारे अनिश्चित इन्दौर  
 में अपिठ कुछ नहीं किया जा सकता । इन्दौर के छाड़ना चाहते हैं सरिन विग्न ,

बाबू की एक न एक संमत् लगी ही रहती है । बिन्दुस मारामन बाबू का सा बेसौजन्य है । सबकठ बिगल भी बूझते हैं कि धीपर का मन अब इन्दीर में बिरहल नहीं समता । लेकिन दिमी सीमा तक उन्हे माह ही नहीं धीपर से ध्यामोह हो गया है । ऐमा ही ध्यामोह कही ऊर्हे भी तो बिगल से नहीं हो गया है ? ठीक है बिगल का ध्याह हा जाए तो मे एक दिन भी अब किसी माह ध्यामोह में नहीं पड़ने वाल है । बिगल बाबू इस बीच बम्बई फिर गये थे और बमल की ध्याह के लिए राजी कर लिया है । यही तय पाया कि ध्याह हो जाने के पूर्व पुस्तके साहब से कुछ नहीं पूछना है इसीलिए 'मिबिल मैरेज' करना तय हुआ । अभी इसकी खर्चा किमी का नहीं मामल ।

छाते प्रीम्स में दिन तथा सध्या की आयु बड़ा ही थी । इन्दीर अब अपरिचित मपर नहीं रह गया था लेकिन हमसे कोई उपारमक संबंध भी तो नहीं था । यही दा-बार बार मापी-भापी रात में जाकारे की तरह स्नेहन पर जाय पीने निकल गये हैं या फिर सत्याह के दिनों में जो मारे-मारे फिरे वे उसकी कुछ याद है बाकी तो मासिनी ही एकमात्र ऐसी व्यक्ति है जो नहीं कुछ छूती है या कुछ कीम जाता है । बहुत कुछ मित्र थी इन्दु बीबी लेकिन मासिनी के बीबीत्व में जो एक उदास-बुद्ध अपरिपह का मोह, अप्राप्ति की विवसता थी वह इन्दु के बीबीत्व में नहीं थी । उसमें बाकारण का जातन वा ऊम्मा थी उदासता थी जब कि मासिनी में सध्या का उदास गौरव है ठंडी होती हुई ऊम्मा है तथा मोहक दुःख है । और सबसे बड़ी बात तो यह कि इन्दु, धीपर की बीबी थी जब कि मासिनी बिगल की बीबी है । दोनों ही प्रसूया थी केवल बाकाय का मन्तर है । लेकिन विवध दोनों ही है । एक समाज मुक्ता होकर तो दूसरी समाज-रमता होकर ।

कई बार सोचें बड़ी कन्वी सगती हैं और सोच का ऐसा सम्बाधन पता नहीं क्यों टिपर की गंध की तरह अस्पताल के बरामदां की तरह साफ-सुपटा हल पर भी अजीब सगता है । बिगन बाबू विछल कई जिना म कुछ उगम सगत रह हैं जबकि इन दिनों ता प्रसन्न कपने चाहिए । इस बीच मासिनी दीवी के पास भी समचत कम ही गये हैं । क्या सचमुच ही का कुछ रहस्य है बिगन क भीतर और बाहर या मात्र आन्तर भर ही है ? आये दिन यापय हा जान हैं और दिन आठ-दस दिन पता नहीं कहाँ रहते हैं । क्या बात हो सकती है ? कल घाम से मासिनी दीवी के पास गये थे । प्रायः साज चसन क सिध कहल रह हैं सकिन पता नहीं उस दिन जब भीपर बाबू ने बमक बाकी बात कही तब स मासिनी दीवी के घर से अकले ही गये हैं । प्रायः ता उस समय मजबूरों की रात्रि पागाला में भीपर बाबू को बसे रहना पड़ता है सकिन हमस क्या ? कल रात जब मासिनी दीवी के पास स सौटे से ता किंचित आबदा में लग रहे थे । ऐस तो बिगन को गही देखा है पहले कभी । उसक बाट सहमा आये और मामान ठीक करने लगे । बड़ा अजीब लगा जैसे बिगन में बहुत बरसात भा मया हो । पूछा

—क्यों ? क्या बात है बिगन ?

—कुछ ता नहीं सहसा जा रहा हूँ नागपुर ।

और जल्दी-जल्दी भीजें सहेज रह थे ।

—नागपुर या बम्बई ?

और थीपर ने मित्रवत ही तो हँसा था । बिगन एक क्षण को हतप्रभ हो आया । मूँह जो कि सामने नहीं किया जा रहा था उगया और भीपर की ओर हलन बेगना रहा । लगा कि बिगन कही आहत हुए हैं ।

—नरी बात का कुरा सगा ?

भीपर ने रिचित स्नेह म कहा ।

—नहीं थीपर ! बम्बई नहीं जा रहा हूँ सकिन यह न पूछना कि कहाँ जा रहा हूँ ।

—क्यों ?

—हर बात में 'क्यों' ठीक नहीं हलना ।

बिगन बाबू को सगा कि थीपर पूछतर किन्हीं कलन निर्गवों की ओर बढ़ रहा है । कई दिनों का उगम तथा गंभीर बिगन रिचित हँसा और पास आकर अत्यन्त स्नेह स थीपर के गंध पर हाथ रगा । प्रसन्न आँसों में कुछ क्षण रगा ।

—थीपर ! सच ही तिमरी काम म जा रहा हूँ और जल्द ही लौट आऊँगा ।



परेशान मत होओ ।

श्रीर थीपर मे बेला कि बागे कोई प्रस्न किया बा सके इसका मुहुर्त मर भी अक्सर दिवे बिना मुस्कराते बिगन बन किया । थीपर बाबू उठने की बेजा ही करते रहे कि आदेश सुनायी दिया

—गुम रहा थीपर ! नीचे ठाँपा है । मैं बा रहा हूँ ।

थीपर बाबू कल बासी इन बजना पर सोच रहे थे । सिइकी के शीशा पर जाती हुई बाप पीसी रँग उठी थी । तभी सज्जे पर किसी के पैरों की आहट सुनायी थी ।

—कौन ?

—बाबू थी ! मैं सज्जमत हूँ ।

वे कमरे के बाहर जाये । अलोक की पलियां घुग में बमबमा रखी थीं । दुरु गमियों की खुली छाँड थी जो अँधेरे से अधिक दिन के निकट थी । कमरे में बैठ-कर ऐसी प्रदोष बेलाओ में बा उदासी समा करती है बाहर जाने पर बाप अना यास बिस्तुत हो जाते है श्रीर स्नाम की सी ताजगी कमने लगती है ।

—क्या बात है सज्जमत ? बिगन बाबू तो रात ही कही मये हैं ।

—माँजी मे आपको बुसाया है ।

—मुझे ? अभी ?

—जी ! !

—क्या बात है ?

—अब सरबार ! बाप सोगा की बातें हम क्या जाने ? जो हुकुम हुआ वही कही किया ।

छया कि सज्जमत किसी बात स खुशी है । एक लज थीपर बाबू असमंजस में हुए कि क्या कहूँ, बासे

—सज्जडा जाते है ।

—कोई बात नहीं मैं नीच बैठा हूँ । सबाटी लाया हूँ ।

—सबाटी ?

—जी ।

तो इसका मतलब हुआ कि यह साब ही के बाएमा ।

आज मनेक दिनों बाद ममबत विवाह के दिनों के बाद पालकी पर धीपर बाबू चढ़े थे। पहले ता यड़ा अजीब सगा लेकिन चढ़ना था ही। गनीमत यही थी कि खुसी पालकी की चिबिका या बोनी नहीं। सछमन कहारों के साथ ही दौड़ता रहा रास्ते भर। मासिनी दीदी का घर काछी दूर था। रासत में दीप जल भाये तथा स्वल्प अँधेरा भी हो आया। रास्ते भर क्यास लगात रहे कि क्या बात हो सक्ती है जो पालकी मेजरकर बुझवाया गया और सछमन साथ में ही बिना के था रहा है? कस गाम ही ता बिगन बाबू यये थे। अवय्य ही बिगन बाबू की हो कोई बात हापी। लेकिन क्या बात हो सक्ती है? बिगन बाबू रात भर बिक यमीर क्या बे? कहीं बिभी बात को भकर सीरी और उनम कछ कहा सुनी हो गयी क्या? सकिन यह अमनब है। तब क्या समब है?

और महाराजबाग यढ़ने अँधेरे में धुंभछा रहा था। मनेक पालकियाँ तथा चिबिकाएँ आ-जा रही थीं। सभी बर्ग के साग सभी कामों पर निकले हुए थे। मभिर में सभा-आरती की तैयारी हो रही थी। सराफे में यहल-यहल सग रही थी कि पालकी दीदी के घर के लिए मुइ ययी। गली सुनसान थी। कहारा के बरन पथीनों स छपपथ थे। बे बिना सके सिर्फ कथ बदलत तेजी स छाबनी मे यहाँ तक एक सॉम में ही आवे थे। पसीने से जनकी पीठ चमचमाने लयी थी। पालकी का जाना देग बाहर का घरबाबा लोस चिया गया था। रेती पर पालकी टिना दी गयी। बारबे में लड़ी घारवा तेजी स अन्दर चमी गयी। धीपर बाबू समभ गये कि घारवा अपना मासकिन की मूषित करने गयी है। रेती पार कर जाना चढ़ने को हुए कि जीने के जररी मिये पर यड़ी मासिनी ने सछमन मे कहा

—सछमन ! कहारों को भव जाने दो।

—अब नहीं जाहागा ?

—अब आज नहीं। देगते नहीं बिठनी देरी हो गयी।

इस वाक्य के समाप्त हात धीपर बाबू मासिनी के पास बायो सीड़ी पर थे।

—मायो।

धीपर ने देया कि मासिनी कहीं बाहर जाने को तैयार लड़ी थी।

—नहीं जाना है क्या ?

—जाना था लेकिन आज तुमने तो इती देरी कर दी।

—यने ?

—और नहीं तो क्या यने ? तुम लोग तो हमेगा हम सागों का ही बार दागे। बे भीठरी बँटक में पढ़ेबे।

—क्या सो रहे थे ? मालूम हुआ है कि तुम भाये नहीं बल्कि लक्ष्मण तुम्हें उठा  
से भाया है, क्या ? जरे धारवा !

और भारवा प्रबन्धी ।

—बिना कह चाय-नास्ता नहीं भायया क्या ?

—जमी भा रही हूँ ।

और धारवा विवेकी ।

भीषण बाबू की समझ में कुछ नहीं-भाया कि वे क्यों बुझाये गये । क्योंकि बीसा  
समी मात हुआ कि कही जाना था और संभवतः उन्हें भी साथ जाना था देरी  
हो गयी इसलिए जाग नहीं जाना है केवल कहाँ जाना था ? यह तो बीषी की  
भूषा से स्पष्ट ही था कि वे बाहर जाने की उद्यत थी लेकिन जाग उनके बेहरे  
पर सहज प्रसन्नता जो कि अन्य दिन हुआ करती थी वह नहीं थी । बल्कि लगा  
कि जैसे बाल्यक परेषान है । इन्हे का दुःखिवा प्रकाश कमरे में फैला हुआ था ।  
कमरे में अनद की गन्ध थी । सप्तमी का चन्द्रमा सिङ्की के पार पारदर्शी आकाश  
में फूट आया था ।

—तुम्हें आश्चर्य तो हुआ होगा कि सहसा कैसे बुझाया गया ।

—नहीं तो मैं तो स्वयं भागा बाहू रहा था ।

—बाहूमा और भागा क्या एक ही होता है ?

—दीनों मिळकर बुझवा लिया भागा हो जाते हैं ।

बोमा ही हँस पड़े । धारवा चाय-नास्ता रख गयी ।

—सुमती हूँ तुम्हारी कोई इन्तु बीषी है जिसे तुम बहुत चाहते रहे हो ।

—हाँ बहुत ही ।

—कहाँ है अब वो ?

—अपने पति के घर, पूमा ।

—बिना कह रहा था कि तुम लीकरी छोड़कर घर से भाग भाये हो ।

—हाँ यही समझें ।

—क्यों ? यदि दूधप भी कुछ समझा या सकटा है तो वही क्यों न समझा जाए ?

—इसलिए कि आसब में कोई अन्तर नहीं होगा ।

—तुला वहू को भी बिना बताये भाये हो ।

—बताने पर कौन कब मिन्नत सकटा है ?

—तो क्या करने का विचार है ?

—पारी तो विचार नहीं पाता है ।

—या बिगम बिपारले नही देता ? उसका बम बभे तो बह जिसे को नही सोचने बिपारले दे ।

—मैं ता एसा नही मोचता ।

—सकिन में उसे बिठना जानती हूँ उतना कोई नहीं जानता । यह बम मही है मात्र वास्तविकता है । पता नही बह मुझसे ऐमा क्यों ब्यबहार करता है ?

बीवीने प्रश्न इस जिनासारमक कम स रखा था कि म पूर्ण कि क्या बात है केकिन

—मैं कहती हूँ कि बह पापस है । सुननी हूँ पहटे ता यह ऐमा नही था केकिन अब से बह मरे सम्पर्क में आया तमी स उसमें परिवर्तन आने लगा । बह मूल है ।

—क्या हुआ बीवी ?

—मुझे ही कुछ हा जाता तो राता किस बात का था रे । मुझे कमी कुछ हुआ है मात्र तब ? मृत्यु बीमारियाँ मभी तो मरी छाया स पबराती है । मुझे डर है कि मरे बिगम को बही कुछ धीर न हो जाए । अब तुन्हीं बताओ धीपर ! कि मैं उसकी भूलसाजा का क्या उत्तर हूँ ? कहता है मुझे उत्तर दना ही हामा । मैं तो अपने जन्म भाग का ही कोसती हूँ धीपर ! उमरा क्या बोप इसमें ? तुम्हारी क्या राय है ?

धीपर एतदम चौक गये । अर्था बिगम तथा नाकिनी की बस रही थी । बिगोप उसके बारे में बे कितना जानते हैं जो कि उनकी राय हो । धीपर अबारु हो बीवी की ओर देखने लगे जैसे पानी देख रहा हो । इतना स्पष्ट था कि बिगम बाबू बीवी क किमी मर्म को छू गये हैं और ये तड़प उठी है ।

वे फिर बोलीं

—तुम्हें नही लगता कि उस एमा नही करना चाहिए ।

—किसा ?

—जो बह करता है । बड़ी देसमक्ति उस पर सवार हुई है ।

—जोह देसमक्ति ।

—यह तुम्हारे गाँधी बाबा बाकी नहीं, बोझ

—तो कौन सी ?

—क्या तुम्हें कुछ भी नहीं मानुम धीपर ?

—नहीं तो ।

—तमी तो मैं कह रही थी कि निरबय ही धीपर को नही मानुम होमा भरा तुम उसे बम-पिस्लीस बाकी देसमक्ति को समाह कौने वे सरने हो ?

धीपर महमा बात की पंथीरता नही समझ पाये । इसविष्ट कि इस बारे में बिस्फुफ

ही नहीं जागते थे । जो पड़ा था उससे जाग यह कल्पना कभी नहीं हुई कि इस देश में भी ऐसा हो सकता है । बोले,

—बम-पिस्तौल ?

—ये जो आये दिन कमी लागपुर, कमी अजमेर, कमी बम्बई कहकर जाता है तो वह अपने क्रांतिकारी दल के काम से ही जाता है ।

—ककिन आपको कैसे पता चला ?

—तुमसे इस बारे में उसने कभी चर्चा नहीं की ?

—नहीं ता ।

—धीयर ! उसे कैसे वहाँ से निकाला जाए ?

—बाप जब तक साफ-साफ बताएँगी नहीं तब तक कुछ समन नहीं सकता ।

—पूरी बात मुझे भी कहीं मामुम है धीयर ? सुनती हूँ किसी महरे पड़मंथ से उसका सम्बन्ध है ।

—कैसा पड़मंथ ?

—यहाँ नहीं धीयर ! कल सब बताऊँगी । कल पीपस्या टैक पर । तुम तो कभी नहीं गये होगे ?

—गया तो नहीं हूँ किन्तु सुना है सब सुना है ।

—बिघन को किसी बात की आज नहीं है ।

—तो फिर आज चर्च ?

—क्यों ? क्या बिना बिघन के

—नहीं धीरी ! बात यह है कि

—क्या अपनी इन्तु धीरी की बात मुझे नहीं सुनाओगे ?

धीर इन्तु धीरी की माया पूरी सुनाकर धीरी के घर से सीटले धीयर बाबू की इतनी देर हो गयी कि बिघनपुरे के पुस के पहले ठामा नहीं मिला । सड़कों पर रात में बल्लेबाली बलिमा बूझी पड़ी थीं । शहर एकदम अँधेरे में डूबा हुआ था । धमियाँ का आकाश था ठारों भर । बस उसी आकाश का प्रकाश था धीर दूर-दूर पहकनों की आबाजें थीं । कहीं एकाध कोई सेम्पपोस्ट बस रहा होता जैसे नींबू डूबा हो । पीड़े की टानों तथा पहियों की आबाज में बिघन बाबू माकिनी

दीपी कम-पिम्पौलवाली राजनीति तथा प्रिन्स कोपाटकिन साइबेरिया में मापते हुए क्रांतिकारियों की पिम्पौलों की सपक सब स्पष्ट दिखायी दे रही थी। इस की क्रांतियों के बारे में वे पढ़ चुके थे। इसी तरह अमेरे में डूबे सेंट पीटर्सबर्ग की सड़कों पर किसी सनापति या गवर्नर की जाती बापी पर कोई पिम्पौल उन जाती और उसके बाद गवर्नर की साध पुसिस की सीटियाँ मापते काम अनक कदम उन पत्थरों टैकी गलियों में आबाज करते भागने लगते हैं। ऐम क्रांति कारियों के पकड़े जाने पर या तो मोठियों से उड़ा दिया जाता रहा या फिर साइबेरिया के बीरान ठंडेपन में मस जाने के लिए, पापस बन जाने के लिए जान बचों की तरह घेर कर छोड़ दिया जाता रहा है।

शुक्र गमिया की आधी रात का तीसरा प्रहर होगा। रात में सर्ग का आभास स्पष्ट था। बाइों में इस समय कितनी सर्दी होती है और फिर साइबेरिया में क्या होता होगा? बर्फीली आँधियों में फटे बिचड़ों में लिपटे भूय-व्यासे क्रांति कारी काटती बर्फ पर पिसटत हुए टूट जाते रहे हंगे। अनन्त बर्फ का विस्तार और हिमानी बगपड़ केस ही मनोबल को गला सकता है बुर-बुर कर सकता है और फिर भी अनेक क्रांतिकारी वहाँ से भाग भाते रहे हैं। भीपर बाबू यह सब मोचते हुए अमीर फूरहरी से भर गये थे। उन्हें अपने चारों ओर सड़क के दलों ओर बिछी वजात गलियों में पिम्पौल किये एक नहीं अनेक बिगान दीड़ते हुए दिखे और उनका पीछा करते हुए पुसिस की गारल मगाछे लिए भागती दिखीं। वे वजात में चिन्साने-चिन्साने को हुए ही थे कि तगिबाला बोसा

—हमूर वहाँ आदएगा ?

—पुसिस का पाग पारमी बुहम्ने में।

—हमूर ! आग जैसे घरीफजावों को जब इली-इली रात में कोठों से आते दएता हूँ तो बड़ी तरकीफ होनी है साहब !

और भीपर बाबू बोके कि तगिबाला उन्हें कितना गलत समझ गया। सरिन के और क्या प्रायुत्तर दते ? गपय के वैसे भी आपस नहीं सिप बयोंकि वह तब अबस्य ही उन्हें पहचानने की कोशिस करता और उन्हें यह स्वीकार नहीं था। तगिबाला बरता ही रहा

—हमूर ! पैस ??

और भीपर बाबू चारों की तरह कायेक का बीना बइन लये। उन्होंने पीठ ओर से सब बुना कि पाड़ा 'टप' 'टप' करता मुड़ा और फिर पहिने लेक हुए। रात भर गाने और जापन का मेद भीपर बाबू को नहीं मादुम हुआ।

जैसे सभरे से कनी मजदूर बस्ती की तरफ नहीं गये लेकिन आज पता नहीं  
 क्यों वे अनावास जबर निकल पड़े । यह ठीक है कि आज ग्राम से पाठमाफा नहीं  
 जा सकेंपे इसकी सूचना रामसिंह को देती थी मगर यह तो किसी को भेजकर मिर  
 में कहलवाया जा सकता था । अभी गुहबेरा ही था । पूरब के आकाश के नीचे  
 कच्ची शोपड़ियों वाली मजदूर बस्ती बिछी थी । बासाबरज काफी ठंडा था ।  
 मजदूर रात-पानी से सौंठ रहे थे । दिन-पानी के लिए तैयारी हो रही थी । राम  
 सिंह की फोठरी अपेसाहृत अधिक साफ-सुन्दरी थी । अभी वह सांपा हुआ था ।  
 इतनी सभरे भीबर बामू को सहसा देखकर रामसिंह किञ्चित् अचकचा पभा ।  
 भीबर बामू के पास कोई बचाव नहीं था कि वे क्यों इतनी सभरे आये हैं । उड़ी-  
 उड़ी सी चारों करते रहे ।

रामसिंह के घर के सामने ही रेतबे का लोको था । जिसके पार मिर की  
 डेवी बिमती बूजा छोपटी आकाश में लिखी हुई थी । पूंजाड़े की छोपि-छोटी  
 काड़ियां नीची कम रही थी । रामसिंह बोला  
 —तो बिपन बामू कम जाने पाते हैं ?

—एक दो दिन में आया है कि आ जाएँ ।

—असल में थीपर बाबू ! यहाँ दो-एक पुलिस ने आदमी पिछले आठ-दस दिनों से बड़ी सरगर्मी से बककर फाटने लगे हैं ।

—क्यों ?

—पता नहीं वे सबसे हर बार यही पूछते हैं कि वे किनी घड़ीउस्का को जानते हैं ? अब भला बताइए कि यह घड़ीउस्का कौन है ?

—घड़ीउस्का ? कौन है यह ?

—अब मालूम हाता तो मैं आपम पहुँचे उन पुलिसवालों को न बता देना ? कहते हैं कि उसका पता बता दोगे ताँ अरेब सरकार इनाम लगी । एक पुलिसवाला कहने लगा कि यह-घड़ीउस्का क्रांतिकारी है हमी इन्ग्लैंड का है । और साहब ! यह भी कि हम जानत हैं और बतात नहीं है इसलिए चौबीसों घंटे यहाँ तैनात रहते हैं कि कौन आया कौन गया ।

बड़ी ओरों पर हँसा और फिर बोला

—क्या थीपर बाबू ! बड़ी आप ही तो घड़ीउस्का नहीं है ?

समकाल थीपर बाबू एकलण का भय से पील पड़ गये । अपने से अविश्वसित बिनान क लिए चिन्तित हो गये कि कहीं घड़ीउस्का बिनान बाबू ही ता नहीं है ? बड़ी यही बताने को तो बीबी ने इतनी एकाम्त जपह ली नहीं बुनी ? तो क्या बिनान क्रांतिकारी है ? बड़ी यही तो कह रहस्य नहीं किम अदुप्य म उन्हें उनके भाग और लगता रहा है ? पर बिनान बाबू क्रांतिकारी जैसे लगत लो नहीं है । तब ता और भी उन्हें क्रांतिकारी होना चाहिए । एसा ही व्यक्ति मफल क्रांतिकारी हा सकता है जा लगे नहीं ।

वे बेचन हो गये । पूरा दिन काटना कटित हाने लगा जबकि अभी ता मबेरा ही हुआ बा । माघ ही यह भी भ्यात आया कि पुलिस ने आदमी उन पर भी दृष्टि लगे हुए होंगे । इसका मतलब हुआ कि राम को जब वे दीपक्या रूक जाएँ तो मग्न कर जाएँ ।

रास्ते भर उन्हें लगा कि बीरू दूर-दूर म उनका पीछा करि है । इसी व्यक्ति को वे दो-एक बार पिछले हा-बाग दिनों म घर के आसपास भी देगे कुछ है । बिनान ने हम मी० आई० डी० कह कर पूब ही थीपर को बताने दे गयी थी ।



लेकिन वे हर बार मूक जाते रहे हैं। संभवतः इमीलिए भीयर वाबू सीधे घर न आकर तापसाने रोड की तरफ बड़े। यद्यपि वे ऐसा नहीं करते हैं फिर भी एक होटल में घुस गये। तापसा करते हुए वे बार-बार होटल के बाहर फुटपाथ पर आते-आते भागो को देखते रहे कि यही सी० आई० डी० पिचटा है या नहीं? जैसे ही वह दिखा उन्होंने मुक कर सामने बैठे आदमी की खाइ से ली। तेजी से आ-पीकर वे पीछे के रास्ते से गली में निकल आये। वे बिस्कुट विपरीत दिशा में चले जा रहे थे। कई छागी-छोटी गम्बियों से तेजी से मुड़ते हुए उन्होंने कुरुमपुरे के पुस न पास बास माने के बहाँ सड़क पार की ओर तेजी से चल्-भाग की ओर बढ़े। उनके इस आचरण से वे बिस्कुट काश्तिकारी सफ़ीउल्ला होने की पुष्टि कर रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आज ही इतना और ऐसा वे क्या बचमा जाह रहे थे? उन्हें क्या कि आज उन्हें घर नहीं जाना चाहिए। संभव है पुसिद जगकी प्रतीक्षा में हो। उन्हें पड़भी बार मह सका हुई कि घर पहुँचने पर यदि पुसिद ने छापा मारा और बिसम के सामान में से कुछ सदिरब सामग्री मिल ही गयी तो क्या होगा? और मात को घर पहुँचने के पूर्व उन्हें मामूम हो जाए कि पुसिद ने पहले ही घर घेर लिया तो क्या होगा? वह मिसस एलबी मकान मालकिन क्या ऐसा होने पर उन्हें एक दिन भी रहने देगी? और बिसम की अनुपस्थिति में क्या ऐसा होगा उचित है? उन्हें अपनी सकार्य हास्यास्पद अवस्था कम रही थी कि ऐसा नहीं हो सकता किन्तु सम्पूर्ण रूप से आदरस्थ भी नहीं हो पा रहे थे। अपने को तर्क लेकर मन से निरापब नहीं किया जा सकता।

वे फिर भी घर की तरफ बढ़ते रहे। रास्ते भर वे अनेक योजनाएँ बनाते रहे कि ऐसा होना तो क्या किया जाएगा या यह कि कोई रास्ते में मिल जाए तो उसी के साथ चलें। जैसे एकाच बार दीदी के घर चलने की बात मन में आयी लेकिन मन को वह स्वीकार नहीं हुई। दिन में जैसे भी वे कमी गये नहीं फिर घाम मिसना ही था और इस समय जाने के बारे में वे क्या कहने? पुस्तके साहव? उनका प्रदन ही नहीं उठता।

बंटे-या बंटे की भी तो बात नहीं थी बर्ना किसी पार्क में ही बैठ किया जाता। पूरा बिन। एक दिन घाम हमने तक बिताना था। बार बने तक का समय तो था ही। उसके बाद पीपस्या टैक चले जाएंगे लेकिन सब तक पुसिद-सी आई। डी से कैसे बचा जाए? लेकिन इसका क्या प्रमाण कि पुसिद घर पर ही है? इसी समय में पड़े वे छावनी की तरफ बढ़ रहे थे। यदि पानोवाले नाणे में

तरकारिबाक तरकारियाँ भी रहें थे। उन्हें सहसा बडा पाप आया कि ये कुंजड़े कितने गन्दे हाते हैं कि यही तरकारियाँ बेचेंगे और हम-आप इन्हें खरीयेंगे।

वैसे ही वे घर पहुँचे मोक्ष मिसेस एलची का बैठा पाया। वे अपना पारसी रंग की साड़ी पहने थी तथा कंधे पर किरप। सफेद याम्बा का फुडा उनके मुँह मोटियाँ रंग के मुँह पर खूब फब रहा था। पैरों में काला पम्प पहने था। श्रीमर बानू उन्हें कनकियाँ से ही बेचना चाहत थे लेकिन म्बिति ने उन्हें बाध करने के लिए ही प्रेरित किया।

—नमस्कार मिसेस एलचा !

—नमस्कार !! तुमारे का एक मापस पूछने को आया था।

—नाम बताया अपना ?

—इम तो घर में था नहीं। मिस्टर एलची से बात बोला था था।—बिगत बानू यहीं बाहर गाम का पपेला है भई ?

—हाँ नामपुर गये हैं।

—मात्रकाल ओ मात्र घुमने का सगेला है न ? अरे तुम उसको काय को नेई ममजाता क ईस राजनीती में क्या घरला है ? भोगना मपज फरेला है। तुम तो बबी आता नेई हामरे घर। मिस्टर एलची आला कि बबी इन दोनों को काय वे आने को बोली ना ? पण क्या करे वीतता ई नेई तुम छाऊ ता।

—अरे मिसेस एलची ! सब थापकी दया है।

—आच्छा ! बबी काय वे माना—हा ??

—प्रणज।

तीमरे पहर तक अपने ही घर में श्रीमर बानू बिम्बुम चारों की तरह दुबक पड़ रहें। दाप मर को मीन तन नहीं आयी। कान दरबाने और छत पर पैरों की आहट के लिए उन्मुह बने रहें। मोधी हुई योजना के अनुसार वे सीधे पीपल्या टैर को जोर नहीं जाना चाहत थे। घुप कड़ी हो पती थी। कुछ गानगीकर ही वे जाना चाहते थे।

अम्बई-आमरा राउ पर पेड़ों की छाया में बसते-बसते जिस समय वे पीपल्या टैक पहुँचे गमिनों की सीमा भी कड़ी नहीं रह गयी थी। छतनार पाछों की सप-मता ने अजीब साँबला रहस्य उभर कर रखा था। बगीची का सा अनुभव हो रहा था। और आने की ज़रूरत थी। सन्दरो में पानी दिया जा रहा था। गाँवियों में बहुतों हुआ पानी प्रसन्न छम रहा था। स्वस्थ गान्धि थी। केवल बनपात्रियों की आवाज आ रही थी। चारों ओर दूब हरा-हरा सा था इसलिये वड़ा मीठा भीया सा लग रहा था। संभवतः कहीं माली हाया इसके अछावा किसी की उप-स्थिति का कोई मान नहीं हो रहा था। टैक की पक्की सीढ़ियाँ चढ़कर जब भीपर बाबू ऊपर पहुँचे सामने अथाह जल बड़ी दूर उछ बिछा था। बिगन बाबू से उस दिन इस स्वाभ घटना की जो कथा सुनी थी उससे भीपर बाबू को यह नहीं लगा कि जैसे वे मही पहली बार आ रहे हों। बाहिरने हाथ अनेक झुल्लुड के और उन्हींने अम्ब्राज किया कि कौन सा वह झुल्लुड रहा होगा वहाँ से बिगन बाबू ने उस दिन दीदी को आते देखा था। आज वे भी वैसे ही छिड़कर दीदी का आभंगन देखना चाहते थे।

सामने वही स्थान विक्रायी दिना वहाँ से दूध कर दीदी आत्महत्या करना चाह रही थी। मौसम की रक्त आभा उस पार के आकाश गाँवों तथा जल की रंगे हुए थी। अपने कस्बे का ताकान याद हो आया तथा इन्डु शीवी की वह कोठी। उन्हें लगा जैसे प्रत्येक ताकान के साथ एक शीवी का सम्बन्ध है। जल में भीगा हुआ नरसक साँबला में छिड़ रहा था। आज पहली बार इन्दीर में उन्हें बहुत अच्छा मय रहा था जैसे मन पर कोई वज्र नहीं है सब ऊँचा-ऊँचा सा है, जिसमें दूब तक हल्की हवा में हिम रही है, अपने मन्हे रंग के साथ। जैबाईयों का कोई बोम इन्हे नहीं घेरे है। प्रत्येक घन्ट स्पष्ट है। और तो भी गमिनों की भिन्-भिन्नाहूँ तक लकीर में सुमायी बेटी है। ऐसे में आप किउने सम्पूर्ण लगते हैं, समय हाते है। जैसे आप अपनी को समस्त इन्द्रियों के साथ अनुभव कर रहे हों। लोग प्रायः ऐसी निःशब्द समग्रता से बचरते है। क्योंकि यह ठीक है कि आपकी अपना ही बचन अनुभव होता है। समाज में हमारा यह बचन विभक्तित होता है इसलिए वहाँ बड़ा सहज लगता है। ऐसे सहज की आठ के बाद एक दिन सहसा अपनी समग्रता से साक्षात् हो जाने पर जाने कैसा संभवतः उर सा सबसे लगता है। इसीलिए एकाल्प में अपनी ही समग्रता का मय सबसे अधिक हर्ने होता है।

भीपर बाबू ने देखा कि वैसे ही पाठरी आकर दही जैसे कि बिगन बाबू

की गाथा में रखी थी। कहारों का ठीक वैसे ही आग्रह लिया गया। बाना के पास साड़ी के ऊपर का बुकूळ बैसा ही सामा गया था। संभवतः उम दिन भी बायाँ पैर ही सीढ़ी पर पहुँचे रखा गया होगा। धीरे-धीरे उम दिन परिष्कारित रहा होमा जब कि आज चिन्तित। उम दिन के बेरपात्र की स्थिति न स्थानिमय हा रही होगी जब कि आज मनता की चिन्ता थी मुख पर। भीतर बाबू का मन कि नारी को मात्र एक सूत्र की आशयवत्ता हानी है और वह उमी क महारे इतना बड़ा जीवन आ कि दिन के काठियों में और रात के एकाला में कैसा हुआ है काट क जाती है। लेकिन नहीं हम उस नारीत्व को गूँथ करक ही मुँहा होते हैं।

ऊपर पहुँच कर अपना चारों ओर देगा बहुत कुछ उम दिन की घटना मन में बुरह उठी होगी। फिर के महमा उम मुरमुट की ओर मानक मुड़ी। भीपर बाबू को समझन में किचित भी संभाव न रहा कि ठीक इनी मुरमुट में कमी बिगन बाबू ने छिपकर उन्हें रखा था। धीरे किचित मुस्कगत हर मुरमुट की भाग बर्ती। कि कमी मूर्खता भी नहीं हुआ होमा तब मला मुरमुट कैम प्यन न हले एता ?

—भीपर ! मुरमुट में छुपने वाले अच्छे नहीं होते।

—तो क्या बिगन की ओर अच्छा नहीं मानती ?

मुरमुट से निकलते हुए भीपर बाबू बोले।

—मर मानने को वह मूर्खता क्या कनी ता कह रही हूँ।

—कैसे ?

—यही कहने-मुनने तो इतनी दूर भायो हूँ। अब बनाया वह मेरी जान कमी मानन में डाल गया है कि क्या बनाऊँ ? उम दिन मुम यही उमन करने नहीं दिया और आज मुझे जीने नगी दे रहा है।

—क्यों क्या बात हुई बीबी ?

—बहु चिन्तितारी हा गया है।

—ना चिन्तितारी होना ता बुरी बात नहीं है।

—अब कुछ और किने कहूँ ? मननी हूँ मानबा-काउम में गहन बात ए० आ० जी० व बिगन वह पर्यन करन में रखा है।

—क्या ??

—हाँसा ! और और गरीउन्हा नाम गये हान है।

भीपर बाबू ने पनी बाँधों के साथ गरीबी मान ली। जान क्यों उन्हें क्या कि

दीदी का यह वाक्य सस्तावरण में सूज गया और पुलिस के आदमियों को मामूम हो गया कि यह माफ़ी-दस्ता कोई और नहीं विमान यात्रू ही है।

—लेकिन आपको कैसे मामूम ?

—सहमम बता रहा था।

—सकिम सहमम को

—जो सीधर ! तक न करो। मैं जानती हूँ कि यह बात सार्द रती ठीक है।

विमान हम सबस झूठ बोभता है कि वह मामपुर गया है, अजमर गया है।

वह अजमर भाँसी या कामरा जाता है। वो एक बार बमारस गया है।

उपर इन शान्तिचारिकों का बड़ा भारी अहसा है। सीधर ! कतात्रो इसे

कुछ हो-हुमा हा गया तो

और दीदी कलक-कलक कर रो उठी।

—दीदी ! रोने से क्या होगा ?

अपने भाँसू पोंछते हुए वे तालाब में दूर उड़ती एकमात्र वसाका देखने लगीं।

—मैं भी जानती हूँ कि वह कोई बुरा काम नहीं कर रहा है। लेकिन सीधर !

भाव कितने बरस हो पये इसे अपना दूब ही नहीं पिका सकी बाटी इसे अपने

पेट न बेटे की तरह मानती थायी हूँ। वह नहीं जानता भइतो नहीं कहींनीलेकिन

वह वो बड़ा भारी कुछ बनता फिरता है न ? भगवान जानता है, जिस दिन

उसने खाया नहीं खाया हुआ उस दिन इस दीदीके मुँहमें-अम-अम जो गया

हो तो छपप है ! वह मुससे छुपाकर जाले गया-गया करता रहा। मैं कुछ नहीं

बाली। मेरा ऐसा बका नाम कि मैं बस दूर से उसे देख कर सकती हूँ। सोचती

थी कि इसकी बहू का जाए तो उसे मुपभुप सब कुछ सीप करकहीं निकल जाईगी।

भगवान वह दिन दिखाना चाहता है तो यह भाये दिन कुछ न कुछ उत्पात किवा

करता है। लड़की मैं बल जाती हूँ। बहुत अच्छी है। सीधर कितनी तरह

इमका म्याह हो जाता तो मेरी रहीं-रहीं बिलपी सार्क ही जाती। मुझी

है कि उस पर तो ब्रिटिश सरकार ने बारसट बाटी कर रजे है। और अब

रहा-सहा यहाँ भी हुजूर पर्यंत्र करने वाले हैं। तुम्हीं कुछ बताओ न ?

—अमक में दीदी ! विमान ने अभी तक मुझे कुछ नहीं बताया।

—तब कैसे क्या हो सीधर ?

—यह ठीक है घण्टी-उलका की दोर-तबर बड़ी जोरों पर जारी है।

—दिखने में कितना सीमा मलता है विमान लेकिन पुलिस बासों को उत्सू बनाये हुए है कि वह जहीसा का रहने वाला है।

—पर बीनी ! पुलिस को विधान बाबू पर पूरा टाक है । बाहू ने अपने को उड़ीसा का बताया या सिन्ध का ।

—तो फिर क्या हा ?

—यही ता समय में नहीं आता ।

—बहु कय माने बाका है ?

—किसी भी दिन आ सकते हैं । कुछ ठीक है भी उनका ?

—तुम्हीं कुछ समझाओ उसका ।

—मुझे ता ब गाँधी बाबा की प्रार्थनावाम्नी राजनीति क भी योग्य नहीं समझते, तब मला बम-विस्फोट वाली के बारे में क्या बताएँगे । असल में दीश ! बिगन बाबू कभी कुछ कहते हैं, कभी कुछ । शुरू-शुरू में जब मैं आया था तो बिनी इसाई सड़की के साथ घासी करना चाहते थे पता नहीं क्या हुआ उसका ? उसके बाद अब कमल से करना चाहते हैं कि जालि के पीछे इस तरह पड़ गये हैं कि बस । मान एा कल से कुछ हो-हुमा जाए तो बेचारी कमल

—बीपर ! बिगन मन्बरी पाजी हो गया है । असल में वो जिस इसाई सड़की से गाँधी करना चाहता था न ? एक तो वह इसाई नहीं है । दूसरे बहु सड़की भी मन्बिकारी पार्टी की है । इन लोगों के आपस में मिश्रण का बर्ष में तय हुआ था । वहीं पर ये लोग अपनी पार्टी का नाम करते हैं । सुनती हूँ उरा सड़की की मदद से किसी तरह पालवा-हाउस में घुसने की चेष्टा में हैं । यदि बीर कोई तरकीब सफल न होगी तब बहु सड़की ही हमला करेगी ।

—मच्छा ??

बीर एन्डसाय को बीपर बाबू को बिगन बाबू बड़े पदमंत्री भयानक व्यक्ति मने । सेकिन डुमरे ही राज बिगन बाबू के साहस के प्रति नहीं ईर्ष्या भी हुई कि कितना माहमी व्यक्ति है जिस किसी चीज का भय नहीं । गिरपारी की दुकान पर पान पाने से लेकर समा-मीटिंगों तक वहीं जुटापन होती । पाप्यर ऐसे ही हँसते हुए ब किमी दिन पालवा-हाउस में घुसकर ए० जी० जी० पर विस्तार भी तान देते और पकड़े जाने पर सम्भव हुआ तो गिरपारी का पान मुँह में दाबे फॉनी पर पी घुस जाएँगे । उस बेलायत में एक राज को भी कोई परिवर्तन या मकिमता नहीं आएगी । सेकिन बिगन कितना नीमाम्यगामी है कि बीनी जमा व्यक्ति उनके मिष्ट चिन्तित ही नहीं आरुम भी है ।

—नीरी ! आरुमो कैसे मामुम कि बहु सड़की इसाई नहीं है बीर दीरी उय बिन्ता में भी हम बात से यम ही हँस पड़ीं जैम कि को\* मा अपने

पुत्र की घतानी की ऐसी बात सुने जा बास्त्वक में अद्वितीय हो तो, तो जो मान  
मौके मुक पर होता है वैसे ही दीनीमूल पर भी था, बीबी

—उमका नाम तुमको दीनी बताया न ?

—हाँ राबी ही ।

—असल में उसका नाम रत्ना है वह इसान् नहीं है । बिघन ने ता झूठ ही बताया  
जा ककित रत्ना ने ही मुझे बताया कि वह बनारस की है । समय बयाची  
है । रत्ना को बिघन ही मेरे यहाँ लाया था । रत्ना भी तो कान्तिकारियों क  
हूम की है ।

भात्र अष्टमी थी । कम्पना बीबीबीध माकास में टँका हुआ था । सोम पड़े  
अधी देर हा चुकी थी । तालाब में जल में तारे उतर जाने थे । जपरों की मति  
सब निमन्द था ।

—मीपर ! बिघन को किसी प्रकार बधाना ही होया ।

—हाँ यह ता बहुत जरूरी है दीनी । ककित कैसे ?

—तुम उस स्मर कहीं दूर छोड़ आयो ।

दीनी क इस ब्यामोह पर कक्या ही जापी और मीपर बाबू हैंस पड़े । कुछ देर  
के बाद सायास बीबी भी हैंस पड़ी ।

—आप क्यों हैंसी बीबी ?

—अपनी मूखता पर । बिघन कोई असबाब है कि उसे दूर दप में अजात छोड़  
आया थाए ?

—दीनी ! क्या कमल को यह सब मालूम है ?

—क्यों ?

—संभव है कि उसे मालूम न हो ।

—संभव है ।

—तब तो कमल से कह कर कुछ किया जा सकता है ।

—सकित नह भी तो राजनीति में है ।

—सीकिया राजनीति है नह ।

—लेकिन यदि मालूम हो तो क्या होगा ?

—तो कमल से कहा जाए कि वह बिघन बाबू को बाध्य करे ।

—मुझे नहीं समता कि बिघन को बाध्य किया जा सकता है ।

—तब तो आप ही कुछ कर सकती हैं ।

—नै कुछ कर सकती होगी तो कमी का कर चुकी होती । नह बड़ा निर्मम

है। मैंने उस डट कर, रो कर सनी तरह तो राका छफिन बह ना बस हँस रता हूँ।

—लेकिन जब आप कुछ नहीं कर सकतीं तो फिर कुछ नहीं किया जा सकता।

—श्रीधर ! उसक बाँझने पर क्याम तो है नहीं। परमा मुझे धमकी बहर बना है।

—धमकी ?

—हाँ धमकी। मैंने उससे विवाह की पर्चा की। बोना विवाह नहीं करेगा। मैं भी उसे धमकात हुए कहा कि ठीक है जब तुम्हें बम-पिस्तीफ़ हा पलाने है तब बेचारी यहू को सामन में डालने से छान ? तुम तो किसी गिन भगवान न करे काठापानी या फाँसी या आग्री और बह तुम्हारे नाम को रोनी रहे। तो पालत हा बड़ी मोरु पर हँसा और बाणा कि अगर मैं चाहती हूँ कि वह विवाह करके एक मङ्गुहन्म की तरह रहे ना फिर वह जिसस गारी करना चाह उसस में गारी करने हूँ। मैंने कहा कि अगर वह कमल स विवाह नहा करना चाहता है तो न करे। बना वह दूमरी लडकी कान है ? मला मुझे क्या आपति हो सकती है ? तो कहने लगा कि नहा मुझे प्रग करना होया कि स उससे उसका विवाह करवा दूनी। मैंन कहा कि अगर यही बात है तो मुझे मंजूर है। वह लडकी का नाम बनाए तो ? अगर स जानती हूपी ता अवल्य करवा दूनी और श्रीधर ! उनने जानते हो क्या कहा ? श्रीधर !। वह मुमस ही ब्याह

और बीबी फूट पड़ी। काप्यो देर तक श्रीधर की समझ में नहीं आया कि क्या बहे और रोनी बीबी को कैसे समझाए।

—बीबी ! आप उस पामल की बात पर पान्त रहें। आवेग में व्यक्ति को ध्याम नहीं रहता कि वह क्या बोल रहा है।

उसी दूरी पर लडकन गिनछानी बिया। बीबी स्वल्प होने लगी।



दो तीन दिन भीषण बाढ़ की अव्यक्त स्थिति बनी रही। जिसन बाढ़ के प्रति अभीष्ट विरोधा का भाव आता रहा। उस दिन पीपस्या टैंक पर बसने समय बीबी से कहा था कि वह दूसरे दिन आएगा लेकिन जाने क्यों जाते हुए लम्बा जायी। बिनाने यह बात कह कर तो दूसरे किसी का भी मुँह न रहने दिया। दिन भर भर में ही बड़े रहे। घाम अवश्य ही मजदूर पाठशाला के सिद्ध हो आये पर परिपद के कार्यालय वे हस्तों से नहीं भये थे। पिछले दिनों से वे ही कार्यालय मंत्री थे लेकिन इस बीच चाहते पर भी नहीं जा सके।

इन दो-तीन दिनों में बिगन पर शोध भी आता कि बीबी की विवशता को, अतिरिक्त स्नेह की इस प्रकार अपमानित या साक्षित कर जाने का क्या अधिकार था ? क्या बिगन ने यह बात कह कर यह नहीं सिद्ध किया कि वे बेसया हैं ? क्योंकि मक से बहि बिगन ने बीबी का सम्बन्ध स्वीकार्य होता तो वह कभी ऐसा कहना तो दूर सोच भी नहीं सकता था।

भीषण बाढ़ के मक में अनेक सकल्प-विकल्प आते रहे। बिगन ने किसी कोम के बस तो ऐसा नहीं कहा होगा। क्योंकि कोम क्या हो सकता है ? बीबी के

पैस का काम बिनाग को हाया यह बात गले नहीं उतर रही थी सब ?? और कुछ समझ में नहीं आ रहा था। बीदी निरचय ही बिनाग बाबू से न सही तो इस बरस डा बही होंगी ही उन पर बेस्वा भयकर व्यापिना से प्रमत्त रसमो व प्रति सोन हो ही क्या सकता है ? फिर, फिर बिनाग ने यह बचकानापन क्यों किया ?

अनेक ठक-बिनागं किये गये किन्तु किसी मूर्खानिष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके । चार्ने क्यों बारी क यहाँ बात उम्हें यहाँ स्या कि जैसे बिनाग बाभी बाउ उम्हें ही बही हो । दो एक दिन इसी प्रतीक्षा में रह कि बिनाग बाबू आ जाएँ तो पूछा जाए कि "तुम्हें बीदी न ऐसा क्यों कहा ?—मेकिन बिनाग बाबू का नहीं पता ही नहीं था कि बिनाग तो यह था कि अन्तर में ही नहीं बिनाग बाबू के लिए बिनाग नी थी कि माछवा-हा-म बाणा पद्ममत्र यदि हो जाए तो क्या हो ? निरचय हा बिनाग पक-टिने जाएँगे और और एक गंभीर प्रश्न भीतर बाबू के मन में था कि इस प्रकार के चालिकारियों का क्या हागा ? एक अष्टेक मरु-पर क मार दिने जाने पर क्या सचमुच ही बिदिग सामन-उत्र या मता बनबोर हो सकेगी ? दो चार बन-विस्तीर क बमारों से अष्टेक जैना चालिगाम्या सामक-कर्म क्या इस बेग के मनाबक का स्वीकार लेया ? तब क्या हो ? गाँधीबाबा अभी स्वय मस्पष्ट हैं । वही जिमी के मन में स्पष्ट योजना कुछ नहीं है कि अष्टेक से किम प्रकार मुक्त किया जाए । चालिकारी जोय ममार म इनने हुदकन काम करते हैं कि उनके पबिन प्रयोगन के बारे में कौन जनमत नहीं बन पा रहा है । चालिकारिता में अपनी थोर भावविश कन की अमीम समता है किन्तु अभी से एक ठक ही सीमित हैं, बिनाग आन्वोन्नत तो नहीं बन पा रहा है न ? न कन की जनचालि का सा उचार ही दिगता है न याम्य की उर-चालि की भी जनचनना । एकमात्र स्थिति में इसकी संभावनाएँ थी—राकमाम्य निष्ठा में न सब से नहीं रह । केन्द्राय स्थिति का बिपटन हा पया है । बिनाग साम्याम्य में बनी मूच नहीं हुदता उस निष्ठा न-एक घमासा बँग दना यह पान तक मन्मन नहीं लानी पबिन बिनाग बाबू उस घमास को निष्ठा क माप परड़े हुए हैं ।

बड़े ही बढ़करे दिन क नाम धीवर बाबू जी के यही पहुँचे । मात्र एका दशो भी । जिनपर निराश के बाद सभी पूजन करने में व्यस्त थीं । कमरे में पूजन की गंध स्पष्ट थी । बैठक में चाड़ी देर प्रतीक्षा करते हुए सहसा इस खूबसूरत दीदी के प्रति अपार कदवा ममता दया सभी कूट हुआ । सम्बन्धहीन बेव्या लेकिन किसी भी जनवतारिणी समरजनमि से कम नहीं । समाजघट्ट, किन्तु किसी भी प्रतिभा से कम पवित्र नहीं ।

तभी बैठक में प्रवेशते हुए दीदी बोली

—प्रतीक्षा करती पड़ी न ? मुझे भी तुमने दो-तीन दिन प्रतीक्षा करवायी ।

—दीदी ! क्या था ही नहीं मका ।

—उन जाम्बिकाटी महासम का कछ पता क्या ?

—नहीं तो ।

—अच्छा तुम गना से बोड़ी देर बायें करा मैं तक तक पछाहार कर भाई ।

—रना ? कौन रना ?

—तुम्हारे जाम्बिकाटी महासम की रोखी सेक्सन । रना !

पुण्डभूमि से ही किसी में 'बायी दीदी' कहा ।

और धीवर बाबू ने बोला कि इना हाथ बाड़े मुसकराते एक अस्पष्ट सुन्धी रमणी लग्न लड़ी है ।

—रना ! यह है धीवर बाबू । तुम बतियाओ तक तक मैं

—हां दीदी ! दिन भर से जक तक नहीं लिया । ऐसी भी क्या एकादशी ।

इतना पुण्य कमाकर भी क्या करिएगा ?

—पुण्य ?? जिसे तक छोटा भाई तक बासनाधीन हो उठा उसके बाप का कोई अन्त है रना ?

—दीदी ! मैं बिना बाबू की इतना निरा हुआ नहीं समझती थी ।

—अपने हल के नेता के बारे में ऐसी बायें नहीं करनी चाहिए तुम्हें ।

—सम्बन्धों की पवित्रता को धूमिल करने का अधिकार किसी को नहीं है ।

—रना ! बिना के कहे पर जाती तो जाने कब का छिन्न-मिन्न हो गया होता ।

मुझे तो भक्तान में बेव्या इष्टीष्टिए बनाया कि मैं बिना धीवर रना

समस्त धारदा सबके लिए समर्पित हो जाऊँ । सो मैं भी कैसी हूँ

बायें करने पर आ जाती हूँ तो यह भी ध्यान नहीं रहता कि किसी

अस्पष्टता करने पर आ गयी हूँ ।

और ब उठकर कमरे में चली गयी ।

रत्ना और थीपर बाबू दोनों को सहसा नहीं समझ में आ रहा था कि पहली बार किसी स क्या बात कही जाए? बोलना साबते हुए दोनों ही बैठे रह। उचित तो यह था कि थीपर बाबू कुछ बोझ पर रत्ना ही बोली

—आपका मैं कई बार देख चुकी हूँ।

—मने तो आपको एक बार जब ही में देखा था।

रत्ना हँस उठी।

—क्या उस दिन जब हम एक मन्दिबाहिता दम्पति को नाथ पर बिठकाने आये थे और ?

—जी हाँ उस दिन ही। लेकिन बिघन बाबू ने उसके बाप कमी विवेक नहीं बताया।

—आश्चर्यकला भी क्या थी? आपको 'सैतन्य-वचनान्त' समझत बहुत ही प्रिय है।

—आपका कंस मामुम? क्या बिघन ने बताया?

—जी नहीं। आपकी जिज्ञासे जल्दर मने आपका ही बासे पर उम्मी-मन्दी है।

—क्या आप वहाँ जाती रही है? लेकिन कमी

—नहीं मिस्री। साब्यकैता भी क्या थी?

—हाँ आप तो अपनी पार्ने के काम से

—जी और क्या?

—आपका आश्चर्य नहीं हुआ कि मुझे यह मामुम है कि आप अन्तिकारी बल में है।

—मुझे जब आपके बारे में इतनी सारी बातें मामुम है तो आपका यह जान जाने का तो अधिकार है ही कि मैं काफी भी हूँ बंगाली हूँ नास्तिकारी हूँ तथा इगार्ड नहीं हूँ और न ही बिघन बाबू से बिबाह ही करना चाहती हूँ।

थीपर बाबू लज भर का सवत में आ गये। लगा कि यह सारी बहुत तेज प्रबाह का जल है।

—क्या मुझे कुछ इतना ही माप्य है?

—मग गपल है।

—क्या इतना जानता जानता नहीं जाना?

—यह तो मैंना ही हुआ कि पत्नी ट्रेन बर्ती जाती है जब जाती है बाप जीव में कीन कीन से सगल पढ़त है पर इतना माग जान जाने की भी जानता तो नहीं रहत न?

धीबर बाबू हठात हठप्रम हो गये । न कोई प्रश्न न उत्तर कुछ भी वो सुन नहीं पडा बसकि रत्ना जगहें अनाबन्धुक रूप से लेक कयी कर्पाकि रत्ना त्रिस सुष्टि ने छाक ह्यै रहीं की उचसे बह अपने को धीबर बाबू स डेंबा किये हुए की ।  
—क्या आप राजनीति में निरवास करते हैं या बिजन बाबू के कारण संसर्गबाप स आ गये हैं ?

—आप क्या सोचती हैं ?  
—नै ता संसर्गबोप ही मानती हूँ ।

—क्या यह भी विघन बाबू ने बताया ?  
—बिसम बाबू की बात बिसम बाबू ही जानें । मुझे ता एसा ही सया कि आप सारिक निष्ठावान भीर बन्धु है ।

—क्या कुछ है ?  
—ऐस मुग में तो है ही जब कि देव पराधीन हो ।  
—कमता है आप अपना सर्वस्व देश पर स्वीकार कर सकती हैं ।  
—सर्वस्व से आपका तात्पर्य धीबर बाबू ? स्व तो जानती हूँ ।  
—सर्वस्व माने सब कुछ

—सब कुछ क्या ? और, जो सब कुछ देने की बात कहता है वह शूठ बोसता है । आप अपने को दे दें यही बहुत हैं । खीं नै !! अपन को देने बायी हूँ । वे सक्ष्मी कि नहीं इसका निर्गम केवल जागामीकक करेया ।  
—इसका मतस्य हुआ कि आपके मन में अभी भी सन्देह है ।

—आपको लगता है ऐसा ?  
—क्या कह सकता हूँ ।  
तमी दीदी ने फिर प्रवेसा । बोली  
—क्या नहीं कह पा रहे हो धीबर ?  
—क्या कह सका हूँ आज तक दीदी ?

—दीदी ! धीबर बाबू असल में मज्जन हैं । धीबर बाबू ! सब माने एक शक को भी इसमें परिहास नहीं ।  
—रत्ना ! कमता है धीबर ने तुम पर काफ़ी प्रभाव डाला है ।  
—यदि ये पति और पिता न होते ता मैं निरन्धव ही विवाह करना चाहती इनसे ।

बाठानरथ बोड़ा मुलक हुआ । दीदी ह्येने कमी तथा रत्ना आत्मस्व हो अपने में मुनकरायी रहीं । धीबर के कान तक माल हो गये । आज तक कमी सचे तक से प्रेम का अभिनय छोड़ परिहास तक नहीं किया होगा । कमी कियी किन कोई

रमणी और वह भी रत्ना जैसी अप्रतिम सुन्दरी जो कि अमी-अमी उम तक में परास्त कर चुकी है कभी इतने सामाजिक रूप में विवाह की बात कहेगी इसकी कल्पना तब नहीं की थी।

—रत्ना ! ये तुम शान्तिवागियों में विवाह प्रस्ताव रखने का क्या कोई नियम है ?

और वे पारों स हंस पड़ीं।

—मैंने ता बीबी ! बिगन बाबू का समताया या बि बीबी स यह प्रस्ताव रखना घोर अनर्थ है लेकिन

—बधा आया बीबी स क्याह करने वाला ? कहाँ है वह ? जग क्याह करमबान्त की मूरत स भी तो हम् ।

—जाने बीबिए बीबी ! कोन् मज्ठी मूरत नहीं है उमरी । मज्ठी हानी ता मैं ही नहीं विवाह रनी ?

और रत्ना खूब आरों पर हंस उठी।

दीनी और भीषर बाबू दोनों को लगा कि रत्ना खूब खुश हुआ है। कोई छल नहीं है, झूठा नहीं है। यदि झूठ है तो वह मजबूत मकल्य है प्राणा की होम कर देने का। भीषर बाबू को लगा कि रत्ना में शक्ति है, मोह है तथा दिल की भी निमलता है। व उमकी शक्ति के सामने मौन ही प्रथम्य हो उठे।

—बैमे भाप यहाँ क्या करला है रत्ना जी ?

—मिगतरी गर्ल्य स्कूल में पढ़ाती हूँ।

—तो क्या भाप इमारी हा गर्वी है।

—क्या, बुलाई क्या है ?

—लेकिन किमलिए ?

—आप स मम मज्ठीपत और कोई प्रमन पूछ सकन है यह या हम जीम नहीं।

—क्या कमल से बिगन बाबू विवाह करेगे ?

—न मैं कमल हूँ और न बिगन बाबू हा।

—आप जानतीं ता है।

—जानतीं ता यह भी हूँ कि पत्नी सड़क बम्बई जाती है लेकिन स उम पर अपने ता मरी लगती है न ?

—दीदी का जो अमान बिगन बाबू ने किया क्या वह भावत है ? या उममें गनीगता है।

—आप ता मुझसे अधिक पढ़-लिख व्यक्ति है भीषर बाबू ! एराल में माता

- पुत्र के मित्तने को भी तो ऐसी ही बुराबस्थाभा से बचाने के लिए घास्त्रकारों ने बचित किया है ।
- आपने अण्डित का मार्य क्यों चुना ?
- सगतता है आप तो जैसे बयान ले रहे हैं ।
- आप बात काट गयीं ।
- यही समझ लें । बीबी । अब मैं चर्नू । काफ़ी बेर हो गयी ।
- अच्छा तो रत्ना ! फिर कब आओगी ? एकावची को ही भाती हो और सारा नियम-अरम टूटता है । जानते हैं बीबर ! रत्ना कहती है कि एकावची के क दिन बमामी आवसज जरूर आता है । और इसके लिए बनवाना पड़ता है जबकि हम लोग एकावची के दिन आवसज तो नहीं ही रीषते ।
- क्या करिएगा जब बीबी हैं तो सब मुगतता भी पड़ेगा । अच्छा बीबी । अब की एकावची के दिन नहीं आऊँगी बस ! !
- नहीं नहीं रत्ना ! ऐसी कोई बात नहीं । तुम लोगों से क्या बरम बीदे ही है ।
- सेकिन यमराज के सामने क्या बबारा दीयी बीबी ?
- हाँ-हाँ मैं सब कह दूँगी कि बाल-बच्चों से बड़ा न तो कोई बरम है और न तुम्हारा यह स्वयं या गरम ।
- और, आप जानें ।
- तो आओगी न ?
- बीबी ! 'माँ' कहने को मन करता है ।
- और रत्ना अत्यन्त तेजी से कमरे के बाहर चली गयी ।

दीने इन दिनों बीमार थीं। जिनी तरह से रत्ना का बुकाना चाहती थीं, इसलिए श्रीपर बाबू को मिंगनगी स्कूल जाना पड़ा। मन में वहीँ उम्मीदता भी थी कि किस प्रकार वह अपने को वहाँ सहेजे हुए है। श्रीपर बाबू को रत्ना अत्यन्त मित्रित किन्तु उल्हसमयी लगी। जिन्नी सहज बह दिखती है समस्त अन्दर में उतनी नहीं है। उसके व्यक्तिगत में एक गन्ना निवेश था जिसे अम्बीदार कर से जाना जाता था। उस जिन्नी भी बात पर आश्चर्य न करने के बाद भी-कभी तो भय लगने लगता था। सीन्दर और उल्हस का निपटाराक मोह नहीं। गान्त अल्पस में श्रीपर बाबू को अकस्मिक न भी लगी किन्तु मनेत्र अल्प कर गया था।

स्कूल बन्द रहा था। मिस राजी सख्तन ने वहाँ सभी पसिष्ट मगे। स्कूल न दिम्बीरक न श्रीपर बाबू को मादुम हुआ कि मिस राजी सख्तन ता अपने घर अकसेर गयी है क्योंकि उनका विवाह है और आज गय भी भाठ निह हा गय। उह बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन गये आठ दिन हुए। आज न टीन भाठ दिन बर ही ता एवादीनी थी अकसेर बह दीने क घर मिनी



थी। उन्हें रात में कासा बिछलापी दिया और वे बिना और कुछ पूछेवाचे सीट आये।

दीदी को बतलाने पर उन्हें काशी आश्चर्य हुआ कि वह कहीं नहीं गयी। दोना का संघर्ष एक ही था कि बिघन बाबू जो अभी तक नहीं लौटे हैं, जरूर ही रूखा उनसे मिलने गयी होगी। दोनों काशी गभीर हा बने क्योंकि बिघन बाबू को पहले कभी इतने दिनों तक यापक हुआ नहीं हुआ। यदि कहीं मासवा-हाउस वाले पड़वान्न की बात सही है तो क्या होगा ?

—दीदी ! आपने रत्ना से इस मासवा-हाउस के पड़वान्न के बारे में पूछा था ?

—वह तो हमेशा बिघन की तरह ही हँस दिया जाती है।

—ता फिर कैसे पता लगाया जाए ?

—जिसका पता अथवा सरकार तक नहीं लगा पाती उसका पता मला हम-नुम क्या क्या सकते हैं ?

—एकादशी वाला दिन रत्ना ने अपने बाहर जाने के बारे में कुछ भी नहीं कहा ?

—वहाँ कुछ भी तो नहीं कहा। तुम्हारे सामने जब पूछा कि क्या मला अब तक आज्ञायी तो यही तो कहा था कि अब एकादशी के दिन नहीं जाऊँगी।

—इसका मतलब ही यह था कि वह बाहर आ रही है।

—मला इसका मतलब यह भी हो सकता है वह कौन समझ सकता है ?

—कहने वाला समझने वाले के लिए नहीं बहता। सब अपने परिचय के लिए ही कहते-मुनते हैं। वो सचमन को कहीं भेजकर पता चकवाए न।

—सचमन को भेजा तो है लेकिन इस बार समझता है वह कुछ नहीं कर सकता।

—क्यों ? सचमन जिस प्रकार खोज-खबर काता फिरता है आपके लिए, इससे तो पता चलता है कि वह कहीं

और धीवर बाबू हँस दिने

—सी० आई सी० ??

और दीदी स्वयं हँस दी फिर वाली

—यही रात तो बिघन को भी है उस पर। अयल में धीवर ! वह पुस्तक का सी० आई० सी० नहीं मेट सी० आई सी० है।

—किन लोगों के लिए रक्त छोड़ा है ?

—नुम लोगों को खोज-खबर समझी रहे इसलिये। पता नहीं धीवर ! वह मूले क्यों नहीं छोड़ कर चला जाता।

—पुछना आयी है। बजावारी कूट-कूट कर मरी होती है इन लोगों में।

—तो श्रीपर ! बब क्या किया जाए ?

—भाप तो एम कह रही हैं जैम कुछ हाने जा रहा है ।

—तुम्हें नहीं लगता कि कुछ हाना जाता है ?

—मुझ ता पीपी ! फिरहाप यमीं सम रही है ।

और यह कहन हुए उन्होंने सिर के ऊपर बलने हुए बडे स लाम पत्रे को देसा जो कि मरने क माय खोसा जा रहा था । महमा दानों को ही सया कि पंसा या तो बीमा है या फिर गमियां बड़ गमीं हैं । पीपी ने सुगही मे पानी पिया और एक गिलास श्रीपर का देन बाणी

—पता नहीं क्यों मुझे अदृश्य में ऐसा लय रहा है जैम कुछ अपमानुन पट रहा है अपसा बटने वाला है ।

—यह आपका अतिरिक्त माह है जा कि कृपाकार्य करता रहा है ।

—क्या करें श्रीपर ! बिना माह क हम रह ही नहीं सकती ।

—अच्छा तो मैं जानूँ अब ।

—इस गमीं में ? पाड़ा ठण्डा जाए तब जाना ।

—असल में मजदूर पुनियत क एक काम में पुम्भके माहक स मिमना है । कई दिनों मे यह काम टालना भा रहा हूँ ।

—तो अब आओगे ?

—जब आप कहें ।

—तुम्हें कमी खाने को मन नहीं करता ?

—मैं यहाँ मे जा हा जब पाठा हूँ कि खाने को मन करे ।

और दना हों पड़े ।

—बापें बनाना तुम भी सील गय आविर ।

—अभी पूरी तरह नहा पीपी !

पीपी के यहाँ मे निकल कर बे कई गिना बार कुछ दर क लिए पकिरक लाइवरी में बने पडे । यहाँ भी कुछ काम मन नहीं सया । महमा उन्हें सया कि पिछन दिना में उनमें उद्विग्न हान का नया परिबतन भापा था । प्रायः उन्हें लगता कि जैम बे एक मरना देस रह है जा कि पानी देर बाट टूट जायगा । इसलिये पिन्ता भी कोई बात नहीं । यकिन यह सम भी बब तक ?

पीपी क मन भी गंवा बाम्ब में ता उनके भी मन की लका थी । जैम दूर सित्रिय के पास कोई बानी आपी बक रही है जिसमें मादन मियागों का गता मुनानी पड़ रहा है । क बीर उलने । पीपी क घर मे लीन हा उन्होंने पकना

निर्णय यही सिया कि बिसन बाबू के भाते ही संभव हुआ तो पहली गाड़ी से इन्वीर छाड़कर कही अस्पत्र वाले जाएंगे । लेकिन कहाँ ? और अपने ही प्रश्न पर हँसी आ गयी । अब पर छोड़ते मह महीं सोचा था कि वे कहाँ जा रहे हैं तब भला इन्वीर छोड़ते यह प्रश्न क्यों ? यहाँ क्या है ? काम के नाम पर मजदूर पाठशाला में पढ़ाना तथा बिसन बाबू की राजनीति की वेगार स्वस्थ परिपत्र के आफिम का काम करना और पढ़ना । लेकिन क्या आजीवन यही करना है ? एसा संभव था यदि वे स्वयं ही हठे लेकिन वे तो परिवार वाले हैं बिसन बाबू छोड़े ही । कहीं बिसन बाबू से स्वस्थ ईर्ष्या भी हुई कि वे कितने स्वतंत्र हैं । उनकी स्वतंत्रता तो यस्कि इस सीमा तक भी है कि वे किसी से भी कमल से रत्ना से और तो और बीबी तक सं विवाह प्रेम जाने क्या-क्या कह-सुन सकते हैं ।

वे यही सब साक्षते-गुनते पुस्तके साहब के घर की तरफ बन्धमागा पसे जा रह थे । गर्मी खासी थी । बाहर बालाग में माधवराज पसीने में डूबा सो रहा था । जगाने पर चौकते हुए बोला

—साहेब तो अभी-अभी सोये हैं । कुछ खास काम है क्या श्रीधर बाबू !

—महीं खास तो कुछ महीं घाम को जा बाढ़ेगा ।

—बने श्रीधर बाबू ! वो कोई बो जाने आपने गाँव से यहाँ आये वे आपकू ओजने बास्ते । मिले वे आपकू ?

—कौन ? हमारे गाँव के ?

—हाँ साहब को अपना नाम भी बता गये हैं ।

—क्या नाम बताया ? नारायण बाबू ?

—जी हाँ नारायण बाबू । बा जो छोड़े से मोरे है और मोटे भी ।

—दूसरा क्या नाम था ? श्रीमोहन ठाकुर ?

—महीं यह नाम तो नहीं था ।

—अच्छा ।

और तेजी से वे पीता छतरने लगे । माधवराज बही से बोला

—श्रीधर बाबू ! वे लोग नसिया में ठहरे हैं ।

श्रीधर बाबू बिना कुछ सोचे तेजी से विघाहीन बढ़े ।

उनके मन की अजीब मनस्थिति थी। वे जिन दरवारों से बच रहे थे व घर बाजों की जिस शोर से छुपे हुए थे वे जिन नारायण बाबू के सामने नहीं पटना चाहते थे वे सारी बातें परिस्थिति तथा व्यक्ति हठात् इन दिनों की गाम्भीर्य भंग करके उक्त नामन मौजूद हैं। अब वे करें तो क्या करें ? जाएँ, ता बहूँ जाएँ ? क्या सद्मा इन्दौर छोड़ देना पड़ेगा ? अभी ता बिजान बाबू भी यहाँ नहीं हैं। दीरी स जाने के बारे में क्या कहा जाए ? क्या वे भीपर के मन की दुरभिमति समझ सकेंगी ?—और मान लो ये शोग सब समझ जाएँ लकिन वे मागनग बायू से क्या कहेंगे ? जिन प्रकार घर न जाने के निश्चय पर भ्रम रह सक्ते ? और क्या यह कभी नारायण बाबू स्वीकारेंगे भी ? पता नहीं माय में और कौन माया है। पिता जी तो नहीं ही होंगे। छोटा भाई बाबू भी नहीं ही होगा। बड़े भाई तो नहीं जायें हैं। संभव है पवन बाबू हों। पता नहीं ये दादा घर की स्थिति जिन प्रकार कह-सकें कि घर लौट जाने को बाध्य ही हो जाना पड़े। और क्या वे घर लौट जाएँ ? कम ?? हो गया बिशेष ?? मूस बनने के लिए ही घर छोड़ा या और बहू भी चणोपत ??

नहीं अब किसी स नहीं मिला जाएगा। बामे पर जाता ततरे से राप्ती नहीं होगा। निश्चय ही नारायण बाबू वहाँ भरना दिये बैठे होंगे। और वेग मिये जाने पर पुन उमी रूप का मञ्जूक बनना होगा। बिना बामे पर गये ही ट्रेन से, कहीं चम दिया जाए। पर हम समय तो कोर् ट्रेन नहीं जाती। और क्या पता नारायण बाबू ने मताकता बरती हो कि निमी को स्पेगन पर भी तैनात कर रखा हो। ता ठीक है महु से ट्रेन पकड़ी जाए। वहाँ तक पीरक ही जाया जाए। किस दिना में ?

बिना कुछ सामान लिये और घरा दिये वे महु को मार पीरक ही निकल पड़े। वे जान रहे थे कि लखना जानेवासी रेल रात ४ भाठ बज मिनैगी और हम समय चार बज रहा था। महु तक की चौन्ह मीन की दूरी व बागुबी चार घंटे में पार कर सकने है।

राप्ते भर मन में बड़ी परिणाम बना रहा कि कम से कम दीरी स बहू कर आना चाहिए था। वे क्या मापेंगी ? लकिन जब ४ मरा को बिना सामान निकल पड़े ४ ता फिर और उग्रे मया कि महु अब अपिच दूर नहीं है। महु

छात्रों के बगलों की रोशनियाँ दिखने लगी थी। गर्मियों की रात शुरू होने में रही थी। अजीब सपना था पारों ओर। सितियों में आती ट्रेन का हल्का आभास था। उन्हें अभी भी लम्बे लम्बे की लकीरें थीं। पैर काफी थक गये थे ट्रेन पकड़नी ही थी। अन्त में ट्रेन की रोशनी दूर के मकानों में लगी चमक जाती।

अस समय से स्टेशन पर पहुँचे ट्रेन का धुकी थी। वे ठीकी से एक डिब्बे में चढ़ गये। इतने दिनों बाद फिर अनाम यात्रा पर निकल पड़ने पर सहसा न जाने क्यों विश्वास नहीं हुआ। ट्रेन चल भी पड़ी थी लेकिन न जाने क्यों ऐसा नहीं लग रहा था कि अब सदा के लिए न भी सही ठाँव काफी दिनों के लिए हीवी डिब्बे बाबू इन्दौर पहुँच आये हैं। खिड़की के पास कुहली टिकाये पिछले डिब्बे में बुझते मैदानों को चुरते बीटे थे।

मरो गा रही थी कि जाने कैम खौफ कर जागी । संभवतः वह सपना देग  
रही थी । सपने में वह कृष्ण की जगज्ज पर बनी मही पत्नी थी बल्कि पति ने  
कहा था कि जाने रहा यहाँ मैं मनी माया और पता नहीं कैम उमका पैर  
नहीं बडम कृष्ण की ओर बढ़ा और वह उममें गिरती बनी जा रही थी कि वह  
धीरे उठी । मनीठ उसने खौफ कर देगा तो तीनों बच्चे मो रहे थे । पति बड  
नाय क लिए जा चुके थे । मन्दिबाब का बोर्ड बाग्य नहीं थाकिर भी मगा कि  
जब वे बीअनाय बन ही गये है ता फिर जस्ट कोट भाए । मनी दरा मकरा था ।  
कैम भी जाड़े का मकरा था । कुछ देर बिन्दरे में मने ही मने माबने का भी हुआ ।  
क्या बनी य लेमा बड नहीं बनेय कि बड भी उनही निबिबलता मनुभव कर  
मक जा कि उगरी जगना या दबगनी बरनी है ? ठीक है जही तट मयम-ममुर  
है के ता है ही उनही मेवा बनना ता उमरा कम है कबिन ये मानी भी बनी  
मीध मंडू क्या नहीं पात बरनी ? आगिर किस बात का मर है उन्हें ? उनही  
दृष्टि में मौरयनी मे भी मना बीनी दखत हागा उगरी । मना मर मने-मन  
के बा भी बड न ता जपत बरबा का ही न पति का ही जमा मरम मना गिजाना

चाहती है नहीं कर सकती। जब उसके बच्चे नाने आये होंगे तभी कोई न कोई लटराय लिये जेठानी या चाएँगी और बच्चों का ठण्डी या बासी रोटियाँ ही दी जाती हैं। ठीक यही ता 'इनक' साथ भी हाठा है। लेकिन 'य कभी कुछ नहीं कहते। और तो और अपनी माँ तक से नहीं कहते कि जब दादा या देवर जी के लिए परम खाना होता है तब बासी या ठण्डा खाने के लिए क्या बे ही बच्चे हैं? लेकिन नहीं आब तक किसी से कुछ नहीं कहा होगा। और तब भला भानी जी के ठंगे से कि कोई और क्या खाता है पीता है या क्या करता है? जब 'ये' ही किसी से कुछ नहीं कहते तब भला वह किसी से क्या कह सकती है? साधुमाँ सब कुछ समझती हैं लेकिन इन चामुण्डा भानी जी के मारे कुछ नहीं कह पाती हैं। जठ जी सिरस्टोदार क्या हो गये मानो घर भर के लोगों को फाँसी दे देंगे। लखरवाद, जो अगर उनकी रानी जी से किसी ने कुछ कहा ठी। पता नहीं किस बात का माग है कि पीबीसों बच्चे माँ तो हँसती-बोसती रहेंगी दूसरों से लेकिन उचने कुछ पूछा-सुना नहीं कि बड़ी भर का मुँह सूज जाएगा और एक एक सब्ज बाल्ने में बँस ही फाँसेंगी-कटेंगी जैसे बच्चा पैदा कर रही हों।

अपनी इस बच्चा पैदा करने वाली उपमा पर स्वयं हँसी आ गयी। नीचे ससुर जी की बँगबईके कड़ बाल्ने भगे बे तथा बिष्णु सहस्रनाम' का पाठ भी घुट हो गया था। बीबार पर बसती चिमनी यज्ञा बी और बह बरबाजा सोलकर पीना उठर राभीबर की तरफ बडी। परिवार में अपने-अपने डग से सबेरा हो रहा था। सरो का सबेरा रात्रीपर में कडी पर ठेक भडका कर चुन्हा बाल्ने से शुरू हुआ।

जब दोपहर भी डकने मगी और थीपर बाबू नहीं ली? तो माँ और पत्नी बाल्ने को अपने-अपने डग की चिन्ता हुई। माँ को लगा कि यह भी क्या बात हुई कि बँजनाप क्या ता बही जाकर बैठ गया। न इस बात की चिन्ता कि पीछेबासे क्या सोचेंगे। कोई घर में ऐसा भी प्राणी है जो बिना उसके खाने नहीं खा-पी सकता। अब तीसरा प्रहर हुआ आया। सारा कर्तन चौका भी हो गया। सबेरे का बना खाना रखा-रखा एकदम मूसा हो गया हागा। अब कब आएगा? कब आएगा? फिर बह कब घाएगी? अभी तो उस कपड़े-लत्ते गी बोलने है। कब सब होगा? उभर श्रीमोहन के आने का बखत भी हो जाएगा उसे रोटि-पानी मिळने

में देर हायी ता उमकी बहू झकझक करने लगोमी । इम थीपर की कमी भी पर  
पूहम्पी का सोच-विचार नहीं जाएगा ।

उपर पत्नी को लगा कि सो गये ता बहूँ जम गये । पर-बास-बच्चों की पहल  
ही कौन चिन्ता है आ आज ही होतो सकिन कम स कम अपन ता समय स ता  
सेना चाहिए ? कौन परधान मिसठी है कि स्वास्थ्य तो बनेगा ही बाहे। ठाठा ताभरा  
या गरम । न सही सरा की चिन्ता कि बहू मुखी-म्यासी बीटी हागी । विम भर  
बीम आ-मियों का खाना मनाकर बीका-बूझा करतो इस समय तक उमक पट की  
आँत्रों का क्या हाल होगा । अपनी ही भूख का क्या रकें । सरा की मूल-म्याम  
पूहूँ में जाए । अपने तो समय स ता सेना चाहिए ? हमरे की मानन करन  
में पना नहीं क्या मूल मिसठा है ? जेठ जी का बलो भाभी जी को मूल बदरान  
नहीं होनी इमलिए सबसे पहल जा सेने है । एक यहाँ है कि किमी भी बाग की  
चिन्ता नहीं । और फिर आज अभी तक नहीं माये । बीकनाथ हमेगा हो जाने है  
कोइ मयो बात तो नहीं, कि मछा बाही क्या करने लगे अब तक ? मारायण बाबू  
ता मुनठी हूँ कमी इस तरह की देर-मवेर नहीं करने । क्यों नहीं माँजी न कहा  
जाए । संजिन माँजी अपने मन में क्या कहेंगी ?

और मरी बही रात्रीपरबासा अबूदया ( बीकनाथ में मात्रक क नाम में माने  
वाला रोसमी बन्ध )पहले एकबस्ता बनी पूहूँ के पाम घुटनों क ऊपर हाथ पर  
ठाड़ी टिकाने पूषण में बीटी रखी ।

तभी माँ न प्रथेम रिया

—पना नहीं यह दुष्ट बीकनाथ में बीक-बीक क्या कर रहा है ।

सग मिर मुकाम अनुसर बनी बीटी पी । रात्रीपर के बाहर जेगनी नहान  
पर क पाम गड़ी जार-जार से बोल रही थीं

—बब कपड़ नहीं पाने से तो कहलबा दिया हाता । कहने में तो हेगे हाठी है न ?  
माँ ने रात्रीपर क दरबाज न कहा

—जो बहू ! अभी बचारी मँझमी का गाना-मीना ही नहीं हुआ तक मछा बह  
करने कैम घानी ?

—माँ जी ! दर न काम शुरू हागा तो पगी होगा । उनको भी रोज गान में  
देर हा जानी है । बच्चों क कपड़े दर न चुलने है । मछा जाणों क दिनों में कपड़  
बबमूग ? कल न आज मो रिमी बन्ध न दीया कपड़ा पहन दिया थीर कती  
कपड निमानिया बदेरग हा मया ता काला मुँह हमहागा वा होगा रिमी हुमर  
का ता नहीं न ?



एक बात पर इतनी सारी बातें सुनकर माँ का बहुत बुरा लगा लेकिन यह साहस नहीं हुआ कि बड़ी बहू की प्यावती पर कुछ कह सकें। जिस साहस के साथ मँसरी बहू का पक्ष लेकर वे खड़ी हुई थीं वह पता नहीं कहाँ चला गया। और वे निर्वाक सरो का मुँह ठाकने लगीं। सरो बिना कुछ बोले बाध उठी और हाथ भीकर अबुदया बदल कर तेजी से कपड़ों के गट्टर की ओर बढ़ी। सरो को तनी मात्तुम हुआ कि जेठानी अपने पानदान के कल्पे में पानी डालने आयी थी। बड़ी अम्दाब से बोलीं

—रूने को भाई, हम अपने कपड़े को डालेंगे। मैं तो रोज़ भी बास्ती हूँ। आज बरा सा सर दर्द हुआ कि बस। बरा ही बात पर सगलों की बातें सुननी पड़ें, इस गँठ से तो अच्छा है कि आदमी डूब मरे। मैंने तो 'इतसे' पचास बार कहा कि बोबी को रोज़ कपड़े धोने पर सगा सो बोले नहीं माँ भी बुरा मान आएंगी और फिर घर में इतने खोग है तो क्या बार कपड़े नहीं धुल सकते ? सरो दस बड़बड़ाहट को बिना सुने कपड़े धोने लगी। माँ को अपमान से अधिक निवपता के कारण वहाँ से चला जाना पड़ा। जेठानी पैरों की पामस बजाती सर्गर्ष खड़ी गयीं।

बाई का तीसरा प्रहर होता ही कितना है। अचरैलों पर भूप पहुँची नहीं कि बेसा झुकने को हो जाती है। माँ और पत्नी दोनों को लगा कि छावनी में नारायण बाबू क यहाँ पुलका किया जाए कि ये सोम आज अभी तक क्यों नहीं आये ? पर किस भेजे ? श्रीमाहन सिरस्तेबारी करके कह रही स लीटे। पड़के ता माँ स ही बर ली लेकिन जब घर में पहुँचे तो श्रीमती जी के द्वारा श्रीबर ठाकुर के बारे में भी भी चर्चा सुनी हो माँ को कहलबा दिया गया कि उनका सिर फटा था रहा है। बँद, मरी में जाते किसी से मन्दिर में कहलबा दिया कि कीर्तनिया जी को फौरन घर बुलाया है। श्रीमाध ठाकुर को कमी नहीं स्मरणता कि वे इस प्रकार बुलबामे गये हों। अचरस से बाहर आकर कपड़े बदल घर पहुँचे। जब पत्नी ने बताया कि श्रीबर अभी तक घर नहीं लौटा तो निस्पृह चिन्ता उन्हें भी हुई। एक बार मन में

भापा कि धीमाह्न मे बहूँ कि बहु बाहर मायापन बाबू क यहाँ लगान कर भाये  
कनिन कुछ माबकर स्वयं ही छावनी की भार निकल पड़े ।

सबेर से रात तक क अपने बँचे-बँचाये धार्मिक जीवन में मन्दिर म घर और  
बामुनेब की बुजान के अलावा और नी कुछ है यह उन्हें मूक ही गना था । छन्दनी  
की तरफ मात्र वे दक्षिणों बगनों बाद आये थे । निम्न क जीवन म यह कनिचन  
था । गिाबलीकी बेला मनी नहीं हुई थी । उन्हें बल ही बापममन्दिर ना सोचना  
था । पूरे गुरबाजे के नहीं जो छोट तामार का ग्यार था बही अना नी प्रोग्ने  
पापक क यहाँ का बबड़ा मित्र पर गये पीने का पानी लिय आ गही थी । बेबडा  
हवा में मँहक रहा था । सरो रात्र इसी राते तामार म कपड़ पाकर आती है ।  
बहु भीरों बयदों का पण्डर लिय पथी आ रही थी । तानार में ननपाटे बाकों  
की मौकाएँ साँम में एकात्म लग रही थी । उनाय क एकात्म नाय तामार का  
बाँध का और बाँध क उम पार छावनी गुरु हा जानी है । बम्पनीबाग क बरुँ पर  
पानी बासिया की भीड़ थी । साहू क रेह्ट और गिरियाँ आबाजे करनी पानी भरने  
में म्यम्न थे । सुब सुभा मड़के तथा साँम बजरियों बाकी छावनी इन गारतीय  
साँम में बड़ी अच्छी लग रही थी । कनक-कपान मोगों के बँगों क मामने छान  
की दूब फूल और और पोड़े निभ रह थे । दो-दो चार-चार में मिराही आ जा  
रहे थे । बैरनाय का यही राप्ता था । पोड़ी देर के उम राप्ता पर गड़ रह कि  
पापद भीबर आ रहा हा । निराग हा के मायापन बाबू के घर की मरक बड़े ।  
मायापन बाबू के पिता जब जीवित थे तब वे बनी-बनी भापा जाया करने थे ।  
वे जवानी क लिन थे । तब छावनी थी एसी मही थी । तब रेल नहीं बचा थी ।  
मेलबाग ( मय-बाट ) का ही रिबाज अधिक था । जीवन क वे अरनिक दिन  
थे । मायापन बाबू का घर बना था कोठी थी । बाहर बागान में ही मायापन बाबू  
अलवान भाड़े बैठे थे । मायापन बाबू इटास बिबास नहीं मके कि धीयन के रिता  
आये है । लेबिन इमर ही धान व बीड़े और पैर छूकर —हूँ ममन पर बिगाया ।

—बागन बने कष्ट बिपा ?

—बैने ही ।

—मार्द मरुब से बाम या क्या ?

—नहीं । हाँ मायापन ! तुम बैरनाय मे जब मोट भाये ?

—बैरनाय मे ! मैं तो बैरनाय नहीं गया ।

—तो तो वा धीयन तो यही बह बर गया था । मात्र सबरे चार बजे  
से ही कि तुम सब बैरनाय आ रहे हा ।

—धीर ने कहा था ? और वह अभी नहीं आया ?

—नहीं अभी तक तो नहीं आया । सब उसकी राह देख रहे हैं घर पर ।

—अच्छा आइए वेमन क घर पूछने चलो ।

—बेटा ! अब तुम्हीं पूछने पर बटा आता । मुझे मन्दिर से आना पड़ा । मैं वहीं चला हूँ ।

—बलिए मैं आपको पहले छोड़ आता हूँ ।

—क्यों तकलीफ करते हो नारायण !

—अरे बाहू तकलीफ की क्या बात हुई इसमें ?

और तैसी से कपड़े बदल नारायण बाबू भीनाथ ठाकुर को फिटन पर लेकर मन्दिर की ओर चले । नारायण बाबू सहसा समझ नहीं पाये कि धीर बाबू बैच माप गये कि नहीं और गये तो फिर कहाँ चले गये ? और मान था कि व्याप-पत्र देने के बाद मन में आति भी तो इसका यह तो सत्य नहीं था कि वे घर से ही चले जाएँ । नारायण बाबू को अपने ही सोचने पर आश्चर्य हुआ कि क्या धीर बाबू घर छोड़कर चले गये ? अपनी बगल में बैठे पिता भीनाथ ठाकुर पर उन्हें अत्यन्त क्या आयी कि धीर ने यदि ऐसा किया है तो कल नहीं पिता धीर की माता पत्नी बच्चे धीर मन्दिर के सामने फिटन खड़ी हुई ।

—तो नारायण !

—माप बिगता न करें । मैं उसे ढूँढ़ कर अभी साता हूँ ।

विया-बत्ती कमी के जब चुके थे । मन्दिर के बाहर खम्भे में लगी टाकटोन बल रही थी । मन्दिर के बाहर का बड़ा सा 'ठाटक' जिसकी ठीक सामी लकड़ी अँबेरे में डूबी हुई थी मन्दिर की मोटी दीवार में मुका-मुका सा लगा रहा था । जिस मेहराब के नीचे पिता भीनाथ ठाकुर खड़े बात कर रहे थे उसमें बन्दनवार के आम क पत्ते सुल बर, कड़े पीले पड़ गये थे । मन्दिर में आत-आते लोगों के मुख को किर्तिया भी की इस बेधा अपरस में न देखकर, बाहर खड़ा देख आश्चर्य होता फिर भी 'जय श्रीकृष्ण' कहते हुए निकल जाते ।

जब पिता भीनाथ ठाकुर अन्दर चले गये तब हठात नारायण बाबू को मना कि धीर न तो वेमन के वहाँ ही होगा और न ही वेमन के साथ बैचनाथ ही गया होगा । उन्हें अन्तर में निश्चय ही अब उठा कि धीर कहाँ जा चुका है लेकिन कहाँ ?

मन्दिर में सम्प्रा-भारती का टिकोरा गुंवा और नारायण बाबू पमेत के घर की तरफ बढ़े ।

कई दिनों से नारायण बाबू पमेत मजूमदार से नहीं मिले थे । जिस समय उनकी फ़िरन तारकर पहुँची रात हा गयी थी । मङ्गक अँधेरे में एकदम ता नहीं डूबी थी लेकिन आँसों की अँधेरी रात थी । तारा की झिलमिल में आम्रपाम के पेड़ों व तथा बस्तुओं के मन्ते-माटे आकार भग थे । रात ठंडी भी हा जमी थी तथा हवा भी थी । पमेत का पासला धारा तरफ से बग्गु पा । उज्ज्वलाना के दीगों से रोगनी गिन रही थी । चारों ओर एक महंग मन्नाटा था । टीक बमल में बहनी नदी की हल्की लफ़फ़ल अकम्प थी । जब मौकल बजायी गयी ता दरवाजा खोला गया । वामने हुए घास से डँके पमेत ने इन बेला नारायण बाबू को सहमा देकर आरक्ष्य भी प्रगट किया तथा प्रसन्न भी हुए ।

—क्यों वाम क्यों रहे हा ?

—अर कम से वामती हो गयी है अर ।

नारायण बाबू बिना कउ पूछनाछे पना सगाना आहत थे ।

—बैजनाथ गये होमे ।

—और पमेत हँस दिये ।

—तो तुम बैजनाथ नहीं गये ।

—नया पुसिम में धानेशरी गुरु कर दी नारायण बाबू ?

—नहीं की यही गलती की ।

—क्यों क्या बात है ? संभर समय रहे हैं ।

नारायण बाबू कउ देर तक बबल बने रहे । समत नहीं पढ़ा कि अय क्या करें । यहल तो निरुक्त मोषा ही था कि धीपर कहीं जग गया । अब ता स्पष्ट ही बह पला गया था । समक है कि बैजनाथ में ही महागम वगरीक रग हुए हैं । राम हुएन परमम योग बेगल इतमे न कोई एक ही निमा भी धरित वा निमाग गगब करलें के निरु बहल है जबकि इन महानय पर वा पाय भार उ हमडा हुना है ।

—वेमेन !

वेमेन ने बरसों बाद नारायण बाबू को इस तरह गंभीर पाया। वेमेन कहीं बर भी उठे।

—क्या बात है नारायण बाबू ?

—सपता है श्रीधर कौई पापकपन कर ही बैठा।

—क्या ??

वेमेन ने फटी आँसुओं से साफ़पर्यंता प्रकट अवस्था की केवलिन्त अभी कुछ नहीं समझ पाये थे।

—हाँ आज को सबेरे से ही घर से गायम है। बरबासों को कहा कि हम सब सोग आज बीजनाम आएँगे। पुरा विन हो गया और अब वह घर नहीं पहुँचा तो 'कौर्तनिया जी' घर आये पृच्छने। मैं उन्हें मन्विर छोड़कर तुम्हारे यहाँ ठकासने आया था कि कहीं तुम दोनों ही न गये हो।

वेमेन के हाथ पर एकदम ठण्डे हो गये जैसे मृत्यु का समाचार सुना हो। दोनों ने छिद्र उठाकर देखा कि वेमेन-पत्नी दरवाजे की चौखट में जड़ी जड़ी हुई सब सुन रही हैं। वे बोलीं

—नारायण बाबू ! आप सोग बीजनाम जाकर क्यों नहीं श्रीधर को खोजता ?

वेमेन पत्नी को बात से सोत्साह हा उठे और बोले

—ठीक है नारायण बाबू ! यही करना चाहिए।

—हाँ, करना तो यही चाहिए, पर पता नहीं क्यों मेरा मन कहता है कि वह वहाँ नहीं है।

—केवलिन्त उसको वहाँ देखना तो होगा न ? सोच के किमा होगा खोजना तो होया उसको।

वेमेन-पत्नी ने जैसे दोनों को आदेश दिया।

—ठीक है यज्ञ ठीक कहती है वेमेन ! गरम कपड़े ठीक से पहनना समझे !!

और पनेल बलों ही अन्ने-अन्ने तम में इस बार में साब रह प । बँध पनेन बाबू की समझ में कुरु यही आ रहा था कि भीपर बाबू न तिम अन्नाय में त्यागपत्र दिया था उसी का आशेष हाना । न मही परितान था मन्व है म्पानि ही हा । क्विन बे उम तत्र ठाँही हवा तथा भागना छिन में यही कामना कर रह थे कि भीपर बनी मिण जाय । छात्रो भा काही पीछ छूट चुकी थी । छात्रना क अत्र कत्रक की काग नी छूट मरी या । गन्ना भव उनना माठ मुमण नही रह गया था । माम पास गन्ना पर आ रहा था । हवा में तत्र गुड़ की गन्ध थी । यही हवा एकदम कटपाक वाली थी । पनेन बाबू काही गम्भ पढ़ते थे छिर नी जड़िया रह थे । बे हीन नीब जकड़े मगन भँपेरा घूमन बीन हुए थे । मायपन बाबू क बकिष्ट छीर तथा बडन की तत्र क म्पान था कि बे न ठा ठाँही हवा का अनुभव कर रहू क न भँपेरा उन्हु पन्नात रिय था नराम्य की ऊबड़-गाबड़ हा उमका ध्यान तोड़ पा र्छी थी । क ता अबरे गिनित में बम बडनाप की उम गानने की आनन्द-म्पानुह ही । क छिन पयाने इस समय त्रान्ठ मन्मार्थी कम रहे थे । राम्य में बहा परिचित नामा पहा त्रिमे इन दाना न भनहीं बार मरी मौमपों में दगा हुआ । इन समय उमका धान्य बहना जल बाण दान की नाति एकान्त बमक रहा था । उमके प्रबाह में क्वानहीन म्पयता थी । जल में तारे ठर उतरे मय रहे क । जल काभा माण हा । भागत भाव नमगट ही माके क जल की रीना । माय में एकदम की आन्नायन हा ग्ना । जल अनेक में टूट बिाग । टूटा जल आस में ही टकरता जल सौक उगा । तत्र में मारी बाबू पत्रियों म छिरकिय उठे भीर परता पार पाडे क माण गुण गीन पत्रिय सुनी घूम में निगान बनान हीर में निकर ग्य । बडनाप वाली पत्रियो आ गी थी । रियी भी केम भी त्रिकन ध्यान तत्र की पर बिागता हारी है कि उमकी एक यमों तथा मंघ हानी है—यो कि -ने त्रंगल म पुमक उरगा है । जल में उत बगन क्रिमा मुकगान राम्य दूरी पर क्रियो माद्रा या भव बहरी की म्पयनी मून पड़ने पर म्पयता है उम बाणत बल उठा हा । यह मर या मरी तम में बही अरिह पापत्र पण पत्रपाल म्प है । भाग्ने पाड़े ने बडनाप की जौर म अनी हवा में मयुने पण कए एकहाण ही बहू मर अनुभव की ।

बदा मा उदाण पार कर त्रिम मन्म से माण न्पिन में छेबि बागों भार एकदम त्रिकन गानि थी । और ता भीर बडुबारी तत्र मरी थे म्पयन उतर जाडे का बीग भी नही थी । दानों मीर पाण तत्र म्य । बरी भी त्रिकन देग क म्पयन की म्पय बड़ । त्रिकनिय क मामन रीर जल रहा था । ऐत मर भँवरे

—वेमेन !

वेमेन ने बरतों बाद नारायण बाबू को इस तरह गंभीर पाया। वेमेन कहीं बर भी उठे।

—क्या बात है नारायण बाबू ?

—कमता है भीपर कोई पागलपन कर ही बैठा।

—क्या ??

वेमेन ने पत्नी आँसों से घादकर्मता प्रकट लक्षण की व्यक्ति अभी कुछ नहीं समझ पाये थे।

—हाँ आज वो सबरे से ही बर से मायब है। बरबालों को कहा कि हम सब लोग आज बीजनाथ जाएंगे। पूरा दिन हो गया और जब वह पर नहीं पहुँचा तो 'कीर्तनिया जी' बर आये पूछने। मैं उन्हें मन्दिर छोड़कर तुम्हारे यहाँ तक आने आया था कि कहीं तुम दोनों ही न बचे हो।

वेमेन के हाथ पैर एकदम ठण्डे हो गये जैसे मृत्यु का समाचार सुना हो। दोनों ने छिद्र जटाकर देखा कि वेमेन-पत्नी बरबाजे की चौखट में बड़ी लड़ी हुई सब सुन रही हैं। वे बोलीं

—नारायण बाबू ! आप लोग बीजनाथ जाकर क्यों नहीं भीपर को खोजता ? वेमेन, पत्नी को बात से सीखाह हा उठे और बोले

—ठीक है नारायण बाबू ! यही करना चाहिए।

—हाँ, करना तो यही चाहिए, पर पता नहीं क्यों मेरा मन कहता है कि वह वहाँ नहीं है।

—लेकिन उसको वहाँ खोजना तो होमा न ? घोष के किया होगा खोजना तो होगा उसको।

वेमेन-पत्नी ने बेस दोनों को आदेश दिया।

—ठीक है, बहू ठीक कहती है वेमेन ! गरम कपड़ ठीक से पहनना समझे !!

और पेमेन दोनों ही अपने-अपने ढग से इस घारे में सोच रहे थे । वैस पमन बाबू की समझ में कुर्र यही था रहा था कि थीबर बाबू ने जिस असस्ताय में त्यागपत्र दिया था उसी का आदेश होगा । न सही परिहाप तो समझ है म्भानि ही हो । कनिन बें उस तेज ठण्डी हवा तथा नागठी फिटन में यही कामना कर रहू वे कि थीबर वहीं मिल जाएँ । छावनी भी काफी पीछे छूट चुकी थी । छावनी के अरेज कर्नेल की कोठी भी छूट मपी थी । रास्ता अब उजना साफ सुपर नहीँ रह गया था । आस पास गला पेरु जा रहा था । हवा में धाबे पुड़ की गम थी । यही हवा एकदम कटपाव वाली थी । पेमन वादू काफी मरम पहुँचे थे फिर भी चढ़िया रहे थे । बें बात मीचे जबड़े सटाये अथेरा बूरते बैठे हुए थे । नागयण बाबू के बहिष्ट घरीर तथा वडने की तर्ज से स्पष्ट था कि वे न ठो ठंडी हवा का अनुभव कर रहू वे न अंधेरा उम्हें परमान किये था न रास्ते की ऊबड़-सावड़ ही उनका ध्यान ठाढ़ पा रही थी । बें तो अंधेरे क्षितिज में बने बैजनाथ को जैसे खोजने को आकृष्ट-आकृष्ट हों । बें फिटन चढाते इस समय आकड़ सम्भसाधी कम रहे थे । रास्ते में बही परिचित नामा पडा जिस इन दोनों ने अनेकाँ बार समी मौसमों में देखा होया । इस समय उसका घान्त बहुतो जल बाल दर्पण की भाँति एकान्त कमरु रहा था । उसक प्रवाह में व्यवधानहीन स्तम्भता थी । जल में तारे तक उठरे कम रहू बें । जैसे काला मोर हो । भागत चाड़े ने सरपट ही नाथे के बल की रीबा । माल में एकदम को आन्द्राम्न हो गया । जल अनेक में टूट बिसर । टूटा जल आपस में ही टकरावा जैसे खौठ उठा । तल में समी बाबू पहियों से फिर्किया उठी और परलो पार चाड़े के गीस गुरु, गीठे पहिये सूडी घूम में निघान बनाते तीर से निकल गये । बैजनाथ वाली पहाड़ियाँ आ गयी थीं । किसी भी बँस भी निर्बन स्थान तक की यह बिरोपटा हानी है कि उनकी एक मर्मी तथा मब होती है—ओ कि उसे जमल स पूमक करती है । बंगल में रात ब रात किसी सुगमान रास्ते बुरी पर किमी पाड़ी या भेड़ बकरी की गणघन्टी सुन पड़ने पर समग्रा है जैसे दीपक बल उठा हा । यह संभ या गर्मी हम स कहीं अधिक पालनू पदा पहचान लेने हैं । भागत चाड़े ने बैजनाथ की ओर स मंठी हवा में लडुने फूला कर एकबार ही बह संभ अनुभव की ।

बड़ा सा उजार पार कर जिस समय बें लींग मन्डिर में पहुँचे चारों ओर एकदम निर्बन घाम्ति थी । और तो और बहूपारी तक नहीँ थे इमन्तिर उनके टाग की बीब भी नहीँ थी । दोनों सीपे पाट तक गये । बहू भी निर्बन देख बें मन्डिर की तरफ बढ़े । सिबन्तिम के सामन दीप जल रहा था । दीप सब अंधेरे



में हुआ हुआ था। केवल नाके की 'लससल' के अतिरिक्त सब कृष्ण-मीन वा। हृदय मण्डप की रेखियों के पास आकर नारायण बाबू जैसे परस्य व्यक्ति की भाँति आ सके हुए। पेमेन नारायण बाबू की सारी मनस्थिति तथा परेसानी बूझ रहे थे। स्थिति बोलन से परे की थी। इतना परसया एकान्त था कि स्वयं का अनु-मन अपने की ही घूमरे के सामने होने पर ही हो पाता था। वे बोले—  
—तोऽऽ ?

नारायण बाबू का 'तो' अनक बाता की व्यंजना था। बिमर्से छीन्न की लोचने की सीमा थी भविष्य का अंधकार वा अनेक सम्बन्धित व्यक्तियों की अनिर्णयवात्मकता थी और सबसे अधिक तो श्रीधर बाबू के परिवार का रोता हुआ कल था जो यहाँ तो अभी ही आ गया था। मात्र के अँदरे में धूपबासा कल का दिन रोता हुआ उदित हो चुका था।

मामा कि बँजनाथ बाठे हुए उत्साह या सम्पूर्ण निश्चयात्मक विरवास नहीं था तब भी संभावना तो थी ही। तभी तो ठण्डे अँदरे कटपास हवा समी को भीरते बले भाये थे। लेकिन अब कौटने में क्या रह गया था ? वे श्रीधर-परिवार की उत्कण्ठा को क्या कहेंगे ? प्रतीक्षा करते श्रीधर क पिता-माता पत्नी-बच्चे इस समाचार को किस प्रकार सुनेंगे ? इसका क्या अर्थ किया जाएगा ? क्या अर्थ किया जाना चाहिए ? जैसा कि श्रीधर ने उस दिन कहा था यहीं बँजनाथ में कि नारायण बाबू ! दो पाँच हैं और पूरी पृथ्वी है। विवेकानन्द की भाँति मैं भी निकल जाऊँगा। वहाँ तक परिवार का प्रसन्न है उसके बारे में अधिक सोचना व्यर्थ है। श्रीधर की बात में उस दिन कितना असम्पुक्ता का निर्णय था और स्मृता है उसने अपने पाँच इस पृथ्वी पर विवेकानन्द की भाँति बढ़ा ही दिये।

रात काफी जा चुकी थी जिस समय नारायण बाबू पेमेन बाबू के साथ श्रीधर बाबी पहुँचे अँदरे काफ़ी था। बीबार पर एकमात्र मंत्री बिमर्सी बल रही थी। दरवाजे पर बाहट हुई और श्रीधर ठाकुर—'बच्छा !!' कह कर उठे। गरम बलवान मोड़ तथा परम कन्दोप पहुँचे दरवाजा खोला। पता नहीं क्यों पिता श्रीनाथ ठाकुर ने उत्सुकता नहीं दिखायी। नारायण बाबू से मात्र यही पूछा—  
—वे घाय में कौन है ? पेमेन बाबू ?

—जी हाँ।

पेमेन बाबू ने ममस्कार किया। दरवाजे की पतली गली सँभते हुए श्रीनाथ ठाकुर बोले

—नमूक कर जाना भाई, कच्छा-लच्छा घर है यह तो।

किसी का माहम बाजे करने का नहीं हो पा रहा था हाथीकि बोगवई पर आकर सब बैठ पये थे । उस अमघ मौन को तोड़त हुए नारायण बाबू बाबू

—अम्मा जी कहीं हैं ?

—जाती हैं ऊपर बहू के पास गयी हैं ।

—मब ठीक है न ?

—हाँ बेटा ठीक हो है । दूरा दिन हो पया बहू न एक दाना मुँह में कहा बाबा । पया नहीं का हाया । अरे माई, बाकाई भाशन नहीं है । चन्ना पया है कहीं पर आ जायगा । धबरजने की क्या बात है ? और धबरजने म क्या हागा है ? क्यों नारायण बाबू ! मकन कह रहा हूँ ?

धीनाथ ठाकुर का स्वयं मुतने पर नारायण बाबू का भी साहस हुआ बना । यही कहा मोब पा रहे थे कि कमे कहे ? क्या कह ? बाबू

—हाँ और क्या । भाव जाने वह बीबनाथ नहीं गया ।

—अरे मैं मब मममगा हूँ ।

तब तक मीठियों पर वीरों की आहू मुतायी वी तथा श्रीधर बाबू की मागा जी की आवाज भी—जैसे वे बहू से कहनी नीचे उतर रही हों—माई एमे कै दिन चन्ना ? तुम अपनी जान देने से क्यों मानी हो ?

सब ने देखा कि एक अँरेरो छापा मीठियाँ उतरनी आनी बोली

—कौन नारायण बाबू ?

—हाँ अम्मा जी !

—छिन्न की आवाज मुती थी । नहीं मिसा म वह हुट्ट ? मैं तो जानती थी ।

वह वहीं दूर निकल गया । ये तुम्हारे माब कौन हैं ? पेमेन बाबू हैं क्या ? पेमेन बाबू ने नमस्कार किया । श्रीधर की मागा जैन अपने में ही बुरी बोली रहीं ।

—कहीं बायो-आबो माई हुमें क्या ! ! लेकिन बम अपने ठीक से रहो तथा दूमरों की संगत म करो । अब यही श्रीधर कह कर जाता तो क्या बिगड भागा ? ठीक है बुरा तो लगना है लेकिन माई, न मही मा-जान तो ये नारायण बाबू से पेमेन बाबू से इन्हीं से पूछ-शाछ की होती उन का हाती । बेचारी बहू मज्नी हो रही है । न सोबा न बिचार कि बूडे मा-जान होते ही क्या हैं पीछे से बाक-बच्चों का क्या होगा ? माई ता जैन हैं बहू सब के सामने हैं । उनकी बला से आज मरे कल दूमरा दिन ! !

पया नहीं वे हम तरह जाने कब तक बोली जागी लेकिन पिता धीनाथ ठाकुर ने ठीक दिया

—अब तुम अपनी ही रामायण खोल कर बैठ गयी। किसी ओर की भी सुनोगी कि नहीं? हाँ नारायण बाबू! ता अब क्या हो? श्रीधर ने तो हमारे सब के सामन समस्या खड़ी कर दी। जाने कहाँ गया होगा?

—अनी एकदम तो मैं कुछ कह नहीं सकता कि श्रीधर कहाँ गया लेकिन वह किसी बड़ी जगह जाकर ही कोई नौबरी ढूँढ़ेगा। और संभवतः तब तक वह अपना बतापटा कुछ न दे।

उसी श्रीधर की माता जी बानी

—तो भैया अब एसी बात है तो कम से कम तुम ऊपर जाकर एक बार वह को समझा दो। शायद तुम्हारी बात समझ में आ जाए। न खाना न पीना, न रोना न बोना—बस अब बिगबी बँब गयी हो। भरे चिन्ता की क्या बात है? कहीं बका ही छो गया है वह जा जाएगा और हमारे रहते इस घर में किस बात की चिन्ता उसे?

और नारायण बाबू उठकर सीढ़ियाँ चढ़ते श्रीधर बाबू के कमरे की ओर चले। देवघत और सुसीमा सा गये थे लेकिन गृहबन्दी अपनी माँ के सिरहाने उबास बैठी हुई थी। एक चिमनी का आभूषण था। उस कमरे में ऐसा मौन था जैसे बहुत बौका गया हो और हठात बहुत बोझ जाना रुक गया हो। नारायण बाबू को देखकर गृहवती खड़ी हो गयी।

—काका भी जाय?

—हाँ बेटा कैसी हो?

—बिजी! छावनी वाल काका भी जाये है।

और सरो उठ गयी तथा झूँट के सिमा। उस उठने से घरभटे हुए रस्ती के झुके झुके पर बैठे हुए बोले

—वह सुना तुमने दिन भर से खाना बगरा न खाना न पिया। क्यों गृहबन्दी! माँ ने कुछ नहीं खाना-पिया न?

गृहबन्दी के दिन भर के उपासे मुह पर अजीब सौन्दर्यपूर्ण मुस्कान आ गयी। गृहबन्दी इकहरे बदन एबम् कृन्दन बर्न की थी। हँसते में उसके हाँठ बोड़े सम्भे पिचते। आँखों में अजीब बोपहरी का सा भाव लेकिन सम्पूर्ण मुह में एक ऐसा बिगड सौन्दर्य शककता था जो उस पौराणिक सुन्दरी की सी पवित्रता देता था। नारायण बाबू के प्रश्न पर हठात हँसी आ गयी और उसने अत्यन्त परिशुक्ति से माँ की ओर देखा जो कि झूँट किये थी। नारायण बाबू फिर बोले

—देखो वह तुम तो स्वयं श्रीधर से कहीं अधिक समझदार हो। आज वह खाना

गया है इससे क्या ? कल उस सौटना होगा तुम्हारे ही पास इन बच्चों के पास । किसी आनेश में उस कुछ बुरा लगा और वह गया है । हम सब जानते हैं कि वह लोफपट्ट नहीं है लेकिन जानती है । चायद इस ज्ञान में भी हम सब की अच्छाई की ही कोई बात हो । क्योंकि वह किसी भी रूप पर नहीं आएगा या कोई भी ऐसा काम कभी नहीं करेगा जो मोक्ष न हो । तुम इस तरह अन्न-अन्न छोड़ कर बैठोगी तो बापू-अम्मा का क्या होगा ? इन बच्चों की देखभाल कौन करेगा ? कल जब वह सौटपा और तुम्हें इस तरह अपरिग्रहा देवेगा तो क्या उस मुक्त होमा ? क्या वह खोरी करके गया है जो हम प्रायश्चित्त करें ? ठीक है उसे कह कर जाना चाहिए या लेकिन तुम तो खुद जानती हो कि कहकर जाने पर कोई आ सकता है ? या जाने दिया गया है ? अब वह आ चुका होगा है तब सब कहते हैं कि अगर कह कर जाता तो क्या हम रोक लेते ? यह सब मोह है ? श्रीधर निदान ही सत्कार्य पर गया है । हम चाहें या न जानें वह एक दिन निश्चय ही कोई ऐसा कार्य करके लौटेगा जिसके कारण हम सबको गर्व होगा । और फिर कोई एक दिन की बात तो नहीं है कि पल्लो भाई, दो दिन की बात है न साजो बुद्ध ही मना लो । कब तक मही साधोनी ? और तुम्हारे जाना न खाने से श्रीधर सौट जाने तो जरूर न सामो । तुम्हें हमारी राय है बहुत ! जो अपने को पास तो समझीं ?

सरो ने अपने वृषट में से ही मुनबती से कुछ कहा : मुण्डती बोली

—काका जी ! उम्मीन किसी को क्यों नहीं भेजते ?

नारायण बाबू हँस दिये ।

—सरो तो क्या तुम समझती हो कि उस लोबा न जाएगा ? लेकिन यह भी साब लना चाहिए सबको कि आश्रय हुए पुरुषार्थ को माहस नहीं रक्षना चाहिए । श्रीधर का पता जरूर ही लगाया जाएगा पर वह यहाँ सौट जाय और बापस इसी छापी अपह में पडा रू यह मैं नहीं चाहता । वह विद्वान है मुम सचिन्नी है । उसके किये बड़े काम हो सके हैं । जब वह एक बार छोटी अपह का साथ गया तब हम सबका कृत्य है कि उस नमवार न बनाएँ बस्कि बल हैं । कितने लोभा में ऐसा पुरवार्य आश्रय होगा है ? क्या पता एक दिन जमी के नाम तथा कामों के सहारे ही हम लोग भी जान जाएँ ? मैं स्वयं उसे छोड़ूँगा । यदि वह वास्तव में पुरुषार्थी होकर कार्य कर रहा होगा तब उस नहीं छोड़ूँगा बनी उसे तुम्हारे पास सौटा लानेगा यह मैं

विषयों विभाता हूँ। तुम्हारा कठम्य अब इन वर्षों तथा बापू-बम्मा के प्रति है अपने प्रति है। तुम इसे सीमात्म्य समझो कि तुम्हारा प्रति किसी बड़े उद्देश्य के लिए बना है। न वह सिरसतेबारी करने के लिए बना है न बाड़ा-बाण्टी। ये चमत्ता हूँ। ऐकित में अपनी बहू को बान्धव में सरम्भती बेचना चाहता हूँ। तुम तो स्वयं ज्ञान की देवी हो। तुम कमजोर हा बाम्भती तो इस कमजोर पर की महनीरें किसके कर्मा पर टूटी रहेंगी? तुम इन वर्षों की न केवल माँ ही हो बल्कि माँ से पिता भी हो। तो मैं चम्पू फिर माँझा। तुमने पर, परिवार को जिस सहनशील पृथ्वी की माँति सहा है सोना है उस तुम्हारे अमली जेठ-जेठानी न जाने मझुमें लेकिन छावनी वाले तुम्हारे बठ-जेठानी मलीमाँति बूमते ही नहीं है बल्कि ऐसी बहू को 'बहूमाँ' की माँति पूजते हैं।

नारायण बाबू सहागा झूले स उठ गये। पुनर्बती की ओर हँसते हुए निष्कृत जाये। सीड़ियाँ उतरने की आवाज आनी रही कि नारायण बाबू चले गये। और सरो दिन भर से जी घुटी पड़ रही थी हृद्यत रो उठी। नारायण बाबू उसके मर्म को झू मये थे। जैसे वे उस एक सहज नारी से उठाकर प्रतिमा बना मये कि जो अपना दुःखजीवी नहीं होती। प्रतिमा परपुनर्जीवी होती है। लेकिन अन्तर में नारायण बाबू के प्रति वह घातघा प्रचामबनी हो उठी कि छावनी में कोई जेठ-जेठानी है जो उनके खटने को सफल को न सफल बूमते हैं लेकिन पूजते हैं। एकबार ही तो वह छावनी जा सकी है आज तक। नारायण बाबू की पत्नी—  
भाभी जी की कितनी ममतामयी पाया था। नारायण बाबू जैसे उसके मन में उठनी संक-मुर्षकारों का निदान कर मये। मज ही यदि वे कह कर जाने तो क्या मैं या बापू या माँ ये बच्चे जाने देते? वह अपने में डूबी हुई थी —  
कल रात—

कल रात इमी समय वे यहाँ बैठे हुए थे। आज आज न जाने कहाँ है। समये-पैसे भी तो उनके पास कहाँ न? सामान भी तो कुछ नहीं के गये। क्या हुत्रा होया? कहाँ होये? क्या 'उम्हे' मान छो बापू-बम्मा मरो सुचबंती, मुषीला किनी की याद न आनी हो तो क्या बैबवत भी नहीं याद आया होया? कहते थे कि देवव्रत को किनी मुस्कल में भेज कर पढ़ाया जाएगा।

कल रात 'उम्हे' मुल पर कुछ था। कुछ उड़ा उड़ापन सा नहीं था? या न?? जैसे मेरी ही बात की स्वीकाराकित कर गये कि प्रत्येक बर्ष के जीवन में रामायण का बनबान प्रिय-बिरह सम्पन्न होता है। कहने लये कि पति पत्नी की बन्धि

परीक्षित करता ही है न ? मुझी से उस्ता प्रश्न किया । लेकिन क्या 'उमकी' बातों में कहीं सचाई नहीं थी कि राम ने सीता का जो अपमान किया था उसी के कारण वे पृथ्वी में समा गयीं और सरो ने अपनी ही जीन काट ली । वह अनायास ही कौनी अथवा की बात बुवबुवा बँठी थी । 'वे' जानी हैं । 'उम्हें' यह कहते सामा भी बेता है कि—सरो सीता को रावण ने नहीं राम ने पीड़ा पहुँचायी थी । लेकिन सरो तो जानी नहीं है न ? यदा तक नहीं कर सकती । कल शाम जैसे अनायास एक बगबास किसी ने स्वेच्छा से ले लिया । राम-बुद्ध की याथा कैसे निकल गयी ? अभी तो दिन भर कल मन अज्ञात ही में वृष्ठा-वृष्ठा सा था । जैसे कहीं कोई भारी कदमों को रखता हुआ अँधेरा-अँधेरा पल रहा हो । सीकरी की मजारों की वे आँवें जैसे मोमबतियाँ कौंस दिन भर दूर अतिथि के पास जलती हुई रानी रहीं । ठी—अगत्या 'वे' चल गये !! कहा कि बँजनाप जाना है । बाते समय हम सब सोठ ही रहे । हस्का खटका उनके जाने पर हुआ जकर या लेकिन क्या पता था कि वे अनेक दिनों के लिए अन्तिम था रहें । न होता तो चरण ही पत्तार करती ।

गुणवती इस बीच जा चुकी थी । नीचे सब भी बोलना नहीं आ रहा था । समबत-नारायण बाबू तथा पमेन बाबू जा चुके थे । बापु की बँगबई हील-हील बोल रही थी। एकदम निम्नस्वभा थी । गुणवती घासी में भोजन ले आयी । अजीब तरह से मन जाली होने पर भी मरत हुआ था । नारायण बाबू की बातों तथा गुणवती की आँवों के भीन अनुभव के सामने वह दो चार मन्स किसी तरह लाकर उठ गयी । गुणवती घासी लेकर चली गयी । अम्मा ने गुणवती का जाली बापस ल जाते देख पूछा

—कूछ जाला उसने ?

—हाँ अम्मा !

तभी बापु की 'हनि इच्छा' जोरों पर सुनायी थी तथा अम्मा का 'बोम नमो समबते बामुबबाय' तथा बँगबई क कहीं की जोरा ने 'चरमर' की आवाज । एक अघ्याय जैसे बड़े निनों में उपवास के उपरान्त बड़ी प्रतीक्षा के बाद पुरा हुआ ।

कल से समब है और दिनों की तरह की जित्यता सौट आय ।

सरो यन्त्रों से घिरी अज्ञात बँबरे में कहीं बस मये अपने पति के पद बिन्दुओं की सोमती रही और जैसे कहीं बह भी बची जा रही है—एसे ही लटे लटे ।

पहले ही कौन सुख वा सरा को जो अत्यन्त दुरा हा जाता । फिर भी बह अनाय को नहीं थी न ? कैसे ही भुप रहन वाले कीपर बाबू क्यों न रहे हों पति से । पति की एक छाया होती है जो बगवाने में ही पत्नी बास-बन्धों के लिए ऊपर ही ऊपर मौसमों के विभिन्न तापमान स्वयं लेक किया करती है । पति के पास में न रहने पर आकाश एकत्रम फिर ऊपर आ जाता है । साथी तपन सिमरपन सभी ठा सीधे-सीधे फिर मुगतता होता है ।

कीचर बाबू की उपस्थिति भाई-भौजाइयों के लिए सीमा तक ही स्वतंत्रता बेती थी । सास-ससुर को भी बह का पदा करने में सुविधा होती थी । यन्त्रों की उपेक्षा भी ताई बाबिवाँ घुप कर ही कर सकती थीं । लेकिन जब जैसे मरुत्यस में मान खेठ की रोपहरी ही तप रही थी । न कहीं छामायय वा न तपने का अन्त । जो वा बह इतना माय-माय वाला उबड़ापन वा कि न कबल वह बरन आत्मा भी तोड़ वे । यदि आप अपने वारिखय में न सही बरन तो घर तो पहले हुए होते हैं लेकिन सहसा भूकम्प वा बाएँ और बीबारें बह जाएँ तो तो क्या हो ? आप निपट न हा जाएँ ? परवयाजीबी कि हूँ कोई कुछ कह न वे । लेकिन लोग जब कुछ नहीं होता सब बहुत कुछ कह-सुन सेठे हैं हपेटी पर सरसों जमा सी जाती है अका जब सरेजाम मीका हो स्थिति हो और हा आपकी विवयता तो आप उस फेंके गये हड्डी के व्यर्थ दुकड़े होते हैं जिसमें कोई माँस नहीं होता फिर भी कृता है कि आपकी सार टपकाता कमी इस डाढ़ से कमी उस डाढ़ से बचाने में क्या है । जब तक आप जब नहीं उठते तब तक आपकी निवृत्ति नहीं । भले ही आप कुत्ते की डाढ़ का रक्त निकास कर अपने को रक्तमय कर लें । और जब कुत्ते की आग में से रक्त का स्वाद आने लगता है तब बह क्रिड गईं से आपका बूझकर फेंक देता है, एक विवेता की भाँति—कि बन्धु, आश्चर्यकार तुममें रक्त वा और उसे पीने बूझकर ही दम किया ।

प्रत्येक विवशता बन्नी हुई ही का टुकड़ा है। सरो भी यदि अपनी बेठानी श्रीमती सावित्री श्रीमाहन ठाकुर की बाँझों में बबामी जा रही थीं तो क्या लोकबिच्छ पा ? मस्ति यह सरो की ग्याती थी कि यह बेर तक बबामी जाने पर भी रक्त का स्वात् नहीं वे पा रही थी। सरो यह मूठ रही थी कि किसी ने भी अपने काम से त्याग से सामने वाले का सम्बन्ध नहीं किया है, मले ही स्वयं ऊँचा हो जाता हो यह व्यक्ति। जब काम करता हमारा व्यक्ति ऊँचा हो जाता है तो हम यह समझने की मूस करने समत है कि अब सामने बासा छोटा हो गया है जब कि यह तो चतना ही बना रहता है। अन्तर मात्र इतना हो जाता है कि आप उसकी बाँझों के लिए बहुत बडे कीर हो गये होते हैं उसकी पहुँच के नहीं रह जाते हैं। अब आप चाहें तो इसे सम्बन्ध होना कहें हृदय-परिवर्तन होना कहें या सह-अस्तित्व कहें कि वडा कीर और छोटी लूनी बाँझें एक साथ रह रहे हैं।



दिन पर दिन बीतते जा रहे थे। पति की तलाश में बाबू तथा मारामम बाबू दोनों उरईन तथा इन्वीर तक गये लेकिन बार-बार दिनों की तलाश के बाद निराशा झूट जाये। बोर्ड भीबर बाबू के इस प्रकार घर छोड़ जाने को कुछ भी कहे कि वे कल कलके का नाम डेबा करके ही एक दिन छोटेंवे लेकिन एक ही मखिय्य की बात आज कोई नहीं कह सकता कि कल वाप गया कर सकेने दूसरे जब बात इतनी साफ हो कि कामर की माँति नौकरी छोड़ भाग गये और अपने सिरसके चार माई के सिर पर पिता-माता पत्नी तथा तीन-तीन बच्चों का बोझ ढाब कर चले गये तो इस बात को जेठमी भीमती साबिबी देखी क्यों नहीं मूहसके-टोले में पाती फिरें कि—बहुना क्या करे, बस हम छोप तो सुट गये। पहले ही कामर कुछ बेता-बेता जा लेकिन अब ही बस पान पूरी मांसत में है। बिटिया कल्या की सगाई सुड़बामा चाहते थे वे बेबर महासाय पर, जगबाम ने भी कौरी सुनी कि और इसी तरह की अनेक बातें नाइन से ठीक मलबादे पान जवादे बोगहर में पढ़ीसिनों के आ जाने पर होने लगी।

—हाली बहम, तुमने क्या बताया, ये भीबर की बहु अब तुम जानी सिबाप कमी-

कमी जाना बना देने के कटी अँभुमी पर पेशाब नहीं करती। कमी कह दो कि बहम पर कट पया तो कहेमी—भामी भी अभी-बनी वेगाब करन जा रही हूँ। और जाने किन्तनी मम्मी-मम्मी बातों का रस पात की पीक के साथ भीमती साबिनी बेबी अपनी बैठक में बैठी हासी फूलकुंवर, जम्पा सरजू अजुष्या मया जादि स कहती-सुनती लिखलिखाती होती और उपर सरा तीसरे पहर बूस्ते के पास अबदुया पहले एक मोड़ के नीचे पानी का सोटा बाबे चारों की तरह खाना खा रही होती। दाँतो में सबेरे की बनी रोगी 'किस्स किस्स' करती सापी खा रही होती कि समक कर बिस्मिया तथा पायल बजाती जठानी बून में पागो डासने क बहाने आकर बेल जाती कि महारानी जी अभी खाना ही खा रही है? कपड़े कब धुलेंगे?—सरा जेठानी को देख कर काँप उठती जैस बिस्ती देख सी हा। एक रांटी खाकर ही उठ जाती। माँ सहेस्रमुखी होकर उस समय खाना खा रही हाँती कि उन्हें पानी के एक लाने से ही परितुष कर दिया जाता। सरा जाम्म बिस्मूत बनी दिन भर काम में धमी रहती। वह भी मनुष्य है सबसमुस्त नारा है—यह उस ठमी बच होठा अब सामुमाँ या तो बहु पुकारती या फिर बच्च उस 'जिजी' मन्बोवन करते। बिचोपकर जब किसी काम से सामन पड़ जाने और बहु बके अंगां तथा बुझे मन स पूषक एक सहज माँ क रूप में निहारती तो उसकी माँखों में तारे माचने लपते-जैसे पक्कर भा रह हों। सब घूमने लगता। जैसे दूर माँधियां बल रही हों वैसास की। चारों ओर बूझ-बककड़ हा गया है। बूळ के बगुळ घाल-गोल घूम रहे हैं और तज-तेज बल रह हैं।—किठिन में ऐसे बगुळ ही बगुळे लड़े हुए हैं। बचपन में जसादीन की कहानी वाला बिम भी तो ऐसे ही बगुळों में से निकला करता था। ऐसे ही किमी घूर्णार्त रासस का संहार इप्प ने किया था। बच्चों के पुकारने की आवाज में कहीं 'उनकी' भी बापी अनुगुंजित सपती और तब बेत होठा कि बहु भीगी पाती में ही दिन भर से है। बच्चों में हन्की सिहरल भा जाती। मन करता कि बहु भी दबघट को अपने सीने से सटा ले। बहु भी अपनी जेठानी की भाँति घूप में जटाई डाल कर अपने बच्चों स बिरी बैठी रहे। पान बहु भी खाना जानती भी बस्कि एन कि नजर लप जाए, लेकिन जाने दिन बेघ बी की दबाई खाने से फुर्मत मिसे तब न??

इतना कामकाज किसी मशीन की भी करना पड़ता तो बहु भी बीमार नहीं दूट भी जाती।

आज चार बरस से वह मायके नहीं जा सकी तब मला आराम कैसे मिल पाता ? चार बरस से अनवरत नित्य बारहोंमास सबेरे चार-पांच बजे से रात दस-ब्याह्र बजे तक कामकाज करते रहना पर कोई भी टूट सकता है । सरो टूटी नहीं यही क्या काम आश्चर्य की बात है ?—बीमार है तो क्या है । और फिर ऐसी क्या बीमारी है ? कोई मोठीमर निकला है ? जलोत्तर है क्या ? सन्निपात हुआ है ? क्या हुआ है ? कोई पूछे तो जरा इन महाराणी जी से ? कहती हैं रात की हल्का-हल्का वृक्षार हड्डियों में हो जाता है । सुन्ती हो बहना ! हड्डियों में बुलार ! ! हाय हाय भुवना बाई ऐसी नज्जल पर । इस बेहात में जैसे नज्जल की बेगम साहबा थाय गयीं वचारी । इलायची न छीलना डाली ! हमारी वनराणीजी की हड्डियों को जुकाम हो आया—हाँ ! ! बाप ने बेगम तो भेज ही रुफिन लीडिया और खबासिन क्यों रख ली ? तुम तो नज्जल की ही जमीदारिन हो बहना ! कष्ट वो न कोई खेर-बर—

—फर्से मकमल पे मेरे पाँव छिंके जाते हैं ।

—हाय माँ ! मर गयी मैं तो ।

—बिकोटी न काटो सरजू ! जरे उई-ई ! !

और बेठानी जी के वरवार में यही सब दोपहर मर होता रहता ।

रात और वह भी बपने से पके, हड्डियों में बुलारबास व्यक्ति की रात । पति अनकहे अज्ञात में चला गया ऐसी पत्नी की रात । जबमूखी पसलियोंवाले बन्धों से मिरौ माँ की रात—रात नहीं काबीलू होती है । जिसमें मात्र सुसम ही नहीं होती सब पेंठ पाता है । जैसे सर्व गठिया हो । एक मात्र व्यक्ति जो रखा होता है, जब नहीं नहीं होता—तब कुछ नहीं होता क्योंकि सब कुछ होने लगता है । और जब होने लगता है तब आप बिचल हो जाते हैं—हड्डी के टुकड़े ! ! सड़तीरों के रण्यों से हुआ और बादनी बाहर के जन्मुक्त अग्नि सौम्य की रेणमी रस्मियां ताम बेते हैं उस बँबेरे में जैसे चाँदी की बंशियां नीरव एकान्त गा रही हों—पोरा एकान्त ! ! मन उठी के पीछे मुग बन जाता है—नीस जाकाय होगा

ऊपर ही लुट्टी दिखाएँ होंगी। जिनकी कोई बेठानी नहीं हमीं जिनकी कोई निडरकी पशसिनें नहीं होंगी जो पीक घुबूती दूसरे की पाकी में छेद करती बैगी होंगी। बहूँ सोने के स्वर्गिक सेव की नति एकांत परिषार हागा। जिसमें तारों की बमक होगी। बहूँ भी अपने पति की बाँह पर सिर टक किची ऐस ही एकांत सब को चाहती है लेकिन उसे इसके ठीक विपरीत ही प्राप्त हुआ है और अब—मनन्त यनेष अन्धकार, अतिपश्य।

हृदियों के बुझार के अतिरिक्त निर तने सा तप उठवा है। पनक्तिमें में जैसे पारलपहट भूमती हुई पूरे मीम में बगुला बम जाती है और बहूँ लामकर उन घुक बेना चाहती है। लेकिन बहूँ अपने अन्दर में बीटे बगुल के इन विष का जानती है और बहूँ कहना चाहती है कि यह उसका गला घाट रहा है, उस अन्दर ही अन्दर ला रहा है उसका नाम है—सक्ति जिससे कह ?

सब तो सो रहे हैं !! इन अबोध बच्चों से क्या कह ? सामुं स ? बे बेचारी का ही क्या सफ़्टी है ? बापू मे ?—और बहूँ फीके होंस उठी। बाकी कौन है ? जो इसे सुन सकता था या जिसे सुनना ही पड़ता बहूँ तो दूर जान कहीं है। पचपहट होने लगती। सपन होने लगता कि क्या बहूँ 'उनक' जाने के पूर्व ही या अपने इन बच्चों को छोड़कर नहीं चली जाएगी ? तब गुनबती सुगीला देवबत का क्या होगा ? अममूले से मूले और मूले क बाद नहीं नहीं यह नहीं होया। और बहूँ छोटे बच्चों को अपने में समर सेती है।

हृदियों का बुझार, तपा मल्लम और प्रकापित मन—न बीतने वाली रात—लेकिन बिन सनी के लिए होना है। सरो के लिए रात जाहे हृदियों में कुछ लाने दिन तो काम ही ला सफ़्टा था। खवाई और विधाम नहीं।

जब से श्रीधर बाबू गये तब से धामूमों के अनिश्चित जेठानी ने कभी बात न की । जेठानी के बच्चे जब उस जैसे ही धूरते धूर-धूर में ताकझाक करते जैसे बहू भेहू तराती हूँ । काम-काज में कंकन बड़ोतरपी ही हुई हागी कमी तो नहीं ही । भूके से जेठानी कभी सुामने पड़ जाती तो जब दामन ही नहीं खालें भी पुराने कपी भी क्योंकि जेठानी जी मया महामाएय रच रही थी ।

भीमोहन ठाकुर तथा भीमती साबित्री बेबी अब सुस्मलुस्मा अलय हाने की घोषणाएँ बर्बाएँ करने लगे थे । भगोड़े माई के मिश्रले परिवार को वे सोच कर तक छिळा-पिळा सकते हैं ? हैं न ?? दो-चार-आठ दिन की बात हो तो बसो माई कोई बात नहीं । अब मान लो भीपर सींटे ही नहीं तो ? तो क्या उसके नाम-बच्चों का भी करना-बचना होगा ? बड़ी लड़की मुचबंती तो अबान हो ही मयी समझो । सुपीठा नी हा ही बाएमी । छन्की की बात बाइ की तरह

बहुनी है। कल को सब कहने लगेंगे कि श्रीमोहन बड़े हैं अब पानी-झाह भी करें। बाहू साहब—हुल्दर किनी की लुगई किनी की। बापू-अम्मा का बर्न हुआ है तो बं अपना सम्हालें। श्रीमोहन ता बहुत पहेल ही जानत ये कि श्रीपर आचारा है। घटे विवेकानन्द बनन चल हैं। पूह को बिदी क्या मिश्री बजाव बनन चला।

—करेंगे माम्नी और बो—क्यों रामकिशन ! क्या माम है उसका पपाटकन? या किरोपाटकन—बो नी हो श्रीपर हैं और बनने किरापाटकन ! हुं !

—अरे हाँ सिग्धेश्वर साहब ? कब तक कोई यह कर सकता है ? आदमी पर बाँधता है धर्मशास्त्र ता नहीं म ? अरे हाँ बा अमीन क्या हुई ?

—रामकिशन ! छावनी बामी बहू अमीन तो स ली है लेकिन

—अरे तो फिर, अब जिसम्ब बड़ि कारण कीजे राम बुझाय रामपर बीजे। और क्या ! ! भक्तमनसी में तो मारे बाइएमा भाप।

—हाँ क्याक भाजा है कि कल स काम यह न कहें कि नार्ड चला गया तो उसके बाल-बच्चे बाध हो गये ये इसलिये

—अरे बाहू साहब आम साल भर होने माया आधर का गये लेकिन न आपके मुँह से और न आपक घर में स ही किनी ने हम बारे में उक तक न की। श्रीपर न बच्चों को देखकर कारई कह सकता है कि इनका भाप माग क्या है ? सब काम आचरन करत हैं अनाब ! ऐसी बगियादिनी मिरखतशर साहब शिवाज रह तो इनके बाल-बच्चों का क्या हामा ? माक करे, कीर्तनिया भी यह बाध सीने स बाँध रहें ता समस में आता है कि हाँ नार्ड बेटे का परिवार है लेकिन भाप यह सब किमलिये कर रहें ? मैं पूछता हूँ साहब ! कि क्या श्रीपर आपस पूछकर नौकरो छाड़ने गय ये ? क्या बा दछकर पर म भागे हैं ? तब क्यों साहब ! भाप उनक बाल-बच्चों की और-बबर रखने बाक कीन होते हैं ? नहीं मैंने ता एक बाल कही। मेरा मतलब है कि जब ये हजरत गये हैं ता जरूर ही अपने बाल- बच्चा का इलाजाम भी कर गय हूँगे।

रामकिशन की बाज पर श्रीमोहन हँस दिये।

—दौग मा इलाजाम ? साध-बन लर्ब ता हूँ ही करना होता है। और भाप ता जानते ही हैं कि मैं ता ऊपर की कोई आनखनी बनाता नहीं।

—अर अब यह भी आपकी बजाया हामा ?

—उब बनाया किम तरह गाड़ी खिचती हांगी ?

—तभी तो कहता हूँ कि क्या यह गाड़ी खींचने का ठेका लिया है आपने ? अरे आप भी बिना बकसकस में पड़े हैं ? भगवान का नाम लेकर नीच दुदवाइए और तीन महीने में धानखार बँगला न काड़ा हो जाए तो मेरा नाम बदल दीजिएगा । गफूर को ठेका दे दीजिए । सठ नकमल की हबेली इती में समझी है ।

—बो तिमबली ?

—जी हाँ हबेली क्या है बाबू है । मजूर नहीं टहरती ।

—लेकिन बा गोपाल ठेकेदार कैसा है ?

—अरे उस बोसी के बापदादों से कमी मकान बनाये हों तो बो बनाएगा । गायें नैसँ पाळे और बूध बेचे । पुर्तनी काम करे । मकान बनाएगा बो ? बामने घर का खार । उस सीका-मोरी पाळे मारवाड़ी का मकान बनाया है उसने देखा मही आपने ? जैसे डब्ला बना दिया हा । रो रहा या यह मारवाड़ी कि बीच हजार भी मग गये और ।

यमियों में कान्ता का विवाह पड़ा और वह भी उसके मामा ने नहीं माना इस  
 लिए मनिहाल में ही विवाह होगा। कान्ता के इस विवाह के बारे में नती श्रीमोहन  
 ने ही और न उसकी बहू ने हा किमी ने भी न बापू से न अम्मा से कोई भी  
 चर्चा नहीं की। एक माह पूर्व ही श्रीमोहन की बहू अपने बच्चों को लेकर मायक  
 चली गयी। बाते समय भी श्रीमती साबित्री ने सरो से कोई बात करनी जरूरी  
 नहीं समझी जब कि सरो पिछले तीन महिनों से यामी और बुखार से पीड़ित  
 रहने लगी थी। रात्र रात्र का दुखार ही जाता लेकिन गृहस्त्री संबंधी उसकी  
 निश्चया तथा शायित्तों में कोई परिवर्तन नहीं था।

सरो को कमी-कमी अपने पर आश्रय हुआ कि वह क्या से क्या हो गयी थी।  
 उसके माता-पिता ने जो पिछा दी थी वह उनके किमी काम नहीं आ रही थी।  
 विवाह के बाद जिस प्रकार की महिलाओं से काम पड़ा उस तरह ही किसी महिला  
 का उसने कमी नहीं देना था। प्रायेणर पिता ने आदमबादी मानावरण में पावन  
 किया था जब कि समुदाय में जठानी था कि मज से मिल तक औरत थी स  
 पाका पड़ा था। वह अत्यन्त सतृप्तनील मानी जाती रही है जब कि अब कमी



कमी वह बच्चों पर बरस पड़ती है। जिस दिन जेठानी तथा उनके बच्चे जाने वाले थे पता नहीं किस बात पर देवप्रत और जेठानी के बच्चों में झगड़ा हो गया और जेठानी ने साथ बर सिर पर उठा लिया।

—हमारी ही रोटियाँ खाकर हमारे ही बच्चों को मारा जाएगा ? हम तरह-तरीके जाते हैं कि बसो कोई बात नहीं लेकिन अब यह मौखत आ गयी ?

ग्राम को पठि क जाने पर सारी बातें रो-राकर पत्नी ने पठि का सुमायी तो बीच आगम में देवप्रत को बुलाकर धीमाहन ने दो चाँदें लगाये और बाँधे

—सबरदार, जो अब बच्चों पर हम उठाया तो टाँग तोड़ूँगा।  
अम्मा टुकुर-टुकुर देखती रही लेकिन किसी का साहस नहीं हुआ कि कुछ कह सके। जब कि जेठानी के बच्चों ने ही उस्टे देवप्रत की कमीज फाड़ दी थी तथा पीटा था। उस दिन रात में धीमोहन ने बापु से साफ सच्यों में कह दिया कि अब वे धीवर के मासायक बच्चों के साथ अपने बच्चों को नहीं रान सकते। क्योंकि छावनी में धीमोहन के बँगसे की नीब डाली जा चुकी थी।

जेठानी मायके गयीं तो तीन महीने में लौटी। काल्ता के विवाह में बापु तक नहीं गये। धीयस्सभ को धीमोहन ने नहीं बालाबाला बुसबा किया था। अम्मा को हम बात का बहुत बुरा लगा कि एक बार भी बहू ने मन रखने के ह्यास से भी काल्ता के विवाह की बात उनके सामने नहीं बसायी। धीमाव ठाकुर ने मुँह पर ऐसा कोई भाव तक नहीं आने दिया कि वे कितने आहत एवम अपमानित हुए क्योंकि काल्ता उनकी पोटी थी और उसका विवाह उसके मनिहाक में हो सकित ।

पठ जब वे लौटे और अपनी पत्नी से देवप्रत क पीटे जाने की बात सुनी तो वे क्रिभित उबल पड़े। जैसे उबल पड़ना उनका स्वभाव नहीं था। धीमोहन ने

तथा विशेषकर उसकी बहू ने हम बार की प्रतिष्ठा को जो धूल में मिलाया था उससे बे आहत हुए थे लेकिन मुंह स कहना नहीं चाहते थे । जब वेदव्रत के पीटे पाने की बात सुनी तो उनकी पत्नी पहले तो सकपकायीं लेकिन पहली बार पुनः की भाँति उन्हें आचरण करते बैठकर कही प्रसन्न भी हुई ।

श्रीनाथ ठाकुर "विष्णु सहस्रनाम" का पाठ समूरा ही छोड़कर गाव तकिये के सहारे तन मये बोले

—मैं आज सासु घर से देख रहा हूँ कि जब से धीपण गया है यह नाशायक श्रीमोहन रोज एक न एक बखेडा किना करता है । यह समझता है कि हम सबको यह अपनी सिरस्तेदारी से पासता-मोसता है । मैं तरह बैठा हूँ कि सड़का है लेकिन—

और ममिया की उस आबीराउ के झुके अँदरे में जब कि चारों ओर सुनगान हो गया था उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि इतने बड़े सड़के के लिए क्या कहा जाए ? और जिस तरह वह मनमाने ढंग से मरान बनबा रहा है अपनी सड़की का ब्याह अपनी सपुराण में कर रहा है बिना अपने परिवार वालों से पूछे-ठाछे इसका तो स्पष्ट ही है कि वह किसी को कुछ नहीं समझता । ऐसी स्थिति में उससे कुछ कहा जाए और वह उलटकर यदि जबाब दे बैठे ऐसा कि आपको कुछ कर दे तो क्या होया ? उसकी पत्नी से मैं कोई कुछ नहीं कह सकता है क्योंकि श्रीमोहन का ऐसा बनाने में उसी का हाथ है । यह मुँहजोर भी है और पमण्डी भी । उसने अपनी साम तक से कास्ता के ब्याह की कोई जर्बा करना उचित नहीं समझा । मला ऐसी स्त्री स कोई क्या कह सकता है ? आज सरो मझीनों से सुवार में पड़ी हुई है लेकिन श्रीमोहन की बहू को बर्ष नहीं होता कि कभी उसका हाथ बँटा दे । दिन भर पान साने से ही फुसत नहीं उसे । अडो-मियाँ-मझीमियाँ स एक की बा सगाने से छुट्टी मिल तक न बेबीजी कुछ करें ? अपने को जमींदारिन समझने लगी है । सुना है मैकेवासों को कोई आम का बनीया सरीय कर दिया गया है । मरे हम लोगों को दिखाने के लिए कह दिया कि उन लोगों को अकरत भी उन्हें करीबबा दिया गया है । अच्छा तो वो तीन गाँवों की जमींदारी जो चुपके-चुपके लरीरी गयी है वह किसके लिए है ? बेटा म तुम्हारा बाप हूँ तुम नहीं समझे ??

लेकिन आज माराम होने से क्या साम ? और हम सारी पड़बड़ी के कारण क्या बे स्वर्ण नहीं हैं ? उन्होंने क्या गुरू स सारे बच्चों की यतिबिधि नहीं बली थी ? श्रीमोहन की बहू को यदि कड़कर गुरू में ही बरज दिया गया होता तो उसकी यह हिम्मत हुई होती कि वह उनकी पाती क ब्याह में उन्हें धूप की मण्डी की

माँगि अलग कर दे ? क्या उन्हें उनकी पत्नी से गाहे-बगाहे नहीं बताया है कि थीबर की बहू ही बराबर बटती रही है और थीमाहन ने या उसकी बहू से कमी हाव तक नहीं बँटाया । छोटा थीबस्लम तो परिवार की शंभटों से हमसा ही दूर रहा । उन छोर्गोंकी आँवों के सामने कंचन सी सरा ठीकरा हाँ गयी थी । आज जबकि उसका पति एक बरम से जाने कहीं पसा गया है तथा उसकी भीमारी भी बेद्य थी कहू रह के कि असाध्य है ऐसी स्थिति में यदि कहीं कुछ हो गया तो क्या हागा ?

पति थीनाथ ठाकुर ने दला कि उनकी पत्नी उसी बौगबाई पर आ गयी है और बीसे उन्हें पढ़ रही हैं । थीबर क कमरे से बहू का साँघना जोरों पर आ रहा था । समस्त पुणबती ही थी जा कह रही थी

—जिजी ! पानी पियागी ? छाती में क्या मल वू ?

—नहीं रे तू सो जा । तू क्यों जाय यमी ?

—जिजी !

—क्या है रे ?

—बाबा कम आएँगे जिजी ?

उसके बाद थीनाथ ठाकुर और उनकी पत्नी को किञ्चित सुबुझने के लीर कुछ नहीं सुनायी पढ़ रहा था । वे अबाके परस्पर दखते हुए बिबध थे । चारों ओर सप्ताटा था । गर्मियों की रात सबसी जँपेरी थी । माँगल में काफी स्पष्ट सग रहा था । पत्नी वाम्नी

—आखिर यह थीबर कहीं चला गया ?

—ओ कहीं नहीं गये है उन्होंने ही तुम्हें कौन सिक्की पहना रखी है ?

—बहु इन घाना स भिन्न है ।

—तुम्ही ने सब का सिर पड़ा रजा है ।

—बचटा अच्छा आपस तो कमी नहीं कहा कि सिरपड़ों का बोझ सग रहा है परा बँटा सो ।

—किन भूँह स कहनीं ? बहु ने वो कौड़ी की इग्जत करके मिला ली वूछ में ।

—अपनी समहाकिए । दुनिया ता आप पर हँस रही है कि कीर्तनिया जी की पोली अपने पतिहाल में क्याही जा रही है ।

—मैं ता समझता था कि तुन सास हो ।

—ता मैं भी तो आपको समुर समझती थी ।

—सकिन मैं औरताँ के मामले में क्या बोझता ?

- बहु तो मान लो दूसरे के घर से आई थी लेकिन बेटा तो आपका अपना ही था उस क्यों नहीं फटकारा ?
- इतना बड़ा बेटा मछल फटकार सुन सकता है ?
- तो मछल मिरप्यशर की पत्नी हम-आपकी बात सुन सकती है ?
- ठीक है, धीमोहन असंग हो जाए तो रोज-रोज की सप्त मिट ।
- नहीं यह नहीं हांगा । जब तक मैं बैठी हूँ घर का घंटबारा नहीं हो सकता ।
- लेकिन तुम्हारे कहने से कहने की जरूरत किसे है ? उसका तो अंधवी फसन का मकान छावनी में बन रहा है ।
- धीमोहन तो मुझसे कह रहा था कि उसका किराये पर उठाएगा ।
- जस कहा और तुमने मान लिया है न ?
- हाँ और क्या ? ?
- जानती हो वो कितना बड़ा रिक्वतखोर है ?
- रिक्वतखार !! मरत धीमोहन ?? क्या कहत हो ?
- हाँ हाँ तुम्हारा धीमाहन रिक्वतखोर है । उसने रिक्वत से बस हजार रुपये देदा किये है ।

पत्नी पति की बात का कैम बि-वास ? लेकिन पति पुत्र के लिए भविष्य नीय बात क्यों कहन लग्य ? उन्हें धीमाहन से निवृत्त्या हाने लगी । मायही कहीं चिन्ता भी हुई कि किसी नुमीबत में न पड़ जाए । धीमोहन रिक्वतखार है ? तभी ता जाये कि यह आम का बगाना खरीदा वो जमींदारी बेंचा वा नम्बर दारी से ली करता फिरता है । अब तो छावनी में 'नयी चिन्ता' का मकान भी बनबा रहा है । तभी उनक मन में एक वाग कौंधी कि पायल यह कास्ता को लूब सारा वहन बना चारुता हांगा । यही रह फर करता ता परिवार-बापों को ओलों में भी खाता सपा हमरे खोंगों की नजर जाती । इसी रिक्वत क बस पर ही मुना अपने जमाई का बाफ्टरी पड़ान गलफऊ भेजने वाला है धीमाहन । राम-राम कैसी गिदन हा गयी है इन लड़कें की । परबासा से परी किये है । मत्वा पिता भाग सब पराये हों मये अब दुगक पिण ? अब तो बस पत्नी नमुराक वास ही सग रह गय है । उसकी बहु का बस बस ता बहु हम सब मोमां से पूरे मुहल्ल की झाड़ू निकसबा कर छाड़ ।

—आपका कैसे मामूम कि यह रिक्वत खटा है ।

—रिक्वतखारी में तुम्हारे बट ने बड़ी दूर-दूर तक नाम कमाया है । बग समसती हा उस ?

मार्ति अलग कर दे ? क्या उन्हें उनकी पत्नी न गाह-बगाहे नहीं बताया है कि श्रीमर की यह ही बराबर पट्टी रही है और श्रीमाहन ने मा उसकी यह ने कमी हाप तक नहीं बढ़ाया । छोटा धीबल्लम तो परिवार की ससतों से हमेसा ही बुर रहा । उन लोगोंकी खाँसों के सामने कबन सी सरो ठीकरा हा गयी थी । आज जबकि उसका पति एक वरस से जाने कहाँ चला गया है तथा उसकी बीमारी भी बेच भी कह रहा है कि बसाध्य है, ऐसी स्थिति में यदि कहीं कुछ हो गया तो क्या होगा ?

पति श्रीनाथ ठाकुर ने देखा कि उनकी पत्नी उठी बैंगबर्द पर आ गयी है और जैसे उठे पड़ रही है । श्रीमर न कमर से बहू का पाँसना जोरां पर आ रहा था । समभवत गुनबती ही थी जा कह रही थी

—बिबी ! पानी पियायी ? छाती में दबा मल डू ?

—गहीं रे तू सो जा । तू क्यों जाग गयी ?

—बिबी !

—क्या है रे ?

—बाबा कब आएंगे बिबी ?

उसने बाव श्रीनाथ ठाकुर और उनकी पत्नी को किञ्चित सुबुक्ने के और कुछ नहीं सुनायी पड़ रहा था । वे अबाध परस्पर दगले हुए विषय थे । चारों ओर सन्नाटा था । गमियों की रात उजकी अंधेरी थी । आँगन में काफी स्पष्ट लय रहा था । पत्नी बोली

—आखिर यह श्रीमर कहाँ चला गया ?

—ओ नहीं नहीं मये है उन्होंने ही तुम्हें कौन सिक्की पहना रखी है ?

—यह इन दानों से सिद्ध है ।

—तुम्ही ने सब का सिर चढ़ा रखा है ।

—बच्छा बच्छा आपसे तो कमी नहीं कहा कि सिरचढ़ों का बोस सग रहा है बरद बँटा था ।

—किम मुँह से कहती ? यह ने दो कौड़ी की इज्जत करके मिसा भी बूल में ।

—जपनी सम्हालिए । दुनिया तो आप पर हँस रही है कि कीर्तनिया जी की पोती अपने सनिहास में ध्याही जा रही है ।

—मैं तो समझता था कि तुम मास हो ।

—तो मैं भी तो आपको समुर समझती थी ।

—अबिन मैं मीरतां क मामले में क्या बोझटा ?

—बहु तो मान लो हमारे क घर स आइ भी सकिन बेटा ता आपका अपना ही था उसे क्यों नहीं फटकारा ?

—इतना बड़ा बंटा मट्टा फटकार मुन सकता है ?

—तो नसा मिरखेणर की पत्नी हम-आपकी बात मुन सकती है ?

—ठीक है श्रीमाहन खल्ल हो जाए तो राम-नेत्र की ससट मिने ।

—नहीं यह नहीं हागा । अब तक मैं वैठी हूँ पर का बँटबाय महा हा सकता ।

—केकिन तुम्हारे कहने न कहने की जरूरत किन है ? उसका ता अयेसी पयन का मकान छावनी में बन रहा है ।

—श्रीमाहन ता मुझस कह रहा था कि उसका निरासे पर उठाएगा ।

—उसने कहा थीर तुम्हने माग लिना है न ?

—हाँ और क्या ??

—जावती हा, बा कितना बड़ा रिश्तनछार है ?

—रिश्तनछार ?? मरा श्रीमाहन ? क्या कहूँ हो ?

—हाँ हाँ तुम्हारा श्रीमाहन रिश्तनछार है । जमने रिश्तन म दन हुआर अपने वैदा निय है ।

पत्नी पतिका बात को सैन बिश्वास ? केकिन पति पुत्र क लिए जकि-वस भीय बात बना कहत सभे ?—हूँ श्रीमाहनस विनृप्यत हान रुपी । माप ही नहीं पिता भी हुई कि किनी मुनीवग में न पड़ जाए । श्रीमाहन रिश्तनछार है ? अभी ता माये निग महुआम का बगीचा खरीना वा खमीदारी बेंची बा नम्बर दारी क सी बगता दिरगा है । अब ता छावनी में 'मयी निम्नान' का नकान जो बनबा रहा है । तना उनक मन में एक बात कीपी कि गापद वह जान्या का भुस सारा दहक दना बाह्या हागा । जहाँ रह कर करता ता परिधान बाधा की भीला में भी भाडा सया हमरे सामा की गजग जाती । इमी रिश्तन क दल पर हो मुता रूपने बमार्द का बावनी पढ़ाने ननखड मजने बाधा है श्रीमाहन । उन-राम कीया नियत ही गजा है दम लड़क की । बर बाधा स दग किने है । माता पिता माँ सब पराये हा । सब अब हमक किन ? अब तो हम पत्नी मनुराज बापे ही सब रह गन है । उसकी यह का बन बन तो यह हम सब सामों स पूरे मुहलक की झाड़ू निकालबा का छोन ।

—आपका कैम मामुम नि बहु रिश्तन मेठा है ।

—रिश्तनवारी में तुम्हारे बर म बड़ी दूर-दूर तक नाम कमाना है । क्या नमसत्री हो जम ?

- जैसे तुम्हारा ता बह पुत्रमन है न ?
- कस्से में जिधर निकल जाता हूँ भोग उसकी प्रसंघा' करते नहीं पकट। बड़े पुष्पात्मा का जन्म दिया है तुमने।
- आज आपको क्या हो गया है ?
- मुझे बड़ा दुःख है श्रीवर की माँ। कि म आज तक अपनी माँओं पर फगी बाँधे कैसे सब देखता रहा ? आज जब पट्टी हटाकर देखता हूँ तो तीनों सड़के मेरी माँओं से कहीं दूर चल गये हैं। बड़े ने मेरे जीवन की सारी कमाई, प्रतिष्ठा पर पानी फेर लिया क्योंकि उसे अपने लिए प्रतिष्ठा बन घनी तो अर्जित करना था। अपनी प्रगति में बह परिवारवालों को बाधा पाता है, इसलिये बह सबके प्रति निर्मम हो गया है। दूसरा श्रीवर, बिल्कुल मरी तरह। सहनशील बित्तम लेकिन सोचापार से अन्ध। मर्दावा में दोनों पति-पत्नी टूट जानेवाले लेकिन एक एक न करने वाले। और बह श्रीवल्लभ अपनी सास की अँगुलियों पर नाचने वाला व्यक्ति वहाँ-मुक्त-समृद्धि के साधन दिखे उसी ओर बह कर चला जानेवाला पत्नी का रेखा। श्रीवर की माँ। तीनों अपने-अपने तरीके से पराये हैं। इसी दिन के लिए घर की मे चार वीबारें लड़ी की थी कि इनकी नींव में छेद कर ये तीनों पानी के रेसे चले जाएँ ? एक हमें अपमानित कर गया है, दूसरा हम से दुखी होकर गया है और तीसरा ऐसे गया—माँओं उसे गोद लिया था और जब हमें छोड़ गया हो। पत्नी ने पहली बार बोला कि दिन भर घर से दूर मन्दिर में अपरस में रहनेवाले पति ने कितने सतर्क होकर सब सहा है। बह समझती थी कि मन्दिर, पूजा के अलावा 'इनके' लिए घर-गृहस्त्री कड़के-वाले कठ हैं ही नहीं। जैसे उसी ने बाया है और जब वही भुगतो भी। लेकिन इस बोला बह देख रही थी कि संभवतः पति कहीं अधिक दुखी मर्दाहृत पीड़ित उपेक्षित जाने क्या-क्या हुए हैं। सवा रूप रहने वाला व्यक्ति रैर रात में जाने वाला गृहस्वामी भी बितना चौकल होता है अपने ही हाड़-माँस से उत्पन्न प्रजा के बारे में यह बह आज समझ रही थी। क्या ही अच्छा होता कि यदि ये इस तरह देखते रहने के साथ-साथ कहीं बागडोर बामे रहत तो आज बह तीन-ठेरह की नींवत तो न आती।
- आज यह घर क्या बीसा ही नहीं लग रहा था जैसे कि किसी पत्नी में डेर सात पानी काफ़ी रैर एक निरर्थक लौकाया जाता रहा हो और भी मर हो गयी हा पत्नी भी धौककर उड़ गया ही तथा पत्नी में भूरी-भूरी उदास सकेरी ही नेप रह गयी ही। इतना करना खुन्दे पर पड़ना सब ही ती निरर्थक हो गया था।

सरो बीमार है। साकिगराम बैद्यजी बाने थे। अ्यबनप्राय बसन्त-मास्त्री लौह-  
 मसम जाने क्या-क्या तो दाह्य में जाने के लिए बठा जाते हैं। गुणबंती बंटे-बंटे  
 भर में एक न एक बवाई लेकर सिर पर सड़ी हा जाती है। बीबर बाबू मने  
 उसके बाद ही गमियों में गुणवती का पढ़ना बन्द हो गया। सङ्कल्प्या का स्कूल  
 बीसे तक ही है और वह बीसा पास कर चुकी है। सरा चाहती थी कि पति से  
 कहकर वह गुणबंती को अपने माता-पिता के पास सौरों भेज देवी ताकि वहाँ  
 पढ़-लिख जाएगी। लेकिन अब वह किससे कहे और सौरों की किस मुँह से भेजे ?  
 सुधीला स्कूल जाती है, दूसरे में है। जबसे गुणवती ने पढ़ना छोड़ा है बिचारी  
 अपनी माँ की बीमारी के कारण दिन भर काम में लगी रहती है। और फिर  
 सरा की तकियत भी तो साल भर से ही ज्यादा खराब रहने लगी है। गुणवती  
 भी कंधी बुबला गयी है अब। बड़ों की उमर है जबरकम्बी भी निकलगी पर  
 हाथ पैर कैसे सीक पीछे हा मने हैं। पायब अब वह सब समझने लगी है। बारह  
 की हो रही है न ? सब समझती है कि उसकी माँ के नाम ताईजी बिमने क्रूर  
 है। ताईजी की बान्ता गुणवती से तीन बार महीने ही तो बड़ी होगी। काई



देते ता कहे कि बिस्तता अन्तर है दोनों में । कास्ता जैसे सोबली है संभवत रूप रम भी गुणवंती की तरह नहीं है । लेकिन हमसे क्या ? गुणवंती तो एकदम पीछी-पीछी बेंसी खालों की उदास बीज-बोक उठने वाली हो गयी है । कुछ काम का बहो तो पता नहीं कहाँ रहनी है कि एक बार में कमी नहीं मुनती । सुनती भी है तो भूख जाती है ।

—क्या आपने कुछ मीगा था ?

—अभी तो तुमसे कहा था कि पानी दे जा और तूने कहा था कि छाती हूँ ।

—मूर्ख मयी अभी छाती हूँ ।

मम्मा कोई पूछे कि हम उमर में यह हास है ता सनुराम में क्या हागा ? सरो अपना बेटा के इस तरह बड़ने का मौन होकर घिर मुकामे देख रही है सबरे स रात तक । लेकिन क्या कर सकती है ?

—गुणवंती ! जा तू पास-मड़ोस में ही हो जा मन बहुत जाएगा ।

—बीबी ! काम में मन बहुलता है कि ठल्मठल्मका करने में ?

धीर बह सीपियों जैसे सपेद बाँटों की बसीती में हँस देती है, लेकिन सरा के मन पर आरी चकती है ।

आजकल जैसे दान्ति है सरो को गुणवंती को और संभवत सभी को । क्योंकि भीमोहन का परिवार अभी खाला नहीं है । सौट माने पर सभी की साँस तो है ही लेकिन जाने क्यों गुणवंती काँप-काँप उठती है । आज चार दिन स उसेकी जिजी ने खाट पकड़ ली है । रोज की तरह सबेरे उस दिन भी ठंडे पानी स ने महापी और घाम होते-होते ता सरा के दाँत बजने लये । गुणवंती हाथ पकड़ कर अबरन बिस्तरे पर बिटा मयी और दोनों भाई-बहिनों को टाकीर कर गयी कि जिजी की तबियत ठीक नहीं है, और न हो । अम्मा से भी कह दिया कि जिजी की तबियत ठीक नहीं है । अम्मा जाकर बहू के सिरछाने बैठ गयीं । गुणवंती ने घर सम्हाला । पर महेजठै धेर किठनी समयी क्योंकि खटपटा करने वाला कोई नहीं था । चाई मा उनके बच्च होते तो मजाक था कि गुणवंती इस तरह

सबको बस्ती-जस्ती लिखा-पिटाकर डाँका-दूँकी कर पाती । उस अच्छा सगा कि यदि ऐसे में बाबा मा जाएँ और अपनी गुणवती को काम करते देखें तो किन्ने प्रमत्त हों कि—अरे बाहू, हमारी गुणवती अब इतनी बढ़ी हो गयी कि सारी गृहम्बी सम्हालने लगी है ??

पत एक बरस में ही गुणवती सहमा ऐसी बनी अगने लगी जैसे वह नहीं छपी हुई थी । रात-रात भर अपनी माँ के सिरहाने बठी वह बिड़की की राह जाने लगी होती है । सरो बुखार में तपती जाती है अथवा सतिथ हुए हाँफने लगती जाती है । बीप के मन्द आसोक में बुझते हुए माँ के मुख को अब वह सहसा समझने लगी है । बाबा का गर्मीर मुक्त स्मरण हो आता है । कहाँ होंगे वे ? क्यों पले म्ये वे ? घर में कोई इस बारे में बातें नहीं करता । प्रायः ताई पड़ोसियों से चिरी बजीब तरीक से बाबा के बारे में बातें किया करती थीं । जा अच्छी नहीं होती थीं । वह जानती है कि ताई और ताऊ को छोड़कर और सब बाबा की प्रशंसा ही करते हैं । पता नहीं क्यों ताई-ताऊ न कबल बाबा से बल्कि हम सबको छूी आँखों नहीं देख पाते हैं । जिजी कितनी काम में बसी रहती है । बीना-बूझा कपड़ा-साहू घर का कौन सा काम है जा उन्हें नहीं करना पड़ता है जब कि ताई को लोगों की बुराई, पान चुगली तथा समझा इनसे ही फुगत नहीं मिलती । हम लोगों को वे कैसे दुल्कारती रहती हैं । कभी मूक स भी उनकी कोई चीज छू लो तो कैसे मालें तरेरती हैं । बाबा तो किसी स कुछ नहीं कहते प अकिन बापू और अम्मा इन लोगों स क्यों नहीं कुछ कहते ? मुना ताऊ जी बहुत बड़े भावमी हैं सुबात में—सिरछेदार ! ! क्या सिरछेदार बहुत बड़ा भावमी होगा है? होता ही हापा लभी ता ताई जी के लिए आये दिन कैसे-कैसे जेवर बनत रहते हैं । मुना कान्ठा बीदी के ब्याह क लिए भी कूब सारे गहने बनाये गये हैं । उसने कूर मुना है जब ताई जी किसी को इस बारे में बता रही थीं । कूब सारे जेवर पहनकर बीदी कैसे लगेगी ? पहले ता कान्ठा बीदी कितना चाहती थीं क्या अब भी चाहती होंगी ? अपने ब्याह में तो बुलाया नहीं ? और कुसी बिड़की की राह हस्की सरो आकाश में भी गुणवती जाने किन-किन दिशाम्बनों में खोपी हुई मोती ।

—खोपी नहीं गुणवती तू ?

—जिजी ! नींद नहीं आ रही है ।

—बेटा बहुत थक गयी होगी । क्या करके २, ३ मीं मारो हूँ तुम्हें सारा काम करना पड़ता है ।

—तो क्या हुआ ?

गुणवंती ने देखा कि माँ अपनी डूबी-डबी आँवा से उसके मुँह को नींद लाय रही थी ।

—गुणवंती !

—जिजी ! क्या सिर दुख रहा है ?

—न हो बेटा अपने बाबा की पुस्तकों में सही कमी कुछ पढ़ लिया कर ।

—तुम अच्छी हो जाना जिजी ! तो फिर सब पढ़ सुँगी ।

—कितना चाहती थी कि वे लौट आने तो तुम्हें सौरीं भज देनी ।

—माँजी जी कितना खुलाती हैं सबको है न जिजी ?

—हाँ २, अच्छा अब तो सो जा सबेरे वे काम जाएँगे तो बहुत काम बढ़ जाएगा ।

—कौन आ जाएँगे ?

—धरी टाई जी और कौन ?

और गुणवंती ने देखा कि जिजी को लौंघी का दौरा पड़ गया ।

जिजी किसी तरह मुँह फेर सा गयीं लेकिन गुणवंती सो न सकी । टाई की क्रोध मरी आँखें आधी रात के उस अँधेरे में उभर आयीं । बड़ डर मयी । और जब वह उसे ही चुन्हे के पास अर्धन मौनत हुए, माइ-बहाब करते हुए, उन कुर आँखों का सामना करना होया । बाबा रे टाई तो एकदम बराबनी बिस्मी हैं या कि झपट्टा मारने के लिए हौंछे-हौंछे जमीन पर अपनी पूँछ हिंसा रखी हों और नीसी मरती आँखें किसी भाइँ से बस रही हों ।

दूसरे दिन सबेरे धीमोहन का परिवार, कान्हा का विवाह सम्पन्न कर लौट आया । धीमोहन ने जब देखा कि न माँ न बापू कोई भी विवाह के बारे में कुछ

भी जानन को उत्सुक नहीं है। तब उन्होंने तथा उनके परिवार ने एक क्षण को यह प्रार्थना नहीं होने दिया कि वे बिबाह करके वडे दिना वात् छोटे हैं। वस्त्र घबडा यही लगा कि उसे किसी पिकनिक पर सचेर गये वे और शाम लौट आये हैं। तब भस्मा पूछ-ताछ की कैसी औपचारिकता? श्रीमोहन की पत्नी सावित्री को जब मालूम हुआ कि सरो बहुत बीमार है तो उसने अत्यन्त सहजता से काम की महत्ता पर जार-जोर से मापन दे बासा कि काम न करने से व्यक्ति बीमार हो जाता है और इसके बाद यात्रा की बकाय तथा सिर दद के कारण वे आइ कर सा गयी।

पूछे के पास बैठी गुणवती आदेश की प्रतीक्षा में अपनी माता की भाँति बूटों में सिर दबाये बैठी रही कि क्या बनाया जाएगा? इस बीच दस बज गया। श्रीमोहन को कचहरी जाना था। जब खाने के लिए रात्रीपर में पहुँचे और खाना न बना बला तो आगवयूसा हो मये। पति की बकसुक सुन पत्नी ने गुणवती का बाड़े हाथों किया कि मुफ्त का का-आकर भैस होती जा रही है, काम का धरा भी पकर नहीं। कमी माँ बाप ने काम किया हो तो बच्चा को भी काम करना बाये। वो राटिया का जब सहारा नहीं इन लोगों का तो फिर क्या फायदा इन मुस्टुओं को पालने-पालने से?

और श्रीमती सावित्री देखी जी ने गुणवती को इतने जोरा से पूछे के पास से धक्का मारकर उठाया कि बेचारी के हाम की हड्डी उतरने से बची। वे बड़ बढ़ाती जा रही थीं और जोरों से रात्रीपर के घर्तन उख-पटक करती जा रही थीं। गुणवती कानों में कड़ी डरी कबूतरों का सहमी हुई थी। न उनसे राते बन रहा था और न भागत। तमी माँ दरबाने के पास विस्तसायी दी।

—बस गुनी! अब क्यों लगी है यहाँ?

श्रीमती सावित्री न सास को गुणवती को से जाते देखा तो मभूका ययी।

—माँ जानती हूँ इन कमबख्तों को आपने ही राह दे रखी है वना इन टकड़ुओं की यह मजाल जो

—बस बहू अबान सम्हाल कर बात करना।

—वना क्या कर लेंगी माप?

और सास की बात का सावित्री ने उत्तर दिया तथा ठज मुस्ये में भाँले ठररत हुए फूँक उठी। फिर बोयो

—बोलिए, बाकिए, कह क्यों नहीं देती कि जूतियों से पिटवा देंगी है न?

हे ममबाप अरन ही पर में पिटवा ही तो बाकी रह गया था।

धीमे से ऊपर दरवाजे के पास सिर बाम ओंठों में डबी सड़ी है। वे दरवाजा फटते मिरने से बच रही थी। गुणबंती छगमग चिस्कायी

—माँ ! जिन्दी

और गुणबंती बीने स ऊपर भायी। पीछे माँ भी चरुने का उठी।

रोज की तरह जब पति मन्दिर से वापस लौटे तो नित्य पाठ-गूजन भोजन आदि समाप्त कर बेंगबई पर छटने ही जा रहे थे कि पत्नी ने टाका। जैसे छतनी बेर तक पत्नी को जब अबोसा पाया उठी उन्हें हूँका सन्नेह हुमा जा कि अबतस कुछ बात हुई है। भोजन करते समय भी गुणबंती की सूजी उदास मीन आँखों तथा घर की अजीब निसुह चुप्पी से वे निःसन्नेह आसक्ति हुए थे। पत्नी ने ही सम्भवतः मात्र सूचना दे दी थी कि श्रीमोहन सपरिवार सौत्र आया है। जब वे भोजन कर रहे थे तब अनायास रात्रीघर की चौखट के पार सड़े होकर श्रीमोहन ने सड़े उने इंग स दो-चार ब्यावहारिक बातें ही की थीं। यह भी तो उन्हें अजीब ही लगा था कि श्रीमोहन उनसे उनकी बैठक या बेंगबई वाली जगह न मिलकर यहाँ मिलने आया। जब पूछा कि भोजन बसैरा कर किया तब भी उसने उस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। पिता भीनाथ ठाकुर का कमी यह स्वभाव ही नहीं रहा है कि वे अपनी ओर से खोद कर पूछें। सदा बसक भाव से ही क्या घर, क्या बाहर सभी जगह रहते आये हैं। कमी उन्हें निजासा नहीं हुई। इसलिए उनक सम्पूर्ण व्यक्तिगत आचरण सभी में आबेमहीन पामित या असंयमान ही रहता है। इसका यह भी अर्थ नहीं था कि वे कुछ समझते नहीं थे या उन्हें सब कुछ बिदित नहीं था। बल्कि वे मन ही मन समझ गये थे कि यका सड़का श्रीमोहन चिन्ती प्रकार अपने परिवार की संकुचित सीमा छोड़ कौटुम्बिक दृष्टिकोण से नहीं सोच सकेगा। छोटे सड़के भीवस्त्रम ने बड़ी भतुराई से कौटुम्बिकता से अपने को लजमग पूषक कर ही किया था। खेप श्रीघर ने उनके लिए तथा बाकी सभी के लिए समस्या उत्पन्न कर ही थी थी।

जब श्रीमोहन दो-चार उड़ी-उड़ी सी बातें कर गया तो पिता भीनाथ ठाकुर की समझ में आ गया कि भीमाहन कामता के विवाह से संबंधित कोई बात नहीं करना चाहता और न ही घर-गृहस्त्री के बारे में कोई बात करने को सीमार है। गुणबंती से उसकी जिन्दी क स्वास्थ्य आदि के बारे में पूछकर वे भीमारे में निरुत्तर

आये जहाँ कि बेंबर्द थी। पत्नी गायद माछा फेर चुकी थी और सामे की तैयारी में थी। वे समझ गये कि आज बबदय ही कुछ हुआ है। पर का बातावरण कसे हुए तबल की भाँति लग रहा था। बस कूने भर की देरी थी कि अभी सब कुछ एक साथ ही एकवारही ही बस उठेगा। और मन्ना उनके बीसा शान्तिप्रिय ब्यक्ति इतना बड़ा दायित्व (संकटपूर्व) बँग उठान का तत्पर हुला ?

वे रात्र की भाँति बेंबर्द को झुमा दे ठकिये के महारे अभी सटे ही थे कि पत्नी ने गहरी उसाँस लेकर—हे ठाकुर जी महागज !! कहा। पारों ओर इस समय निस्तब्ध था जैसे डूबा। कबक थीपर क कमर में उपकी बहू की खानी की आशय स कभी-कभी माग सोया बातावरण डूबा-डूबा सा जाग उठा व्यथा। पत्नी ने उसाँस लेकर ठाकुर जी का स्मरण जिस ढंग स किया था—मका स्पष्ट संकेत था कि वे अभी सारी नहीं हैं। यही तो समय होना है जब वे आपस में कुछ बाल पाठे हैं। इन्हीं बेकामों में भाँते कर बकबा क बिबाह सेन-नन जमीन आपदाद हिमाब-किताब होते आये हैं। जाने कितनी बाने मुक्त-मुक्त की भण्ठी बुरी मपनी परायी होती आयो हैं और वे दो स जात्र इतने बड़ कुदुम्ब में फक-फूल हुए हैं।

—क्या सा गयी थीपर की माँ ?

—भाजन हो गया ?

—हाँ। बहू की ठकियत कैसी है ?

—बसी ही है। अरे हाँ श्रीमाहन आ गया है, मिसा नहीं ?

—मिल किया।

—कहाँ ?

—रात्रीपर में।

पति इसी दुल्हरी एग को तो टाकना चाह रहे थे जबकि पत्नी उनी एग को बरा बर छू रही थी। बोसी

—क्या कहा ?

—कहना क्या आ पया है बम !!

पत्नी को लप मया कि पति इस संबंध में बालें करल को उघन नहीं हैं जब कि वे तो भरै बीठी थीं। जिस प्रकार साबिभी का पल सकर उमका पति उनम लड़ने आया था और सभी तरह स उनका अपमान कर गया था क्या उनके पति का यम नहीं है कि उनकी तरह स वे भी उन दोनों का इति करकारे ?

—आज आपके सपने का साना घाम से अलग बना है और अब अलग ही बना करेगा ।

—हूँ !!

—हूँ क्या ??

—यही कि उनकी रमोई अब अलग बनेगी ।

—अफिम मेरे खूब यह नहीं हो सकेगा ।

—तुम यह भी तो कहती थीं कि तुम्हारे खूबे कोई अलग नहीं रहेगा ।  
सिरस्तेगर साहब का वैभवा जो बन रहा है छावनी में ।

—निक है जब अपन बैंगल में चले जाएँ तो जो मर्जी में जाये मो करें ।

—बसो तो तुमने इतनी बड़ी बात मान ली तो फिर इसमें क्या है ? गुड़ साँपे  
गुलगुले से परखेव करेते ? हापी मसे ही निकल जाए मगर उसकी पूँठ नहीं  
निकलने देते है न ?

ऐसा प्रायः हुआ है कि अरपन्त रानीर मौकों पर पति श्रीनाथ टाकुर बैंगुलियों  
के अतिम पोगों तक बिनोबी हो जाया करते हैं । जाने कहीं से उनमें व्यंग्य फूट  
जाता है और बेचारी पत्नी को भुगतना पड़ता है । आज उन्हें पति से आधा भी  
कि वे माराज हो उठेंगे श्रीमोहन को जाड़े हाथों लेंपे सेकिन ऐसा सब कुछ नहीं  
हुआ । वे समक उठीं बोलीं

—आपको और तो कोई मिस्रता नहीं कि किसी से कुछ कह सकें । से-नेकर मैं  
ही हूँ तो सही-गस्रत सुना लीबिए जो मर्जी जाये । अपने दिव में मलाक म  
खूने दीबिएमा समाधे ? चाह कड़के हों या पति सुमना तो हूँ ही है ।

—झाह करके कड़वा कौटा है क्या-क्या बच्छा सुमने को मिला ? बच हम भी  
तो मुर्ते । कहा होगा कि बिच घान से घायत आमी किस घान से काम्ता  
के माना-मागा सोबों ने स्वापत-सत्कार किया बान बहेब सिया-दिया गया ।  
जरे हाँ तुमको कुछ पौड़ी के बिबाह की पेरारानी (बपड़े-सते) आयी कि नहीं ?

—यह आपको कमी-कमी क्या ही जाता है ?

पत्नी समझ गयी कि पति इसी प्रकार भीने-भीने कहे की भाँति सुरुबते हैं और  
फिर खान पकड़ते हैं । भापी रात के इतने गहम में बैंगलई के कड़ों की हीपी-  
हीपी सी आवाज तथा बुदबुदाते हुए पति-पत्नी जाने क्या-क्या बातें करते रहे ।  
समकत पत्नी को इतना आस्वासन अबदय हो गया कि पति सचमच ही नहीं  
बहुत मरमाहित हुए हैं, श्रीमोहन को सेकर, कागता के बिबाह को सेकर, बड़ी बहू  
साबिर्बा के ओछेपन को सेकर, तथा सरो की बीमारी को सेकर ।

पत्नी पूछती ही रही कि उनकी क्या प्रक्रिया है लेकिन वे आवेश में फुँके अपमानित अनुभव करते अँबेरा बुरसे तिर पीछे हाथ गुँबे गाब ठनिमे के सहारे सटे रह ।

श्रीमोहन परिवार का जाना-मीना सचमुच ही अछग होते सया या और उस पर किसी भी प्रकार की कोई बहस या कानापूसी तक नहीं हुई । एक प्रकार से श्रीमोहन ने खेप कूटुम्ब से अपना परिवार पूबक कर लिया था । अब वे घर के प्रमुख द्वार से कमी ही जाते-जाते दिखते । घर के पीछे की ओर जो बाड़ा था उभर ही स उम्हेंलि अपना जाना-जाना शुरू कर दिया था । पिता तक ने कमी भूखर एकबार भी श्रीमोहन से यह नहीं पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया ? इस उपेक्षा से श्रीमोहन तथा उसकी पत्नी साबिनी कहीं मर्माहत हुए वे । माँ को तो वे दोनों एक तरह से अपमानित कर चुके थे इसलिये माँ से यह आधा करनी ब्यर्ष की कि वे इस बारे में कुछ पूछेंगी । अब तीन चार दिन बीत गये और उस दिन रात्रीपर के बाद से पिता को बेदास तक नहीं तो उम्हें इतनी उपेक्षा अपमान जनक ही सगी । उनका छावनी बासा बँपसा सगमग बन कर तैयार हो गया था । वे शीघ्र ही वहाँ चले जाना चाहते थे । एक प्रकार से घर में पहले ही अलग होने की यह स्थिति पति-पत्नी की पूर्व तियाजित ही थी । लेकिन दोना को यह आधा नहीं थी कि इतनी आसानी से ऐसा हो जाएगा । यह ठा बन्कि अपमान ही कहा जाएगा । दलों का खयाल था कि पिता-माता बाधा देंगे तब श्रीमोहन अपनी बिबसाया जतझाएंगे श्रीघर का निरुत्पापन त्रिघाएँमे तथा सरो और उनक बन्धों क बोध को बहन न कर सफने की अरामता त्रिघापी बागगी और इमी प्रसंग के बीच छावनीबाडे मकान की चर्चा भी हो जाएगी । हालाँकि सबको मालूम था कि श्रीमोहन ने मकान बनवाया है लेकिन न तो कमी पिता ने ही पूछा और न पुत्र ने ही इन बारे में कोई चर्चा की । श्रीमोहन का सम्बन्ध अपने कूटुम्बी जनों से खिपता ही जला गया । एक के बाद एक इन तरह घटनाएँ घटती चला गयी । अब यदि वे पिता या माता को ही सुनात सगेँ ठा उनका कुछ भी मूँह



नहीं रह जाता। कान्ता के विवाह के बारे में वे बिल्कुल सहमत नहीं थे कि वह उम्मीद से हा सेकिन साबित्री ने अपने पति की एक न करने की और तो और उसने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि धीमोहन के परिवार की खोर स कोई न गया। धीमोहन का यह तो ऐन मौके पर धीमोहन ने किसी प्रकार बुझवा लिया। साबित्री ने अपने ससुराल बासों को हवा तक नहीं आने की कि लड़की के लिए क्या-क्या खेबर बने है तथा क्या-क्या दिया जा रहा है। धीमोहन ने झूठ ही पिता से कहा था कि जो अमराई और जमींदारी खरीबी है वह उसकी ससुराल बासों के लिए ही। वस्तु साबित्री ने विवाह के बाद उनकी कान्ता के नाम रजिस्ट्री करवा दी। धीमोहन के पास अब कोई मुँह नहीं रह गया था कि वे पिता से आँसू मिटाकर बातें कर सकें फिर भी पिता की इतनी चूपी उन्हें गिरा ठिरस्वार ही लगी। स्वयं साबित्री को कम रहा था कि यह तो बड़ा भारी अपमान है कि किसी ने भी बरा नहीं मनाया। वह अपमान स पीड़ित नहीं थी वस्तु फुँक उठी थी।

—बेसो मेरी बात काग खोलकर सन सो।

—क्या बात है ?

धीमोहन अभी कचहरी से सौटे ही थे।

—मैं यह बर छोड़ने के पहले यह चाहती हूँ कि हम लोगों का सारा हिमाय-किताब साफ हो जाना चाहिए।

—क्या मतलब ? तुम अछगोसा करवाना चाहती हो ?

—जो भी समझो। मैं इतनी पागल नहीं हूँ कि यहाँ से जाऊँ और पीछे स अपना सारा हिस्सा ला रूँ।

—बेसो तुम में यही बुरी आशय है कि तुम किसी भी बात के पीछे पड़ जाती हो। तुम्हारे कहने ब आज ठक काम करता था रहा हूँ उसी का नतीजा यह है कि मैं अपने घर में ही परबेसी हो गया हूँ।

—तो फिर जामो अपने भाई-बन्धों से ही जाकर बीठो। किसने तुम्हारा हाथ बामा है ? मैं तो तुम्हारी दुस्मन हूँ न ठनी तो तुम्हारे बाल-बन्धों के लिए जमींदारी खरीदवाती फिरती हूँ भकान बनवाती फिरती हूँ। बाँट दो सब अपने भाइयों को। किसने तुम्हारा हाथ पकड़ा है ?

—तुम नहीं जानती कि कान्ता का विवाह उम्मीद में कर हम लोगों ने जितनी बड़ी मुठ की है।

—तो किसने मना किया था ? कोई एक पैस की मदद नहीं करता यहाँ। उस्टे

जाने को समी हो जाने । एक ता बेचारे बाबू जी और मैया ने इतनी बीड़ भूप करके मारी की उम पर अहसान मानना ता दूर रखा उष् आप मातृव को भी नाराजगी ही है । उन बेचारों के तो हाम करते हाव ही बने ।

—माबिबी ! ज्यादती तुम करती हो और उस मानने को मैया भी नहीं होगी हा ।

—मैं क्या ज्यादती करती हूं सुनूँ ता ?

—बेचारी सरो की उद्विगड खराब है तो उस कड़वा स पर भग का खाना कैसे बन सकता है ? तुम्हें हा हाव बँटाना चाहिए वा ।

—सरो ने किये इतना ही दर है तो रख दो एकदम मोकरानी ? अरे जिस दिन हम साम नहीं होंगे हम पर मैं इन सोमा का रोठिया के साथे न पड जाएँ ता मेरा नाम बदल देना । मैं लाग हूँ किम फेर में ? बड़े माँ-बाप बनने हैं एक बार भी ता कहने नहीं आये कि तुम लाग क्यों मरुई बनाने लगे हो बोको अब ! देख लिया न ? क्योंकि अब पैसा उड़ाने को उनक हाम में नहीं मिम्ता तो किम बात का मीठा रखा ? कास्ता क अ्याह के वारे में बचा करण हेठी हो जाती ? सच क्या इतनी बीमार है कि बचकर यहाँ आकर मुझम कष्टपूछताछ नहीं कर सकती बी ? अपनी कड़को की तरफ न कड़ने तो मा गयी पी ?

—अच्छा भाई सारी दुनिया खराब है और तुम नहीं हो । बस अब तो ।

—बेको जी मुझे नहीं मालूम वा कि तुम्हें इतना बुरा लगा बीडा है दिल में । मुझे क्या करता । जो मर्जी आये करो । बार में मुझसे कुछ मत कहना । मैं कस ही बाबू पी क पाम बली बाड़ेंगी । अम्मा न किता रोचना बाह्य कि इतनी जस्दी क्या है, सो-भार बाठ दिन और दक जाता ।

—तो अभी तुम्हारा बहाँ से पैर नहीं मरा वा ?

—मेरे बाबू जी-अम्मा सरीले माँ-बाप आपका मिम्ते तो आप समझ जात कि माता-पिता किसे कहत हैं ।

—मच्छा अच्छा जरा खाना-जाना जस्दी जिला दो ता योग्य छाबनी तक हा भाई ।

—किता काम बाकी है अब ?

—कमरों का फर्न ता तैयार हो गया । सिर्फ बारगमरों का बाकी है ।

—नब तो मैं समझती हूँ कि पत्रह दिन में एकदम तैयार हो आया ।

—ठीक है इतनी जस्दी क्या है ?

—अरे बाह जस्दी क्यों न हो ? मैं हम अपमान के बाग पड़ी नर भी नहीं टहर सकती ।

—तुम तो हर बात की माँस बाँप लेती हा ।

- सिरस्टेनार साहब! तभी काम भी होता है। अगर तुम्हारे कहने से पसंदी तो बमाने भरन मल्लोंको लिखाते-दिखात तन पर एक बपड़ा नहीं होता।
- तो तुम्ही क्यों नहीं मेरी तरफ से बपहरी नी हो आया करती ?
- बही मेरा कहना नहीं मानते हो तभी तो घर नी फादले काते हो।  
बरे ही बह किशनचन्द सेठ का मामला क्या हुआ ?
- मकान किशनचन्द सेठ के पास गिरबी बा। उसमें होना क्या है ? मकान उस बर्जों को मिलेगा।
- आज वो किशनचन्द सेठ की बहू आयी थी। बड़ी रो-मीन रही थी बेचारी।
- फिर तुमने कुछ गड़बड़ी की है क्या ?
- कैसी गड़बड़ी ?
- देखो तुम सरकारी मामलों में मत पड़ा करो। तुम लोगों से से किया करती हो और मेरी मूसीबत हा जाती है।
- मैं तो मना करती रही। अब तुम्हीं वापस करना देना। मई मूझसे तो किसी का दुन्द नहीं देखा जाया। वह यह हार द गयी है।
- कैसा हार ?
- और साबित्री उठकर भीतर गयी और एक हार निकाल कर ले आयी।
- देखो साबित्री ! किसी दिन तुम्हारी इस आदत से मेरा मुँह काला हो जाएगा।
- तभी ता कहती हूँ भाई कि इसे सेठ किशनचन्द को वापस करना हो। मेरा तो कहना माना नहीं उसकी बहू ने।
- साबित्री ! तुम नहीं जानती कि सोन मुझे रिस्वतदोर ममसने समे हैं। तुम्हारे ही कहने से यह छाबनी वाली अगह मुझे रिस्वत में सेनी पड़ी।
- मैं तुम्हारे हाथ आइती हूँ। मुझसे तब किसी बात के बारे में मत पूछा करो। मैं तो भाई बही सक्काई बूंगी को बुनिया देती है। सभी अपना घर मरने की सोचते हैं। तुम कोई बुनिया से स्यारे तो हो नहीं।
- दास्ता को इतना बेबर बड़ाया गया तो क्या बहू लोगों ने फानाफूसी नहीं की होनी ?
- रहने दो। हमारे बरबासे तुम्हारे यहाँ के लोगों की तरह ओछे मन के नहीं हैं समझे ? दिया भी ता कैसे लुके हाथों और लुके दिस से बा मार नहीं है ?
- ककिन अब इस हार का क्या हाया ?
- कहो तो वापस कर लूँगी।
- सेठ किशनचन्द का तो उस मकान पर कोई हक ही नहीं है।

- यही तो वह भी कह रही थी सकल बेचारों को उस मकान की बड़ी जरूरत है ।
- मच्छा ॥
- अरे तो इतने परेशान क्यों होठ हो ? बासानी से हो जाए तो उनका माम्य न हो तो उनका माम्य ।
- जसक में तुम बाग्यी नहीं यह सेठ बड़ा पायी है । न होगा ता बदनाम कर देगा ।
- क्या कह कहगा कि हमें हार लिया था ? कल ही इसे बाबू जी के पास रवाना कर दूंगी तो किसी को कानोजान सबर ही नहीं होगी कि
- मच्छा तो फिर मैं छाकनी आना चाह रहा था ।
- यह मकान बस्ती छ बन जाता तो कान्ता सीधे नहीं आती ।
- नहीं भाई कान्ता ब्याह के बाद पहली बार आ रही है उस यहीं माग दो । उसके बाद ही मकान बदला जाएगा ।

कुई दिनों तक साजते रहने के बाद भी श्रीमाहल की समझ में नहीं आ रहा था किस प्रकार पिता को बतारें कि उसने मकान बनवाया है तथा कान्ता आने वाली है । माग को मकान वाली बात सम्प्रति और टाल दी जाए तो वह किस प्रकार कान्ता क जाने की बात बसाए ? माग को पिता ने कोई भाव नहीं प्रकट किया तो क्या हागा ? क्या उन तिरस्कार, अपमान को वह सह सेंगे ? माग को वह सह नी सेंगे तो क्या साबिबी सहेगी ? और अगर कही के पूछ बैठे कि अब विवाह पूछ कर नहीं किया तो फिर इस बारे में पूछने की क्या जरूरत है ? तब क्या बबाब दिया जाएगा ?

इस असमजसता में दिन बीतते चल गये और कान्ता कम जाने वाली थी

है। कुछ तो कर्तव्यवश तथा कुछ मजबूत में वे पिता के पास पहुँचे। पिता ने श्रीमोहन के आगमन पर कोई आश्चर्य प्रसन्नता उत्साह कुछ भी प्रकट नहीं किया। वे तिस्र नियमादि स त्रिबुत हो भोजन कर सोने की तैयारी में थे। माँ का बिस्तर खामी पड़ा था।

—माँ वहीं गयी है ?

—उपर वट्ट के पास है।

—क्या वट्ट की तबियत ज्यादा खराब है ?

पिता ने कोई उत्तर नहीं दिया। श्रीमोहन किञ्चित् हताश हुआ।

—बापू ! वो जाने की तकलीफ़ के कारण मरना रसाई का प्रबन्ध किया गया ?

—हाँ कोई बात नहीं। अच्छे तो हो न तुम लोग ? और तो सब ठीक है न ?

श्रीमोहन को लगा पिता को मेवकर कोई बात कर पाना कठिन ही है।

—बापू ! वो कान्ता

—हाँ सुना। कान्ता का क्या बच्चा हुआ न ? उसी ठीक हुआ। क्या इती इती रात तक जागते रहते हो ? खूबी सोना चाहिए नुम लोगों को। कबहूरी में भी तो दिन भर काम करना पड़ता है। और वट्ट भी अकेली होनी उबर।

श्रीमोहन समझ गये कि पिता बहुत माराज है और कोई बात नहीं करना चाहते हैं। पिता के चरित्र का यह नया ही रूप उन्हें पठ दिनों में देखने को मिला कि वे चाहें तो न कबल असम्पूक्त ही हो सकते हैं बल्कि सामने बाल के दिवस में कम बोलकर मय भी उत्पन्न कर सकते हैं। बचपन में जिस पिता की जैतुनी पकड़ कर 'मन्दिर जी' जाया करते थे तब से लेकर इस समय सामने अर्द्धसेटे पिता में किन्ना बड़ा परिवर्तन कम रहा था वैसे पहचान में नहीं आ रहे हों।

—बापू ! वो कान्ता

—हाँ क्या हुआ कान्ता का ? सब ठीक है न ?

—मसल में कुछ आ रही है।

—बड़ा अच्छा है। ठाकुर भी सब अच्छा करेंगे। 'हि नाच मारायण बानुदेव'। और उन्हें नीब मरी बड़ी सी जेमाई भायी और उसने साप ही चुटकियाँ 'बजायीं'। श्रीमोहन इनप्रम परतंत्रित से उठ कड़े हुए। उन्हें लगा कि पिता ने उन्हें पैरस स मात ही है। जीवन में इतने विषम वे पहले कभी नहीं हुए थे। पिता ने किन्ने कटार हककर उनके साप व्यवहार किया था। वे पिता से इतनी कठोरता की अपेक्षा कभी नहीं करते थे। वे बापू को कहीं न कहीं अपेक्षाइत बहुत सीधा समझते थे। वही सीधापन एकदम दृढ़ की भाँति उनके अस्तस में गुन गया

बा और बर्ष द रहा था—बमह्य बर्ष ।। ये तो पिता से क्या कहत?? स्पष्ट था कि रोप कट्टम्ब ने दीवारहीन एक दीवार एमी खींच ला थी उठा मी थी कि जिसकी अपेक्षा कोई मी भी दीवार अच्छी ही होती । दीवार हाने पर छपता है कि दीवार है । सबको दिखती है कि दीवार है । लेकिन न हाने पर उस दीवार के स्थिर क्रियम क्या कहा जाए ? सब हाते हैं सब में दीवार तिची होती है । एक सामनबाक की दीवार आपके स्थिर अनेघ हो जाएगी कुछ नहीं कहा जा सकता । दीवार अनेघ तभी होती है जब अन्तर में तिची हानी है । ऐसी दीवारों का आभास हमें तभी होता है जब स्थान स्थिति परिस्थिति नितान्त साष्ठी-जामी मये कोई उत्तर न पाये । हमें चम्पते हुए या बाध करते हुए एक साथ ये ज्ञान ही बाने कमें कि जम हुए पानी की गहराई में आप चल रहे हैं आधीरात की छी दोपहर विचर्न हाकर आपको मुन रही हा—तब हमें मान लेना चाहिए कि स्थान स्थिति या परिस्थिति अब मात्र दीवारें हैं । एमी दीवारें जा मुंपी है अन्धी हैं बहरी हैं । जिहू अब नहीं तोड़ा जा सकता है क्या ऐसी दीवारें मात्र उठती हैं खिचती हैं—दृष्टी नहीं है, बहरी नहीं है । क्योंकि ये दीवारें सम्बन्ध दृष्टने पर ही उठनी हैं । जरा सी भी नाचना रोप हो तो ये दीवारें नहीं बन पाती हैं । तब ऐसे में कोई क्या कर सकता है ? धीर जब यीमोहन के मन में तो बहुत पहल ही ऐसी दीवार उठ चुकी थी तब आज पिता के मन में भी दीवार दखकर मात्र विचर्न होना के और क्या पय था ?

कान्ता जा गयी ।

कान्ता को उसका छोटा मामा लेकर आया था । पिता भीमाय ठाकुर ने अपने पुरुष के साथ दरबार का व्यवहार किया था लेकिन कान्ता तो आलिरवार उनकी पत्नी थी और उसमें उसका क्या दोष ? कान्ता की माता में यह दोष है कि वह एक की बो लगाती फिरती है । ठीक है लड़की कच्चाह में भीमाहन और सावित्री में उन्हें तथा कुटुम्ब को अपमानित किया था लेकिन इसमें बेचारी लड़की का क्या दोष ? और फिर सभी जानते हैं कि कान्ता कितनी मिलनसार हैसमुत्त स्वभाव की है । जब यहाँ थी तो गुमबती को तो सभी बहिन से भी ज्यादा मानती रखी है । अपनी काशी माँ को अपनी सगी माँ से कम चाहे ही मानती रखी है ? केवल कान्ता ही तो एक ऐसी रखी है जो दिनभर हँसना खेसना और खाना किया करती थी । बड़ा हाँ या छोटा अपना हो या परया सबक साथ प्रेम से बोला करती थी ।

इसलिए जिस समय वह घर आयी पिता भीमाय ठाकुर अपना बरसों का नियम भंग कर उस समय घर पर ही थे । बर्ना वह समय तो उनका मन्दिर में

'मंसा-भायती' का होता है। यह ठीक था कि साबिभा न अपनी बेटी व स्वागत क लिए साथ आना-पीना कर रहा था लेकिन सरो ने भी बिना किसी व कुछ कह-सुने तथा गुणवती ने भी अत्यन्त मन स माँ स पूछ-पूछ कर कान्ता व लिए मोहनसँवार कर रखा था। सराने साम्नासे कह-कह कर जमा-जूड़ी में स कान्ता के लिए हावों की भार सोने की बुड़ियाँ ब्याह क समय ही बनवा रहीं थीं लेकिन जब देने का कोई बखतर ही नहीं आया ता वे रहीं हुई थी। आज तो सरो ने साम्ना स कह कर एक सानी और मँगवा की थी क्योंकि ये बुड़ियाँ ता ब्याह के नाम पर थीं। लड़की जब समुदास स पहली बार आणगी और काकी माँ क पैर छुण्णी ता क्या उसे कुछ न दिया जाना चाहिए ?

मनबंती तो पूरे दिन उत्साह में रही। बारम्बार दरवाजे तक हा आती कि रेल क आएगी। वह जानती थी कि रेल घाम का ही आती है। फिर भी वह दिन भर अपनी उसी काम्ता क लिए बर्बन रही जिसके साथ उमने आनम के तिनों में 'संसार' फूसा स दीवार पर बनायी है। कितने सुन्दर गगरकाट हापी-भोड़े, पामकी-मबार बनायी थी गुणवती और कान्ता रो दिया करती थी तो वह कान्ता की 'मंसा' अपनी 'मंसा' स अच्छी बना दिया करती थी। इसह रे-बीबायी के उन बीम तिनों में आभिया कटे कच्छ-कच्छे बटों में बड़े-बड़े बीपक वर नैस मुर स 'घड़िया' गाया करती थी और तब पेमे इकट्ठे हो आया करते थे और फिर उन पैसों की गण्ड हुआ करती थी। सरीबाक लड़के कैमे पत्थर मार कर घड़े फोट विमा करण थे। वह ता कम कर 'माभा मार दिया करती थी लेकिन यह कान्ता ता कम रोने बैठ जाती थी। कैम छुपकर बैजनाथ व मक में मसाई का बरक या बरक के साम-पीसे सगू लाया करण थे। यह कान्ता तो मरी बस हमतियों पर कैसी जान देती थी और साबार की बनी पानी क मक बरीद कर कैस बुप बाप स्कूल स से आया करती थी और उन नी रबाह में छुपकर तिसाया करती थी—किनती अच्छी लगती थी न ? उनक बिना कान्ता तो छिन भर नहीं रह पाती थी। बलाती ता कान्ता की कमी बन्ध ही नहीं होती थी लेकिन क्या मजाल जो उमका कहना न मानती। ताई जी ने वह मपक वर शमड़ा कर उमने लिए भी कोई पीर ही बाहे याने की पीर की पहलने प्राणने की जरूर साठी। पही बने-बार महीने बड़ी है उमम लेकिन सग बराबरी ही की होगी उमने।—और उमो अपनी कान्ता के विवाह में वह नहीं जा सकी। वह क्या कोई भी नहीं जा सका। अच्छा आने हो 'मम मक पूछुपी। वहीं बदल गयी होगी वह भी तो ?—नहीं कान्ता नहीं बरक सबती। मुमस गयास बाबा का



यह ध्यान रखती थी और बाबा भी ता उस कितना मागत थे? वह या सुधीला तो बाबा से अधिक बात कही कर पाते थे पर यह कान्ता तो बस इतना पूछती थी कि उनकी हास्य ललाच कर लिया करती थी। बाबा कहा भी तो करते थे कि—हमारी कान्ता तो एक दिन बाकिम्बर बनेगी समझे !!

और वही कान्ता कान्ता बीदी आन वाली है। उसने भी कान्ता को बने क लिए वो रेसामी रमाक कान्ते हैं—एक कान्ता के लिए और हमारा उसके पुन्हे के लिए।—कैसा है उमका दून्हा? कान्ता का कैसा लकटा है वह? नहीं क्या वह बीस ही दिन भर हँसती रखती है?

—अरे कान्ता से कितनी सारी बातें करने का है। तीसरा पहर भी हाने बाबा और वह ठीमार तक नहीं हुई। जोनी मूमनी है कपड़े बन्सने हैं। बिजी को भी सीमार करना होगा।

मरो अपने बिसरे पर पड़ी कुछ खाम नहीं सोच रही थी। कान्ता अब बड़ी आ गर्वा हापी? लेकिन कितनी बड़ी हा गनी हापी आठर इतने दिना में? गुनी से कुछ ही बड़ी है। हाँ, ब्याह हो जाने पर बड़ा-बड़ा सा ता लगने ही लमता है सब। मुनी का भी ब्याह हा जाता तो खूब भर जाती यह भी। अभी ऐसी लम रही है तक बोड़े ही ऐसी लमती। मिरे बराबर की लियनी।—बको लच्छा हुआ कान्ता में उसकी माँ के गुन नहीं आये। कितनी बच्छी है न कान्ता? बेचारी का 'काकी माँ' काकी माँ करते दिन भर मुह मूलता था। भगवान करे वह सुधी रह। मुना तो है उमे कर लच्छा मिसा है। पता नहीं यहाँ क्यों नहीं ब्याह होने दिया? काग जाने कितनी सब कहने हैं कितनी झूठ। साम्मा ही तो कह रही थी कि भानी जी तो अपने मीके बानों का घर भर रही हैं। हाया भाई 'बिसको जो सुहाये करे। बे पेट में हुआ लखती हों, रलें। अपने से तो हो नहीं पाता। काग्रा और मुनी में क्या अन्तर है? अरे लड़की आठर छड़की ठहरी। बाब नहीं तो कल कभी आएगी। उस बेचारी से लुरेण करने से क्या साम? मुझे तो छिन कर को उनके न तो खेरों से न उनके बन रहे मजान से किसी से भी कोई ईर्ष्या होती—पता नहीं कैसा बाछा स्वभाव पाया है उन्होंने कि किसी का भी भसा या खुश उनसे बैना नहीं जाता। न हुई ईर्ष तो इन बेचारी लड़की से हो जाते के साथ बस-पड़ी। अरे पछो कि जब उसे किसी ने बताया महों कि क्या बनना

कब तक बन जाना चाहिए तब तक मछा क्या माझूम हा किन्ती का ? अपनी-अपनी समझ है। उन्हें ठो बमक में बीभ्र भी। काई उस्ता उनस पूछ न से कान्ता के ब्याह के बारे में इसकिए जात्र के साथ ही समझना शुरू कर दिया। इसी को तो "तिरिया बरित्त" कहत हैं काम। और काई पमत बाड़े ही कहते हैं !

बत कि माँ कुछ नहीं साथ रही थी। रात का थीमोहन क जाने के बाद जब वे बहू क कमरे से छीनीं ता पति ने बताया कि क्या हुआ। रात ही का पति पत्नी में तय हा गया कि सड़की क नाम जो मासा बनबायी थी बहू उस पैर झूने के मौके पर दे बी जाए। बीस उसक पाने-पीने का प्रवन्ध रू। यद्यपि बहू महारानी अपनी भारत क अनुसार बतझा जरूर करेगी। न हा ता कान्ता का मूंह झूटा करवा दना और बाकी थीमोहन जाने और उसकी बहू जान। फल में ज्यादा पाँव बुझने की जरूरत नहीं है। इस निर्णय क अनुकूल ही ब इस तीसरी प्रहर सगे क मिच्छाने बीठी बतिया रही थी। सरो ने जब कान्ता क निष्क तथा पूजन मादि की पाकी मुगबती से समझायी तो उम्हान एक बार हल्ल स कहा भी पा कि—बहू क्यों ज्यादा ममता दिखाती हो वो महारानी जी कुछ नहीं हाने देंगी टिफिन सरो ने बड़ा फीका-फीका सा मान हँस लिया था। तिमका भाव यही था कि—सासू माँ सबको अपना-अपना कर्नव्य करना चाहिए और फिर मैं यह वा कुछ कर रही हूँ बहू केबक अपने सन्तोष के लिए, न कि माभी जी को दिखाने के लिए और न उनकी प्रसन्नता के लिए। माँ मान देतती रहीं। साब ही आश्चर्य भी करती रहीं कि कितने प्रसन्न मन से सरो स्वयं तैयार हुई जैसे अपनी सड़की समुदास से आ रही हा। कहीं मुक पर या आचरण में ऐसा काई परमापन या पुमाब की छाया तक नहीं थी वो यह बथा सरे कि सरो यह सब दिखाने के लिए कर रही थी। उन्हें सरो पर आश्चर्य भी ना साब ही प्रसन्नता भी थी कि उनकी एक ब्याहता पोती पहली बार समुदास स आ रही थी और उसके स्वागत की तैयारी हो रही थी। यद्यपि वे छारी तैयारी अन्तर के दिवाबे से अधिक इन लोगों के मन में हो रही थी।

उपर सावित्री देवी ने बाड़े वाले उस बड़े फाटक से कान्ता की अबुदासी के लिए कंक के लम्बे सजबाये थे। तोरण बँबबायी थी। बखरा रजबासी थे। पूरा भर-आमन सीपा गया था। कौक पूरा पया था। पड़ोमिने तथा अपने पक्ष की रिस्तेदारिने भी एकत्र थी मगलबार के लिए। बाड़े में सफाई कौ गयी थी तहमील के सिपाहियों के द्वारा। फर्श तथा बिसात बिछबायी गयी थी। पाल-बगारों का इन्-गुलाबजस का नफीरी बालों का सभी का तो प्रबन्ध किया गया था। निरस्तेदार साहज आज बचहरी सं जकरी था पये थे और इन समय के मय पालकी बालों के स्टेसन पर मौजूद थे। इस सारे प्रबन्ध में सावित्री देवी ने झुट्झुट्ठी में अपनी सासू माँ तक से पूछना अनिर्वास्य न समझा और न ही बीच का वह दरवाजा भी खोलना जरूरी समझा जो कि उस दिन समक भर उम्होंने यत्न कर लिया था। इसलिए उबर क्या हो रहा था यह किता बाड़े की तरफ से गये कौन कह सकता था ? हो ज़बोर ही बहल-यहल की वदमद आवाजें बरकर आ रही थीं। पबइत बरकर बच्चों के साथ नफीरी सुनता सड़क पर बच्चों के साथ लड़ाई बर्ना सासू माँ ने सुधीला तक को उबर नहीं जाने दिया है।

और देवदत्त बौड़वा हुआ आया तथा सूचना दी कि कान्ता बीबी मा मरीं। सूचना देकर वह तुरन्त झूट पया। सुधीला जाना चाहती रही लेकिन माँ के डर के मारे वह अपना मन मारे बैठी रही। कान्ता बीबी की बिधेय स्मृतिमाँ उसके पास कुछ भी नहीं इसलिए सिवाय कौतूहल के और उसके कुछ पास था ही क्या ?

कान्ता क माने के करीब बंट भर बाद धीमाहन कान्ता को छकर आया। पिता बड़ी दर सं प्रतीक्षित बीने थे अपनी बँगबई पर। कान्ता भायी सबके पैर चूम। माँ तथा काकी माँ ने उसका माथा रूँधा। काकी माँ ने तिलक-आरखी की सुधीला ने धँप चबाया। गुधबंठी ने सीले बिखेरीं। सबन देखा कि कान्ता कुछ बड़ी भी लग रही थी। सिर से पैर तक जेवरों से लदी कान्ता बड़ी ही शून्दर लग रही थी। माँ ने उसके गल में माला पहनायी काकी माँ ने उसे चुड़िया तथा घाड़ी ओढ़ा थी सरो ने अब उसे तिलक किया तो उसन देखा कि कान्ता की आँगे अब कितनी बड़ी हो गयी थीं तथा वे कितनी बिर्होप मुसकुरा रही थीं। सरो को देखकर कान्ता कौसी बिपट गयी थी छठक कर। सरो को बड़ा अच्छा लगा। मन्तर तक भीग उठा था। वे समझ गयीं कि माथ जायु के कान्ता में और कुछ भी नहीं बचला है और उम्होंने सन्तोप तथा सूत्र की साथ ही। अब यह स्वापठ हा पया और धीमोहन को खड़े ही देखा ता माँ ने हुन्के से मर्त्सना करते हुए कहा

—धरे तो क्या काम्ता को साथ ही लिबा साने के लिए बहू ने कहा है ? काम्ता क्या ठेरी या उसकी ही है रे ?

धीमोहन को लया कि सच ही साबित्री ने साथ लिबा साने को काफ़ कहा था पर उन्हें सापना चाहिए था कि आखिर माँ क्या सोचेंगी ? सरो क्या सोचेंगी ? काम्ता क्या सोचेंगी ? और फिर काम्ता सरो को मातृती भी कितना है । काम्ता न कितना कहा था कि काकी माँ ब्याह में क्यों नहीं आयी ? बहू बाहर कड़ेगी उनसे । वहीं उन्हें अच्छा ही लगा कि बसो उन लोगों के कारण जो कौटुम्बिक एक उनाब सा गया है उसे काम्ता किसी सीमा तक दूर कर सकेगी । और बेबिसि दाये से बसे गये । बड़े पिता मोनाम ठाकुर ने पसन्द हुए काम्ता से यही कहा —काम्ता ! अभी तो बेटा मुझे मरिद भी जाना जरूरी है ।

—कोई बात नहीं बापू ! आप हो भाइए । आपसे मुझे बहुत कड़ना है । मुझे ऐसा मुला दिया आप सब ने ?

काम्ता की इस बात से बड़े पिता की आँखें छलछलमा आयी । वे बिना किसी तरह बेचे अपनी पगड़ी सिर पर ठीक करते हुए जूतिना (बिद्यासागरी) पहन बरबाजे की कल खोक निकल गये ।

सरो बोली

—बला बेटी ! पहले मुँह मीठा कर लो ।

—काकी माँ ! आप क्यों नहीं आयीं उम्मीन ? ये गुनी ने तो ऐसा मुला दिया कि पत्र का बबाब तक नहीं देती । मैं बापू माँ काकी माँ धुनी सबसे बहुत नाराज हूँ । काका भी ने भी भुला दिया ।

और काम्ता ने देखा कि माँ काकीमाँ सब परतू में मुँह छूपा कर सुबुफ रही थीं । बहू हलप्रम हो गयी । बोली

—मैंने कुछ मूक की माँ ? क्यों काकी माँ ?

—वहीं रे मेरी काम्ता भला मूल कर सकती है ?

और सरो ने बस अपने सीने से छटा मिया लकित उनके आँसू छूट पड़े जिसमें काम्ता गहा रही थी ।

कान्ता ने सावित्री की एक न चकमे दी। सावित्री ने यह मजूर कर लिया कि कान्ता उधर ही जाएगी लेकिन सावित्री ने अपनी रसोई की बिच नहीं छोड़ी। कान्ता और गुणवंती अब दोनों मिलकर खाना बना छठीं तथा कान्ता काकी माँ का सारा काम भी करती फलस्वरूप माँ बड़े पिता के मन में भीमोहन तथा सावित्री को लेकर जो तनाव जा गया था वह कुछ कम हुआ। जब तक सरो दोपहर में सो न जाती कान्ता उठना सिर दाबती रहती और खबीब-खबीब बिस्ते सुनाकर हँसती रहती। अब काकी माँ सो जातीं तब कान्ता और गुणवंती या तो छज्जे के एकान्त में बैठकर बचिप्राती रहती या फिर कहीं और। गुणवंती ने बताया कि बापू कितने नाराज हुए थे सुनकर, कि कान्ता का ब्याह उम्मीन से होगा। स्वयं कान्ता ने बताया कि जब उसके बियाह में कोई नहीं आया तो वह कितना रोपी थी। वह सब समझ गयी थी कि बिजी ने ही यह किया होगा। वह जानती है कि बिजी को दूसरा कोई नहीं सुहाता है—लेकिन वह नहीं जानती कि वह इसके लिए क्या करे? जब गुणवंती ने कान्ता को एकान्त में ब कामास दिने तो वह चिस उठी। वह भी बीड़ी हुई गयी और गुणवंती के लिए जो कपड़े

बागों में लगाने के विषय भादि छापी भी सब दिखाये । गुनबती ने जब लने से इन्कार किया तो कान्ता की भाँति छलछपा भापी और वह उसी तरह काफ़ी माँ के पास धाकर रोने लगी थी । ठक माँ और बापू के कहने पर गुनबती को खेना पड़ा था । सुपौडा एबबत को देने का तो एक प्रकार न उमका अधिकार ही था ।

अब तो रोज का यह बन्धा हो गया था कि दोनों बीड़ी हुई हैं । गुनबती को कान्ता की एक आदत से बड़ी चिड़ रही है कि वह पट में मुन्मुनी बसाती है और गुनबती को हँसी भी लूब आती है । ब्याह के बाद भी कान्ता बीसी ही बचक थी । ब्याह होने के दिन से वहाँ के आने के दिन तक की पूरी राधा कान्ता न उम सुना थापी । उसकी सुसुरास में कौन-कौन हैं व बीस हैं सामू माँ कैनी हैं । लालच भागों के पेट में कितनी बड़ी बाड़ी बढ़ाये बैठा रहता है । बितना ब्याह में दिया गया वह भी उसकी समरस बागों को कम ही स्या । कान्ता का ता कई बार मन हुआ कि कह दे जसो हमारे घर बितनी बीजे हैं सब स बाधो । उनमें इतों पुराने जूते भी तो हैं न ?

और हम बात पर कान्ता पेट पकड़ कर हँसनी रहा । कान्ता को कई दिनों तक हम बात का होना ही नहीं रहा कि गुनबती से भी उसके हाथबाल पूछे । वह ता बस जैस बासने पर उठाक थी ।

—सब मुनी ! तुम झूट भागपी । मरे सास-समुर के पास काडी पैसा है लेकिन एकदम जमार हैं जमार । दो पैस की भाजी भाएगी और छोटा भर पैसा जस—जस भाह, यह तो हो गया पकवान । और अगर हम पकवान का गने के नीचे निपलने के लिए कहों अचार की किमी मे माँग की ता सामू माँ का ता माता दिवाला ही बाप गया । गुनी ! जसा मुना है कि हम जने घर में हों तो पञ्चीम आगों का अचार माक भर बलना है ? नहीं न ? ता बडा हमार यहाँ । अचार लाने के लिए पाड़े ही हाता है जनाब ! मूबा जाता है और वह भी लोक कर नहीं पीन वा बनी में न जाँकडे अचार की पीसों को बेक कर ।

और कान्ता लूब पीजानी स उम मूबने का जाय-जार न करक तिनारो कि गुनबती की हँसा भी न सजती ।

—तुम ता बनी तेज हो गयी हा कान्ता !

—साँब बूँद तेक में लपाये जान वाली बननी समुराक की छोंक की तरह तब । जानना हा सामू माँ मामा फेरते हुए “बाब छी” “बाब छी” कानी जाना

है। और कहने सपती है कि—बहु इत्ता-इत्ता तक डासती हो तनी घर और घर को छोड़ें जाती है।

सपता कि कान्ता की तो हँसी बन्ध होने का नाम ही नहीं लेगी।

—कान्ता ! तुम अपने 'उनको' क्या कहती हो ?

—एकान्त में 'पंडिग्गी' कहती हूँ। उनकी माँ ने उन्हें बिल्कुल 'पंडिग्गी' ही बना रखा है बेचारों को 'पंडित जी' तक नहीं।

कान्ता फिर खेतानी से हँस बी।

—सगता है तुम्हें बहुत प्यार करते हैं न ?

—अरे गुनी ! पूछो नहीं बस !। बहुत कहने पर "पंडिग्गी" बुमाने के गये। तुम्हें मासूम हाना चाहिए कि "पंडिग्गी" जब बाहर जाते हैं तब पतसून पहनते हैं।

बहु फिर हँसी।

—यह हर बात में क्या हँसती हो तुम ?

—मुझ में और तुम में यही अन्तर है मूनी ! कि मैं बेबकूफी किसी की होई सगा जानती हूँ। हाँ तो मैं कह रही थी कि हम साथ बूमने पये। बड़े बरटे-बरटे ता "पंडिग्गी" घर से ही पये वे। घर से बाहर मैंने कहा कि आप कर्ते तो खूपट पाड़ा कर कम दूँ। असल में बीबी ! पनीली-पनीली भाजियाँ खाते-खाते उफता मयी थी एक बूकान पर पकीकियाँ बन रही थीं। मैंने कहा कि क्यों न बोड़ी पकीकियाँ ही खायी जाएँ ? जब साहब पंडिग्गी की सुख देखने के काबिल हो गयी। वे तो इतने बबरा गये कि बस। बोसे पानती हो इस तरह घर से बाहर निकलने वाली पहुँची बहु तुम्हीं हो। मैंने कहा ता फिर पकीकियाँ खाने का सौभाग्य भी मुझे मिलना चाहिए। गुनी ! तुम सोच नहीं सकती कि उनके मुस्ते का क्या हास था। क्या कि अगर और कुछ कहा तो वे रो देंगे। सो जनाब बूसरे दिन अपने राम ने जब इबर के किये बूब किया तो कहीं जान में जान धायी। अजीब दकियानूसों से पाछा पड़ा है। कि क्या बठाई। अपनी पढ़ाई सिखायी तो खीपट हुई ही गुनी ! पता नहीं 'पंडिग्गी' ने पढ़ सिखकर क्या हासिल किया।

कान्ता जिस डंग से सारी बात सुना रही थी उसस मुबबती को तो लगा कि उस अपनी तसुरास में कोई सुख नहीं है सकिन जैसे बहु किसी बात की कोई पास चिन्ता भी नहीं करती। बसिक बहु सब पर हँसना पानती है।

—गुनी ! सपता है तुम मेरी बातें सुनकर दुखी हो मयी कि कान्ता को बड़ा कष्ट

है ससुराल में है न ? बिस्तार नहीं । पड़े-लिखे पति की अपनी मुसीबत होती है और बेपड़े-लिखे की अपनी ।

—मामूम होता है बहुत अनुभव हो गया है न ?

दोनों एकान्त में बैठी दुनिया-ब्रह्म की बातें किया करतीं । गुणवती को याद आया कि कान्ता क साम के दिन ही उसका जीवन के सबसे सुनी दिन रहे हैं । वही तो रही है जिसके सामने गुणवती खूब खुलकर बातें करती है । फिर भी अपने बारे में उस बातें करते सदा एक गहरा सकोच होता रहा है । अपने बारे में बातें करना उस जैसे ही लगता है जैसे जब मैं घँसकर नहाया जा रहा हो । बेर सारा पानी आकर अग अंगको सूता हुआ आपको अजीब सा अनुभव करता है कि वह आपको बेरे हुए है । उसका निकट आप अवस्थित हा गये है । कौसी फुरहरी सी बीड़ जाती है देह में ।

जब कई दिनों उपरान्त कान्ता ने गुनी को कबाटा कि वह कैसे है क्या करती है बारि-बारि तो गुणवती को हठाव समझ में कुछ न आया कि वह क्या है ? वह तो बस—है ।। ऐस हाने में कैसे क्या बीरु कुछ नहीं होता । बस होते हैं । वही तो गुणवती है । और क्या करती है ? करने को कौन इतना बिबिबूर्ण है कि आज यह किया और उरता कर कर दूसरा कछ करने लगे । इतना बिबिब कमी बा ही नहीं । बा कुछ करती रही है वह भी ऐसा कछ बिसेप भी नहीं कि उस कहकर बताया जाए । कोई यह कहे कि वह रोब उठता है, खाता है, बातें करता है और सो जाता है—तो आपको कैसा-कैसा लगे न ? और कहीं बासे पर आश्चर्य हो कि क्या यह सब कहने के लिए होता है ? क्योंकि इसमें बिबिबिप्टा क्या है जो कहा जाए ? कहा तो बिबिबिप्ट ही जाता है न ? सुनने वाला भी बिबिबिप्टा की अपेक्षा स ही तो सुनता है । ऐसी हास्य में गुण वती क पास या तो बरि साधारण है और असाधारण या बिबिबिप्ट के नाम पर वही कुछ है ता वह इतना अस्पष्ट है कि स्वयं भी रात को जिजी के गिरहाने समझा सिर दाबते हुए या फिर कमी बिमनी की टेढ़ी-मेढ़ी ली के मीठे मय्य प्रकार में पंटा सोचत अपने अय्यर कुछ लोजती रही है कि कौन सा मधुररुह है जो उस कमी-कमी बड़ा सुख देता सा लगता है अपना कमी बड़ा उगम मा कर जाता है । जब कमी बाबड़ी से पानी सने जाती है तो समझा गहरा पपगीलापन —मूर ठण्डा जहाँ कबूतरों की 'गुटरगू' या एकान्त पीनस का लन्हा सा गच्छ अजीब आनंदक भरने लगन है । वह आलीपन जैसे उमकी आँखों में नहीं होता है जो गान की मीठ की बेला गूब माग्य फँस जाता है जिसमें वह डूबने लपनी है—



मिठास एककी — कुछ भी ता समझ में नहीं आता कि वह क्या चाखती है क्या करती है ऐसा जिस कान्ता को सुनाए। कान्ता के पास न मही तो लोगों के क्रिससे है अपने 'पंडिग्री' को लेकर ही या फिर सास को लेकर ही तूब सारा हुंसने को है। अब कि वह यही कह सकती है उससे कि कान्ता ! बस ऐसा कपता है एक बासी ठन्डा पुरहा है राख भरा जिसक चारों आर जूठे बर्तन— उबास मनमने से फैल हुए हैं। अब बताओ क्या कहूँ ? क्या कान्ता इसे समझ सकेगी ? लेकिन प्रश्न ता यह है कि क्या मे स्वयं समझी हूँ यह कह कर ? तब भसा उसे क्या बताया जाय ? लोगों की बातें क्या की जाएँ। बड़ा किबूक सा कपता है कि आप बैठकर लोगों की बातें कर रहे हैं।

—क्या साच रही हा गुनी ! कुछ बताया नहीं तुमने ?

—क्या बताऊँ कान्ता ? यही सोच रही हूँ।

—मैं समझती हूँ गुनी !

—इमीका तो मुझे संतोष है कि एक कान्ता ही तो अच्छी ऐसी है जा मुझे समझती है। अब तुम नहीं भी सब कान्ता ! तुम स बटों बातें किया करती थी।

—लेकिन अब तो तुम चुप हैं।

—तुम अब सामने हो न इसीलिए। सामने बैठे होने पर पता नहीं क्यों बात नहीं हो पानी। बस मुमने को मन करता है। तुम मुतापी हो न तो कपता है कि हाय-हाय इतने दिनों नहीं सुना तो कितना छूट गया न ? और समस्त इन्द्रियों स सुनने लगती हूँ। आश्चर्य भी होता है कि कोई सुना भी सफ़टा है। जीते ता सभी हैं, लेकिन उस सबको सुना सकना सबके बस की बात नहीं होती।

—नहीं तुम मुमस भी अब छपाने लगी हो।

—तुमस छुपाऊँगी ? मेरा भ्रमवान जानता है कान्ता ! असल में मुझे बोलना आता ही नहीं। रोक जाने कितना बेमा-बैसा बलते-बेकते बस बैलन की आबत पड गयी है। इसीलिए एकान्त में होने पर बिगड में देखने लगती हूँ और वहाँ तुम हलती हो। कपता है तुम मरी जानें पड़ती हो और मैं जाने कितना निजस्य बहुत र्मबीर हो गयी हूँ।

—गुमी ! तुम बहुत र्मबीर हो गयी हो।

—कान्ता ! तुम नहीं जानती अब व्यक्ति को मुक रिल से बहुत कुछ खपना पड जाय तो उसकी बाबा खपी जाती है। मुझे बड़ा गुड है कि तू यहाँ नहीं रही। बाबा जीबन भर किनूप्य उदास जाने क्या बने रहे और आर जाने

कहीं न जाने क्यों बने गये हैं। जिजी ने कगता है हमेशा को घमा पकड़ सी है। ताऊ जो जार्ड जो पता नहीं क्यों किसी स नी तो खुद नहीं है? छाटे काका तो जैसे परिवार में कमी से ही नहीं। बापू और माँ जाने किस युग के मूक चरित्रों स भौनारे में बैठे सब देखते रहते हैं। विभिन्न कहियाँ हैं हम सब! कि छिन्न-भिन्न हो जाने के लिए मानुरता स अपनी-अपनी दिशा में जोर लगाकर टूट जाना चाहती हैं। कमी-कमी सापत्नी हैं कि बाबा छोट कर नहीं जाये तो जब ताऊ जी-ताइ जी खत्म हो जायेंगे वानु और माँ बड़ हा जायेंगे तमा मैं और सुगीला ब्याहू के बार चली जायेंगे सब रोमिणी जिजी यह जर्जर घर निराश्रित बापू माँ तथा अबाप देवघर इन सबका क्या हाया कान्ता? सब मैं भी हँसना चाहती हूँ! खुब जारों स हँसना चाहती हूँ लेकिन पता नहीं क्या रो पती हूँ जैसे इस जर्जर घर की धरतीरों में जिजी वानु माँ और देवघर बस गये हैं। वे हमें सहायता के लिए पुकार रहे हैं और हम अपने अपने घरों में कान्ता! उस दिन क्या हाया? और सुपबंती सखमुज ही रो पड़ी। कान्ता भी उदास हो गयी।

कान्ता में महज बुद्धि तथा हँसमुख स्वभाव का अजीब मिश्रण था। वह कुटुम्ब की बस्तुस्थिति अच्छी तरह समझ गयी थी। तथा उसके कारणों को भी। मनिहाल तथा मसुराल में अपने पैम की सालसा तथा कामना का नम्र रूप देखा था। जब कि उन परिस्थितियों में उस नी बैसा हो हो जाना चाहिए था। एकिन पता नहीं थीबर काका जी की बड़-कीन सी बात उसे याद आती रहनी कि वह बीबी नहीं बन सकी। बस यही हुआ कि अपने सब पर हँसना सीख लिया। यद्यपि अन्दर में वह भी बहुत यमीर को पर अपनी विवाहाश्यों का भी समझती थी। अपने माता-पिता के प्रति वह उषाम भी बनोकि मनिहाल में जाकर बिम प्रकार ये लोग यहाँ के बारे में जानें बरने से वह अपमानजनक हो कहा जाएगा और यह कान्ता को बनी अछटा नहीं लगना है। गुनी की गंभीरता न वह बाप उनी। वह स्वयं दण चली थी कि यदि बारी माँ की दबावाक ठीक न नहीं

होती है तो वे बच नहीं सकतीं। माता-पिता ने इन लोगों से सारा सम्बन्ध तोड़ ही लिया था। बापू की आभारनी ही कितनी थी। तब इतने बड़े परिवार का काफ़म-पाकन कैसे हो ? काबा जी के जाने व बापू गुनी की पढ़ाई का ध्यान ही गया समाप्त। सुधीसा भी ऐस कहीं तक पढ़ पाएगी ? जिस कौटम्बिक हाहाकार को गुनी ने अभी कहा वह तो जैसे अनिवार्य लग रहा था। इस गुनी तथा सुधीसा का अभी बिबाह हुआ ही है। पिता इरामे कुछ मदद करगे इसकी जासा ही क्या है। वे तो दो-चार दिना में छावनी में चले जाएंगे सब ता मैतिक वायित्व स भी मुक्त हो जाएंगे। तब क्या हागा ?

जब वह अपने पल्ले पर पड़ी करबटें बदलती हटी रही और सा न सकी तो जिजी ने पूछा

—मीद नहीं आ रही कात्ता ?

—नहीं जिजी !

—क्या तू भी पिन भर उस गुनी के साथ बतियाती रहती है। अरे कुछ भस काम किया कर। तेरे बाबा कह रहे थे कि झड़की की तो दाकत ही नहीं दिखती। क्या सिर कुछ रहा है तेरा ?

—कुछ कास तो नहीं जिजी !

—पता नहीं तुझे ऐसा क्या मीठा है जो उभर गुनी पड़ती है। जब देखो उस गुनी के साथ खाना बनाती रहती है, तो कभी उसकी माँ का सिर दाबती रहती है। अरे बिसाने को कभी कुछ कर दिया और बस।

—जिजी ! क्या तुम्हारे पास पिछ नहीं है ?

—क्या मतलब ?

—कि तुम किसी का अगर भका नहीं सोच सकती तो दूसरों को कुछ सोचने को क्यों कहती हो ?

—अच्छा तो अब मैं ही बुरी हो गयी क्यों ? और जो लरी काकी माँ और गुनी इतनी मीठी हो यहीं कि अपनी जिजी को ही भला-बुरा कहने लगी, क्यों ?

—तुम स ली जिजी ! आज तक किसी की बनी नहीं।

—बैस कात्ता ! तुझे सीब बना लरा काम नहीं है समसी। तेरा बीसा मन आये बीसा तू अपने घर में करना। अरे, जब सिर पर पड़नी तब देखूंगी कि तू कैसे करनी है। तेरी वह गुनी तुझे यही सब न मित्राती रहती है दिन भर ? लबरदार जो कभी उतक किए कुछ कहा-मुना ली। तुझे क्या मासूम कि लरी को काकी माँ कीती गुनी हुई है।

—अच्छा भगवान के सिम्ह मेरे कारण उन छोड़ों को मठ कोसो ।

—जरे मैं उन छोड़ों की सब बातें समझती हूँ । ठीक है और दो-चार दिन घुट घुट कर बातें कर लो फिर बेसूयी कि छावनी से मछा किस तरह तू जाती है और वे बातों तुझे बहकाते हैं ।

काम्ता समझ गयी कि बहस बेकार है और बह करबट लेकर सोने की भेष्टा करने लगी ।

वीथ जी ने तो बड़े चुपके से श्रीगण ठाकुर को बताया था कि बहू को यशमा ही गया है, लेकिन सरो के सतर्क कान उस बात को सुन ही के गये। भाईयों के सामने अँधेरा छा गया कि अब क्या होगा ? इतने छाटे वक़्त बूढ़े सास-समुर और पति का पता ही नहीं कहाँ है—यदि वह नहीं रही तो इन सबका क्या होगा ? एकदम बिह्वल हो ययी स्वस्थ होने के लिए, जैसे कि नहीं कुछ नहीं हुआ है, बल्कि वह तीख-स्पीहारों पर सभी बहू की तरह गूंगार बिये है। पीरों में महाबद, हाथों में मोहरी सिर पर ठिलक तथा माँग मदे, बीबार में बड़े सीधे में अपना कम तिरण रही है—जैस आज ही ब्याह कर आयी हो। कैसा भरा सा कंचनमुण और उसमें बिदास मेव। दर के सारे अँधेरे कोने उजला गये हैं। कैपी चुप और दीप की गंध भरी हुई है कमरों में। सवेरे की घूष का कैसा महाया सा आसोक फर्न और बीबारों पर पुठा सा लय रहा है। परेदी पर रत्ना पानी का बड़ा सा पीतल का यगर तथा पटिये पर सजे सँजे हुए पीतल लीचे के उजले बर्तन जैसे वीथ निकाले हैंस रहे हैं। बूढ़े पर पकवान की गंध आ रही है। बच्चों ने एकदम बूझे कपड़े पहन रखे हैं वीथ ठावे कले के खंभे हों। दरवाजे पर अस्पना बिगड़

न बाएँ, इसमिएँ बाते-बाते बच्चे फर्सायते भिकसते हैं—क्या रोज ऐसे घर नहीं रह सकता है ? क्या रोज ऐसा उत्सव वैसे नहीं मग सकता है ? क्या राज हमारा गन और जीवन घर और आपसी सम्बन्ध इतने ही मुझे-मुझे पवित्र तथा सुन्दर नहीं रह सकते हैं ?

और सभी घर को जोरों से खाँसी आयी । दिवास्वप्न टूट गया । अभी पाड़ी बेर पूर्व का वह काण्ड उसकी आँखों के सामने फिर माघ उठा । सबेरे ही धीमोहन तथा उसकी पत्नी ने माँ तथा बापू से यह साफ-साफ उद्घोषणा की थी कि सरो तथा गुणवती कान्ता को बहकाती है । वे लोग जानते हैं कि ये काय क्या कर रहे हैं । इन दोनों ने इन लोगों का इस घर में रहना हराम कर दिया है । वे अब इस घर में एक मिनिट नहीं रहेंगे और बाहर पाड़ियों पर सामान सारा जा रहा था । माँ और बापू एक क्षण अबाक बने रहे । उसके बाद बापू माघ इतना ही कह सके

—अच्छा भाई ! जहाँ रहो सुधी रहो ।

माँ कुछ न बोली वैसे उन्हें लकवा मार पया हा । उपरान्त बँध जी भाये थे । तिरुगी आँखों का झूँट में छिपाये हाथ बँध जी को घमा कर वह पक-पक करने करने से सिमटी बैठी रही । पाड़ी नामे बँध जी बड़ी दर के बाद बोसे

—अब तुम बाबो बह ! बबराने की बात नहीं तथा मित्रता दूंगा । बस आराम और परहेज से रहा करो ।

बँध जी ने जिस प्रकार उससे यह कहा था उसका स्पष्ट संकेत था कि अब तुम बाबो मुझ तुम्हारी बीमारी के बारे में इन लोगों से कहना है । वह ऊपर आ ती गयी लेकिन दरवाजे की आड़ से मुन ही स यपी कि “बह का यत्ना है गायर ।” और दरवाजा न पकड़ा होता ता सग गिर ही पड़ती । आँखों के भाये अँधेरा छा गया ।

एक दम टूटी सी अपने दिम्नरे पर जानर बिठन पड़ी । भाब रबिबार था । सुधीमा और बँधवत गुजबनी क माघ ठालाघ पर नहाने तथा कपड़े बाते गये थे । कमरे में एकान्त वा सग रो पनी । उमे सग कि बह जीवन भर बिबा ही रही । बिबाता में भाई मुक्ति नहीं । उमन बिउनी भाबनामा क गाय जीवन आरम्भ किया था । पुस्तक में तथा पिता क ज्ञान स उम यही प्राप्त हुआ था

कि यह जीवन स्वर्ग है। दूसरों के साथ अच्छाई करने पर ही जीवन स्वर्ग बनता है। उसे याद आया कि उसने कितने मन से तथा बिना कठिनाई से कान्ता के लिए खाने की बुझियाँ बनवायी और सावित्री ने मुहम्मद भर में यही प्रचार किया कि चाँदी की बुझियों पर सोने का श्रावण चढ़वाया गया था। अरे, सोने की नहीं दही की ता शिखाने की क्या आवश्यकता थी? क्या कान्ता को खेरों की कमी है?—मही दुनिया का दिखाने के लिए हमने भतीजी का सोने की बुझियाँ दीं।—लेकिन सावित्री की आँसों को थोड़ा दना आसान नहीं है—देखना बही सोख चढ़ी बुझियाँ मीने पुणबंती के ब्याह में न थीं ता मेरा नाम नहीं। देवी जी ने सोचा होगा कि ये भोग तो बेबकूफ हैं जसा बरसे में अपनी सड़की को खाने का खेर मिल जाएगा। सुनार ने देखते के साथ कह दिया कि इन पर तो पानी चढ़ा है।—अरे, एक तो मुझे उसी दिन हो गया कि क्या बात है जो कान्ता के इतने खाड़ सड़ाये जा रहे हैं? तुम जानो बहना 'मैने तो कभी ऐसा किया नहीं किसी के साथ तो समझ नहीं पायी पर खटका बकर हुआ। अरे हाँ और क्या खस्ती पठा चल गया नहीं तो हम भोग जाने कितने के नीचे आ जाते। अब 'इतकों' बताया सारा हार तो आँसु बुझी बना कहते थे कि माई, गुनी की सारी में कुछ तो ज्यादा करना ही होगा। माई की बेटा में और अपनी बेटा में क्या भेद है? तुम जानो सच्ची बात सुनकर सभी चुप रहे जाते हैं। म मी कुछ नहीं बोली कि हाँ माई, सच्ची बात है।—एक हार तो बेना ही पड़ेगा जैसा कान्ता को दिया है। बाकिर इन खोगों ने भी तो चार बुझियाँ ही कान्ता को। भेद तो बहना एकदम मुँह ही बन्द हो गया। कुछ भी कहने से रही। बधावाँ जैसा जमाना आ गया है यह कस्म्युम कि सोय अब तो बस कमास ही करे है। अब बताओ न इस रुपये की चाँदी की बुझियों पर मरी पाँच रुपस्ती का सोने का पानी—हुई पत्रह की बुझियाँ न? और नाम हुआ चार तोसे की बुझियाँ।।—कस्म्युम के और क्या सींग होवे हैं बहना? अब तुम्हीं बताओ? किसके पेट में डाढ़ी से है कुछ पठा चके है? इन सगाँ को अपना पेट काट-काट के बिलकाया है और ये हमारे साथ ऐसा व्यवहार करें, कभी सुना थी ऐसी होनी? सच्ची अब तो बनवाई से साथ का भी ब्याह हो जाए तो भी अचरख नहीं करना चाहिए।—तुम कहोगी खेतानी होकर खेररानी की बुराई करे है पर फिर उसे तो कहना ही पड़े है।—

खोरों की बस्तें खेर का पानी होती है। दूर-दूर का पानी बूम-बूम कर, बिर-बिर कर, सारे कूड़े करकट के साथ पहच ही हाता जाता है। एक बार यह भर हमने की बर हाथी है कि बस बिना औरत के भी चारों ओर यह खेर

पूमने खगता है उसे यह से के ही रहता है। सिबाम डूबने के अग्य कोई गति नहीं होती। साफ और गहरे जल में भँवर नहीं पड़ते। किनारों पर कूड़े-करकट वाले जल में भँवर ही भँवर तैरते होते हैं।

सरो बड़ी देर तक रोती रही। कमी सुख कमी दुखद कामनाओं में डूबी छत्र की छहरीरों में कोई छेद खाजती रही ताकि न सही पूरा आकाश तो कम से कम आकाश का कोई तितली की तरह छोटा सा भीमा टक्का ही बिख जाए—और बँबी हुई दृष्टि को पय मिल सके। डूरी पर श्रीमोहन बाबू का बिस्ला-बिस्ला कर सामान रखवाना सुनायी पड़ रहा था। उस आश्चर्य था कि श्रीमोहन तथा सावित्री किस दुस्साहस क साथ मकान बनवाने की कोई सूचना माँ या बापू को बिना दिये नये घर में प्रवेश करने जा रहे हैं, और वह भी सड़ कर। ऐसी स्थिति में कोई कुछ भी पूछने की कहने की स्थिति में नहीं है। शायद कोई किरायेदार भी इतने अनुस्वयी इतनी दुपमनी के साथ मकान नहीं छोड़ता है जिस कि ये छोड़ रहे थे।

फिर भी कान्ता कितने निर्दोष मन से सचेरे आयी थी। रात वह देर तक सिरहाणे बैठ काकी माँ से बातें करती रही फिर बवाती रही। सरो ने बातों ही बातों में पूछ लिया था कि उसने बूढ़ियाँ क्यों उतार बाळी? कई दिनों से नहीं बिछीं। कान्ता यह सुन कितना ठमठमा पयी थी। सरो एक अण तो अवाक हो गयी कि कहीं अपनी माँ के प्रचार में कान्ता ने तो सब नहीं समझ लिया कि बूढ़ियाँ बाँगी की हैं?

—काकी माँ! सहने की जिस प्रकार सीमा होती है न उसी प्रकार मुत्ते की भी होती है।

—ऐसा क्या सुना रे?

—उसी प्रकार बेलने की भी सीमा होती है काकी माँ!

और सरो ने देखा कि कान्ता का जैसे यका मर गया है।

—क्या बात है कान्ता! बहुत उत्तबिठ मालूम होती हा।

—क्या कर्क काकी माँ! या ता में आपकी कोई नहीं होती तो अच्छा था। कम से कम यह तो होगा कि आप से कोई परिचय ही नहीं होता और अपर होना ही था ता क्यों नहीं बेटी ही बनाया?

—तो क्या तु मेरी बेटी नहीं है रे?

सरो को स्या कि कान्ता उमका स्पर्श चाहती है। सरो ने जैसे ही उसे छुमा एक धग में देखत-देखत कान्ता की आँगों भी भर आयीं और धारापर बरसने भी



कमी। सराने उस बाँहा में समेट लिया और सीने से सटा वह स्वयं भी फूट पड़ी। दोनों की हिचकियाँ बँध गयीं। सरो के बीचम भर उठे। उन्हें क्या कि क्या यह साक्षित्री की बेटा है? जहाँ जेगानी महारानी को जिनके लिए वे आश्चर्य कर रही थी कि कान्ता कितनी बिपरीत है अपनी माँ से। बँस गये तीर्थ कण्ड में पुष्प कहीं छिपा हुआ रहता है, उमी तरह।

—कान्ता !

और उन्होंने उन रोती माँओं को अपनी ओर उठाते हुए कहा

—कान्ता ! तुमने मेने जाया नहीं रे बल्कि पाया है।

और कान्ता फिर फूट उठी।

—देख माई, यों ही बेटियाँ स्मार्टी हैं अपने माता-पिता को। ज्यादा न रसा कास्ता !

और दोनों की धनी की रोयीं सम्मूख भाँसुओं डूबी भाँसें—पानियों के पार से एक क्षण को देखने के लिए, रोना छोड़—बिर ही देलने कयीं। जाने कितना निःशब्द बोल गयीं और फिर सीने से सट गयीं।

तमी गुणबंती बरम पध्य की फनीली घोड़ी के झूट से पकड़े प्रवेधी। कान्ता को बित्री के सीने से सटे देख अत्यन्त सूखी मुसकाते हुए धराएत से बोली

—बच्छा तो मुसस तो कहा कि—मुनी मैं जाकर काकी माँ का सिर दाबती हूँ और यहाँ मह सिर बाबा जा रहा है या दबबाया जा रहा है ?

बीबन म सम्भवत अपनी माँ के सामने पहली बार धराएत करने की सूखी थी।

—तो तुम्हें क्यों रूपा हो रही है ? काड़ करने के लिए ही तो मुने मुनबाया क्या, काम करने वाली बेटा से काड़ बोड़ेही किया जाता है ? क्यों काकी माँ ?

धोर सगे ने भी बहुत ही सुन्दर मुख से हँसती माँओं से बड़ा-बड़ा सा अबोला हामी बासा मुख हिला दिया।—गुणबंती समझ गयी कि बित्री बहुत प्रसन्न है। सराने सम्भवत पहली बार, जाने कितने क्यों बाव गुणबंती को भी कान्ता के साथ सटा लिया।

धायक अब सामान रखा जा चुका था। साबित्रो कान्ता का पुकार रही थी। मामूम हुआ था कि जैसे बहू बहू नहीं है। तभी पीने पर कान्ता क बड़ने की बाहू हुई। सरा सम्भू कर बैठ गयी। कान्ता ने काकी माँ के पैर छुए। सरो को लगा कि जैसे काबिगिता का कोई स्वाग इस समय नहीं है।

—माँ स मिस सी ?

—हाँ बे अपने कमरे में उबास लेटी हूँ।

—मामी जी का कम से कम सासू माँ के ठो पैर छूकर जाना चाहिए।

—गुनी कहाँ है ?

—नीचे नहीं है क्या ?

—मैं उसे अच्छी तरह समझती हूँ।

—अच्छा क्या ! जरूर जाना बेटा कभी काकी माँ को परया न पाओगी।

—मुझे मामूम है काकी माँ !

डूरी पर साबित्रो पुकार रही थी। कान्ता फिर बोली

—तो जाऊँ न काकी माँ ?

—जैसे कहीं बेटा इधर से तो दरवाजा बन्द कर रखा है बर्ना मोषनी थी कि दादा-मामी क चरण छू लेती। मेरेही कारण तो यह महानाख हो रहा है।

—काकी माँ ! अपने को अब अधिक हाप न दो, न कोसो ही। अच्छा अब चमूँ।

—तो जाओगी न ?

—बर्ना कहाँ जाऊँगी ?

और कान्ता चली गयी। पता नहीं सगे का याद पड़ता है कि नहीं कि कभी छत्रे की लिङ्कियों स उमने सङ्क की भार सीका हो लेकिन आज बहू सोन मंवरण न कर सकी। तभी उमने देखा कि सामू माँ भी आ गयी ऊपर। सङ्क पर माङ्गियों में मामान रखा था। कूछ गाङ्गियाँ जा चुकी थीं। एक दमती (छोटे गाङ्गी जो बँडने के लिए ही होती है) में साबित्रो कान्ता आदि बैठ गये। सङ्क पर दोनों ओर मुहम्मै बापों की भीड़ थी। बिम घर से य साग बिहा हो रह थे उग घर का प्रमुख द्वार चुनबाप बन्द था केवल बन्द गिङ्गी के पीछे से माँ और बेवराती जामू बहानी अज्ञान मोन बिहा दे रहीं थीं। एक बार श्रीमाहल ने अवश्य बन्द पैरुन घर की भार दना तथा बड़नी गाङ्गियों क साप बड़ गये।

—आगिर बहू बग छीन ही स गयी।

यह सब धान्य का ३७६

और गहरी साँस क साब कुछ क्षण तो बकी उपरान्त उन बूढ़ी माँसों ने छल-  
छमागा शुरू कर दिया ।

—सासू माँ !

—तीन-तीन बेटे पर घर में एक भी नहीं।  
और बे फूट पड़ी ।

कई दिनों के बाद रात में सरो को बुझार हो आया। आबग के पहले मज  
 आरात में बिर भाये बे। ठण्डी-ठण्डी हुआ पसने कगी थी। वण्णों के लिए सवेरे  
 का ही खाना रखा हुआ था। बड़ों न खाया ही नहीं। सगे को बुझार हा, माया  
 इमलिए पध्य नहीं बनाया गया। कास्ता के बारे में सरो ने भी गुजवंती से कोई  
 बिलेप चर्चा नहीं की क्योंकि जानती थी उस कुछ होगा। भारपर्यं या कि पिता  
 श्रीनाथ ठाकुर ने न परिवार न बसस न कुछ कुछ भी ब्यस्त नहीं किया। साग  
 पर माय-माय कर रहा था। औसारे की एकाकी बिलगी आबग की इन प्रपम  
 हुआओं में बारम्बार काँप उठती थी। माँ रह रह कर—“बीबा बीतबार’ “बीबा  
 बीतबार’ —(हू भिये। रबिबार, हे भिये। रबिबार—जन्मका बिदबास या कि ऐसा  
 कहने पर बीबा नहीं बुझता है) कहने लगती। पति श्रीनाथ ठाकुर न अनुभव किया  
 कि माय माँ भी चर्चा पत्नी से करने का अय होगा कि बे रोने लगी। अतएव  
 न मान बड़े जोर-जोर से खपाठ करने लगे। सरो न बमरे में यह पाठ-स्वर स्पष्ट  
 सुनायी पड़ रहा था।

गुजवंती ने जब देखा कि बिबी का बिर जग रहा है ता वह दाबने लगी।  
 सरो लपट मत्त करती रही। पर मर का खाना बनाया या फिर दिन भर कुछ

कपड़े सोये वे उसके बाप उन्हें सुलाया गया था इसलिए वह लुन बक गयी थी। साथ ही वह बर की मनस्थिति भी समझ रही थी। जब रात बड़ने लगी तो सरो ने पबलत मुबबंती को सुला दिया और स्वयं प्बर में कौपती पड़ी रही।

पहले ही पर कौन मर या उसके लिए। एक बरस हो रहा था पति को गये—न कोई खबर, न बिट्टी-मानी। गाठमन बानु इन्दौर तक जाकर भी पब सनका पता न था सके तो वह बिसन्कुस निदाय हो गयी। भाग जब बीच भी ने उसे बडमा बला दिया तब से उसे अपने जीवन की कोई आशा नहीं रही। कभी यह बर, सारी परेशानियों के बीच कितना लुलर लगता था। भाग वहीं पर घोंद-भाँव लग रहा था। जेठ-जेठानी ने कितने अपमानजनक रूप से बिबा ली थी। मेकों की इस पहली बृष्टि में जैसे बर के प्रत्येक कोने में अँबेरा प्रविष्ट होने लगा था। तपती आँसों तथा पसले सिर में एक ही बात रह रह कर बिरती थी कि क्या 'वे' कभी नहीं आएँगे? लेकिन क्यों? उससे तो कोई ऐसी भूक नहीं हुई है कि वे उसका परिचयाग सवा के लिए कर जाएँ। इन बन्नों की भी क्या कभी याद नहीं आती होगी? भाग को कम उस ही कुछ हो जाए, और क्यों नहीं हो जाएगा? अब होने में क्या शेष है? ती, वे बन्ने क्या बिसन्कुस अगाध नहीं हो जाएँगे? मुबबंती के बिबाह का क्या होगा? शेष तो बड़ा बर समझ मुँह फाँड़ेंगे कि इतना था तो ब्याह करेंगे। कहीं से जाएगा उतना सब? बापू बेचारे कितना करेंगे। जानिए मंदिर जी से निकला ही कितना है? जमीन-आपदाब तो जेठ जी रूप ही बँडे हैं। बेचघठ नहीं पड़ पाएगा तो क्या करेगा? क्या उठे शौरों नेज दे? लेकिन और यह तेज बुझार में कौप रही थी। सिरछाने की तिरुकी से टंडी तेज इबा के साथ बीछार भी आ रही थी जिसमें तकिया तथा धोत्रना भीग रहा था। उठमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह उठकर बन्व कर दे। लमी बिजली की कौब तथा मेम गर्जन से बर्बर पर की प्राचीरें आलोकिठ तथा प्रकम्पित हो उठीं। एक धम की कौब में मारु बर विप उठा था। एक-एक बीज बमक उठी थी। उस अत्यन्त जाड़ा लग रहा था सक्रिय क्या मूनी को जयाकर और शीतना मारि? उसके बात बजने लगे थे।—वीसी तकिये पर पसले मस्तक में पत्थर की तरह एक ही प्रस्न मद् भद् बर रहा था कि—

क्या वे अब नहीं आएँगे ? तब मरे इन बच्चों का क्या होगा ? श्रीमारे में भेटे  
बूढ़ सास-ससु का क्या होगा ?

कस यदि वह नहीं खूती है तो क्या उस पति क हाय स अन्ति नहीं दी  
आएयी ?

ठा क्या देवदत्त का ही ?

और आबय माम की पहली मूसझाबार बूटि में भी उसे एक चिठा मीगती बूंधु  
आती दिखन लयी जिसक चारों मार गुनी सुमीला देवदत्त सामु माँ और बापु  
रोखे दिलायी दिये ।

उसने पबराकर दला—तो उसका अलता मस्तक बीछार में भीय रहा था ।

मंत्रियाँ घूरते बैठे भीतर बाबू को गाड़ी ने खण्डवा रात के दो बजे छोड़ दिया। इतनी रात में उनकी समझ में कुछ नहीं आया कि क्या करें कहाँ जाएँ ? विस्फुल्ल अमरानी बगल और बहू भी बिना सामान के। स्टेशन पटरियों के पार या जहाँ दो चार कुसी बाँध मरते किसी गाड़ी की प्रतीक्षा में लड़े थे। मोटरबिज बाकाय के अंधेरे में उदास फँसा हुआ था। प्रतीक्षित गाड़ी की रोशनी उमरती जमी आ रही थी। वे भी आश्चर्यचकित चढ़कर उभर ही लड़े। किसी कुसी ने बताया कि गाड़ी बम्बई से आ रही है। बम्बई जाने वाली गाड़ी के बारे में मामूम हुआ कि सबेरे आठ बजे मिलेगी उम्हने तब किया कि वे रात किसी तरह बिना सबेरे बम्बई की ओर चक देंगे। तब तक वह गाड़ी आ गयी जिसके लिए कुली तैयार लड़े थे। अचानक के लिए चूँकि यह पंजपन था इसलिए घासी भीड़ उतरती। वे मोटरबिज के पास ही एन स्टार्ट के नीचे लड़े हो गये और सवारियों को देखने लड़े। मराठी मारवाड़ी हिन्दुस्तानी सभी ता थे। बोड़ी डेर पूर्व का सान्त बाता करण अनायास के इस काकाहूँल से हड़बड़ा उठा था। सावा दौर था। कई पुलिस के गिपारी भी जाने क्यों तेजी से बिम्बों में ताक-साक कर रहे थे तथा सवारियों

को घूर रहे थे। एक मोटी सी पगड़ी बाँधे अमेज लैमडा हाड़ी के सहारे भी में धमक लाठा भोवखिन्न की तरफ हाँ बड़ रहा था। अनेक सवारियाँ अब ओवर ब्रिज पर से या तो स्टेपन स बाहुर जान के लिए या फिर अजभर गाड़ी पकड़ने के लिए जमी जा रही थी। गाड़ी पंजाब-मस थी। मेस ने तब सीटी बी बी गाड़ी 'सो-सूँ' कखी जसने लगी। खुली हुई खिड़कियाँ फिर बन्द होने लगीं। बा पुलिस के कास्टेबल और एक सब-इन्स्पेक्टर काफी परेगन मजर आ रहे थे। वे कुछ दर तो जाती गाड़ी और जाली फ्लटफार्म पर खड़े रहे फिर वीली सिगरेट सुलगा बाँधे करने लगे।

—मुंशी जी ! पता नहीं सामा कहीं निकल गया।

—मैग तो बर्मा साहब ! आप म पहले ही कहा था कि बहु बहमाग घखीरलस इन्दौर जाने के लिए सज्जा नहीं उठरेमा।

सब-इन्स्पेक्टर बर्मा काँस परगान मजर आ रहे थे। मुंशी जी की पाठ सर और मीर कर रहे थे। तीसरा सापी लो कि मुमकमान कास्टेबल या बोमा

—बमाब ! मुसाबल तक ता मुझे मालूम है कि बहु कमबस्त था।

बर्मा साहब खिड़ गये।

—तुम मुसाबल की बाँधे कर रहे हो मैं कहता हूँ बहु खण्डना तक था और मुझे पूरा मक है कि वह कई मारवाही के मेस में इस समय इन्दौर-अजमेर वाली गाड़ी में ऊपर की सीट पर बने स सोने की काशिस में होमा।

बात तीनों को ही पते की मयी और वे बीड़ियाँ फेंक ठेकी से कमर के पट्टे ठीक कर, टोपियाँ पहन फूर्नी से ओवरब्रिज खजने को हुए कि उनकी दृष्टि भीमर बाबू पर पड़ी। बर्मा ने एक बार उन्हें घूर और कड़क कर पूछा

—बया नाम है ?

—भीमर ठाकुर।

—वहाँ से आ रहे हो ?

—इन्दौर से।

—पता क्या कर रहे थे ?

—गानी बल रहा था।

—वहाँ जायापे ?

—बम्बई।

बर्मा ने जिननी ठेकी स मबाब किन्धे थे उतनी ही ठेकी से जबाब दिखने पर मालूम



महीं रहा और वे तीना मोवरहित थे चले जा रहे थे । इस ठीकी रात में भी भीषण बाढ़ को काठी पसीना हो आया । जब तक दिमाग एकदम संज या लेकिन अब बड़ी तेजी से वे साँपने लगे । जैसे कि बिघन बाढ़ व बारे में पुलिस की उपस्थिति में विचार करना भी सतरे से जानी नहीं है । अजीब तरह से मन फिर उठा— क्या बिघन बाढ़ इसी पंजाब मस से अभी उतरें है ? सफ़ीउल्लाह बही तो है— तब वे इस समय कहाँ है ? क्या मेघ वरुणे व अभी यही सं गये है ? क्या उन्होंने उन्हें नहीं देखा हुआ ? माम का देखा हा और पुलिस के डर क हमारे कुछ न बोले हों तो क्या उन्हें छोडा जाए ? लेकिन पुलिस भी तो उनकी खोज कर रही है । अगर पुलिस उन्हें इन्दौर वाली गाड़ी क पास बमता हुआ देखेगी तो उस पक्ष हो जाएगा कि कहाँ तो यह व्यक्ति बम्बई जाने की बात कर रहा था और कहाँ इन्दौर वाली गाड़ी के बचकर काट रहा है । अगर शक में आता है । तब क्या वे शक में पकड़ नहीं लेंगे ? यह भी तो हो सकता है कि वे यहाँ उतरे ही न हों । कगता है पुलिस बड़ी सरपरी से उनका पीछा कर रही है ।

मालबा-हाउस वाला पक्ष्य का किस्सा होगा ।

उम पार का प्लेटफार्म रोसनी में किश्त स्पष्ट दिख रहा था । सवारियों की आसी भीड़ बहाँ हो लगी थी । पुलिस के तीनो सिपाही सवारियों को बुरते फिर रहे थे । गाड़ी प्लेटफार्म पर समने आ रही थी । सवारियाँ बचकम-बुनना करती बड़ती गाड़ी में सामान फेंकती बड़ने के लिए जवाबदी कर रही थी । भीषण बाढ़ की समझ में कुछ महीं आया कि क्या करें । बिघन बाढ़ अगर इस समय यहाँ उतरे है तो उनसे किस प्रकार भिना जाए और अगर नहीं उतरे है तो बेचारे कितनी परेशानी में होंगे । अग में यही लय किया कि एक बार प्लेटफार्म पर कोमिस तो की ही जाए । अगर पुलिस ने फिर पूछा कि यह यहाँ क्या कर रहे है तो कह देंगे कि सभरे जाठ बने गाड़ी जाती है तब तक आराम करने की जगह खोज रहे हैं । वे सीढ़ियाँ बड़ने लगे । सीढ़ियाँ बचकर जब वे मोवरहित के ऊपर पहुँचे और मुड़े तो उनका पैर साठी स टकरा गया और वे फिर पड़े । कुछ सस्ताहट भी हुई कि निर्लमने प्राय ऐसी ही जगहों पर सोते है और अपनी काठी बनीरह भी ठीक से नहीं रखते । तभी उन्हें हल्की सी आबाब सुनायी दी —भीषण ।

भीषण बाढ़ बँके । यह तो कोई उन्हें ही पुकार रहा है । नहीं, मम हुआ ।

—भीषण ।

—कौन ?

श्रीधर बाबू को इस्का विश्वास हो गया कि गठरी बना मुह छपेटे जो व्यक्ति  
बेठा हुआ है वह निश्चित ही बिगन बाबू है। यदि सारा काण्ड मासूम न होता  
तां वे कभी नहीं समझ पाते कि कौन पुकार रहा है।

—इन्दौर वाली गाड़ी पर मत जाओ। गाड़ी के जाने के बाद एक बार पता लगाना

कि वे तीनों चले गये कि नहीं। उसके बाद भिस्मा। मैं यही हूँ। जाओ सब।  
श्रीधर बाबू उन्हें सीढ़ियों से झूट धाये। एक बंध साखी थी बिगनमन से हल्ले  
पर सिर रख सेंटे खो गये। सोहे का ठग हत्या घटना में घुम रहा था लेकिन  
मात्र की रात की यह बिपमता साहज बिगन बाबू का इस प्रकार भिस्मा पुलिस  
जाने क्या क्या सोचते जैसे में खे वे कि वे तीनों फिर इधर ही जाते बिगामी  
दिये और यहाँ भी सवारियों का घुंरने लगे। जैसे में सेंटे श्रीधर बाबू को फिर  
सकजारा

—कौन हा जी तुम ?

और श्रीधर बाबू को देखकर वे फिर सस्माते हुए जागे बड़ गये।

और इन्दौर गाड़ी की तरफ जब वे लोग वापिस लौटे जा रहे थे तब बर्मा को  
बोसते सुना कि

—शफीक ! वो जो पुलिस की बर्ही में बैठा था न ?

—जी हाँ।

—उसी पर मुझे एक है।

इन्दौर गाड़ी चली गयी।

जैसे दूर सही गाड़ी में चढ़ते हुए पुलिस के आदमियों को श्रीधर ने देखा था लेकिन  
फिर भी सम्पूर्ण आश्चर्यता के लिए वे एक बार उस छोटी साइन क प्लेटफर्म  
को देख आये। मोटरजिज पर जब वे बिगन बाबू से मिलने आये ता बड़े सक  
पकाये क्याकि बिगन बाबू वहाँ नहीं थे। श्रीधर बाबू ने चबराकर अपने चारों  
आर देखा तो आश्चर्य न आ गये। वही भी दूर-दूर तक बिगन बाबू का पता नहीं  
था। एक बार वे साधने लगे कि किससे बातें की थी वह बिगन बाबू ही थे न ?  
हाँ और क्या बिस्मूल नहीं जानाज थी। तब क्या हा ? सहसा उन्हें वही रात वाला  
संगड़ा उसी तरह काठी लिए दूर नल के पाम हाप मुँह भोगा लिखायी दिया।  
श्रीधर बाबू समझ गये कि वही बिगन है। रात को भी तो यही संगड़ा जब उनके

पास से गुजरा था तो कितना बुर रहा था। सब नहीं समझ पाये थे श्रीधर। किस कौशल से बेप बदला हुआ था कि श्रीधर तक न पहचान सके थे। तब मसा पुस्सि बाड़े चित्रों के आपार पर क्या साक्ष्य पहचानेंगे ?

जब वे नस के पास पहुँचे सारा ज्येष्ठकार्य पाली पड़ा था। चित्राओं की दूकान होटल वगैर सभी बन्द थे। खाली काइलें बन्द रखी थी। श्रीधर ने पास पहुँच कर बिस्कुट पहचान सिमा कि विघन बाबू ही हैं। लक्ष बुला हुआ था। विघन ने बहुत भीम से बताया कि स्टेशन के बाहर घमसासा है नहीं वे जा रहे हैं और श्रीधर वहीं जाये।

वहाँ पहुँचकर दोनों काफी दूरी आपस में बनाये रखे तथा श्रीधर उनके पीछे-पीछे जाये—ऐसे नहीं कि पीछा कर रहे हैं।

रात के चार घंटा ही थे। सुनी सड़कों पर कोई नहीं था। औंठते कुत्ते बीरान सड़कों वाली दूकानों वाली बस्ती को पार कर बे सो ग रेल पटरियों पर जब काफी दूर निकल आये तब कहीं जाकर विघन ने अपनी लँगड़ी छाड़ी। बाहिनै हाथ पुरब में प्रकाश फूटने का उपक्रम हो रहा था। घोर के पूर्व क पूछते आकाश में सन्धे की ठाबी जमनी हुआ स्वच्छ बह रही थी। आँखें बुर सूट गया था। काफी दूर पीछा करने के बाद श्रीधर विघन को पकड़ लके। दोनों रेल के स्वीपरों पर पैर रखते बड़ रहे थे।

—क्या जनाब ! तुम लपटबा में क्या कर रहे थे ?

—मेरी छोड़ो मह बताओ कि यह तुमने क्या स्वाँग बना रखा था ?

—देखो प्रश्न पहले मैंने किया है।

—लेकिन उत्तर पहले तुमको देना हीमा।

—सबेरे-सबेरे सगड़ा करने से पूरा दिन सगड़ा करते बीठता है माकूम भी है कुठ ?

—तो विघन ! तुम मुझसे हमेशा छुगते रह हो। मुझे सब माकूम है।

—तो फिर क्या जानना चाहत हा ?

तब तक एक बड़ी सी पुश्तिया आ गयी। वे लोग भीच उतर आये। वड़ा सुन्दर कोई नाका बह रहा था।

—श्रीधर ! जल्दी वहाँ बैठ कर बातें करेंगे।

और श्रीधर ने देखा कि दूर बिग्या की शेरियों के बीच एक बड़ा-सा झुरमुट से होकर नाका आ रहा था। उसी की ओर विघन ने संक्षिप्त किया था। रेल की पटरियों ऊँचाई पर पीछे छूट गयी थी। प्रकाश ठाबी से टँकने लगा था। चारों

और स्पष्ट निराश्रयता थी ऐसी कि मुझे भी गिराई तो बोम हा जाता। श्रीधर बिघन के पीछे-पीछे बस रह थे। वे बिघन से बहुत कुछ पूछना चाह रहे थे लेकिन यह भी जानते थे कि बिघन का अपने लक्ष्य में हाने का क्या कारण रहे ?

बीब के एक स्टेशन स बापहर बासी यानी पकड़ के काग राम को इन्दौर पहुँचे। श्रीधर को बिदबाम नहीं हुआ रहा कि कल जिस गहर को सगा के सिद्ध छाड़ पये थे वहाँ इस प्रकार और इतनी जल्दी बापस सौट आना पड़ेगा। जब श्रीधर ने बताया कि उन्हें क्यों इन्दौर छोड़ देना पड़ा था बिघन पहुँच था खूब हैना उपरान्त गम्भीर हो गया। वहाँ नाके पर हा बिघन ने माछरी बीबी स किने गये स्याह के प्रस्ताव की भी बात बतायी। और यह भी कि बीबी कमी तैयार नहीं हानी बर्ना यह उनम स्याह करना चाहता है। बिघन ने कोई आश्चर्य नहीं प्रकट किया कि श्रीधर को सब मामूम हा गया है कि रोडो सेक्सन का वास्तविक परिचय क्या है तथा ये सगा क्या करने जा रहे हैं। श्रीधर न जब राजी मकमल क स्याह की बात बतायी जा कि उसक मिन्धीपक ने बताया थी था यह खूब हैसा। बिघन स्वय कई बार सोच चुका है कि श्रीधर का इस प्रकार कितने दिन चलगा। लेकिन श्रीधर से भविष्य क लिए उनने यह बाणा करवा लिया कि वे कोई ऐसी नावानी नहीं करेंगे। यदि श्रीधर इन्दौर छोड़ना ही चाहते हैं तो वह बम्बई, पूना अजमेर, आपरा दिस्की वहाँ भी प्रबन्ध करवा दया लेकिन श्रीधर का जल्दबाजी नहीं करनी होगी।

इन्दौर पहुँचकर बिघन बाबू किन्तु ही सड़क अपने वही पुराने बिघन हो पये। श्रीधर को लगा कि बिघन में स्पष्टता दो अकिन्तव है। जिस रहस्यमयता को वे बिघन के चारों ओर अनुभव करते थे आज उन उन्होंने देख लिया था।

घर पहुँचकर स्वस्य एव मुचित हो वीलों मालती बारी क यहाँ पहुँचे। वानों ही प्रतियुग थे कि कल गाम से लेकर आज तक जा भी कुछ हुआ है उस बारे में वे कनी मुँह नहीं मोनेये। जिस बेला दोना बीबी क यहाँ पहुँचे वे भागवत

बोच रही थी। बिगत और भीबर को एक साथ देखकर वे चौंकी। बैठते हुए बोली

—यों भीबर। अब तुम भी रात रात भर भर से गायब रहने लगे ?  
—नहीं ता ?

—ओ इन्ही मुझी को झूठा बनाता है। क्या कर रात तुम घर पर ही थे ?  
—घर पर ? हाँ मही असल में खीवी। कई दिनों दफ्तर का काम मही किया था म इसलिये

—तब तुम दफ्तर ही में रह गये है न ? सछमन। ओ लछमन !  
और लछमन ने प्रवेशा। बिगत बाबू और भीबर बाबू को तमस्वार कर सिर मुका पडा हो गया।

—सना लछमन ! भीबर दफ्तर ही में था म ?—क्यों मूठ बोलते हो अधिक ?  
कर म तुम घर पर थे न दफ्तर में थे और न पुस्तक साहब के मही। बोड बेचारे मारापन बाबू तुम्हारे पीछे बन्द कर बाट कर भाग बस गये बापस। क्या मूठ बोलती हैं म ? तुम उनसे बचने क किये नहीं छुन गये थे है न ?

—असल में खीवी ! बाट यह की कि  
—बात-बात कुछ नहीं। बेचारी बहू को सबर मही मेजना जिस काम के किये कर स भाये उस बारे में कुछ नहीं करना। अरे म कहुती हैं तुम इस बिघन के बन्द कर में रहे ता पूक हो जाओगे। बहू तो एक दिन फौजी बनेगा ही नामत तुम्हारी है। यह तो फौजी पाएया ता घड़ी-द कहुलाएया बेल जाएया तो नेता बन जाएया लेकिन तुम क्या करोये ? इसके गुन सीखो तो फिर अपनी इन्तु खीवी को जाकर ब्याह का प्रस्ताव उनके सामने रखोने किसी बिम। यह तुम लोगों ने क्या कया रखा है ? किनी की मजाल है जो इन महाशय से पूछे कि उत्तर में जाने के लिए कह कर दलिय में कमे पाये जनाब ? देखो भाई मरा तुम लोगों पर कोई अविचार तो नहीं है कि कुछ ज्यादा कह सकूँ। अविचार तुम ही लोगों ने दिया है जाहो तो बापम क लो मजिल जब तक अविचार है खौपी ही अयर बम-पिन्तीक ही बसने हैं ता मे लो बाब बायीं। क्यों उम कमल की सिन्दगी बरबाद करना चाहता है नाई ? ब्याह का प्रस्ताव मुझमे करेगा और ममी को बन्द स पत्र मिलता है कि बमले अविचार को कमल नि ब्याह करेया।  
भीबर चौंके। इतनी सारी बार्ने हुई पर बिगत ने इस बारे में पता नहीं क्यों कुछ

भी नहीं बताया ? उन्हें किंचित बुरा सा लगा कि विमान एक दूरी रहस्य बराबर रखता था वह है । कभी हम बात की तो कभी उस बात की ।

बिगन भी समझ गये कि भीयर को बुरा लगा है । वे भीयर को बताया बचस्प चाहते थे लेकिन पहले दीर्घ सं बातें करने के बाद । बड़ी अजीब परिस्थिति उत्पन्न हो गयी थी । इसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा भी हो सकता है ।

शारदा इस बीच नास्ता पानी ले आयी थी । मास्ती के चुप हो जाने से साहसा ही कमरे में अबोधापन फिर आया था जिस हल्का करते हुए बिसन बोला — बह टांगेगी ही या कुछ लिखाभोगी भी ?

बिसन की बात खो गयी । कोई नहीं बोला । जैसे बगल में बाक्य जो गया हो । मास्ती ने अबोधे ही दोनों को चेटों में नास्ता दिया । दोनों में से किसी का चाहस नहीं हुआ कि पूछें वीदी ! आप नहीं जेंगी ? कमरे में चप्पलों की आवाज ही रह-रह कर उमर आती बाकी सब नि गम्य था । सभी को अबोधापन बड़ा भारी कम रहा था । झटाट बिगन बाबू ने भीयर से पूछा

—क्यों भीयर ! तुम्हें कुछ माना-जाना भी आता है ?

भीयर इस अनपेक्षित प्रश्न को समझ न पाया ।

—नहीं तो ।

—तुम्हें बघी आती है । बंदी सीखाने ?

—नहीं ।

मास्ती बिगन की शरारत समझ गयी कि किसी तरह न बोलने का बोझा थोड़ा कम हो तो कुछ मार्ग बने । वह भी देखती रहीं कि जब तक यह ऐसे ही बोलता है ।

बिगन बड़े जोरों पर हँसा ।

—तब तो तुम साझात पम्पु हो ।

और सहसा सड़ें होकर बड़ी ही नाटकीय मुद्रा में हाथ जोड़कर बिसन बाबू बोले — हे संवीनहीन पञ्चराज ! हम आपके दयालु पा इतना हुए । आप जैसे अबतारी पम्पु सभी युगों में संवीत के नाम होने पर उन्मत्त होते रहते हैं—बाहिमाम हे पञ्चराज ! अपने चरम-चुर आगे बढ़ाएँ, हम उन्हें प्रणाम करते हैं ।

और मास्ती बड़े जोरों से हँस की भीयर भी हँस लिया । मास्ती बोली

—बड़ा अच्छा कल्पना है न ? इतना बड़ा हो गया और बच्चों की तरह छिड़ोरपन करता है । भगवान जाने तुमने अंग्रेज क्यों और किम तरह करत है ?

- जानती हो दीनी ! पाने के बाँट दूसरे होव है और बचाने क दूमरे ।
- ठीक है, लेकिन अब क्या साबा है ? क्या उस बेचारी को परेधान किये हा ?
- किये ?
- कमल को ।
- अरे दीनी ! बही मुझे परेमान किये है ।
- तेमे ही ता रामकुमार हो न ?
- तुम क्या जानो । ठीक सभी तो तुमन पुत्कार बिना लेकिन कमल स पूछो कि रामकुमार हूँ कि नहीं । अब बीबी एक बात है ये बीबर महामम मतलब पढित बीबर ठाकुर है न ? ये बुरा मान बैठे है कि मैंने हन्हें नहीं बचाया ।
- ठीक ही तो माने बैठा है । क्यों बुरा मान बैठे हा ?
- गायद ।
- रखो बीबी ! ठाकर महाराज बुरा भी किस घामीगता से माने है ।
- अरे नहीं ता क्या तुम्हारी तरह कि ऊँचा मुँह करके पमे तो पता ही नहीं । अरे बीबर ! इसकी माता का जो बुरा माने बही मूर्ख । कमी जान तक इसने मुझे काई बात बतायी ?
- देखो बीबी झूठ बोलोनी तो पाप बडेमा । पाप बडेमा तो पुष्य पडेमा । पुष्य पडेमा तो क्या होता है बीबर ! पुष्य बटने पर, अरे बोको ?
- तुम्हारा सिर ।
- और मास्ती यह कहती उठ गयी । मास्ती के बस जान पर बीबर बासे
- भाकिर इतना सारा नाटक करने की क्या आवश्यकता है ?
- तुम बानों को प्रसन्न करना ।
- क्यों ?
- इसलिए कि बीबी बहन है और बीबर भाई । और दोनों को कमी जाने कमी बनवाने कई कारों नहीं बता पाता हूँ तो ये बानों नाराज हो जाते हैं । अलग्ग भयवान के नाराज होने पर साग सरधनारामन की कथा करवात है जब कि अपने कारों क नाराज हो जाने पर मैं नाटक करने लग जाता हूँ । बिमन इस घाटी बात को अजीब बंम से ख्यात्मकता स बोक रखा ना कि बीबर को गजबुध की हेमी आ गयी । मास्ती लौटी
- अच्छा अब बहुत हुआ । साग पानी तैयार है । तुम साग तैयार हो जाओ ता गारबा की बूटह-बोके स फुर्मंत हो । तुम कारों के मारे तो सभी ना काम बड़ जाता है ।

बात हुए विप्लव को सफल करते हुए बोलीं

—बस सब प्रबन्ध कर रही हूँ बाद में मठ मुकर जाना बना मेरी हँसी होगी।

—केफिन दीदी। प्रबन्ध क्या करना है ?

—हाँ प्रबन्ध क्या करना है ? तुना भीयर ! इसकी समझसे तो कुछ प्रबन्ध करना ही नहीं है।

—मपर दीदी ! ब्याह तो कोर्ट में होगा।

—कोर्ट में हो जाहे जेस में तेरा ब्याह। एक बार बिना जन्मि की मास्ती के मैं नहीं मानने की। ब्याह न हुआ स्कूल की मर्ती हो पसी कि रजिस्टर में नाम लिखा दिया।

—तुमो तो तुम नहीं जानती बड़ी मजदूर है इसमें।

—देस भाई, या तो तू ब्याह कर ले या ब्याह का प्रबन्ध कर ल।

—जैसी इच्छा।

—और जैसा तू कहेगा बड़ी हाया। तुने अब बिट्टा में लिख लिना कि मेडिकल स्कूल क तेरे कोई पहरी मित्र है जन्ही के कमरे पर सब हागा। ठीक है ब्राह्मण बही पहुँच जाएगा। पहलु काट हो आना उसके बाद बही हो जाएगा। तब तो ठीक है ?

—तो इसमें प्रबन्ध क्या करना है दीदी ?

—अच्छा हुआ मनवान ! या मने तुझे सुस्कार दिया। बेचारी कमल का ऐमे मूर्ख क साथ कैसे निबाह होगा ? मूर्ख की सबसे बड़ी पहचान क्या होती है भीयर ! जानन हो ?

—हाँ जानता हूँ।

—क्या होती है बताओ ?

—मूर्ख न तो स्वयं कुछ साबता है और न ही चाहता है कि हमरे मी कुछ मोर्खे। सभी बिगन तपाक म बोला

—नहीं आप लोगों को नहीं मान्दुम। मूर्ख बह होता है बिना बो मूर्ख प्रमाणित कर दे कि यह असमी मूर्ख है।

और तीनों हमने मये।



- जागती हो दीनी ! जाने क दाँत दूसरे होते हैं और बराने क दूसरे ।
- ठीक है, लेकिन अब क्या सोचा है ? क्यों उस बेचारी को परेशान किये हा ?
- किस ?
- कमल को ।
- अरे दीनी ! वही मुझे परेशान किये है ।
- नेम ही ता राजकुमार हो न ?
- तुम क्या जानो । तीन लक्षी तो तुमने पुत्कार दिया लेकिन कमल से पूछो कि राजकुमार हूँ कि नहीं । अब बीबी एक बात है ये भीपर महाशय महलभ पहिल भीपर ठाकुर है न ? ये बुरा मान बैठे है कि मने इन्हें महीं बताया ।
- ठीक ही ता माने बैठा है । क्या बुरा मान बैठे हा ?
- सामन ।
- ओ बीबी ! ठाकुर महाशय बुरा भी किस शाहीमता से माने हैं ।
- और नहीं तो क्या तुम्हारी तरह कि ऊँचा मुँह करके गये तो फटा ही महीं । अरे भीपर ! इसकी बातों का जो बुरा माने वही भूल्ल । कभी आज तक हमने मुझे कोई बात बताया ?
- देवा बीबी झूठ बोलायी ता पाप बड़ेगा । पाप बड़ेया तो पुष्य मरेगा । पुष्य मरेगा तो क्या होता है भीपर ! पुष्य पटने पर, अरे बोको ?
- तुम्हारा सिर ।
- और माकली यह कहती उठ मरी । माकली क बर्र जाने पर भीपर बोले
- माकलिर इतना सारा नाटक करने की क्या आवश्यकता है ?
- तुम दोनों को प्रसन्न करना ।
- क्यों ?
- इसलिए कि दीवी बहन है और भीपर माई । और दोनों को कमी जाने कमी मनवाने कई बातें महीं बता पाता हूँ ता ये दोनों भाग्य हो जाते हैं । अनएक भगवान के नाराज होने पर लोग सत्यनारायण की कथा करवाते हैं जब कि अपने लोगों क नाराज हो जाने पर मैं नाटक करने लग जाता हूँ । विमन इस घाटी बात को अजीब ढंग से लप्यात्मकता से बोल् रहा या कि भीपर का गबगुब की हँसी आ गयी । माकली लौटी
- अच्छा अब बहुत हुआ । परम पानो ठीकार है । तुम लोग ठीकार हो जाओ तां पारदा को बूझू-बोके से फुसल हो । तुम लोगों क मारे ती सभी का काम बढ़ जाता है ।

बात हुए बिचन को लक्ष्य करत हुए बोलीं

—सब सब प्रबन्ध कर रही हूँ बाग में मत मुकर जाना बर्ना मेरी हँसी होगी ।

—ककिन सीरी ! प्रबन्ध क्या करना है ?

—हारे प्रबन्ध क्या करना है ? सुना श्रीधर ! इसकी समझ तो कुछ प्रबन्ध करता ही नहीं है ।

—मपर सीरी ! ब्याह तो कोर्ट में होगा ।

—कोर्ट में हो बाह जेठ में तेरा ब्याह । एन बार बिना अग्नि की मासी के ये नहीं मानने की । ब्याह न हुआ स्कूक की मर्ती हो गयी कि रजिस्टर में नाम लिखा दिया ।

—सुनो ता, तुम नहीं जानती बड़ी झमट है इसमें ।

—देख मारि, या ता तू ब्याह कर छ या ब्याह का प्रबन्ध कर ले ।

—बैती इच्छा ।

—जीर जैसा तू कहेया बड़ी होगा । तुने अब बिट्ठी में लिख लिया कि मडिकस स्कूल क तेरे कोई जौही मिग है उन्ही के कमरे पर सब हाया । ठीक है, बाह्यग यहाँ पहुँच जाएगा । पहल कोर्ट हो जाना उसके बाद वहाँ हो जाएगा । तब तो टीक है ?

—तो इसमें प्रबन्ध क्या करना है सीरी ?

—सच्छा हुआ मगवान ! जो मने तुझे दुष्कार दिया । बेबारी कमरू का ऐसे मूर्ख क साथ कैम निबाह होया ? मूर्ख की सबस बड़ी पहचान क्या हस्ती है श्रीधर ! जानने हा ?

—हाँ जानता हूँ ।

—क्या होती है बतारो ?

—मूर्ख न तो स्वयं कुछ साधता है और न ही चाहता है कि घुमरे भी कुछ नाचें । तमी बिचन तपाक से बोला

—नही आप साथों को नहीं मानम । मूर्ख बह होता है बिने दो मूर्ख प्रमायित करे कि यह असली मूर्ख है ।

और तीनां हँमने सगे ।

- जातरी हो बीबी ! जाने क बात दूसरे हाते हैं और बराने क दूसरे ।
- ठीक है, लेकिन अब क्या सोचा है ? क्यों उस बेचारी का परेधान किये हो ?
- किस ?
- कमल को ।
- अरे बीबी ! वही मुझे परेधान किये है ।
- जैसे ही तो राजकुमार हा न ?
- तुम क्या जानो । ठीक अभी तो तुमने घुत्कार दिया लेकिन कमल से पूछो कि राजकुमार हैं कि नहीं । अब बीबी एक बात है ये श्रीधर महाशय मठस्व पंडित श्रीधर ठाकुर हैं न ? ये बुरा मान बैठे हैं कि मैंने इन्हें नहीं बताया ।
- ठीक ही तो माने बैठा है । क्या बुरा मान बैठे हो ?
- नाथ ।
- वला बीबी ! ठाकुर महाशय बुरा भी किंच घापीनता से माने हैं ।
- और नहीं तो क्या तुम्हारी तरह कि जैसा मुंह करके गये तो पता ही नहीं । अरे श्रीधर ! इसकी बातों का जो बुरा माने वही मूर्ख । कभी आज तक इसने मझे कोई बात बतायी ?
- देखा बीबी झूठ बोलागी ता पाप चड़ेगा । पाप चड़ेवा तो पुण्य चटेगा । पुण्य चटेगा ता क्या होठा है श्रीधर ! पुण्य चटने पर, अरे बोलो ?
- तुम्हारा फिर ।
- और मास्ती यह कहती उठ गयी । मास्ती के चले जाने पर श्रीधर बोले
- मास्तिर इतना सारा नाटक करने की क्या आवश्यकता है ?
- तुम बोलों को प्रसन्न करना ।
- क्यों ?
- दुःखिण कि बीबी बहुत हैं और श्रीधर भाई । और दोनों को कभी जाने कभी बनवाने कई बातें नहीं बता पाता हूँ ता ये बोलों पारान हो जाते हैं । अतएव मगवान के नाराज होने पर साग सत्यनारायण की कथा करवाते हैं जब कि अपने स्त्रियों के नाराज हो जाने पर मैं नाटक करने अब जाता हूँ । बिना इस सारी बात को अभीष्ट बंग से क्यारतकता से बाल रहा था कि श्रीधर को सबमुच की हँसी आ गयी । मास्ती लौटी
- अच्छा अब बहुत हुआ । गरम पानी ठंडार है । तुम जोय तैयार हो पाओ ता गारवा को चूस्ते-चोके से फुँवत हो । तुम लोगों क मारे ता सभी का काम बंद जाता है ।

बात हुए विद्यान को लक्ष्य करते हुए बोलीं

—यब सब प्रबन्ध कर रही हैं बाद में मठ मुकाम जाना बना मेरी हँसी होगी ।

—केन्द्रि दीदी ! प्रबन्ध क्या करना है ?

—हाँ रे प्रबन्ध क्या करना है ? सुना भीपर ! इसकी समझसे तो कुछ प्रबन्ध करना ही नहीं है ।

—मपर बीनी ! ब्याह तो कोर्ट में होगा ।

—कोर्ट में हो जाहे बेरु में तैरा ब्याह । एब बार बिना अग्नि की साक्षी ने मैं नहीं मानने की । ब्याह न हुला स्कूल की मर्ती हो गयी कि रजिस्टर में नाम लिखा बिया ।

—सुना ता, तुम महीं जानती यड़ी शकट है इसमें ।

—देख भाई, या तो तू ब्याह कर से या ब्याह का प्रबन्ध कर से ।

—बैसी इच्छा ।

—मीर जैसा तू कहेमा बही होगा । तूने अब पिट्टी में लिख दिया कि मडिकल स्कूल के तेरे कोई पंहुती मित्र है उन्हीं के कमरे पर सब होगा । ठीक है, ब्राह्मण बहों पंहुत आएगा । पहल कोर्ट हा आगा उसके बाब बहाँ हो आएगा । तब तो ठीक है ?

—तो इसमें प्रबन्ध क्या करना है बीवी ?

—अच्छ हुआ भगवान ! जा मैंने तुझे तुलकार बिया । बेचारी कमल का ऐसे मूख क साम कैसे निबाह होया ? मूर्ख की सबसे यड़ी पहचान क्या होती है बीबर ! जानन हो ?

—हाँ जानता हूँ ।

—क्या होती है बटाबा ?

—मूर्ख न तो स्वयं कुछ साबता है और न ही चाहता है कि दूसरे भी कुछ सोचें । तभी बिदान तपाक ने बोला

—गहीं आप लोगों को नहीं मान्युम । मूर्ख बह हाता है जिस का मूर्ख प्रमाणित कर दें कि यह असली मूर्ख है ।

मीर तीनों हमने मने ।

आज रविवार था ।

बिपिन और कमल के ब्याह का दिन ।

इस ब्याह को अत्यन्त यौपनीय रखा गया था । कमल ने तथा बिपिन ने काफी पहले ही पुस्तक के साहब से प्रयत्न भर प्रयास किया था कि उन्हें बिवाह करने दिया जाए । लेकिन पुस्तक के साहब ने अपनी सड़की को ऐसा झाड़ा था कि फिर उनसे बातें करने की किसी की हिम्मत नहीं हुई । बिपिन ने जब देखा कि पुस्तक के साहब यह बिवाह कभी न होने देंगे तो एकदम साधा अवश्य था कि पुस्तक के साहब पर अन्य किसी के द्वारा और बलवाया जाए । लेकिन बिपिन ने समझदारी ही की कि इस बारे में किसी से बर्बा नहीं की । यद्यपि लोगों में इस बारे में विशेषकर बकीलों बाकी इस कांग्रेसी-राजनीति में बिपिन और कमल के सम्बन्धों को लेकर काफी बर्बा थी । जो साग पुस्तक विरोधी बल के दे दे इस किराके में से बिपिन एक बात भी यदि बर्बा कर दे तो वे जान लगा देंगे और ब्याह करवा देंगे । पुस्तक के साहब तब से कमल के प्रति अधिक सतर्क रहने लगे थे । संभव था कि कमल को इसलिए जगहाने बम्बई में उसके मामाके यहाँ भेज दिया हो ताकि सामने न

खेगी तो बात भी नहीं बड़ेमी और पिछली बात भी आयी गयी हो जाएगी । जब इन तरह दो-तीन बरस बीत गये तो पुन्तके साहब समझे कि अब कहीं कुछ नहीं है । हमरे सोच भी बही समझे ।

सत्याग्रह के अबसर पर जब कमल कुछ दिनों के लिए आयी और उसे बिगान से कुछ-मिठके देखा ता पुस्तके साहब क कान बड़े हुए । उन्होंने कमल के सीटने पर कमल के मामा को सूचना कर दी कि वे कमल को कही अधिक भूमन-फिरने न हें । न ही उस कही बम्बई के बाहर आने-जाने दिया जाए । कारण उन्होंने नहीं लिखा । लेकिन कमल के मामा कमल के पिता की मीठि न तो दासकी स्वभाव के ही से और न इकियानूस ही । बिलायत से बैरिस्ट्री पास किया ब्यभित' तथा स्वयं एक अवेज महिला से बिबाह किया बा किस प्रकार इन बचनों को मानता ? कमी-जमी बिगान के यापक हो जाने पर वे बम्बई अपने सास को पत्र लिखकर पूछ सेते कि कोई पीछे से कमल से मिठने तो नहीं आया या ? कमल क मामा ईसकर उत्तर दे सेते कि नहीं कोई ऐसी बात नहीं है । जब कमी बिगान बम्बई आता तो कमल कालेज की पिकनिक या और कुछ बहाना बनाकर बिगान से बरा बर मिठती ।

बिगान ने यह उचिचार इसलिए चुना था कि एक सन्ताह के लिए कमल के मामा अपने किमी मुकदमे के सिवसिले में पूना जाने वाले से साथ में उनकी पत्नी भी । यही अबसर था कि कमल बम्बई से चार-पाँच दिनों के लिए यापक हो सकती थी ।

तब यही था कि घनिवार को कमल आयी और वे दोनों दो गवाहों को लेकर सीवे कोर्ट में जाकर अपना बिबाह करेगे । भारतीयक कार्यवाही पहले ही कर चुका था । उपरान्त कमल और बिगान मू में एक मित्र के यहाँ रात बिताएंगे और उचिचार के दिन जीहरी के हास्टल में पंडित को बुलाकर बिबाह कर लिया जाएगा । बिगान के एक अभिभावक से मुठे जी । वे इरिजम कार्यालय के मंत्री तथा पुराने ईमानदार कश्मि ब्यक्ति से । बिगान ने उन्हें सारी म्यिति से अबगन करा दिया था । इनक अलावा दो-एक मित्र और भी थे । य ही सोच कोर् में भी गवाह बने से और बैरिक् बिबाह के समय भी उपस्थित से । मामली को उप म्यिति को बिगान बहुत जरूरी समझते से । इन प्रकार एक-एक बा-बा करके सब कोप हास्टल में जीहरी क कमरे पर पहुँचे ।

हापहर का समय था । अधिकाम दूम्य था । राहर से बाहर इन एराकी मेडिकल हास्टल के चारों ओर निर्जन था । पुराने मिमिड्री की बैरकों बाव इन

हास्टस में लड़के या तो घहर घूमने पड़े हुए थे जबका जाते हुए जाड़े की अंतिम घूप का रूख थे। वहीं-वहीं कैरम या ताश हा रहा था। जौहरी के एक प्राक्लेसर मित्र का छोटा सा बैगला खाली पड़ा था वहीं लोग एकत्र थे। साय काम इतनी शान्ति से सम्पन्न हो रहा था कि किसी को तक तक नहीं था। सबसे बाह में एक ताने में बिगन और कमल जाये। दूर मर्या में स रबिबार क खाने की गंध हुआ क साय था रही थी। सड़के ठीलिये गम में कटकामे, गाठे-बजाठे महाने जा रहे थे। हास्टस में रबिबार भी उत्सव ही होता है।

श्रीपर पता नहीं कैस जौहरी को देखठ ही समझ पये कि यह भी अन्तिकारी ही हुया। जिस शास्त्र निरिखन्त भाव से यह सारी स्थिति क रहा था तथा भाष रण कर रहा था उसमे यही बोध होता था कि यह व्यक्ति सहसा किसी भी विषय परिस्थिति के आ जाने पर भी ऐसा ही आचरण करेगा जैसे कि उसके बारे में सब कुछ ज्ञात था। साय ही जौहरी ने किसी स विरोध परिचित होने की कोई चेष्टा नहीं की और म ही किसी स बोलने पर प्रदर्शित हाथा कि कैस आज पहली बार मिल रहा हो।

पंडित ने बिबाह समाप्त करवाया और बधा गया। गुंठे भी को खाने का भार श्रीपर बाबू पर था। गुंठे भी विद्या और कमल का मापीबदि देकर दोनों क बीच में बैठे। बिबाह क बाबू सूत की माकार्य पहनार्यो। माकनी बीबी ने श्रीपर को एक तरफ बुलवाया।

—श्रीपर ! के भाई बरा मेरा यह काम तो कर ब।

—बोली।

—ये तो बहू को पहना दे और यह विद्या को।

श्रीपर ने देखा कि कमल के लिए सोने की बूझियाँ गळे का हार कामों के लिए क बजस अंगूठी बिछिया तथा मगलसूत्र। विद्या के करत के लिए सोने के बटन तथा एक अंगूठी।

—सेविन बीबी ! यह क्या ?

—यव उनसे तो सपइना ही पड़ेगा ता क्या तुमम भी बहग करनी होगी ?  
महीं श्रीपर ! जा तो भाई !

—तो तुम ही क्या महीं पहना देती ?

—ह भगवान ! तुम लोनों का क्या हाता जा रहा है ? मे एक अपविषा यत्न पविष को इन बेला छू मकरी हूँ ? देखते ही मे बहू का दर्शन तक नहीं कर रही हूँ !

—यह सब किबूठ है बीने !

—जैसा मैं उसकी बिज क मामने तो मरी कुछ बसती ही नहीं इमलिए या यपी ठकित मुन श्रीधर। मैं अपनी मीमाएँ जानती हूँ तथा पाप-ताप भी।—अच्छा अब बहम मत कर माँ और जा तो जल्दी से मेरा काम कर दे। ब्याह के बाद बिना मयसमूह क बहू का नहीं रहना चाहिए। कोई स्त्री होती या नुरम पड़नवा देती। अच्छा अब जाओ तो।

जैसे ही श्रीधर का हृदय मारी बीबों के साथ बिमन ने देखा ता वह पहल तो बीब और वह इस्पाने का नी हुमा लेकिन उसने पीछे खड़ी पीरी को मसीम मतल कम्पा स्नेह की आँखों से मुस्कुराते तथा कुछ भी बोलने से बरबा कि बिमन का साहस नहीं हुआ। वह बीने को यहाँ इती दर्न पर का सफा बा कि वे चुपचाप पीछे खड़ी रहेंगी और कम से कम आज बड़ का वदन न करेगी। कमल भी एक बार बीकी। उसने बिमन की आर देता और आँखों में ही ममस से यपी कि यह किमका मेका हुआ है तथा बिमन बस्तीकाय नहीं जा सकता।

सबने साया-नीया भीर यही तय पाया कि गुंडे बी पुस्तक साहब को जाकर हम ब्याह की मूचना देंगे तथा उन्हें मनाएँगे कि जब ब्याह हा ही गया तो जब ब्याहोबाद बने में संकोच नहीं करना चाहिए। गुंडे बी का ता कहना था कि कमल उन्हीं क माय बस बकिन जौहरी तथा बिमन ने हम बारे में बिरोध किया कि सम्प्रति कमल को मुप्त ही रखा जाए। यदि पुस्तके साहब तैयार हा जाएँगे तो बल कमल और बिमन मुष्टे बी के माय पुस्तके साहब से यही बस जाएँगे।

भीर माकती के मना करने पर भी बिमन कमल का लकर पीरी के घर की आर खाना हुआ। गुंडे बी ने सौन्दे में श्रीधर को बल न बाने की सलाह दी। सधमन का लकर गिबिका में माकती जाने बालों में सबसे पजूमी बी और सबसे बाव श्रीधर। श्रीधर का तांगा त्रिम्र समय खाना हुआ नाम ही रही थी। जौहरी उतरी ही निजकमता से अपने प्रोचपर मिन के बैंगल को बल कर, ताला लगा रखा था। मबिकल हास्टल मुनमान था। लड़के या ता सहर कुमने या बुके से या कछ बा रह से। दूरी पर बन्दई-आगय राड पर मानरे आ-जा रही थी। सब नि गयर था। जैसे एक बटना हुई जैसे छाग उसे नहीं होन देना चाहत से।



पुठे भी पुस्तके साहब से मिलकर क्या लखर साये इसकी सूचना साने का मार थीबर पर था । थीबर जब बिधान के पास पहुँचा सजेरे के बस बज रहे थे । आज के पहले भी अनेक बार थीबर ने कमल को देखा था लेकिन आज कमल बहुत सुन्दर लग रही थी । कमल इतनी सुन्दरी है इसकी कल्पना भी थीबर को नहीं थी । बस अच्छी ही सवा सपी की कि—हाँ है । और जैसे भी थीबर इन मामलों में कम ही समझते भी थे । किशमिरी दक्षिणी लाट्री में बड़ा सा जूड़ा बनाये कमल, बस तक की वह कमल को कि थीबर की आँखों में थी बाब किटकी क पास पूव में बोली पर बीटी महाराष्ट्री सरकार बहु लग रही थी । नाक में दक्षिणी तप भी संभवतः मास्यी मे आज मूह-विद्यायी में कमल को भी थी । थीबर के बाठर में संभवतः जीवन में पहली बार यह क्याल आया कि पूर्ण छत्रिता सुन्दर नारी जैसे प्राप्त करने योग्य न भी हाँ ता नी उसका बर्धन करना परम उपलब्धि है ।

बिधान कमरे में नहीं था ।

—बिधान कहीं गये हैं ?

पूव में बीटी कमल ने अजीब तुली एवं सख्तज मुस्कान के साथ उत्तर दिया —नहीं गहाने गये हैं । बैठिए ।

थीबर को लगा कि कमल ने किम कोमलगा से बिधान का नाम न लेकर चर्चा की है ।

एक ही बिल में बसि एक ही रात में कमल बिधान के कितने निकट, कितनी अनुस्यूता कितनी ताबाकर लग रही है । कल को कमल और आज की कमल में कैसा अन्तिकारी परिवर्तन लग रहा था जैसे कल तक वह रेखाओं में थी और रात भर कियी ने अपनी संकुचित कूँची से पलकें बपर, कपोल हाथ-पैर सभी को नियोजित एवम स्माइल कर दिया था । कमल में जैसे कोई भिन्न व्यक्ति और वा ममाया था बिस प्राप्त कर बहु-पूव में बीटी अपने मन में देह में रोम राम के भीतर, गुरु गहरे र आकर छुपा देने में लगी थी । जाने क्या निधि मन और देह को मिल गयी थी कि वह अंग-अंग में सिलावन सुसल पठने को आकूल हो रही थी । वह ऐसी लग रही थी जैसे नये घर में गृह-अवेग के बाब पहली जग्गि का आमाक हो । कमल ने 'बीटिंग' ऐव कहा जैसे बिधान की घर की वह देहरी हो और बिना उमकी आजा के प्रवेग संभव नहीं । पाटी में ही संभव है कि वह अवेग के साथ अल्पकाल में एकाकार हो सपती है, बर्षानि पुण्य की भाँति वह ठरक नहीं करती बिरवास करती है ।



कुठे के बदन कमाते हुए विद्यान ने अत्यन्त पंजीरता से हुँकारी मरी बीस बह गोप  
रहा हो ।

—आप लोग गुंठे जी के यहाँ तीन बजे पहुँच आइएगा ।

—और तुम ?

—अब तुम्हारा-हमारा क्या साध ? अब तो मर पीछा छोड़ो भाई ।

धीमर ने बात इस कहने में कही कि सब हँस दिये और कमल कजा मयी ।

—बेसो बीवी ! ये बही पंडित धीमर ठाकुर हैं जो आवे ये तब कमहरा भी नहीं  
बानते ये और अब

—आप भूक रहे पनाब ! अब मैं जामा बा तब एक प्रतिष्ठित स्कूल में पणित  
तबा इतिहास का अध्यापक बा और अब आपके सम्पकं दोप से लारी का  
छोछा उठाकर इन्हीं की सड़कों पर चपलें बटकाता रह्या हूँ ।

—बाहू हजरत अब तो तुम विद्यान के भी काम काटने लगे ?

—आपके काम कमी बे मी ? काम होले तो कुछ समझारी की बातें मुनकर  
सीख गये हलें । काम न कहुो सींग कहुो सींग ।।

और सबने ठहाका लगाया । कमल बोली

—बीबी ! आज धीमर बाबू तो बहुत ही हाबिर-बबाब हो गये हैं ।

—आपको देखकर ।

और सब फिर हँस दिये । तब तक धारबा मास्ता से आयी ।

उसी रात बीबी की बैठक में बे तीना अत्यन्त पंजीर मुझ में बड़ी दर तक  
अबाल ही बैठे रहे । तीसरे पहर से लेकर अब तक घटनाएँ इतनी तेजी से बटी  
थी कि किसी की भी ममज्ञ में कुछ नहीं आ रहा बा । इस समय तब रात का  
बातावरण सबेरे के उत्पून्क बातावरण की अपेसा गहन उदासी का बा ।

विद्यान का तनी कटका बा गुंठे जी की बात मुनकर कि पुस्तके साहब ने  
बिबाह की स्वीकृति दे दी है । जिस समय ये लोग गुंठे जी के यहाँ पहुँच पुस्तक  
साहब तबा उनकी पत्नी पहले से ही वहाँ मौजूद थे और वहीं स कमल को ब

सोम अपने घर स गये और बिगन का खूब फटकारा गया कि उसने पुस्तक साहब की इज्जत पर जो हमला किया है उसे इसके लिए मूगतना पड़ेगा। बेचारे गूंडे जी पुस्तक साहब की यह बात समझ ही न सके। इस बीच लछमन के द्वारा सीधर को खबर मिली कि पुस्तक साहब लड़की भगाने क अपराध में बिगन बाब तथा सीधर पर बारूट निकलवा रहे हैं। लछमन के द्वारा यह भी मालूम हुआ कि कमल का कमरे में बन्द कर खूब पीटा जा रहा है तथा उसे बाध्य किया जा रहा है कि बिगन बाबू क विषय में ही बयान देगी।

मासठी ने जब से यह सब कांड सुना तब स उनकी तो आँखें फनी की फटी रह गयी थीं। बिगन तथा सीधर के सामने एकमात्र समस्या यह थी कि बारूट निकल जाते की स्थिति में क्या किया जा सकता है ? क्योंकि पुस्तक साहब ने अपनी मारी सामाजिकता क जोर पर यह कार्य करवाया होगा। अब इस बटला को क्या-क्या रूप न दिया जाएगा। एक तो यही कि पुस्तक साहब क विरोधी घुट में बिगन क माध्यम स उन पर यह सामाजिक प्रहार किया है और पुस्तक साहब को बदनाम कर उनका राजनीतिक जीवन नष्ट करना चाहा है। हमारे महाराष्ट्रीय लड़की को एक अमहाराष्ट्रीय व्यक्ति ने खबरन बिबाहा। ऐसी स्थिति में पुस्तक साहब कभी भी किसी भी हालत में कमल और बिगन को मिलने नहीं देंगे। यदि हमी बीच अंग्रेज सरकार वाला भी बारूट हममें घातिल हो जाए ता बिगन तो नहीं के नहीं रहेंगे। और इन मुकदम के बाद क्या बिगन बाबू क लिए इन्दौर में अपना राजनीतिक जीवन बनावे रखने की संभावना रह सकेगी ? और मान लो कमल किसी बाध्यतावा बिगन के विरुद्ध बयान द द तो क्या बिगन के लिए फिर कुछ रह जाएगा ?

तब ऐसी स्थिति में क्या यह ठीक नहीं होगा कि बिगन कुछ दिनों क लिए नहीं बले जाएँ। और कमल क उम बयान की प्रतीक्षा करें जा कि बहु कोट में देगी। यदि बयान बिगन क पल में हो तो बिगन को चाहिए कि तब साहसिकता स सामने आकर मुकदमा लड़े।

सीधर बाबू के लिए भी तो काफी संमीर परिस्थिति उभरना हा पनी थी। वे भा अब यहाँ लड़ी रह सके। बन्द में यही तय पाया कि बिगन सीधर को लेकर बनारस चले जाएँ। सीधर को भी यहाँ में जाना ही पा और मायन बिगन क कारण बनारस में कुछ बान-बाम निकल सक।

मासठी इन सारे तर्कों और निर्णयों के प्रति उदास मौन बँटी रही। बहु मुन भी लही थी तथा नहीं भी। बहु इस सारे दुष्काण्ड का कारण स्वयं का मान

रही थी। बिगन को एकाध बार ता बीबी पर बिड़ भी आ गयी कि यह क्या आदत कि दुनिया भर की बुराई के पीछे अपन का निमित्त मानना ? लेकिन अपनी-अपनी मानना ही ता है। पहलू ता बे यही कहती रही कि कोई बात नहीं। बिगन और श्रीपर यहीं रहकर मुकदमा लड़ें ता वा यकोगी कि कैस मुकदमा नहीं बीठा जाता है। लेकिन आबेस क बाद क तक उन्हें भी अधिक संगत बने। सब बनारस जाने का निर्णय किया गया ता बे मामू भीगी अबाय हो उठ गयीं।

आते हुए उन्होंने यही सुना बिगन का

—बीबी ! अब हम कामों का इन्दौर में दफना पठरे से खासी नहीं है।

—तो तुम क्या चाहते हा ? इसी समय जाना ? ता फिर आभा भाई, मैं कौन होती हूँ रोकने वाली ?

दोनों की ओर बीबी की पीठ थी फिर भी उन्होंने समझ किया कि बे रा रही थी।

—ठीक है श्रीबर ! बीबी को माह है लेकिन यह सक्ती हम लोग नहीं कर सकते। इसी समय हमें चल देना चाहिए।

—लेकिन बीबी को

—उन्हें तुम या हम कोई नहीं समझा सकते। अब उनस अपने को कमजोर करना होगा।

—इस समय कोई ट्रेन

—बाह पवित्र श्रीबर टाकुर ! यहाँ है अकल आपकी ? बारसत बाभा आदमी ट्रेन की प्रतीला करेगा है म ? अरे जानाब क्या पता बनारस तक पैदल जाना पड़े। अब उठा। कुछ शासन का ज्ञान है ? पढ़ा है कभी—चरैवेति ! चरैवेति !!

श्रीबर ने देखा कि तिस बिधा में बीबी गयी थी उस बिधा में बिगन कुछ बसता रहा। उसकी प्रगम्भ आँखें सबल हो आयीं। और फिर स्वगत ही बुदबुहा उठा

—ब्रह्मा बीबी ! बिबा यी ! कभी पीबित रहा ता भाऊँया ही अम्यवा अपने जन्म में तुम ही मुझे जन्म देना।

और रात क गहरे सपनाटे में श्रीबर की तेज चलन क लिए बाध्य करता हुआ बिगन तेजी से बढ़ रहा था जैसे अनूताखीन कोई प्रस्तबाचक बिह्न पूर पूठ पर चल रहा हा। कौन जानता है कि वह कैस यहाँ आया था और कितने अनाम रूप में आब जा रहा है। कब उसने एक जीवन का श्रीगणेश किया था आज उसीको प्रबालित कर देने के लिए बाध्य होकर फिर अँयेरे में जन्म जा रहा था।

बिगल की यह चारपायी कि भीपर का सब किमी राजनीति में नहीं पड़ना चाहिए जब कि भीपर बहुत स्पष्ट नहीं थे। व राजनीति में न भी मूढ़ी लकिन देगमकिउ बबरप करना चाहत थे। भीपर न इस बारे में बिगल से बहम करना ब्यय मनसा क्योंकि बनारस पत्रों के कर सब से अपना माग बताएंगे। इन्दीर भी से गये इसलिए थ लेकिन कुछ ही न सजा। अतीत परिस्थितियों में फेंम गये कि कमी-कमी स्वयं पर नी एकात्म में आकर्ष्य होगा कि क्या से इमी सब के लिए पर छोड़ जागे थे ? उनका अध्ययन गमागता जादि इस बीच जाने वही मायब हा पय थे। बिगल के व्यक्तिब एबम मशामयना में व इतने ग्य ग्ये थे कि वे आता बर्नब्य ही नहीं निपांगिन कर पा रहे थे। मग छह महीनों में काँपनी मेराओं के भायन हुँयार करना हूँदकिब नैयार करना छोड़ी बहुत प्रेम की छरार्द करबाना रात्रि मत्रदूर पाग्याना में पड़ाना तथा मापनी दीरा का स्वतन्त्राजन बनकर रहना पही ता भीतर हो बके थे जब कि बिगल का एन स्पष्ट सुबरा पैना व्यक्तिब था त्रिममे बन की मति तथा मेरी शानों ही थी। उसक चारों भाग मापनी दीरा रला थाबर, कमल तथा काँपना राजनीति और कान्तिवारी कायबाही बन्ती

यी । श्रीधर को बिरान ने इस स्व से कोई ईर्ष्या द्वेष कुछ नहीं था बरन राम ही था—संकिन श्रीधर का व्यक्तित्व इस प्रकार उपग्रह बनने के लिए तो नहीं था । भूँकि बिरान के प्रति एक सम्बन्ध बन गया था इसलिए उस स्वयं तोड़ते तो कुछ धनता हांसी और आज जब परिस्थितिकस ने बनारस में अकेले केंद्र किये मये ता उन्हें इस अज्ञात अनाम मगर में निश्चित बीखलाह ही हुई ।

आज एक महीने से काशी में वे मौकरी क लिए दीड़-शुप में मये हैं । बिरान तो सात दिन बाह ही अपनी पार्टी के काम से सौं गया । बस परिषय के नाम पर एक अन्य क्रान्तिकारी सुभांगु राम से हुस्का सा परिषय ही हा सका । सुभांगु राम ने श्रीधर को 'ब्रह्मनाथ' पर एक कमरा अवस्थ बिकवा दिया । इसका बाध तो यह मझापय भी जाने कहां अतृप्त्य हा मये ।

मिठान्त अपरिचित बनारस में श्रीधर बाबू एक सप्ताह तक ठो समझ ही न सके कि यहाँ आकर उन्होंने अच्छा किमा अपवा भूक की । पिन मर कमरे में पड़े रहते या फिर साँस पड़ने पर 'दवास्वमेध' निकल जाते । कनी मालूम होता कि 'बैमिया बाग' में कोई सना है, वहाँ पहुँच जाते । प्रायः 'कबीरपोरा' की ठरकानिकस जाते और काफ़ी देर बाहर फुट पाव पर बड़े-बड़े 'आज' को भाषण पढ़ जाते । किस प्रकार अकवार के द्वारा वहाँ के स्वान स्वानीय लोग आदि के नाम परिचित होने मये किस प्रकार वहाँ ने सड़कों के ठाल पड़े माइ सब पहचानने मुक किये—सब एकदम स्पष्ट था । मालुवा से प्रत्येक बीज यहाँ की निभ बी । घाहनाई वालों क साथ किस प्रकार बीर्यो गापी-बजाती बर बबु के साथ मंगा पूजम को जाती हैं किस प्रकार पहरेबाजी होती है किस हर बनारसी "गुरु" यह काता है—मग उनकी आँखों के सामने से गुजरता था बीर ने मोप देखते हुए कनी अहिस्वा-भाट पर ता कनी 'केदार भाट' पर निकल जाते । साँस स रात्र ही जाती अंबेरा बिर आता फिर भी वे बैयला बैयब कौतक मुनते बजरो में "मीत्र पानी" करण रईनों को बुराक करते-बोली तथा दुपन्की में बैठते सेते रहते । दिन में जब कनी कुछ समय में नहीं आना 'नागरी प्रचारिणी सभा' पहुँच जाते और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ा करत । इस सबके बीच किमी से विरोप परिषय न हो सका केबल पीठित उदबमानु मिथ गाएकी को छोड़कर । सब उन्हें "गाएत्रीजी" ही कहते थे ।

शास्त्री जी बकिमा का रहने वाले युवक थे। काशी में ही संस्कृत का अध्ययन किया था और जब एक मठ के द्वारा बलायी जाने वाली संस्कृत पाठशाळा में निम्नोक्त अध्यापन करते हैं तथा बीविका बलाने के लिए कपौड़ी गमी के एक स्थानीय संस्कृत के बुकसेसर के लिए पानी के भाव पर पुस्तकें लिखते हैं। जब कई दिनों तक इस अज्ञात व्यक्ति को 'समा' के पुस्तकालय में जाते-जाते देखा और यह भी कि किसी से नहीं बोल्ता है तथा सभी के लिए अपरिचित है ता उन्हें कौतूहल हुआ कि आखिरकार यह व्यक्ति कौन है ? एक दिन शास्त्री जी ने श्रीधर बाबू को सायण की टीका पढ़ते देखा तो पास वाली कुर्ची पर बैठते हुए सीमे से बोसे

—क्या आप काशी के ही हैं ?

—जी नहीं।

—तो फिर कौन जिस में घर है ? पूरब क तो नहीं लगत।

—जी नहीं उज्जैन का रहने वाला हूँ।

—बाहू, काशिदासस्य उज्जयिनी। काशिदास बाणभट्ट भोज ने तो आपके प्रदस को अमर कर दिया है। क्या है वह कण्ठहार का श्लोक अरे उठ नहीं पड़ा है

—कोई बात नहीं।

—हाँ क्या नाम है ? ब्राह्मण हैं न ?

—जी हाँ श्रीधर ठाकुर।

—क्या आप भोग नाम के पूर्व पंडित नहीं लगाते ? मुझे पंडित उषय मानु मिथ शास्त्री कहते हैं। इपर बकिमा का रहने वाला हूँ। आपने महामहोपाध्याय पंडित रामदीन शर्मा का नाम सुना है ?

—जी हाँ।

—वे हमारे मामा होते हैं। क्या यहाँ विश्वविद्यालय में आये हैं ?

—नहीं मैं ही बसा आया हूँ।

—मामूम हुता है संस्कृत का ज्ञान काफी अच्छा है। क्या आचार्य हैं ?

—ईस ही। जब पर ही कछ पढ़ा-लिखा था।

—तो आज-कल क्या कर रहे हैं यहाँ ? पत्रकार हैं क्या ?

—सभी तो काशी आय गयाश दिन नहीं हुए। प्रयाग में हूँ कि वहीं कुछ हा जाए।

—ता मस आदमी बाबू पित्रमात्र जी गुण न क्यों नहीं लिखते ? "आज



अबबार तो जानते हैं न ? सम्पारकीय विभाग में हो आगली । अग्रेजी पढ़ी है ?

—साधारण

—भोर हिन्दी ?

—नाश्च तक यही है ।

—बस तो ठीक है । यहाँ कहीं रहने की जगह मिली ?

—हाँ 'बहुनाल' पर एक कमरा मिल गया है ।

—कहाँ ? बिबर ? घाट के पास ? कहीं न जहाँ काम्पटीर्ब पठित विभागाय विपाठी रहते हैं ?

—जी उसके भी आगे ।

—बस बस ठीक है । उम विपाठी जी के यहाँ तो प्रायः जाना होता है हमारा ।—

बाबू विश्व प्रसाद जी के यहाँ जोशिया करिए । अपने वहाँ क्या करते थे ।

—अध्यापक था ।

—अध्यापक ? कौन विषय क ?

—गणित और इतिहास क ।

—अच्छा अच्छा । विपाठी जी की गणित में भी काफी गति है । क्या 'समा' रोज नहीं आते ?

—कभी-कभी आ जाता हूँ ।

—क्या महाँ बैठिएगा या बसिएगा ?

—क्या आप का रहे है ?

—माइए जीक तक साथ रहेगा । मैं तो बस्ती पर रहता हूँ । जानते हैं न ?

—क्या ?

—बस्ती बात नहीं आते ? किसी से पूछ लीजिएगा कि वहाँ की भी अ्योठिर्म-मय पीठ कहीं है । उसी पक्षी में एक उदामी मठ है । उम मठ में ही एक कमरा मिला हुआ है । एक कम गंगा का किनारा है ।

बीबर और पान्नी जी बाहर जाये । पान्नी जी बोनी धीर कृष्णा पढ़ने से । चन्दन का तिलक । बड़ी सी बुटिया मिर के पीछे मूस रही जी और मंके पीर से । बनें सुहावना बैठेबा था । पतकी मूँछ लवा भरत गा मूँह । बीबर को पान्नी जी पर स्वभाव के सने । कोई भी उनम बाग-बीन के बाध उन्हें अन्तक हो समझता ।

उनकी जाँच देलने की अवेक्षा-साजने का काम करती थीं। इसलिये प्रायः भाऊ पर विपुण ही खिचा रूखा। लेकिन कुछ मिठाकर आत्मतुष्ट ही कहा जाएगा। रास्ते भर वे यही बताते भाये कि पूर्णिमा एकादशी आदि के दिन वे छत्रपाठ षष्ठीपाठ मीठा आदि का पाठ करने अन्नपूर्णा के मन्दिर जाने हैं तथा उससे कुछ आय हा जाती है। इसी काशी में विद्याभ्ययन के लिये उन्हें बना कुछ कष्ट न भुगतना पड़ा है। आज भी जब कभी प्रकाशना से कुछ सगडा हो जाता है तब उन्हें अन्नसेवों की धरण लेनी पड़ती है। उद्योगी मठ बापों ने उन्हें रखने की जयहू दे रखी है। कमरा क्या दासना ही है। जिस दाम्त्री जी नया ती का पर्व टांग कर कमरा बना किया है। वहात में उनका पूरा परिवार है बाळ बच्चे भी हैं। यहाँ बीबिका का प्रबन्ध ठीक स नहीं होने के कारण परिवार का नहीं सजता। किसी का छुआ का नहीं सकते इसलिये हाथ स ही बनाते हैं। दिन दिनों अन्न सेवों की धरण लेनी पड़ती है उन दिनों बडा बर्म-सकट उत्पन्न हो जाता है मकिन 'आपति काले मर्मादि नास्ति' के दास्त्र बचन का पाठन कर लेते हैं। बाद में प्रायश्चित्त स्वरूप 'पुण्यधरण कर लेते हैं। गित्य गंगा-स्नान हो जाता है। आब बयबताएँ अधिक हैं नहीं। ब्यसन के नाम पर पान अबश्य ला मते हैं—धीर काशी में ता पान को ब्यसन मामा ही नहीं जा सकना। हाँ कमी-कमी भाँग-भूटी बकर हो जाती है। संस्कृत की अन्तिम परीक्षा पास है। बैसे साहित्य स अनिरखि है। मस्कृत में कविताएँ तो बहुत बास्वकाल स करत जा रहे हैं। आजकल भम बक-सतक' के डंग पर 'सुपीब-कालक' किन्तु रहे हैं। पंडित मिबनाथ त्रिपाठी को विज्ञाया था—कहिल कि छन्द एकदम त्रिबोप है।

इस प्रकार दाम्त्री जी आकण्ड बाह्यम ब्यक्ति थ। बन्कि इतन स्पष्ट कि किमी सीमा तक मूर्ख लकिन मध्।

दाम्त्री जी ने ही उन्हें बताया कि बाबू गिबजमार् जी मदेर बग्गी में बूमन निकलते हैं उम समय अनेक गरिब विद्यार्थी ममा-मोयाइरी के बन्ना मापने नाम विपकारों आदि पढ़ेंच जाने हैं और ममी का बच हा ही जाता है। गुप्त जी

काब्रिस के कोपाध्यक्ष भी हैं। माम्बीय जी को बहुत मानते हैं। काशी क रईस है काशी-नरेश के बाब रईसों में मूषा जी का ही नाम तथा सम्मान है।

बड़े सरेरे उठकर श्रीधर बाबू मूषा जी की संक्रा स्थित कोठी पर पहुँचे तो उस समय द्वार पर मिलने वालों की काशी भीड़ थी। काशी माटरे तथा बन्धु बियाँ लड़ी थी। कुछ लोग नागाफूटी कर रहे थे कि कोई काब्रिसी नेता आये हैं इसीलिए इतनी भीड़ है। श्रीधर बाबू ने देखा कि एक बड़े से बगीचे में हरी सिड़कियों तथा रामन खंमोंवासी बहू कोठी बीमब को बतका रही थी। दासानों में लोयों व आने-जाने की भीड़ थी। दरवान माँगने वाले सभी लोगों का बाहर वाले काहे क फाटक के पास भगाने में रुमा था

—आज मासिक किसी से नहीं मिलेंगे। देखते नहीं बड़े-बड़े सुराजी आये हैं। अरे वे अभी इकाहाबाद बा रहे हैं।—ठीक है चन्दा माँगना हो तो मनीजर साहेब से मिलना।

और इस प्रकार श्रीधरबाबू उदास स्थानि लिये बाटों की तरफ से निकले। ममियाँ आ गयी थी। मूषा लेज हो मयी थी। मंग्या की बाबू चिलचिलाती दूर तक बिछी थी। रामनगर का किछा उस पार की कछार की एकात्मिकता को भग करता मूषा में गरम होता भग रहा था। फिर भी हवा में अभी ठण्डक थी। मिट्टी की पमडवियाँ खेतों में यहाँ-वहाँ बिछी पड़ी थीं। यासू भरी भावें खींचत मस्माह कन्धे पर डोरी खेंबते किनारे पर ऊँचे-नीचे बस रहे थे। नाब में नीचे की मजिल में से धुआँ उठ रहा था। महर के यदि नालों से किनारे फटे हुए से जिनमें काई पर से फिपकता दुर्गमित पानी बह रहा था। बस्ती-वाट पर किती चापु-महापत्र की बड़ी सी नौका लड़ी थी जिस पर बूनी धुंधुमा रही थी और मकतबन एक खीड़ी से आ-जा रहे थे। नाब की बड़ी सी पताना हवा में कन्धुतों की तरह फड़फड़ा रही थी। तुकसी-वाट उदास पड़ा था। श्रीधर बाबू 'केदार-वाट' पर आकर मंग्या में पैर बास सुस्ताने लगे। बिघान की भी हुई धुंधी अब समाप्त ही सी थी। अगले चार-आठ दिनों में यदि कुछ प्रबन्ध न हुआ तो क्या होया ? इस इतने अपरिचित मगर में तब क्या होया ? क्या यह बड़ी काशी है जिसका नाम बचपन से सुनते आ रहे थे ? प्रत्येक बाह्यन का बालक यज्ञापवीत संस्कार के समय जहाँ नाभी-अध्ययन का कहकर भावता है और मामा तब उस राकने हैं स्नातक देकर ? आज जबकि वे जमी काशी में जहाँ अने समय बिनी मामा ने नहीं राका—जहाँ चार-आठ दिन बाब क्या होया ? घाट पर नहाने आल बा-रुद आ ही जाते थे। यज्ञानु बंगाली विववा से लेकर बमछा पेट क

नीचे कसे जिसमें से हमारी सज्जती हुई रहती तथा पले में सोने की सिकड़ी बाक साहू तक ब्रैस कर या तैर कर मया स्नान कर रहे थे । 'केदार-बाट' व एकदम ऊपर पेड़ों की बनी छाया में जाती हुई 'केदार-बाट' की यमी में तरकारी-मछली खरीदती थीं का हल्का धोर गुलगुला रहा था । बाड़ी ही बेर में रेत के बगूम उठने लगेसे धूप में सब जलने लगेगा । अभी ही कितना तप उठा है वे उठ क्यों नहीं रहे हैं ? 'केदार-बाट' की इतनी अधिक सीड़ियों में कैसा मध्य-काफीनम्ब लग रहा है जैसे इतिहास हों और वा बार खड़ी-उतरती कुछ बंगाधिन छोटी मोटी घटनाएं लग रही थीं । तो—शास्त्री जी ने आज अपने बुकसेकर प्रकाशक के यहाँ से जाकर कोई अनुवाद दिखाने की बात कही है । संभव है कोई अनुवाद मिल ही जाए ।

घाम का जिन समय थीपर शास्त्री जी के प्रकाशक के यहाँ पहुँचे उम समय 'कौड़ी-ममी' में कुछ भीड़ थी । हलबाइयों की बूकानों से पूड़ी-कौड़ी की मखीब गज उस पूरी गमी में बरी हुई थी जिसमें कि साइ 'युक' सम्पादी अत्यन्त निश्चिन्तता से घूम रहे थे । गाब तकिये क सहारे एव योना सा व्यक्ति जानीदार बतियाइन तथा चिकन क करते में पसबी मारे बैठे था । जिन समय थीपर पहुँचे वह व्यक्ति 'बीडा' जमा कर बैदुली से जुना बाट रहा था । फर्माइयों पर कुछ कई व्यक्ति मूनीमगीरी में व्यस्त थे । कितानों क बजल बाये जा रहे थे । पंचाम जंभी पुराण रामायण-सीठा दुर्गा-मत्तवती हनुमान-कामीना के डेर मामने पड़े हुए थे ।

—बहिए बाबू साहेब ?

पात लाये अँचे मुँह से सभी मर्दों की ओछाराम्य करते हुए उस माटे व्यक्ति ने धीपर से पूछा ।

—शास्त्री जी हैं न ?

—ये बनचारी ! तनि मामतरी जी व बुलाय र हा ।

और सखी की सीड़ियों पर चड़े एक व्यक्ति ने कोई किताब हँडने हुए बिना किसी और देगे नहीं न चिस्माया

—मामतरी जी ! स्कन्द पुराण तो खत्म हो गया मूशमी से मयाजा होगा बटमर बाबू ।

और हम सारे गुस्स-गपाड़े में यह समझ ही में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। जब काफी देर हो गयी और बनबारी तथा मोटे व्यक्ति ने फिर कोई मुझ नहीं सी ता फिर भीपर ने याद कराया।

—ए मासतरी जी अरे आप इस बाहिनी सीढ़ी से ऊपर चक जाएँ सब से पीछे वाले कमरवा में पूछ लीजिएगा—अंभी कितनी ? बस ??

और अंबेरी सीढ़ियाँ चढ़कर चौकोर लाल डंग के बनारसी ठंडे-अंबेरे पर में प्रवेश किया जहाँ भीमल और छेई की मिश्रित गंध आ रही थी। किताबों की जिस्में बाँधी आ रही थीं। कई सड़के पमछे में लपेटे बतियाते काम कर रहे थे। सबसे अंबेरे कमरे में दस गम्बर के बस्त्र के प्रकाश में फर्शमिज पर लुके शास्त्री जी किसी संस्कृत के ग्रन्थ पर काम कर रहे थे। सामने बीड़े की पुड़िया रखी थी। चौकल हुए बोले

—अरे आ गये ? बैठिए, आप तक तक पान लाइए, बस मे स्मोक कर और हो जाए। अच्छा तो बनबारी ने इच्छीसिए पुकारा था? हम समझे—होया कुछ।

रातकपाती के एक फटे कोने पर भीपर भी बैठ गये। शास्त्री जी ने कुरछा तथा मंजी दोनों ही उतार रखे थे। यज्ञोपवीत मुकट और पुष्ट बेहू बछाठी थी कि सुखी ब्राह्मण की देह है। सीने के बाजों में पसीने की बूँद अटकी हुई थी। हाथ का पंखा वे रह-रह कर इस भिया करते होंगे। भीपर ने पंखा उठा भिया अपने को तथा शास्त्री जी को झलने लगे।

दायाद स्मोक हो गया था। मापे का पसीना धाली स पोंछते हुए बोले

—कितना इन लोंपा स महता हूँ कि भाई, एक पंखा यहाँ भी लपनाब यों पर—अरे पान लाइए न ?

—आपको ता मामूम है कि मैं पान नहीं खाता।

—अरे भाई बनारसी बनने के लिए दाँत नहीं तुड़वाना होगा महज बर्हें रँगना होगा।

और सीमा पोंछते हुए हँसने लगे। पान खोसकर भीपर को दिया और दो अपने में जमाये। मुर्ली और चुना लाकर मंजी पहनते हुए बिचिष्ट बनारसी पनबा-या धापी में वाले

—गजावर बाबू नीचे रहे न ?

—जीन गजापर बाबू ?

—अरे, ओ ही जीन माने मोटे स हँव। —अच्छा बाइए।

भीर मर्मी में ही वे भीबर को छकड़ नीच उतारे। पान खाने के बाद उनकी नाक में साँस बहुत स्पष्ट सुनानी पड़ रही थी। नीचे पहुँच कर दास्त्री जी ने एक मिनट साँस और ठण्ठ घीम में बाँस

—पहिले इस कगबबा से जुगाड़ कड़ाया जाय।

और एक मुनीम महाशय के सामने जाकर दोनों बैठ गये। घायल यह केन्द्र प्रसाद ही कञ्चकां का हिमाच बिठाव देसते रहे हमें।

—कसब बाबू! ई पबित भीबर टाकुर है। हिन्दी के बड़े बिद्वान है। चाहते रहे कि हिन्दी का कानू काम-काज भिन्न जाई तो ठीक रहे। हम म कहा ता हम कहिन कि कगब बाबू म हम भिनाय दई।

और कगब बाबू न भीबर बाबू का घुरा और फिर पूछा

—कौना बिठाव बिठाव सिन्ने है ?

—जी नहीं।

—कहाँ पड़ाते हैं क्या ?

भीबर बाबू उत्तर से इसक पूर्व ही दास्त्री जी ने बात सम्हाल ली। क्योंकि वे समझ पये कि भीबर के बोलने से बात बिगड़ सकती है।

—अब बात ई है केसब बाबू! आप तो जानते ही हैं—कामिनास की उज्जयिनी बिद्या का क्त्र भीबर बाबू वहीं से आय है।

—अच्छा ! ता काफी ब नहीं है ?—असल में दास्त्री जी! आजकल सारा बाराबार गवापर बाबू ही करते हैं। अब आप तो जानते हैं बड़े मास्किर बाबू महाशय प्रसाद की बात और रही।

गाम्भी जी ठान गय कि बड़भम पुट्टे पर हाथ नहीं रखने दे रहा है। पना नहीं क्यों मड़क गया। कहीं यह मुनकर तो नहीं कि भीबर बाबू बागी के नहीं है ?—गवापर बाबू से अब गाम्भी जी ने बातें कीं तो परम ता खुप रहे, लेकिन अब थोड़ी बातें भीबर म कीं तो वे इस बात पर राजी हुए कि प्रूठ-रीडिंग का काम दे सकते हैं और इनामिए वे पहल दो महिन तक साथ रख महीने दोगे। बाबर बाबू के सामने कोई बारा नहीं था और उन्होंने स्वीकार कर लिया।

दास्त्री जी म इतान म निरस कर पानबास की पुकान पर बसाया कि बिन्दा की काँ बाउ नहीं। ममाँ में प्रूठ-रीडिंग की हिन्दी में पुम्पुठें है ब पड़ लें बग।

भैंसेरा ही जाता था। दोनों ब्रह्मनास' वाली पत्नी में पहुँचे।

शास्त्री जी को पंडित दिवनाथ त्रिपाठी काव्यतीर्थ के यहाँ जाना था या कि कबिराज भी थे। शास्त्री जी ने रोका कि जाइए, शास्त्री जी के यहाँ जले सेकित पीयर बाद इस समय विस्तृत एकान्त चाहते थे।

गंगाजी की तरफ निकल आये। मणिकर्णिका' पर इस समय भी कई तरह की चित्तार्थे जस रही थीं। हवा में चिरायक थी। वे सीबिया-वाट' की तरफ बढ़े जहाँ बिल्कुल शांत था। बज्रों पर काशी के रईस मामोश-श्रमाश में व्यस्त थे। हज्जों की रोशनी में कहीं-कहीं मूजरा भी हा रहा था। वे यमा में पैर बास कर हल्की ठण्डक अनुभव करते अस्पष्ट सोचते रहे।

पता नहीं क्यों भीमगवाबू में कमी असन्तोष ऊपर उभर कर नहीं आ पाता। वे स्वयं ही कमी नहीं समन पाते कि बगत्या वे चाहते क्या हैं? जब उन्हें प्रान्त करना होता है या उत्तर देना होता है—वे बस देनते रहते हैं। कहीं किसी चीज के प्रति कोई विवशता नहीं लगती—केवल अश्कता के समय पुस्तकें पढ़ते हैं। कान्ही में माय उन्हें छद्म महीने से भी अपिक्त हो जाने से सेक्रेण जिस निर्दोष भाव से वे बहूनात्क से निरुत्स कर कपौड़ी-पछी में गुल् गुल् में निरसत वे उसमें आज भी कार्द परिवर्तन नहीं हुआ है। एक क्रम बन गया है कि सबरे उठकर गंगा-स्नान कर आये। पाठ-पूजन के बाद भोजन बनाया और नी बजे सबेरे प्रदा तक वे यहाँ पहुँच गये। नीचे ही वास्तान में एष पीतलपाटी तथा एष पत्नीमित्र उन्हें भी मिल गयी है। दिन भर बिना मिर उठाये प्रूण पढ़ने रहता। उसक बाद चौक बुलानाला होते हुए टाउनहाल के बीच में निकस कर 'सभा' में पत्र-पत्रि कार्य, कितानों आदि पन्ना। गास्त्रीजी का माय प्रायः हाठा ही। ऐसी स्थिति में कमी उनके साथ पंडित विवशताय विपत्ती के यहाँ हो भाये या 'परीमिया' तक निरसत भाये या फिर गंगाजी।



पंडित शिवनाथ त्रिपाठी कबिराज के साय-साय ब्रह्मभाषा क बड़े पण्डित तथा मुकवि भी थे। उनके यहाँ काशी के सभी प्रसिद्ध लेखक तक आया करते थे। दो एक बार तो बाबू जगन्नाथ दास 'रत्नाकर जी' भी आये हैं। श्रीधर बाबू ने उद्यम-वाक्य" क अनेक अंश उन्हीं से सुने हैं। पंडित शिवनाथ त्रिपाठी के पिता पंडित काशीनाथ त्रिपाठी तो मारठेन्दु जी के बनिष्ट मित्रों में स रहे हैं तथा अपने समय के प्रसिद्ध आलोचक भी माने जाते थे। 'पश्चिम मान-मर्म' के नाम से उन्होंने पश्चिमी साहित्यिक सिद्धान्तों पर तुलनात्मक आलोचना की थी। जिसमें कामिभ्रास-शेक्सपीयर की तुलना स लेकर देव-देवीसन तक सादाहरण आलोचना थी। समस्त अपने पिता का दर्शनपन पंडित शिवनाथ त्रिपाठी में भी था। वे अंग्रेजी की अपेसा ब्रह्मभाषा को अधिक सक्षम भाषा मानते थे। उनकी एक अग्रकाचित पुस्तक की उस अंतरंग बैठक में प्रायः चर्चा होती थी जिसका नाम था—राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' उर्फ हत्यारे-हिन्द—जिसे अंग्रेज सरकार ने प्रकाशित नहीं होने दिया।

स्वामस वर्म की तुहरी बेहू के पंडित शिवनाथ त्रिपाठी अपनी चौकी पर गाव तकिये के सहारे बैठे किताबों तथा चूप-अवसेहों की मिश्र संघों से घिरे बार बीड़ा बसाये चन्दन का गोमू तिलक लगाये सदा प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति थे। उनके अपने इस विशिष्ट बतारखी निवास में सन्तुष्ट। आज वे साठ वर्ष के हो रहे थे लेकिन अपने प्रथ के अनुसार उन्होंने बिदवनाथ-बरबार कभी नहीं छोड़ा न संग का किनारा छोड़ा न 'बाधिका' का अपना कहना छोड़ा। दिन में पचासों बार "राम नाम सत्य है या "हरि बाल" सुनने पर भी जीवन के प्रति उन्हें कोई बिदृष्ठा नहीं हुई। उनकी लिङ्गकी के नीचे से गुजरने वाले अपिर्कात्र या कापी पंडिजी कहते निकल जाते। 'पानी पीव ५५ के बाद होने में साथी गयी मिठाई से लेकर 'पनबा स ५५ हों' तक में वे आकृष्ट काशी के नागरिक थे। वे कहा भी करते थे कि काशी का कोई बनवा नहीं है वह तो जमता है। 'पक्के-मुहाम' क बाहर काशी नहीं बसिक काशी-श्रेष्ठ है। काशी के बाहर के हिन्दी साहित्य को वे साहित्य ही नहीं मानते थे। श्रीधर बाबू को सगा कि व्यक्ति क रूप में वे अत्यन्त सरल सीधे ब्राह्मण थे सकिन काशी के नागरिक के रूप में वे बन्नी ही कह जा सकते थे। वे काशी की दारुमड़ी स लेकर सृष्टे तक पर अभिमान करते थे क्योंकि वे काशी की परम्परा संस्कृति के प्रनीता में स हैं। छास्रीजी ने एक दिन मजाक में पूछा भी था कि पंडिजी! रोज साँठ सीढ़ी संख्यामी अपर ये काशी में न रहें ता ? पण्डित शिवनाथ त्रिपाठी ने बड़े ही हँसते हुए कहा कि

ए बंधुआ क हटाई ? जब मुसलमान नहीं कर सकिते अप्रवा क हिम्मत माहा रहम नब नुहो बतावा क हटाई ?—बजर क बे कहुन दीडीन स । पचबन्दी पर उनका यपना निर का एक छात्र सा बजरा पा जा कि उग्र कार्गोनरग न भेंट बिना था । समियों की संख्याएँ कमी-कमी 'मौज-याना' में दीता करती थी । जब बे घर स निकलत तो सुराक मानी-करने में बनावमा नुंघनी क ब्यापारी ही अधिक लगने । यह बनारस की ही विशेषता है कि मिनी भी अक्सर पर आन निरान्त बाणी में हा उपबस्त्रहीन चम खा रहू हा ता मा काणा बो का आश्चर्य नहीं होगा बसिके बे थाप का ठर नी 'पा कार्या परिजर्जी' बैस ही कहेंगे जैसे कि बजिया बस्त्र पहने होने पर भी आप का कह्य ।

अब ता प्रायः थीबर बाबू त्रिपाठीजी क हम बनारसी दरबार में उपस्थित रहने । त्रिपाठीजी की अंतरंग मन्त्री न 'हिन्दी-हितवाग्निपा' क नाम स एक पत्रिका की याचना बनायी थी । और शास्त्रीजी स कहु-सनकर थीबर बाबू को उनका सहायक बनवा दिया था । इन प्रकार अब उग्र नियमन पर राग ठर बैठ कर हिन्दी-मवा करनी पड़ती थी । प्रायः काफी क प्रसिद्ध लेखका के यहाँ कबिता सगादि के लिए आना पड़ता । यदि राय बिभूति हृग का काठी 'पंचकाली' पर थी तो महामहापाध्याय अयाध्यानाय बाजपेयी की बगीची 'मिगरा' में थी । बेधमूर्ध सन्त ईश्वरीदीन यदि अपनी मारनाथ बाभी काणी में मिल सकने से तो लनीबाभी काव्य के मये कवि बाबू मिश्राकर 'निर्मास्य' कानबाभी के पीछे अपन पीतुक निबाम में मिल सकत स । इस प्रकार आशोचरप्रकर बाबू कानिब सन्त महाय के लिए थीबर बाबू का 'संस्कृतमाचन' स्थित उनकी हवर्वा काठी क बखतर लगाने पड़न । इस का फल यह हुआ कि कनी ता मकर सात बजे हो घर स निकल जाने और कबिता लेगादि के लिए पूरो काफी मांगी पड़नी । अब बे 'बबोड़ी-लनी' वाले अपने प्रकाशक यहाँ स सभा' ज्ञान क स्थान पर लागा के यहाँ पत्रिका की मागरी क लिए निकल पड़ने । बाबू गोरग चद्र गनी क 'भाग्य-भाठा प्रस' में छपाई का प्रबन्ध हुआ पा इमलिए 'गायशेट' जाना पड़ता और यहाँ स लौटते रात के प्यारु-बागह स बन स बजता । रात्रा दण्डेक शम बिड़का क टाकर-कान में उम समय लगता ही कुछ बज रहा हाता । दिन नर का बीमियों मील की इस पैदल यात्रा यूफ रीडिय में बे इनन पर पय जान कि बिनी तरु बिममरयंत्र की मंडी पार कर टाउन-कान के मानने वाले पारु में पहुँच कर बूब पर सट जाने । रात की हवा में ठर भी मरगों क ठर की मय बिममर यंत्र की मंडी की अजीब त्रिलहनी तथा दलर की संर प्राणी रहती ललित तार

पंडित सिबनाथ त्रिपाठी कविराज क साय-साय ब्रजभाषा क बड़े पंडित तथा मुकवि भी थे। उनके यहाँ बापी के समी प्रसिद्ध सेठक तक आया करते थे। वो एक बार ता बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर भी भी आये हैं। बीबर बाबू ने 'उद्यम-राज' क अनेक अक्ष उन्हीं से मुने हैं। पंडित सिबनाथ त्रिपाठी ने पिता पंडित नारायण त्रिपाठी तो भारतेसु भी के बनिष्ट मित्रा में से रहे हैं तथा अपने समय के प्रसिद्ध आलोचक भी माने जाते थे। 'पश्चिम मान-भईन' के नाम से उन्होंने पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों पर तुल्यनात्मक आलोचना की थी। जिसमें कालिदास-शेक्सपीयर की तुलना स कबर बेब-टेनीसन तक सोनाहरण आलोचना थी। समबत अपने पिता का ऋगपत पंडित सिबनाथ त्रिपाठी में भी था। वे अंग्रेजी की अपेक्षा ब्रजभाषा को अधिक सक्षम भाषा मानते थे। उनकी एक अप्रकाशित पुस्तक की उस अंतरंग बैठक में प्राम' जर्ना होती थी जिसका नाम था—राजा शिव प्रसाद 'सितारे-हिन्द' उर्फ 'हृत्यारे-हिन्द'—जिस अंग्रेज सरकार ने प्रकाशित नहीं होने दिया।

दयामऊ बर्ष की दुहरी बेहू क पंडित सिबनाथ त्रिपाठी अपनी चौकी पर पाव तकिये क सहारे बैठे कित्तों तथा बुर्रु-जबसेहों की भिन्न बंधों से घिरे बार बीड़ा जमाय अन्दन का गोक तिसक रगाये सग प्रसन्न रहने वाले ब्यक्ति थे। उनके अपने इस विशिष्ट बनारसी निवास में सन्तुष्ट। आज वे साठ बर्ष के हो रहे थे लेकिन अपने ब्रज के अनुसार उन्होंने बिस्वनाथ-शरबार कभी नहीं छोड़ा न गंगा का किनारा छोड़ा न 'बासिका' का अपना लहजा छोड़ा। दिन में पचासों बार 'राम नाम सत्य है' या 'हरि मोल' सुनने पर भी जीवन के प्रति उन्हें कोई विनूष्णा नहीं हुई। उनकी छिड़की के नीचे से गुजरने वाले अधिकारा 'पा सागी पंडिजी' कहते निकल जाते। 'पानी पीव ५५' के बाद दोने में लगी गयी मिठाई से सेकर 'पनबा क ५५ हा' तक में वे आकण्ट काशी के नागरिक थे। वे कहा भी करते थे कि काशी का कोई बनता नहीं है कह ता यग्यता है। 'पके-मुहाळ' के बाहर काशी नहीं बल्कि काशी-क्षेत्र है। काशी के बाहर क हिन्दी साहित्य का वे साहित्य ही नहीं मानत थे। थीपर बाबू को लगा कि ब्यक्ति के रूप में वे व्यस्त सग्न सीधे शाहजान से सकिन काशी क नागरिक के रूप में वे बग्गी ही रहे था मवते थं। वे काशी की दासबंडी स ककर मुड तक पर अमिमान करते थे क्याकि वे काशी की परम्परा सस्वति के प्रतीका में स हैं। धासबीजी ने एक दिन मजाब में पूछा भी था कि पंडिजी! गैड सांड सीड़ी संघाटी अगार ये काशी में न रहें तो? पंडित सिबनाथ त्रिपाठी ने बड़े ही हँसते हुए कहा कि,

ए वचुबा क हटाई ? अब मुसलमान नहीं कर सनिय अन्नबी के हिम्मत नाही रहल तब तुँहें बताबा क हटाई ?—बबरे के के दहन पीरान से। पत्रकारी पर उनका अपना निज का एक छाटा सा बखरा था जो कि उन्हें कार्यालय ने भेंट किया था। यमिया की संभ्याएँ कमी-कमी 'मोज-यानी' में बीता करती थी। जब के घर से निकसत तो बुराफ घाटी-करल में बनारसी मूँबनी के स्यापारी ही अधिक समते। यह बनारस की ही बिदोपता है कि किसी भी अवसर पर आप निदान्त घाटी में ही उपबस्त्रहीन भस्म जा रहे हो ता भी कोगा को कोई आश्चर्य नहीं होगा बस्कि वे आप को तब भी 'पा लागी पड़िगी' जैसे ही कहेंगे जैसे कि बड़िया बस्त्र पहने हलने पर भी आप का कहेंगे।

अब ता प्रायः धीपर बाबू त्रिपाठीजी के इस बनारसी दरबार में उपस्थित रहते। त्रिपाठीजी की अंतरंग मडकी ने 'हिन्दी-हितकारिणी' के नाम से एक पत्रिका की योजना बनायी थी। और शास्त्रीजी ने कहु-मतबर धीपर बाबू को उसका सहायक बनवा दिया था। इस प्रकार अब उन्हें नियमित दर रात रात बैठ कर हिन्दी-सेवा करनी पड़ती थी। प्रायः काशी के प्रसिद्ध सेवकों के यहाँ कविता सन्नादि के लिए आना पड़ता। यदि रात बिभूति कृष्ण की कोठी 'पंचकोषी' पर थी तो महात्महोपाध्याय लपोध्यानाम बाबूपदी की बगीची 'सिमरा' में थी। बेलमूर्य सत्य ईन्दरीबीन यदि अपनी सारनाह बाकी कोठी में मिल सकते थे तो राड़ीबाली काश्य के नये कवि बाबू मिदगंकर 'निर्मास्य कोतवाली' के पीछे अपने पैतृक निवास में मिल सकते थे। इस प्रकार आमाचक्रप्रवर बाबू काठिक नन्दन सहाय के लिए धीपर बाबू को 'संस्कृतमोचन' स्थित उसकी हथवा काशी के बक्कर भगाने पड़ते। इस का फल यह हुआ कि कमी ता सबेरे सात बजे ही घर से निकल जाते और कविता सन्नादि के लिए पूरी काशी कापनी पड़ती। अब वे 'कौड़ी-नाली' वाले अपने प्रकाशक के यहाँ से 'समा' जाने के स्थान पर काशी के यहाँ पत्रिका की सामग्री के लिए निकल पड़ते। बाबू गोवन्द चन्द्र रानी के 'भारत-माता प्रेम' में छपाई का प्रबन्ध हुआ था इसलिए 'गायदा' जाना पड़ना और वहाँ से सोठठे रात के स्याह-बारह में कम न बजना। रात्रा यन्त्रेक घाम बिउला के टाकर-क्याक में उन समय इतना ही कुछ बज रहा था। दिन भर की बीकियां मीरा की इस वैदिक यात्रा पूरा रीटिम में वे इनने धर गय हाने कि किसी तरह 'बिसमरगंज' की मंडी पार कर टाउन-हाउ के सामने वाले पार्क में पहुँच कर बूच पर भट जाते। रात की हवा में सब भी मरणा के ठँस की संभ बिसमरगंज की मंडी की अजीब तिलहनी तथा गल्ले की गर आनी रही खरिन तारा

भरा निरग्र आकाश बेगबर भीषर वादू को दूर अपने उस वेहान की रेस की छोटी साइन के इंडिन की तासाब की सरों की बच्चों की माता-पिता की और जाने किन-किन की याद आ जाती। जाने कैसी बिबदाता लगती कि जैसे किसी ने बाहु बर दिया था और वे बाध्य थे इस बनारस में इतनी दूर, इस प्रकार काम में गटने के लिए, नहीं बल्कि टूटने के लिए। वे अपने टूटने को अमगत देख पाते थे। वे अपनी मिट्टी से उखड़ी जब वे जो न गमलों में पनप पा रही थी और न ही अस्य स्थान में। वे बोल रहे थे कि वही भूप जो कभी क्यूा को जग्य देनी है अब उसकी जड़ों की भारीक नसों को ग्रासना कर रही थी। मिट्टी के माध्यम से जाने काफी मृपभूप उस हस्ती है रूप होती है, गंप होती है लेकिन धीधी-धीधी भूप भीम भीमे समाप्त कर देती है। 'समाप्त' का ध्याम जाते ही वे बीष उठते कि नहीं उनके बच्चे उनके पुण्यार्ष की प्रतीक्षा में जाने कहीं दूर भासना में एक घर की उस छाटी पिड़की से यह बोल रहे हैं। नहीं वे पुण्यार्ष को लज्जित नहीं करते। और वे बकी देह को टूटे पीरों पर घसीटते बुलानासा की तरफ बढ़ते होते।

पत्रिका के प्रयोगों के लिए यीपर बाबू बाबू सिध प्रसाद गुप्त के सहित  
 के लिए लका जा रहे थे। गांधीजी ने अगत्या उन्हें पान खाना सिखा ही दिया  
 था। दरैसिया में अपने पानवाले की दुकान पर पान खाया और मन्नपुरा का खोर  
 बड़े। अभी वे 'ठारा-रेस्तरा' के प्लूपाब पर आ ही रहे थे कि रेस्तरा में भीतर एक  
 काने में टेबल पर सिर मुझाये मुषांगु रय जैसा व्यक्ति दिखसायो दिया।—  
 दगा हूँ मुषांगु ही थे—किमी स बातें कर रहे थे। एक टाप रके। मोचा बुलाया  
 जाए कि नहीं? और वे ऊपर पढ़ गये। मुषांगु ने भी दस किया। रेस्तरा में  
 काही धार था। अधिकारों समामी ही थे। बनारस में अब एक बरस से अधिक  
 हो गया था हस्की बैगला बूझने सगे थे। वे काम राजनीति पर बहुत कर रहे  
 थे। गांधीजी की राजनीति की कड़ी आलोचना हो रही थी। बिदगी बन्नों की  
 अन्वयो जान बाणी हासियों की व्यर्बता पर वे सोगा जूसे हुए थे—गांधी देग  
 का नरुमक बना रहे थे सेक्रेट बंगाल कभी इन भीख मांगनवासी राजनीति का  
 स्वीकार नहीं करेगा। बनारस में भी इन दिनों बिदेपी बन्नों के बहिष्कार की  
 याचना मन रही थी और इनमें अनेक बड़े सोपों का हाथ है यह यीपर बाबू

का त्रिपाठी जी के बहू की अंतरंग घोड़ी में कमी-कभी सुनायी पड़ जाता था।  
 सुभाषु उन्हें देखते ही उठा और एक तरफ भे जाकर बीम से बासा  
 —हांम आपको बहुत खोत्रा दा-एक बार आपकी बाड़ी भी गिया भेटवे नहीं किया।  
 —हां सुभाषु बाबू ! बड़ी सबेरे निकल जाता हूँ।  
 —आच्छा आच्छा आप दा मिनिट इक्के आप से बहुत बरूरी बात करना ह्य।  
 हाँ ! !

गौनेमा क आये बाये ह्राब वाली यसी में 'बंगाली-टोमे' की गन्धियों स होते हुए  
 सुभाषु के साथ बे उसकी किसी माठी माँ के घर में बुसे। घर में एकदम  
 बँबेरा था। माठी माँ ने दरवाजा खोला और सुभाषु रास्ते भर की पत्नी  
 यही भी बनाये रत ऊमर के तस्से की ओर बढ़ा। बीफोर सहन में सब से कम  
 पावर का एक पीला-पीला सा बस्त्र जस रहा था। ताजी छौंकी गयी माछ की  
 गंध भरी हुई थी।

—जीने पर सम्बुलकर आइएगा।—रातना ! !

और बँबेरे जीने के सिरे पर कमरे से प्रकाश आ रहा था तथा बजोड़ी पर एक  
 बंगाली महिला लड़ी थी। पीछे से जाते प्रकाश में महिला का मुग अस्पष्ट था।

—सुबूदा ! तोमार संगे ए

—ठामार बन्धु, धीपर बाबू ! !

और धीपर बाबू आश्चर्य में आ गये कि यह तो रत्ना है। उस दिन जिस बेला  
 था वह किछनी अप्रतिम भी लेकिन आज इस समय कल्पई रंग की साड़ी में लम्बी  
 पारियाँ थीं और बिम उसने बँगला ढंग से पहन रखा था। बीसा जूड़ा उदास  
 आँसों में धीपर बाबू को घगा कि यह वह रत्ना नहीं है।

—कहाँ मिल गये ये सुमुदा ?

—मैं तो वहीं तारा में था

—तो धीपर बाबू ! आप ही इन्हें मिल गये ?

धीपर बाबू ने बँगा कि कमरे की बिड़कियाँ खोल दी गयी हैं। चाड़ी बाड़ी  
 हुआ आने लगी थी। पन्नेय के मकानों का मोर, किछनी के बँगला-गान का मधुर  
 कण्ठ सुनायी दे रहा था।

—अमल में रत्ना थी.

- मुझे मात्र रतना ही कहिए न ? वही बोधी ही हूँ ?
- धीवर बाब बहुत अप्रतिभ थे । उस रतना जैसा न स्वर था न हास्यप्रियता न वह मुस्तामा जो उम दिन मारुती वीवी के यहाँ देखी थी ।
- असल में रतना ! मैं आ रहा था कि 'ठारा' में मुमांशु बाबू निबन्धनामी दिये । बिधान उस दिन परिषद करा गये थे उसके बाद ये साहब कमी दिखनामी ही नहीं दिये ।
- आपका सारा कारोबार जम गया न ?
- क्या जमना था ?
- क्यों ? कहीं कुछ नौकरी मही मिली क्या ?
- वत ऐसे ही है । एक प्रकाशक न यहाँ बोधा सा काम करता हूँ उसके बाद यहाँ से एक साहित्यिक पत्रिका निकल रही है उसमें अवैतनिक सहायक हूँ । उसीके सिन्धिसिन्ध में तो इस समय लंका आ रहा था ।
- क्यों ?
- बाबू निबन्ध प्रसाद मुक्त क संदेश के लिए । दो चार दिन में पत्रिका निकलने वाली है न ?
- तो आप इस समय भी किसी काम से जा रहे थे ?
- क्यों ? कठ काम है आपका ?
- आपका नहीं तुम्हारा कहिए न ?
- और रतना ने किस मोहक रंग से यह कहा कि उन्हें बाद नहीं आ रहा था कि कमी भी किसी ने भी ऐसे कहा था । उपरान्त यह हँस बी ।
- तुम अभी भी इन्दौर में उसी गर्ल्स-स्कूल में हो न ?
- क्या आपका 'लंका' जाना आवश्यक है इस समय ?
- हाँऽ है तो लकिन क्यों ?
- किर कब आ सकेंगे ?
- कितने दिन तुम यहाँ हो ?
- क्या कह मजती हूँ ?
- बिधान के क्या हाल हैं ? उसने तो कोई खोज-खबर ही नहीं ली । तुम कब से नहीं मिली हो उनसे ?
- धीवर बाबू ! क्या सबमुच 'लंका' जाना पकरी है अब इस समय ?
- असल में रतना ! सबेरे उस सभरा का प्रेस में देना है और इस समय आठ बजे का समय दिया था ।



भीषर बाबू ने हड़बड़ाकर अपनी बही जेबघड़ी निकाली और देखा तो पीने माठ पा ।

—तो कठ्ठ बन सकता है ?

—क्या तीन चार दिनों के बाद ठीक नहीं रहेगा ? पत्रिका का उद्घाटन हो जाए तो जरा निश्चिन्तता से आ सकूँगा ।

—अच्छी बात है आज मंगल है न ? तो

—सबिबार को पत्रिका का उद्घाटन होगा इसका मतलब हुआ कि रविवार को आ सकता है ।

—अच्छी बात है । रविवार को फिर कोई अक्षत मत आएगा घाम में ।—और हाँ सुनिए, यहाँ नहीं उस दिन 'सारमाष' बला जाएगा । कभी आप वहाँ गये हैं ?

—वहाँ तो नहीं लेकिन वहाँ तक ही समाप्त हो ।

—तो ठीक खुशुदा ।

और भीषर बाबू को यह ध्यान ही नहीं रहा कि मुन्नासु राय भी इसी कमरे में हैं । मुन्नासु कानों में रखी टेबल पर पीठ किन्ने एक किताब पढ़ने में लगा हुआ था ।

—हाँ बाबो की ?

—भीषर बाबू तुम्हें रविवार को तुम्हारे उची तारा में सबेरे बस बने मिलेंगे ।

—बापूडा ।

—तो अब चहुँ न ? रतना ! तुम कुछ उवास ही क्यों रखी हा ?

रतना ने मास हँस दिया अपने अस्तर में गूब सहरे, बाहर जिसकी मास प्रति ध्वनि आयी मुस्मान में । उसने बैंगला में अपन मुन्नासु को ध्यानेस दिया कि मली के मुहाने तक छोड़ भाये ।

बाबू धिब प्रसाद गुप्त की कोठी के लिए वे चक्रे हुए बारम्बार मही सोचते रहे कि रतना क्यों इतनी बदली हुई लग रही थी । उमन किसी बात का भी तो कोई उत्तर नहीं दिया था । क्या वह चुप रहे जाती थी ? क्या बात हा सम्प्री थी ? मही सब सोचते जब गुप्त जी की काठी पर पहुँचे तो साने आन बज रहा था । गुप्त जी टहलने निकल गये थे । उनक सकेटरी ने फिर भी वह सदेश दे दिया ।

पत्रकारिता का दिन कागी के साहित्यिक जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण था। 'रत्नाकर जी' ने तो पत्रिका का स्वागत करते हुए खजरे में उपस्थित मण्डली से यहाँ तक कहा था कि नारसिन्दु बाबू के बाद इस पत्रिका के द्वारा काशी के साहित्यिक जीवन में न कबल प्राणरथ ही होगा बल्कि अन्तिम होगी।

पत्रकारिता की यह साहित्यिक सभ्या।

गमिनी जाती हा मनी थी। कई खजरा का प्रथम था। राय साहब बाबू साहब काठी वालों के जाने किन्-किनके खजरा का प्रथम हुआ था। बाबू गिब प्रमाद सुज रत्नाकर जी राय विमूक्ति कृष्ण महामहोपाध्याय अयाध्यायाय बाबूपेयी वधमूर्ध मन्त री-वरी-नीन याब कातिक मन्त महाय महाराज बिन्दवरी प्रमाद नारायण सिंह—स्टेट सीसामऊ, रईम बचन प्रमाद साहु नवपुत्रक बदि गिब धार "नमस्त्रि" आदि अनेक संगक रईम विज्ञान बच आदि उपस्थित थे। यहे विगाय पमाने पर भाग-बूटी पाग-मते का प्रथम था। बाग-छह टहणग नी ठाड़ के बहे बह-वम सिध गीब ठकियाँ के महारे बीडे हुए कागी के इस नर मनुष्य पर पंगा अरु रहे थे। बूट लोगों का मुसाब था रि मुजरे का

भी प्रथम हो लेकिन सप्त ईस्वीरीदीन जो कि प्रसिद्ध दर्शनवेत्ता के साथ-साथ समाज-सुधारक भी थे के कारण ऐसा न हो सका। साहू की मकलें भी तब पृथक कवि मिश्रकर 'निमास्य' जो कि काशी के प्रसिद्ध ज्ञानदात्री व्यक्ति के साथ-साथ स्वयं बड़े गंभीर एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे के कारण काशी के ये दोनों कलात्मक अंग सम्मिश्रित न किये जा सके। काशी गुरुकुल स्वयं उपस्थित न हो सके लेकिन पत्रिका के लिए तो इण्ड की सहायता मिश्रवादी। प्राचीनी जो ने गीता के 'काशिराजदश बीर्मदान' से अपना भावक धारण किया। भारतीय परम्परा में बर्चन धर्म साहित्य नबका ईस्वरोग्मुली माना गया है इसीलिए ऐम साहित्य का मुख्य यक्ष जैमी लीकिक एवं नासवान वस्तु कभी नहीं हा मकली भी बलिक मोक्ष ही समस्त जीवधारियों का एक उनके समस्त कार्यों का अक्षय है।

पंडित शिवनाथ त्रिपाठी ने काशी की साहित्यिक परम्परा का बेरो सं सम्बन्ध स्थापित करते हुए भारतेन्दु तक उसकी असुन्नता स्थापित की। अपने भावक में वे तबपृथक-कवि श्री मिश्रकर 'निमास्य' की लकीन काव्य की वृत्तियों पर फलितियों करने में नहीं चूक क्योंकि इन वृत्तियों का आदि स्रात इसाई सत्रों में था जो कि रबीन्द्र नाथ के द्वारा भारतीय साहित्यिक चेतना का अक्षय बनना पाहती है। बंगाल के साहित्य में वह समता नहीं थी लेकिन कामी इम बिदेसी प्रभाव का लकीमाति समसदी है तथा सक्षय है जि उसका उत्तर दे सके।

उत्पन्न का आरंभ भारतेन्दु बाबू एवम् एलाकर जी की कविताओं से हुआ था। कवि "निमास्य" जो ने अत्यन्त असम्पुक्त भाव से लवी भावपारा की एक कविता सुनायी। शास्त्रीजी को यह भार दिया गया था कि वे उपस्थितों को 'हिन्दी-हितकारिणी' की एक-एक प्रति भेंट करें। पेट्रीमकम की रोमानी में जगममाते बरग पर आसिन यह साहित्यिक मण्डली अब अपनी शुद्ध 'काशिका' में बोलने लगी तब पूरे हुए काशी के कलात्मक संघों की काई कमी नहीं अलरी; घाटों पर कहीं-कहीं प्रकाश था। सौम को अक्षय 'दमास्वमेव' पर कीर्तन आदि हो रहे थे। लोना की लानी भीड़ भी थी। प्रवाहित धीरों की पंक्तिवां थी थीं तथा मंवा में बीव जारा में ठहराये गये बीनों पर कनूतरी आदि की भीड़ थी थी। सेडिन रात के भीमने के गाव-नाथ घाटों पर भी निरंनता बढ़नी गयी थी।

अंधेरा पाला था। गमियों के आकाश में 'माधोशाम का घरहरा' अस्पष्ट था। कई बातों पर एकान्त जल छरछर करता प्रवाहित था। 'मन्त्रिकजिका' पर अस्मिताएँ गुमनी हुई थीं। काफी रात हो जाने पर भी कहकहे-किस्से गुंज रहे थे और अभिकांक्ष भोग झूम रहे थे। इस सारी मीठमाँ में धीमे-धीमे वहाँ से कुछ पता ही नहीं था। संभवतः किमी ने भी उनकी प्यारीक शीत-धूप के लिए एक घम्यबाब तक वेना व्यावहारिक न समझा।

'बदात्ममेव' पर सोमा की अपना बगिचों पास्त्रियाँ गिरकरें आदि थी। हाथ स लींके जानेवाले रिक्तों का प्रबलन हो चला था। धीमे-धीमे पर सारा जाने-जाने का प्रबलन तथा बेस-बेस करने का संभवतः भार था इन्हीं कहारों के सिर पर सारे बर्तन-भाँड़े फड़े-छकिये बगैरा सदबा कर तथा त्रिपाठी जी के घर पहुँचकर कर जब ब अपने घर पहुँचे तो गन के गो पत्र रहे थे।

मात्र था दिन सबेरे छह बज से प्रेम में आरंभ होकर रात के दस बज तक सामान पहुँचकर कर पके-मदि धीमे-धीमे को पूरी तरह छोड़ गया था। पूरा वनारस उनके पसलों में नाच रहा था। वे सोमा चाहते थे लेकिन लग्न में वे जैसे मिमरा' स 'गामबाट' और 'गामबाट' स 'सका' चले जा रहे हैं। बड़े पैर जैसे उनके विभाग में भर गये थे। जैसे वे मिर्क चस सकते हैं। वे एक अन्धे आदेश के सामान वे बिम कोई न होने पर स्वयं ही या कोई और बराबर आदेश दे देता है और वे चक पड़ते हैं। पैरों में धकान इतनी थी कि वे पर पकड़ कर बैठ गए अम कि वे पैर अब भी चक रहे हों।

भी प्रसन्न हो सकिन सन्त ईस्वीरीधीन जा कि प्रसिद्ध वर्सनबेता के साब-साय समाज-सुधारण भी वे के कारण ऐसा न हो सका । भाइँ की नकलें भी नब युक्त कवि विवर्धकर 'निर्मास्य' जो कि काशी के प्रसिद्ध ज्ञानवाणी ब्यक्ति क साब-साय स्वय बड़े यमीर एव प्रभावसाणी ब्यक्ति वे के कारण काशी के ये दोनों ककारमक अंग सम्मिच्छित न किये जा सके । काशी नरेच स्वयं उपस्थित न हो सके अकिन पबिका के बिए सौ दश की सहायता मिबबा बी । सास्त्री जी ने पीठा के काशिराजदण बीर्यवान' से अपना भायण वारम्भ किया । भारतीय परम्परा में बर्सेन बर्म साहित्य सबका ईस्वरोत्पुकी माया गया है इपीकिए 'स साहित्य का सत्य यद्य जैसी सीकिक एवं माधवान बस्तु कमी नहीं हो सकती थी बकि मात्र ही समस्त बीबमारियों का एवं उनके समस्त कार्यों का सत्य है ।

पबिन विवनाथ त्रिपाठी ने काशी की साहित्यिक परम्परा का बेशे से सन्बन्ध स्थापित करते हुए भारतेनु तक उसकी अक्षुण्णता स्थापित की । अपने भायण में वे नबयुक्त कवि श्री विवर्धकर 'निर्मास्य' की नवीन काव्य की बृत्तियों पर पबिनी कमाने में नहीं थूके क्योंकि इन बृत्तियों का आदि ज्ञान इसाई मस्तों में था जो कि रवीन्द्र नाथ के द्वारा जातीय सांस्कृतिक बचना का अंग बनना चाहती है । बंगाल के साहित्य में बहु समता नहीं थी अकिन कामी इस बिदेची प्रभाव का भमीनाति समझती है तथा मसम है कि उसका उत्तर दे सके ।

उत्सव का वारंभ भारतेनु बाबू एबम् रत्नाकर जी की कबिताओं स हुआ था । कवि 'निर्मास्य' जी ने अत्यन्त अक्षम्युक्त भाव से नवी भावधारा की एक कविता सुनायी । सास्त्रीजी को यह भार बिया गया था कि वे उपस्थितों को 'हिन्दी-हितकारिणी' की एक-एक प्रति में दे करे । वेदोमेवत की रोगनी में अयमगाठे बजरा पर आमित यह साहित्यिक मन्त्री अब अपनी बृद्ध काविका' में बोझने सगी तब छूटे हुए कामी के ककारमक अंगों की कोई कमी नहीं मखरी । बातों पर कहीं-कहीं प्रकाश था । मास की अबस्य 'बमास्वमेय' पर कीर्तन आदि हो रहे थ । भायों की लासी भीड़ भी थी । प्रवाहित दीर्घों की पंक्तियों भी थीं तथा गंगा में बीब घाट में ठहराये गये बाँसों पर कबूतरों आदि की भीड़ भी थी । अकिन गण के भीवन के साथ-साथ बातों पर भी निरंतरता बड़नी गयी थी ।

बैरेय पाक था। गरमियों के आक्रम में मायाशन का पररुग अस्पष्ट था। कई पाटा पर एकाम्ब बल छनछन करता प्रवाहित था। मधिकाशिका पर अबस्य चितारें मुकमी हुई थीं। काफी गत हो जाने पर भी कठकठे-किन्मे मूँब रह से और अभिकांश साग शुभ रह से। इस सारी नीड़मा में थीयर बाबू कहीं से कुछ पता ही नहीं था। संभवत किन्नी ने भी उगकी पारारिक दौड़-भूत क लिए एक धन्यवाद तक रना आबदपक न समता।

'प्राप्तवमेव' परभोगों की अपनी शक्तियाँ पास्कियो विवरमें मानि थी। हाथ से सींचे जानेवाले रिक्तों का प्रचलन हो पसा था। थीयर बाबू पर सारा पाने-पीने का प्रबन्ध तथा शैल-नेक कर्म का संभवत भार था इनीलिए कहारों क मिर पर सारे बर्तन-नाडे फर्मे-शक्तिये शरीरा सन्ना कर तथा त्रिजाटी ओ के घर पहुँचना कर जब क अपने घर पहुँचे ता गत क दा बज रह से।

बाद का दिन सवरे छह बजे स प्रेम में आरम हाकर रान क वा बजे तक सामान पहुँचना कर बके-माँदे थीयर बाबू को पूरी तरह ताब गया था। पूरा वनारम उनकी पसकों में गाब रहा था। वे सोना चाहते थे छक्ति उम्रा में वे जैम 'सिगरा' स 'गायबाट' और 'गायबाट' स 'संका' बजे जा रह हैं। बके पौर जैम उनका दिमाग में भर गये थे। जैम वे मिर्क बल सकते हैं। वे एक अये आरोग क सामान थे जिन कोई न हाने पर स्वय ही या कोई और बराबर आशा दे देगा है और वे बल पन्ते हैं। पैरों में बकान इतनी थी कि वे पैर पकड कर बैठ गये जम कि क पैर जब भी बल रहे हों।

वह एकदम दूट रही थी। आज रात में अनेक बार नींद दूरी भीर कई बार "यम नाम सत्य है" हरि बोल" की आवाजें सुनीं। फिर भी निपमन-ये उठ भीर माया नाम-नाम पूरा करते साइ नी तबे बे घर छ निकल। बाजार में जाग निन गुरु होने का कुछ अम ही नहीं था। फिरमें पास्किरी बगिची आ जा रही थी। रईस काय तथा उनके परिवार क साम या ता मंगा-स्नान करने जा रहे थे या सौंग रहे थे।

जब क तास-रेस्तरों पहुँच मुषामु राय ठब नहीं थे। बँडे-बँडे जब काफी देर हो गयी ता पान गाने क सिद्ध उडे। तमी हाँकने हुए मुषामु आय भीर एकदम दरवाजे की आइ में लड़े हो मये। भीपर बाबू की ममता में तुगन्त आ मया कि जालिकारी महामय क साथ कुछ घटना बटी है। मुषामु राय ने समभन भीपर बाबू को बाँहों में घनीटते हुए रेस्तरों के पीछे क दरवाजे पर स जाकर कहा

—भीपर बाबू ! हम ठी बनना नहीं पाएगा थाप कुछ-कुछ ममता गिया हावा हय न ? आजका रंगमाली आनकी बीरना पूछ पर बरिं हाब एक ठो नीम

हय उहाँ मीलेगा । उमको बोळ देता जे हेम भा नहीं सकेगा । होम भी पसता आपका सगे सकिन—आच्छा तो आप जाएँ । वो ओवाने रास्ता देखता होमा ।

और थीपर बाबू बाहर निकले । काभी में इतने दिना स रह रह ये सेकिन एकाप बार किन्नी के साथ यहरेवाजी के बसाबा कभी कोई सवारी नहीं की थी । आज चूँकि बेटी हो रही थी इसलिए हाव-रिक्शा किया और बरुषा के पुस की बोर थल । वरखों बाह किसी सवारी पर चढ़ कर निदिचन्द्र मन स बिना किन्नी नाम की हांसल या आपाबापी के सड़क के दानों और के मकानों लोगों को दलते जाता—इसमें भी एक बडा अजीब मुन्स होता है । ब मोचन सगें कि बगियनों में सबा मोटरों में बैठकर किठना ऊँचा-ऊँचा सा और कैमा-कैमा भा सगता होगा ? बड़ा बच्छा छग रहा था जैसे खूब साध सुगही का पानी पीने का मिस गया हो । घूप चढ़ने लगी थी । घूप के बगूसे मोल-मोल यहाँ-वहाँ बसने सगे बे । 'बनीस बामेज' के आगे ठा बडा उबाड़ सा था । सन्धी घुनी सड़क की कोलतार पर घूप गरम पानी सी लहराने छगी थी । टीहों पर लड़े कुसाहों बिक बनानेवाला कुम्हारों के कप्प पर मूरे-मूरे से तपने छगे थे । कभी किसी मकान के सामने एकाव उषास साइनबोर्ड किन्नी माँड़ उस्ताद का बिल बाता कि 'बनारस के बमली उस्ताद मास्टर. भा' का मकान इसी पली में है । थीपर बाबू पुस पर पहुँचते ही बाँवे हाँव पर नीम लोखने छगे । दिन की आरंभिक सूर में सिपनी रत्ना पीठ ठिकामे बीठी थी । दिना कुछ विभय बोये-बाले रतमा भी रिक्शा में भा गयी और कचहरी की ओर निबना बड़भया ।

गिर से पैर ठर सकर साड़ी-बधाउब में रतना अतिरिक्त स्नाता सग रही थी । दिन में उसे दगने का संभवत यह पहला बबमर था क्योंकि उग दिन इन्दीर में बर्ष के बहाँ ओ देता था ठा एक तो बह बहुत दूर से देता था दूसरे रतना ग अघिक बह रोखी सेकमन का ही स्वरूप था । राफनेहुएँ बर्ग की रतना को उमके स्वास्थ्य ने सुन्दर बना रत्ता था । बंगामी मासमुनी मौल्य था उमका । मासुनी हीरी के घर यही मुन्स निचिन्द्र लगा था । सकिन आज चिन्ता ने मुष की गंभीर के साय-साय आयु का बड़पन भी दे दिया था । बनेक बार



हमारे अपने ही दले हुए व्यक्ति मूल कमी छाते ता कमी बढ़े लयने सगत हैं। और यह भी कि प्रत्येक मूल यद्यपि बोलना है लेकिन हमारे लिए नहीं। जब हम एक मूल को बोलता मुन खते हैं अपितु से ता फिर और कुछ सुनने को मन ही नहीं करता। ठीक ऐसा ही रतना-मूल वाक रहा था और वे मुन रहे थे। जब गाबिक चौकी की वह कचहरी निकल गयी पता नहीं पला और जब ता उनका रिक्शा बनारस न रईता की बगीचिया के बीच से चला जा रहा था। कारुणार की सड़क पीछे छूट गयी थी। मूल मरी सड़क पर रिक्शावाला बौलता जा रहा था। वह पमीने से कबपत्र हो रहा था। जिस समय वे मय सारनाथ पहुँचे। रापहर हा मयी थी। रिक्शावाला को वहीं सड़क पर छोड़ के साग 'मूप' की ओर निकल गये। शिर पर सूर्य आ गया था इसलिए कोई छाया नहीं थी। 'मूलमय कुटी-बिहार' की नीब पर मजदूर लोग काम कर रहे थे। छायातप मय रहा था। वे सोय 'अधोक्त-स्तम्भ' की तरफ निकल भावे और एक प्राचीन वाग्म द्वार के स्तम्भ की छाया में बैठ गये। ऊू अबस्य की लेकिन चारों ओर के हरियाल लानों के कारण उत्पत्ता कम थी।

—मनोरम स्थान है।

दूर दूर तक देखते हुए धीवर बाबू बोले।

—हाँ जब 'मूलगज-कुटी-बिहार' वन जाणवा लव और अच्छा हो जाएगा।

—तुम भी कई दिनों बाग सायी होनी यहाँ ?

—वहीं तो मैं था हमेशा ही जाती रहनी हूँ यहाँ। कान्तिकारियों के छिपने के लिए भला इससे अच्छी जगह और क्या हो सकती है ?

—क्या ?

जीन रतना ने देता कि धीपर बाबू मारचर में आँखें फेंकते निमित्त डरे से सग रहे थे।

—क्या आप टर गये ?

—वही सोचने लगा।

और वे मचमुच डरे नहीं व वक्ति वहीं ता गय थे।

रतना ने गमने में मूल की थी। दूर ममगई में दिवो कायल का स्वर सुनायी पड़ रहा था जैसे दोपहर बोक रही हा।

—क्या सोचने लगे धीवर बाबू ?

—वही कि वह कौन थी पात्र हो सकती है जिस मुताले के लिए तुम मुम इनकी दूर सायी हा।

- जच्छा बताइए, क्या बात हो सकती है ?
- घाम सवा गर्मी में तपकर रतना अधिक भारकत हो उठी थी। बासा की जर्दों में गायद पसीना था।
- विगत की बात हा सकती है, 'मास्सा-हाउस' वाली हो सकती है—
- और ?
- और ऐसी ही कुछ अनतिकारी संबधी बात हो सकती है।
- क्या अनतिकारी बातें करने के लिए आपको बुझाऊंगी ?
- नहीं रतना ! इतना बडा न तो ब्यक्तित्व है मेरा और न पुरखत्व ही।
- रगता है आप स्वय को नोस रहे हैं।
- मैं तो अपने को कुछ भी नहीं कर पाता। कमी-कमी तो यह नी नहीं अनुभव हा पाता कि मैं हूँ और तब मुझे क्या करना चाहिए ? खैर, यह बत्ताओ क्या बात थी ?
- रगता है बात सुनकर कोट जाने के लिए आकुस हूँ।
- नहीं मरी कोई उपायेयता नहीं है—कहीं भी और कमी भी।
- बासने को तो बोक सये लेकिन स्वय ही सगा कि खान यह उहें क्या हो गया ? ऐसा ता बे कमी नहीं बोलते बे। रतना एक बार उन्हें और फिर दूर देखते हुए बोली
- रगता है आपका मालुबा से इबर कोई सम्पर्क नहीं रहा।
- हाँ ?
- क्यों ?
- क्यों क्या ? वस नहीं रहा और क्या ? जब बत्ता था तब क्यों नहीं था तब भत्ता न रहने पर क्यों का क्या प्रदन ?
- आपको मान्दूम है कि बिगन बाबू नहीं रह।
- मान्दूम ता नहीं था लेकिन आदकयें गही हुआ।
- क्यों ?
- इसलिए कि इतना ठब्रम न तो कोई बाग्प ही कर सकता है और न यहन ही।
- आपको छाड़कर अब मे बापन इन्दीर पहुँचे तब तक कमल न पुम्नके माहव के वबाव में आकर झूठा बयान मजिस्ट्रेट क मामने दे दिया था कि बिगन बाबू क तबा भीधर बाबू क वबाव में आकर वह बिबाह किया था। आप दानों के नाम ता बारल्ट पहा जीहरी के नाम भी बारल्ट निरसबा दिया।

बहुत गमीर थी। खून काठी से ज्यादा जा चुका था। सबेरा होने के पूर्व ही बिचान में आँसू मूँद ली। लछमन और जोहरी ने मिलकर लखवाह का प्रबन्ध किया और सबेरा होते-होते बिचान का कहीं नाम निसान तक नहीं रहा।

मैं अपना हास्टल में यथावत सबेरे कमरे में पायी गयी। पुलिस कान्टेबल बड़ी सबेरे हास्टल पहुँचे थे कि रोजी सेक्सन कहाँ है? हास्टल की मैट्रन जब उन्हें लेकर मेरे कमरे पर आयी मैं सोयी हुई थी। लेकिन मैं समझ गयी कि यह जाल बने-एक दिन ही पुलिस का भुसाबे में जाळ सकती थी। इससे अधिक नहीं। मैं उसके बाद दूसरे दिन कमरे में ही रही। मैं जानती थी कि आज रात को कमी भी मेरे कमरे में उपस्थिति को परखा जाएगा और बड़ी हुआ। इस बीच मैं जाने की सारी तैयारी कर चुकी थी। कागजों-कि बछावा और कुछ सेना ही क्या था? जाने के पूर्व मैं बीबी से मिलना चाहती थी। स्कूल के बाद जब मैं वहाँ पहुँची तो अपने कमरे में जड़बत बैठी थी। शारदा और लछमन से मासूम हुआ कि वे कल से गिराफ्त हैं। मेरे पास समय नहीं था कि मैं समझाती। मैं उनका कुछ समझ रही थी लेकिन इससे क्या? उनके पास कुछ पर सोचने का समय था जबकि मेरे पास नहीं। लछमन से ही मासूम हुआ कि वे बी एक-दिन में चारों-आम की यात्रा पर जा रही हैं शारदा और लछमन को लेकर।

मैंने उनके जरब छुए। वे फटी आँसोंसे बस देखती रहीं। जोठों में ही जाने क्या बुरबुरापी और रोने लगीं। मैं बहुत कड़े मन से वहाँ से निकली। जोहरी भागकर नामपुर जला गया और भीबर बाबू। आज आठ दिन हुए जाने कहाँ-हाँ पुलिस को भाँसा देती बनारस पहुँची हूँ।

जब रतना ने 'भीबर बाबू' कहा तब भीबर बाबू को भी पत हुआ कि धरे वे ही वे जो मृत रहे वे जिन्हें सुनाया जा रहा था और सुनाने वाली रतना थी। मुनने-मनते भीबर बाबू जैसे स्वयं नहीं रह गये थे। ठीक अपनी जारत के अनुमार कि जब वे कुछ करते हैं या सुनते हैं तब विन्दुस अनासक्त बिचह बने बस कर रहे होते या मृत रहे होते हैं। जैसे उनसे कोई संबंध नहीं है। सायद इमीकिए उन्हें किसी बात का कुछ नहीं होना या व्यक्त नहीं हो

पाता । मनेक बार ऐसी स्थिति होती है कि कोई भी आकांग कर सकता है अपमान अनभव कर सकता है । सकिन बं है कि बस फरी अर्थात् से देखते रहते हैं—निर्मात्रि स । उम समय उनकी आँखें आपकी नहीं आपका छत्र कर बुर नहीं हानी है । और यही भीपर बाबू का अव्यक्तन पलायन है जहाँ उन्हें न दुःख होना है न अपमान हाता है न परित्याप हाता—बस के कबल उन सबको एकान्त में भोगते हैं जैसे ही जैसे कि नारी अपने में पुरुष के सहवास का भागती है । भीपर बाबू ने चौक कर अत्यन्त सहरी सांस ली । उन्होंने अपनी उम्मी परिचित पंथी आँखों से रतना को देखा जो बरुनी आँखियों का देख रही थी ।

—क्या कहें रतना ! बिगल को मास्त्री बीबी को तुमका ? एक दौर का घूमरी करुणा है और तुम

रतना ने इस बीच भीपर बाबू की ओर देखना शुरू कर दिया था ।

—और तुम निबन्धित !! —रतना ! तुम लोग वैरा होते हो । कोई बन नहीं सकता तुम सोया की तरह । हम साथ तो अपने ही को लेकर यहाँ-वहाँ जाने क्या-क्या करते रहते हैं ।

रतना बड़े ध्यान से इस व्यक्ति का देखने लयी जो अपने ओठ दाबे आँखें झपका कर ऐसे बात रहा का माना बड़े दर्द क कष्ट क साथ बोल रहा हो ।

—रतना ! पता नहीं तुम्हें देखकर बोलने को मन करता है । बड़ा अजीब सा लगता है कि जैसे बरनों से नहीं बोलता हूँ । बचपन में कभी बापता का हनु दीदी के सामने—उमके बाद उमके बाद जाने कितने घुमहो गये अजीब सा हुआ कि बापता ही छूट गया । मायरे कभी बापने की आशयकता भी ता नहीं हुई । देखो न तनी ता बापता ही नहीं आता । बस चम्पना आता है । तुम्हारा बगारम एक मिरे में घुमरे मिर तक पचासों बार नाप चुका हूँया लेकिन बोलना कहाँ हुआ ?—और रतना ! कौन अजीब सा लगता है न कि सामने बामे का जब आप से भी अधिक बापता है तब आप भला क्या बोलेंगे? इसलिये जब मैं प्रम में हाना हूँ प्रूठ-रीडिंग करता हूँ भला बगारम स्वयं को बोलन का अवसर ही कब आता है? लेकिन पता नहीं तुमको देखकर लगा कि कुछ बाला जाए । लेकिन अब माच रहा हूँ कि क्या बोलना जाए? अभी तुमने कितना अच्छा बोलकर मनाया । बिगल के प्रति मडा हुई मास्त्री बीबी के लिए अजीब तरह न मन घुमड़ा । बगल की बिबगता बयनीयता ममम में आयी । जीहरी का मौन ममम में आया । तुम ममर्य । तुम जैसे भाषों को देखकर बिबगम नहीं हाना रतना !

—भीबर बाबू ! माकड़ी बीवी तथा बिचन बाबू से आपके बारे में काफी कुछ जानती हैं। कई बार तब भी सोचा कि पुरूष कि आप घर से क्यों चले भाये?

—तब समझता था कि घर में मेरी कोई विशेष उपादेयता नहीं है। शायद किसी बड़ी सीमा में कुछ समय हो। लेकिन अब

भीर नीचे का मोठ बाबू कुछ क्षण रतना की ओर देख के फिर सूझूर में देखने लगे। मूँप डल चुकी थी। मरम-मूँप मातावरण अब कुछ ठण्डाने लगा था।

—लेकिन अब क्या ?

—कितना छोटा होता है व्यक्ति रतना ! कि मकड़ी के आसने की भाँति अपने ही चारों ओर सब कुछ को देखना चाहता है। तुम लोगों को देखकर कमी-कमी झलक लगता रहा है। बड़ा जल्का लगता था कि बिचन है तुम हो। जीवन किसी-महत्त्व के लिए सँप कर बी रहे हो। जब तक बिचन जाएगा, पी सिमा जाएगा तबपमा कर्म तो जबर-जबर बनकर खेया ही। 'धन रतना ! तुम लोगों को देखता हूँ तो बड़ी-बड़या उत्पन्न होती है कि देखो कैसे जीवट कि लोग हैं जाग से खेरते हैं। कितना बड़ा प्रेम है इन लोगों के सामने। हम लोगों से तो अपना परिवार भी नहीं चलता और भाग लड़े होते हैं। कैसे-कैसे लोगों से पीबिका के लिए समझिता करना पड़ता है। उसके बाद भी तो रतना ! बिचन नहीं रहे ?

—भीबर बाबू ! आप यहाँ क्या करते हैं ?

—बताया तो कि कुछ लोग एक बड़ा काम कर रहे हैं उसी बड़े काम में मुझे भी छोटा-मोटा काम मिल ही गया है। कुछ मूफ-रीबिम हो जाती है। उसी प्रकारक के लिए अनुबाध भी कर रहा हूँ।

—उसी 'बेतन्प-जबनामूत' का ?

—हाँ, हो जाए तब है।

—क्यों ? आप इतने इताध भाव से क्यों कह रहे हैं कि हो जाए तब है ?

—इसलिए कि कमी-कमी मन करता है कि इन सब कामों से बड़ी है माँ की पुकार, देव की पुकार। एक आवाज बड़ी सी सम्मिस्त नून सुनायी पड़ती है।

—तो क्या आप राजनीति में जाना चाहते हैं ?

—क्यों ? साधारण रहकर भी तो राजनीति में योग दिया जा सकता है ?

—लेकिन आप इन्हीं में बेल तो चुके कि राजनीति आपका क्षेत्र नहीं है।

—क्षेत्र-क्षेत्र की बात साधारण लोगों के लिए बोड़े ही है रतना ! हम तो

माध्यम है। अच्छा है कि किसी दून काम के निमित्त बनें। भीड़ में पहुँचकर साहस आ जाता है खता। तुम लोगों की भाँति ऐकान्तिक माहम क लिए बड़ा पुष्य चाहिए।

—ता आप गाँधी जी की राजनीति में विश्वास करना चाहते हैं ?

—मैंने तो एक बात कही। टूटे हुए पत्ते को नामी में भी सड़ना है और रंग में भी।

—मैं यह मही समझ पा रही हूँ कि आपको कौन सी चीज कबाटे हुए है ?

—किसी चीज के बचोटे जाने का उतना महत्व नहीं दिखना कि उसका प्रभाव का। क्या जब कला जाए। हम अपनी स्थितियों एवं भिड्डी से काल बिद्रोह करें लेकिन ऊपर उठना नहीं हो पाता। खैर, छोड़ो तुम कहोगी कि यह बड़ा नियतिवादी निराशावादी व्यक्ति है। अच्छा यह बताओ यहाँ कितने दिन हा ? क्या ये तुम्हारी माँ-माँ हैं ?

श्रीमन् बाबू ने देखा कि खता अत्यन्त उदास हो आयी थी। उसकी माँ हस्तो छलछपा आयी थी।

—अरे ? बड़ी पापक हा तुम ? क्या मैंने कुछ ऐसा कहा दिया ?

और खता ने बेसी ही भाँति न अस्वीकार बोला वह बड़ा सा फिर हिला दिया। चुप साना हा गयी थी।

—छोटा मा मुक्त छोटा सा मौमाय्य छोटी भी छाँह—कैसे पार जाते हैं इस बड़ न पूरे जीवन में। इस बीडकासीन तोरणार के स्तम्भ का सार्वजनिक गणितासिद्ध महत्व है। व्यक्ति के लिए भी कई बार ये चीजें महत्वपूर्ण हो जाती हैं। एक भाँधियों मरी सोपहरी तपनी हुआ उममें तोरणार के इन स्तम्भ के साथ टिक्ता तुम्हारा यह मुक्त खना। ये सुत ये मुक्त बहुत अच्छे होते हैं न ? और,

खता को भाग बड़ गये श्रीमन् बाबू के पीछे हा लमा पड़ा। कैसा टूटा टूटा सा बोल्ने वाला यह व्यक्ति—अस्पष्ट, लेकिन ईमानदार, मौमा चुप। जाने कब फिर—पास आते हुए बोली

—आज फिर नहीं पूछा कि मैं जब तक हूँ यहाँ ?

—बनाना हामा तो बचपन बड़ावागी। अच्छा बड़ाओ ?

सामन क उम स्तूप पर पीली-पीली घाम हुआ मैं सह्य रही थी।

—दो-बार भाड दिन ता हूँ। उम रात किन्हें आपने देना था न ? बा मेरी मागी माँ ही है। मुवांगु हमारी पार्ग का है दूर का भाई भी है।

रिक्तोवाला एक लशोक के नीचे सो रहा था ।

—तो आप घर तो आएँगे न ?

—क्या मुझे यहाँ छोड़कर जाना चाहती हो ?

—मेरा बस बसे तो मैं कमी भी

भीर रतना ने अपनी जीभ काट ली । सीमर बाबू ने किञ्चित भी आश्चर्य प्रकट नहीं किया । सामने की सड़क पर छायादार गाछों से होती हुई अंतिम रूप बड़ी तिरस्करित बिछी थी ।

रास्ते भर कार्र नहीं बोला । जब उसी बरगा के पुल पर पहुँचे तो सीमर बाबू वहीं उठर गये । अंधेरा हो गया था । एक बार उन्होंने रतना को देखा भी जो कुछ भी सुनने को उत्सुक सी लगी लड़िन सीमर बाबू जैसे ही अबोधे देखने लगे । रिश्ता जका गया ।

बुरसे दिन जब श्रीबर बाबू प्रकाशक के यहाँ से निकल ला देता कि कोठ  
 बायीं के सामने बड़ी भीड़ जमा है। एक इक्के पर कोई कपिर्सी नबनुबक चौबीसी  
 का बिल्वा बैंकेट में लपामे भौंनू से कुछ एगान कर रहा था। शापद कर 'बेनिया-  
 बान' में काम को कार्र शार्चजनिक मीटिंग की सूचना थी। लोगों ने बड़ी  
 उमेजना थी कि कम बिदगी कपड़ों क बहिष्कार पर मना होगी। ममा' ने  
 जब पहुँचे तो देखा कि पात्री जी उमकी प्रनीला में बैठे थे। बाप कि पंडित  
 जी बहुत नागज हा रह थे कि पत्रिका कि बाकी प्रतिवां अभी तक प्रेम स  
 नहीं लायी गयी। पण्डित जी क पान बहुत स म्यानीय तथा बाहर के पन है।  
 पत्रिका कम बेजी जानी चाहिए थी। कम आपके डरे पर भी म्यानी मना  
 गया था लेकिन पना नहीं जना। शापद पण्डित जी के म्यादनीय में कुछ मूल  
 ना रह पनी और क बड़े नागज थे। श्रीबर बाबू विचिन हँस दिये। श्रीबर बाबू  
 पन ही मन पंडित दिबनाय त्रिपानी का पहूपाव गये थे कि यह व्यक्ति माय  
 ममा का जितना नूया है। जिस व्यक्ति ने क म्य दिन मीटिंग में और उनके  
 बा एक पावर भी प्रगमा का न कहा हो उसके निकट बँस ही काम का अर्थ नहीं



हो सकता। श्रीमत् बाबू छास्त्री जी को वहीं छोड़ कर गाय-बाट' पहुँचे और सारी प्रतियाँ इसके पर सयबा कर पंडित जी के घर पहुँचे। पंडित जी कुछ कष्टना मजस्य पाहृत ने लेकिन श्रीमत् बाबू की मुद्रा देख ने भी टाछ पये। छत बारह बजे तक बैठ कर पेंकेट बनाये पते सिसे और दूसरे दिन डाक छ भेजने तथा स्थानीय बाँटे जाने वाली प्रतियाँ तैयार कर ने कर लीं।

सबेरे मास स्नान-ध्यान कर ही ने निकल पड़े और वस बजे बाधी से अधिक प्रतियाँ बाँट जाये क्योंकि शाम को उन्हें 'बेलियाबाग' की मीटिंग में जाना था। दोपहर में काम करते हुए दो-एक बार भूख ली लगी थी लेकिन पान खा लिया गया और फिर काम में पड़े रहे।

शाम का जब ने 'बेलियाबाग' पहुँचे तो मीठान लोगों से ख्यालब मरा हुआ था। बीच में कावेसी तिरंगा फहरा रहा था। भूप और मर्मी खासी भी उस पर इतनी भीड़। 'बन्धेमातरम' के गायन के बाद समा आरम्भ हुई। सभापति बाबू शिवप्रसाद जी मुप्त थे। दो-एक बक्ता शुरू में बोस गये तक तक भीड़ में घोर हुआ कि माक-बीय जी महाराज जा गये—और छत्र ने देखा कि पीर बर्ष के अत्यन्त प्रभाववासी एक व्यक्ति ने उपस्थित हो कर सबको प्रभाव किया। छिर छे पैर तक बबल खासी की मूपा बन्धन का मास तिरक तथा छाष्य और दुपद्दा। भीड़ ने बढ़ी और छ नारे लगाने शुरू किये—

—बन्धे मातरम !!

—मारत माता की जय !!

—महारमा याँसी की जय !!

—पंडित मदन मोहन मालवीय की जय !!

और माकबीय जी महाराज ने बोसता शुरू किया। देख की स्वतंत्रता अंग्रेजों के शासन आदि पर बोसत हुए बताया कि याँसी बाबा ने गिरलन रहूँकर मी अंग्रेजों को बनीत्री देने का यह जो नया रास्ता बताया है वह है बिरपी माक का बहि प्कार। किस प्रकार बर्षन अपने देश का मास लयीदता है स्वयं अंग्रेज इंगर्लड

क मास के मरनावा दूसरा मास नहीं करीबता चाह सस्ता ही क्यों न हो तब हम नारतीयों को भी चाहिए कि अपने ही देश का मास करीबें। सबसे ज्यादा जा मास बाहर स आता है वह है—रुपया। बिदेसी रुपये का व्यवहार करना छोड़ देना चाहिए। देश का रुपया पहनने न देश के कारीगरों को रोजी-रोटी मिलनी। देश का पैसा देश में ही रहेगा। एसी हालत में हमारी आर्थिक स्थिति सुधरेगी। आप देखत ही हैं कि इंग्लैंड क्रिस्ता छोटा सा देश है वह अपना मास सम्ये में बतारकर मरुंगे में देब कर मुनाफा कमाता है और अंग्रेज हम प्रकार घासन क्रिये हुए हैं। यदि हम उनकी चीजों का बहिष्कार करेंगे तो उनके देश की मियें कस-कारखाने बन्द हो जाएंगे। अगर उनका उद्योग फेरहा जाएगा वा वहाँ के लोग अंग्रेज सत्ता को भीति बरसन्न क सिए बाध्य करेंगे।

अनी मायब बस ही रहा था कि पुसिस के वस्तों ने घुस कर काठी चार्ज कर दिया। लोग भागने लग। नारे यहाँ-वहाँ टुकड़ों में मुनापी बने छो जेस चिरियाँ उड़ रही हों। पुसिस की सीटियाँ चारों तरफ सुनापी बने सगी। पुसिस ने घर पकड़ पुरु कर दी। काम पकड़-पकड़ कर टुकड़ों पर, सागियों पर काब जाने लये। श्रीमर बाबू मासबीय जी को पास स देखने के लिए भीड़ में धक्का खात बड़ रहे थे। तमी पुसिस की एक काठी उतक बायें कंधे पर पड़ी। वे ठिलमिछा गये। सब उन्हें भत हुआ। मंच पर मासबीय जी को घेर कर पुसिस जटी थी। बडे जोर का धक्का आया और वे गिर पड़े। देखते-देखते सारा मैदान साफी हा गया। पता नहीं कौन उन्हें बसीट कर बाग की हीवारके पास बनी एक मुमगी तक से आया। उन्हें पाब आया कि आब वे निरात्र थे। काठी कसकर बाह में लगी थी। मैदान एकबम साफी पडा था। बांस का मच भी टूटा पड़ा था। गाम की हवा में लोगोंके फटे बन्धों की धिरियाँ कागजके टुकड़े आवाय उड़ रहे थे।

—बहुत घोट आय पयल का ?

और श्रीमर बाबू ने बेला कि रामदाने के सड्डू बेचने वाले उस ब्यक्ति ने पता नहीं क्या सोचकर दो सड्डू दिये।

—साजक हो !

और किसी तरह सड्डू काबर पानी पिया और बाह बाग से उठे। थोकर तक आते-आते हाय में बड़ी पीड़ा होने लगी थी। एक छाटे से बस्तीनिक में जाकर दिखामा। हड्डी पर पाट की सकिन टूटी नहीं थी। लयाने और सेंबने की लबा केकर श्रीमर बाबू पर ली ?

तीन दिन में जाकर हाथ ठीक हुआ। दास्त्री जी ने सबमुच मेरी निमावी। एक रात को वे भीपर बाबू के ही पाग रूह गये और सक करत रहे। दास्त्री जी स्वयं बड़े प्रशाहित भक्ति थे। बाबू भी उनकी स्थिति में बिशेष परिवर्तन नहीं हुआ था लेकिन बूँदों के शिकनार-दरबार के लोपा पर निर्भर नहीं करते थे इसलिए लोग उनके माय बराबरी का व्यवहार करते थे दूसरे दास्त्री जी ने कापी में बरसों तक भाड़ झोंकने के बाद बैठकवाजी सील सी की कि किस प्रकार बात में से बात पैदा की जाती है। इनका लीला यह हुआ कि आज दास्त्री जी की पहुँच क्या मासबीव जी महाराज क्या गुप्त जी क्या पंडित जी सभी के दरबार में है। लेकिन दास्त्रीजी यह भी जानत हैं कि जिस दिन इनकी जूपा ली उमी विम पामा पलटा। दास्त्रीजी ने बड़े दर्द से सुनाया कि गवर्नमेंट संस्कृत कांसेज' में एकटो जगह रही। हमने भी बर्जी की थी। महामहोपाध्याय वाजपेयी जी के हाथ में रहा कि कौन ही। महामहोपाध्याय जी पर सास श्रीमद्भाष्य पर टीका निकली। भीपर बाबू! पाँच महीने दिन रात एक करके हमने उन ठीक किया। माया जी रूप और बाबू की रिश्तनी ही गलतियाँ रही सब ठीक किये हम और

वह मौकरी की बात बारी तो पंडित सिबनाब बिपाठी के सामने वहाँ हो गये ।  
अरे माई सब हाथी क दौत हूँ ।”

रात भर जाने क्या-क्या बातें करते रहे । इतन बर्ष में श्री भीमर बाबू ने प्रकाशक के यहाँ जाना नहीं छाड़ा । जब हाथ कछ ठीक हुआ तो शाम को न 'समा' मने और न ही पंडित जी के यहाँ । जाने क्यों उगामी ऊपर जाने लगी थी । वे 'दगारबमध' निकल आये । पहले तो बाकर एनास म बैठ गये । यमा में बाफ़ी बहल-महल थी । लोग मावों में सैर कर रहे थे । गमछा कमर में बांधे सोने की सफ़ई गमे में हिलाते कछ गुरु, उस्ताद लाप माँप-बूटीपीस-छान रहे थे । बहिष्प्या-घाट पर बगालियों का कीर्तन ही रहा था । कभी इबर से कभी उबर से पूजन भारतीय के धंय बड़ियाल सुभापी पड़ जाते । अबाबीलें पानी की सतह पर ठेक-ठेक उड़ती चरकर कान रही थी । उस पार बाबू का भूरा बिस्तार फैला हुआ था । पुल पर कोई ट्रेन मुगलसराय से आ रही थी । सँस जब होन छपटी है तो बस भीतर तक होती जाती है । पंपा के बल में जैसे बँबेरा छुपा हुआ प्रतीला ही कर रहा था कि अभी यह बाटों पर आ जाय्या और फिर करने भैसँ सा बन बूम-बूम कर चल जाएवा । तभी एक साबू ने बड़ी ज़ोर से “बम संकर” पुकारा ।  
—बच्चा ! ठेरे भसतिस्फ का रेला बोलती है के ममारब बन्द ही पूजन होया  
रिखा है मही पाब भर पूड़ी बच्चा !

—माये बायो बाबा !

—कैसा कलिकाल आ गया है !

तभी एक माई फुँडकारता उबर से निकला । बाबा जी बाल-बाल बध गये और वे तेज करम बड़ाते बड़ गये । कोई नब बिबाहिन दम्पति मना-पूजन के लिए सामा जा रहा था । पहनाई और बड़ियाल बोल रहे थे । दुग्हन को नाइन ने मारी में उडा रला था । औरतें मार्ली हुई घाट से नीचे उतर रही थीं । कई भिगारी, दो एक पंडित उन लामों को बेरे हुए थे । पान-फूल बामे बाँप-बासे भी मोदा मिले घुंसे पड़े रहे थे । घाट की बुर्जी पर कोई मुक 'दियोटा' कम दण्ड सपा रहा था । दो जार पतंके यहाँ-वहाँ आकास में उड़ रही थीं । न गाम्ति की न फोलाहल ही । अजीब बुरा बुरा सा लग रहा था । ब 'बहिष्प्या घाट' की लग्न बड़े । घाटवालों ने अपने सोंमबों में मूब मारी गुलाब की पत्रुरियाँ सबायी हुई थी । कीर्तन बड़ी ज़ारों पर बक रहा था । कोर् बीनब यीड़ीय माबू दानों हाबों को नृत्य की मुग में ऊपर उडावे 'शामरि तारा लामि अनुपन बिबाद मुगति' गा रहा था । मुरंग तथा बानी पर मगन हो रही थी और पान की सीढ़ियों तक

बैठा भक्त समुदाय तन्मय बिसुम होकर चुन रहा था। शोताओं में अधिकतर बुढ़ा बंगालिन भी केकिन कुछ अन्य मुख मी बहीं थे। श्रीवर बाबू को वे छल्ल बाबू की मायिकाएँ खनीं। उन्हें क्या कि यह किछनी विभिन्न कासी है—बंसीय कासी।। जहाँ कीर्तन है अप्रतिम मुख है समाज प्रताड़ित बिधबाएँ हैं जबकास प्राप्त बनासी बुद्धिजीवी है कान्तिकारी है और पठा नहीं काळ हँटें तथा परेदार हरी बिड़ किमोंबाक इन बगासी मकानों में जाने कौन-कौन होगा। बंभी संकीर्ण बंगालियों में अपने को किछनापुषक कर लिया है। किछने पुषक है ये फिर भी इन सीड़ियों पर बैठ हुए यह बँप्लब-कीर्तन मूवग की बापें तथा बाँधी का आकापठा दरन-स्वर जाने कहीं जाने किन कास्पनिक राधा-कृष्ण मञ्जुवन-बुन्दारन में से जाता है। जैसे पीरुधिक इतिहास के पृष्ठों पर राधा के नूपुर मन्द-मन्द बज रहे हैं और वे प्रत्येक के मनबुन्दा में गूँम उठते हैं। राधा और कृष्ण मारी और पुष्प वेण हीन काञ्चीन आठिहीन दो ब्यक्तिव्य तबाकार होने के लिए आकृस—और प्रत्येक हृदय में यह रोग-मिसन अनुकन होता है—फिर भी हाय रे, ये कैसा बियोग है कि तादारमय नहीं हो पाता। जनस्त वीबारें खड़ी हो जाती हैं। भयवान और भयवती के बीच भी यह बमेघ बीबार है जिसे न भक्ति स न ज्ञान से न कीर्तन स न पूजा-अर्चन स कोई भी न टोड़ सता। सब या गये वह बिच्छू गाथा केकिन आज की इस कीर्तन संसा में भी हृषय आकृक ही रहा पिपासित ही। वे जाने कहीं बह पये थे। चठ हुआ ता बला कि एक बुढ़ा बंगालिन उनके पास लड़ी थी।

—की आपनी श्रीवर बाबू आसे न ?

—जी हाँ ! मैं श्रीवर ही हूँ।

और उस पूँबकक में पहचाना कि यह तो खना की मासीमाँ ही है।

—अर मासीमाँ !

हठल ही श्रीवर बाबू के मुँह स यह सम्बाचन निकला था।

—आरे बाबा कोई रोचना क ता आम चार बीन से भीषय ताप रे बाबा। मो बाका जे कौनो के पाठा क श्रीवर बाबू को बाकाता माँगता। मो वबू का ता पाठार्द नेई। तुम आपर किया बा किया ?

—नहीं।

—होम उताँ से बेला जे तुम आई जन हय अयबा कानू दूगार जन।

—क्या आप पर पा रही है ?

—तुम जानेया ता होम जापना मकठा।

सकल छाड़ी में एकदस्ता मापीमा हाथ में पीठक का कमण्डलु लिये भाये-अ  
 बल रही थी। बाट बढ़ते ही सामने की गली में बस गयी। दो एक मोड़ के बाद  
 ही घर आ गया। पत्तियों में रात अपेक्षाकृत अधिक थी। मापीमा ने दरवाजा  
 बजाया तो किसी ने डापी घ नीचे जाने वाला अचरोब ऊपर से ही हटाया।  
 सोय भीतर पहुँचे।

उस दिन और आज में कोई अन्तर नहीं था। घर में भीषण एकांत था। पत्थर  
 के दीवारों पर छाँटि जैसे टूटी हुई थी। भीषण बाबू जीना बढ़ते ऊपर पहुँचे।  
 रतमा के कमरे में अंधकार था।

—मापीमा ?

—नहीं मैं थीपर।

—अरे, आप ?

रतमा के बिस्तरे के पास ही नीचे का दरवाजा खोलने वाली रस्ती मुक्त रही थी।  
 —हाँ मापीमा नीचे हैं। स्विच कहाँ है ?

—बोड, दरवाजे के पास।

और भँपेरा कमरा सहसा चौंक उठा। जैसे सोते में किसी ने चुम्बक लिया हो।  
 रतमा पर्लंग पर उठने की बोधिका करती रही। थीपर ने उस बरज दिया। टेबल  
 के साथ वाली कुर्सी लकर पास ही बैठ गया।

—तो— ?

—तुम बीमार हो गयी है न ?

थीपर ने सहजे की लफ्त में रतमा बोली और दोनों हँस दिये।  
 —मच्छा तो तुम लफ्त करना भी जानती हो ?

—जनाब लफ्त करते हुए मैट्रिक में एक बार पकड़ी गयी थी।  
 र दोनों फिर हँस दिये।

—बीमार कबसे हो गयी ?

—बीमार कम हुआ है कोई ?

—मठभब

—मठभब बीमार कैसे हुई ?

और इस बार भीबर लुव ही जोरों से हँसा । समबत बरसों बाब नहीं बस्कि जीवन में पहली बार इतनी चारों से हँसा । रतना अजीब दुष्टि क साथ हँसते भीबर बाबू का देख रही थी जैसे बह बालिका हो एकदम निरच्छन्न मिर्बोय ।

—बाप चाम ता पीते हैं न ?

—कमी पीता बा बिघान के कारण ।

—बिना किसी के कारण बने नहीं पीते हैं न ?

—किते इतना अबकास है रतना ?

—माझीमाँ ! श्रीबर बाबू चाम पिर्गे ।

रतना ने नीच पुकारते हुए कहा । माझीमाँ ने वहीं से 'बाच्छा' कहा ।

—क्या तुम भी चाम पिक्कावागी ? मैं तो चाम खाऊँगा ।

बेनों फिर हँस दिये ।

—बुल्बार क्यों हो आया ?

—बाप ही पूछिय इससे ।

—कैसे पूछूँ ?

पता नहीं कैसे सरलता से भीबर बाबू ने अजाने ही पूछा कि रतना भीग उठी ।

।—यह भी नहीं मामूम ? अरे भाभा सूकर पूछिय, फौरन बताएगा ।

और भीबर बाबू ने माथा सूकर किचित घैतानी से पूछा

—अच्छा भाई, अब बतला दो कैसे हो आवे तुम ?

—उस दिन सारलाब में लू के मात्र मैं जाया था । इस महिला को देखकर मैं रक गया इसने मरी जेवसा की थी और बह तुमसे बातें कर रही थी इस लिए मैं इसे हो आया ।

बड़े अजीब ढंग से मुँह बनाकर रतना बोळ रही थी और हँस पड़ी ।

—अच्छा मजाक छोड़ो तुम्हें ता लू लग गयी उस दिन । माम का पता लाया बा ?

—जी हाँ माहब इतनी बचाइयो पी गयी हूँ कि अब डाक्टरों की बातें सुनते ही मार बीटनें की तबियत होती है ।

—ता मुझे हट जान बा यहाँ न ।

—हे भगवान ! भला जापको मारनेकी ता जरक में भी स्थान नहीं मिलेया ।

—तुम ता काछी सटक गयी इतने में ही ।

- बच्चा ये माफीमां आपकी कहाँ मिल गयीं ?
- वहीं घाट पर । कीर्तन सुन रहा था तनी मुझे पहचान कर आ गयी ।
- क्या आप रोब कीर्तन सुनने जाते हैं ?
- हाँ आज—बस मन बड़ा बैसा हो रहा था सोचा घाट पर ही चम्पू ।
- केकिन आपल तो दो-एक दिन के बाद जान के लिए कहा था ।
- हाँ मसल में मैं भी अस्वस्थ था इस बीच ।
- हे मयबान ! क्या हुआ था ? और बताया नहीं अपनी तक ?
- कुछ बात नहीं बँस ही ।
- छिःर नी ।
- वा उन दिन 'बेठियाबाग' वाली मीटिंग में चला गया था ।
- वहाँ तो सुना लाठी-बार्ल हो गया था ।
- हाँ बाहिने कबे पर बोड़ी सी घाट आ गयी थी ।
- पुलिस की लाठी की ? देखूँ ?
- अर नहीं रतना ! अब तो सब ठीक हो गया ।
- अरे बाह, दिखाओ दिखाओ ।
- और उसने कूटते के बटन कुलबाकर चोट वाली जगह देखा । घाट तो नहीं रह  
 गयी थी केकिन हल्का मिछान पोष था ।
- ओ राजनीति का प्रसाद मिल गया न ?—माफीमां !
- माफीमां को पुकारा । "निये एरबी"—उत्तर मिला ।
- आ रही होंगी ऐसी क्या जरूरी है ?
- तब तक माफीमां चाय ले आयीं । बँगला में उन्होंने माफीमां को बताया कि भीघर  
 बाबू के हाथ में पीड़ा है । बोड़ा सा तैल गरमा कर का दें तो मस दिया जाएगा ।  
 माफीमां न जब सुना तो उन्होंने भी चोट दली और बे मीचे चली गयी । भीघर  
 बाबू को इतनी चिन्ता बाड़ी अमुबिबाजलक बग रही थी ।
- चाय और बचा-दारु में काफी देर हा गयी । चम्पूने को हुए कि रतना ने आपह  
 बिना कि खाना छाकर जाना होगा । जब भीघर आनाकामी करन लगे ता बहु  
 बोनी
- मैं जानती हूँ आप क्या खाते हैं और क्या नहीं । माछ जिलाकर आपकी कच्ची  
 नहीं छोड़ूँगी ।
- गान्ध उन राठ बरनों बाद उग्हें बहुत बकला लगा । कम पाबर का पीना-पीया  
 सा बन्ध और लेंगेदे रंग की दीवारें, उस पर काफी ऊँची छत्र काफी नी सप रही



धी । बीबार पर रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द दुर्गा के सामारण से भिन्न थे । इसके अतिरिक्त एकत्र अस्मारी पत्तग टेवस कुर्सी के असावा कोई सामान नहीं । कमर सासा बड़ा था । संभवतः दो कमरे और थे । ऊपर-नीचे मिलाकर छह कमरे होंगे जो अधिकतर बन्द थे बिनाम ठाके पड़े हुए थे । ऊपर-नीचे बीचन सा कमर रखा था, जैसे ताम्बाब सूख जाने पर उसका पेटा क्वाबदार यहुरई के साथ उभर जाता है और उस विस्तृत यहुरेपन में वो एक आवमी ही हों तो रात का मयाबनापन कैसा-कैसा सा सगने कगठा है—बस बैसा ही यहाँ कग रखा था । सास बनारसी घरों में हमेशा ऐसा ही छपता है कि आप उनमें दूब पये हैं—निशब्द ! !  
—बड़ा बूटा-भूटा सा कमर रखा है न आरए छत पर चले । जाने कब नयी बी ऊपर ।

धीर से ऊपर छत पर निकल आये । सास पास ऊँचे-नीचे मकानों से दूर तक का विस्तार भरत हुआ था । कई तरह का घोर दूर-दूर तक यदयद रूप में मा रखा था । छत पर एक चौकी भी जिस पर रखना बैठ गयी । धीबर बानू मुँडेर से पीठ टिका सड़े रू । बड़ा सा काका आकाश तारक दक्षिण बँबोबे सा बिजा था । दूर मधिर की पूजा-आरती का स्वर सुनायी से रखा था ।

—बापक मन में कोई बिजासा नहीं होती धीबर बानू ?

—कैसी बिजासा ?

—यही कि मैं कौन हूँ क्या हूँ क्यों हूँ ?

—होती है रखना ! सेकिन पता नहीं पूछना नहीं हा पाता है । छपता है पूछना जस्पबाजी होती है । जब कोई बठाठा है तो सगता है जैसे बाठ पक गयी है । पूछने को तो आप किसी से भी राह चले पूछना चाहेंगे कि कहिए साहब ? सेकिन बतलाने में बिरबास होता है ।

—सेकिन महासय जी मैं बतलाना चाहती हूँ सेकिन आप पूछने नहीं ता बतला नहीं पाऊँगी ।

—इसका मतलब तो यही हुआ कि जनी बाठ पकी नहीं । रखना ! सामनेबाके पर बिरबास हो तो ऐसा कमी नहीं हो सजता कि हम अपना हाहाकार न कह पाएँ ।

—अच्छा बाबा ! मैं ही हार माने लगी हूँ बग न पूछिए ।

धीरर बाबू ऐसे हँसे जैसे जीत गये हों ।

—जल्दा बताओ तुम हार मान लोगी तो एक बड़ा भारी उद्देश्य बिकस हो जाएगा ।

—कौन सा उद्देश्य बिकस हो जाएगा ?

—अपना व्यक्तिगत नहीं बरन वह उद्देश्य जिसके लिए तुम्हारे जैसे बनेक अपने प्राणों का सौदा किये जाने कहाँ-कहाँ मड़ रहे हैं ।

—ओऽऽ ॥ श्रीधर बाबू ! यह मकान मेरे पिता ने बनवाया था । कलकत्ता हाईकोर्ट में वे बजबे । उनकी सात सख्तानों में मैं ही एकमात्र रोप हूँ । सरकारी नौकरी से अवकाश ले के बनारस में ही रहने लगे थे । इसी घर में उनकी सख्तानें पली तथा अन्त में स्वयं की मृत्यु हुई । अन्तिम दिनों में घर सम्हालने के लिए इन बिबबा माधवीमाँ को डाका से बुलवाया गया था । मैं उस समय पाँच वर्ष की थी । मैं देख रही थी कि आप इतने बड़े मकान में इतने अधिक बन्द कमरे दल कुछ सोच रहे हैं । जाने किस भाषा में पिता ने इतना सारा फनीबर, बर्तन वपड़े चीजें एकत्र कीं । सारे कमरे सामान से भरे पड़े हैं, पर कोई मोसल नहीं है धीधरबाबू ! जब मैं बच्ची थी स्कूल जाती थी तभी से सिबाय माधवीमाँ के यह घर, यह छत्र—सब अभीब एकानी बीराने पग में बूढ़े जगते । नीर में प्रायः चौक-चौक पड़ती थी । बीना चढ़त हुए कमरे में घूमते अपने ही छीटे-छोटे पैरों की आबाज पीछा करनी इरती होती । यहाँ इसी मुँहिर पर पड़ी पंटों वाम को पत्रियों के बान-बैज देखनी रहती । कभी एकाध पत्रंग इस छत्र पर भी आ गयी थी । क्तिने नुकी मन स महीनों सहेजे रही । जाने क्यों सबधी भी हमारे घर नहीं आते बीर न ही माधवीमाँ या मैं कहीं जाते । बहुत हुआ दसवारबमेक कीर्तन मुक्तने खसी गया । बचपन में तो माधवीमाँ नित्य स जाती थीं सकिन बड़ी हा गयी तो बस कही गही मपी । स्कूल के बाद तिलना-मड़ना या छत्र पर टहलते रहना । उसके बाद सुषु दा बनारस आये । दूर क मदेरे भाई जगते है । ये भी बहुत कम बीराने बाभे पंभीर व्यक्ति निकस । कुछ दिन तो साथ रहे क्तिन पता नहीं माधवीमाँ से कुछ श्यादा पटी नहीं इसलिए अलग रहने लगे । लेकिन राब आत । जाने कहाँ-कहाँ क कालकारियों की कहानियाँ सुनाते । रोमांच हो जाता । सुषु दा की बातें सुनते स जान कहाँ गो जानी । उम बरस की ए० में थी । एक दिन मुझे काबेज के दरबाजे पर ही सुषु दा मिल जला एक साधु महापज आये हैं परिचय करा हूँ तुम्हारा । इसी बंभानी टोके में एक मकान में हम पहुँच ।

धीधर बाबू! वहीं आठ-दस क्रान्तिकारी बँठ हुए थे। दूपुवा ने बाद में बताया कि साधू-बाबू की बात झूठ थी। और इस प्रकार मैं क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आयी।

—और आज तक क्रान्तिकारी हो।

—निराश्र्व ! !

बातें बनायास ही बीच में टूट गयीं। माझीमाँ ने भीचे स पुकाप भी वा। ने सोग नीचे उतर आये।

छाँटते में काफी देर हो गयी थी जम्हें। जलते समय पूछना चाहत ही रहे कि कब मिसोगी? लेकिन जाने क्यों अपनी ओर से उत्सुकता प्रकट करना संभव नहीं समा।

इस बीच श्रीधर बाबू ने "वैद्य-वपनामूत्र" के अनुबाण का कार्य फिर और धार में शुरू कर दिया था। वे दो एक बार रतना के घर भी गये लेकिन माजीमी से पता चला कि वह कलकत्ता गयी हुई है किसी काम से। श्रीधर बाबू इस 'काम' पण्ड को मर्माग्नि जालते थे। पूरे देश में अमहयोग की आधी जोरों पर चलने लगी थी। श्रीधर बाबू कुछ भी निर्णय नहीं कर पाते थे कि वे क्या करें? वे किसी अस्पताल के सम्पर्क में आना चाहते थे ताकि अपने का विषागों का व्यवस्थित एवं विकसित कर सकें। रोत्र गाम का यहाँ-वहाँ समाई हुआ। गरम-गरम भावण शिने जात। बिगत रतना आदि के कास्मिकारी दल के प्रति उन्हें सत्य सगता शक्ति के अपनी नीमाई एवं गक्ति जागत थे। गौधी जा की राजनीति समाने की वे चला करते थीर अतः बार शल्या टठने। 'रीफ्ट एर' के बिच्छ पूरे देश में सन्ध्याह की बाणें हो रही थी कि अमृतमर में जन्मियानाला ह्या काण्ड पिछन बरम हा गया था। मार देश में जैसे प्रकान आया हुआ था। अब ता सबरे-गाम समाई, जुद्ध मीटिये हुने लयीं। श्रीधर बाबू ने जाकर कायम में माम शिवा लिया थीर उमका मी काम करन लये। जिस दिन जन्मियानाला काण्ड

को लेकर बनारस में समा हुई उस दिन भीपर बाबू ने दवा कि कासा की संख्या में अन्ततः उपस्थित थी। सरकार की तरफ से भी कम तैयारियाँ नहीं थी। पुलिस के अतिरिक्त आवश्यकता के लिए फौज भी तैयार थी। किन्तु ही जोशीसे भावण हुए। जब बनारस डायर के सिखाफ बोला जा रहा था सभी अग्नेय सुपरिस्टेन्डेंट ने आकर समा भंग करने का हुक्म दिया। उसके बाद साठी चार्ज होते ही भीड़ तितर-बितर होकर भागी। नेताओं को पकड़ किया गया और चार सौ व्यक्तियों को पुलिस की कारियों में भर कर विभिन्न दिशामों में बनारस से बीस बीस मील दूर के जाकर जंगल में छोड़ दिया गया।

अंधेरे में रास्ता खोजते-भटकते भीपर बाबू दो बजे रात घर पहुँचे थे। लेकिन पता नहीं क्यों उस रात उन्हें बड़ा अच्छा लगा था। इतनी बकान के बाद भी वे उत्साह अनुभव कर रहे थे। बिस्तरे पर पड़े-पड़े आने वाले असहयोग के बारे में सोचने लगे और तब किया कि वे खुलकर हिस्सा लेंगे। एक साथ ही उन पर काम का बोझ पड़ गया था। प्रकाशक के नहीं जाते पब्लिशरी की पब्लिश का काम रहता अनुवाद था ही उस पर कंग्रेस आफिस को जब मालूम हुआ कि यह पहले भी यही काम कर चुके हैं तो उन पर कंग्रेस दफ्तर का भी काम आ गया। इस बीच महीनों 'समा' नहीं आ पा रहे थे। किन्तुने-पढ़ने में आसा व्यक्ति कम आ गया था।

एक दिन रात के चार बजे जागे बाबू अपने दफ्तर में बैठे काम कर रहे थे। सोचा में आगामी असहयोग आंदोलन को लेकर बहुत छिड़ी हुई थी। सभी एक वास्टीपर ने उन्हें बताया कि मिफरम में कोई महिषा आमी है और बुका रही है। भीपर बाबू हटाई चौक कि—महिषा ? इतनी रात में और मिफरम में ?

यह रतना थी। सहसा रतना को देखकर एकबार तो वे चौंके तथा सहमे भी कि कोई देव सेगा तो क्या होया ? वे जस्टी से जाकर कामज-गज सहेज कर सौते और रतना के साथ मिफरम में बैठे गये। मिफरम वयादबमध की ओर चल थी।

घाट एकत्रम निर्बम ये । चार छह दिन पूर्व पहली बग्घात हुई ही थी लेकिन इस समय मेघ झुके हुए थे । अन्धमा बावला में कहीं डूबा हुआ था । एक बुर्जी पर पहुँच कर थोड़ी देर तक तो वे धीरे-धीरे गंवा देखते रहे उपरान्त बैठ गये ।

—कहाँ चली गयी थी तुम ?

—कलकत्ते ।

—सूठ ।

—माझीमाँ ने नहीं बताया ?

—उनके बताने से क्या हुआ ? क्या पार्टी के काम से गयी थी ?

उत्तर में निश्चित निर्दोष मुखकराते हुए रतना ने स्वीकृति में सिर हिला दिया ।

—कब आयीं ?

—सभी चली ही आ रही हूँ ।

—सभी ? तो क्या पर नहीं गयीं ?

—जाना भी नहीं है ।

—क्या मतलब ?

—आपको तो सीबे बाक्यों का भी अर्थ नहीं आता । पता नहीं क्या आफ पढ़ाते रहे होंगे ।

—तमी का मास्टरी छोड़ दी ।

और वानों हँस बिये ।

—देखा रतना ।

और रतना ने देखा कि धीपर बाबू अत्यन्त संमीरता से गंगा की मार देखते हुए उससे कुछ कहना चाह रहे हैं ।

—क्या ?

—इस तरह मान-मारे घूमने से क्या हुआ ? देखा बुरा मत मानना । मैं कई शिनों से कहना चाहता रहा हूँ । आज भी पता नहीं कह पाऊँ कि नहीं क्योंकि जिस बात के लिए बग्घना चाहता हूँ वह उद्देश्य अपने में पवित्र है लेकिन

—लेकिन क्या ?

—लेकिन बिन्वाम नहीं होता कि दा चार बमों के पमाफा दा-बाग हत्याओं से इस अंग्रेज घासन-सत्र का बन्धा जा सकता है ।

—धीपर बाबू ! इसमें बहस की कोई सम्भावना नहीं है । मैं जानती थी कि आप एक दिन कांग्रेस में शामिल होगे जब कि मैं यह भी जानती हूँ कि आप किनी

भी प्रकार की राजनीति के लिए नहीं बने हैं। इसलिए कि आप में बिबेक है, आवेग नहीं। आपको संभव है कभी 'आन्दोलन' नाम से ही चिन्तना हो जाए।  
—मुझे बड़ा आश्चर्य है कि मैं अपने बारे में कितना आत्मक प्रभाव देता हूँ।

—क्यार का न ?

और रतना हंस थी। वह फिर बोली

—आप सचिन्त हैं अपने बारे में। अच्छा छोड़िए, मुझे बोड़ी ही धेर में मुमलसराय पहुँचना है। मैं आपको इसलिए यहाँ तक लायी हूँ कि मुझे इसी समय पथान रुपये चाहिए तथा यह भी कि क्या आप मेरे साथ इसके स मुमलसराय तक चल सकेंगे ? क्योंकि मैं यहाँ से ट्रेन नहीं पकड़ सकती।

—अच्छा चला जाए।

और फिर दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। भीबर बाबू और रतना घाट-घाट बहानास पहुँचे। रुपये लेकर रतना के साथ माथ से राजघाट पहुँच और वहाँ से इकना चिया। रास्ते में खूब बारिदा हुई। बानों ही काफी भीय गये। मुगलसराय स्टेशन के पहुँचे ही बरसठे पानी में रतना उठरी। भीबर बाबू न चाहा कि उसे स्टेशन तक छोड़ जाएँ लेकिन वह नहीं मानी। भीबर बाबू ने दना कि रतना ने उन्हें बड़े सतृण्य निकट्य से एक धन को देला और वह तत्र बीछार बामी बूटि में भीगनी बड़ गयी।

इकन्याला कहीं कुछ पूछ न बैठे इसलिए उसे वापस चलने को कहा। पानी और तेज हो गया था। इकन्याले ने अब बड़बड़ाना धुरु कर दिना था लेकिन वे बूँदों में भीगत रतना के बारे में जानने क्या-क्या साथ रहे वे। उन्हें रतना की यह बात सही लग रही थी कि वे अपने बारे में सचिन्त हैं। संभवतः इसीलिए उनकी प्राप्ति भी नयम्प ही है।

इसके बाद महीनों रतना का कच पता न चला । दो एक बार गये भी पूछने । बेचारी माँ-माँ को ही जब कछ मूर्खी मामूम या तब मठा बे क्या बतलाती ? लेकिन वे हुन्गी थीं और रतना के इस प्रकार घर से गायब होते रहने का साथ दोष वे सुबांगु पर डालती थीं ।

इस बीच उन्हें यह अनुभव होना आ रहा था कि काँग्रेस में आगे बढ़ने के लिए व्यक्ति की सामाजिक स्थिति अच्छी होनी चाहिए । जो बात पहले बिनाम कहा करता था उसे वे उमका आदेश अधिक मानते थे । यहाँ आकर जब कपन की वास्तविकता का अनुभव कर रहे थे । अब आये दिन बड़े नेताओं के भाषण तैयार करने पड़ते थे और उस समय उन्हें महान् आश्चर्य होता था कि उनके ही विचार नेताओं के द्वारा मुतकर जनता में जागरण आ रहा था । असहयोग बिलकूल मिर पर आ गया था । देश के सामने गाँधीजी ने एक करोड़ महस्य की यात्रा लगी थी । लोग परदल से काँग्रेस के महस्य बनने लगे थे । आय दिन विशदी कपड़ा की हाकियाँ जलती । और वह दिन भी आ गया जब मौनवाली के सामने और में बिन्धी कपड़ों का रर लग गया और 'बन्दे



मातरम' 'मातृ-माता की पय' माँबीबी की पय' कहकर होसी जहायी मयी । बड़ी बिराट समा हुई । बीबन में पहली बार धीवर बाबू ने भी बोझने का साहस किया लेकिन उन्हें स्वयं लमा कि उनका मसा सूझने लया था । हाय पैरों में कैसा ठण्डा पसीना आ गया था । बे भापण तो क्या बोल भी न सक । अजीब स्थानि मन पर बनी रही । उन्हें विश्वास हो गया कि कमी भी बरता नहीं हो सकते । उस दिन सभी को आशा थी कि गिरफ्तारियाँ होंगी लेकिन आश्चर्य कि कहीं कुछ नहीं हुआ । बी-तीन दिन तक बड़ी बिराट समाएँ होती रहीं । सबेरे स प्रमातफरियाँ निकलती । सामूहिक चरखा कस्तने का काम होता । दिन-दिन भर पन्ना एकत्र करने आया जाता । छीनों में अति उत्साह था । जाने किन-किन और कैसी-कैसी महिलाओं ने अपने रेशमी-बिछामटी बस्त्र पहनने के लिए दे दिये थे तथा खारी पहनने का प्रत लिया था । साथ ही अपने बेबर तक रिये दे रहीं थी । एसा लग रहा था कि वस कटिवद्ध है इस बिदेसी पुए को उठार फेंक देने के लिए कि एक दिन सहसा सबने सुना कि बीर-बीर में कुछ शत्याग्रहियों द्वारा पुलिस के कुछ पवान मारे गये तथा पाना मूट किया गया । इस पर माँबीबी ने असहयोग आन्दोलन को ही वापस ले लिया—क्योंकि अहिंसा हो मयी थी । किसी भी समय में यह तर्क नहीं आया और सारा बिराट पन-आन्दोलन जो कि इतनी नीमगठि स बस रहा था अचानक रोक दिये जाने के कारण लोगों को अग्नर तक ताड़ गया । उसके बाद तो अंग्रेजी बमनपक का बोलबाला आरम्भ हुआ । अत्र तक आन्दोलन चकता रहा सरकार चुप रही लेकिन आन्दोलन न बन्द होते ही लोग जेलों में टूँटे जाने लये । तथाधियाँ पर-मचड़ मार-पीट इतने जोरों पर होने लयी कि लगा कि पूरा देश ही जैसे एक बड़ा मारी जेलघाना हो गया है । हजारों की संख्या में लोग पकड़े गये । दूर-दूर के संबंधियों तक को परेशान किया जाने लगा । अलवार, प्रेस एक्टर सब पर लाले डाक दिये गये । लोगों की आयदाद भर सबको सरकार बच्चे में करने लयी । समा-जुनूस सब पर धाराएँ सन गयीं और बेचते देखते असहयोग के आन्दोलन में ज्वार बना देश समघाम हो गया ।

कच पर मुकदमे चल बहुत से नजरबंदी में सड़ने लये । धीवर भी पकड़े जा कर तीन वर्ष के लिए जेल भेज दिये गये । उनके मकान मालिक ने उनका सामान उठाकर सारबीबी का दे दिया और उसने कान पकड़े कि मबिष्य में वह किनी भी मुराजी का मकान किराये पर नहीं उठाएगा ।

धीपर बाबू को घर से पये तीन बरस हो चके थे। उनका जान का दुःख  
 सरो की देह हृदयों में समा गया था और वह दिन-रात गसती जा रही थी।  
 पिता अपने तीनों बेटों की करनी दलकर एकत्र मूक हो गये थे। बड़े बड़े  
 भीमाहन ने उन्हें कम्ब में मूह निलामे के योग्य नहीं रखा था। अलग मकान  
 बनवाकर वह जिस बेमुरीबती से एक लकड़ी के बो टकड़ करके अलग हुआ था  
 उसमें जो सरमा उन्हें हुआ था उस उनकी पत्नी भी समबत नहीं जान सकती।  
 धीपर जान लोग यही पूछते—नयों कीर्तनियाजी ! धीमोहन मुना अलग हा  
 गया ?—और वे बिना 'जय घीहृष्य' कह ही बड़े जात। उन्हें मन्दिर के काम  
 में भी अब बिगोप रचि नहीं रहन लगी थी। पट खुसे ला ब "मूर मागर" नाम  
 कर मजीर लनकाटे पद माने लयते। अनेक बार ता हारमानियम बासा भी  
 पढ़बड़ा जाता कि कीर्तनिया जी अभी इस 'कास' में गा रह थे और अभी  
 कहा था पये ? "बौरासी बेपबन की बार्ता" या "भक्तमास" न बचा या पाठ  
 सुनाकर ऐसे भागने जैसे बोरी की हू। न थाबप भुगार में रचि नहीं न अग्र  
 कूट में। अपरम में नहाता अब वे टासने लय क्योंकि शारी में पानी भरने हाब

कौपने रगता या मृंगार का दर्पण दिखाते वे जाने क्या सोचते होते। 'सेबा' में किसी तरह की मूस न हो इसलिए बहुत हुआ पान-मूस की सेवा कमी कर ही और बस। अब वे बंटों अपने मित्र बामुदेव की बूकान पर बैठे रहते और जाने क्या-क्या माँपते रहते। बीबर पर कोप आता कि आप तो जाने कहाँ जाकर बैठा है और उनकी आफत किसे है। इस प्रकार बहु-बन्पु का छाड़ वे तीर्थ यात्रा भी करने नहीं जा सकते थे। जीवन भर इन लोगों को पाला-पोसा कि बुझाने में कुछ काम आये। काम जाना तो दूर रहा उल्टे जंजाल मसे में। रहे तीसर माहब ता उनकी घादी क्या हुई कि बस उसके बाँ स तो अपनी महारानी को संकर जो चलते बने सो बाब मुँह दिखात है। उनकी बसा स माता-पिता बिन्या हूँ या मर गये। वे मसे उनकी पत्नी नसी समुदास वाले भके और बहु पाड़ा-डाकरी मसी। यह सरो बाभा जंजाल पक्ष में न होता तो मसे से चारोंपाम की यात्रा करते और फिर हुरिदार में रहते। गंगा-स्नान होडा तथा भगवान-मजन किया जाता। जीवन भर तो इसका-उसमें कर, यही तो किया। माया या कि परफोक की तैयारी करेंगे पंया किनारे बैठ कर। लेकिन भाग्य में तो बदा था यह जंजाल। मुना है सिरस्तंवार साहब की मह रानीजी का अमी पेट नहीं मरा है। और बहु इस पर में से भी अरना हिस्सा चाहती है। पना नहीं बहु किस दिन का बदला निकालना चाहती है। कान्ता का भी रौम बालाबाबा उमक समुदास भेज दिया जरा भी ध्यान नहीं आया कि हम सार्गा में भी पूछ स। —मरी की हासत तो मालियराम बंद जी कह रह ब कि ठीक नहीं हो रही है। क्या किया जाए ? उम पर बहु और सास मिरकर वालों कहती है कि गुजबंदी के अब हाब पीले कर दिये जाने चाहिए। सक्ति कहाँ ? और फिर पैसा ? छड़के वाले तो बर-खानदान का नाम सुनकर कुछ ता मुँह फँकारे ही।

अबकि तो क लिए परिस्थितियाँ बहु बापरा (हवा) बन गयी थी जिसने 'सेबा दीगवा' मुनन पर नी कर की चिमनी बुता पी की और उम अंबेरे में अब केवल ब माया फरनी बैठी रह मरनी थी। जिस घर में कमो फानुम जसल थ बाब बहाँ बीबाय पर बालिया छाड़नी हुई एवमात्र चिमनी बसती है। अब वे बहु बनकर आयी थीं तब उनकी मामुमा पालकी स नीके जान नहीं रगनी

की और मन्दुरजी के हाथ रानी बिष्टारिना के कण्ठदान हस्ते गिनने काफे पद जाते थे । यन्त्राजे पर गाढ़ियों में मनो मल्का आता था और कोठों में बनाज मरा भाषा का मकिन आज दीवारों गिरने की प्रतीला में झुकी पड़ रहीं हैं । बाड़े में ताजे दृष्टान्दुम की मम म मारा मुहम्मद मँहकता था । आज बहाँ मकरद का एक मूला राड़ा तक नहीं था । त्रिन बच्चों पर आम लगायी थी कि बर की लठनी एक बार फिर प्रमथ होंगी लेकिन ऐनी सञ्छमिया भायीं कि माने मानके ता मर दिये लेकिन समुदास में बली समा थी । डूमरों को क्या दोष दिया जाए ? जब अपना ही मिक्का जाग हा तो परबुनी को कोमन म राम ? बेचारी इस मप्रमी क ऐम फूटे भाग निकल कि बिचबा के भी क्या फूँगे । मुगीया तो दो तीन माण और रोकी जा सकती है लेकिन इन पुनी का क्या हा ? इसके बराबर की कान्ता का ब्याह हो गया—जाम तो कह ही है । हाथ पकड़ा जाने है जीम पाड़े ही । जब 'इनम' कहो ता ये भी बेचारे क्या करे ? इन बुडाने में मरेरे-माम मदिरजी है बाजार का मौदा-मुनक है ठम पर गुनी क लिए बर की लाज । कहो ता कहेंगे कि पैमा है ? बिना पैमे क छडका ना दिमने म रहा । अरे जहाँ तक जेबर बर्गच्छ का मबाक है ता उमकी ता चिन्ता नहीं । अनी उनका जेबर है जो गुनी क लिए बहुत है । मुगीया के मनम देखा जाएगी । क्या तब तक भीबर कोटेगा नहीं ? और फिर जा काम मानने हो उनकी चिन्ता हानी चाहिए कि भाग का फिर ?

लेकिन इन सबमें गुना क्या कह ? अपनी जिजी का तिस-दिक ममाण हाना कह भुट-भुट कर कम दण ही ता सकती है ? अतक धार कह माचना है कि काम कह लडका हानी ता जिजी काम भायी । तब संभव था कि वह ताऊजी तथा डाक्टर काकाजी का बत्ता बेनी कि वे मय अमी इनने अनाथ नहीं हैं त्रिनता कि वे मममने हैं । मुगीया जब बार-बार जीजा को माँ का बाल-बाल के लिए परेणान करती है तब वह एकाल में उन मममाली है कि उम पैमा नहा करना चाहिये, लेकिन जेम वह कुछ नहीं ममम पायी है । देबरत ना दिन-दुन पूर हा रहा है । यदि उमकी याने बाँते बनायीं बाँते ता जिजी उम दार हो दार्ये । स्क्रूप का कह कर वह दिन-दिन नर ताणार में मथाया करता है । मुनकमान मडुनों के माय पर्यो बनाया करता है । जाने चिन्तनी ही

गंदी-मंदी गालियाँ देना सीख गया है और एक दिन तो कह रहा था कि—  
 बीबी ! वह बीड़ी का चुन्नी पेट में से जा सकता है ! और फिर माक  
 से निकाल भी सकता है । —कितना उसे समझाया था बमकाया था कि उसे  
 घर से निकाल दिया जाएगा आति बाहर कर दिया जाएगा लेकिन गुनी यह  
 भी जानती है कि इस तरह खिसकती ईंटों को रोक कर क्या सीबार बनाये रखी  
 जा सकती है ? लेकिन आखिरकार बाबा ऐसे कहीं चले गये ? क्यों चले गये ?  
 अगर माक लो यहाँ नहीं आना चाहते हैं तो भले ही किसी और को साम  
 में न स जाएँ कम से कम जिजी को तो सही जाएँ । ठीक स दबा-दाक न  
 होना से बिल प्रतिदिन वे मुरझाती जा रही हैं । बेचारे बापु जितना कर सकते  
 हैं करते ही हैं । आज नहीं तो कल वह पत्नी ही जाएगी । माँ बुझा गयी हैं  
 जिजी को ही तो घर का सारा काम करना पड़ेगा । सुधीला टक्करबाज है । जिजी  
 को काम करने से और तकलीफ होगी । और यह हो नहीं सकता कि वह जन-  
 म्याही रहकर जिजी की माँ की बापु की और भाई-बहिन की सेवा कर सके ।  
 वह जानती है कि जिस दिन वह जाएगी उस दिन दूसरी किसी दाहतीर में इतनी  
 बकिन न हामी जो इस मुकती मकनी छत को चारे रह । बाकी कौ अधिकार  
 दाहतीरों जीर्ण हा गयी थी । और सुधीला भी कोई दाहतीर थी ? रहा बेचरत  
 —वह एक तो अनेखाइत पर की गंभीरता का समझता नहीं है और उसके  
 समझने की उम्र तक क्या पता घर की छत रहे भी कि नहीं । अनक बार  
 बारमहत्या करने का मन करता है । वह रोज बापु-माँ माँ-जिजी की बातचीत  
 चोरी चोरी सुनती है—घर के चारे में दान-बहज के मामले में जेवर कपड़ों  
 के चारे में । माँ कहती है कि उनका जेवर गुनी के काम था जाएगा और  
 जिजी का सुधीला का । गुनी के दान-बहज का भी प्रबन्ध हो ही जाएगा और  
 सुधीला के समय न होगा तो यह घर गिरबी रख दिया जाएगा । जैसे वे दोनों  
 अहर्ण मुर्ते क लिए ही ता बनी हैं कि बिना यहाँ से कूट का मास सकर बगहना  
 नहीं हो सकती । लेकिन इन वा यादियों के बाद क्या होगा ? ताईजी तो इत  
 पर क तीन हिंस करवाने की बात करती फिरती हैं । ऐसी हाकट में क्या होगा ?  
 यदि बाबा इस सबके बाद भी नहीं आये तब बापु माँ जिजी और बेचरत कहीं  
 रहेंगे ? बेचरत की पढ़ाई का क्या होगा ? जिजी की दबा-दाक कैम चलेंगी ?  
 और अनेक बार छत्रबामनी गिड़की न आती मदमाती चाँदनी में मामने की—  
 बाबड़ी अपने बाले परचों में अबीर तरह स पुकारती मगती । समता जैसे  
 यह उमदी बड़ी-बड़ी एकाम्प मौद्रियों पर चोरी-चोरी स उतर रही है । सामने

बाबड़ी की अकेली महाराज में अँधेरे का आबनूम जैसे कासा-कासा गुंज रहा है जिसे और कोई नहीं सुन रहा है। और वह नीचे उतरती जा रही है उतरती जा रही है। उसी अँधेरे आबनूम में चादर में लिपटी जिजी कराह रही है। सुमीला बाँव फाड़े बाँव पैसाये चील रही है और देवघरत मुसलमान भाबारा सड़कों के माप वीड़ी पी रहा है।—ओर, गुनी चीव पड़न को होती कि वह क्या साध रही है। तमी जिजी की काँसी सुनायी पड़ जाती। किउनी ही बार गुनी आरमहत्या क ऐसे बुःस्वप्न देखती होती। कमी घर की दीवारें चारों ओर स धीरे-धीरे पास लसकती लगती और वह ओरों से होना हापों स गला दबा आँवें मूँद कर भागा करती कि अब दीवारें उसे कुचक बालेंमी अब वह चीव उठेगी—और तमी नीर में बहबड़ात गालियाँ बरुने देवघरत सुनायी पड़ जाता।

सकिय सरा न किसी से कुछ कह सकती थी और न रो ही सकता थी। सामूरा के लिए मनु र जी की उपस्थिति अपने आप में सम्पूर्ण थी। जहाँ वो बेटा नें चाखा दिया वहाँ तीसरा भी सही। बड़ी बहू की दुस्मनी सामूरा और समुर जी स उतनी चाड़े ही है जितनी कि उमस। उमके बच्चे का बे दाने-दान स मुँहनाम करना चाहती है? बड़नगर में कड़का तप किया गुनी क तिरा तो महारानी में यही स पत्र मियावर अपने भाई को बड़नगर भेजकर बात सुझा दी। उस पर साँझन लमाया कि पत्नी अग्निहीन थी इसीलिए तो पति बिना कुछ बताये घर छोड़ कर चला गया है।—लेकिन ठीक ही तो है जब कोई कुछ बताये नहीं तो दुनिया और क्या समझेगी? कोई उममें दोष देता हागा तमी ता पर स मये तीन बरग हो मय और एक पिट्टी तक नहीं बानी। 'उनकी' तगद स तो घरबास जैसे सब मर गये है न? अरे भगड़ा स्कूलबासा से हुआ था कि घरबासा से? स्कूल छाटा था कि घरबासों को? कमी नहीं ध्यान भाया कि बच्चों का क्या होगा? बापू-माँ का क्या हुआ हागा? अपने भाई भाभी के सारे लच्छन ता पता ही ये कुछ ता मोबा हागा कि पीछे स क्या हागा? जब अपने आदमी का ही सहारा उठ जाए तो फिर कैम किमे दोष लिया जाए? मगवान उठा भी तो नहीं लेता। बेगी साँसत कर रगी है। उम पर शय में किस तिल कर घुट रही हू—गता नहीं कब तन यह दुर्गता होनी है। बच्चों का कहीं गिबाना ही नहीं सय रहा है। कमी मोपा था कि यह भी बच्चों पर

हाथ उठा सकती है ? यूँ तो कहने को कमबोरी में श्याम नहीं उठता हृष्टियाँ निकल आयी हैं लेकिन सुशीला बेबघत का मारते समय जाने कहां स चकित आ जाती है ? उसने बाव कितना फूट फूट कर रो उठती है वह ! पिता ने कौंधी घिसा दी थी कि बच्चा को कभी नहीं मारना चाहिए । जब तक 'बे' व उसने बच्चो को कभी आँस तक नहीं बिल्लापी थी लेकिन जब गुनी का छोड़कर दोनों जिदूरी हो गये हैं । वह जानती है कि बेबघत आबारा हाँ रखा है लेकिन क्या कर सकती है ? अभी तक तो बापू को तब तक स बबाब से बिया बा कि—हाँ न पतंग उडाता हूँ तामाब किनारे, किन्ती को क्या ?—जीर उसने पास में रखा जिसाम ही फेंक कर मारा बा । यदि जिसास रग बाठा तो क्या बेबघत बा सिर न फट जाता ? तब क्या हाता ? लेकिन वह क्या करे ? एक ही सड़ना आबारा निकल गया तो वह क्या करेगी ? किसक सहारे जिएगी ? इस घर का क्या होया ? घर क सारे सानों का तब क्या होया ? कड़कियाँ ता अपने-अपने घर बसी जायेगी सब इन बुद्ध बापू-माँ को इस धीरे घर को रोगिणी बिबी की कील सम्हालगा ? क्या करेगे 'बे' जब कीलकर बेलेंगे कि उनकी एक-मात्र जाती को भी वह बना नहीं पायी । क्या व अपनी सरा की बिबसता को कभी समझ-बूझ सकगा ? कभी पढ़ले भी समझी थी ? क्या इस कभी बे समझ सकते हैं ? घर के बाहर 'बे' मिराधित से हसीस्मि परिवार नहीं ले मये तो क्या सरा यही बहुत साधित थी जो बच्चों की सास-सम्हास कर पत्नी ? उनकी बिबसता का बच्चों में एकमात्र सुनी ही समझती है क्योंकि वह भी तो आप मारी हा ययी है । उसका बस बस तो वह यहाँ से कभी न जाए लेकिन असह्यन मरी अपने पेटे में नाब टिका सेपी लेकिन यीमन्त माता-पिता भी सड़की को अपने घर अधिक नहीं टिबा सकेत क्याकि मारी की अपर्या गति पुस्य में ही है ।

रात जब थीलाय ठानर घर भोये ता पत्नी ने एक बिट्टी बी । रात को इनने कम प्रबान में ये पड़ नहीं सकने ये । पत्नी ने दोपहर ही में पड़बा भी थी । अगाया कि दम्पौर बाक बरील मौनीलास जी राबल की बिट्टी है । उनको दग

घर का सम्बन्ध मंजूर है। जगत पीप में ही कोई बका जाए और लड़के को निकल कर दायें। हैम-रुन की कोई बात नहीं। आप अपनी बेटी को देंगे ही और फिर आपका घर आति में कितना जाना-माना है। आखिरकार पंडित मित्रनाथ ठाकुर का खानदान है जिनकी हुजिय्या बसती थी। सबका बी० ए० कर रहा है। लोग चाहेंगे तो आपका दामाद बैरिस्त्री भी कर लेगा। और फिर कीडनिया जी तो उनके बाल-मित्र हैं।

बिट्ठी की बातें सुनकर पंडित भीनाथ ठाकुर सिर घाम बैंगरई पर बैठ गये। वे मोटीगाल सबस को बचपन से जानते हैं। किस प्रकार इस अनाथ स व्यक्ति ने चालीस बरस में अर्जानबीसी से बकाउल हासिल की। आज वह इन्दौर का नामांकित बकीस समझा जाता है। बड़ा सा बैंगला मोटर चोड़ागाड़ी क्या नहीं कर लिया उसन ? वे उसकी पस की भूख का समझ रहे थे कि किस प्रकार बालाकी से उसने पैसे की बात बसायी थी।

जब स थीमोहन का परिवार असग हुआ था तब से घर जैम मिमट आया था। रात्रीघर भी हटकर बीसारे के पास बाली कोडरी में आ गया था। एक तरह स घर का उबर का हिस्सा एकदम ही बन्द पडा था। पिता भीनाथ ठाकुर न हाथ-मुंह धाया और रात्रीघर न सामने ही बीसारे में लगे पीड़े पर भोजन करना आरम्भ किया। घर में कोई भी बीबर बाहु की चर्चा करन स बतराता था। पीठल क दिखे में से मुनी क हाथ की रोटियाँ और भाजी पत्नी रपनी जा रही थी। पत्नी जानती है कि बिना दोनों पुन बाल-माठ के पति का काम नहीं चलता है इसलिए कभी ताबे दाल माठ न हुए ता सघर के ही दान-माठ रने रहत थे।

—ता फिर क्या माया आपन ?

—मर माजने का मवास ही नहीं है यह तो। मापना ता सबस जा महराज बने है।

—तो इन्दौर ता जाना ही पन्गा।

—और किम मेरू ?

—ता अब आपा अगहन तो हा ही गया। पीप में वे लोग डिपल बनना चाहते हैं औ फागुन में ब्याह। दिन ही निरतम है ?

—ता तुम क्या चाहनी हो कि दमी समय घामी पर स उठ जाऊँ और बस पड़ूँ ? सामा सँटा-डोर ता दो।

—ता बस दिपद मये म ? इनम ता बान ही करना मुश्किल है। जाने ता मने क्या



करना है ? अपनी गरज होगी तो बीस बल्लत बिना लोभे डोर कभी बाजोने । और पत्नी ने रोटियों का डिब्बा बन्द कर, रखे हुए दाक-भाउ परम । अपनी लोभे की बंटी से श्रीनाथ ठाकुर ने पानी पटवामा और फिर बोस

—कह दिया माई कि चला जाऊँगा । तुम तो हर बात में जीन लिये तैयार बड़ी रहनी हो संजिन कमी यह भी सोचा है कि लड़के का भागे पड़ाने का जो पत्र माँगा था रहा है उसका क्या होगा ?

—तो फाक्ट में ता कोई लड़का मिक नहीं जाएगा । इतना पढ़ा-लिखा है तो लख भी बँसा ही करना होगा ।

—ठीक है यह तो मैं भी समझ रहा हूँ लेकिन चार-पाँच हप्ता क्या आया कहाँ से ?

—मैं कहनी हूँ कि पहले बात तो कर आओ । बात हो जाए तब देखेंगे । जब वे अपने मुँह से संख्या नहीं बचा रहे हैं तो हमें क्या पड़ी है कि संख्या कहलबाएँ ? याना न चाहिए उन्हें ? ठीक है हम अपनी लड़की को जिपनी हैसियत होगी उतना वे बने ।

—संजिन जो तो पिशाबी के जमाने की बुद्धियों की बात कर रहे हैं ।

—ता बाप भी कह बीबिएगा कि म अब पुराने लोग रहे और न बुद्धिवाँ रहीं । और फिर खुद उन्होंने ही अपनी लड़की को फिलतना दिया है ? उनकी लड़की हमार ही घर में तो आयी है ? अयमायत मामा जी के सबसे छोटे साने बरुमासंकर को क्याही है । क्या दिया है खुद ने ? राई के बराबर नाक में कीस दी है । सोना सूँप सा बस ऐसी बूढ़ियाँ दी हैं और सोने के झोक के कथकथ । मेरे गामने बकीजन की घान मारें तो बिना पूँ कि कदबासंकर को फिलतनी पाकिर्या-लोभे दिये हैं ? बेटे तो छाठी फरती है ता फिर माँसे साम नहीं जाती ?

और अन्त में यही तय पाया कि पति-पत्नी दोनों ही इश्वर जाएँगे और गवे भी । जीवन में पहली बार पत्नी ने बकरी से काम लिया और न मिक काठ ही पत्नी कर आयी बल्कि लड़के को फिलत भी निकाल आयी । पत्नी ने बाँटे कुछ इस इंसाने की कि अपने-वैसे की बात पर बाँते ही तरह म हाँ-ही होती रही संजिन तय कुछ नहीं हुआ । मोतीनाथ राबल महापाय ने पंडित मिशनाथ ठाकुर

का प्रतिष्ठित घर बेता और उम पर श्रीमोहन ठाकुर रिपुशर ने जब अपनी सड़की कास्टा के ब्याह में नकर रपया श्रीमिन-बायदार बाग-बगीचा त्रिये तो न सही उतना बापा तो मिळगा ही । जब कि इन लोगों ने भाबी बामाह बासकृष्ण राबल को वजा जो कि एक दिन बड़ा बकील बन जाएगा । श्रीमोहन की पत्नी साबित्री का जैसे ही यह खबर लगी कि गुनी का ब्याह इतने अच्छे घर में उम हो रहा है ता वह मुख्य उठी सेकिन पति न डाँट दिया । क्योंकि श्रीमोहन को पता था कि भाणीलाल जी बकील पिता के बास-मित्र हैं इसलिए पत्नी का इस बारे में कुछ भी कहन-सुनने के लिए बिलकुल बरज दिया ।

ठिकक ता कर भाये सेकिन अब चिन्ता थी कि साठ ब्याह दान-दहन का सब कुछ मिसाकर साठ-आठ हजार का खर्च है जैसे क्या हो? न सही तो कम से कम बीस लाख तो बड़ेया ही । रुपड़े-रुतों पर पाँच-साठ सौ से कम क्या मगगा? बाटि की दो रमाईं ता देनी ही होगी । न सही चार मिठाइयाँ ता तीन से कम क्या रखी जाएँगी ? भाये-भाये देना-सेना पास-पड़ोस सब मिसाकर पाँच साठ हजार आदमियों का भोजन । बचत में न सही ता पचाम आत्मी तो आएँगे ही । बाजे बालू हैं धामियाने बाळे हैं । हाँ और क्या पाँच-साठ हजार में भी हो जाए तो पनीमत है ।

पुराने ब्याह-दारी बासे बहीखाते निकाले गये । पिछले सौ बरस में किसकी दारी पर किसना खर्च हुआ इसका ब्यौर पंडित श्रीनाथ ठाकुर के प्रपिता के जमाने से लिखा जाता रहा है । बहीखाते निकाले गये और देना गया कि कब कितनी बीनी भायी थी भाया बाबल भाये । अब पति-पत्नी मिलकर रात में सूधी बनाते । बीबों की जिम्स और मर किस्ती जानी । कितनी साटन माएमी कितनी बायल कितना रेपमी रुपड़ा चाहिए, किसना सुनी ।

और पंडित श्रीनाथ ठाकुर ने एक बहीखाते में—

—धी गणेशापनम ।

—महाप्रभु सदा प्रसन्न ।

—दाग्कापीन की जय—मिसकर मुषबंती न ब्याह का भोगनेच किया ।

मर हुमा । बुजा-भूमियाँ सब भायी सेकिन बमन खाने के लिए भी साबित्री ने एक बार साँटा ठर नहीं । श्रीमोहन ठाकुर जब-जब हो-एक बार, और कगता है

बहू भी पत्नी को बिना बताये संभवतः कचहरी स सीबे भाये । पता नहीं क्या सोच कर कान्ता को अबस्य बुला भेजा और वही पूरे ब्याह में काफ़ीमाँ और माँ का हाथ बँटाती रही । महीनों से बन्द पड़ा घर झाड़ा-सोंछा गया । पता नहीं क्या सोच कर माँ और बापू ने भी सोलकर मुणबंती के ब्याह का प्रबन्ध किया । बाड़े में हफ्ता तक बड़ा सा घामियाता बना रहा । शहनाई वाले नफीरी-नगाड़े वाले दिन भर बजाया करते । वीबारों पर नयी चित्रकारी की गयी । सभी को समा कि पंडित खीलाप ठाकुर ने जितनी घान और उत्साह से अपने बड़े बेटे श्रीमाहन की शादी की भी लगभग वैसी ही तैयारियाँ इस बार भी हुई । सावित्री तक खबरें पहुँचती और बहू कहने में नहीं चुकती कि—बहूना इसीलिए तो बलग्रहाना पड़ा । कमा-कमा कर चाँगर इनका टूटता था और घर दूसरे भरत थे । कान्ता के ब्याह में चाँदी की कौम तक बेटे नहीं बनी । मैं तो जानती थी कि ये लोप भेटी जय-हैसाई करबाएँगी इसीलिए मायके का सहारा लेना पड़ा था ।

और ये ही 'शुभचिन्तक' पड़ोसिने बड़े उदारभाव से रास्ते में लमक मिर्च का पुट लगाकर सरो के सिरहाने बैठ परमयाबा की मूर्ति परमार्थभाव से परीच लेती सुनी जाती । ब्याह के दिनों में ऐसे 'परोपकारी-बीब' न हों तो बरसों तक स्मृतिमाँ कैसे रहें ? लेकिन सरो अत्यन्त उपास भाव से एक ही करबट लेनी तमाम ब्याह के घोर-सराबे में एक ही बात सोचनी कि यदि 'बे' आज होते तो—क्या अपनी गुनी को इतने शृंगार में देख पुमकित न हू जाते ? देखो तो कैसे निकल आयी है गुनी ? दिन भर अबूटये (भाजन बजाये वाला बरन) में रहने वाली गुनी—बेघन की पीठसे महा करके कैसे कंचन हा मयी है ? लगता है अपने घर जाकर थोड़ी-सी सुख-सुविधा में खुब निकल आएगी । कोई भला पहचान सकता है इस ? मेरे सिरहाने दिन-दिन भर बँटी अपनी ही कोख बन्नी बेटे के रूप को जब न ही नहीं देख सकी थी तो भला दूसरे की क्या बात ? कैसे ओठ है जैसे जाने कितनी बातें ओठों में गिरी-गिरी पड़ रही हैं । सहेने नहीं तो उसके आज ओठों सब स फूट निकलें । बापू और माँ का खूब तो बहू कित्ती भी जगम में नहीं उठार पाएगी कैसे देवता से सास-समुर पाये हैं उसने । देवता तो ब' भी है, लेकिन दूर देव के ।

कितना सरो ने जाहा कि उठकर बहू भी बेटे के ब्याह में खूब काम करे । चाराँ और नाम में व्यस्त खीगतों को जाते-जाते देगती तो उसका कितना मन होना कि बहू भी जाए और देखे कि क्या क्या बन रहा है ? कितना-कितना बन

रहा है ? कास्ता को जब वह मञ्जारे स सामान देते देखती तो किना मञ्जरा समझा कि वहाँ कितनी तजी स बड़ी समने सगी है । पूङ्गियाँ छानने की मिठाइयों की गंध ही गंध उसकी नाक के पास भँक्यती होती । कमी गनी का के जानर महलया जा रहा है—गीठ हा रहे है ता फूठमासाएँ भा रही हैं । बोने-पत्राबनी बाबा गट्टर ला रहा है । भाब ग्रह-शान्ति हो रही है तो कल बट की स्थापना हो रही है । भाब यदि बे' हाते तो क्या उनके साथ 'ग्रह-शान्ति' करवाने में वह नहीं बैठती ? बिबाह क समय जैसे पत्नू बाँधे गये थे जैसे ही इन बार बाँधे जाते । 'ग्रह-शान्ति' के समय वह नाच मयो थी । सासुमाँ और ससुर की कैसे अच्छे रग रह थे न पत्नू बाँधे ? इन बच्चों ने तो पूरा घर सिर पर उठा लिया है । हवन से घर कैसा गमक रहा है ? वह ज्यादा देर बैठ भी तो नहीं सफटी नहीं ता और कुछ नहीं तो तरकारिवाँ ही क्यथा देती । लेकिन देखो न कि इस सारी व्यस्तता में भी कास्ता काही माँ का पण्य बनने हाथ से तैयार करना नहीं मुसती । किनो प्रसन्न है वह । कैसे दौड़ दौड़ कर सारा घर सन्हाले हुए है । क्या मञ्जारु जा कोई पीब इबर की उबर हा जाए । बाहर कितने पान जाएँ क्यथा चुना सुपारी सब हिसाब स दे दिया जाता है । चाँदी के बर्क कोई साम मनि वह तब तक नहीं वे सक्ती जब तक कि मिठाइयाँ बनकर उसके कब्जे में नहीं आ जातीं । मञ्जारु क्या जा परोस की पतलों में गड़बड़ी हो जाए । गुनी ने साथ तो वह ऐसे बासनी है जैसे उससे बहुत बड़ी हा । वह महाकर कौन थी साड़ी पहनेगी इसका निर्भय कास्ता के असाबा और कोई नहीं कर सकता था । उसके ब्याह में कौनो साङ्गियाँ बी आनी चाहिए इस पर वह बानू तक स कड़ मयो थी और सबको उसका कहा मानना पडा था । बिन कोठार में दहेज का साग सामान रपा गया है उसकी आमी तो उसने अन मंगलमूष में बाँध रखी है । क्या मञ्जारु जो मन्थी भी फरक सक उसमें ।

किंकिन सरा का साहम नही पडा सामू माँ स यह पढने का कि यह इतना साग प्रबन्ध नहीं से हा रहा है ? अपर नहीं स लेकर किया जा रहा है ता इन सबकी क्या भावयकता थी ? नाता कि बापू और माँ के मन में यह बात ता नहीं है कि उनका हाव से पहली बाब पाती की गारी हा रही है इसलिये इज्जत का मबास हा गया है किंकिन तो उसकी गुनी बिनी से हेटी नहीं रहेगी न ? कास्ता का ब्याह भी यदि यही स होना तो वह भी जी जान स बाम करती । कास्ता के लिए उसके मन काई पुनाब कभी था ही नहीं । भगवान से गला बहनाँ का अच्छे बर दिये । लेकिन क्या धामीजी कभी एक बार भी नहीं आ सकती थी ?

अरे पराये लोगों के पूछ-पूछ कर मुँह सूख रहे हैं लेकिन इन महारानीजी को पता नहीं किस बात का इतना मन्नास है ?

नाब ही तो बारात आने वाली है ? लोगों की किचकिच में सुनायी भी तो नहीं पड़ता । इन लड़कों से पूछो कि किसनी बेर है बारात जाने में तो बस नापठ फिरने और कोई बम्बाद नहीं रहेगी । गोरब के लजन हैं न ? यहाँ बाड़े में मन्धप बनाया गया है ? ठीक भी तो है, कक सवेरे चँबरी (नाबर) भी नहीं होगी और क्या यहाँ इतनी जगह भी नहीं है ?

लजन के समय कास्ता नहीं मानी और एक गाब तकिये के सहारे से जाकर घरों को बँटास ही दिया । दूल्हा तो बूब सुन्दर है । जो पोचाक 'इनको' सीरों से मिली भी नहीं तो मुनी के दुल्हा को पहनने को दी गयी है । बीसे ही दकोर बोसे जा रहे हैं । कास्ता मुनी की पाने कैसे उसके कान में कुछ-कुछ बोलती जा रही है । पुरोहित की कोई सुन भी रहा है ?

—बाजली साज्जधान !!

—डीक-नगाघ साज्जधान !!

—संगल्लगानी साज्जधान !!

—बर-बबू साज्जधान !!

और बाजेबासे संगल्लाचार के लिए स्थियाँ एकजम तैयार हैं । जैसे ही 'अन्तर-पट' हटाया जाएगा और पुरोहित—'बीबीस बड़ी साज्जधान' कहेगा तथा बर-बबू के हाथ मिलाएगा कि बाजे गायन सब एकजम गा उठेंगे । लीनों की बाबल की बर्षा होने लगेगी और मुनी उसकी बेटी दूल्हे की हो जाएगी । सो और 'बीबीस बड़ी साज्जधान' हो गया । कुछ भी तो अब सुनायी नहीं दे रहा है । चारों ओर से बीरों-आरमियों की भीड़ के मारे कुछ दिखायी भी तो नहीं पड़ रहा है । बसा मन्धपा हुआ सीरों से विना जी माता जी भी भा गये । बाघ रह गयी सबकी बर्षा जाने क्या-क्या बहा जाता ।

मुना पर्यसामा (गुजराती ब्राह्मणों के सामंजसिक भोजन का स्थान) में

सूब बम्बू प्रबन्ध था ? चार पंगत (पंक्तियाँ अथवा बार) पड़ीं तब कहीं जाकर सब भोजन कर सक। किन्तु चाहुती रही यह कि जाती और देखती कि उसकी बेटी क ब्याह में कैसा प्रबन्ध था बम्बूशाखा में । वह अपने बिस्तरे पर छटी-छेटी छावती रही कि अब लोगों ने उन बड़ी ताबे की कोठियों से अपने अपने काटों से पैर धोये होंगे । कैस रंगोली (रंगबन्धी) क धोनों धोर बैठे होंगे । अगर बतियाँ जल रही होंगी । यत्तसे परस जाने पर बापू ने चाँरी क कटोरे में बूसे केसर-बन्धन में तान की बेन स लोगों के माथों पर तिलक सगाया होमा । पात्र पर सुपारी और दक्षिणा रखी होगी उसके बाद हाथ जोड़ कर कैस 'नमः पार्वतीपते हर हर महादेव' कहा होमा और पूरी धर्मशाखा ने भी यही कह कर भोजन आरंभ किया होमा । इन्हें के लिए अल्प म प्रबन्ध किया होगा और बितनी दक्षिणा माँगी मपी होगी बेनी पड़ी हानी । कान्ता ममी-अमी कह रही थी कि एक हजार एक की दक्षिणा माँगी 'अमाई जी ने और कैस तब सौरों वाले नाना जी ने पाठ सम्हाल ली और एक सौ एक जब दिया गया तब भोजन आरंभ हुआ ।

एकान्त भी था सरो अपनी माँ को देख कर तूब रागी । बरसों से माँ-बेटी नहीं मिली थीं । दोनों ने बापों स बी हल्का किया । सरो की माँ धर्मशाखा नहीं गयीं । सामू माँ ने भी देखा कि यही मीका है जब बहू अपनी माँ स बापें कर सबती है और वे स्वयं धर्मशाखा बसी गयीं ।

रात्र जब कान्ता और सामूमाँ लीटें तो बारह बज रहा था । कान्ता ने ही बताया कि उसकी जिजी लगत में जरूर थी लेकिन धर्मशाखा में नहीं आयी । दिन भर की बुर कान्ता का अपने पास बैठा कर उमक गरीर पर हाथ फेरन उग्हें बड़ा मुग मित्त रहा था । गुनी दम बीच लीट आयी थी । बपटे बन्धन बहू भी ऊपर

अरे पत्तये छोगों के पूछ-पूछ कर मुँह सूख रहे हैं लेकिन इन महत्पनीजी को पता नहीं किस बात का इतना मकाल है ?

जाब ही तो बारात आने वाली है ? छोगों की किसकिस में सुनायी भी तो नहीं पड़ता । इन छड़कों से पूछो कि कितनी देर है बारात आने में तो बस भागते फिरेंगे और कोई बबाबू नहीं बने । गोरब के समय हैं न ? यहाँ बाड़े में मन्थप बनाया गया है ? ठीक भी तो है कब अपने खैररी (खैर) भी नहीं हामी और क्या यहाँ इतनी बदाह भी नहीं है ?

लगन के समय कान्वा नहीं मानी और एक मास तकिये के सहारे से जाकर सरो को बँटाऊ ही दिया । हुन्हा तां बूब सुन्दर है । जो पोषाक 'इनको' सौतों से मिली थी नहीं तो गुनी के हुन्हा को पहनने को बी मयी है । जैसे ही स्कोक बोले जा रहे हैं । कान्वा गुनी को पामे किस उसके कान में कुछ-कुछ बोस्यती जा रही है । पुरोहित की कोई सुग भी रहा है ?

—बाबन्नी साज्जवान !!

—डोल-नगाव साज्जवान !!

—मंगलुगानी साज्जवान !!

—बर-बपू साज्जवान !!

और बाजेवाले मयमाधार के लिए तिनका एकदम तैयार है । जैसे ही 'मन्थर-पन्' हुटाया जाएगा और पुराहित—'बौबीस बड़ी साज्जवान' कहया तथा बर-बपू के हाथ मिलाएगा कि बाजे मायन सब एकदम गा उठेंगे । खीलों की चाबक की बर्षा होने लगेगी और गुनी उसकी बेटा दूसरे की ही बापनी । जो और 'बौबीस बड़ी साज्जवान' हो गया । कुछ भी तो अब सुनायी नहीं वे रहा है । चारों ओर से औरतों-बादमियों की भीड़ के मारे कुछ दिसायी भी तो नहीं पड़ रहा है । जन्म जन्मा हुमा सौतों से पिता जी माया भी भी आ मये । बाज रह मयी सबकी बर्षा जाने क्या-क्या कहा जाता ।

सुभा पर्वदाता (गुजराती ब्राह्मणों के सार्वजनिक भाजन का स्थान) में

सूब अच्छा प्रबन्ध था ? चार पंगत (पकितियाँ अथवा चार) पड़ीं तब कहीं जाकर सब भाजन कर सकें। कितना चाहती रही वह कि जाती और बेसती कि उसकी बंटी क ब्याह में कैसा प्रबन्ध था धर्मशास्त्र में। वह अपने बिस्तरे पर सेटी-सेटी सोचती रही कि अब सोपों ने उन बड़ीं ठाँबे की कोठियों से अपने अपने सानों से पैर धोए होंगे। कैसे रँगोळी (रंगाबली) के दानों ओर बैठे होंगे। धयरबतियाँ खर रही होंगी। यत्ने परस जाने पर बापू ने चाँदी के कटोरे में घुले केसर चन्दन में साने की चेत से सोपों के सानों पर तिलक लगाया होगा। पान पर सुपारी और दक्षिणा रखी होगी उसके बाद हाथ जोड़ कर कैसे 'नमः पार्वतीपते हर हर महादेव' कहा होगा और पूरी धर्मशास्त्र ने भी यही कह कर भोजन आरम्भ किया होगा। हुन्हे के लिए अलग से प्रबन्ध किया होगा और जितनी दक्षिणा माँगी गयी होगी देनी पड़ी होगी। बान्ता अभी-अभी कह रही थी कि एक हजार एक की दक्षिणा माँगी 'जमाई जी' ने और कैसे तब सौरो बाँके लाना जी ने बात समझा ली और एक सौ एक जब दिया गया तब भोजन आरम्भ हुआ।

एकान्त भी था सरा अपनी माँ को दक कर लूब रागी। बरभों से माँ-बेटी नहीं मिली थी। दोनों ने बातों में भी हुन्का किया। सरो की माँ धर्मशास्त्र नहीं ययी। सामू माँ ने भी दक कि यही मौका है जब वह अपनी माँ से बातें कर सकती है और वे स्वयं धर्मशास्त्र अभी ययी।

राज जब बान्ता और सामूमाँ लौटीं ता बाखू बज रहा था। बान्ता ने ही बताया कि उसकी जिजी सगन में जल्द ही लकिन बमशास्त्र में नहीं आयी। दिन भर की पूर बान्ता का अपने पाम बैंगल कर उमरु धारी पर हाथ फेरते उगूँ बड़ा मुग मित रहा था। गुनी हम बीच लीन आयी थी। कपड़े बरठ वह भी ऊर



आयी । नानी जी ने उस अपने से सटा लिया । कान्ता सरो से सेवा करा रही थी और गुनी नानी जी से ।

ब्याह हो गया ।

समी म कहा कि गुनी को 'दान-दायजा' दूब मिला । घर के बीस तोले सान क बकाबा ननिहास की तरफ से पाँच ताके सोने का हार मिला । कान्ता ने अपनी तरफ स (बिना अपने माता-पिता को बताये) पाँच तोले की चूड़ियाँ जमाइबी के लिए सोने क बटन दो-दो जोड़ कपड़े दोनों के लिए दिये । कन्यादान के समय सावित्री आयी थी और तोले भर क कान के फूल दिये । नकद खपया करीब ड्राई हजार के हुआ । बड़े-छोटे पीतल-चाँदी क बर्तन दिये गये । कई जाड़े रेडमी-मूठी कपड़े दिये गये । कड़के के पिता मोतीलाल राबस ने दिखाया तो यही कि उन्हें सन्तोष हुआ लेकिन सावित्री ही कहती पायी गयी कि राबस जी कह रहे थे कि बँ टगा मये इतना तो वे किसी सामाज के घर बरतत सेकर जाते ता भी पा जाते । अब तुम जानो यहुना ! कि बकील साहब ता समझे थे कि कान्ता को जितना मिला उतना मही तो बाबा मिसेना ही ।

न सही दाग-बगीचा तो रम-पाँच हजार नकर और सौ-डेड़ सौ टागा सोना तो मिसया ही ।—अब मभा मठाभा कहाँ कान्ता और कहाँ गुनी ? अरे बड़े घर म बेंटी ब्याह देने से ही क्या होता है ? जब कड़की दो बर्तन सेकर ससुराल आएगी ता लोग मानने (इज्जत) में धुकेने नहीं कि सड़का तो बाकिरटर खोबेंये और कड़की—मकटौ-बूची बेगे है न ? अरे, अपनी बराबरी के साथ ब्याह-सादी करने से निम जाता है । बेसना गुनी की सास को मी जानती हू गास उम्बैन के भागमीपुरे के मुकुषजी सागों के घर ली बेंटी है—बकार तक नहीं केगी और कंड तक पानी से धुलवा-मुकवा कर जान न स से ता मेरा नाम बरस बेना ।—अरे कान्ता के लिए जैसे गिड़मिड़ाये थे मही राबसजी सकिन बहना ! हमारे बाबूजी न ता सुनकर काम पर हाथ बरा कि ना बाबा ऐस जम्कारों के मही कड़की देने से तो मभा है किसी कमाई को दे बे । अरी फुसर्दुबर ! क्या बठाएँ दिखाने का हमें बसम से कर्षणक भी देने पड़े । यह जो पूरा दान-दायजा तुम्हारे सिरसैदार साहब ने लिया ता साथ बोड़े ही समझने कि यह सब हमने किया । क्या कर्के बाची बहम ! मुझसे तो घर जानदान की इज्जत साबस गिछे देनी न जाए । पूरा बट्टाख ताका सोना निकाल कर दिया सब बाकर नहीं कन्यादान में यह जमक जा पायी ।

और जन्ही परभार्यप्रिय सुमेश्चक बहनों ने सरो को बना देना अपना पुनीठ कर्तव्य

समझा और साबित्रो का आत्मसन्तोष का उद्देश्य पूरा हुआ। लेकिन मन्त्र यह रह ही गयी कि किमी ने इतने मुनने पर भी कोई टीका-निष्पत्ती नहीं की। मात्र कास्ता गुम्ना हुई यह सूचना मिलने पर साबित्रो देवी अन्तर में डर गयी।

सब साग गुनी को छोड़ने स्येवक गये हैं। बा-एक महारिया के बाकी सब छोप गये हुए हैं। कास्ता और मायुनी का सरा ने अबरन मेवा। वह काफी तर तक छत्रमेवाली सिद्धी को आभा बन्द कर आइ स दबनी रही कि कैसे गुनी की पासकी कहारों ने उठायी अिममें ब्रुम्हा-दुस्हन गला बँडे हुए थे। वगनी सब पहल ही आ चुक थे। कास्ता अिम ममद गुनी का बड़ा रही थी सरो ने बूँद में सिद्धी पनी का फिर भी समझ ही मिया कि वह रो रही है। जब तक मेरी (गनी) में पासकी सिद्धी रही सरो की अन्ते पीछा करनी रही और उपरान्त सरा फूट फूट कर रो उठी।

बिस्त्रे पर टूटी ऐसे ही पड़ी रही। जान क्या-क्या आँसों के सामने आता रहा। गुनी कभी पालने में सोयी लगती है। कैसे वह मिट्टी गाना करती थी। अपने बाबा के पास कोई किताब लेकर कम चुपचाप बनी रहनी थी और वे भी कितना मानते थे। एक बार अपने बाबा की नकल उठार रहा थी और वे स्कूल से आ गये थे। गुनी जैव मयी थी लेकिन उन्होंने उम नकल करने के लिए कहा और सब कितने हँसे थे? गुनी का बरमों तक सामुनी मड़कों के बपडे पहना कर अपने साथ मन्त्रिजी के जाया करती थी। कभी उम याद नहीं कि उम कोई चीज मिली हा और भाई-बहिण को छाडकर लायी हा उनने। गुनी हा बिस्कुट उत पर पड़ी है। पीरे-पीरे कैसे शास्त्र समीर होनी बनी गयी। बड़े हाल पर सब के लिए कितना ममत्व था उनमें। कभी किसी ने उसे आरों से बापना नहीं मना होगा। जाने कती से इतनी सुधीरहा गयी थी अपने आप। कभी उसके चमन की माहुर तक नहीं आती। अपनी जिजी की बीमारी के बाद से तो पूरा घर मग्हाक लिया था। उसकी पढ़ाई छूट गयी लेकिन एक बार भी कभी जिद नहीं की कि नहीं वह जान पड़ती। जैसे चुपचाप सारी बस्तुस्थिति समझ से गयी।

मुनी ता जैसे घर की पलकों थी कि जिसका सपना एक मामूम नहीं होता था—  
और आज वही सोने की बटी परामर्श के घर बसी गयी। अब जब कभी बार  
खीहार होगा और आएगी भी ता एक जतिबि के रूप में।

सरो का कसेजा मुँह को मान बना।

कैसे गुमी राती हुई उससे सिपट गयी थी। बोझ नहीं फूटा पड़ रहा था। उसकी  
आँसों मीन सब बटा गया कि जिजी ' अपना ध्यान रखना। बाबा की प्रतीक्षा  
गुनी तो इस घर में कर नहीं सकी लेकिन जिजी को करनी है। कैसे वह खाँसुओं  
बासी आँसों से घर की एक-एक वस्तु को अपने अन्तर में पी ले गयी।

सरो ने अपने स अलग करते समय अनुभव किया कि मुनी को वास्तव में तो आज  
अपने पेट से अलग किया। तभी तो नारी का बन्म दोबार होता है वही वास्तव  
म द्विज होती है न कि ब्राह्मण। नारी के इस रूप को द्विजत्व को अन्य नहीं समझ  
सकता। पुरुष तो मात्र फेन है जड़हीन। बन्म चाहे जितना वह कर स—माधि  
सर्व का नारायणत्व का परमपद का ईकित नारी के समकक्ष वह नगण्य है।  
इसीलिए भोग और उसका दुख भी नारी का ही भाग है। पुरुष सिखा पर की  
बूँद है। जब कि नारी वह बूँद जिस पर सिखा है।

मुनी क्या बसी गयी सारा घर छिटा गया था। सगता था कि जैसे उसने  
घर तथा परिवार के लोगों को बहुत कुछ भर रखा था। महीनों ब्याह की बर्षा  
अनक तरह से हानी रही। वही म नहीं पंडित धीनाथ टाकुर मीर उनकी पत्नी  
को सन्ताप था कि उन लोगों के श्रापों से पत्नी का जो ब्याह सम्पन्न हुआ था  
वह किस की मर्पाश के अनुरूप ही हुआ था। दोनों को ही लगा कि इस ब्याह  
क द्वारा धीमोहन तथा उनकी बाबाएँ पत्नी को लामा करारा बबाव दिया जा  
गया था। मयपि हममें से दोनों बिरहूत ही छाँकी हो गये थे। उन्हें अब कैवज

सुसीमा की और पिन्डा भी बाकी तो बेबदत छड़का था। दोनों एकान्त में बैठे भीतर की चर्चा करते कि इतने कैसा निर्मोही निकला कि न पत्र न सोम-उबर। बेचारी बहू का क्या हाल हो गया इसके पीछे। रोग तो जैसे पाँव ताड़ कर बैठ गया है आने का नाम ही नहीं सेठा है। मुनी के ब्याह के बाद स तो सरो और भी बीमार रहने लगी थी। साँसी का दौरा पड़त ही बंटों खाँसा करती है जैसे मूँह के रास्ते अन्तर का सब कुछ निकल आना चाहता है। मुनी तो सब कुछ समझती थी इसलिए सरो के सारे बर्तन सुआकृत सबकी बही देखभाल करती थी। सुसीमा अभी इतना समझती भी नहीं थी और स्कूल जाती थी। बेचारी माँ को घर भर क कपड़े तथा भाजन आदि का सारा काम सम्हालना पड़ता था। सुतीका हाथ बँटाती थी फिर भी माँ पर बोझ आ ही गया था। सरो कमी-कमी तो किसी का कहना सुने बर्तन कपड़े धोने बैठ जाती। सारा पानी पहल तो गुनी ही साठी थी लेकिन सब मीठे पानी के साथ-साथ सारा पानी भी मोल का ही मरबाया जाने लगा। तीसरे पहर जब सारा काम निवट जाता तो माँ सरो के पास जा बैन्ती-कमी 'भागवतजी' पढ़ी जाती या 'मूर-सागर' क पत्र ही माँ गुनगुना कर सुनाती जाती और सरो उनके अर्प करती जाती। किसी दिन सीमा पिराना किया जाता या फिर कोई बात ही निकल पड़ती। सरो अनेक बार पूछने को होती कि आखिरकार मुनी के ब्याह का लज आया कहाँ स ? लेकिन सरो को लगता कि ऐसा पूछ कर वहीं बहू सामुमाँ का अपमान तो नहीं कर देगी ? क्योंकि उस पूरा बिश्वास था कि बर्ज तो नहीं ही लिया गया था। तब यह पैसे कहाँ से आया ? घर में जमा-जूजी यदि भी तो बहू क्या उस नहीं मालूम ? और बहू अपने ही लक्ष-बिगल में उलझ जाती तथा चुप बनी सामुमाँ की बातें सुनती।

मुनी जब स गयी तब स सिवाय एक पत्र क कोई नहीं आया जो कि उसके समुर ने बानू के नाम भेजा था कि वे लोग सकुशल घर पहुँच गये हैं। मुनी क पत्र की आशा ही नहीं की जा सकती थी लेकिन उसके समुर का छह माह बाद भी तो कोई और पत्र भेजना चाहिए था ? और फिर यहाँ स जो पत्र गया उसका भी कोई जबाब नहीं। यावज में माथा था कि ब्याह क तुल्य बाद कई कारणों से नहीं भेजा ता राणी पर तो मुनी का वे साथ भेजेंगे ही लेकिन उसकी साम न नहीं आने पिया। देणें दाहने-दिवासी पर भी भेजते हैं कि नहीं। जैसे अर्थात् है

बे लोग जि गूनी का साबनी' भेजी पमी तो उसका भी कोई जबाब नहीं आया। पता नहीं बेचारी मुनी का क्या हाल है? अब कौसी लगती है? पहाटे म बेह मर गयी होगी न? बस यही पिस्ता है कि उसकी साम परा तेज स्वभाव की है। जैसे गूनी तो विस्फुट गऊ है बिठना पानी पिमाओने उतना ही पिपनी। अपनी ओर से तो बभी कोई जिनायत का भीका नहीं बेगी। लेकिन बेका क्या होता है?

और एक दिन मारायण बाबू ने बताया कि पिछले दिनों इन्दौर पमे से तो राबक जी के वहाँ भी गम से। गुनी मिली थी। कुछ बीमार सी लमी थी। क्या इस बारे में कोई पक्ष आया था? गुनी से उन्होंने पूछा तो वह तो बम उरास फीकी हँसती रही और बोली कुछ नहीं काका जी! कही हूँ इसलिए ऐसा रूप रखा हीगा आपकी—नहीं लेकिन उन्हें सया कि गुनी झूठ बाक रही है। मापक इमलिए भी कि उसकी साम बहीं बैठी हुई थी। जब उन्होंने पूछा कि कब जाओगी? तो उसकी सास ने आ गोक-मोम कहा उससे तो नहीं सपता कि बे निकट भविष्य में उसे भेजने।

मारायण बाबू की बात सुन मी तो सभ रह गयी। गनीमत हुई मरो ने सारी बातें नहीं सुनी। उन्हें पहले ही पटक था कि गुनी की समुदास से कोई बिट्टी पनी शोब-शबर कुछ भी नहीं थी। उसकी सास के बारे में वे अजीब-अजीब बातें इन दिनों सन बुकी थीं कि अपनी देवराणी को उमने क्माई स भी अधिक भिन्पता से मारा था। बेचारी स पानी भरवाने से लेकर गाना बनवाना मर का साय पीगना-कूटना कपड़े भुलाना आदि करवाती थी और वह मरते मर गयी लेकिन उमे मँके मही जाने दिया मया। कहीं यह जल्साह गुनी के साब ता ऐसा ही नहीं करने वाली है?—और यह माककर बे काप गयी। अजीब उद्विगता थी कि किने इन्दौर भेजा जाए और गुनी का हालचाल माये। अब इनसे अगर कहा जाणया तो पबरा जाएँगे और उरास होकर घुमघुम हो जाएँगे। घर में हुमरा काई और है नहीं। धीमाहन जाएगा ही क्यों? और वह साबिबी महगनी जाने ही क्यों देगी?

रात सब पति लौटे तो सारी बातें उन्हें मनायीं जो नारायण बाबू मुना गये थे। वे भी गुनकर सभाटे में जा गये। रात भर पति-पत्नी करबटे बढम्पते रहे लेकिन नींद न आयी। सबरा हाने ही पहुँचा काम किया कि गुनी के समुद्र को पत्र लिखा और पूछा कि ब्याह के धार लानकी बर नहीं आयी है सब उसस मिमना चाहते हैं वे बताएँ कि क्या उस सिबाने आएँ।

सरो की बातों की बाहूत अबस्य भिन्न गयी लेकिन अनेक कामियां वा जैसे वह दाब जाती है वैसे ही वह लून का चूँट पीकर इन धारे में कछ भी पूछना दाब गयी। जाल क्यों कमगक ही घटते हुए लपटा कि जैसे गुनी कही पूर बिनी अंधरे कोन में बडे रो रही है। वह बिह्वरक हो जाती सामुर्मा से पूछने को कि गुनी की मनुराक स कोई बिट्ठी-मबी आयी ? गुनी क हाटपाक कुछ मामुम हुए ? लेकिन वह गुनी आभा स पुरानी सट्टीरों में बने मकड़ी के जाओं का हवा में शिपमा दगनी रहती। वह अब माम्य से हार मान चुकी थी। काई ऐसा मही वा जिनक क्या पर शिर रख वा जिम अपने से सटा कर रा मके ताकि वह हस्ती हो जाए। वह जानती थी कि जिन दिन भी वह सामुर्मा क सामने कमबार होकर बात करेगी सामुर्मा का कमेजा फट जाएगा। क्योंकि सामुर्मा गुनी को उनम कही अधिक प्यार करती है। गुनी उनके लिए ता मूक बन ही थी लेकिन सामुर्मा क लिए वो वह ब्याज थी। और वह भी ऐम मूकपन का कि जो अब जाने कहाँ है ?

सबका बड़ा आश्चर्य हुआ जिस दिन गुनी के समुद्र का पत्र आया कि पंडित धीनाथ ठाकर ने उन लोगों के माय बड़ा बोजा किया। ब्याह में दम हमार रुपया और सी ताले माने क देने की बात थी। क्योंकि उमी ऐस से ता बालबुगन को बैरिस्टरी के सिण बिलापत भेजा जाता वा। और इन बात का करारनामा हो चुका वा और जातिक पाँच आदमी भी गबाह है। क गुनी को तभी भेजेमे जबकि करारनाम की रातें पूरी होंगी। उन्हें क्या मामुम वा कि उनके एनमाक कड़क का बिबाह इतना सामारण किया जाएगा। यदि तीन महिने में बाबी का रुपया और माना मही मिला ता क अपने सड़क की दूसरी पारी कर बेंते।

इतनी बड़ी बात मला पर में किसस छपी रह सकती थी ? पंडित धीनाथ ठाकर को ता जैसे लकबा मार गया। साम और बह दाता जड़ हा गयीं। वा दिन बिनीने कुछ माया ही नहीं। मुगीमा और दबपन क लिए कुछ बन गया। इन

दो दिनों में सरो तो जैसे हडिड्याँ भर रह गयी थी। कौन किसे और क्या सान्त्वना देता ? तीसरे दिन बड़े सवेरे पंडित श्रीनाथ ठाकुर नारायण बाम्बू सं परामर्श करने छावनी गये। पंडित श्रीनाथ ठाकुर का कहना था कि उन पाण्डाओं को सपना और सोना कहीं से प्रबन्ध कर दिये जाएँ ताकि गुनी पर कोई छीठ न आ जाए। लेकिन नारायण बाम्बू का कहना था कि इस बात का क्या प्रमाण कि वे इतने से ही चुप हो जाएँगे ? आज यह झूठ बोल रह हैं तो कस दूसरी झूठ भी बोल सकते हैं। राजस भी पैसे के लिए संसार का कोई भी पाप कर सकते हैं। नारायण बाम्बू ने आश्वासन दिया कि दो-एक दिन में ही वे इन्हीं जाएँगे और पता लगाकर आएँगे। नारायण बाम्बू राजस भी से मिलें यही उम हुआ।

बैस श्रीमोहन को सावित्री ने कामों-काम खबर नहीं होने बी बी और गुनी की सास तक यह खबर पहुँचा बी यमी भी कि वे साग ठमा बय। अगर थोडा और टासैं ता आज भी उन्हें दस हजार गुनी के भरवालों स मिल सकता है। मसा जाति में बाळट्टण के बराबर कील पड़ा है ? उसका सम्बन्ध ता इस हजार क्या कितन ही हजार का आज हा सकता है। चपर सावित्री ने इन्हीं में अपनी बहन को सिखा कि क्यों नहीं वह अपनी दही सड़की क लिए बाळट्टण की माँ को तैयार करती ? गुनी से प्यारा पड़ी भिखी मी है कन्का भी बैरिस्टर हो ही जाएगा दो-एक हजार से-बेकर बात पक्की कर सो। भगवान ने आहा ता गुनी या तो अपने घर लौट जाएँगी नहीं तो उसकी सास कई रास्ते जानती है कि कैसे रास्ते का काँटा पूर किया जाता है। और मान को अगर यह सब कुछ नहीं हुआ तो हमारी सड़की को सब बता ही दिया जाएगा कि छीठ के साथ क्या किया जाना चाहिए।

व्यक्ति से घरेलू मामला में बातें करने से साफ इन्कार कर दिया बल्कि हम बार गुनी को उनसे मिलने भी नहीं दिया गया। लेकिन अड़ोस-पड़ोस से वे यही मासूम कर सके कि राबलजी की बहू की राब पिटाई हाठी है। और यह बात उनके यहाँ का भोबी दूधवाला बर्तनवाली सब जानते हैं कि बहू को लगे से बाँध कर या लाट से बाँधकर मारच जाता है और वह कोठरी में दम्ब पड़ी रहती है। दो-एक महाराजिनों से तो अब दसा नहीं भया तो वे काम छोड़-छाड़कर चली गयीं। रोब बहू का ठेक झार कर जला देने की धमकी भी जाती है कि क्यों नहीं बहू अपने घर से बाकी के रुपये और सोना मँगवाती है? उसे बार-बार कहा जाता है कि उसकी माँ चरित्रहीन थी तभी तो उसका बाप घर छोड़कर भाग गया है। उनको थोडा दिया गया और एक चरित्रहीन की छबकी उनके घर में आ गयी है।

नारायण बाबू ने लौटकर यही पूछा कि क्या मुनी की कोई बिट्ठी बिट्ठी बायीं? और जब मासूम हुआ कि नहीं बायीं तो उन्होंने यही सलाह दी कि ज्यादा अच्छा हो कि वे लोग जल्द ही गुनी को कुछ दिनों के लिए जाकर लिबा लाएँ। इसके बलाबा न अपने अपमान की और न ही छागों से गुनी बातों की कोई चर्चा की। लेकिन जाने कैसे भोप नारायण बाबू की अन्तर तक पड़ के गये। यही तय पाया कि बापू और माँ दोनों ही जाएँ और गुनी को लिबा ले जाएँ।

राबल जी पहले तो गुनी को मिलने भी नहीं देना चाहते थे लेकिन दो दिनों की बहस के बाद गुनी को मिलने दिया गया। बापू और माँ दोनों ही गुनी को देखकर रो उठे। उन्होंने राबल जी और उनकी पत्नी की बिरोतियाँ की कि उनकी लड़की को कुछ दिनों के लिए भेज दिया जाए लेकिन वे तैयार न हुए। अन्त में जब पंडित धीनाथ ठाकुर न राबलजी के पैरों पर पगड़ी रख दी तो हम पत्र पर गुनी को भेजा गया कि वह तभी हम घर में आ सकती जबकि बाकी की रकम तथा सोना सब लाएगी और राबल जी एक महिने तक ही प्रतीक्षा करेंगे वना वे बालहृष्य की दूसरी शादी कर देंगे और गुनी इस घर की सब बहू नहीं मानी जाएगी।

अत्यन्त पराजित होकर बापू और माँ पैरों से पगड़ी तथा अपनी गुनी को लेकर घर लौटे। रास्ते भर वे सोचते रहे कि ऐसी गुनी को बेस मरो वा क्या हाल होगा? अभी कुछ ही महिनों पहले जिस गुनी का सने से लाइकर बाठी पर बिठाकर लक्ष्मीकपा बनाकर उमर नमुराल भेजा था आज वह अपने घर परित्यक्ता रूप में दोनों पैरों से लैगड़ी बनी देह पर मार के अनगिनत चिन्ह सिये अर्प-बिभिन्न सी लौट कर आ रही थी।



सरो देखेगी तो उसका क्या हाल होगा ?

जब कि गुनी पायल बनी यही साज रही थी कि समुदास की अनन्त यातना के बाद भी वह जी रही थी । न भूल न मार, न गालियाँ न साँझन कुछ भी तो उसे टोड़ न सके थे । वह स्वीकृता ही कम हुई थी जो आज परिलक्ष्यता हो गयी ? वह तो ब्रह्म का एक ब न थी वा ब्रह्म ज्ञान की संभावना में पिचोड़ी गयी थी बस ! !

नारायण बाबू, माँ और सरो की राय थी कि गुनी का अब किमी भी मूख्य पर बापस उन चान्दालों के यहाँ नहीं लेना जाए । पंडित भीमराव ठाकुर को अपनी पगड़ी उतार कर रावसजी के चरणों में रखना काटी जरूर गया था लेकिन क्या करते ? बेटी का प्रसन्न था । गुनी को बापस न भेजने का अर्थ था कि एक तो हमें घातक लिए वह फिर वहाँ छोटकर नहीं जा सकती । दूसरे जो उसके ब्याह में इतना सारा खर्च किया गया था वह बेकार ही गया । रास्ता कुछ दूसरा बिच नहीं रहा था । वे जानते थे कि जब सारे से मँड़ी गुनी की यह हालत कर सकते हैं तो चाह मना सोना साहकर अब साथ कर दिया जाए ता भी लगेड़ी बहू को वे अब स्वीकार नहीं करेंगे ।

न ता इधर से ही और न उधर से ही गुनी को छिबाने-भेजने की कोई बात हुई और सबने मुना कि आते बीसाख में बड़ी बहू सावित्री की बहन की लड़की से बालकपन का विवाह होने जा रहा है । पंडित भीमराव ठाकुर को स्पष्ट ही गया कि गुनी की बुरसा का एक मात्र कारण उनकी बड़ी बहू ही है और उन्हें जाने बटे यह से अत्यन्त गुमा हो गयी ।

और सबने यह भी मुना कि सावित्री ने अपनी माँ की क ब्याह में अपनी बहन को कानी झोड़ी भी ज्वाश नहीं देने की तथा मरे ब्याह में सबके सामने रावसजी की जगत इज्जत ले ली कि लड़का ता द्विजवर है तथा यह भी कि रावसजी की पत्नी ने अपनी देवरानी को दुःख दिया तथा अपनी पहली बहू को । इसलिए पंचों के सामने सफाई कर दी कि लड़की वालों को अब कुछ नहीं लेना-देना है । इससे अन्धरा उनकी लड़की पर यदि कोई भी आये ता ठीक न होगा । रावसजी और उनकी पत्नी की हिम्मत नहीं हुई कि सावित्री बेबी की किनी बात का उत्तर देते और न नीचा यह हुआ कि रावसजी ने अपने लड़के से यही कहा कि वह बहू का लेकर विवाह करेगी क सिद्ध जसा जाए ।

इसके बाद गुनी के लिए कुछ भोग नहीं रह जाता था। सब तो जो कुछ और जितना कुछ था उसे सिबाय रेंग-रेंगकर पार करने के बचा ही क्या था ? सिबाय स्वयं के उस और कोई बना या क्या नहीं करता था। सरो के लिए आज भी वह सब स काइमी मुनी को। मां न परिस्थितियों से समझौता कर लिया था कि अब उन्हें बो की सेवा करनी है। बापू के लिए एमा कार्म प्रदान ही नहीं था—गुनी यदि मन म हुई थी ता उसमें उनकी ही अत्यावहारिकता थी इसलिए वे जीवन भर अब और अपनी गुनी को कांछित न होने देंगे।

सरो की ललित अब यही कामना थी कि या तो स्वयं न रह या गुनी न रह। क्योंकि वह गुनी का अपग अपमानित परिग्रहता कांछित उमेचित नहीं देख सकती। क्योंकि जिस बचाना सिबाया आज नहीं बिबर रेंग रही थी। वह गुनी का रेंगते देख बीबार से सिर फोड़ लेती कि इ मयवान ! किस पाप का बन्ध है यह ?

गुनी सब की प्रतिक्रिया अपने बाबा वाले छत्रों की सिङ्की के पास बिस्तर पर लटी समझ रही थी। इसीलिए उसने अपने का सबसे काट लिया था। उस दिनों नहीं महीनों हो जाते थे बोमें। सारी बातों का उत्तर वह फनी-फनी आँसों के अबापेन से दिया करती थी। ज़िमी में साहस नहीं था कि उसके मीन को कुछ बाता। यदि उसने ब्रज कर रखा है तो कोई यह पूछने का पुम्साहस नहीं करता था कि वह कब तक ब्रज करेगी कब जाएगी ? पंडित मीनाप ठाकुर, जो कनी ऊपर नहीं आते थे अब वे कनी-कनी आकर गुनी के पास बठ जाने और कबा-बातों मुनावा करने। गुनी बीसी ही फटी आँसों से मुनती। वे पूछते भी कि कसी ललित है ? काना क्यों नहीं लाती ? ता वह मात्र मुंह फर लेती और बापू तक उठ जाते।

पूने परिवार में एक अजीब तरह की बृटन समा गयी थी। सब मरने-अपने रंग म या तो बीमार, या बृट हो गये थे या रागी हो गये थे या उपलिन थे।

बेबल मुगीया और देबडत बड़ रहे म। सुधीला बरने हुए बड़ी हो रही थी और बेबड तेरी से घर बालों की उपेसा करते हुए निद्रन्त बड़ा हा रहा था। म वह घर में समा रहा था और न ही स्क्रु में। वह जिस रास्ते पर जा रहा था वहाँ स ह्यान की धमता अब ज़िमी में नहीं थी इसलिए वह कब आया और कब गया इस जान सजना बडिन था।

और एक दिन श्रीमोहन आया। माँ बेंगबई पर बैठों 'सूर-सागर' पढ़ रही थी। जमी दिवा-बत्ती नहीं हुई थी। श्रीमोहन बरस-छह महीने में आ आया करता था लेकिन इस बार तो गुनी के ब्याह के बाद एक बार और आया था और इस बात को भी डेढ़ बरस हो रहा था। माता-पिता दोनों ने ही मान लिया था कि श्रीमोहन अब उनके बेटे से अधिक अपनी पत्नी का पति है।

माँ ने दरवाजे के मझियारे में आहुट सूनी और सिर उठाया ता बेसा कि श्रीमोहन खड़ा है। उसमा कुछ समझ में नहीं आया कि आज यह कैसे भूल पड़ा ? आकर वह भी बेंगबई पर ही बैठ गया। सूचीका किसी काम से राप्तीपर से बाहर निकली तो ताऊजी को देख उठे पैरों राप्तीपर में लौट गयी। माँ ने किताब बन्द की उस सिर से छुनाया और रख दी। फिर चरमा निकाल उसके घर में रखा। यह सब करते-करते बराबर सोच रही थी कि आज किस मतलब से आया है ?

—माँ ! आज दाने बरस हुए अभी तुम छावनीवाने घर नहीं आयीं ?  
माँ इस अतिरिक्त स्नेह का कारण नहीं समझ पायी।

- अपने घर जाने के लिए काठ बुलाता था ही है ?
- अपना घर समझतीं ता तुम एक बार भी न आती ? तभी तो तुम्हारी बहू ने तुम्हें बुला भेजा है ।
- बहू को इपन के परिवार वालों की सहसा चिन्ता कैसे हुई ?
- तुम तो माँ ! उमे हमगा गलठ समझनी हो ।
- रेल भाई, अपनी घरवासी की बकालत क्यों कर रहा है यह बाग गया रे । इन सब डोंग-अतूरों में क्या रहा है ?
- श्रीमोहन पीका पड़ गया । माँ इतनी बड़ी हा गयीं हैं उम यह नहीं मानुन पा ।
- तुम भी बकालत ही करती हो क्या मैं हमगा बाग हाने पर ही आता हूँ ?
- हमगा तो भैया तू आता नहीं और सब कहूँ तो हमें उमकी कोई भाम भी नहीं । 'इनक' हाप-याँक ठाऊरनी बनाये रणें तो हमें जिन्मीका मुँह खाने की कोई जरूरत नहीं ।
- यही आदत है तुम्हारी माँ ! कि तुम कभी भी हम लोगों को अपना नहीं मानती ।
- हाँ रे बड़े गाने समय में तुन सोपों ने घर बापों का साथ दिया है न कि तुम लोगों को हम अपना नहीं मानते ।
- तुम लोगों ने ता कभी हम लोगों से कुछ कहा नहीं ।
- ता क्या तू बाब मही नक बहम करन आया है रे ?
- मैं तो अमरु में कई दिनों से साजना रहा कि जम्हू मिल जाऊँ ।
- माँ की श्रीमोहन का यह लिबलिबापन कभी पसन्द नहीं पा क्योंकि वे जानती थी कि इन्ही तरह की बातें बलाकर यह अपने स्वाय की यारें किया करता है ।
- यैने ता माँ ! राबलनी को बड़ा फटकारा ।
- रेल भाई दिलजार्द करने की कोई जरूरत नहीं है । हमें मानम है कि तू बना है । तुने क्या कहा हागा यह सब बताने की आवश्यकता नहीं है । मैं जानती हूँ कि हम लोग तरे लिए घर चुडे हैं । हमें न ता इस बात की कोई गिस्कायत ही है तुम्हें और न जिन्मी बात की अपेसा ही । सबरा अपना-अपना भाव्य होना है । तुम लोग जहाँ हो सुप से रहो । हम जमे है हमें रहने को । महानुमति शिवाय की कोई आवश्यकता नहीं ।
- जैसी तुम्हारी मर्जी माँ ! मैं तो श्रीबलम की बिट्ठी की बात करने आया था ।
- वया काठपाँठ हुई है अब तुम रातों में फिर ?

—तुमिनी म कोई कुछ करे तुम्हारे निरुक्त ता में ही बोरी ठहरेगा ।

—क्या लिखा है थोड़ा-बाकटा ने चिट्ठी में ?

—अब तुम और बापु पढ़ सो ।

—तब तो बाप-बेटे के बीच कौ काई बात होगी । ठीक है । चिट्ठी पाहो तो रख जाओ और मिल सना बर-परसों उनसे !

—माँ ! तुम इतनी बठोर हो गयी हो मेरे लिए ?

—क्या तुम्हें घर पहुँचने में देरी नहीं हो रही है ? कबहूरी स ही न सीबा भा रहा है ?

—मेरी बात तुम फिर टाल पयी ।

—कबहूरी में बरक गया होगा । कुछ सा के तो पानी पी लेता ।

और बे उठ गयीं । बिदेय तो कुछ था नहीं । मन्विरजी के ठोड़ थे । वे ही ठोड़ और पानी से खापी और एख ब्यस्त बनी रहीं जिसमें कि श्री माहल अभिन बात्से न कर सके । उन्हें अपने से ही बितुप्या हो रही थी कि कैसे उनकी काख स ऐसा पुत्र प्रमा ? लेकिन पुत्र का इसे जैसे अस्वीकारणी ? ब ऊपर स बठोर थीं लेकिन तीन-तीन बेटा में स सामने तो एकमात्र यही दिख रहा था और वे हृदयों तक म भीग उठीं । वे अपनी इसी कमबारी का रुपाने के लिए छोटे-मोटे कामों की झाड सेती फिर रही थीं । इसी पुत्र ने उन्हें ठिरस्त किया था । अपनी पत्नी के सामने अपमानित किया था । उनकी बात पर सात मार कर असग हुआ था । परिवार पर इतनी मुसीबतें खापी सकिन भूसबर भी कमी इसन नहीं झंका बस्कि इसकी बहू ने गुनी का जीवन तरक कर दिया था । इसी की बहू के कारण उसके पति कौ एख बाग्याल क वीरों पर पगड़ी रखनी पड़ी थी और यह उनका पुत्र हाथ भी सब चुपचाप बेजता रहा मुनता रहा नूम नहीं घौस उठा ? यहाँ राटियों क सास पड़े हुए हैं और इख रिबबत स पुरसत नहीं । बूसरा कोई हाता तो वे धकके मार कर बाहर कर देतीं लेकिन अपने ही जाये को क्या बहू ? तमी तो बहते हैं कि सन्तान क सामन ही हार गानी पड़ती है ।

—अच्छा माँ ! यह चिट्ठी छाड़े जा रहा हूँ । कम काम माडेंगा ।

—दख भाई, घाम माने स कोई फायदा नहीं ।

—यँ जानता हूँ माँ ! बापिरवार से मेरे भी पिता है ।

—मोचनी तो मैं यही हूँ ।

धीमाहन को माँ की इस बेरगी पर काप भा गया । वे जब कभी मुकने की बेप्टा करते रहे हैं तभी माँ न ऐसा ही रग अपनाया ।

सेकिन मां मा जानती रही है कि यह बेटा अपने जिमी स्वार्थ के समय हां मुकने आता है। इसलिये हमका मुकना क्या अर्थ रखता है ?

मां ने मणीसा से जिमनी दीवार से नीचे उतरवायी और बसमा क्या उहाने कीबसमम की बिट्टी पढ़ी। वे आप-बबूसा हां गयीं। अपने पैरों के नीचे से बरती लमकती गी लगी। उन्हें लगा कि उनका रक्त-मांस ही उनसे बिराह करना चाहता है। वे बिबस हां फूट-फूट कर रो उठीं। मणीसा ने मां को रान देखा ता वह सोड़ी मयी और जिमी का खबर से आयी। वह कराहती उठीं और जिमी तरह मणीसा के कंध का महारा सेकर नीचे आयी जहाँ कि बैबबई पर मां बरतने मब मी रीटी थीं। सब को लग रहा था कि परिवार के दोष मांग उन्हें अपने न नाट चेंकना चाहते हैं। वे लम वह सड़ा भय हां गय से जिन न हून्य की घौकनी औ धिराएँ कोई भी स्वम्भ रक्त नहीं बेटे और वे बाध्य से कि सहने हुए मृत बन जाएँ ताकि आमाजी से नाट चेंके जा सकें।

सहमा सरा की समस्त में महीं थापा कि वह सामुमां को क्या समझाए ? क्योंकि जही वह स्वयं को इस सारे दुर्भाग्य का कारण मानती है। अब कि सामुमां स्वयं का दायी मिनती है बर्ना जब से वह बनकर आयी थी तो मनी न उनका सौनाय से ईयां की थी कि इतने सम्पन्न ठाकुरघर में न ब्याही मयी थीं। और मात्र देखने दबल ठाकुरघर की सम्पन्नता को गालियों में बहकर बनी गयी है तथा मूस नाउ स्थान में न केवल कीचड़ ही रह गयी थी बल्कि पितनी दुपम्य जाने लयी थी।

—किमको बिट्टी है सामुमां ?

—मुम्हारे बेबब की।

—क्या लिग्या है ?

—यह न पूछा बहू ! पूछो कि मुम्हारी जेगनीजी से उमम क्या लिग्यबाया है।

—प्रागिर मनु भी ता।

और मां ने बिट्टी पढ़नी शुरू की।

—लिगता है कि बाबू ! अब आप लोग बूडे हुए। मैं बहाँ रहना नहीं। बड़े बाबा भलग ठाकनी में रहते हैं। मैंसे दादा का पता नहीं। पीछे से क्या न हो जाए। अच्छा हां कि अपने हाब से ही आप तीनों का मरान में हिस्सा कर बे तथा जमानुंजी का भी नाक-नाक रिनाब आपके सामने ही हो जाए बर्ना पीछ से

दम मुँह दस तरह की बातें हों यह ठीक नहीं। सबके बाप-बच्चे हैं। आपको तो किसी के बच्चों में फरक नहीं करना चाहिए। गुनी के ब्याह में आपने लर्च किया जाहिर है कि वह मँसक दादा की कमाई में स छो हुआ नहीं है। नहीं न कहीं घर की इस जमा-पुँजी के लर्च के बारे में हमें भी जानकारी होनी चाहिए थी। पता नहीं हम काम इतना लर्च कर सकते भी थे कि नहीं? हम लोग तो आपसे दूर हैं इसलिए बहुत सारी बातें नहीं जान पाते हैं। मँसक दादा के परिवार को भी जतना हिस्सा मिला जाए ता न सोम अपना लर्च उसमें से बसाए। हम सोया के हिस्से में इतने आदमियों पर लर्च करना कहीं ठक ठीक है? बहुत सारा ता यों ही हाम से निकल गया है रहा-नाहा ही मिला जाए तो गलीमत है। और बापू! आप और माँ का लर्च ही क्या है? भदिर भी से आपका लर्च बसता ही है। न हा कमी बड़े बाला के पास उन्हें कमी नहीं बसे आएँ। आपके आसीबाद से ही हम सोम आज इस योग्य तो हैं ही कि अपने माता-पिता की सबा कर सकें—आपका धीवन्तम।

इस बार चिट्ठी मुनाकर वे बिगम नहीं हुई बल्कि उनकी भाँतों से चिन मारियाँ निकलने लगी। गुस्से में उनके नबुने फुस उठे। उन्होंने मरों की जार देखा या एकदम निर्जीव भी फनी भाँतों से जाने कहां कहीं नहीं बपती सी बूर रही थी। चिमनी का निर्जीव आलोक उसकी कनपटी के पाम की उमरी मग के कौपतेपन को जमार रहा था। सरो जैसे साँस सेती राम लग रही थी।

तमी बाहर की बल बोसी। पंडित धीनाथ ठाकर एक दास बंग से कम घासते थे और जबर जाने के पूर्व एक पाग बंग से साँसा करते थे ताकि बहू बटियों के सामन वे सहमा न पहुँच जाएँ, पता नहीं वे लोग कैसे बँटी हों केती हों। मर्यादा बनी रह इसका लिए स्वयं को मर्यादित होना पड़ता है। सरो को चेत हुआ और जनापास उसका हाम घुँपट के लिए उठा और जाने किस मज्जात पृथी से वह उठी तथा ससुर के बाने के पूर्व ही जीने के तरफ बढ़ी। तमी सपने लगा कि जीने के ऊपर दरबाजे के पाम केम विगराये भर्बीब पगर्मी नी सनी फटी भाँतों म मुनी बँटी हुई थी। सरो का सम गया कि साग पत्र इनने भी तुन किया है।

पात्री हुई बहू को आज नीब आया देग गगुर ने सारी मर्यादा के माप पूछा—सगना है बहू की लबियन परम स टीक है।

जीने पर पीठ बिये सरो एक धब बों बड़ी जबर मकिन कमजोरी में पैर बाँध रहे थे और बहू बीबार घामे जीना चढ़ते धमी गयी। पामान में पहुँच

। सुश्रीमा पत्नी तथा बोड़ी बेर पहले बहू—सबको देखा तो उनका माया का कि ये सब क्यों एकत्रित थे ? तभी सुश्रीमा ने बीने पर पहुँच कर कहा—  
-बीवी ! पत्नी अपने बिस्तरे पर बसा ।

और पंडित श्रीनाथ ठाकुर ने अँधेरे बीने के ऊपर दरवाजे के बहाँ देखा कि ती की छाया दिख रही थी । इसका मनुष्य हुआ कि उनको छाड़ और सब अभी भी मौजूद थे । चिमती भी अपने स्वान पर न होकर बँगबई पर रखी हुई थी । वे उसके पास कोई पत्र पड़ा हुआ था । उन्हें क्या कि बकर ही गुनी की ससुल से कोई पत्र आया है । पूरे तन-बदन में आग लग गयी । आँखों के सामने लगे क्या-क्या कितना-कितना नाच उठा । जीवन में वे कभी बिबाध नहीं हुए थे । उनें जितने कि श्रीपर के जाने के बाद सं हुए थे । बचपन में अपने पिता की कमान सन्तान होने के कारण किस राजसी डंग से उनका कामना-याकन हुआ । उनसे पिता अत्यन्त दबग व्यक्ति थे और पूरे नब्बे बरस जिने भी थे । पंडित श्रीनाथ ठाकुर पीताकिस बरस के थे जब पिता का स्वर्गवास हुआ था । जीवन भर तता की छत्रछाया में रहने के कारण उनकी सारी संभावनाएँ मरुट हा गयी थीं । तन-बजाने का धीक था इसलिए धाड़ा बहुत पूजत कर आये और फिर दोस्तों की मण्डली में पहुँच गये तो राठ को म्पारह-बारह के पहले जाने की आवश्यकता तो नहीं थी । दिन भर भाँग पीना याना-बजाना और तास फेंकना कभी कहीं गेट करने वाले गये तो कभी कहीं सैर को निकल गये । जब बहुत तबियत बज रही तो उम्मीन तक हो जाठ थे तथा बानों पर जाकर गाना सुन आते थे । इसका श्रीमा यह हुआ कि जीवन पर उनका नियन्त्रण न रहा । परिवार में उनके पुत्रों में भी अपने पिता का स्थान अतिरिक्त ही माना । जब पिता न रहे तो इतने देनों बाद सारे मूत्रां को अपने हाथ में पकड़े रहने का गुकमग्न नहीं मानसू या (सकिए—“हरि-दृष्टा” बहकर वे कछुर की मांति अपने पंजे सिकोड़ बँगबई पर बैठ जाठ । एस पिता को श्रीमाहन नूब समझता था ।

पंडित श्रीनाथ ठाकुर ने अँगरगा और पगड़ी उतारी मरिज पत्नी के पावर बज मीन को पूछकर ताइन का माहम उन्हें नहीं हा रहा था । उम्मीनि यहाँ-वहाँ घूमकर, हाथ-नूह धाकर जर में फिर भाय अँधेरे को कुठ कम किया ताकि कुठ यस्ता दिगलारी दे । लमता या जैन अँधेरा धक्कों में चारों भार जमाया गया था ।



पत्नी ने उठकर पति का भोजन पका । पंडित धीनाथ ठाकुर न बाहिनी अंगुली में एक छकर चासी के चारों ओर 'ब्रह्मार्पणं' किया । तीन घास निकाले और फिर तीन घास चुग कर बोझा एक आचमन से पीकर हाथ जोड़ भोजन शुरू किया । ब्रह्मिण मीन क्याप्त था कि उन्हें अपने ही कौर बचाने की आशा 'गस्त-गस्त' सुनायी दे रही थी तथा घरदार पत्नी की गहरी निन्दा । किन्ती के आलोक में पत्नी के गले में पड़ी 'ब्रह्म-संबंध' चासी तुलसी की कण्ठी रह-रह कर उछली-मिरली बिलती । पत्नी का हाथ डबले में से राटियाँ काकर उनकी चासी में अबोसे रम जाता । बरसों से वे इस हाथ से परिचित हैं । कभी इसी को बाम कर साये थे । तब यह कितना मारा गोक भरा-भरा सा था । तब बूढ़ियाँ वैसी सुहाती थीं इनमें । अपने गले के चारों ओर भी ये ही हाथ कसे मीठे-मीठे से अनुभव किये हैं । सपरान्त कैसे बीरे-बीरे इनकी गोलाई कम हुई, गोलाई में कैसे भुरियाँ आयी । रंगीन बूढ़ियाँ भी उतरते भोजन के साथ-साथ उतरती चासी पयीं गले को घेर कर रहनेवासे हाथ कैसे क्रमशः दूर होत-हाते अब उनके चारों ओर एक दूरी बगाने हुए रहते हैं । चाहे सब कम हो गया था इन बयों में लकिन मिठास संभवतः बड़ी ही थी ।

कई बार इच्छा हुई कि पत्नीमुख को इस संक भीठे आलोक में देखें तो । अनेक बार हिम्मत करने के बाद जो देखा तो पत्नीमुख हीप के सोलाह आलोक में जाने कितने बयं पूर्व का बड़ी प्रियामुख हो गया । वे एक टण को बिगोर हो वाकुल हो गये । पत्नी का हाथ हठात बाम किया । वे भी समझ ल गयीं कि यह तो वह रसिक पति है जो बुराक धोली पहनता था पात बचाता था इन्-फुसेस की गंध में स्वयं डूबा रहता था तथा उन्हें भी जाने कैसे-कैसे सपित कर देता था । जिसकी आँसों क काक डोरे कभी कम ही नहीं होते थे और वे किन्ती निहास हो जाती थीं ।

दालों मुखदुरा किये । बरसों बाद दोनों पति-पत्नी की माँति एक दूसरे को देव रहे थे । दानों की माँति जोर जोर न बमने सयी थीं । दोनों अपनी-अपनी देहों से निकल कर एक दूसरे में अनुस्यूत हा जाने के लिए आकलन थे । भेठ आते ही दानों का ममा कि करें, जितना अँपेरा वे समझ रहे थे उतना नहीं था । एक दीप ही कितना आनन्द देता है डेर मार अँपेरे में ?

बँपक पर केँ पति के प्रति आज वे वैसी ही रागवनी थी जैसी कि कभी थी । उनका साहस नहीं ही रहा था कि अनायास जा राग की यह राग जाने जहाँ से जाने कितने बयों का बीरकर भूमी-घटकी पनी आयी है उन श्रीबस्तम

के पत्र की बात बताकर तोड़ें । वे साब रही थीं कि क्या फिर कमी के लोग बँस ही युवा पति-मन्त्री नहीं हो सकते ? कैसे जल्दी सब बीत गया न ? जैसे वे किसी प्रपात के ऊपर लड़ी थीं कि पैर तक मीगे नहीं और मनां पानी टूट टूटकर खण्ड करता हुआ जाने कहीं चला गया ? देखनेवाला ने सराहा कि हाय देखा तो कैसे निर्मल बल में वे लोग लड़े स्नात हैं । लेकिन कहीं ? वे तो तरसती ही रह मरीं । संभव हुआ तो अपने रेतमी आँसुकी झलकती गाँठ बना उसमें अपने पति और उन दिनों को बाँध ऐसे एकान्त में पसी जातीं कि बस । उन दिनों को पति को कहीं नहीं जाने देतीं । बल गये उन दिनों की हंस-बोसियां जाने कहीं उन जलों के साब-साय बली मयी है । बल बला गया बा और वे दोनों सूसी बामू पर लिखीं दो बूढ़ रेखाओं से रह गये वे ।

—किसका पत्र था ?

पत्नी जैसे नींद से चौकी । उनकी युवा कामनाभा वाली आत्मा बापस बूढ़ देह में झूट आयी । बोलीं

—साँस श्रीमोहन आया था यह पत्र लेकर ।

—लेकिन पत्र किसका है ? जो पृष्ठता हूँ उसका तो बबाब बती नहीं हो और फर्का आया बा फर्का दे गया है । आया होया श्रीमोहन ।

पता नहीं पति क्यों झल्ला मय ।

—श्रीबल्लभ का पत्र है ।

—क्या चाहता है वह ?

पत्नी ने अत्यन्त कन्ने डग से धिमनी साकर रण दी । उनके पूजाबासे 'ग्वासे' (पूजा का वह बस्ता जिसमें मग्घ्या आपमनौ आदि रहती है) में स चरमा साकर दे दिया । मतलब कि आप पढ़ सकते हैं ।

बिगड़ी पढ़कर पति के बहुरे पर कोई माब नहीं आया । बातावरण में फिर तमाब आ गया । जब पति को इस इतनी बड़ी बात पर कुछ नहीं कहना तो पत्नी को ही ऐसी बया गरब पड़ी थी कि वे अपने को जलाएँ ? दिया बड़ा दिया गया ।

चारों ओर एक बार तो मग्घ्या अँघरा बड़ा लेकिन अपने-अपने डंग में जायते पति-मन्त्री दानों को अँघरा घुसना मा मया । काकी देर तक जब माँ नहीं आयी और बेटों को मया कि वे माग जाय रहे हैं तो पति ने पूछा

—क्या मा गयी ?

—नहीं ता ।

में कितना कुछ बल्कि सब कुछ बढ़ गया था। अब वे पुष्पिम सरकार सब की बातों में एक सतर्माक कान्तिकारी थे।

तो रतना ने उन्हें भी सरकार की बातों में कान्तिकारी बना दिया था। लेकिन अब क्या होगा ?

वही जो हाथा है। मुझविन बनाये जान की कान्तिशा ह्योपी मार होमी मुकुरमा बगुवा सबा होगी। उसके बाद जेक कान्तिवा कौड़े—जाने कितने दिनों तक के लिए। लेकिन क्या रतना को कमी मामुम हो सकेगा कि भीमर बावू ने उसके काम के लिए जक भुगती ? कहीं बहू यह ठा नहीं सोच लेगी कि उन्हें ठीक तरह से पहचाना नहीं थाया ?

पुम्सि ने उन्हें मुसबिर बनाने की मरसक बेष्टा की । पुम्सि उन्हें जान  
 चुकी थी कि भीपर बाबू स्पानीय काँग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता भी हैं तथा असह  
 योग में जेस हू जाये हैं । भीपर बाबू ने जिस तरह से हर बात के लिए  
 अभिज्ञता प्रकट की थी उससे पुम्सि बाबू का पूरा विश्वास हा गया कि यह  
 व्यक्ति खासा पुटा हुआ है । मारपीट के बाद भी जब उन्होंने कुछ स्वीकार नहीं  
 किया कि वे किन-किन लोगों के साथ काम करते हैं तो उनसे उस जादमी का  
 ही नाम जानना चाहा जिसे वे बम देने के लिए रामनगर गये थे । अन्त में  
 पुम्सि हार गयी । इस बीच काशी ओरों से अन्तिकारियों की पर-पकड़ हो  
 रही थी । पूरा उत्तर भारत इस समय अन्तिकारियों की पिस्तीलों और बमों  
 से पूँज रहा था । अंग्रेजी घासक उमर आत्रान्त थे । सभी अन्तिकारी किसी न  
 किसी हत्या आक्रमण कूटपाट के सिक्किसे में लाने जा रहे थे । रेल स्टेशन  
 ता जाये दिन की बात होती जा रही थी । रात्र किसी न किसी अंग्रेज घासक  
 की हत्या की जा रही थी । पुम्सि भीपर के सारे सम्बन्धों की रोज में सभी हुई  
 थी और अन्त में उसे पता कम गया कि बिचन मामक अन्तिकारी जो कि इन्दीर

के 'माखवा-हाउस' पड़पत्र में मारा गया था उसके साथ एक लड़की भी और एक व्यक्ति और था। बिगन के साथ बाबा बहु व्यक्ति यह थीं बाबू ही थे। इन दोनों पर लड़की भयान तथा उसके साथ बिगन का ब्याह करवाने का संबंध में भी बारट निश्चये थे। इन प्रकार थीं बाबू का अन्तिकारी आन्वोसन से बहुत महत् सन्वन्ध है इस बात की स्थापना पुस्तक कर गयी। रोनी सम्पन नामक लड़की का पता तो पुस्तक को बहुत पहले ही लग गया था कि वह लड़की अन्तिकारी थी तथा बंपानी थी और वह भी बनारस की। हो सक्ता है कि थीं बाबू उनी लड़की के साथ मिलकर काम कर रहे हों।

एक दिन उन्होंने हवालाल को मीठियों में से देखा कि रतना सचीन सुबांगु तथा चार-पाँच व्यक्ति गिरफ्तार होकर बाने जाये गये हैं। पुस्तक ने फिर उन्हें लूब परेमान किया माय भी ताकि ये यह मंजूर कर लें कि इन पकड़े हुए अन्तिकारियों में उनका सबब है। उन्हें बताया गया कि ठाकुर सकलधीप मारायण सिंह तथा मन्थार का चौकीदार मुरारी इस बात के गवाह हैं कि सुबांगु राम से उनका सबब है तथा रतना के घर वे माते-जाते रहे हैं। पुस्तक उनसे कबूलवाना चाहती थी कि क्या रतना ही रोनी सम्पन है ?

इन लोगों का मुख्यमा यह महीने था। पुस्तक ने अन्त तक थीं बाबू का बाकी के कदियों से नहीं मिलने दिया ताकि वे कमजोर पड़ जायें और कुछ बातें मंजूर कर लें। रतना ने कुछ दिन बाद थीं बाबू को कोठवाली में दया तो वह उदाय हो गयी। इसलिए नहीं कि नहीं थीं बाबू पुस्तक को कुछ बता न दें बल्कि इसलिए कि वे व्यर्थ ही इसमें पकड़े गये। बहुत दिनों तक साक्ष्य रही कि किस प्रकार उन्हें बचाया जा सकता है लेकिन कोई तरकीब नहीं दिखलानी वे रही थी क्योंकि पुस्तक ने रंगे हाथों पकड़ा था तथा उसे यह भी मायूम हो गया कि ठाकुर सकलधीन मारायण सिंह चाहत थे कि किसी प्रकार थीं पूरी तरह मन्थार अन्तिकारी सिद्ध हो जायें और या तो फाँसी या जायें या फिर बाल्यापानी तो उनके हाते का यह कौटा दूर हो। त्रिस दिन मुख्यमे का फैसला होना था अन्तिकारियों में घाली भीड़ थी। थीं बाबू ने देगा कि रतना के मुँह पर सजीव सन्धाय तथा लुप्पी थी। उन्होंने उसकी बाँतों में हाथ पड़ा कि उसे अन्त्यस्त मुँह था कि थीं बाबू उसकी बठिन परीक्षा में भी उनीं हुए। उन लोगों पर एक अन्तिकारियों की हत्या का आरोप था। अन्तिकारियों में से ही कनीय पाय नामक एक व्यक्ति मुरादिर हा गया था और उसने बयान से ही सारी बात मायूम हुई कि रतना

ने बंगाल बिहार और उत्तर प्रदेश में कुरु मिसाइल चार हत्याएँ की और वही इस इस की मामिला है । मुर्दागु राय घनीन घोषाल भी मजिस्ट्रेट की हत्या में शामिल थे । पुलिस ने कहने से फनीग्र भाप ने श्रीधर बाबू को बहुत पुराना अन्तिकारी बताया । पुलिस के द्वारा श्रीधर बाबू को पैमान में ठाकुर सरकस कीप नारायण सिंह का बड़ा हाथ था । और इस प्रकार रतना मुर्दागु राय तथा घनीन को फाँसी की सजा हुई । बाकी के चार छात्रियों में दो को आजीवन कारावासी तथा दो को बारह-बारह वर्ष का सपरिभ्रम कारावास । श्रीधर बाबू को सिवाय फनीग्र के और किसी ने भी अपने दल में मानने से इन्कार किया था लेकिन 'बूकि' पुलिस ने उन्हें बम के साथ पकड़ा था तथा अन्तिकारियों से सम्पर्क की बात स्थापित हुई थी तथा 'मासवा-हाउस' के पड़-यंत्र का भी सबूत था इसलिये दस वर्ष का सपरिभ्रम कारावास मिला ।

जिस समय रतना को प्राणदण्ड सुनाया गया वह निरिच्छत बैठी हुई थी । श्रीधर बाबू एक क्षण को काँप उठे थे । उन्होंने कहा कि कहीं वह अत्यन्त आत्मस्थ होकर मृत्युवादी रही थी । लेकिन जब उन्हें सजा सुनायी गयी तो रतना विचित्र उदास हो गयी थी । रतना ने कौसी जल भरी उदास मोहक आँखा से उनकी ओर देखा था । श्रीधर बाबू भीग उठे । रतना गन्धमुख उनके अन्तर में प्रविष्ट हो चुकी थी । उनका दिक् भड़कने लगा कि क्या अब वे कभी भी रतना को नहीं देख पाएँगे ? क्या उस रात अनजाने ही उनके हाथ का स्पर्श अपने पालों पर अनुभव किया था—क्या वही भर था ? क्या अच्छा न होता कि उन्हें भी प्राणदण्ड मिल जाता ?

और उन्होंने सुना कि रतना गौरा भेज दी गयी है और वहीं उसे एक माह बाद फाँसी दी जाएगी । मुर्दागु और घनीन को नैनी भेज दिया गया । केवल वे ही बनारस जेल में रहे ।

फासगुन बीठ चुका था। नैत्र के आरंभिक दिन थे। रात के गहरे सप्ताटे में दूर कहीं फग और डपसी के स्वर सुनायी पड़ जाते। बेल की बीध वाली नीम लंगी हो गयी थी। डेर सारी पत्तियाँ पीली-पीली मैदान में बिछी हुई थीं। मंयी शालों के पीछे आकाश सहमा-सहमा सा छितरा हुआ था। श्रीपर बाबू अपनी कोठरी में बन्द अपनी पीस रहे थे। अमी सबेरा था। अपनी चलाते हुए साध रहे थे कि आज बस्ति इस समय रठना को पंखी बी जा चुकी होगी। अबस्य ही उसके मुख पर कोई पबराहट नहीं आयी होगी। एक बीर की भाँति वह पन्दे तक पहुँची होगी। एन शक को जाने कौन-कौन भाँषों के सामने स मुजर मये होंगे। तिम दिन वह अलग हो रही थी जैसे बोल रही थी,

—श्रीपर बाबू ! तो सब समाप्त हो गया न ?

—जतना ! मेरी ओर से तो आरंभ ही है अभी ।

—तो कभी यात्र बरिएया ?

—अपन से पूछो ।

ओर जैसे वह देगनी ही चमी गयी थी जैसे पहली बार देयना मीग रही

हो। उसने तब हाथ बढ़ाया था। कैसा मुलायम हाथ था। बिस्वास नहीं हुआ कि कभी यह हाथ भी किसी पर उठ सकता है। कैसा पवित्र किन्तु संकल्पित था। थीयर बाबू के मन में कितना पिरा कि एक बार रतना के उस हाथ को बूम से केकिन लगा कि कहीं वह अपवित्र न हो जाए। कैस धीमे से बातों में कह गयी

—तुमि आमार सामी !!

और फिर उसने मुड़कर नहीं देखा। पुसिस के बीच पिरा वह खड़ी गयी केकिन उन्हें कितना बिबदा कर गयी। कह कर वह सनाप हो गयी केकिन सुनकर वे अनाप। रतना तीन घण्टों में जाने कितना भिन्न गयी कि अब वे जीवन भर बाँधते रहेंगे कि वह किस अपात्र को क्या कह गयी ?

आज बिबदा बने चमकी पीस रहे हैं और जो उन्हें सर्वस्व मानने पर आयी थी इस समय जाने कहाँ कहाँ

और थीयर बाबू बिबदा उठे। हाथ से कैसे अनामे रहे कि जिसक सम्पर्क में जाने बही या तो फिर बुझी हो गया या न रहा।

और तभी बाईर न कोठरी के सीतियों पर डंका मारते हुए कहा

—ए बाबू ! छोटा है क्या ?

बाहर खैर पीले पत्तों को समेट रहा था। कल यही मीम कोपमा आया। निमीकियाँ आ जाएंगी। तबसे दिन टूट-टूट करते बूम उड़ाते सब कुछ तना जाएँगे। एक सरी है जिम यही नहीं मानुम होगा कि वे कहाँ हैं। दूसरे रतना हुई थी तो उन्हें नहीं मानुम कि वह कहाँ है ?

सम्ने दन बर्ष। जेक से सूरने पर वे पैतासीस बर्ष के प्रीड़ होंगे। इन बीच



कितना कुछ न घट जाएगा यहाँ और बाहर। तब तक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं। रतना तब मात्र स्मृति होगी। इस बर्ष पुरानी। कौन मिलाया तब बाहर? रतना कैसे सहसा आवी भ्रमि बनी गयी। क्या वे कभी सोच सकते हैं कि कभी कोई इतने क्षुब्ध से किसी के काना में इतने साहसिक एकांत विश्वास के साथ सर्वस्व सौंप कर असम्बन्ध बना भरेले का सफ़टा है? जैसे वह कर्तव्य समझती थी इसे भी। कैसे हंस कर कड़ा करती थी

—धीवर बाबू! बहुत अल्प जाना है यहाँ स लेकिन अपने 'घामी' का बिना बचाये जाना पड़े ऐसा नहीं चाहती। उन्हें बचाने बठाकर आऊँगी।

—कौन है वह भाग्यवान?

—पता नहीं कि वे भाग्यवान हैं कि नहीं पर 'घामी' बकर हैं मेरे।

—तो विवाह क्यों नहीं कर लेती उनसे?

—बाप मरे 'घामी' की विवराता कभी नहीं बूझ पाएँगे। वे विवरा हैं और मैं उन्हें बचाने नहीं करना चाहती। इसलिए बिन सज उन्हें पहली बार 'घामी' बहूगी फिर उन्हें नहीं देखूँगी ताकि वे मेरे सामने विवरा न दिखें। भला मैं अपने 'घामी' को विवरा देख सकती हूँ?

और उस दिन क्या पता था कि सधमुच उसके 'घामी' वे ही थे। और मामुम भी होता तो क्या कर सकते थे? सधमुच वह उन्हें समझ सकी थी। वे बुरबुरा उठे

—रतना! तुम किस अपात्र को कयबोर व्यक्ति को अपना 'घामी' बधाकर बसी गयी जो किसी भी भाँति तुम्हारे योग्य नहीं। न बीसा यमोबल ही न क्या लकड़ ही जो कि तुम्हारे 'घामी' के लिए स्वयं उनकी धारणा थी। वे तो मात्र परिस्थितियों के एक कयबोर पुनले हैं जो कि अँधेरे से अँधेरे तक पात्रा किया करने वालों द्वारा—ज्यों माधारण कयबोरों में स एक है। जो इतिहास में व्यक्ति भी नहीं बनते न उनकी कोई सजा हुली है वे केवल संस्था होने हैं। तुम तो अतिथीया थी। तुम्हारा पर बन्धुन का था फिर यह क्या हो गया था तुम्हें? उन्हें तुममें प्रेम हा लगना था लेकिन तुम्हें तो माह था रतना! तुमने धीवर बाबू को 'घामी' बहूकर परमजद क्यों न किया? अजली ही न सार्पक हा गये। एक संस्था को सजा देना तुम नहीं बनी गयी? तुमने इस योग्य पत्र को पील पत्रों का असम्बन्ध संस्था में क्यों नहीं मिला जाने दिया? क्या इमीलिए उस रात जीने में उतग्न

हुए कहा या कि जाना होगा तो बही जायगी क्योंकि वह उतका जाता नहीं देख सकती ? वे तो भाएँ ही ।

वस वरस । बकरी की परे-बरे । ये पापरी दीवारें, दूर क्षेत्र के एक पीस शरे पत नी ।

दुःख भी जब रात्र का जीवन बन जाता है तब उसका अधिपत्य मरु हो जाता है। तब भाक्तियों की कि ऐसी मनोरथा हो जाती है कि छाने-माट मरु राम-ताप तो जैसे अनिवार्य मान लिये जात हैं। ऐसे भाक्तियों को तब तक किसी बाल पर आश्रय नहीं होता जब तक कि कुछ बल बड़ी दुःख की बात न हो जाए। और जब सहने-सहते व्यक्ति की यह मनोवृत्ति हो जाती है तब उसे फिर कोई दुःख नहीं व्यापना—संभव बड़े में बड़ा दुःख भी।

इसलिए ठाकुर-परिवार को विपन्नताएँ हो सकती थीं लेकिन दुःख नहीं। दुःखों की परवाह के बाद दुःख नहीं होते। न पंडित भीनाप ठाकुर, न उनकी पत्नी न मरा और न मुसबनी किसी को भी किसी म कर्द भयसा नहीं थी। मने कुछ कुछ हो नहीं रहे थे पुराने रम-रम मय थे। कबल गुपीता और देव-वत इन दुःखपागलों से भिन्न बड रहे थे।

गुनी के ब्याह को मान-आठ बरम बीत चुक थे। अन्तर्गत हुए भी चार-पाँच बरम हो गये थे। ठाकुर-परिवार की इस प्रसंग गान्धा के पाम कल का बँभव नहीं गरी रह गया था। वे मर जीर्न हा मये थे। विम मनात की छाया

मैंने वे सामाजिक काम से बचे हुए वे उसकी एक ओर की दीवार इतनी बंद गयी थी कि कुछ न किया गया तो इस बीमास में जबर ही बैठ जायगी। घर के मूयोज में काफ़ी कुछ परिवर्तन हो गया था। पंडित भीनाब ठाकुर की जो बैठक थी उसे किराये पर उठा दिया गया था और उसमें सुनार की एक दुकान जुड़ गयी थी। ठीक उसी तरह दूसरी तरफ एक कोठी भी जिसमें जाने क्या-क्या कूड़ा-करकट भरा हुआ था और जो कि दरवाजे के गलियारे में प्रकटा था। उसमें भी बाहर की तरफ जो दामान पड़ता था उसे आमा घेर कर एक बर्तों को उठा दिया गया था। इस प्रकार पूरा परिवार ऊपर के दो कमरों दामान रास्तीपर तथा एक कोठी में सीमित हो गया था। गस्सेबासे की दूधान के ठीक ऊपर तथा सरो के कमरों के ठीक सामने बराचरी से एक कमरा और जो जिधे एक बिबबा मास्टरनी का उठा दिया था तथा उस मास्टरनी के सिधे बाहर के बाहर ही एक बीना भी बनवा दिया गया था। इस प्रकार ठाकुर परिवार ने चार किरायेदारों को अदिकांघ घर किराये पर उठा दिया था ताकि पूरे घर को किराये पर उठने से बितने दिन रोका जा सके राकें।

रानेबासी आँलों से डर नहीं आता बल्कि बुल्ल सहीदी आँलों क पत्थरपन को दल सगता है कि ये आँत्रें स्वयं बुल्ल हो गयी हैं। ठाकुर-परिवार भी ठीक वही हो गया था। कोई किनी से ज़्यादा बोसता ही नहीं था। सबको बेल एंसे ही सगता कि यदि भूक कर भी इन्हें छेड़ दिया तो या तो ये सोप काट पार्ण या बीस पर्वेमें या इनकी बुक पानी मात्र कठार पाचरीदृष्टि आपको आपकी हृष्टियां तक को बस बूले लनेवी और आपको भी अपने जैसा बना लेंगी।

लेकिन यह तो परिवार की सामूहिकता थी। ब्यक्ति अभी अपनी-अपनी जगह बस ही कमबोर, बुल्ल पात्रे रीते सुबुकते हँसते थे। सुधीला ही जाने नहीं से और कैसे जसदी दीपहरी में सुनी गुरुमोहर ही रेंगी पड़ रही थी। उव मय से दिव तक आयुमती बेल किनी का साहस नहीं होता कि कुछ भी कहकर या बरबकर इस समस्त रंगमय जसते फूल का मस्तिन कर दें। सरो तो ब्याचर्य में मौल हो जाती कि सुधीला जाने किस अस्तस के सुर में सुनी अपने आँलों में जैसे बीड़ा दाबे हुए है। सुधीला अपनी दह में ही नहीं बल्कि दग पर में नहीं समा पा रही थी। सब बरते कि सुधीला की यह जाड़ पर की ये धार-नीबारे नहीं मह सारी और एक दिन पनड़ी मिर पर रल पंडित भीनाब ठाकुर किनी का पाड़ा मांगवर जो गये तो तीन दिन बाद सुधीला क भिन्

सड़का तब कर के ही सौते । पंडित श्रीनाथ ठाकुर को विश्वास नहीं था कि वे इसी जन्ती सड़का पा जाएँगे । गुनी के बाद से उन्होंने कान पकड़े थे कि इन इंग्लैंड-उम्ब्रैन वाले सहरियों को सुधीसा नहीं ब्याहेंगे । पैसा बेचकर दूसरी सड़की को भी अर्पण बनवाने की कामना अब उनकी नहीं थी ।

बाम में टिकोरे आ बस वे । पगुमा सू बन चुकी थी । छोटी-छोटी ] नदियों का भी पानी सूखने लगा था । नासे तो बहुत पहले ही प्यासे-प्यासे से सगने लगते हैं । सुधीसा का ब्याह बैसास में ही करना है यह सुनकर माँ और सरो दोनों चीकीं कि कसे क्या होमा ? घर में न दास हैं न मेहें न बड़ियाँ हैं न अचार । ब्याह का सिमसिसा तो महीनों पहले से ही शुरू हो जाता है । भला यह भी कोई बात हुई कि आपने कहा कि भाई ब्याह हागा और बस हाँ होमा ।

सब यह भी जानते थे कि यही माँ जो इस समय कह रही हैं कि एक महीने के अन्दर कैसे क्या होगा न यह न कह—बही बलते रहता इन कोठरी में से बीनी का बारा निकाल आएँगी और उस बरस में से ब्याह के सारे कपड़े । और तब उनकी पमपती बीनो में यह भाव होगा कि—अहिए, तुम साग कहते हो कि सामुमाँ ता इपर से कतरम्बोंग करती हैं ता उपर से कपड़ा बचा लती है । तो भाई कौन अपने लिए करती हूँ ? तुम्हारी ही बीनो बगल पर सा बर दे देती हूँ कि भाई, इस दिन के लिए ही जोटी की भी मूम बनी थी ।

केरिन माँ स्वयं जानती थी कि इस बार उतना कुछ घर में से नहीं निकाल पाएँगी यद्यपि गुनी के ब्याह के दूसरे बरस से क्या बीनी गुड़ अचार पापड़ यड़ियाँ कपड़े सब बीनो रोब एक-एक करके जमा करनी जाती थीं । क्योंकि वे जानती थी कि इन मनों को बीरतों की रात्र की कतरम्बात बुरी जान्न मपती है पर बगल पर जब बही औरत डेर सारा निकालकर सामने रख देती है तो फिर कुछ भी बाचने की हिम्मत तो नहीं हानी बस हमने हुए कहेंगे कि—अरे मैं तो पट्टे ही जानता था कि आपीरात को बहा तो पूरी जाति को मोहन

भोग और खेद की खोई वे ही जाए और बाहर से इनायती का एक दाना भी छाना पड़ जाए तो नाम बदल देना ।

बड़े घनासठ का घर है न ? अरे जानते हैं न कि बरबासी को हिलाजाने तो बीस-पचीस घर बीनी तो नहीं पयी गहीं । हाँ और क्या ?? औरत तो रात में वैसा छिपाये हुए है । उबाड़ को न उसके बात सौ-मबास निकल आएँगे ।

और वह भी जानती है कि मरुत का ऐसा सोचना पसन्द भी नहीं होता । लेकिन भाई ऐसा कहना नहीं चाहिए । सोचा करें अपने मन में । अरे इन मरुतों की बड़ी खोकी निगाह होती है । न छुपाओ तो वे साय बिसे देखें वे उसमें छेद पड़ जाए ।

ठाकुर-परिवार में एक बार फिर रोड के जीवनक्रम में व्यक्तिगत आया । घाबी देहात में अकर हो रही थी पर सड़का सुचीक था ; बर्मीघारी ग्यावा नहीं थी लेकिन सड़केबामों के लिए ठाकुर-परिवार में ब्याह करना ही बड़ी बात थी । सुदीमा के इस ब्याह में माँ ने जैसे अपने को पूरी तरह झाड़ बासा और आधा स अधिक ही बेन-सेन का प्रबन्ध किया गया । सरो कष्टी ही रह पयी

—सामूमा ! ये मेरे महने क्या होंगे ? ये कपड़े क्या होंगे ? इन्हें निकाले देती हूँ ।

—बहू ! अब तक मैं हूँ सब तक तो तुम लोगों को चिन्ता करनी नहीं है । जिस दिन नहीं खूँगी जब दिन तुम भी अपना घर सम्हाल लेना ।

—सामूमा ! यों न बहो । मुझ अभावत को सीने से अमाकर इतना दुःख तो सभी माँ भी नहीं सहती ।

और साम-बहू बंग-जमुना हो गयी । कौन किस समझता ? सभी नीचे बैबठ ने पूछा

—माँ ये महनार्दबाले भाये हैं । पूछते हैं कब से आका है । राठ-रात्र भर पाव कर साम-बहू ने निककर पूरा घर सीपा । बहूत पुनकार

कर माँ ने देवदत्त को राजी कर लिया और बर की पुत्रार्थ हा गयी। फिर  
बही नीहू लाम सगे-सम्बन्धी अजित सम्पत्ति की तरह एक-एक करुते आने  
सम। सुधीला पर हल्की चढ़ी और औरतों घेर कर जाने लगी—

बरेली के बजार में झुमका गिरा री !

सास मेरी डूडे

ननल मोरी बूडे

बरे बलमा बूडे री !!

बरेली के बजार में झुमका गिरा री ।

रात को आंगन में शौक पूरा जाता। सुधीला का शृंगार कर औरतों घेर कर  
बैठ जाती और गीत शुरू हो जाता—

न पकड़ो हाथ मनमोहन

कलाई टूट जाएगी ! !

कलाई टूट जाएगी

जवाहर की बडी चूडी

हमारी टूट जाएगी ! !

न पकड़ो हाथ मनमोहन

कलाई टूट जाएगी !

और नीची पलकों में सुधीला घुटनों में गड़ी पड़ती। माँ चिन्ताही  
कि यह तुम सड़कियों ने क्या नयी फैसन क रामजिनियों के स पीठ गाने  
शुरू किये हैं। केवल बानों में फुल और नयी काट क जम्पर पहने  
सड़कियों को मला क्या चिन्ता कि कौनसा पीठ क्या है? फिर बिर  
उठता—

नैया गये कसकता हमें साये हरमुनिया ! !

और लमी पड़ोस में जिमी के यहाँ से साये धामोदान पर देवदत्त रेकार्ड  
बड़ा देना—

मना बोली चिरैया को बाइ सिये जाए ।

मना बोली चिरैया को ! !

और घेर सी बटोरियाँ लनक उठती

गिन्न गिन्न गिन्न गिन्न ।

इस घुम में जाने किम बागंका ने बारण सते नहीं मम्मिकित हानी। सामुना  
ने मना किया था फिर भी बर की तिपाई-छायाँ में बह ऐसी टूट गयी कि बैठ

नहीं पाती थी। वह अपने कमरे में ही पड़ी-पड़ी सुनती रहती कि बेवकूफ ने फिर रिकार्ड पढ़ाया है —

बंगाली बाबू आएँ तो बड़ा मजा होने !!

भंडार बनबाबें

सिवाला बनबाबें

और हमको बँगला—हो

बंगाली बाबू आबें तो बड़ा मजा होने !!

सुनी इस सब में अल्पन्ध कवचा में भीषी सुधीला के लिए संमलकामला कण्ठी बहूँ छत्रों में बैठी परबाने बजती सहनाई सुनती होती या फिर कोई रेकार्ड में 'डिपमा विस्वमंमल' हुआ या कोई गीत—

समजन तेरी जोड़ी पने के खेत में !!

समजन को ले गया

बरात का नाई

हो समजन तेरी जोड़ी पने के खेत में !!

और सड़कियों के पेट में हँसते-हँसते बक पड़ जाते। सहसा बाबू या माँ के डाँट देने पर 'बरात का नाई' पर ही रिकार्ड सट स बन्ध कर दिया जाता।

बही घोर, घाने की संघ रेतमी कपड़ों की ससर-बसर ! जनबासे के लिए चीत्रों मेसी जा रही हैं। 'ओ स्वाहा' 'स्वतिम इन्द्रो बृहस्पता'—हाँ हवन हो रहा है।

—बपू को लाइए साहब !

—साइब बाइल !!

—डोक नगात साइबपान !!

—बाइग्री साइबपान !!

—संपन्नगानी साइबपान !!

—बर-बपू साइबपान !

धीर बाने बज जे ।

—हाँ पासकी बहूँ है साहब ?

—गुरुत टक रहा है कीर्ननिया भी ! बिबा करहाए मर !

धीर बीबट—नें पेंजेंमें

—'कक-कक' सुएँ की गाड़ी उड़ाव तिवे जाए !!



इस बार सुदीता के विवाह में सरो के माता-पिता भाये ता उन्होंने देखा कि देवदत्त पर कोई अनुशामन नहीं है अतएव वह भाषाग होता जा रहा है। उसकी पढ़ाई भी लगभग नहीं ही हो रही थी। सरो स उन लोगों न कहा कि वे देवदत्त का ल जाएँगे क्योंकि उनके हाने से दोना का मन भी बहसा रहेगा दूसरे उनकी पढ़ाई भी हो सकेगी। सरो अपने माता-पिता की अनेकी मन्तान की इमलिए जानती थी कि देवदत्त न जाने स उन्हें बुझाये में कुछ महारा रफमा। केवल वह यह भी जानती थी कि सामुं-बाबू ही इस बारे में कोई अन्तिम बात कर सकन थे।

जब सुदीता ब्याह कर चली गयी तो सरो के पिता ने देवदत्त के बड़े पिता स चार्ने की। पंडित धीनाथ ठाकर स्वयं कई बार देवदत्त के लणकों का देगकर मन में बमममाया करन थे। वे जानते थे कि दो-गुट घरम यदि देवदत्त दनी तच्छ स और रहा ता बन् बिगडन पून हो जाएग। साथ ही यह भी भाह था कि न सही धीनाथ ता उमरा लड़का ना पाग है। बन् में कुछ हा-हवा जाण ता बह पर सम्मान सरेगा। पंडित धीनाथ ठाकर ने अनी पनी

सं परामर्श किया ता पहलू ता बे तैयार नहीं हुई कि सड़का इतनी दूर सौरों बला जाए। बर स मान सो यहाँ किसी को कुछ हो-हुमा जाए तो बेचारा रुझका मुँह देखने का भी तरस कर रह जाएगा। लेकिन बे भी सहमत थी कि यहाँ इसकी पढ़ाई-लिखाई ता लाभ नहीं हो रही है, उल्टे बिगड़ रहा है।

देवप्रत अपने नाना-नानी के साथ आया यह तय हुआ। सरो अबतप चाहती थी यस्कि बहुत पहले ही वह अपने माता-पिता का लिखना भी चाहती थी कि देवप्रत को सौरों बुझा सो। अब यह तय हो गया कि देवप्रत आया ता पठा नहीं कैसे सहसा वह ठण्डे पसीने स भीम उठी।

गुनी का होना न होना बराबर ही था। सुधीला तो अगत्या गयी ही और सब बबबत भी जा रहा है। इस इतने बड़े परिवार वाले घर में कबस चार ब्यक्ति ही भोजन का रह गये। बर सास-ससुर, लेंगड़ी पुत्री और रोगिणी माता। पता नहीं सब इन चारों में से कब कौन किस परिस्थिति में रहता है जाता है। जब भी खोज में जैसे और गहरे खुदाई हो रही हा। बेचक बीमारें पड़ी दिवनी है। ऊंची गर्बन करने पर, दूर ऊपर आकाश का टुकड़ा कैसे छोटा सा नीला नक्षत्र समता है—दूधर!! और माय नीचे उतर रहे हैं, नीचे उतर रहे हैं। एक सीमा पर जाकर वह नीला नक्षत्र सूरज हा आया और बेपती खोलें देखते हुए बम्बी हो जाएंगी। न नक्षत्र हागा न सूरज। खोलों में बीमारें बहुत पहलू ही मिल जाएंगी। आकाश का नीला नक्षत्र जाने कहीं रह जाएगा। और जब आपके पैरों का छूने लगेगा। पर बेकार। पैरों में जिसे अनुभव किया वह खोलों को मंदा कर गया।

बस यही सरो को लगने लगा। पति का नीला नक्षत्र—दूधर!! और बेच बत जब बनने आ रहा है। पति और पुत्र क बीच अपर में सटकी सरो कहीं होगी क्या करेगी—कुछ समझ नहीं पा रही थी।

गुनी के ब्याह में भी माता-पिता ने सरो को मूब समझाया था कि वह सौरों बन्दी बसे। कठ रिनोँ एबा-शरू हो आवी हवा बरक आणी उसके बाद लौट आना। लेकिन वह कभी नहीं मान सही थी। गुनी को से जाने के लिए थी उय सोणों में जिर की थी लेकिन सरो गुनी को लेकर तूँ रो दी कि उनका टिटर साहम नहीं हुमा कि कठ करते।

देवप्रत को तब मेरने क लिए सरो को तयार होना पड़ा। वह चाहती भी थी कि माऊवा की भवेया यू० पी० में उसे बधिक सीधिक काठावरण मिलेगा। संभव है कि आज का आचार देवप्रत कल अपने नाना-नानी क प्रयास

से एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति बन जाए। ठीक है, बहू जाए। यहाँ तो अब ने ही रह गये जिनकी कोई सामाजिक उपस्थिति नहीं रह गयी है। जो अब अपने अन्त की प्रतीक्षा में या तो बूढ़ हैं या रोगी हैं या उन्मत्त ।

और सुधीला की विदाई के तीन दिन बाद बब्रत सीरां ने सिध बिना हुआ। सुनी ने देब्रत के सिध अपना एकमात्र बन्धा दिया जिसमें सरो ने उसके पात्रामे स्क्रू का हाफर्नट कमीजें की एक जितावे सजा दी। मां ने रास्ते के सिध सुधीला के व्याह के बच्चे सङ्गु तयकौत खादि रत्न दिये ।

जिस समय देब्रत बाबू मां सरो और सुनी के पैर छूकर जाने लगा सब हठस्त ऐसी जोरों से रो पड़े जैसे वे राते हुए पुतले हों। सुनी ने उसके बालों में लैल लगाया था कमी की थी। सरो ने गऊने (अप्राप्त) का काला त्रिगोकर उसके मुँह को लूब रगड़ा था और बब्रत ऊँची ऊँची में सी हाफर्नट और एक ऊरे रंग क कोट में ऐसा सजा रहा था जैसे वह पूब ऊँचा हो गया है। टाँमें कौमी सारंग की-नी सग रही थी जब कि अभी वह तेरह बरस का था ।

से परामर्श किया तो पहलू था बे रीवार नहीं हुई कि सड़का इतनी दूर सौरों बना जाए। कस से मान सो यहाँ किसी को कस हो-हुमा जाए तो बेचार सड़का मुँह दसन को भी तरम कर रहे जाएगा। लेकिन बे भी सहमत थी कि यहाँ इसकी पढ़ाई-लिखाई तो साफ नहीं हो रही है उल्टे बिगड़ रहा है।

देवप्रत अपने माना-मानी के साथ जाएगा यह तय हुआ। सरो अबतल पाहनी भी बसिक बहुत पहले ही वह अपने माता-पिता का लिखना भी चाहती थी कि देवप्रत को सौरों बुला लो। जब यह तय हो गया कि देवप्रत जाएगा तो पता नहीं कैसे सहसा वह ठन्डे पसीने से भीग उठी।

गुनी का होना न होना बराबर ही था। मुचीका तो अगत्या गयी ही थीर जब देवप्रत भी जा रहा है। इस इतने बड़े परिवार वाले घर में केवल चार व्यक्ति ही भोगने का रहे मये। कुछ साध-समुद, सँगडी पुत्री और रोगिणी माता। पता नहीं जब इन चारों में से कब कौन किस परिस्थिति में रहता है जाता है। जब की छात्र में जैसे और गहरे खुदाई हो रही है। केवल बीबारें लड़ी दिगती हैं। ऊँची नर्वन करने पर, दूर ऊपर आकाश का टुकड़ा कैसे छोटा सा नीला नक्षत्र कपता है—दूझर !! और आप नीचे उतर रहे हैं नीचे उतर रहे हैं। एक नीला पर आकर वह नीला नक्षत्र सुराब हो जाएगा और देवती जैसे देगडे हुए अन्धी हो जाएँगी। न नक्षत्र होगा न सुरात्र। आँसों में बीबारें पड़ते पहले ही मिस जाएँगी। आकाश का नीला नक्षत्र जाने कहाँ रहे जाएगा। और जब आपसे पेटों को छुने रुनेका। पर बेकार। पेटों में जिसे अनुभव किया वह माँत्रों को अंधा कर गया।

बस यही मरा को कगने क्या। पति का नीला नक्षत्र—दूझर !! और देव प्रत एक बनने जा रहा है। पति और पुत्र के बीच अघर में सटकी सरो कहाँ हमी क्या करेगी—कुछ समन नहीं पा रही थी।

गुनी के ब्याह में भी माता-पिता ने सरो को गूब समझाया था कि वह सौरों बड़ी बस। कुछ दिनों बदा-दाक हो जाएगी हुआ बसल जाएगी उसके बाद लोट आना। लेकिन वह कभी नहीं मान सकी थी। गुनी की से जाने के लिए और उन सोपां ने जिर की थी लेकिन सरो गुनी को अघर एम रो दी कि उनका फिर लाह्य नहीं हुआ कि कुछ कहन।

देवप्रत का लब भेजने के लिए सरो को रीवार हाना पड़ा। वह चाहती थी थी कि मासबा भी भोला पू० पी० में उसे अधिक रीतिक बातावरन दियेगा। संभव है कि आज का आवाज देवप्रत कब अपने माना-मानी के प्रपाम

से एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति बन जाए। टीका है यह जाए। जहाँ ठा मर के ही  
 रह पड़े बिनकी कोई सामाजिक उत्सामिता नहीं रह गयी है। जा मर करने  
 मन्त्र की प्रतीक्षा में या तो बूढ़ हैं या रोमा हैं या उन्मत्त ।

और सुधीला की बिशई के तीन दिन बाद अक्षय्य मोरों के फिर बिना हुआ।  
 पानी ने देवदत्त के लिए अपना एकमात्र बक्षस दिया जिसमें सरा ने उसका पत्रामे  
 स्कूट का हाइड्रीट, कमीजों का एक किताबें मरा थीं। माँ ने यन्त्रों के फिर  
 सुधीला के ब्याह के बंधे लहू नमकीन धानि गन्ध लिप ।

बिना समय देवदत्त बानू माँ सरा और मुनी कपीर छूटने जाने कना मर हूट  
 ऐसी बारों से रा पड़े रीम के रात हूट पुनक हों। गुना ने अमुक बानों में  
 छगाया था कमी की थी। मरों में मन्त्रों (भोग्या) का कना निपाकन डन्क  
 मूह की मूह गपरा था और देवदत्त अँधी-अँधी में सा हूट्टा मर मर डूटे  
 रंग के कोट में रोमा मर गहा था रीमे बह मूह जबा हा मर है। अँधी की  
 सारम की-मी मर रही थी अब कि बनी बह मरू मरम का था ।

दिन सुग और करमी जाते हेर नहीं सपती । बुल असंख्यमुपी होला  
 हे नेकिन नुस के ता पिमती के ही रास्ते होते हैं । सुख और सफ़लता के लिए  
 बाव-पक है कि व्यक्ति अपने को ही देखे । अन्य कोई भी व्यक्ति हो मार्ग  
 की बाधा होगा है । धारम में बहुत व्यक्ति बाधा होते हैं इसलिये सफ़लताकीर्षी  
 कुछ को अपने पक्ष में कर अनेकों को पक्ष से हटाता है । उसक बाव जिन कुछ  
 को हटान के लिए बो-एक को चुनना होता है और अन्त में उन दो-एक का  
 भी वह 'बीतरामी' बैस ही निर्मम हाइर मार्ग से बीन कर फेंक देता है जैसे  
 बेरपा करती है । भीमोहन ठाकुर ने श्रीकल्कम ठाकुर को पारिवारिक बाधाओं  
 के लिए चुना था और अगत्या एगा ने मात्र यही सुना कि पता नहीं करक  
 और निजिन उपार एगों की शक्ति भीमोहन ने श्रीकल्कम पर कर ही और  
 फलस्वरूप श्रीकल्कम ने भारि व हाव-नैर जाइएर इसी मश पर गला छुड़ाया  
 कि वैदुक मगल क अने तिमन को भीमोहन क हाव बैस रिया । श्रीकल्कम  
 शल्यावा ता बहुत पर उगे आनी गमुचाम न ही काटी गगति मिथी पी इन  
 मिय बट चुप हो गया । दोनों भाइयों में आपस में सेन-देन बलता था अजिन

श्रीमोहन का स्थापक था कि जो रुपये किये गये हैं वह उस मुआफी की जमीन की तरफ के हैं जो कि उनके हिस्से में जाती तथा जिसे श्रीमोहन ने वाब रखा था। बड़े पिया सिद्दनाथ ठाकुर के नाम की वह जमीन का पट्टा किस तरह श्रीमोहन ने बाबाबाबा अपने नाम करवा लिया था तथा कानोंकान किसी को खबर तक नहीं होने ली—यह सबके लिए रहस्य ही रहा। और इस प्रकार श्रीमोहन जब रास्ते के अन्तिम कटि का भी दूर कर ले गया तब पातुक मकान को एक मारवाड़ी सेठ को बेच दिया जो कि अँग्रेजों का व्यापार करता था। श्रीमोहन बाद में छावनी में उस पैस से कई पुराने बँगम जो कि अंग्रेज-छावनी के समय के थे खरीद लिये। यहाँ की जसबापु जय क रोगियों के लिए बहुत ही कामभद थी इसलिए राज्य की तरफ से यहाँ एक सनीटोरियम बनने लाजा था। श्रीमोहन जानते थे कि तब इस क्षेत्र का विकास होगा तब आएँगे उन्हें जयह की आन-दयना होगी और वे तब कसकर किये जा सकेंगे।

श्रीमोहन बाबू हिस्से को पूरी तरह गिराया जा रहा था और बहुत मारवाड़ी सेठ अपनी त्रिमित्री कंपनी बनवान की तैयारियाँ कर रहा था। रोब ठिङ्की के पास गया माँ देखती कि किस प्रकार ठाकुर-परिवार की कचहरी गिरी पूजापर गिरा करे गिरे। उग्रहीन कमरों के ठाकुर जिनमें कब-क्या रखा जाना था वह सब बाँवों के मानने बाबू उठना। कैसी मजबूत बीमारों की कि मजदूर दिन-दिन भर रोजी लिये धूल उधाते गिराने फिर भी बापी बीमार तक नहीं फिर पानी थी। बड़े समुर सिद्दनाथ ठाकुर की बटुक में बिजकारी थी और जब वे सब बिज उग्रहीन बीमारों में धूल भरे कैस बिजग गिरीह लम्ब रहे थे। क्या बड़े समुर के जमाने में किसी का माहम हा सकता था या बिजकारी को छु सकता था? और आज ठाकुर-परिवार की वह बंगला श्रीमोहन के हाथों धूल-धुलगि होकर जमान्त हो रही थी। कैसी पीगम की वाली बिजनी उठे थी। सब टूटी पनलियाँ भी गिरायी जा रही थी। इस सबको अर्जित करन में जान बिजनी पीड़ियों का रक्त-पपीना एक हुआ था और आज

बड़ी सम्पत्ति कौरवों के बीच बँटिपड़ी सी मसख सग रही थी। किसको शेष दिया जाता ? पंडित धीनाथ ठाकुर ने यह परिवार की बागडोर सयकत हाथों से सम्हाली होती या आज वैतुकठा भूक बनकर इस समय न उड़ती होती। अपने ही पूर्वजों का पुरवार्य कमी अपने का ही भीर्मंडित न कर भूकर्मंडित नी कर सक्ता है यही तो हम कमी-कमी क्या प्राय नहीं समझ पाते। शस्त्राकर या रँकासे होकर कमी-कमी खिड़की बन्द कर ली जाती लेकिन इससे उड़ती भूक में स्वयं भसे ही बसा जा सकता या किन्तु भूक होते वैतुक-पुस्तार्क को कैसे बचाया जा सकता या ? जब अपना ही एक अंधा, दूसरे अंधों को खाने पर आ जाए तब किसी बाहरी मापवा या दाबु की आपस्यकता नहीं होती।

और ठाकुर-परिवार के खण्डहरों पर मारबाड़ी सठ भी नीरें पड़ी। बीलने उठी। बीबारों ने पीपटों को सम्हाला। जँपसेवासी खिड़कियों ने अपने माथों पर बीबारें उठा लीं। और ठाकुर-परिवार की धीघमी सखतीरों तथा छत्रों पर सैठ ने अपनी कोनी की यंत्रिमें राड़ी की। अरे यह क्या ? यह तो खिड़की की तरफ एक बड़ी सी बीबार उठने लगी है ? तो क्या अब ऊपर कमी वेगता न हा लयेगा ? जिस खिड़की स इस पर की साम-बहुओं ने जाने कितने समुद, खेठ देबर, घ्वाह-यासी देखे ये आज उस खिड़की क सामने ताजी बीबार हमेशा हमेशा के लिए खड़ी कर ली मयी है जिनमें स ताजी इँटों और पत्तमुर की संय आ रही थी। अब उनमें से बड़ा पुँयला-पुँयला सा मात्र प्रकाश भाएगा भूक नहीं हागी। ठाकुर-परिवार क इस बिबा माग की अंधा कर दिया गया था। जो खिड़की पर क प्रत्येक समुद-पुत राप-बिराम हँगी-जानू सब में, सब क लिए स्वामी थी अब वह बैधी नहीं रह मयी। कमरे के बर्तन कपड़े भागों के मूल अब कमी भूक में आकारित नहीं शियेने। पहले ही पर में कौन प्रकाश था ? अंधेरा बड़ा ही। भूक चाह कने ही छोटे माध्यम से क्यों न आवे प्रखलित लमनी है। बिबाम होला है कि नहीं बाहर डेर मा आसाक है आओ-वेगो कौनी भूक है कौना बिगाप नीला आकाश है उम्मुकता है। लेकिन धर खिड़की की राह में दूसरे के पर की यह बीबार दिन-रात मोझी रहगी। हर बार जानें इस बीबार में टकग कर अपने में ही निमग उगी। भीमोहन जैसे उन्हें ही बेच गया हा।



कठ दिनों बाद मुनी हुई बात सब निकली कि इस बीमार के उम तरफ मानवाही छेठ का उँगों का सम्बन्ध है। दिन-दिन भर उँग की 'बमबल' तथा सीद की दुर्गन्ध। दिन भर उँगमवारों की विभिन्न आवाजें। निद्र हो जाने पर में कोई बटना जाने आवाजें कुछ नहीं होतीं। निद्रमन्त पंडित श्रीनाथ ठाकुर की बेंगबई की आवाज बैठी ही रात में बोलती होती और 'बिष्णुमहत्कनाम' का जोर बार-बार सुनायी पड़ता। प्रायः साँसों बूत कात्नाना मधेरे ही बना लगी। केवल सरो क पय्य क लिए ही घाम की बूझा चलता। अजीब बिबगना भरी मांश्रि की जैसे सब से संबंध और आत्माकता छोड़कर परिस्मृतियाँ स समझीठा कर लिया था। पानीवाही घोमिल या ऐम ही कुछ व्यक्तिवां को छोड़कर कनी कोई बाहरी व्यक्ति नहीं आता था और न ये ही कही जाने थे। हाँ बहुत हुमा तो कभी मायायन बाबू अचेमे या परिवार क साथ निकले बने आते। बूमरा जो व्यक्ति आ सकना था वह या ऐमन मन्मसाय स्थित उमका लबाबला हुए बरमों हा पये थे। हाँ खरें अकल्प आ जानी थी। खरें कसे आनी है यह कोई नहीं कह सकता। आप साय राजा परीक्षित बन कर गू स्थित खरों के लखर आ ही जान है। मुनी की मौन ने अपनी मान को इनना परेगान किया कि वे बहु क माये पर अपयम का टीका समाने के लिए कूर में फाँद कर डूब गयी। राजम परिवार का इस मामले में पुनिस म पिण्ड छानने में शूकारों गये खर्च करने पड़े। मना कि मौन से अपने मयुर की बड़ी बुरी हाज्ज कर लगी है। वह सामाजिक बकीर खर पर के पीछ के दायाल में बारी के लख खड़े पर लगी बना "पानी" "पानी बिष्णुना रहता है और बहु के दर के माये निमी की मकाय नहीं जो उम कठ नर। मुनी का पति मया म ही गट का रागी या सब और लयाय हाण्ड ये है। सिवाय मून की बाल के पानी के और मुनी गोली क ठिकर क और कठ हजम हाता ही नहीं है। साय दबा-दाय की गयी है लेकिन कर्ष बाय-बन्धा ही नहा हमा। मरा और माँ का यह मुनकर मलाय ना कही हुआ स्थित—अच्छे का अच्छा और बरे का बरा—न प्रति उनही भाव्या बना ही। मुनी क निरट कोई कामता थी ही नहीं इसलिये न भाव्या बनन का प्रयत्न या न मयार मान था। कान म इमथिया मन लिया। बर लनक लखू क शाय मकनी है तो क्या उन पर मोक्षनी है? बिबायना है? उगता बिष्णु भी ना उमके लिए बर मात्र पार ही था। मून लिया बम। बर बर माय निद्र रिता के पुनकाल्य की रिताओं को पदा बानी है। इन बिबाय पर बर बर याथा माहब का नाम या इगु या नाम हैगनी है तो मोक्षनी है बि य मौन है? बना य बरी है खिनकी बारी तायाय

साब के किनारे है ? बाबा का इनसे क्या संबंध था । बाबा ने तो कभी इनकी चर्चा नहीं की लेकिन बाबा ने दूसरी कौन सी चर्चा की, कि शिकायत होती है यह चर्चा छोड़ दी ?

नहीं इस घर को यहाँ के लोगों को किस बात की प्रतीक्षा थी लेकिन ऐसी टीका टा जीवन भर सभी को सभी परिस्थितियों में किसी न किसी की रहती है । पंडित धीमाध ठाकुर और उनकी पत्नी का अपने छोटे पुत्र की सरो को अपने 'राम' की प्रतीक्षा थी जिसने उन्हें सीठा बनने का भी सौमाम्य न दिया बल्कि ममस्ती परित्यक्त बना गये । मुनी को बाबा की प्रतीक्षा के साथ-साथ किस तीक्ष्ण की प्रतीक्षा हा सकती थी कौन कह सकता है ? लेकिन थी सबकी अप्रतीक्षा ही । किसी के पास किसी को समझाने के लिए, पूछने के लिए न शब्द न सहानुभूति । एक अस्पष्ट सहर्षणता थी जो उन्हें अंतिम रूप स टूटने लड़ित होने से बचाये थी । दुःख ने उन्हें निकटता दी थी । जो दुसी नहीं ने बल्कि सुपी ने बे अपनी-अपनी दिशाओं में दूर चले गये थे । चार दिशाओं से कबल एक ही व्यक्ति की मीन प्रतीक्षा थी । कभी-कभी बाहर की खबरें छपाक ही मछली तो दूब कर उनकी प्राप्ति को मग कर जातीं लेकिन वे खबरें तथा उनके बाह्य दोनों ही अबाक बन मूह कटना सेते जब दबते कि ये थोटा न केवल धृतराष्ट्र और गोमारी ही है बल्कि जैसे उनके कार्यों में विपला सीमा मरा हुआ है । मुनने पर न आश्चर्य न काव कछ भी तो नहीं होता । जा हला है वह इतना अपत्यामित व्यक्तिगत हाता है कि उसे कोई संभा नहीं दी जा सकती और न कहा ही जा सकता है ।

मूसलाघार बट्टि हो रही थी। तीन दिन स मेवाछत्र था। जब स थीवर बाबू का मातृप हुआ कि वे छुटने वाले हैं, वे सोच नहीं पाते व कि अब क्या करना होगा। पिछले हम वर्ष तक सरकार ने उन्हें जेल बन्दी आदि का ऐसा नाम दे दिया था कि साबने की आवश्यकता ही समाप्त हो गयी थी। वे बुद्धि आदर्श की ही वे इसलिये उन्हें अनिश्चित दण्ड नहीं सुनना पड़ा। केवल उन दिना का छोड़ कर जबकि जल में सभी कैदियों ने और गामकर कान्तिधारियों ने राजनीतिक कैदियों की सविधा व लिये भूख हड़ताल की थी। यहीन्द्र बाग क बाद सबसे ज्यादा अनशन करने वाला मैं थीवर बाबू भी थे और हमने हमेशा के लिये उनकी भेन दिया गाराह हो गयी। आरंभ में अल्प उनके साथ मरनी बगनी गयी थी जिसमें वे हमारा क लिये स्वास्थ्य रा बँडे। मनीमन यही हुई कि कोई अंद-अंग नहीं हुआ।

जिस समय वे जेल के बाहर आये खारे के हम बज रहे थे। हमनी मूसला

घर बलि में कोई रिक्शा भी नहीं दिख रहा था। उनका सामने पहला प्रश्न था कि वे अब कहाँ जाएँ ? क्या करें ? जेक जाते समय घास्त्रीजी से कह दिया था कि वे मामान अपने घर से जाएँ। दस वर्ष तक बनारस में रहते हुए भी उसे बनारस में नहीं बे। किसी तरह भीगते हुए वे शहर की ओर बढ़े। एक इसी कपड़े वाली एक रिक्शा चला लेकिन हममें ता साहकिक थी। तो क्या साह किस रिक्शा चस गय वे ? और वे अब रिक्शा में घास्त्री जी के घर की ओर खाना हा मये।

रविवार था इसलिए घास्त्रीजी घर पर ही मिल गये। पहले ता वे बोके। मन में कदाचिन् आघकित हुए कि यदि धीवर बाबू को पुमिन उनक घर में दप स ता पना नहीं व किम मुसीबत में फेंम जाएँ। घास्त्रीजी बापी की 'पंडित-समा' के सदस्य थे और जो कि राजबन्धुओं की सम्था थी। भला राजनीतिक लोगों से उन्हें क्या मना-पना ? लेकिन स्पष्टतः वे कुछ भी न कह सके। भावनापरान्त घास्त्रीजी न धीवर बाबू का कार्यक्रम जानता चाहा कि अब वे क्या करेंगे ? क्योंकि 'हिन्दी-हिन्दीकारिणी' को बन्द हुए ता बरसों हो गये थे। कांग्रेस में वे अब जा भी नहीं सकते थे और मान लो जाएँ तो ठाकुर सकक बीप नायपग सिंह का अब बहुत बोलबाला था। कांग्रेस अंग्रेजों के साथ समझौता करके कुछ प्रान्तों में मन्त्रिमण्डल बनाने वाली थी। ठाकुर सकक दीन नायपग सिंह मन्त्री बनने क सने देग रूँगे। भला इतना प्रभावशाली व्यक्ति बिरोधी हा ता काई कस कांग्रेसी राजनीति में टिक सकता था ? विचार नहीं लीकरी गाबन क और काई रास्ता देग नहीं था।

रग की गया बिरोध की राजनीति में बड़ा परिष्कर्न हा गया था। जमनी का हिट सर जाये दिन यूरोप क राष्ट्रों को युद्ध की घमकियाँ दे रहा था। रग में हिन्दू-मसलिम तनाव काफी बड गया था। जाये दिन कही न कहीं रवे हो पाठे वे। बनारस में बीड़ दिन पहले दंवा हुआ था दनबिपु बापी उनाव था। धीवर बाबू के मन में रह-रहकर एउ ही बाल घुमन्ता थी रि कान वे किसी तरह साप्ताहिक दिनांक पाठे ता व जपन का जपने बिचारों का पुर्न रूप द पात। लेकिन साप्ताहिक दिम प्रचार दिनाका जा सकता था ? घास्त्रीजी क प्रयत्न से 'असो' पर उद्देश्य विचारों एउ घड में रजन की जण्ट मिल गयी। आज कानी में रहने उद्देश्य अगल वर्ष हान जाये व लेकिन जपना था कि जैन जपना दिन हा और नाम-नाम गाबना है।

रों और बल ही बल था। लूब ही बुझि हो रही थी। संध्या में बाद का मन्मैसा  
 क लूब हा आया था। दिन भर अपनी लिडकी स पड़े-पड़े नाचें दलत रहत।  
 थियों स कही नाचों में स्त्रियों भीत गाती गुजरती होती। सगा का पाठ भीलों  
 म गया था। उम पार की हरियाली और पेड़ पेन्मिप-रेखा से हो गये थे जिनके  
 र मेकइहा बाकान मुकान-मुवा सा बरमडा मा छया हुआ था। पेट का रोप  
 गया था। मडा और बिचड़ी छाकर रह जाते। मड के बूमरे हिस्से में माबु  
 ग भोग गार म पार करले घट मन्कृत में 'सिमोक' पका करत। दिन भर तमाबु  
 के मंच या फिर कमल करत हुए "हूँ-हूँ" मुनायी पड़ता। उनकी ककड़ी  
 के चन्चियों दिन भर पकरीक छय पर "बटाक" "बटाक" बोसती पूरी मड में  
 मुनी मुनायी पड़ती। कमी बाबा कबलाल बाबा सकमानन्द पर बिगड रह  
 हु तो कमी लिडो पर। दिन भर उन सोपों की भयबा स्वीटियां लम्बों में बेंबी  
 सुरती हार्ती। सिबाय माने-मान-पीन क मड में और क्या हुआ है यह भीपर  
 बाबू को नहीं माफूम। भीतर बाबू का कान बाया कमरा मिला हुआ था। परब  
 ही ही बीबार, नमें जिनमें गवाछों जमी दा लिडकियां। छोडलपायी पर भीपर  
 बाबू पड़ रहत। पहल भी सामान कुछ था ही नहीं। जो था वह गत दम बयों  
 में गाम्भीरी की जणा क बाबजूद भी नष्ट हा गया। गेगल पुडे मड के इन पय-  
 रीक बन्दरें में दिन-नात पड़ रहने पर उन्हें समना कि जैम से अभी भी बारा  
 गार में है। पीछेबासी लिडकी म पच्छिम ओर म खानी संध्या रामनगर का बिना  
 तथा चुनार की ओर का बाबाग मन्क लिवायी पड़ता। दूर-दूर तक बिम्बुन  
 अत बपीबियों बगारें, बछार मब बिडे लिगने। लिडकी के बीच में मकरुं  
 भागों का भाबाचें या बातचीन का टुकटा उन तक ऊंग मर भी जा जाता।  
 सगा में बाद बड़ने की पूगे ममानना था। कमी-कमी तो बाद नीचे क बाग्यों  
 में पम जाता है। कमा जहाज जैमा कपना हाया न ?

बाग एउ मरीना का दोड़पूर क बाद भी क मान्यारिक लिडलन का यात्रना परी  
 मरी कन या एउ क। बिगत ही मरीना गाडीर बिचार के मरिनों म मिक। मर

कहते कि विचार बड़ा अच्छा है देश की राष्ट्रीय पत्रों की बड़ी आवश्यकता थी है लेकिन जैसे ही उन्हें मासूम होता कि वे राजमोगी कार्रकारी रहे है ता उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगती । रात को मठ में पहुँच साक्रेटम की रोशनी में रात रात भर बैठे अनुबाद किया करते । कई बार मन करता कि वे सरा को एक पत्र किन्ने लेकिन पिछले बीस वर्षों में वे ऐसे ही प्रत्येक बार साहम कर पत्र लिखते रहे हैं और अबूरे ही म्कानिबस फाइ रते रहे हैं । जब वे अपनी ही दृष्टि में असफल व्यक्ति रहे हैं तब क्या सरो क्या सीधेमी ? प्रत्येक दिन हमारे स्पर्ष के संकोच के कारण संबंधों से दूर करता जाता है । हम यह बूस जाते हैं कि किसी दिन तो यह संकोच छोड़ना ही हूँता है तब क्यों नहीं आज ही बल्कि अभी ही छोड़ दिया जाए ? लेकिन ऐसा होता था नहीं है न ? और हम जाने किन्ने समय के व्यवधान के पार लड़े सामने वाले को विश्वास रिखाना चाहते हाने है कि नहीं हमारे मन में तो कोई पर मात्र नहीं था ।

और एक दिन—

दिन के बाद दिन—

और असंख्य दिन हमारे चारों ओर फैल जाते हैं । भीबर बाबू बाकूस से कि सरा का इन्डू दीदी की माकठी दीदी को किन्नी को पुकार छें । बाप रतना ही हानी । लेकिन रात के उस गहरे सप्राटे में क्या वे प्रबाह का अजीब सा स्वर, सामन्त की जकडी बत्ती का पीला-नीला मौन स्वर और अपनी ही गहरी साँस की आबाब से वे चौक उठते । नहीं ता सरा, इन्डू दीदी या माकठी दीदी नहीं है । ग्यास आना कि क्या पता सरो पर किन्नी और केसी-केसी बिबसताएँ जारी होंगी और पिमनी क आनाक में रात्रां के गहरे ऐसे ही सप्राटे में क्या उसने पही पुराय होया ? जब कि उसकी पुकार एक बान्तिबिक सहारे के लिए हो सप्री थी । माना कि मात्र थी यदि वे पत्र लिख कर सरो को पुकारें तो वह अपन पति का मान संक्षिप्त रोगी पराजित, अमरुन देगने पर भी अपने में समेट लेगी लेकिन तब उनका क्या मूँह रह जाएगा ? और साक्रेटम युमा पीठ में चुभनी दीनपरागी पर बीनी का ठकिया बना सेटे हुए सोने की चपटा करत । नींद प्रायः उनके लिए सरुद्धता की तरह अत्राप्य ही हानी ।

आज वे बहुत प्रसन्न हैं। हमीको तो भिल की ओर पहाड़ कहा जाता है। आज वे "नामरी प्रचारिणी मण" से जैसे ही निकले सोचा कि जसो "भारत-माता प्रेम" से "हिन्दी शिक्षारिणी" के वे अरु लूँ जो उनके जेल जाने के बाद निकले। ममब हुआ सा उनकी पूरी जिल बनवा सी जाएगी। वे पत्रिका के अरु पंडित जी म नहीं माँगना चाहत थे। पंडित जी ने उनके जस से जाने के बाद कोई ऐमा व्यवहार नहीं किया जिसमें यह लगता कि वे कभी उनके इनमे निरु भी रहे हैं। बड़ा ही टंडा-टंडा सा आचरण था। जिसका स्पष्ट अय था कि वे जामि कारियों से कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहते।

वे जैसे ही गायपाट पहुँचे प्रेम के मालिक बाबू रामलालबत मुला अपनी उमी परिचित जस बर्गों पर शुकु हुए बउ प्रुठ बगीरा पउ रहे थे। प्रेम में उहाँ पाने आर-दम आमी काम करत थे अब बहाँ एक कमोडिटर और एक लड़का था ही निराशमी दिया। दरवाज पर दयावत मैमी भी फनी बिज पड़ी थी।

—रामनेकारन बाज !

—दोन ?

टेवक-नेम्य जर्मों प्रूफ में डूबे रामनेसावन बाबू की मूँठें अब लिपड़ी हो गयी थीं। उन्होंने उसी तरह डूबे हुए फिर कहा

—यसे जाइए अन्वर।

धीबर बाबू उनके सामने जाकर लड़े हो गये। बड़ी मंड़ी हाकल की टेबल की। बर्गों से स्टाटिय-नेपर नहीं बरसा मया या जिस पर कि जाने फिटनों ने नाम फान गम्बर, सबकान क समय बमायी गयी बिचकसा सब पर घूल ही घूल थी। बाबा आदम के जमाने का बही कसमशान बिनास्प्यही के बेसा ही लग रहा था जैसा कि आज से बस-गवाह बर्ष पूर्व जब वे यहाँ मया करत थे। एक कुर्मी बिगकी कि बैठ बैठने की जगह से टूटी हुई थी सामने रखी थी। रामनेसावन बाबू ने आगन्तुक की ओर देखने की आबस्पयता नहीं समझी और बासे

—बै जाइए साहब।

धीबर बाबू बैठ गये। कुछ देर प्रतीक्षा के बाद रामनेसावन बाबू ने पहल बली बसायी फिर जम्मा उठार और उन्हें घूर कर बोले

—कहिण क्या छरवाना है बापको ?

—जी आपने मुझे नहीं पहचाना रामनेसावन बाबू ! मैं

राम ने सबन याबू ने अपनी कर्पी पर दोनों पैर उठाकर टेबल पर जाये झुक कर रना और बासे

—मौन धीबर बाबू ?

—जी हाँ।

—कहाँ से जनाब आप ?

—बन बसा गया या न ?

—जा तो हमका सब मामुम है। सीत्रिए, पनबा जमाइए। लेकिन आपके ता एनदग्मे बान सकेद हा मये। बहुत बीमार रहे क्या ?

—अब आप तो जानते ही हैं कि जेस मैं

—अरे हाँ साहब ! जेस कोई समुदास योई है कि बिस्तर उठाया और बस बिये। भर हाँ बा, "हिन्दी-हितकारिणी" तो बोल गयी।

—जी हाँ।

—अबल मैं आपके जाने के बाद पिपाठी जी का सासा उपमें काम करता रहा। आपको कुछ मामुम हुआ ?

—बया ? मुझे कुछ नहीं मामुम।

—अरे बाह मुद ! अरे ऊ जोन उनका सासा रहा न ? हमारे छह महीने का



पैसा त्रिपाठी जी से लेह क भाग गया रहा अपने देहात । त्रिपाठी जी कहिन क ऊ कहता रहा कि हम रामसेलाबन बाबू को पैसा अपने हाथों से दिया । अरे भीबर बाबू ! इस पर जो शगड़ा हुआ कि कोर्ट-कचहरी हा जाता अकिन काम बीच-बचाव किये तब हमको पैसा मिला । सुना हमारे यहाँ से पत्रिका गयी तो फिर दो महीने ही 'पावगी-प्रेस' में छपी अकिन टप्प हो गयी । अरे, आप त्रिपाठी दीड़ते-भूपते रह कौन सरबा करेमा इतना ? कहिए, आप आजकल क्या कर रहे हैं ? अरे हाँ कैसे भाये से ?

—यों ही क्या आया था सोचा आपस मिल् बहुत बरस हा गये । यदि पत्रिका की कुछ प्रतियाँ हों तो ले लूँ ।

—अरे साहब ! अब उम पत्रिका की प्रतियाँ ? किन्ती साहू की बूकान में पुड़ियाँ बांधने के काम आ रही होंगी ।

भीर अमीर सन्तोष क साथ से हँस । भीबर बाबू उठने को हुए कि रामसेलाबन बाबू बोले

—अरे बैठिए बैठिए । ऐसी क्या जन्पी है । क्या भाये जस से ?

—राफ़ी महीन हो गये ।

—अच्छा ?? तो अब फिर राजनीति

—हाँ तो यहू भी राजनीति में कुछ काम था ही नहीं बस बैस ही ।

—उम पर दा-दो बार जस जाना पड़ा ? बाहू भीबर बाबू ! त्रिरे मीये आन्धी रहे । अच्छा यह बताइए क्या कर रहे हैं आजकल ?

—यही घोड़ा-बहुन अनुवाद कर लिया करता हूँ ।

—बस ?? क्यों नहीं आप पत्रकारी में चले जाउ ?

—इतना आमान है क्या ?

—हाँ उम भाई, आमान तो नहीं है । "आज" में ही कुछ जुपाड़ लगाइए न ?

—हाँ उम देखिए ।

—तो उम आप ता एक बार कोई साप्ताहिक निरालने बाप से ।

भीबर बाबू बड़ा फ्रीका-फ्रीका सा हँस दिये । रामसेलाबन बाबू कुछ हलसम हो गये ।

—आप हँस क्यों ?

—रामसेलाबन बाबू ! साप्ताहिक के लिए दो-तीन हजार रुपया तो मुरू में बाहिर ही । और वह रुपया वहाँ से भाये ?

—यह तो बात है ठीक वही आपने लड़ाई सि - पर आ गयी है । जान बंभी-

कैसी बकवास है फेल रही है कि बीबी के काम बढ़ेंगे। कड़ाई हुई तो बाहर से बीबी आना बन्द हो जाएगी। और आजकल बाजार में बड़ी मन्थी आ गयी है।

—क्या आपने आदमी कम कर दिये अपने यहाँ ?

—क्या करें बीयर बाबू ! इतनी पूंजी नहीं कि बड़ी मशीनें स्था करें। बड़ी और अच्छी मशीनें नहीं होने से काम मिलने में परेशानी हा गयी है। अब बस एक ही कम्पोजिटर रखा है। जाब-बर्क आता ही फिटना है ? बहुत हुआ घाड़ी-ग्याह के कार्ड छाप दिये। फिरी की रसीरें आ गयीं कम। मला इतने से काम पर आठ आधमियों को कोई कैसे रख सकता है ? असल में इन दिनों सोच रहा था कि कोई कहानी की मासिक पत्रिका निकाली जाए। कहिए, आपका क्या विचार है ?

—साहित्यिक पत्रिका की बड़ी आवश्यकता है।

—साहित्यिक पत्रिका का चलना तो कठिन ही है। जैसे कहानी की पत्रिका की बड़ी आवश्यकता है।

—अच्छा है आप बकर निवाले।

—निकालना इतना आसान काम नहीं है बीयर बाबू ! पचास मंशटे हैं। आप तो जानते ही हैं कि बिस्वासपात्र आदमी का मिलना कठिन है। अकेला आदमी क्या-क्या करे ? अच्छा, यह बताइए कि साप्ताहिक निकाला जा सकता है ?

—क्यों नहीं निकाला जा सकता है।

—मैंने यह नहीं पूछा। मैं यह पूछ रहा हूँ कि चल जाएगा ?

—जैसे आप यह नहीं कह सकते कि मासिक चल जाएगा जैसे ही मैं साप्ताहिक के चल जाने के बारे में क्या कह सकता हूँ ?

—लेकिन बीयर बाबू ! मैं समझता हूँ कि हिन्दी में आज कोई साप्ताहिक नहीं है। राष्ट्रीय विचारधारा का हो निर्भीक हो ता जल्ता आवश्यक पड़ेगी।

—ता फिर आप यही निकालिए।

—गज ता मार्ट, पैनों का प्रश्न है दूसरे भाग जैसा कोई कि-बामपात्र बिलबाइए ता जान बने। आप जैसा ही कोई बर्मठ हा कि जो सारी बीड़-भुप कर सक। अब आप जानते ही हैं कि मुझमें बभी बीड़भुप हुई नहीं। और जो पत्र को बनना पत्र समान। बर्ता उसमें की ग्नी सागत मे भी हाय घाना पड़े। है मेहनत का काम जकर लेखन एक बार चल निरमा तो फिर गभी की काम है, क्यों टीक कह रहा हूँ न बीयर बाबू ?

- हाँ ठीक ही है ।  
 —न कहता हूँ श्रीधर बाबू ! आप स्वयं क्यों नहीं माचत इस बारे में ? अरे,  
 जैसे मेरा बहू पत्र हागा वैसे आपका पत्र हागा ।  
 —दक्षिण, साव कर बजाऊँगा ।  
 —अच्छा । माइएगा फिर कभी ।

रामने भर बे प्रसन्न था । माय ही मोक्ष भी यह थे कि यदि रामसेनावन बाबू तैयार  
 हू गये तो बगनों की उनकी इच्छा पूरी होगी । यद्यपि रामसेनावन बाबू मुक्त से  
 ही इस तरह से बाँधे बसा रहूँ हैं कि जिसमें बहू उल्टा बूट माँग न कर सकें ।  
 वे उनकी सारा बाँधे समझ रहे थे किन्तु वे इस समझ से रहना चाहते थे क्योंकि  
 उन्हें अपने परिश्रम पर विश्वास था ।

वे सीधे शास्त्रीजी के यहाँ पहुँचे । उन्हें सारी बाँधे बतानी । उनका मन था कि  
 यह रामसेनावन कम्बोई पूर्ण है । देव-भक्त की माटी बाँधे तप कर बना बना बाँध  
 में परेगा करेगा । श्रीधर बाबू शास्त्रीजी के यहाँ रानी अपनी विज्ञानों में से  
 "दयाना" की यात्रना बाँधे बाधक यात्रने में था ।

देर रात तक बैठकर "दयाना" की यात्रना का जग स्पन्द रहे रहू । किन्तु  
 पूठ हाल कौन-कौन से स्पन्द होंगे यदि बाँधे पूरी बगने काही गण हा गयी  
 और वे जब शीतलाटी पर लट लट में बनी जागें वा दर हाने हगा ।

उह महीनों की बौद्ध-युग के बाद भाव 'संगनाद' का प्रबर्शाक प्रकाशित हुआ गया। तिसमें उस्माह से उम्होंने अपने पहल मम्पान्कीय में "बन्निजों को बना बनी" पीर्यक क अन्तर्मंत काफी गरी-गोपी सुनायी थी। रामसेभावन बापू को परु बिन का सम्पादकीय डी पसन्द महीं आया। वे उमे उग्र मानते थे और उनक बार-बार कहने पर श्रीपर बाबू ने काफी गरम कर दिया था फिर भी श्रीपर बाबू एक माय गौपी जी आजा ममतामिह जल्पियानबाधा काम, असहृपाग डीडी-याबा मबरक एतिहासिक निष्पत्तों का दिग्गता महीं भूक।

रामसेभावन बाबू को आरक्ष्य हुआ कि "संगनाद" की साकप्रियता उनक प्ररागिन हाउ ही पूरे बनारस में फैल गयी। उन्हें सया कि जैसे वे बनारस की सङ्गा पर वेदुल्ल का जन्ता डिम्बा लिमे बौद्ध रहे हैं। अब तो 'भारत-भारत' प्रेम क साथ चकार काटने मने। श्रीपर बाबू ने कितने उम्माह मे "संगनाद" की प्रति अपने दिना क नाम लागण बाबू गाडगिल हेडमास्टर के नाम श्रीमाङ्गल ठाकर के नाम गमंत मजूमदार के नाम तथा दो बार जयहूँ पर और नेजी। उन रात वे उम्माह तथा मठपता के जाय में सा न सचे। रात भर मानते रहे कि जब

“पञ्चना” की प्रति बानू को मित्रनी ता पहले तो कुछ समय गहों पारने सकिन  
 एक अपन पुत्र का नाम दलेंगे ना किउनी प्रसन्नता हागी । मा प्रसन्नता से भर  
 उठेगी । मरो क्या मोबनी ? अब तो बहु भी चाकीम बरस की हा गमी होगी ।  
 बे भन्नी पीतसपानी पर पड़े-पड़े दकत रहे कि “दलनाद” के सम्पात्रकीय को  
 सरा पड़ रही है । कैन उमकी अलि प्रसन्नता स कमरु उगी हूँ । मरा कैसे तेज  
 रज मारिं सनी एकरार, हुबारा त्रिबारा उस पड़ रही है । उन्हें सगा कि बस  
 अब पाड़ ही दिना की बेरी है कि एक दिन बे महमा अपने घर जाएँगे । सबको  
 फिना भाचर्य हागा । उनके दास बे मरो का बन्धा का और समय हुआ ता  
 बानू-मां का भी बनारस क जाएँगे । पता नहीं इन बपों में पर मामों क कस्वे  
 के कामा में उनके बारे में जान क्या-क्या सोच डामा हागा । दादा श्रीमालुन ने  
 सवा मामी ने इस माचने की मयि को कमी कम न होने दिया हागा । बे अब  
 अब ही पर एक सित्रेण मीर पहली बार अपने बारे में घर कोई सूचना देवे ।  
 मागयन माक का मधमूच ही प्रसन्नता हागी । पसन भी खुा हा जाएगा । अब  
 लीगों की सनागा कि श्रीपर क क्यों पर छाड़ा वा । अब क इस पत्र क द्वारा मीरे  
 श्रीर प्रभाव डाल सकन की स्थिति में हाव । माक क पहल बे इस मामले में विल्कुल  
 साक क कि रामगनाशन बाबू इहें पूरा तय्यु कडा कर कुछ भी प्रतिक्रम में नहीं  
 दना चाहें । ठीक है यदि बहु उनका अपिचार हा रहे रहेंगे ता उन्हें कोई  
 आनित नहीं हादी कि “पञ्चना” के लिा मिठ सकके उनको ही चाना पड़  
 रहा है ।

श्रीपर बाबू की मदेर में नाम मिठ उठान की मा सम माने की भी पर्वत  
 नहीं होनी । एत तरह में मारा अलवार क ही किउन से । क्योंकि रामगनाशन  
 बाबू श्रीपर बाबू क बनन के अनिश्चित एत भी पैसा किसी भी शीर क लिा  
 रखना नहीं चाहत क । रामगनाशन बाबू नहीं यह समस गये क कि यदि क चाहें  
 ता पर आकर माक लूँगे मा मचने हैं और कि भी “पञ्चना” निरनना रहेगा  
 कपडि श्रीपर बाबू क लिा पत्र अनिश्चयता थी । वह भी आना का दि कपड-

पीटर तथा मरीनें यों ही भारी पड़ रही थीं। काम कुछ था ही नहीं। ज्यों ही बहाने प्रेस का नाम होगा और अब वे बाहरी जाब-बर्क का सकेंगे। उठनी ही उनस्वाह में तथा एक ही कम्पोजीटर से यदि पत्र निकल सकता था तो भला उन्हें क्या आपत्ति हो सकती थी? एक कम्पोजीटर के कारण भीषर बाबू को हर सप्ताह दा-दीन रातों भी प्रेस में बितानी पड़ती। वे अब आये दिन रामनेसावन बाबू से कहने लगे कि एक आवनी से काम नहीं चलेगा। अभी भीषर बाबू का वाक्य भी पूरा न होता कि रामनेसावन जलदारी कागज की मर्हगाई, टाइप की कठिनाई, स्पाही की लंगी आदि का रोना मेकर बैठ जाते।

—भीषर बाबू! प्रेस में काम करने वाले को सब काम आने चाहिए।

—जी।

भीषर बाबू ने 'जी' कुछ इस तरह कहा कि रामनेसावन बाबू का साहस नहीं हुआ कि कुछ कहें। जब कि वे कहना चाह रहे थे कि क्यों नहीं फुसत के समय वे कम्पोजीटर का हाथ बँटा दिया करते? लेकिन चुप रह गये क्योंकि "संलग्नाद" चल निकला था। ग्राही बिक्री होने लगी थी। अब उसमें बिज्ञापन भी आने लगे। दा-एक बार पुस्तक जाँच-गड़ताऊ कर गयी थी लेकिन पत्र पर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। एक प्रकार से कुछ दिन से ही दोनों का असिखित मन ही मन यह समझीता सा था कि पत्र की सामग्री आदि के बारे में रामनेसावन बाबू का विशेष हाथ नहीं होगा और पत्र के आर्थिक पक्ष के बारे में भीषर बाबू की कोई जिम्मेदारी न होगी।

इस बीच ठाकुर सबसदीप नारायण सिंह ने दा-एक आन्वियों के द्वारा रामनेसावन पर आर कामा कि वे भीषर बाबू को हटा दें। क्योंकि "संलग्नाद" को निरस्त हुए एक कारण हो गया था और ठाकुर 'दाह' इतने बड़े अस्त्र का अपने विरोधी के शीर्षों में नहीं डाल सकते थे। बनारस में उन दिनों हिन्दू-मुसलिम काफ़ी तनाव था। 'गंगाना' आये दिन पैताकनी दे रहा था कि नगर के कुछ राजनीतिक व्यक्ति इन तनाव को बनाये रखने में सहयोग दे रहे हैं। गनीमत यही थी कि

श्रीधर बाबू ने किसी का नाम नहीं किया था लेकिन उनका सकेत ठीक जगह बाहर निकालने पर बैठा।

दत्तारस उन दिनों थकसाहों पर चढ़ रहा था मैं भी रहा था। और एक काम करने मुना कि महानपुरा में किसी हिन्दू बुलाहे पर किसी ने घुरे से बार किया। और दत्तारस की सारी दुकानों सारे बाजार, सारे बाहन एकदम ठप्प हो गये। पूरे गहर का जैसे सौंप सूँब गया। कल "सख्तार" को निकलना था और श्रीधर बाबू रात भर प्रेस में काम करत रहे। वैसे भी गहर में करपसू लमा था कैसे निकलत ? करीब पाँच बज रहा होगा कि बे प्रेम न बाहर निकले और मली से हाकर सड़क की ओर बढ़े। पूरी गहर पर सन्नाटा छाया था। जाड़े की इतनी मोर में लुब कुहरा था। बिइसा-टाबर की बली कुहरे में डूबी थी। बे चठे जा रह बे कि कुछ पैरों की आहट उन्हें गुनायो थी। उन्हें पता नहीं क्यों कुछ एक डूभा और बे लपक कर एक दुकान पर चढ़ भद्री क पीछे छुप गये। तनी उगहें बही गहर-मगहर बास मुयारी की आबाज मुताबी थी।

—क्यों बे बेचू ! कहा गया बह ? सारा आज प्रेस में रहा मानसुम हागा है।

—अरे गुरु मने उस अभी अभी प्रेम स निकलते बला और तुमे खबर देने गया।

—नहीं बे को इस करपसू में नहीं निकलेमा। ठीक स देना था ?

—अरे अब उस श्रीधर का नहीं पहचानूया ? ठाकर माहब के एक-एक दुस्मन का पहचानता हूँ।

और तनी पुष्पिम की तक मीटी दूर मुताबी थी।

श्रीधर बाबू उस जाड़े में काँप डठे। उम्हले बही छने अनुभव किया कि उनके पीछे ठाकर सकल हीन नारायण सिंह ने गुन्ड छाड़ रखे हैं। मौता भी मच्छा मुना था कि बात फल जाएगी कि इने में किसी न मार दिना। एक सन का था उनका आँचों न भाग अँधरा छ मना और बे पर्मान न मीग उठे।

कुछ देर बाद न बापस प्रेम में सोर आये। कमी पर बँट टेबल पर फिर गप न सोवने हुए धनने में गये रह।

बाहर माफोर फूटने को था।

दिन भर प्रेस में काम था ही और रात में बाधु सुग जाता। इससे 'गामवाट' से 'अस्ती' काही दूर पड़ता था इसलिए वे दंगे के दिनों में प्रेस भगे। कड़ीब सात दिनों तक दंगे का प्रभाव रहा। उस दिन ठाकुर से नारायण सिंह के गुच्छों में बहुत चिन्तित अवयव हा गये लेकिन मय में काँपसी मंत्रिमंडल बनने की बात समय निर्दिष्ट हो चुकी थी कि ल बिरबपुत्र की घोषणा जर्मनी में कर दी। इसे युद्ध मंत्रिमंडल बनने की आदि में मिठकर छापों पर जीवन पर अजीब प्रतिक्रिया कर दी। के द्वारा श्रीधर बाधु दंगों के सामाजिक तथा राजनीतिक कारणों पर प्रकाश काँपस को उसके अपने सबसरवाही तत्त्वों से सावधान करवाया जाता है सासन को इस बात की चेतावनी दी जाती कि यह द्वितीय बिरबपुत्र अपनी समस्या है इसे भारत पर मर्हा की अनता पर, तथा आर्थिक नहीं लाया जाए। भारत की आर से यदि अंधक कुछ भी बिम्बेदा उसकी पूर्ति का भार भारत अपने सिर पर नहीं लेगा।

गोत्र उनके पास दूर-दूर से बिदिठियाँ आतीं। जिलों के समाचार होते पमदियाँ हतीं और एक दिन अपने ही कम्बे की मूहर काकी बिट्टे अजीब उत्साह के साथ लायने सने। जाने किम रामचन्द्र विचारी का लासा बढ़ा पक्ष था कि वह उनका बिचारों रख चुका है और आजकल में काम करता है। 'घषना' में कम्ब की गबरों छपनी पाहिण। और : वह समय-समय पर लबरों मेजा करेगा। पक्ष के साथ ही स्थानीय पुषि की बरामी की माँग करते हुए एक लबर भजी गयी थी। सब आये के समाचार जाते। बीस-आइस बप पूर्व के नाम पड़ने को मिलने सेकि गयों बढ़ी भारतीयता समती। गबर होती कि मोहन सिंह ने बरबपकी अपनी पली की नाक कट ली। हालाँकि इस तरह की लबरों में आरम सब करने की क्या बात हो सकती थी? सकिन कमी-कमी तो बंदे कुर्तों पर बैठे इबे सोचते रहने। पर, यली संतों के बिहरे, बूप ल तो और बिदियों की बहूबहाहू तक मुन पड़ती। ताकाब के पास का म्बामी के केवड़ों की संघ नाक में अनुभव हात लगनी। पैम अभा-अमी बँजनाय बाने माले में पैर हास उन्हें पुकार रही थी। सरा के पीरे पैम प्यं पर बबुभिव्यों पर आर देते हीले म बलउ है कि पक्ष भी आवाज है।

ऐसे ही समय रामगमाधन बाधु उन्हें बीता देन



—पीबर बाबू ! पता नहीं आप क्यों ठाकुर सबक दीप मारायन सिंह जैसे बड़े नेता के पीछे हाथ पाकर पड़े हैं ?

—क्यों क्या हुआ ?

—जरा नहीं हुआ ? आपने तो बलम उठायी और लिज दिया। लीजिए पड़िए क्या लिखा है आपने कि पंडित मोक्षिबल्लभ पंत अपना मंत्रिमंडल पहली बार बनाने आ रहे हैं। भारत के अतीत में कभी मंत्रिमंडल बनते रहे हों लेकिन निष्ठा विगत में कभी ऐसा नहीं हुआ इसलिए हमारे राष्ट्रीय जीवन में यह महान बतमा पहली बार होने आ रही है। पंत जी चुनाव करते समय, व्यक्तियों की सामाजिकता के स्थान पर संघर्षों का ध्यान रखें। साथ जमींदार हो सकते हैं बड़े बनी हो सकते हैं लेकिन वे ही बड़े बेरासेदार भी हैं इसकी पूरी आप पढ़ाकू की जानी चाहिए। क्योंकि अब मरवादियों को यदि हम पहलू मौके पर ही मुसने का मौका मिल गया तो जनता का क्रायस पर से बिरबास उठ जाएगा। स्वाधीनता के संघर्ष में करोड़ों साथ आ प्राण निछावर करने पर मानुर हैं उनकी आस्था उठ जाएगी।—यह सब क्या है ?

—तो आपके ठाकुर माहब यह क्यों साबने हैं कि यह उन पर ही भिना गया है।

—बाहू जनाब ! आप बिन-रान उनके पीछे हाथ पाकर पड़े रहे उनक मुंह स मंत्रीद का कौर छिनबा दें ता भी वे बुध नहीं माने हैं न ?

—ना क्या वे मंत्री नहीं बनाये जा रहे हैं।

—जी नहीं।

—रामनेवाबन बाबू ! आपको इनको प्रसन्नता होनी चाहिए।

—किस बात की ? क्या हम बात की कि ठाकुर माहब जन्म ही यह पत्र और प्रेम दोनों ही बन्द करवा देंगे ?

—मन्ना यह कैसे हो सकता है ?

—सँसे नहीं हो सकता है ? उनक माने ठाकुर मधुदत्त सिंह डी० आई० जी० पुत्रिय हैं। किसी भी पाप में आपक साथ जनाब ! मने इन पत्र और प्रेम सबको बन्द कर सकत हैं।

—तब तो हमारी मन्त्रिक विजय हारवी। यह मिड हा जाग्या कि य जमींदार साथ पूँजीपति बतमा के रूप पर नहीं सरदार के रूप पर बना बने हुए हैं।

—अब आपकी मन्त्रिक विजय आए भाइ में। राष्ट्रियों के साथ पढ़ जाँये हमार साथ। और आपको क्या ? डूँगा तो मैं न ? ना बाबा हमारी तो किसी

से छड़ाई नहीं है। 'राजनाथ' मीने लीडरी करने के लिए नहीं निबाला है साहब ।

—मैं आपका मतलब नहीं समझा ।

—मठलब साफ है धीबर बाबू । मैं ठाकुर साहब को नाराज कर अपने प्रेस में लाया नहीं बलबाना चाहता । आप क्रान्तिकारी हैं जानत हुए भी मैंने आपके साथ मरमममाहत्त करती है । यह आप सोच लीजिए कि 'दखना' किसीका विरोध नहीं करेगा ।

धीबर बाबू का गुम्मा तो बहुत आया कि वे अभी सब फेंक-काँच कर बस में लेकिन जाने क्या सोच कर चुप हो गये तामब एक कारण यह भी रहा हो कि उह महीने का बेतन एमपलायम बाबू अपने फर्मे में जिये रहते थे ।

धीपर बाबू का क्याल था कि उन्हें 'गंगानार' छात्र देना पड़ेगा लेकिन वे यह नहीं समझे पा रहे थे कि रामलालबन बाबू जाये दिन जो इस तरह की बुद्धिजीवी दिया करते थे उसमें उनके अनुर उद्गम्य पूरे होंगे थे। एक तो यही कि नहीं धीपर बाबू अपने घर में ही कुछ न करें। दूसरे, धीपर बाबू नहीं भारती बनाने की मांग न करें। तीसरे यह कि धीपर बाबू हमला करके मंद बन कर रहे। चौथे यह कि ऐस प्रकृतते रहन न धीपर बाबू पोंदे दिन ठाकुर सबल बीर मायापम मिह के बार में चुप रहेंगे और उन्हें समय-समय पर ठाकुर साहब से पैसा ऐंडने का मिलना रहेगा। रामलालबन बाबू ठाकुर साहब की सारी पालपट्टी जानते थे। किस प्रकार ठाकुर साहब अपनी जमीनगी में आर पुसुम करबात रहन हैं। किस प्रकार पुणे पाउ रहने हैं। किस प्रकार गरीबी बचायी खासमी हैं तथा बुद्धिजीवी भी। धीपर बाबू जब हल न बाहर हान लान ता एक यड़ी रकम ठाकुर साहब से लेर कर वे धीपर बाबू का पुइक देन। ठाकुर साहब ने बर् बार खापर बाबू को दिहात बन के भिर कता ना गूड ही कतु दिया कि—अर साहब उर्योंन भी "गंगानार" में पैसा लगाना है मरे

हिस्मवार हूँ, कैसे निकाल सकता हूँ ?—कैबिन असनी बात यह थी कि इतने कम बेतन में इतनी मेहनत वाला इंसान आत्मी नहीं मिल सकता था। दिल में जानने थे कि आदमी बिना के साथ-साथ आरवा करन एतता है। 'संग मा' भी मारी लोकप्रियता थीपर बाबू के कारण थी और यह बात रामसेनावन वाच ग्य बच्छी तरह समझते थे। इस थीबर बाबू की बेसाग बातों टिप्पणियों एबम सम्पादकों से कमी कामुन कोई कठिनाई या सफ़ती थी और उगहें यही एकमात्र बात सतायी थी। ककित थीपर बाबू को अपने पंजे में कर रखने के लिए हमना वह लोगों से यही प्रचार करते कि थीबर बाबू कान्तिकारी हैं। ताकि मतबन हाने पर वे बड़ी दूरी बगइ काम न कर सकें।

द्वितीय किबपुष्ट में जब अंग्रेजों ने भारत को भी पसीटा ठो काँप्रस से इसका विरोध किया। काँप्रिस व इस विरोध को 'संगनाद' में समझौताकारी विरोध कहा क्योंकि काँप्रिस मुक्त वकीलों अमीबारों तथा बड़े सगों की संभा है। इन वकीलों को क्या मायुम कि किस प्रकार आर-जबरबस्ती करके वेग के मारे अगळे नबबवान रोगट बनारर मुरीप की इस सफ़ाई में ईबन की भाँति सोंक देन के लिए भेजे जा रहे हैं। अगजा ने इस देग की जनता का विश्वास पूरी तरह गो दिया है इसलिये व अब इस देग के सामक नहीं हैं। देस में इस समय जाग लगी हुई थी। इस प्रस पर काँप्रिस मंत्रिमंडलों न स्थापन के दिया था थीर बम्बई में जोरों पर काँप्रिस-अभिवेगन की तयारियाँ हो रहीं थी। पूरे राष्ट्रीय जीवन में रीत भयवड मची हुई थी। देस की आँवें गाँधीजी पर लगी थी। अपने पाँच अगल के अंक में "संगनाद" न वग के नेताओं से अपील की थी कि वे अंग्रेजों के साथ किमी भी तरह का परि सहयोग करते हैं ता वह देग व जनता व साथ गहरापी होवी क्योंकि अंग्रेजों के साथ सहयोग का अर्थ होगा इन मायात्मकारियों के मुँह में अपने देग के नोजबाना का झोंटना। और ९ अगल की गबरे रेडियो पर रीन ही समाचार आया कि बम्बई में "भारत-छोड़ो" का नारा दिया गया और मारनेता एन साथ गबडु लिये गये पूरे देस में तहलका मच गया। 'संगनाद' कार्यालय में बैठे हुए व और रामसेनावन बाबू दोनों ही रेडियो सुन रहे थे। पौड़ी देर में उगहें बागुमन्म में अजीब गौर गुतासी पड़ने लगा। थीपर बाबू पर जानने के लिए कि थीड में सगों की क्या प्रतिक्रिया

हृद रिक्ता स्फुर बसे । रास्ते भर लोगों की भीड़ मड़न पर काव और नन में डूबी घुम रही थी । धनी से सुष्ठानाछा ही पहुँच होंगे कि कोलबानी की तरफ से पुमिम की सारियों की दीह चारों तरफ के लिए मुरु हुई । चीन तक पहुँचते-पहुँचते तक तो आदमियों की भीड़ क मारे रास्ता नहीं खानी पा । रिक्ते म उतर पान खाया और जिम समय चीक पहुँचे भीड़ मारे लमाती एकत्र हो रही थी !!

—भारत-छोड़ो !!

—भारत-माता की जय !!

—महीं रचना नहीं रचना

मरकार जाकिम नहीं रचना !!

महीं रचना नहीं रचना

यह नूरु बन्दर नहीं रचना !!

—इस्फाब-बिनाबाद !!

—महात्मा गाँधी की जय !!

अनन जनममूद बड़ रहा पा । रिमाहीन । अमरु परां की आबाज घुटी-घुनी सी उठ रही थी । साबों मर-नारी दक्के-मुड़े स्वन्तो बन्धु व्यापारी ठेकेदार-जन ऐतिहासिक अभिप्यक्ति की महान गक्ति-अनना—पानी में पावान में कुग्ते में बमोज में नवे मिर, दुपम्बी में पान मापे नियरे पाने—दम मापे पुम्न में मुद्रिठपां तान बड़ रही थी । वहाँ किमर, चीन जानना पा ? चीन की कागबाली के सामन पुमिम की दुबड़ियां तैयार सड़ी थी । अतन मिरों के बीच राष्ट्रीय तिरंथा चीम-चीमे जस रहा पा । लोगों के मड बँते जा रह से—

—भारत-छोड़ो !!

—दूर हने एधुमिया बाला

हिन्दुस्तान हमारा है !!

—भारत-माता की जय !!

पुक्ति की भीटियां । जन ममूद का गीन मय कष्ट । माग की मरु उने हण मारे । नबुस्वहीन एतिहासिक बन्ध । रिमाहीन मगीत ।

—भारत-माता की जय !!

और देगते-देगते विस्फटागियां । सानी चार । भीड़ । भाग-दौ । राष्ट्रीय शम्भा ।

—हिन्दुस्तान हमारा है ।

यह पब बन्धु का ५४८

—भारत-छाड़ी ॥

—भारत माता की जय ॥

—महामा गांधी की जय ॥

—इन्कलाब जिन्दाबाद ॥

पूरा देश वेकते-बेकते एक बड़ा सा कारामार बन गया। हज़ारों भादमी प्रतिदिन गिरफ्तार होकर लगे। जैसे-जैसे गिरफ्तारी जाती, आन्दोलन की उबाला कम ही जैसे अधिक फसती जाती। इतना बड़ा उबार हो जाएगा यह किसी का कल्पना नहीं थी। गाँव-गाँव तक आन्दोलन की चिनमारी फैल गयी थी। अद्यपि कोई नेता हम महान् भाग को परिपालित नहीं कर रहा था लेकिन लगता था कि जिस ढंग से यह व्यापक हो रहा था वह इस बात का प्रमाण था कि यह आन्दोलन पूर्ण नियोजित था। कोल-कोले से कमन्स जवयुवक अपने प्राणों का हान करके के लिए स्त्रियों कापडा से बाहर निकल भाये और इस ऐतिहासिक उबार में समर्पित हो गये। क्या कि जैस देग मुक्त होल के लिए बटियड है। बड़े व्यापक पैमान पर सरकारी इमारतों चीरों का मुटा जात सया जस्ताया जान सया। घाने रोक ताग टाक पुम मष्ट किये जाने लगे। मम ४२ का यह आन्दोलन जामिबाग हिमा तथा कंघनी अहिंसात्मक जनबन्ध होतो क एबीकरण का सम्मिलित स्वरूप था। अद्यपि मता के पर हमला क निरा उगाड़ गये। यह आन्दोलन मध्य वर्ग के आश्रय की अदि

व्यक्ति या तब मध्यवर्ग ही उसका नेतृत्व कर रहा था। इतने बड़े ज्वार को मुट्टी भर पुलिस या फौज से रोकना कठिन था। एक हिन्दार उठनी और एक जिन्ना मुकग उठना। और हम प्रकार जान्दोक्तन अनन्त सहरों में हिन्दों से रहा था। बकिम्मा बिहार में एक प्रकार से अंग्रेजी सत्ता का प्रभुत्व गल्ट हो गया था। हमन गिरफ्तारियों से घामक वर्ग मध्य वर्ग एवम निम्न मध्य वर्ग की हम ऐतिहासिक अभिव्यक्ति को बचक होने पर तुका हुआ था। राजनीति कायदेस के हाबां से निकल कर अतता के हापों में जा गयी थी और इसलिये अंग्रेज सत्ता काय उठी थी। घामक वर्ग को यह मसीमांति बिबित हो चुका था कि इस वेध का बचक उरुष वर्ग ही ऐसा है जिससे समझीता किया जा सकता है और क्रिस-मिसान' आदि पहले पों ही सौ' मये के अर उरुहें कीन सा मया कप दिया जाए, यही घामकों के नामने प्रल था। अंग्रेज सरकार इन देस से उर मयी थी सकिन बाबिती नेता उसे अपने निकट कने।

जीवन म संभवतः कमी इतना उरसाह घक्ति बिदबाध थीबर बाबू को नहीं अनभव हुआ जितना कि इन दिनों हुआ रहा था। वे पूरे बनारस में काणों के माय के बीच घूमने हुए अपार घक्ति अनुभव कर रहे थे। उरुहें लगा कि अंग्रेजों का अक्षिप्रय घामन-सम्भ सदा के लिए अरमय कर दूट पड़ना चाह रहा है। और जिस समय वे तीसरे प्रहर 'लखना' के कामाजय पहुँचे ता मयी में ही पानवाले ने बताया कि घीमर बाबू उबर न पाइए प्रेस में ताका सग गया है पुलिस बेगी कुर्द है। भाषिए, पुलिस आपकी सलाप में है। एक घाम की गमस न सक् कि क्या करें? क्याकि प्रेस पर ताका सग जाने का अर्थ हुआ जैसे किसी ने मँह सी दिया हा।

ता अर उरुहें क्या करना चाहिए ?

क्या दुसर्गों की प्राति गिरफ्तार हाकर वेक बन जाए या फिर—गांधीजी की यह बात मने कि अरु में गिरफ्तार होकर निकिय हा जान से नहीं बचजा है कि बाहर रह कर काम करें।

सकिन कीन सा काम ?

क्या गांधीजी ने उसी काम की ओर संकेत किया है जो वग का मबमुबक कर रग है? गुर्दा का ताड़ा जाना तागों का काटा जाना कामा का जकाया जाना?

—क्या गांधीजी का मकेन—किर भहिमा ? वे अलपट थे।



वे बूँदीबाग के एक बुर्ज में बैठे हुए सोच रहे थे कि क्या करें ? यदि गिरफ्तारी से आजादी आती है तो गांधी प्रतीक रूप में जेल जा चुके थे । देश के नीरवस्था तथा आगोलों महक में कैद थे । और, क्या आज सारा देश कायनागार नहीं है ? ठक बाहर रह कर ही काम करना चाहिए ।

लेकिन कौन सा काम ?

या इतिहास की माँग है वह काम ? बाह्र बह्र कूट हो पुरु ताड़ना हा पाने जमाना हा ? हने सबको इतिहास में समर्पित होना है । 'गंजना' ता अब नहीं निकाल जा सकता । यदि लुक आम रह कर काम किया जाएगा ता सरकार उन्हें पीरल गिरफ्तार करेगी । मुकदमे का नाटक करेगी । उनक लका क लिए, तयाकधिन कान्तिवारी हाने के नाते उन्हें बड़ी स बड़ी सजा गी क्योंकि सरकार के विरुद्ध काफ़ी कठोर सिखा गया था । इसलिए ज्मा अचछा होगा कि या मध्य बग की बीबनी शक्ति इस महान आन्दोलन को छाने-छान रूप में संघामित करके महान हो रही है उमी में मन्निष्ठ हुआ जाए ।

जिम ठेकी मे उबार उगा दमन उममे भी ठेकी स बड़ा । सरकार यह बात जान लकी थी कि इस सबके पीछे कोई व्यवस्थित नियोजित केन्द्रीय शक्ति नहीं थी इसलिए इनमें भावेग हाने हुए भी दीर्घकाल तक कम करने की क्षमता नहीं थी । सरकार ने अत्यन्त निर्दय होकर सभी संदिग्ध व्यक्तियों का जलों में डूब दिया । सत्रकठ इतनी संख्या में गिरफ्तारियाँ किमी भी देश में किमी भी आन्दोलन में नहीं हुई होगी । सम्भव इसी का तनीका हुआ कि आन्दोलन एक पुच्छक तारे की भाँति उगा दिया जमछा और बिराज अंधकार उमें बहा करने में सफल हुआ । पछपि अंधकार के दान तथा अनें सभी मुसम मज । अंधकार का उस पुच्छक को मुक्त करना पड़ा केचित्त घुमरेतु का म्बना बान चुका था ।

यहाँ से वहाँ भीपर बाबू मारे-मारे बूम रहे थे। देश के सारे मध्यवर्ग ने बिद्रोह कर रखा था। पुस्त उड़ाये जा रहे थे। रेल की पटरियाँ जलाड़ी जा रही थीं। पाने जमाये जा रहे थे। सरकारी दफ्तों में "पूज्य अराजकता" फैल गयी थी। वे मध्यवर्ग तो थे नहीं वो बिना किसी आस्था के भी विरवास के साथ यह सब कार्य करते। उनके सामने क्रांति का 'आज' न हाथ, जीवन का कटु बरत उपस्थित हा जाता। कम जब ज्वार-जल भाटा बन जाएगा तब क्या होगा ? सरकार इस क्रांति को दमन करने में लगी थी। पूरे पूरे मौकों पर, मुहूर्तों पर, कुटुम्बा पर सामूहिक-कर बमूल कर रही थी। मुठ की महँवाई यों ही लोगों का मारे बाध रही थी उस पर अंग्रेजी राज ने इस नृसंस दमन ने सामान्य जन जीवन का सफ़ाार डाला। पूरा देश अंग्रेजों को बिद्रोही सम रहा था। भीपर बाबू बनारस लौट आये। 'अस्सी' वाले अपने मठ पर मामूम हुआ कि पुष्पित उनका सारा मामाम उठा कर ले गयी। मठ में छुप कर रहने का उपाय ही नहीं था। छह महीने बकिया गारागपुर रह कर लौटने के बाद भी बनारस लौटना असंभव था। उन्होंने दो एक बार तलाश करवाया कि रामलोकानन बाबू और 'मंगलदा' का ही कुछ पता चले। 'मंगलदा' आफिम और प्रेस पर तो ताला पड़ा हुआ था तथा रामलोकानन बाबू को 'मंगलदा' के प्रकाशक होने के नाते दो साल की सजा तथा दो हजार रुपये जुर्माना हुआ था। भीपर बाबू के सामने गबाल था कि वे अब क्या करें ? किस प्रेम बाल के यहाँ जाते कि कुछ काम मिल जाए दूसरे दिन वही प्रेम बाला करने के बाद भी सहाते में पुसठे के साथ ही बीन पड़ता कि नहीं साहब आप जैनों के लिए हमारे यहाँ कोई काम नहीं है। असल में हुला यह था कि पुष्पित बालों ने इस तरह के सारे कार्यों के पीछे अपने जासूस लगा रखे ताकि उन्हें वही काम न मिल सके। भीपर बाबू सफ़ान बरसते बरसते भी परमान हा गये थे। सफ़ान बात तक पर देने में जानाकारी करते कि नहीं बाबू जी पुष्पित हूँ परमान बरेगी। बिना मौजूदी और बिना सफ़ान के रहना असम्भव हा रहा था। जलान-पाउण्ड गहन करीब एक बरस हो रहा था। मात्र इसक यहाँ था किया तो बस उसके बहोता लिया। सफ़ान बरस हा एसा बनना ? रात-बैरात यहाँ-वहाँ मा सिने। फ़िल्म नेट के रागी भना इतनी जामु में बरस तक ऐसे चल सफ़ाना था।

बाब-बाब के बिस्वनाथ यन्त्री में एक मारबाड़ी पाठशाळा के पीछे वाले कमरे में बिन रात बन्द रह कर अनुबाद करने में लगे हुए थे। जिस तरह स भीबर बाबू ने गीकरियों की यहाँ-वहाँ पूछ-टाछ की थी उसने पुलिस को सुराप मित्र गया था कि इसी शहर में हैं। जहाँ-वहाँ भी पुलिस का पता बसता कि यहाँ रहते हैं या रहते थे या यहाँ गीकरी सोबन आवे थे—मुक्तिम समाग कर जाती। बाय गिन मकान बबसले छुपते भीबर बाबू भासे परेगान हो चुके थे। अगत्या उन्हें इस गली में पीछे वाला यह कमरा मिला। कमरा क्या था एक दम बाल-कोठरी थी। दिन में भी अँबेरा रहता। नीचे छिवाला था और बायीं तरफ पाठशाळा लगा करती थी। जब काफ़ी रात हा जानी तो वे थोड़े टहकने निकलते। महीनों हो गये थे जन्मुक्त होकर घूमने को। जब घूमने निकलते तो अधिकतर दूकानें बन्द हो गयीं रहनीं। 'बि-बनाथ यन्त्री' के मुहाने पर बो-बार हलबाइयों की दूकानें उस समय भी खुली होतीं। 'दगा-बमेब' वाली सड़क पर साँड़ घुमाकी करते या तो टहकते होते या फिर नन्दी मुत्रा में "भुग्" लगाये बैठे होते। 'दगा-बमेब' घाट सुनसान होता। दिन में जा सड़क-बाजार बाइमियों से भरे रहते हैं तब तब निकट लगता है लेकिन रात में निर्जन होना तो कैसा कैसा मा अँबा-अँबा मा सयना। अनेक बार तो मोह हो जाता कि जलें जरा रचना क पर की तरफ जाकर देखा जाए। किन्ती बार मन में आता कि क्या इन्गु दीदी ने कभी यहाँ ऐसे ही बैठ हा नकनी है? जाने कब क यहाँ बागीबान किया करती थीं। पना नहीं अब वे कहाँ होंगी?

ऐसे ही बिगत के प्रति मोह में डूबे थोड़ी देर तक पार्सों पर बैठे छात्री ठपरी इबा में सोये रहने। कैम तारा जीवन बिना कुछ खजन या प्राप्ति के बीत गया? इन्गु दीदी न सजर नन ६२ के आन्दोलन नन फँक जीवन में कौन कौन भी म्पिनियाँ आयीं। वे क्या करने तो क्या ही सयना था। और क्या किया तो क्या हो गये—अब समूबा जीवन अनुगत भाँगों के आगे घूम जाना। आने घर-परिबार के प्रति जो उन्मा था निवेदना बग्नी उन से कभी दमा नहा कर पाते थे। क्या घर वाले सगा माँ बाबू कभी मोच सकेने कि भीबर जीवन भर बिगत ही रहे कना उनके मन में बिगना म्पत्र समस्य अब सकेने प्रति रहा है? नया अपनी बिगना को वे कैम बँटने? और कब तक? वे तो जीवन भर अबस ही बने रहे।

कमी-कमी वे सरेरे वाली बिबनापकी की आखी में पहुँच जाते और बच्चों बैठे रहते। प्रायः वहाँ बैठकर गायत्री का पुरस्कार किया करते। गिरती के ही भक्त उस समय वहाँ होते। बड़े-बड़े पाँची के पड़ों में पात्रों में मगाजल लाया जाता और बिबनापकी का अभिषेक किया जाता। दो-एक बार जब वे गये तो बेजा कि कई साठ वर्ष की एक महिला मौकरानी के साथ मिरप आखी के समय जाती है तथा पुजारी लोप— "रानी साब जब आप पूजन कर सें" कहकर अन्दर मन्दिर में के जात और खपाठ के साथ वे सांगोपांग पूजन करतीं। बेलने में यौग वर्ष की बूझा कही जाने वाली वह महिला पुजारियों को ब्राह्मणों को बान शिक्षा देकर तुरन्त जाती जाती। मन्दिर के मोपुर पर ही पास्की होती और वह उसमें बैठकर जाती जाती। लपटा था कि जैसे महिला बहुत बड़े घर की स्त्री थी। बंगाकी वह हो नहीं सकती थी। जिस साब मलमल के प्रबल परिवेश में होती उससे यही पता चलता था कि बिबना है। रंग मैपामियों जैसे साफ बा लेकिन मारु-मनसा उत्तर भारत का न कम कर दक्षिण भारत के अधिक भिक्त का लता।

पता नहीं किमलिए जब वे मिरप मंदिर जाने लगे। उस महिला ने भी दो-एक बार श्रीधर बाबू का देना अवश्य। समबत जिज्ञासा से बेलन वाले इस भक्ति को दृष्ट हाकर ही कितुणा के भाव से उन्हीने देला। एक दिन जिस समय वे पूजन करवा रही थीं श्रीधर बाबू भी पास ही में लड़े उस समय पुजारियों के साथ मन में बुदबुदात हुए दुहरा रहे थे—

—अबमानां सोरु किमवय बन्तापि जगतः-

कि तभी महिला ने अपनी मौकरानी से बिबनापत्र सेंते हुए कुछ कहा। श्रीधर बाबू चकि कि वह ता मराठी थी। तो यह महिला महाराष्ट्रीय है? पूजन समाप्त हुआ। पास्की जाती गयी। देर तक साचते रहे कि यह महिला कौन है? किनी बड़े घर की है। वाली में अनेक महाराष्ट्रीय परिवार रहते हैं। इस महिला का देगकर अत्यन्त दान्ति होती है मन में।

बो-नाम दिन व गवरे की पूजा में न जा गये। अनुवाद करते रात में काफी देर हा जानी बुन्दरे, रात भर पट में बर्ब हल सगता। वैसे की कमी थी इसलिए अनुवाद जन्म पूग करना था। मात्र भी जब वे पहुँचे तो पास्की 'पक्के-मुहाल' की

तरफ छोटी आ रही थी। कुछ दूर हो गयी थी। दगल कर जल्दी से परिक्रमा करा गोपुर की साँकल को बाँधों से छुटा वे बाहर निकल ही रहे थे कि किसी ने पुकारा

—अरा सुनिए पंदिगी !

धीधर बाबू लौटे। बोले

—बहिए।

—आपको खपाठ माता है ?

—जी हाँ माता लो है। क्यों क्या बात है ?

बातें करने वाला पुजारी या बाबा

—असल में कल शिवरात्रि है न कल सो खपाठियों की भाव्यकता है।

—सकिन मैं इस प्रकार का पूजावृत्ति वाला ब्राह्मण नहीं हूँ।

—कौनू बात नहीं। बात दरमसल ई है कि उ जीवन मबेरे रानी साहिब भाठी है न कल शिवरात्रि के दिन सो ब्राह्मणों का भाजन दान बधिया देना चाहती है।

—वहाँ की रानी है ?

—मुनदे है पूना की है।

—पूना की ? क्या नाम है।

—अब नाम ता नाहीं माण्डुम हयका।

—क्या बहुत दिनों से है यहाँ ?

—नाही बीच-बीच में आनी रहती है। इस बार ता काठी बरगों धार आयी है। धीधर बाबू ने सामने जब बिबली कौप गयी। क्या यह समय था कि ये दूनु पीरी ही हों ? संभवतः चापोंस बर पूब तिम दगा था क्या यह बही बीरी हा मकनी है ?

दुमरे दिन बिन्दनाम जी के प्रांगण में ब्राह्मण बँड खगल कर रहे थे। धीधर बाबू एक तरफ बैठ बराबर पहुँचाने की बेपटा कर रहे थे। मंदिर में आत्र अवेष्टा हुन गामी भीड़ थी। मंगमरकर के पत्र पर जड़े रुनों पर मीरहों आभियों क पंग—आने हनु, जाते हुए परिक्रमा करते हुए दिग रह थे। बड़ा पटा मनबल्ल धर रहा था। आरणी के समय बिगत बनिनी दार-नील घूमरी हारी और मय ब न गिद-मुनि हीनी। धीधर बाबू न गया कि एक बार काल में ध्यानम्य बनी महिषा बीगी हई थी। आत्र ने उस पत्रबानन की पूरी बेपटा कर हने थे। वे आत्रम्य हाते आ रहे थे कि यह उनरी दूनु पीरी ही है। पाठ मधाय हुवा। मंदिर क

बाहर सामने एक प्रांगण में खीर-सूड़ी का प्रबंध था। ब्रह्मजोम के उपरान्त यान दलितवा भी गयी। सारा सेने-बेने का काम एक पुरुष कर रहा था जो निश्चय ही महापट्टीय था। धीवर बाबू बहुत देर तक सोचते रहे कि किस प्रकार पूछें कि आप कौन हैं? इस प्रश्न पर वे क्या सोच सकती हैं? माल छोड़ी ही न हुई तो? और सब तक सब सोच जा चुके थे। प्रांगण में केवल धीवर बाबू को लड़े देखकर उस महिला ने उस पुरुष से मरठो में कुछ कहा और उस पुरुष ने पूछा,  
—पंडितजी! आपको दक्षिणा आदि तो मिल गयी न?

धीवर बाबू ने प्रश्न सुना ही नहीं वे उस महिला को ही घूरने में लगे थे। वे थोड़े आगे बढ़े और एकदम आगे बढ़ आये। वह महिला कुछ चौंकी। सरपंचाजी भी और दिग्भित्त अनुविद्या अनुभव करते हुए उस पुरुष की ओर देखने लगे। वह पुरुष कुछ बोलने को ही था कि वे बोले  
—क्या मैं जान सकता हूँ कि आप कौन हैं?

—जी?

—क्या आप ?

—आप किसे चाहते हैं?

वह प्रश्न हम बार उस पुरुष ने किया। धीवर बाबू ने फिर उसी तरह पूछा,

—क्या आप इन्दु-दीदी हैं?

वह महिला एकदम ऐसी हो गयी जैसे हर्षिगारका गच्छ हो। हवा का ऐसा झोंका आया कि नि गच्छ तारे फूल नील चू पड़े। वे अपने में झटने लगीं जैसे अनिष्ठ बन ही लो जाएँगी। वह सचमुच ही इन्दु-दीदी थीं।

—कौन धीवर?

—हाँ दीदी।

दोनों जगह-बिगल हो गये। दोनों बिघुतबेग से बिगल में लौटें जा रहे थे।

वे ठहरी नहीं चके जा रहे थे। मत्तम मन्दिर के पास वहीं इन्दु-दीदी की हबेनी है। मन में वही बिचार आ रहा था कि क्या इन्दु-दीदी भी हम बीच काती में

ही थी ? क्या यह अच्छा न होता कि बहुत पूर्व ही मानुस हो गया होता कि सीदी बही पर है ? तो तो क्या होता ? और पूछते हुए वे हबेनी के सामने पहुँचे । बड़ा सा मध्ययुगीन दरवाजा खुला हुआ था जिसके ठीक सामने सँसरी द्वार खोला था । लोपबाप आ-जा रहे थे । वे पछोनेय में थे कि किस नाम से पूछें सभी बही व्यक्ति दिखायी दिया जो कि भोज के समय सीदी के पास खड़ा था । महासप्टीय उच्छ्वारण में हिन्दी बोल रहा था

—बाहए, भीतर कू चले बाहए । मानुभी आप ही की प्रतीक्षा कर रही हैं ।

और वह व्यक्ति भीतर लिबा के चला । सँसरी वाली द्वार के बाँधी तरफ़ कर बाजा था और सामने प्रसन्न चिह्ने पत्थरों का बाँधक । जिसके तीनों ओर धमा वाला बारासबा । बारासदे से छटे डेर सारे कमरे थे । अविभांग बन्य थे । दो-एक लुके हुए थे । एक बड़े से कमरे में खँदनी माव-अचिये आदि लगे थे । फर्शों में पत्थरों पर दो-एक मूर्तियाँ लोप काम कर रहे थे । फ़ानूब और पूरबाग़ नाम कमरों में लिपटे हुए थे । बाँधक के ठीक ऊपर साहे का बड़ा सा जँदमा यहाँ से यहाँ तक बना था अत्यन्त बेमक का अनुभव हो रहा था । व्यक्ति उन्हें लेकर सामने बाँध कीने से ऊपर लिबा के यमा । ऊपर भी बैना ही चौकार बाउमग तथा कमरे । सब कुछ प्रसन्न खुला तथा रूप-भय लय रहा था । एक बड़े कमरे में व्यक्ति ने बिना दिया और बोला

—आप बीटिया से मानुभी को लबर दे जाईं ।

बई मायिक चिब बिचित थे । कुछ संलचिब भी थे । पुछने दग का माहा मंद पड़ा था । सामन कोने में एक दीवान था जिस पर बापम्बर बिछा था । कमरे में एनदम निम्नत्व गालि थी । लकड़ी की छत्र तैल के कारण चमक रही थी । वह व्यक्ति लीग आया और बोला

—मानुभी ने आपको बही अपने कमरे में ही बुलाया है । बलिए ।

और वे भोज कर कमरों की भूत-भूतियाँ में होंकर चमने लगे । बागामने से लटे जँदम से नीचे देनन पर कूर् का आमाज होना । नीच लोप आ-जा रहे थे । इतनी बार इन मकान में भूमना पड़ा कि निमाग़म हो गया । वे अब एक कमरे में पहुँच जो अनलाइन अत्यन्त गाला था । कमरे में वे भूत-दीव की संघ आ रही थी । अमवान का बिनाम मिशामन बना था जिस पर गिबलिय स्थापित था । गंधारी की छात्री मिट्टी एते हुई थी इनके शरट था कि पादिब की पूजा होनेनी होगी । एक बड़ी सी चौकी पर बापम्बर यहाँ भी बिछा था । इसमें स्पष्ट था कि जहाँ भी सीनी आकर बीटनी है बही बापम्बर ही बिछना है । बड़ी ईपानु गालि थी ।

इस कमरे स सटा एक प्रधान बाराजा बा । ब्यक्ति उम्हें उभर ही ले गया । परी हुटकर जैसे ही बे लोय बाराजे में पहुँचि एक तुम्बर सी चौकी पर अत्यन्त प्रबल साद परिवेश में बीदी बीठी थी उस ब्यक्ति से बोली

—जता काही काम नाही माह । तुमी जाऊ सकत ।

और ब्यक्ति शिष्टतापूर्वक विनम्रित होकर धीबर बाबू का छोड़कर चला गया ।  
—धीबर !

और धीबर ने देखा कि छत्र ही यह तो उसी की दीदी है । एह और बाबू अबदाय घटस गयी है लेकिन बे बुझाती बाँधे आज भी बँसी ही बाकिदा-मुसम थी । धीबर बाबू तक भी लड़ पे । दीदी उम्हें इत तरह देख रही थी जैसे कितने दिनों नहीं देखा था उसकी पूर्ति कर सें । जान कितना स्नेह विज्ञासा आश्चर्य सब शकक रहा था ।

—तुम बिस्फुल कैसे ही हो धीबर !

—क्या ?

—और क्या कहा नहीं जाया तो बैठोमे भी नहीं ।

और धीबर सामने रबी कर्मी पर बैठ गये । बाराजे से बंगाली लिख रही थी । मीपाकी मंदिर का दिवार बूरी पर दिख रहा था । मीथ कर सी नाबें बँधी रिस्त रही थी ।

—तुम्हें कितना स्वस्थ होना चाहिए जतने नहीं हो क्या बीमार हो ?

—नहीं तो ।

—आँसों के नीचे झुर्रियाँ आ गयीं अभी सें ।

—झुर्रियाँ बच तक नहीं आएँगी बीबी ?

—जमी जमर ही कितनी हुई होगी ? कितना तुमसे मिलना चाहती थी धीबर ! कितने दिन हा गये न ?

—हाँ और क्या लगभग आसीन बर्ये ।

—तूरी आयु । बापी में तुम कैसे ?

—बला थाया ।

—बैमे कई बार तुम्हें देना बिस्वनाथ जी के मन्दिर में । मच बहूँ दो-एक बार जब तुम बुरटे बे तो बड़ा बुरा लगता था । लेकिन देगो न जाने गोमे छाने माई को कैसे पाया ? मगबाल में कैसा भिन्नाया । इस बार से पाँच बरस के बाद आ गयी हूँ बापी जी । अरे हाँ एह बनावो बहू बहो है ? कितने बर्ये है ? यदा बच गे हा ? घर पर कौन-कौन है ?



- यहाँ ता मकेमा ही हूँ। घर पर ममी कोई है। मगता है न कि बिगन के मूम  
 कितनी दूर चले गये हैं।
- मगता है बीबन में मूम देया-मुमा है कि बिपन इतनी दूर मगता है  
 है म ?
- क्यों दीदी ! मानको नहीं मगता ?
- रुठ घाम छो नहीं। बबन में मुम्हारे साथ का बिगन न हो ता मब मानो  
 बम मही मगता है कि माममात्र का म्हाह हुआ इनके बाद तो बम बिपन  
 ही हुई। यन तीम-तीनीय बरम पना मही थीबर ! उनकाम-तीन में जाने मही  
 गये।
- नीदी ! पना मही मान जान केमा-केमा मय रहा है। क्या मामात्र बाक बारने  
 मा मही मपता ?
- बेबम मगने भर मे ही कोई बीब हो बाटे ही जानी है ? बामी में मुम बना  
 बारने हा ?
- रुठ घाम मही।
- रुठ घाम मही ?
- हाँ और बना ?
- मुम्हें देनकर मगता मही छि मुम बिनेर बरम हा।
- तो बना मान बरम मयी है ?
- ह मा-बान बना मपा मगा है मुम्हने ?  
 दानों मन्पुष्ट मुमकरा रहे थ।

एक दिन—उक दिन।

उमके बार—बनेक दिन।

इतु दीदी और भाषण एन-आगत की मामामों को मन्म मुम्हगत हा। जानने  
 बाने भी कि जा मन्वीन म्वा है बर मेमा रीउ कर बना म्वा है कि बनी मही  
 एगेता या मगता। इतु माने दिन के म्वा म्पिक मही एउ म्वा। ता भी ए

पायी वह ऐसा नहीं हुआ कि जिसे नारी जब पा जाती है तो प्रायः जीवन भर बान्धे रहती है। म्याहू क दूमरे दिन ही वह समझ पायी कि उसे बिबहा होना ही है। म्याहू का छल दो बरस से अधिक नहीं चला भीबर !—और फिर उसके बाद सामन्ती घरों की अपनी नीचताएँ जोड़-तोड़ उठा-मटक काँछन-ग्रहण !। क्या करोगे सुनकर उसे ? सब बीठ गया रे सब उसका स्मरण क्या करना ? बाका माहू ने आत्महत्या कर ली। बामन ने एक प्रकार से बाका साहब से विद्रोह कर रखा था। सब छिन्न-भिन्न हो गया भीबर ! अपने साथ भ जितना ही सम्भन कम करना चाहती थी उतना ही बोझ बढ़ता जाता था। साथ में चार महीने ही काटी में रह पाती और बाकी आठ महीने उठनी बड़ी जमींदारी की साम्-सम्हाल करनी हाँसी थी। मुना बामन एक दिन अपनी बन्धुके साक कर रहा था कहते हैं नरी भी। जाने कैसे बोड़ा बबा और बैसते-देपते पोली कमपटी में लगी और तुम्ह उसका प्राणान्त हो गया। मेरे वीं हाथ ही उड़ गये। बामन को उसकी बिलामयी पत्नी से एक बड़का है—जान्द। पहले तो वह जान्द को देने के लिए राजी ही नहीं थी। वह उस अपन साथ से जाना चाहती थी। बड़ी मुश्किल से वह मानी। मेरे पास भी कोई बाक-बचबा नहीं था। उस जान्द को मैंने भी अपना उत्तराधिकारी बना दिया। अपने कसबे की सारी जामशार बेच भी भीबर ! वह काठी बाग सब बेच दिये। बेचारा जान्द पुना और वहाँ की दो-दो जायदारों के से सम्हाल पाता न ? जान्द एकदम अपनी माँ पर पड़ा है अंग्रेज लमता है एकदम। तुमन तो खीर देना ही नहीं है उसे। अब तो वह तीस बरस को हाने जाया। पिछके बरस उमरा म्याहू कर दिया और इस बार सारी किला-पट्टी उसके नाम अतिम रूप से कर आयी हूँ। यह पर असल में पैंतीस बरस पहले खरीदा था। इसे भी बेचना चाहती हूँ और पन्द्र ही उत्तरकायी या कहीं ऐसी ही दान्य जगह में जाना चाहती हूँ। अरे जब भयमान ने ही बुनिया की संसदी से मुक्त रखा तब भला कितने दिन सन्धी ? जान्द की बहू को सब समझा आयी हूँ और उन साथों से हमेशा के लिए बिदा से आयी हूँ। दो-एक महीने में यह काठी बिक जाए ता घोड़ा-बहुन पैसा लेकर मैं चली जाऊँ। जिनकी जा जाने है न ? भला भीबर बाबू क्या कहते ? जिनसे संसार न हाँते हुए भी सामारिकता निजायी भला उमते क्या कहते कि वह अब जीवन के उत्तरकाल में माहू रयाय कर हिमालय की तरफ न जाए ? बीड़ी से इनका कुछ छाना गये कि उसे झूठ बोलना ही कहा जायगा। काटी तो मे कुछ समय मे ही है। बाकी सब ठीक ही है। बहुत अस्व मे पर जाने वाले है। जाने क्यों अपनी क्या तुनाये उन्हें हिचक हुई दमलिये

अधिकारी मूठ ही कहा। एक ता बीरी को पुन होया। मान ला बीरी सब मुनकर कुछ कहने-मुनने पर भाती या किमी बात क लिए उद्यत हो जातीं ता क्या हाता ? जीवन भर जब किमी के सामने हाथ नहीं फैलाया तब मना ऐसी मनतामनी दीनी का मुताकर किमी बात के लिए बाध्य करना न होता ? दीरी न अनेक बार कहा पूछा कि बीबर ! अपनी बीरी से कुछ छुना तो नहीं रह हा ? लेकिन-बीबर बाबू ने इतन महज भाव से हर बार आश्चर्य किया कि दीनी ब्रु रह पयी। जाने क्या-क्या मन में हाता रहा कि एक बार बीस पढ़े कि दीनी ! तुम्हारा बीबर सम्पूर्ण पराजित व्यक्ति रहा। अनिर्णय जेल और प्रयाग इसी में माया जीवन को दिया। तुम नहीं जानतीं कि तुम्हारे इस बीबर ने मत्र बीत-बादम बनीं में एक बार भी बर पत्र नहीं किया तो फिर भाँवने का प्रश्न ही क्या। लेकिन पूछा कि किस लिए ? क्या अत्रित किया ? किस महज की उपलब्धि की ? एकदम मूठ है बीरी ! उस दिन ट्रेन में फूलमालाओं वाले विष्व को देखते हुए तुम्हें जो विदा दी थी और तब जितना एकदमी निरबन्धिन या भाव भी बैसा ही हूँ। बल्कि उममे भी नहीं अधिक। तब टूटा हुआ नहीं था लेकिन आज लेकिन बीबर बाबू ने न ओठों से न मुँहा से किमी के भी द्वारा दीरी पर कुछ भी अभिप्रेक्ष्य न होने दिया।

अब से दीरी के बामों से उनकी ही हबेनी में रहन लये से। तभी बीरी का मानुस हुआ कि यह ता पेट का भयंकर रागी है। परिमयो निबट जा रही थी और ब जन्म से जन्म सब कुछ हिमाद-किनास पूरा कर बडीनाथ जाने की तैयारी में थी। ता माह तक दीरी ने बीबर बाबू की बारी बहा-बाकू काबारी। यद्यपि बउ भी लाभ नहीं हुआ था लेकिन वही दीरी के जाने पर इतना प्रभाव न गिरे इनकिये से अण्ड होने का बहाना बिय हुए से।

हबेनी बेच दी पयी थी। खया-खेमा सब जानल रहब के नाम पर बर अपनी एष भीकणनी का लकर से इच्छार की तैयारी करने में लगी थी। उस दिन मन्ने न बड़ी बहल-नहन थी। दीरी न भातन के बटन बाइह कान पर उय हच्छार

- में बुझाया था। बीबी अम हमला के लिए संभार से विरक्त संबंधहीन हाकर  
जा रही थी। स्पेन पर ट्रेन में जब बीबी चढ़ गयीं तो बानी  
—भीपर ! मैं जानती हूँ तुमने मुझसे सब कुछ झूठ कहा है।  
—हाँ झूठ ही कई बार सब से अधिक दबिकर होता है।  
—तुम साबते ये कि मैं कुछ करके तुम्हें तुम्हारे पुदपार्क का अपमानित करती ?  
भीपर बाबू हँस दिये।  
—मैं भी जानता था कि तुम जानती हो कि मैं झूठ बोल रहा हूँ।  
—भीपर ! मैं यह तो नहीं जानती कि तुम क्यों और कब स कासी में हो लेकिन  
अच्छा हा कि पर सौट जामा। अपनी मिट्टी अपनी मिट्टी हस्ती है—रागा  
माटी मानामानी। अपना परिवार, अपना रक्त—मांस बाहू कैसा ही हो  
भीपर ! उमस बिरे होने से बड़ा मुन और कोई नहीं। कुछ बदम्ब हाता  
है रे !  
—ता फिर तुम कहाँ जा रही हो बीबी ?  
—जब अपन रक्त—मांस का परिवार न हो ता व्यक्ति को बिन्ध के निमन्त्रण  
के महापरिवार में समर्पित हा जाना चाहिए।  
और गिड़की से कुछ दूर अत्यन्त करनामय बीबीमुन साव परिवेग में दिताता रहा  
जो महापरिवार में समर्पित होने के लिए जिमास्य की बार जा रहा था। वह  
मृग स्वयं की नियति को ता संबंधहीनता में बना गया लेकिन नामने बासे क  
रक्तमांस के बदम्ब की छाया क नीप सौट जाने को वह पया।

एक घूमनेवाले की भाँति इसकी बीबी आँधी और बनी गयी। बिनाम नहीं हुआ कि वे फिर मिलीं। ट्रेन पर छोड़ जाने के बाद अपने कमरे में पढ़े-पढ़ साबने यह कि बीबी के मुँह पर बिनाम कितना स्पष्ट था। जब मन में संशयहीनता हो बैराग्य हो तो मुँह कितना निष्पुह एकाग्र तारे सा गाल बनता है। आप जैसे किसी उर्मिहीन झील में झर रहे हों। जल अथानर में जल सेवन जल। कामनाहीन मनुष्य आराम बन जाता है। भला ऐसी आशा—बीबी को बीपर क्या सुनात ? क्या सुनाकर यह नहीं हुआ कि व उनकी मरणा जाता रहे है ? जाहे बीबी ऐसा न भी सोचनी लेकिन उन्हें कितना मालूम कि वे पिता किसी की महामता के अपना भरण-पोषण तक नहीं कर सकते। बीबी उन्हें कितना बूझती है कि वह मूठ बोल रहे हैं। इस जानने हुए भी चुप हो मुताबी गयी। अच्छा हुआ न ? किसी का स्वयं नहीं बुझाया जाना चाहिए।

सहित अब वे सम्पूर्ण रूप में मानों निरकारित अनुभव कर रहे। जब तक बर्ष पर बिनाम था वे चीम-बार्ग बर्ष तक जानने यह मपर बगने रहे। लेकिन अब तो मन टूट गया था। बीमार रहन हुए अनवरत अनवरत बर्ष पर

भी जब प्रकाशक ने आज उन्हें दो सौ पृष्ठों की पुस्तक पर पचास रुपये दिये तो वे अम्बर से टूट गये ।

—लेकिन महादेव बाबू ! आपने तो एक खयाल पृष्ठ अनुवाद का बने के लिए कहा था ।

—हां साहब कहा था, लेकिन आप जानते हैं कि लड़ाईके मारे कागज नहीं आ रहा है स्याही नहीं मिलती । लिखनाज सोचों में भाव बढ़ा दिये हैं । छपाई कितनी महंगी होती जा रही है । अब बताइए अगर मैं आपको दो सौ रुपये दे दूं तो मैं क्या करूँगा ? और फिर इस तरह की वामिक किताबों को कौन पढ़ता है साहब ?

—लेकिन मुझे कितनी मेहनत करनी पड़ी है आप नहीं जानते ।

—देखिए साहब बहस करने की मेरी आदत नहीं । आपको बानीस रुपये नहीं चाहिए तो पुस्तक अपनी ले जाएँ ।

—देखिए महादेव बाबू ! आपके लिए मैंने कई किताबें अनुवाद की हैं । अच्छा आप आठ आने पृष्ठ के हिसाब से तीस रुपये ही दे लीजिए ।

—बीबर बाबू ! अब आप कह रहे हैं तो दस रुपये और मैं बढ़ाये देता हूँ । पचास रुपये आपको मंजूर हों तो मैं बनबारी बाबू से कह देता हूँ कि आपको पचास रुपये दे दें । मत !!

बीबर बाबू की अन्तःश्रमा बीज उठी । कौने में जैसे जाने कितनी आय मुकामी पड़ रही थी लेकिन बिबाव हुए का बातों में सहन करने के और क्या था उनके पास ? अपना भाई मुँह लेकर पचास रुपयों पर महीनों की मेहनत बेचकर लौट आना पड़ा । वे इन स्थिति में नहीं थे कि बात का प्रतिकार करते । और उन्होंने घर आकर बंदों सल्लारों टाकने के बाद निर्भय किया कि घर लौट जायेंगे । यह एक ऐसा नियम था जैसे कि आत्महत्या का निर्भय किया हो । लेकिन कई बार आत्महत्या का निर्भय भी तो अनुभव करता ही है ।

अन्तिम भी करी होता है । जैसे बजायत होती हुई मरी मरुने प्राणमना हाकर बाकिर होती है अन्ती बाबा को हुक्मा के लिए तीव्र देने की, जैसे ही बीबर बाबू की चिरा-अन्तिमियों में वे जैसे आत्महत्या घर की और घर ल घर में मिल जाने की कड़ी पड़ रही थी । वे जानते थे कि घर में अनीला ही नहीं, चिरप्रीया है उनके लिए, लेकिन वे क्या नहीं हैं जिसे ऐसी प्रतीक्षा का पाप होना चाहिए । फिर भी घर की अनीला ही ही है । घर तो परमेश्वर होता है ।

द्वैत पद्य





काशी छोड़ते हुए जाने कितनी स्मृतियाँ फिर आयीं। एक दिन यहाँ सम्पूर्ण अपरिचित के रूप में विघ्न के साथ आने से। जैसे जिस अनुसूची ढंग से आये वो भाव इतने बरसों के बाद भी वे अनुसूची ढंग से ही 'पुनर्मुखिकोमब' हा रह से। इतना सतर्प अर्ब हो गया। रतना फिर आयी। काशी के साहित्यिक एक एक करके याद आने लगे। शास्त्रीजी जाने कहाँ हैं। उनसे इन दिनों उनका सम्पर्क ही नहीं रहा। सुना विघ्ननाथ जिपाठी बहुत बीमार रहने लगे हैं।

दूत पत्नी जा रही थी। पुरु से गंगा पार करते हुए प्रत्येकबत काशी काशी के बाट 'माधोदास का भरजुप', 'बधावबमेब' सब सब जाने कितनी-कितनी बार झुहरे विहरे। रतना जीवित रहती ता सभब वा कि इतने न बिलर पाते न टूट पाते। सबने उन्हें एक सीमा के बाद निरर्थक सगस फेंक दिया। अपना सम्पूर्ण जीवन स्वास्थ्य कर्मठता काशी को सौंप बूझ बीमार, असफल निरबलंबित बग मालुवा की ओर लौट रहे थे। उस बर की ओर जिसके बने-मिटने में उन्होंने यही सहयोग दिया वा कि वे लोग मिट जाएँ। मन में अत्यन्त प्कामि असतोप वापुंका समी थी। अब भी 'बर' शब्द आता वे विहर जाते। पता नहीं वे कैसे

धर पहुँचने के सोच कैसे उन्हें लेंगे। क्या कहा जाएगा? बापु-माँ देखकर क्या साँसें? सरो और वे संकोच से क्षुब्ध हो जात।

पूरा दिन पूरी रात सुभी माँसों में बछ्छी हुई व्यतीत हुई। मासबी बायरे का पहला सोंका जब दुर्घनाबाद के पास आया तो लगा जैसे वे एक बबोब गिरा हों और स्तनपान कर रहे हों। मासबा और यह माम जैसे मूर्त होता हुआ बबता ही बला गया। जैसे माँ को पुकारा हो मासबा !!

काले पठारों और काली माटी को रीबती ट्रेन बिग्या की बटवियों के बीच स बली जा रही थी। जब तक उर्बैन नहीं आ गया वे पबरीली माँसों तथा बम्ब मोठीं में बाड़ों तक बाँतों को भीने मौन बने देखते रहे। कैसे संकोचबन उर्बैन स्टेसन पर उतरे। एक छोटा सा बिस्तरा बयस में दबावे तथा शोका बट कामे वे कैसे बरे-बरे स उतरे। पहला कदम परती पर रखते जाने कैसा अपराध मास बिरे आया कि यह पृथ्वी क्या कहेगी? यह माँ क्या कहेगी कि तू तो मुझे ऐसे छोड़ कर बला गया था रे बर मत भाई, तुम सोम छोड़ जाओ लेकिन हम सोम तुम लोगों का छोड़ कर कहाँ जा सकती हैं?

वे अपने कस्बे जाने वाली नेरोगेज वाली ट्रेन के स्टेसन की तरफ बढ़े। आवण माम बा। मासबी मासबी मेब आकाश में भेड़ा के शुब्द की माँति मरे हुए ब। रात बर्पा हुई थी तभी तो सब भीषा-गीला लग रहा था। ऐसे ही कमी आवणो मेब वे बीवी की रेक की टाली थी, गूब भीये य। मुँह, नाक गस सब पर जम माँ क गूब की फुहारें ही फुहारें थीं।

मबरे का समय था। कस्बे जानेवाली ट्रेन तैयार पड़ी थी। तीन-चार छोटे छोटे डिब्बे छाटा-छाटा से इन्जिन तथा बड़ी कमिनी रेक लाइन। डिब्बे में धामी भीड़ थी। पापरक-कपड़ा पहन मासबी आँगने। ऊँची ऊँची बीती बाँये साफे में मासबी पैहानी ममात्र। तमागू और पमीने की बबीब सी गंभ डिब्बे में घरी थी। उमकी नाक में पञ्चीम बरस बाब मासबी-पसीना गंबाने लगा कि कितनी मित्र गय है हमारी। बड़ी पहचानी सी। एम ही पमीनों तथा देहों स ताँ हमारा पमीना बेह बननी है। आप सब कुछ बम्बीदार सबते हैं मकिन अपने आदि-पमीने और बेह की जुगला नहीं मकते। य इनने बड़े स्वरब हैं कि इसमें मुक्ति नहीं।

वे एक तरक बने हुए अपरिचिन म अपने में सिद्धे हुए वे। आज से पञ्चीम

बरस पूर्व भी तो लोग एम ही थे । बेबस दिखने में कालेज में पढ़ने वाले हो-बार लड़के बिप्लवायी दिने जो मिगरट पी रहू थे । निपटरी में गुजरते उखन में अबसम परिवर्तन स्य रहा था । बहुत सी नयी मड़कें बँगने कालोनियाँ दिख रही थी ।

दिलक सब-सक कानन सगा ईस ईस पर की क्षार से जान बानी हुआ की बिपेय संभ भास लगी । एक-एक खेदान पर हकते कि क्या परिवर्तन हुआ है । कगना था महार का प्रभाव बढ़ गया है । जगह जगह पत्रबिकर्या का सामा। धार मुमासी पड़ता । रोक क समाजाल्पर ज्ञान बानी सड़क पर बेंगजाणा टुना पर गस्सा सकड़ियाँ लरी हुई निकली । माइकिलों की भग्मार हा गयी थी । मूया में भी परि बदन आ गया था । काठ पमड़ियाँ अब कम ही दिख रही थी । कनी कारी मूजे भटके से उनसे भी पूछ सेंग

—आप उर्जिन रहते हैं ?

—जी नहीं ।

—ता इन्फोर ?

—जी नहीं ।

भीर पना नहीं पूछने बाबा जाने क्या सोचकर उठेता क मास से अपन साथ बाल के साथ फिर बातचीत में डूब जाता कि इस साल कपास का क्या भाव है । बरसे के चारों ओर की छोटी-मोटी पहाड़ियाँ डाक का जंयस समराइयाँ सेत और ताजाब दिखन लग वे जैसे माँ की देह हो । जैसे छोटे-मोटे मोड़ लुनी ट्रेन पर की ओर बही जा रही थी । वो ताजाब की बीच बानी छकी दिख रही थी जहाँ से चारों ओर बरगडी बूँतों में भीगते वीडे रहते थे । आज भी मबाण्डत था । बादल एकदम छत्रक पड़ रहू थे । किनी भी क्षण पानी गिर सकता था । घरे से ता मच मुच ही वेमेन का ठारकर आ गया और यही तो छाबनी की बह मड़क है बिम पर काठपग बाबू की भोजागाड़ी बापा-बामा करती थी । सब सब बिल्कुल बेगा ही है । छाबनी बिल्कुल बेभी ही है । मेकिन वे तो बेनी फौजी माकूम हल्ले हैं । मालूम होता है अब पोरे नहीं रहू यहाँ । कौसी सिगसिर हवा बन् रही है । एक-दम परिचित । एक-एक पेड़ पप मकान सब चितने अपने लगते हैं जैसे बन्धु बान्धव हैं । इनसे बिचन होकर जाने कहाँ-कहाँ कैसे-कैसे मन्बत रहे सकिन क्या पाया ?

अरे, स्नान पर ता गायी भीड़ मालूम पड़ती है। स्कूनी बच्च स्कूट के लड़क बँड के साथ लड़े है। काँग्रस क बार्कटियर भी बर्दियाँ पहुँचे लड़े है। फुलमाखारें भिन्ने कई काँग्रसी तथा दूसरे साग लड़ है। मालूम हुता है इस ट्रेन से कोई नेता या बड़ा अफसर आया है।

क्रिठना छोटा सा बॉसले बँसा स्टेसन है। पानी की टकी का साल रग मालूम हुता है तथा है, ५० • गैरून' भी क्रिठना साफ किया है। डिम्बा गायी हो रहा था व भी उतरे। बार्कटियर तथा बच्च काँग्रसी-जन मालारें लिए ट्रेन के एक मात्र फर्स्ट तथा सेकन्ड क्लास में किमी को लोज रहू थे। धीपर बाबू ने अपना बिस्तरा तथा मोला उठाया और मेट की तरफ बढ़े। अफसरों पर हुँडने की कोशिश की कि वहाँ काई जाया कि नहीं? अमी बे इमी असमंजस में थे कि कोई कह रहा था

—मालूम हुता है धीपर बाबू नहीं आये ?

धीपर बाबू चौक। य सोच किस लोज रहे है? क्या उन्हें खाना जा रहा है? कमी उनकी दृष्टि एक व्यक्ति पर गयी जो काफी बड़ लग रहे थे लेकिन नारायण बाबू जैसे थे। वे उस तरफ बढ़े और पास पहुँच कर धीम से बोले

—आप नारायण बाबू है ?

नारायण बाबू ने आगन्तुक की भाव बला और सहसा भीम पड़े

—कौन धीपर ? जो भादयो धीपर बाबू ता यह रहे।

सबने दया कि यही धीपर बाबू है ? बार्कटियरों ने उनका सामान ल किया। सामान न बड़ कर उन्हें मालारें पहुँचायीं। और उनकी जयकार हाने लमी। कुछ ही देर में सागा न उन्हें गामा बड़ा मठा बना दिया। बृष्टि की पूरी संभावना थी इसलिए स्वागत का प्रबन्ध बटिगरूम में किया गया था। उन्हें मड़े पर बिगाना गया। उनके पाग नारायण बाबू जिनके बकील काँग्रसी मंत्री दुर्गास जी सागर भादि बँड। स्नान के बाद बिस्वी बिन्ड निरसा प्यारा। की घुन बजा रहा था। लड़कियाँ ने स्वागत-गाता गाया। काँग्रसी मंत्री सागर जी ने धीपर बाबू की दग लबाजा का चर्चा की तथा बीम-रुग्नीय बर्ष घाद कम्ब में मोटन पर स्वागत किया तथा भागा प्रकट की कि उनका नेतृत्व पात्र का मोमाम्य अब इस बन्ध का भी मिलना जा कि उनकी मान्यमूमि है। देवीमिह टाकिये अ भाग बड़कर उनके चरम छाग तथा बताया कि उनके आगमन की भूपना सबने पहले हीम उन मिनी। नारायण बाबू ने धीपर बाबू से बड़ हान के नाते उन्हें पर धीम माने पर स्वागत किया और यह भी कि आज पहिल धीमाय टाकर तथा माना जी

जीवित होते ता उन्हें कितनी प्रसन्नता होती । लोगों ने "गणनाथ" के प्रकाशन का भी पार किया कि कैसे उस पर न हम कसबे की लहरें छापकर पतनवापी को प्रोत्साहन दिया । श्रीवर बाबू ने अपने जीवन के उदाहरण से सिद्ध कर दिया कि यह कम्बु भी परम बग सेवक महान् क्षमतिकारी तथा विद्वान् पत्रकार उत्पन्न कर सकता है ।

नारायण बाबू की धाँड़ापाड़ी मीठूव थी । वे उस पर चढ़न ही जा रहे थे कि फागोप्राप्त्य के म आने के कारण भागता हुआ आया और अमा मीग कर, एक घूप फोणे के लिए बापह करने लगा ।

श्रीवर बाबू का सब लागा क माक घूप किया गया । नारायण बाबू के साथ वे उनकी घोडापाड़ी पर चढ़े । बँध बन्न रहा था । भीड़ में सोझाह फिर नारे लगावे जान लगे

—भाग्य माता की जय ! !

—महारामा घोषी की जय ! !

—श्रीवर बाबू जिन्दाबाद ! !

श्रीवर बाबू ने देखा कि नारायण बाबू की बही परमात्मीय मुस्कान उनके बूट मुस्त पर दिख रही थी ।

—ता बुल्ल तुम आदिगकार पर आ यमे । बेचारी माँ और बाबू तुम्हें बेगन के लिए कैसे लग्य गय । गैर ।

श्रीवर बाबू काँप उठे । वे यह भी नपूछ सके कि यह क्या हुआ ? और सरा केनी है ? घर में कीन है ? पाड़ागाड़ी घर की ओर खीड़ रही थी ।

पाड़ागाड़ी घर के सामने रुकी ।

नारायण बाबू श्रीवर बाबू को लेकर भीतर गये । श्रीवर बाबू को दखकर माहर के बुकानशर किरामदारो ने पहलू सा आदर्श से दखा और फिर नमस्कार किया । श्रीवर बाबू का लगा कि घर में किरामेदार रग दिवे यमे है । घर की कपरेका बदली सी दियी । पास में ही तिमंत्रिका कोनी बैचकार सप्रन उम्होंने नारायण बाबू की ओर बला । वे बोले

—गुम्हारे माद्यों ने बँटबाय करबाकर अपना हिस्सा बेच दिया और यह भार बाड़ी सं की कीठी है ।

धीपर बाबू पबरा उठे । माता-पिता नहीं रहे । भाई लोग मर गये । तब पर में तिरु' सरो और बच्चे ही हैं ? बच्चों में सिबाम देवदत्त के और कौन होगा ? लेकिन देवदत्त रटपन पर नहीं दिखता । क्या कही गया है ?

नारायण बाबू 'गुनी' को पुकारते हुए अन्दर घुसे ।

—गुनी ! तुम्हारे बाबा आ गये ।

धीपर बाबू जैसे ही घर के अंदर में घुसे पिता की बँगबई सूनी-सूनी सी मीन की जैसे बापू की प्रतीक्षा कर रही है । बँगबई पर सिठरंबी (दरी) बिछी थी तथा बापू का साही गाब ठकिया रखा था । बँगबई के पास वाली बाठरी के दरबाजे के पास गुनी बैठी हुई हाथ का कच बाम कर रही थी । उन्हें लगा कि गुनी बहुत बड़ी-बड़ी सी लग रही थी । पासवाली कोठरी के आगे घुसे दिबाड़े के पीछे से किनी की सारी सारी का पस्सा लगा कि जैसे बहो काई गया है । धीपर बाबू उमंग कर गुनी की ओर बढ़े । भाब ही उन्हें आश्चर्य भी हो रहा था कि वह सारी होकर क्या मही उन तक आ रही है बल्कि वहीं बडे ही बैठ प्रणाम कर रही है । धीपर बाबू ने सफ कर गुनी के बानों हावों को उठाया और भरी आँसों में उसकी आरंभना । गुनी रो रही थी । दरबाजे के पीछे से भी मुबुकने की आवाज आ रही थी ।

नारायण बाबू ने आँगे पीछे हुए कहा

—गो बहू ! अब गने की जगह नहीं । अच्छा बटी गुनी ! इस समय में जाऊंगा गाम का आऊंगा ।

—काना जी बडिए, कच ताप्ता ही कर जाण् । बाबा को आप लामे ता मुंह ही मीन करतें ।

गुनी की सारी हुई आँसों के गामन नारायण बाबू कुछ न बाप गये ।

दरबाजे की आट से ही मरा न मात्ता तण्ठरियों में बड़ा दिया । गुनी ने बम ही बट-बैंग भाप देका दिया । न धीपर बाबू न नारायण बापू किनी का मन कुछ भी लाम को नहीं कर रहा था । नबल गुनी की बाबू गने के रपाल से जग गा लिया और खोड

—गुनी ! पाम न आऊंगा । इस समय तुम माग गाभ्रा-गीका । अच्छा धीपर ! और नारायण बाबू मन्दिपारे की तण्ठ बड़ । धीपर बाबू उन्हें छाड़ने दरबाजे तक गये । नारायण बाबू न घोड़ापाड़ी में बैठ कर एक बार पीचा-सीका ता मुनबरा दिया और बड़ गये । दरबाजा बंदी था । बम भी बही थी । बैनी ही आवाज उगे बल करने हुए हा रही थी । एक शण को मन हुआ कि क्या

बापस मानर अच्छा किया ? इनी कम को हीने मे नि घडद बन्द करके एक दिन छितना सघेरे चुाचाप गये वे और आज बानी आयु उस्ताह सब कुछ बाहर को सोपकर एक टूटे हुए पराबिठ व्यक्तिन्य व माप पर कौन कर फिर उसी पर का बही रखाया बही कम बही आबाज बन्द करते हुए सुन रहे हैं । उन दिन दरवाजे के उस पार एक कमठ संमार की आया पी बाँधों में पीने में हावों में सचिन आज दरवाज के इस पार खं हाकर टूटे हुए बूज की नाति बाहर को बाहर ही छाड़कर घर में हैं जहाँ जाने क्या-क्या बसल चुका है । मुनी क माँगु तो मे बेत चुके हैं पता नहीं मगे । जिमने कि उम्हें दरवाजे की आड से देख सिया होगा । जिसकी कबल मुकुच भर हीने से मुनापी पड़ी थी । कैसा कर है यह ? क्या हमी हाहाकार के लिए घर हुआ है ? लेकिन इस हाहाकार का दायित्व किस पर ? हमारा पुसवाय आर्वा कम सब जब भूने पड़ जाए तो व्यक्ति क्या करे ?

और बें सौन । गुनी में फिला को कौन गेया तो पुकारते हुए कहा

—बिबी ! बाहर आ आभा न ? बाबा ! बैगबई पर बैठिए ।

धीबर बाबू बैगबई पर बैठ गये । काल काठरी की तरफ लगे ये । लेकिन एमा सम रहा या नैस भाभी रात में सोसा हुआ सुनसान ।

—कैसी हा बेटा ?

पुनी 'बेटा' सुनकर फूट पड़ी । हाय का काम छोड़कर उसन पन्डू में मुंह छुना लिया । बड़ा दबा-दबा सा रोना माने लगा । धीबर बाबू की समस में कुछ नहीं आ रहा या कि क्या करें ? क्या कहें ? चाय ही गुनी इस बीच बरबर बैठी हुई थी यह बात भी उनकी समस में नहीं आ रही थी । धीबर बाबू ने कपड़े निकाले और बही बैगबई पर एक बिमे तथा मनमाने ही अपने पिता की मुरा में दोनों हाथ सिर के पीछे के बाकर पाव तकिये पर टिका कर झूलने लये । मौन बैगबई ने बरसों बाद मौन तोड़ा ।

कुछ देर उपपन्त मुनी ने मस्स होने हुए पूछा

—गहाइया न ?

—हाँ देवजन कहाँ है ?

नहाने के सिप उठते हुए पूछा ।

—वा तो कापी घरमें स नानी जी के पास है । अब खूब पढ़ रहा है । बिट्टी बापी भी नाना जी की कि मर की मत्क उसे बी० एम-जी० में नर्षी करवाया है ।

—सुधीसा ?

—अपने घर है ।

—कब ब्याह हुआ उसका ?

—या उसके ता बा लड़क और एक लड़की भी है । उम्मेद के पास पीपय्या में

अबर्षी जमीदार है वहीं है वह ।

इस बीच दा-पार बड़ी बूढ़े टिपटिपायीं । गुनी फिर बोनी

—ता आप पहले महा सीजिए । जिजी ! पानी रल बा ।

धीपर बाबू बा फिर बा-अर्थ हुआ कि गुनी स्वयं न उठकर अपनी जिजी को

आदग दे रही है । बोनी

—असल में बाया ! मरे वीरों में बाड़ी लकभीक है हमसिए उठ नहीं पा रही हूँ ।

—क्या हुआ वीरों में ?

—आप पहले महा ता सीजिए । जान सीजिएगा । ऐसी क्या जम्बी है ।

—गुनी । मैं ही पानी क लेता हूँ । ये गंयास का पानी ही लेना है म ?

—गंगास म ता बरसाली पानी है बाबा ! आप बड़े के पानी स महा से ।

इस बीच पीठ पीछे से आकर उमक भास में स घोड़ी-बनियान निकामकर सरो

महाने की अयह स आकर गग बायी । धीपर बाबू ने देना कि मरा अत्यन्त दुबसी

हा मयी है । हाय-नीर लकभ मकैर तथा मूगी लकड़ी म हो गय है । सिर पर

हम्बा धूपत या । मरा ने जस्वी मे बास्टी साटा तोमिया साबुन लकड़ी की

शट्टियां आदि सब सागर गग दिये ।

—गुनी ! गुम्हागी जिजी की तपियत कीनी है ?

इग प्रथम पर किनी मे कोई उल्लर नहीं दिया । मात्र गुनी ने अपनी जिजी की

आर मूय तावना गुन दिया जो कि पूजन क लिए आगत बिठा रही थी । मंत्रा

तन्मापा पक्षपाय ग्याना आदि निरासकर गग नहीं थी । धीपर बाबू उतार

की बाया न देग महान लमे ।

धीपर बाबू न बहुत बटा कि गुनी अपनी जिजी मे पहा कि शट्टियां बना में सब  
गाप ही तावत सजिन मरा म गुनी को धीर मे बताया कि मरू नहीं डगा बेतार  
में नही करने मे क्या गाम ? और धीपर बाबू तथा गुनी ने गाप-माब गाना  
गाना । गुनी दग बीच बाबा की धीर पबतार शर्पिर में पढ़ेब गनी थी । बातर



भावम समाप्तम बरम रहा था। बून्हा बस्ने में परेगान कर रहा था। मीठी सड़  
 डिपों थीं। मरो फूँटनी-से फूँटनी जानी और राटियां सकनी जस्ती। भाब बरनों  
 बाब भाबकी गंब की राटियां भाब भात पाक-भाबी कैमी स्वादिष्ट सग रहीं  
 थीं। रोटियां बेकती सरो की कसाइनों में मजोर हो-दा बूडियों का सुनापन  
 तनक उठता था। अलंकारहीन कष्ट भासक जाता। ममी तक बे मरो का मुँह  
 ठीक से नहीं बेस पाये थे। सकिन मरो उगुँ सग सगी तथा लगा कि बहु स्पष्टत  
 बुद्ध दिल रही थी। बरुन तक कैम परिचित भाबाब में भास जात या म्झा जाने।  
 दबी हुई दृष्टि से बख समझ गये कि घर क बँटवारे क बाब स यही रात्रोभर बन  
 गया है। सब परिचित या कबस दीबारें यहाँ के रहनवालों की तरह मुकी हुई थीं।  
 कैमा मजोर सत्राटा था कि कौर बबाने तथा बेसन का रोटियों पर "बन्धु" बस्ने  
 क और कोई नहीं बोक रहा था। जगह-जगह पानी बू रहा था। उन्हीं माद भाया  
 कि पहल जब एसे बुझा करता था ता बरुन रख लिया कछे ब और उममें कैसे  
 पानी की बूँद जोरों से टपक कर बूँदों में बिछल जाती थी। इस समय तो बूँद टपक  
 कर भरती में छेब बना रहीं थीं। जाता जब समाप्त हुआ और हाथ-मुँह धोकर  
 जब बे बँगबई पर बैठे ता मुनी रात्रीबर से बोली

—बाबा ! आप ऊपर बलिये आराम करिए। आपके छिए पान मीने मँगवा कर  
 रख हैं। जिमी कह रही थी कि आप पान नहीं खाते। मीने कहा कि बनारस  
 में रहकर नला कोई पान नहीं भाय ?

सब हँस पड़े। जैसे सारा बर खोचक जान किउने तिनों की बुप्पी के बाद हँस  
 पड़ा हा। सकिन जैसे हँसता भूस गया हो तो एहबम छोटा मा हँसकर फिर  
 पुन हो गया। जिम जीने से उतर कर बे उम दिल मये थे सब बहु काफ़ी जीव ही  
 पया था। बानी बैसा ही था। दीबार की ठरफ स ऊँचे इम जीने पर बरुने-उठरने  
 की गप होनी चाहिए बना कोई बाहरी भावमी फिर सकता है। ऊपर पधुँच जनका  
 ध्यान बिइकी पर गया कि उमके मामने मारवाड़ी की दीबार बड़ी थी। घर में  
 बीबे म कछ के घराबर ही थी लकिन घर एकरम साक मुषरा था। बाँगकी मुकती  
 अकमनी पर सरा के हा-एक अकूये माडियां बुझत बाक बीब में स माइ कर  
 टंगी हुई थी। एक बटाई और एक बिन्दर स्पष्ट था। बिन्दरे के मिरहने की  
 ठरफ म्बाइनों की कुछ भीनियां गीठा-समापस रखी थीं। बहीं एक कइड़ी क  
 मिहासन पर उनका स्कूड के धिनों का चित्र रखा था जिमके सामने बीब बल  
 रहा था तथा रेधमी पबिबा (माला) में मंजित था। सइसा भीबरबाबू मन्थन्त विप-  
 सिन हुज कि यही बहु स्वात है जमी वंड कोई उहें मजोरान पुकाया रहा है।

सेबेरे में कहीं मटक न जाए इसलिये दीपायक क्रिय रहा । पता नहीं कहीं ठीर  
 मिथ्या है कि महीं इसलिये इस छोटे मिहासन को बिदक बना दिया उस व्यक्तित्व में ।  
 उनका मन हुआ कि इस समय सरो यहाँ होनी तो नीम पड़ते कि सरो तुम जिस  
 पति का पूजनी रही बुझती रही हा वह जीवन क सारे पासे हार कर मत-बिघट  
 हाकर सीटा है । इस तरह लीटनबासा व्यक्ति सरो ! माण माहत ही महीं हुता  
 कहीं न कहीं अपमानित अनुभव करता है । उवेसा उसे साम्ती है । उमे लगता  
 है कि उमेका पुण्याय अनुभव का पुकार्य था । वह जिन आबनों को पुस्तक में  
 पढ़कर बाहर लोगों के बीच गया था वे सड़ हुए थे । किसी का पुस्तक के मापनों  
 की पाई आबदकता महीं होती सरो ! जीवन पढ़नबासा यह मारबाड़ी है  
 जिसत तुम्हारे बपल में बाड़ी बनवायी है तुम्हारे जठ ने कोई विताब महीं पकी  
 है इसलिये वे सब सऊक हैं मानी हैं । बीजे उम्हें घेरे हुए खमक रही हाणी है !  
 हमन तुमन पुस्तक पढ़कर अपनी टपकती छतों का बून स कैसे राका जाए यह  
 तब महीं सीटा । बगैरियो या बायी गगनर बुक्ति की इन टपकती बूँदों को वहाँ  
 तक रोकायी प्रिये ? इगके लिए मावसा पुस्तकें गब बगार हैं । न टपकने बाणी  
 छत पुस्तकों स ईमानदारी स आबनों स महीं बना गती इसलिये सरो ! हमें  
 इस गपकती छत के नीब ही तब तक बैठना हामा जब तक कि यह छत ही  
 मरी रहनी ।

वे जोर कि वे क्या माचने लगे थे । यदि सरो मे इसे मुम लिया हुला ता जाने क्या  
 शापता । अजडा हुआ कि वे यह सब बाल महीं थे । अपने बमों की मार निकस  
 बाये बीबार काफी मापु-बिनग लगी । एनयम मुक बायी थीं । बीबारों की मामू  
 टिक बिनगता म ममे अभी भी खंगीक बने लड़े थे । उनकी विताबें यबाब  
 या । ई बारों पर अभी भी बिच उनी तरह लगे हुए थे । केवल दा-तीन मवे रिग  
 ल थे । गुनी मापद अपने पति क गाब हम फागे में थी । मुनी कितनी मुग्धर सम  
 र्ती थी न ? इगका यह पति कौन है ?—उब यह गुनी अपन घर म हाकर यहाँ  
 "मरु नैने का क्या हुआ? कहीं और भीपर बाबू का हस्ता खकुर  
 ही आ जाना रि पाम बायी फाग उम्हें देग रही थी । हम में मुगीला अपन पति  
 क गाब बमरुग रही थी—उरे यह ता देबनन का बिच है न ? काठी यद्वा-बा  
 सा लय रहा है—मुनी बट रही थी कि बी० एम-जी० में है । मोगें अपने माना  
 मानी न पाल । क्या ठीक है यहाँ रहना ता मिबाप आबारा बनने के और क्या  
 करना ? बाबू का बरी बिच है । पुण्या हा गया है बाणि । उम्हें याद आ गया  
 कि एक बार एक कागिवाकर मगताप आवे से और कितनी मुनिज न बर के

सामों के बिना लिखनाम गये थे । बापू और माँ के मरण-अन्तम चित्र पूजा करवाते सिन्धे गये थे । कैस लिख समय हैं दानों ।

और भीबर बाबू महमा हैम पड़े । समी कमरे में दूर उबर, सरो क पीरों का बाहट हुई । थीबर बाबू एक फोटो लेखकर हैम रहे थे । किनेने मुदिक्क म घर के मारे स्त्री-मुदय को एक पूप के सिन्धे तैयार किया था । सिन्धे का बूषट का प्रपन था दम-लिये भीरने पीछे छाड़ी था ताकि मरने साग उहें न बल सकें । मकिन सबको कितना आश्चर्य हुआ कि फोटो में मिबान माँ को छात्रकर और मर भीरनों ने बूषट निकाल किया था । यह मारी पतानी सरो की थी क्योंकि उनने फुनफुया कर मरनी बठानी तथा देबरानी का बताया कि माना कि इस समय मरने साग हम छागों को महीं बेल रहे हैं सेकिन फागे निकमन क बाबू ठा मर दलेंगे ही ? और ऐन मोरु पर, फोटोप्राफर-एक दो तीन बहकर जब मैम की टापी निकालकर बापम बड़ान क लिए अन्त कमरे की द्वार लेखन लगातो तीनात बूषट ले लिया । जब फोटोप्राफर आया तो कितनी हैमी हुई थी । बाबू जब कि इस समय भीबर बाबू मरके सड़े हैम रहे थे तद भी बही बरनों पूब की हैसी उनके काना में पूज रही थी । हम बीच सरा उहें अनेके हैमता बेल बसने आपी । उमी चित्र क पास पति को हैमने सड़े देल मरो का नी जान क्यों हैमी फूट आपी । सरा इस समय पति क सामने बूषटहीन थी । बह बीमार थी मकिन भीबर बाबू हैमनी सरा में जान कितने बरम पीछे बिमत में जा गये ।

सहमा भीबर बाबू ने सरो का क्षणात देखा और उन कंधों स घाम लिया । कैस बिघुन-बेग स सरा की आँखें छलछलथयीं मरीं बरनीं और जब ठा उनके मीनि पर बे फूट पड़ीं । थीबर बाबू अन्तर तक भीप उठे । बे मरो से खबिक फूट पड़ना चाह रहे क मकिन बस बे भीतर ही भीतर बहीं दूर अज्ञात क्षेत्रों में आधुहीन जीवन में रो रहे थे । उनके बस पर उमठी बीमार बूडरिया सिर रले मर बनी हुई थी मकिन मित्र क उपर आशय बरस रहा था तथा कमी काई दूर टपक कर उनका खभियक कर जाती । लिन्कियाँ स आशय की फुहारें, मीमी-मीमी की हवा क समय मुसायन मरीं था जाती ।

भीबर बाबू, मरो और श्नु सब मारुपी आशय हा रहे थे ।

गाम का मारायण बाबू उपनिवार थाये । बापूनी रात ता बीडे रहे । धीवर  
 बाबू ने बाड़ा बहुत बताया कि बे किस प्रकार इन्दौर-बतायम रहे । बिना मालती  
 दीदी कमय गता मादि क बारे में बलें होली रहीं । मारायण बाबू ने बताया  
 कि किस प्रकार उनके बड़े भाई की राहगा मृत्यु हो गयी पञ्चदशम मारा सेन-सेन  
 का पारोवार चौदह हो गया । इस बीच बे रियासतें हा चुके हैं । परिवार बापू  
 मंग है । गलें बेंगे ही घरे हैं । उनका सङ्का मदन बम्बई में एक मिल में रेल  
 मनेकर है । दग प्रकाय बहु मन्म ही है । मारायण बाबू कोई गाम अण्ठी हायन  
 में नहीं है । वेसेन मजूमदार भीमच में है । गगकी हा गयी है उसकी । वह भी गिटा  
 पर हल माला \* । वहीं मदान पनबाता गागता है । मारायण बाबू न धीवर बाबू  
 का बहुत पणाला कि दग प्रकार पर म पण जाना बिम्बन ठीक नहीं वा ।  
 गग मर व भाप मने मर दग मर ७७ ये ।

पक्कीस बर्ष के बाद आज फिर व उन्हीं दाहतीरों व नीचे सो रहे थे जहाँ कि वे पक्की से लेकर युवक हुए थे । आज स पक्कीस बर्ष पूर्व मरो उनके पास तब भी सटी हुई थी तब कितनी सुन्दर थी । कौशा मरा-भग गोलमुल या लेखित आज मात्र कवास रह गया था । कितनी अजर एव बूढ़ लग रही थी । सारे बाप सकेर लग रहे थे । सगे की बीतों में बुझते पीप की सी सौ थी । उन्हें लगा कि जम व बीतों प्रतीसा करते-करते बम थी इमम अधिक कुछ नहीं था । उनमें न मर्त्यता न दिवापन । प्रतीसा में एक ठण्डा स्वागत का भाव भी कही था जैसे स्वयं को मौपन का । संभवत इती दिन के सिग के जाम रहीं थी बर्ना जाने कब उम बीमारी में उन्हें बुझ जाना था । मुनी सो गयी थी केवल सरो श्रीमर बाबू जीग मर पीपक सौ मौन जाग रहे थे । श्रीमर बाबू की समझ में मही आ रहा था कि वे सगे से क्या कहें ?

—सगे !

—जी ।

श्रीमर बाबू ने "सरो" एस कहा जैसे भापी राठ का अँघेरा हो श्रीमर सरो न भी "जी" ऐम कहा जैसे उस बड़े भारी अँघेरे को कोई पीपक समर्पित कर जाए ।

—यै सजसता था कि तुम बहुत नाराज होगी ।

सगे कोपना छाड़कर अँघेरा मुगनी पीपक बनी थी ।

—मज माना सरो ! अनुष्ठान सासना था कि यह मेरी निर्ममता है वा एक दिन जनकह घर से निकल पड़ा उसके बाप दिन के बाप दिन श्रीमर इम तरह बरसों बीतने कगे बस बिबसा ही हाता बसा गया । सप कही उपेसा जैसा कोई भाव मही था ।

—यै जागती हूँ कि बकर ही बिबसता रही होगी । ककिन आपन अपन को यह क्या कर लिया ?

—क्या कर लिया ?

—जसों में क्या सवे स्वास्थ्य पीपट कर आये ?

—मज सरो ! पक्कीस बरसों में तेरह बीसह बर्ष का अका में ही बीते । सतिन तुम्हारा यह क्या हास है ?

—आप ता मुमे कोमस कहने से लेखित बेलिए न कि इतनी कन्वी बीमारी नी मने नहीं तोड़ सकी ।

—सरो ! म कक ही सासिगराम जी बैद्य से कर्जुंगा कि वे ठीक न हम्मज करें ।

—एक वात पूछूँ माय !

धीवर बाबू लमाठ थंके कि सरो क्या पूछने वाली है ।

—पूछो ।

—आप और आये न ?

—क्या मतलब ?

—केवल आदरस्त होना चाहती हूँ ।

—हाँ सरो ! मैं लौट आया हूँ । तुम्हारा मतलब कहीं महता नहीं है कि मैं आपस बनारस जाने की साथ रहा हूँ ।

—मग ऐसा कोई मतलब नहीं है । मैं तो जानना चाहती थी कि आप अब लौट आये न ?

—यह तुम बारम्बार क्या ऐसा पूछ रही हो ?

—इसमिग कि बिस्वास नहीं आता ।

—बिम पर ?

—अपन को बिस्वास नहीं दिसा या रही हूँ कि जो एक राज अनायास ऐम बनने गये कि सड़कियों का ब्याह हुआ बर का बेटेबापहुआ वापु-माँ बछे गये मेकिन इन बरनों की बाहुर फिर न मुन सरी । क्या नहीं हुआ इस बीच ? गनी के सिग सामू मैं ने क्या नहीं किया और बहू बेपारी

मरा फूट आयी थी । धीवर बाबू को मुनी के ब्याह की मनुगल की मारी बाप गदरन केनी बिबगता फिर आयी थी । इस समय भी वे फूँके ग गून के माँगू पी रह थे । गनी को वे सबम उपावा प्रम करने से और भाव नहीं मुगी हुई, परि तमरता बनी बिमरती उलक मामने दिन भर रेंगती रही जैसे किसी भारी गिन्ना के नीचे हाथ दब गया हो । वे कस नहीं कर सकते थे । यदि कुछ करने की होला गा वापु-माँ न क्या नहीं किया हुला ?

—मरा ! मेरी आर बना ।

मरा न लौट के बरद का बुल्काता पहनी राज का हल्का लीला आकाय हा एम ग। मैसावाग उमार दिने तिनसे पनि का बेला या रहा बा । बाकी,

—मैं तो उस दिना तक को पञ्चमी बपों तक जाती रही त्रिग मीग भाव गये थे । बिना आपसे परि मुकिन मुम मिन्नी हूँगी ता कभी की बगी गयी हुली नाप ! अब नहीं मण्डकता आपसा यह संभार । मुझे मुन्न करा ।

—उा तुम क्या बहू रही हा ?

—मैं न बापु-माँ का बनन दिया या त्रि जैसे भी हुला बिना आगटे भावे

इस घर की गेहरी नहीं साधुंगी। अब मुझे अपने बंधों से भगवान की सौंप  
आइए न ?

—मरा ।

—मन नहीं हूँ। आप आ गये मरे पत्र पुरुष आ गये। पुण्य पहल कर ही भग-  
वान न यहाँ प्रतीका बर्सेपी नाथ ।

—यह सब क्या प्रणय रही हा। नहीं तुम बिल्कुल ठीक हा जाओपी। मन  
मला मरा । तुम्हारे बिना पूरा जीवन होम कर देने पर भी एक बूँद भी इस  
अवधि में नहीं अजिन कर मरा ।

—मरी प्रतीका मार्बक हुई न ? एक मुन क मिय क्लिना दुख भोगना हाता है।  
आप मुझ क्यों छाड़कर चले गये थे ? आपन किमिये मरी इतनी परीका  
सी ? कमी यह नहीं साधा कि में दूर जाऊँगी ? इतना लाछन इतनी प्रता  
इना इतनी लौकिक-कामिमा नाथ । अब मुझे ठाकुरजी को सौंप  
वीजिए । मैं बापू-माँ का न राक सकी गूनी को लखिन सौंप रही हूँ पता नहीं  
मर किम पाप के कारण बटी कुल पा रही है। मुसीबा मुन्नी है अपने घर ।  
देवदत्त की मुझे चिन्ता थी लेकिन अब यह

—बेजो मरा । अब मैं आ गया हूँ तुम्हें चिन्ता नहीं करनी होगी । तुम स्वस्म  
हाने की चला करो ।

मरो पति का दात पर एम मुमकरग की वि शोबर बाबू बड़े छोटे छगने सगे । बानी  
—मैं अब और अपने का नहीं लकना चाहनी। ठाकर जी ने मुझे लाकापबाद  
न बचा मिया चितनी आमागी हूँ भगवान की । मुझे अपने न सटा ला । मैं  
आपका छुना चाहनी हूँ ताकि बिन्दाम आ जाए ।

और मरा बिल्कुल पागलों की तरह उन्हें बख रही थी थी छू रही थी । खीं  
प्रवाहित थी ।

—इसके मिये क्लिना लगती हूँ । आप आ गये । आप आ गये न ? अब ता  
नहीं जायेंगे न ? आप जो कहेंगे बर्सेपी नाथ । लेकिन मुझे कायों की दृष्टि  
में अब न गिरना ? यदि और कोई परीसा मेप हो ता प्रभू ! अपने हापा उसे  
से सेना सकिन अब छाड़ कर न जाता ।

—भार है मरा ! मैंने कहा था न कि सीता को रावण ने प्रतापित नहीं किया था  
बस्कि.

सरो ने पति क मुँह पर हाथ रख दिया और छलछलापी आँसों से बरबती रही ।  
बानी

—मझे काय हो जितना चाहा लेकिन मरे सौभाग्य को नहीं । कितने बर्षों के बाद यह सुन

खोनों को ही नींद नहीं आ रही थी । मरने कुछ स्वल्प हुईं तो पुनी की सारी मुसीबत का स्याह भर का बेटेबाप सब बताती रही । तथा उसज यह भी बताया कि कर्म उम बरम जब संतानाव" आया तो माँ-बापू प्रसन्न थे । माँ गूब फूट-फूट कर रोयी थीं । उसी बरम नक्षत्रजि में मरमिहगङ्ग महाराज के महीं सप्ताह जीं म 'भागवत जी' बाँधने गये थे । राजमाताको तथा राज-परिवार का राज भागवत जी सुनाते थे । बाठबें बिन जब पूजाहुति हुई, सागों ने चढ़ाया चढ़ाया उन्हें दान दक्षिणा मिली वे 'भागवत जी' की पापी के सामने दालि पाठ कर रहे थे । जब जयकार हुई और बापू ने "बोल भगवान इत्यन्तु नौ जय !! कह कर 'भाग वत जी' को प्रणाम करत हुए जा सिर झुकाया तागाकुर जी ने उन्हें अपन पास ही बुसा लिया । जब बापू को काशी दर हा गयी कि "भागवत जी" का प्रणाम ही कर रहे हैं और उठ नहीं रहे हैं तो सागों को पहल तो आश्चर्य हुआ उपरान्त घट । सगों ने उन्हें हिट्टाया लेकिन वे ता मोठाकुरापी सकुण्ठप्रिय हो चुके थे । हाइरान मभ गया । सागों बार घोर मभ गया । वहाँ से माटर हीनयी गयी और जठ जी को लकर माँ वहाँ पहुँची । योला पहन कर ब्राह्मणों ने अर्घी उठायी । स्पर्ध महागज ने भी कंबा दिया । संन-अडियास क साथ बापू ने अन्तिम यात्रा की । राजमाता न सकुण्ठों रूपये की राखे भर बर्ष करवायी और बापू का दावशाह एक रात्रा की नाति हुआ । दूसरे दिन माँ सौत्र भार्या । माँ को न बिना या न दु रा पा वे ता बस चित्रक्षिती हा मयी थीं । राजमाता की ओर से संविदा माया कि बापू की उरुबी का साग गज वे करेगी स्वोकिपन्ति धीनाथ ठानुर गत पशाम यरी में उन्हें 'भागवत जी' सुनाते आ रहे थे वे उनके मध वे । तेरुही के दिन राज माता भायी भी थीं । कम्ब के सारे ब्राह्मणों अनाबीं गरीबीं को भ्रात्र दिया गया । दबडा को राजमाता ने गूब सारी दक्षिणा दी । अमी तेरुही ममाण भी नहीं हु कि माँ न न्यान किया गात्रा पटना ठानुर जी की पूजा की और यही कहती रही—'गदर जी ! मरा भी पुष्प स्वीकारा । उनके बिना अब तो नहीं रह पाऊगी —और दूसरे दिन सवेर उनरी अर्घी ही उगी । केना पवित्र मृत्यु हुई संता की । दबडा ने माँ का शह-संस्कार किया ।



भीतर बाहु जन्मन बैठ माना-पिता की गाथा सुनते हुए अँधेरे में बस रहे थे। माँ बापू के लिए ब विह्वल हो गये। उनकी आँखा न मानी बह रहे थे। कुछ यहूय, घर के साग बन्धु-बाग्यब एक-एक करके घटनाप्रा में भिपटे उनक सामने सं अँधेरे पर पर उमर रहे थे बिछीन हा रहे थे। एक पात्रा की मॉति सब क्रमामत आ-आ रहा था। रहे-रहेकर भाइयों का व्यवहार उह अंतर रहा था। अपने पर आरमणानि हान स्त्री कि एम माँ-बापू की सेवा तक न कर सके।

सरो न सिरे अस्पन्न बिन्ना थी। उग्हें सम गया कि मरा बेहू और मर बागों मे ही दूट गयी थी। मरान भी उँडहर होने की म्पिति में था। पीछे की बीबार गिर गयी थी। इस साल पानी काफी गिर रहा था और किसी भी समय रात्रोबर का सारा हिस्सा उह सकता है। बड़े पिता न जमाने में भले ही कुछ मरम्मन हानी रही हा सकिन गत जालीस बरस से घर की एक घाँटीर तक नहीं बरनी गयी थी। पिछमी रात में अब कड़ककर बिदली जमकी तब पूरा घर जौन कर आभोकित हुआ। उनके बाग काफी बर तक बादल मड़मड़ाते रहे। दीपक हुआ में जाग कर बुझ गया था सेकिन सरो पनि क अस्पन्न पर सिर रख बरनों वात्र मुली मो रही थी।

श्रीपर बाबू के मामले सबसे बड़ी समस्या थी सगे की। यद्यपि उम का रोग शय की विस्तृत अन्तिम अवस्था पर पहुँच चुका था लेकिन फिर भी व चाहत थी कि किसी प्रकार बच्चे में कुछ मये शय व सम्पत्तम में भर्ती करा दें। नारायण बाबू के द्वारा यह काम बठिन नहीं था लेकिन सरा इसके लिए तैयार ही नहीं थी। उमरा ठरुं था कि जब वह दम पर को छोड़ार बाबूजी के माय गौरों नहीं गयी जयति मौ-बाबू क बाद यहाँ कोई था भी नहीं तब भसा अर सम्पत्तम आकर बना बरेयी ? मरन के लिए वह बहाँ नहीं आयी। वह जानती है कि शय के रागी का इस अवस्था क बाद माय मरना ही है। नारायण बाबू ने भी श्रीपर बाबू को समझाया कि सम्पत्तम में स जाना बेकार है। सरा का रोग न केबन समाप्त है बल्कि अन्तिम सीमा पर है। श्रीपर बाबू उम हो गये। अपने पारों ओर फिर उन्हें भेबेरा मरन जाने लगा।

आर आठ महीने हा मय बे काब्रिम में काम करत । काब्रिम-मंत्री गुगामकर नागर का मठा प्राग्रह था कि श्रीबर बाबू स्वामीय काब्रिम में काम करें । आपसी अय पद-याचना नामों में काट्टी बड़ गयी थी । जका स नेता साग छूटने सये थे । बर्ही जागों पर राजनीतिक कार्यालय की गरमा-गरमी शुरू होने सयी थी । इन आठ महीनों में बे ममल सये थे कि बे फिर दमदम में फँस गय है । सागों न त्रिम—स्वाह क साद स्टगत पर स्वागत म कर उनक काब्रिम में आने को लिया था उनमें तरार पड़ गयी थी । श्रीबर बाबू गाँधीजी क मारप को बारम्बार नामों क सामने रख लेकिन काब्रिमियों का ध्यान अब इस बात पर समा था कि निकट नबिष्य में बिष्म-नुष्ट की समाप्ति के बाद क्या होगा ? क्योंकि हिरोशिमा पर अबु बम गिराया जा चुका था और युद्ध स्वगन की बातें होने सगी थी । राजनीति में अब मात्र पड़ी कर्षा थी कि अग्रज भारत को कब तक स्वाधीनता देने और यदि नहीं बी तो क्या गाँधीजी फिर "मारु-खोरा" जाला-लन छड़ेंगे ? अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति यही हो रही थी कि भारत स्वाधीन होकर रहगा । और जब स्वाधीनता मिल ही रही है—आज या कल तो फिर मर्ही कौन-कौन शीय ? चुनाबों में मीर त्रिम मिली ? त्रिप्ठी कौन जाएगा तथा प्राथमिक विद्यालय समार्यों में कौन जाएगा ? और इस श्रीकाठाली में काब्रिम मन्था काब्रिम क रचनात्मक कार्यकर्मों पर भसा किमका ध्यान रहगा ? लोगों का सधा अमनाय यर नी था कि श्रीबर बाबू कहीं राजनीति में भुम कर काई पद-बन की कोणित ता नहीं कर रहे हैं ?

गाँधीजी तथा सग के अन्य नेता छूट सये थे । अग्रजों न भारतीय स्वाधीनता के स्वरूप पर बचाएँ आरम्भ कर दी थी । देस क बिभाजन को सकर विभिन्न राजनीतिक दलों में मतभेद था । काब्रिम मन्था का यह हाक हा कका था कि जैम बहु प्रीत कर हा जहाँ कि पात्र-याचार्दे तेबी म बाकर बिना किमी ब्यवस्था का समाक किम अपने को मजाकर मच की तरक बीड़ जाने की तेबी में होने है । जबकि श्रीबरबाबू मच और प्रीत कम दोनों में प्रीनरुम को आचारभूत महत्त्वपूर्ण मानकर काम करना चाहत थे इनसिए बे प्रत्येक व्यक्ति का बापक दिवसाजी दन क्योंकि उनकी अपनी उपपायिता अब प्रीनरुम की अनेका मंच पर ही थी इससिए प्रीनरुम अब मात्र माध्यम रह गया था क्योंकि अंतिम कर म पर्ना—उन की तयारी हो चुकी थी । लोगों में श्रीबर बाबू की अब प्रीर पीरे भावभता हात लमी कि उन्हें राजनीति की काई ममल नहीं है । ये त्रिम रचनात्मक कार्यकर्म पर आर देना चाहत है अब यह काब्रिम का काम नहीं है ।

कावेम राजनीतिक सत्त्वा है। गांधीजी ने इतीकिए बर्खा-मंय आदि रचनात्मक कार्यक्रमों के लिए अलग संस्थाएँ गढ़ी कर ली हैं। भीपर बाधु की राजनीति की ममत्त बड़ी पुरानी है। अन्त में कांग्रेस-संघटन का काम छोड़कर जब वे कावेम में अलग होने लगे तो सोया ने उन्हें खादी-भंडार में काम करने के लिए बाध्य किया—नबिन श्रीवर बाधु तैबार न हुए। वे अन्तिम रूप से ममत्त गये कि उनकी कोई सामाजिक उपयोगिता नहीं है। वे जिस पक्ष पर भी सड़ते हैं वही बाड़ी दूर चलने पर ही वा मार्ग फूटने समते है। एक पक्ष पर जाने की आवश्यकता ही नहीं होती बल्कि उस पक्ष पर ता आप मनकोंक साथ पीड़ियों में पीड़ियों तक के लिए धड़े हुए हस्तों हैं। दूसरे पक्ष पर जान के लिए जान कितनी ही बलों की आवश्यकता पड़ती है। उस पक्ष पर पितनी क ही भोग बर रहे हस्तों हैं। कुछ की यह पक्ष जन्म से प्राप्त हुआ रहता है। कुछ उस जन्मित करते हैं। इसके लिए सब न आदर्श न स्वत्व कितनी भी विवेक का कोई प्रयत्न नहीं रहता। यह पक्ष वा स्वतः सिद्धि हावा है। जिसे विवेक से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

इस बीच श्रीवर बाधु की छोड़ परिमम करक महाभाग का हिन्दी अनुवाद करने में रूप थे। दो एक छाटी-भाटी पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशकों ने यह कह कर लीग कि वे कि भाषा आपकी बोड़ी पंडितारू है, दूमरे, ब्रह्मचर्य एवम धर्म मवधी पुस्तकों की अब कोई पूछ नहीं है।

जीवन में संपूर्ण रूप से विदे, परम्य एवात्त में वह जान के लिए वे बाध्य थे।

दिन प्रतिदिन मरो की स्थिति बिगड़ती जा रही थी। अब सब कुछ निरिषण मरिष्य मा लग रहा था। तिमम बिद्रोह नहीं किया जा सकता था बल्कि तिमने स्वीकारने में ही मति थी। श्रीबर बाबू सबेरे चार बजे उठ जात स्नात-स्नान क बाद जाने तथा सुनी के लिए भाजन बनाकर मरा के लिए पय्य बनाकर व हम बजे क आम-यास अपने किचन-मडने क काम में लग जाते। तिम दिनों कप्रिम में जाते थे सुनी को बिमट-बिमट कर घर का सारा काम करना पड़ता था। अब वे ममी दायित्वों म मुक्त थे। मरो उन्हें टाकती रहीं सुनो काम बहनी रहीं सेकिन पता नहीं जाने कहीं स सहमा वे इतने उप्माह में आसय थे कि मी-बनी दोलों का चुन रह जाना पडा।

होती हा बूकी थी। चैन पूरा हो रहा था। पतझर में सबका रिगम्बर कर दिया था। आठ-दस मास के परिश्रम से उन्होंने महाभारत के आदि-पर्व समापन एवं अन्त-पर्व समाप्त कर सिये थे। बनारस के एक प्रकाशक ने उन अनुवादों को प्रकाशित करना स्वीकार लिया था। अब वे स्वयं पूरा तरह से मनने को सारी सामाजिकताओं से काट बैठे थे। बटे-आम बटे के लिए सरो के निरहाने बैठ आत। मूनी भी पाम बैठी होती। धीवर बाबू कमी-कमी विचलित हो जाते कि पता नहीं कस क्या हा ? सरो नहीं होती ता ? और प्रायः इस ही समय सरो उन्हें टोकती हाती

—वैतण्ड, आपने बाबूजी के पत्र का उत्तर भी नहीं दिया न ?

—भूल गया था। कस जरूर दे दूंगा।

—देवदत्त की परीक्षाएँ कब समाप्त होंगी बाबू जी ने लिखा था न ?

—यह तो उमका पहला साल है बी०एम०सी० का।

—ना उस बुझा सा।

—क्यों ? आ जाएगा परेशान क्यों होती हो ?

—वै पाहनी हूँ एक बार मुसीला भी बीर आ जाती।

—तो होनी पर तो आपी थी।

—वेकिन अब मोग क्या ठीक है ?

—फिर तुमन ऐनी वैती बातें मुक कर रीं।

—कैनी ? क्या मैं नहीं जानती हूँ ? क्या चलने से क्या काम ?

—जीक है। फिर दिया जाएगा।

—मैं पाहनी हूँ रागी पर बुझा तो। कान्ता को भी एकबार बेग लेनी।

—वेकिन बादा-नामी क्या माबेने ?

—कह ता वे कसकर में रहते हैं अब यहाँ है ही नहीं मुनेमे तो क्या कहेंगे ?  
 मैंने कभी कान्ता को मुनी और मुसीला से कम नहीं समझा। मैं एकबार मकका बेग लेना पाहनी हूँ।

धीवर बाबू ने सारों पत्र डाक दिया कि आप लोग आ जायें। सरो की हाता अत्यन्त नाबूक हो गयी है। मुसीला और कान्ता को भी बुझना कर री यरी कि एक बार आ कर मिल जायें।

रसाबन्धन पर सरो के माता-पिता देवव्रत सुमीला, काम्ता सब अपने नाम-बन्धनों के साथ आ गये। काम्ता अपने 'काका जी' से लूब छोड़े। थीबर बाब ने देखा कि देवव्रत अब काफी बड़ा हो गया था। सुमीला और काम्ता के बन्धनों ने आकर घर का बन की माँति गुंजा डाला।

आज रात मर घर के सारे लोग सरो के सिरखाने बैठे रहे। निदिबल सा हो गया था कि आज की रात सरो की अन्तिम रात है। सरो के पिता जी सिर खान बैठे गीठा का पाठ सुनाए रहे। सबरे उपर सूर्योदय हो रहा था और इतर मरो की वेह छुटी। पर में हाहाकार मच गया। बाबा जी रात के पहल तक कभी कभी मंद आवाज तथा बकी पलकों से सरा कुछ बाल्ती रही देखती रही। उसके मूल पर अत्यन्त शांति सृजत तब मन्तोप आ गया था। ऐसा भार का सा सौन्दर्य भी आ गया था जैसे उसे किसी बात की कोई कामना नहीं रहे यमी थी।

उस घरती पर किता बिया गया था। गंगाबल तथा तुलसीदेव मुँह में रख उनमें यह सबलोक छाड़ ठाकुरधाम की यात्रा आरंभ की।

किसीक पास किमी के किरा कोई शब्द नहीं बे। बन्धनों को छाड़ सबने पास अपने भीतर ऐसा एकान्त कम रहा था जो अपने ही में बन रहा था। सरा का सबबाह कर सब माम को लीटे। थीबर बाबू को लवा कि बे मही क्या सरो के इन महान अन्तिम कार्य को सम्पन्न करने क किरा ही लीटे वे ?

तेरुही भी हुई। बिलजती सुमीला और काम्ता को उनके बून्हे के गये। सास में बड़ा आपह किया कि बे भी सौरों बसें। थीबर बाबू मुभिकल से इस बात पर राजी हुए कि बोड़े बनों बाद बे आयेगि। सरा पहसे ही अपनी माँ से कह गयी थी कि गूनी को भी जब अपने सोब ही के जायें।

सरो की मृत्यु के बीस दिन बाद गुनी तथा देवव्रत अपन नाना-नानी के साथ मौतों क किए पक बिये । स्टेशन पर जब वे निकलती गुनी तथा उदास देवव्रत की बिदा से रहे वे तो उन्हें समा कि जैसे भीतर का सब कुछ बाहर जाना चाहता है ।

कितनी तेजी से पत्नी पुत्र पुत्रियाँ सबन उनम बिदा की थी ।

क्या मह बिगत ने उनसे बिदा की थी ?

जब वे कम तक के भरे-पूरे घर में पहुँच मौन फिर चुली थी । साय बर उदास था । कहीं से कोई शब्द नहीं आ रहा था और न जाने की आशा ही थी । या शब्द वे वे भी पृष्ठभूमि को न और पृष्ठभूमि में ता भनेकी स्वर हा सकते है । बाही बर तक वे आगत में लड़े रहे । उपरास्त वे बेंगबई की आर बड़े और पहला स्वर बेंगबई का था जिसने उस घर का उस ऐकान्तिक साँस का कठोर मौन छाड़ा । यद्यपि उनके अंदर अनेक स्वर थे । सास-मसुर के आदेश थे —  
—दिएए, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिएगा ।

—क्यों नहीं आप भी कुछ दिनाँ सीरीं चककर रहते ?

ये शब्द वे बाक्य ऐस ही शब्द ऐसे ही बाक्य कानों में बज रहे थे । भावपद पस रहा था । कृष्ण बमन का नाम ही नहीं ले रही थी । तेज हुआ के कारण पानी की बीछार से बीचारेँ औमारा सब भीग रहे थे ।

बागना न सरा को कँना अन्तिम यात्रा क पिए मन्नाया था । हाथ-पैरों में सेंहरी महाबुर लगायी थी बाक बाङ्क थे । गते जिम बनारसी माड़ी को पहन



कर हम घर में बहू बनकर आयी थी उमरा अशिम अंगार किया गया था । ममल्य अमकाय पहलाय गये । पाँकों में पायक और बिछिया मैथी ने रगड़ कर बमकायी गयी थी और मरो क पैरों में बंसो मूदर हा उठी थी जैसे मरा अनी बसने सयेगी और माग घर पायक-बिछिया म सुपर हा आगगा । माय और टीका कम मुम्ने पड़ रहे थे । समता कि स्वप्न म ई माया भी नहीं है । कैम पाहें मार कर मरा की माँ अर्यो पर गिर कर बहना हा मयी थी । मुमीका और कात्या को समजाना कठिन हो रहा था । दबबन और गुनी क ता और तूक पपरा चुके थे । और मरो जैसे दूमी महाजात्रा-मूल के लिए पञ्चीम बपों तक उनकी प्रतीला करती उठी थी । जैसे ही मकमर माया एक दिन भी नहीं दकी । रोप से मकमरल सन्त-सकृते बह लोखयी हो मयी थी । रंग सपेन हो गया था । फिर भी अर्यो पर सेने कैमी निश्चिन्त मुली मन्मुष्ट फग रही थी । कोई परिहाय नहीं था मुक्त पर । कोई कामना रोप नहीं लग रही थी । जैसे बह बिगुट समापन हो । पूरा आकाश भर सिया हो । मांगीगीम मग्ग्या हो रही हो । न ऊपर न नीचे कोई भी हम मग्ग्याबनन में बबिठ न रहा हा । मन्मुष्ट आकाश बिम्बान टान क माब राग का बिम्बन हुआ ही । बह निष्पात इतिथी थी ।

बुक्ति ठेक हो मयी थी । तिरछे पानी में भीय रह थे । वे ऊपर जाना चाहते थे लेकिन क्या करमा का बहाँ ? कौन था बहूँ बिम्बक लिए जाना या ? सब जा चुक थे । कुछ दिनों क लिए नाती-नातिनों ने घर को मये सगीत म सुबिन कर दिया था । इन नाती-नातिनों को यथावत छोड़कर 'बहूँ' स्मगाल-यय से लौट मयी थी । बन्पी के इस एकमात्र पब को साखी बना बहूँ पास्त्री में बैठकर आयी थी और आज अपनी देह से उत्पन्न प्रजा के बीच उमी पय म मुक्तो बन्धु बना लौट मयी है ।

बिम्बक परिवार ये वे सब अपनी अपनी दिशा में लौट गये थे । केबल वे ही हम भाइयद की धारम हस्ती हुई बिम्बित रात में भीयते बैठे हैं । पानी और

ठेक हा गया था। बीबारों से पानी चूने लगा था। पीछे की बीबार फोड़कर पानी परनाला बन कर पूट पड़ा था। जेधरा काफी हा गया था। राधीपर में गय ता बहो देया कि पानी काफी भर जाया था। अम्ब्राज स चूस्हे के अवर दियामसाई जोडी। दियामसाई थी। सासुटेन जसामी। जेधरा जाय गया। जे सासुटेन से सीडिया स अवर जाये। पर काफी टपक रहा था। जहाँ बराबर सरा ना बिमरा सगा करता था गन बीस दिनों से सासी था। जन्होंने इस बीच बर की मागी बीजे बंधना कर रतना दी थी। जगह-जगह पानी के टपकने की आवाज या रही थी। सरा ना ठाकुर जी का सिहासन जेधरे में दिख रहा था। ठेक हुवा में ठाकुरजी के चित्र की पवित्रा हिम्प रही थी।

उनके कमरे की सारी विडकियां बीछार और हुवा से भीगती कप-कप पड़ रही थी। पल्लों की दरारों से पानी घारियों में बहकर भीतर आ रहा था और फल गीला हा रहा था। भीपर बाबू सासुटेन सिन्हे पूरे पर में दो हाथ सूखी जमीन खोजने में लगे थे। हुवा का एकाध धोंका सासुटेन को भी भजका जाता। अपनी बैठक में आसुमारियों की तरफ चलाई बिछाकर जे बैठ गये। मात्र जे सचमुच ही बक गये थे। अपने भागों और इतना एकान्त ऐमा बिपाद इतनी बिषमता पहले कभी नहीं लयी। बहुत देर साबन पर पबराहट लगने लगी। समता जैसे उबर के कमरे में सरा ने करबत बरणी ही।

—पानी चाहिए गुनी !

और भीपर बाबू बीकन। किमने पानी माया ? सामने रखी फर्सीमेज पर सासुटेन जसामी उनकी ओर देख रही थी और जे मित्र घाम राते की चेष्टा कर रहे बवारि नगे की मयु के बाध न भज तक ब ग न सके थ। हर बार प्रसन्न उठना कि ब बिम मुंह स रोने ? जगहे हुन नहीं परिवार या परनाताप था। अपने भगपत होने पर नहीं अपमानित होने पर। उन्होंने प्रत्येक बार समुद्र की गलाकरी गीमाओं में प्रवेश करने की भरमठ धैर्य की तैकिन कोई न कोई उबार उनके सारे कम को नगण्य सिद्ध कह हर बार किनार पर सा पत्रक बता।

पबर्षीम बर्ष—एक गम्भूर जीवन की आठुति !! उनसी जिनें मुलम रही थीं। अंग अंग न पबकन बीगे ही पूट रही थी जिन कि इन समय बीबारों न वृष्-जस भजमाने हुंग न पूट निगत यह रहा था। जसामी सासुटेन मागी थी कि उनसी

पकड़ें नीमनी चुक हुई थीं। बाहर की बुद्धि क्रमशः अन्तर में भी होने लगी थी। उनका पुरुषार्थ दीमक खापी पुस्तक था। आज उसका कोई मूल्य नहीं था।

बड़े माई ने उनके परिवार की भवमानना की। उनकी पत्नी को चरित्रहीन कहा क्योंकि वे किसी से कुछ भी बठाकर नहीं गये थे। उस पर उन्होंने क्या बर्षित किया? यह टूटा घर? पानी जमीनहीं दीवारें? पत्नी की मृत्यु? गुमी की अपंगता? और, आज की यह असमाप्त लगने वाली भाइयद की रात? वे बीस पड़े

—मत्र व्यर्थ गया धीघर! सब व्यर्थ गया।

धीर बोली का खूंट माँकों पर रख बिसुरने छगे। लास्टेन साक्षी नहीं रहना चाहनी थी। हवा बारंबार उसे भमका कर अगत्या बुझा गयी। बाहर मरब करब के माथ मूमनाचार बारित हो रही थी। आकाश को कोड़े फ्याये जा रहे थे और हवा टूट-टूट पड रही थी। धीघर बाबू बीसे सब कुछ बीटा साने को ब्याकुल हो उठे। लेकिन वे क्या नहीं जानते थे कि जिन अस्त्रों को छेकर वे जीवन में लड़े थे वे धातु थे। आदमों का मूछम्मा तो पहली ही जोर में उठर जाटा है। पुश्तिलिअर आदर्श थे इसीलिए मात्र निमित्त थे। महाभारत यधि ठिठर ने नहीं बीता वह तो कृष्ण-अर्जुन थे जिन्होंने किसी भी नीति को पालन करने वाली नीति अपनाकर मुठ बीटा था। सत्य बीता था कि नहीं यह बेब ध्याम भी नहीं कह सके।

स्वस्व हो लास्टेन फिर बलापी और निर्भय किया कि इस बार वे “मनुष्य का इतिहास” लिखेंगे। लास्टेन उठापी और किताबों की आस्पाटी में कागज ढूँढने लग। एक कपड़े में गोल बिपटी कोई चीज कड़ी-कड़ी थी लगी। काफ़ी मोटी और लम्बी थी। बोला: हेर घारे कागज थे। बड़े पुराने कागज थे। कागजों पर पुरानेपन के राय पड़ गये थे। सहासा मात्र आया कि वे ही कागज थे ही जो इन्दुदीपी ने एक बार बाला साहब की आस्पाटी में से चुप कर बिये थे। बाका

साहब इन कागजों को ठामे में बन्द रखते थे । उस तरह का यह कागज उनके अपने सिमने के लिए था । इन्डु बीबी ने कहा था कि बिना दिन तुम कोई महत्वपूर्ण पुस्तक इन कागजों पर लिखोये तब तुम्हें बीबी की याद आएगी । कागज समय-समय उगने ही थे । उन्हें झाड़कर मेज पर रखा और उन्हें याद आया कि संभवतः इसी कोने में बैठकर ही तो ' राम्य का का इतिहास' लिखा था । तब वे मुबक थे । राम्य की लक्ष्मणपरिसीमा से निकल कर अब उनके सामने मनुष्य छोटी सफलताओं असफलताओं के साथ घड़ा था । मुड़ ही मानव जाति का इतिहास रहा है । मुड़ ही एक संस्कृति को सकारण के लिए आछा है तथा दूसरे का बीबापेन कर आछा है । मुड़-कला के बिनाम का ही मानव का इतिहास या विकास कहा जाता है । इसीलिए यह मुड़-भाव व्यक्तियों, जातियों वेष्टा युगों व्यवस्थाओं में निहित रहता है । और बुकि मुड़ होना ही जीवन के लिए है इसीलिए नीति मार्ग संस्कृति, धर्म किसी का कोई महत्व नहीं । वे यह सब सोच रहे थे । अकेली कास्टेन और माद्रपद की मूलताधार बुष्टि एबम तेज हुआ मारी थी ।

वे विन रह थे । अकेली कास्टेन और माद्रपद की मूलताधार बुष्टि तेज हुआ, बीबारा मे हानर वह भाया हुआ चारु और का उस प्रतिभुत था—वे विन रहे थे

मानव मुड़ का पर्याय है । नीति धर्म अकनारी पुण्य राजनीति विज्ञान सब मुड़भाव को मुड़ कोणम को विभिन्न नामों मे विभिन्न युगों में सजित करते भाय है । इसीलिए मुड़ हमारे रखा मोम-सग्गा का अनिवाये अविवाय्य अंय है । सद्गता प्रारुतिक है । न लड़ने से लिए प्रयास करना होना है । इसीलिए 'हिमा' से लिए स्वीरागोस्त नाम है 'अहिमा' तो अग्नीवारास्त मंत्रा है ।

मानव इतिहास का आरम्भ किस काल में हुआ इसका निश्चय करना कठिन है। विभिन्न मत हैं, हो सकते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि अक्षीकृता धर्म, कला राजनीति एवम विज्ञान ये वे प्रमुख मापान हैं जिन पर से हाकर सम्मता का साथ आया है। कोई नहीं जानता कि इन अक्षीकृता की उपासना तक आज में सार्थ का कितनी हजार शतियों के हिमयुग साबाजों क भूमण्डल एवम मरुभूमि विस्तार पार करने पड़े होंगे। उन दिनों की समाज रचना का तथा पारिवारिक संगठन का क्या स्वरूप रहा होगा इसका कोई पुराणस्त्री प्रमाण उपलब्ध नहीं। प्राचीनतम जो सखबद्ध सामग्री उपलब्ध है वह बर है। वेद इतिहास भी है इन की शोध अभी हमारे लिए शेष है। फिर भी यह तो स्पष्ट ही है कि वेद-नामीन स्त्रीकों-स्तोत्रों की भाषा छन्द अक्षकार एव भाषों की प्रयोक्ता-जाति बर्बर नहीं की बल्कि काफी समुन्नत की। और कला के इन शिखरों तक पहुँचने में उसे हजारों बरस की सामाजिक तपस्या करनी पड़ी होगी। इस प्रकार हम आज जिस मनुष्य के इतिहास को जानते हैं वह मात्र दो हजार वर्ष का है, मगध्य है।

वेदों एवम अन्य धर्मग्रन्थों में जिस प्लवन देवानुर सग्राम का वर्णन है उसे मात्र पुराण या धार्मिक उपाख्यान कह दिया जाता रहा है इसलिए हम आज तक इतिहास क कठिन चड़े परिवर्तन संक्रमण से संबंधित रहे हैं इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। क्याचित्त वह प्लवन सृष्टि एवम जीव-जाति के इतिहास में महानतम घटना थी। प्लवन के उस पार जो मानव-भाषा है उसके सन्दर्भ में हमारी बलमान प्रगति विकास का मानपाठिक बिस्लेषण करना होया। क्योंकि यह भी समझ है कि वह प्लवन मानव नियोजित रहा हो। इसके नियोजक मुर भी हा सकते हैं अमुर भी। ऐसी स्थिति में इतिहास को नयी व्यवस्था देनी होगी।

यदि प्लवन का आधार मान में तो उस काल की संस्कृति एवम इतिहास को हम पूर्व-प्लवन संस्कृति तथा आज की उत्तर-प्लवन संस्कृति मान सकते हैं। इस प्रकार हम एक ऐतिहासिक रीढ़ प्राप्त कर लेते हैं जिसके दोनों ओर दो प्रकार की मानवीय संस्कृतियाँ विकसित हुई और

३



मानव इतिहास का आग्मन विश्व काष्ठ में हुआ इसका नियम करना कठिन है। विभिन्न मत हैं, हा सचन हैं। लेकिन हम दखन है कि व्यौकिकता यम कमा राजनीति एवम विज्ञान ये ब प्रमुख मोपान हैं जिन पर स हाकर सम्भता का सार्य माया है। बार्ई नहीं ज नना कि इन व्यौकिकता की उतामना तक मान में सार्य को बिजनी ह्यार पतियों क हिसपुय साबाओं क भूमगल एवम मरम्दनी विस्तार पार करने पड ह्योगे। उन दिनों की समाज रचना का तथा पारिवारिक संगठन का क्या स्वरुप रहा होया इसका कोई पुगनम्बी प्रमाण उपलब्ध नहीं। प्राधानतम जो केवलद्वय सामग्री उपलब्ध है वह बर है। वेद इतिहास भी है इन की शोध अभी हमारे लिए पाप है। फिर भी यह तो स्पष्ट ही है कि बर-कावीन एकोकों-स्तोत्रों की भाषा छन्द अत्यकार एव भाषों की प्रयोक्ता-जाति बबर नहीं थी बल्कि काष्ठी समुद्रन थी। और कमा के इन निररतां तक पहुँचने में जमे हजारों बरम की सामाजिक तपस्या करनी पड़ी होयी। हम प्रकार हम आज जिन मनुष्य के इतिहास का जानते हैं वह मात्र दो हजार बर्य का है नगण्य है।

वेदों एवम अन्य बर्मग्रन्थों में जिन प्लवन दवागुर सप्राम का बचन है उसे मात्र पुराण या बामिक उपाख्यान कह दिया जाता रहा है इनलिए हम आज तक इतिहास क कितने बडे परिवर्तन संक्रमण से बंचित रह हैं इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। कदाचित्त वह प्लवन मृष्टि एवम शौब-जाति क इतिहास में महानतम बटना थी। प्लवन क उय पार जो मानव-यात्रा है उसक सम्भ में हमारी बर्तमान प्रगति बिकास का मानपातिक बिदलपण करना हाया। क्योंकि यह भी मभव है कि वह प्लवन मानव नियोजित रहा हो। इसक निवाजक मुर भी हो सक्य हैं बनुर भी। ऐसी स्थिति में इतिहास को मयी व्यबस्था बेनी होयी।

यदि प्लवन को आधार मान लें तो उस काष्ठ की संस्कृति एवम इतिहास को हम पूब-प्लवन संस्कृति तथा आज की उत्तर-प्लवन संस्कृति मान सकते हैं। हम प्रकार हम एक एतिहासिक रीढ़ प्राप्त कर सत हैं जिनके दागों आर को प्रकार की मानवीय संस्कृतियां बिकसित हुई और